॥ ओ३म् ॥

सार्वदेशिक

* सार्वदेशिक-आर्य प्रतिनिधि सभा देहली का मासिक मुख पत्र *

वर्ष १९ } जनवरी, १९४४ ई०] पौष २००० [दयानन्दाब्द १२० { अङ्क ११

* वैदिक प्रार्थना

ओ३म् देव संस्फान सहस्रपोषस्येशिषे ।
तस्य नो रास्व तस्य नो धेहि तस्य ते भक्तिवांसःस्याम ॥(अथर्व ६ । ७९ । ३)

शब्दार्थ—हे (संस्फान देव) अन्नादि द्वारा सब की वृद्धि करने वाले और सर्वशक्ति सम्पन्न सुखशान्ति तथा आनन्द के देने वाले प्रभो ! आप (सहस्रपोषस्य ईशिषे) असंख्य प्राणियों को पुष्ट या धारण करने वाले ऐश्वर्य के स्वामी हैं (तस्य न रास्व) उन ऐश्वर्य का हमें दान कीजिये (तस्य न धेहि) उस ज्ञान, शक्ति आदि रूप ऐश्वर्य को हमारे अन्दर धारण कराइये (तस्य ते भक्तिवास स्याम) हम आपके उस ऐश्वर्य के भागी तथा आपके सच्चे भक्त बनें ।

विनय—हे सर्व शक्ति सम्पन्न सर्व प्रकाशक सर्व सुखदाता परमात्मन् ! आप ही सारे संसार के स्वामी हो । आपका ज्ञान, शक्ति इत्यादि रूप ऐश्वर्य अनन्त है जिसके द्वारा आप सब प्राणियों को धारण कर रहे हैं । हमें भी उस उत्तम ऐश्वर्य का भाग देकर कृतार्थ कीजिये जिससे हम आपके सच्चे भक्त बन कर, आपकी आज्ञा का पालन करते हुए अपने जीवनों को सफल बनाएँ ।

वेदोपदेश—

त्रिविध बन्धनों से मुक्ति

(लेखक–आचार्य अभयदेव जी विद्यालङ्कार सम्पादक 'अदिति')

आत्मा की त्रिविध गति

संसार की प्रत्येक वस्तु की गति तीन तरफ़ की ही हो सकती है, या तो वह ऊपर नीचे गति करेगी, चाहे वह ऊपर जावे या नीचे, या वह दायें बायें गति करेगी चाहे दायें जाय या बायें, या आगे पीछे को गति करेगी चाहे आगे जाय या पीछे।

यह जो प्रत्येक वस्तु त्रिविध विस्तार वाली होती है और प्रत्येक वस्तु की जो त्रिविध ही गति हो सकती है इसका कुछ कारण है। उस कारण का निर्देश तो यथास्थान आ जायगा। पर इस वर्णन से आशा है पाठकों का मन आत्मा की गति को समझने के लिये भी तैयार हो गया होगा। आत्मा तो अभौतिक वस्तु है, उसको भौतिक तरीक़ों से समझ लेना सम्भव नहीं। तो भी हम भौतिक अवस्थाओं में रहने वाले लोग अपने भौतिक मन से उसकी तरफ़ अपनी पहुँच में भौतिक उदाहरणों से ही बहुत सहायता प्राप्त कर सकते हैं। जब हम किसी को महात्मा कहते हैं तो उसकी आत्मा के महान् होने का अर्थ बेशक यह नहीं होता कि वह भौतिक तौर पर लम्बा चौड़ा और मोटी है तो भी यह जरूर होता है कि उसकी आत्मा महान् अर्थात् विशाल, विस्तीर्ण, व्यापक है। 'महात्मा' शब्द से कहाने लायक वही महानुभाव है जिसकी आत्मा में इस प्रकार की कुछ महत्ता है। एक मेरे मित्र ने 'सन्त कौन है' इस विषय पर मुझे कुछ लिख भेजने को कहा था, जब कि वे सन्त सुधा' नामक एक पत्रिका प्रारम्भ करने लगे थे। मैंने उन्हें तीन वाक्य लिखे भेजे थे। उन्हें यहां उद्धृत कर देना सप्रयोजन होगा। 'सन्त' के स्थान पर 'महात्मा' शब्द का प्रयोग करते हुए वे तीन वाक्य निम्न हैं—

"महात्मा वह है जो ऊँचाई में सत्यलोक की ओर बढ़ता है, उत्तरोत्तर अधिकाधिक प्रकाशमान अवस्थाओं में से गुजरता हुआ।

"महात्मा वह है जो गहराई में अन्दर अन्दर पैठता हुआ और खोजता हुआ अपने अन्तरात्मा को पा लेता है, और उसका मन, प्राण और शरीर।

"महात्मा वह है जो विस्तार मे अपने को फैलाता हुआ एक एक प्राणी और एक-एक जीव में, भूतमात्र में अपने आपको पहिचानने और अनुभव करने लगता है।

मतलब यह है कि आत्मा भी तीन ओर गति या उन्नति करता है, इन तीनों ओर ही उन्नति करने से, बढने से आत्मा महान होता है। यदि कोई आत्मा इनमें केवल एक तरफ़-जैसे केवल ऊँचाई या गहराई में—बढ़ता है तो वह उन्नति ठीक प्रकार की नहीं होती। तब समझना चाहिये कि वहां कुछ गड़बड़ है। स्वस्थ सच्ची उन्नति तीनों तरफ़ ही होगी, ऐसे ही जैसे कि एक शिशु जब भौतिक रूप में बढ़ता है तो वह लम्बाई चौड़ाई मोटाई तीनों प्रकार से ही बढ़ता है

हम जानें या न जानें पर असल में हम सभी ऊपर ऊपर पहुंचना चाहते हैं, गहराई में अन्दर से अन्दर प्रविष्ट होना चाहते हैं, और विस्तार में परे से परे पहुंचना चाहते हैं। आत्मा क्या चाहता है उसकी अभीप्सा क्या है यह यदि हम देख सकें तो हमें पता लगेगा कि हमारा आत्मा उड़ना चाहता है, ऊपर ऊपर अनन्त ऊँचाई तक पहुँचना चाहता है, उसके लिये वह कशमकश कर रहा है। आत्मा अन्द की तरफ़, भीतर भीतर घुसकर अन्तरतम को पहुँचना चाहता है वहां उसका कोई है जिसे बिना पाये उसे कल नहीं पड़ सकती, इसलिये वह भीतर से भीतर घुसना चाहता है एव विस्तार में फैलाव चाहता हुआ वह दूर से दूर अनन्त दूरी तक पहुंच जाना चाहता है, वहां बिना पहुँचे उसे विश्राम नहीं मिल सकता।

जब हम बच्चे थे तो यह पूछने पर कि परमात्मा कहाँ रहता है हमें लोग आकाश की ओर अँगुली करके बताते थे परमात्मा ऊपर है, हम पूछते थे कि क्या बादलों में है, हमें बताया जाता था कि वह बादलों से भी ऊपर है। पीछे ज्ञान की पुस्तकों में यह लिखा देखा और सुना भी, कि परमेश्वर भीतर है, हृदय के भीतर है। गीता में कहा है 'ईश्वर सर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति'। उपनिषदों में तो जगह जगह हृदय-गुहा का वर्णन आता है कि उस गंभीर गुहा में परमेश्वर छिपा हुआ है, 'गुहाहितं' 'गह्वरेष्ठम्' उसे अन्दर ढूढो, गुहा के अन्दर प्रविष्ट होवो। इसी तरह यह भी ज्ञानियों से सदा सुनने को मिलता है कि परमात्मा सब जगह फैला हुआ है, भूत भूत में रमा हुआ है। असल में ये तीनों बातें ही सही हैं। सचमुच ही परमात्मा ऊपर है, अन्दर है, और सर्वत्र फैला है और इसीलिये

हमारा आत्मा उस अपने परम आत्मा को पाने के लिये इन तीनों तरफ गति करता है, इन तीनों तरफ बढ़ना चाहता है। हम सभी चाहे इस बात को अनुभव करें या न करें, पर यह सच है। सचमुच हमारा आत्मा तीनों तरफ बढ़ना चाहता है, फैलना चाहता है, बल्कि इन तीनों तरफ बढ़ने को तड़फाया सा रहता है।

यदि यह सच है तो फिर हम ऊपर, बहुत बहुत ऊपर स्थित उस अपने परम आत्मा को एकदम पहुंच क्यों नहीं जाते? अन्दर सुगभीर गहराई में स्थित परम प्रभु को एकदम डूब कर उससे एक क्यों नहीं हो जाते? सब भूतों में विस्तृत अपने परम देव को हम सर्वत्र फैल कर आज ही प्राप्त क्यों नहीं कर लेते?

इसका कारण यह है कि तीनों तरफ ही रुकावटें हैं, तीनों तरफ हम बंधे हुए हैं, ऐसे बंधे हैं कि न हम वैदिक प्रार्थना खुलकर ऊपर यथेच्छ उठ सकते या बढ़ सकते हैं, न गहराई में तल तक पैठ सकते हैं, न अनन्त रूप से फैल सकते हैं। इसीलिये हमारी मानव आत्मायें—हम सब मानव जीवन—वैदिक ऋचा में प्रार्थना कर रहे हैं—

उदुत्तमं वरुण पाशमस्मद्
अवाधमं वि मध्यमं श्रथाय।
अथा वयमादित्य व्रते तव
अनागसो अदितये स्याम ॥

ऋ० १-२४-१५। यजु० १२-१२। साम पू० ६-३-१०-४॥
अथ० ७-८३-३, अथ० १८-४-६९।
तैत्ति० सं० १, ५, ११, ३, ४, २, १, ३।

शब्दार्थ

(वरुण) हे वरुण! (अस्मद्) हम से, हमारे (उत्तम पाशम्) ऊपर के पाश को, बंधन को (उत् [श्रथाय]) ऊपर को खोल दे। (अधमं [पाशम्]) नीचे के [बंधन को] (अव श्रथाय) नीचे की तरफ खोल दे, ढीला कर दे। (मध्यमं [पाशम्]) बीच के बंधन को (वि श्रथाय) विशेषतया खोल दे। (अथ) तब (वय) हम, (आदित्य) हे आदित्य! (ते व्रते) तेरे व्रत में रहते हुये (अनागसः) निष्पाप, निर्दोष (अदितये) अदिति के लिये (स्याम) हो जायें।

यह प्रार्थना क्या है, बद्ध मानव आत्माओं की तड़पन है कि वे बन्धनों से, तीनों बन्धनों से किसी तरह छुटकारा पाकर अदिति की निःसीमता, अनन्तता, अमित बंधन-मुक्तता में स्वतन्त्र हो विचर सकें।

शुनः शेप की गाथा

पाठक देखेंगे कि यह वही अति प्रसिद्ध (चारों वेदों में पायी जाने वाली, अथर्ववेद में एक के भी बजाय दो बार गायी गयी) ऋचा है जिसके कि अन्तिम चरण को हम अपना आदर्श वाक्य करके अपना चुके हैं। पीछे के गाथा-काल में जब कि गाथा द्वारा सत्यों के वर्णन करने की प्रथा थी वेद के इस प्रसिद्ध मन्त्र से या इन सूक्तों से सबद्ध भी एक गाथा कही गयी है। कहते हैं कि शुन-शेप नाम का एक ऋषि था जिसे कि उसके माता-पिता ने यज्ञ में बलि चढ़ाने के लिये राजा को बेच दिया था। जब उसे बलि चढ़ाने के लिये यज्ञ-स्तंभ से तीन जगह (ऊपर, मध्य और नीचे) बाध दिया गया तो उसने व्याकुल हो कर अग्नि, भग, सविता आदि देवों से रक्षा के लिये, बन्धन-मुक्ति के लिये प्रार्थना की, अन्त में वरुण देवता को पुकारा। अन्तिम क्षण उसकी प्रार्थना सुनी गई और वह बन्धन मुक्त हो गया। मूल वेद में तो स्पष्ट ही ऐसी किसी कहानी का निशान भी नहीं है। पर यह गाथा जिस सत्य को चित्रित करने के लिये रची गई है उसके अनुसार शुनःशेप और कुछ नहीं है वह मानवीय आत्मा के लिये एक मनुष्य का रूपक है 'हम सभी सुख को उत्पन्न करना चाहने वाले हैं ('शुन शेप' शब्द का शब्दार्थ यही प्रतीत होता है)। इस वेदमन्त्र में तो एकवचन में नहीं, किन्तु बहुवचन में प्रार्थना है। इसलिये कथा के उस एक शुनःशेप की नहीं किन्तु बन्धन-मुक्त होना चाहने वाले सभी मानव जीवों की (शुन.शेपों की) यह नित्य प्रार्थना है। शुनःशेप का नित्य इतिहास आज भी घटित हो रहा है। पाप के त्रिविध बंधन से बधी हुई समस्त मानवता की ही यह पुकार है, वरुण देव के प्रति मोक्ष के लिये उसकी आन्तरिक अभीप्सा है, क्योंकि अदिति के पुत्र (आदित्य) वरुण आदि देवों की दिव्य शक्तिया ही हैं जो उसे इन पाशों से छुड़ा सकती हैं। यह असल में मानवता की आत्मा की उस प्यास, तृष्णा का वर्णन है जो कि सीमा, परिमितता के बन्धनों को खोल अदिति (देवमाता, जगन्माता) की अनन्तता, निर्बाध असीमता में मुक्त होना चाहती है। वरुण वह दिव्य शक्ति है

जो अपरिमित विस्तार का अधिपति है अत उससे अदिति की असीमता में मुक्त कर देने की प्रार्थना की गई है। उसे कहा गया है कि "हमारे ऊपर, मध्य और नीचे के पाशों को खोल दो जिससे कि हे अदिति के पुत्र। हम तेरे नियम में व्रत में रहते हुए अनागस् हो जायें, अदिति के लिये अनागस् हो जायें।" इस गाथा के चित्र को पूरा २ देखना चाहें तो हम समझ सकते हैं कि हम सभी को हमारे माता-पिता द्यावापृथिवी ने अन्धकार के राजा के हाथ नीचे के अदिव्य सुखों के धन के बदले बेच दिया है। बहुत से लोग हर रोज बलि भी चढ़ रहे हैं। पर जो सच्चे सुख के लिये अभीप्सु हो 'बलि का बकरा' नहीं होना चाहते, जो दिव्य जीवन की प्राप्ति के लिये 'अदिति' के बनाना चाहते हैं और आन्तरिक भाव से बन्धनमुक्तता की प्रार्थना करते हैं उन शुनःशेपों की प्राथना सुनी जाती है और वरुण आदि दिव्य शक्तियां उन्हें अदिति के लिये तीनों बन्धनों से मुक्त कर देती हैं, वे मुक्त हो अदितिमय दिव्य जीवन प्राप्त करते हैं।

तीन बन्धन

पर ये ऊपर, मध्य और नीचे के बन्धन क्या हैं? यह तो ऊपर मोटे तौर पर कह दिया गया है कि ये मन, प्राण और अन्न के बन्धन हैं या इन तीनों की अनृतगति रूप पाप के बन्धन हैं। पर इसे और स्पष्ट किये जाने की जरूरत है।

हम ऊपर सिर में, मध्य, में हृदय में और नीचे मूलाधार (नाभि के भी नीचे) मे बँधे हुए हैं। आत्मा (मानव आत्मा) को परिमित, सीमित अतएव बद्ध करने वाले ये मन प्राण शरीर ही है। मनुष्य का ज्ञान उसकी प्रकाश की तरफ, सत्त्व की तरफ ऊर्ध्वगति मन द्वारा बँधी हुई है। अतएव यह उत्तम बन्धन कहाता है। इसे सत्त्व का बन्धन, सात्त्विक बन्धन भी कह सकते हैं। सत्त्व ने या मन ने मानसिक शरीर द्वारा या आहङ्कारिक कारण-शरीर द्वारा आत्मा को बाध रखा है। मध्य का बन्धन प्राण का है, इसने भावों, भावावेशों, उद्वेगों, आवेगों, रागद्वेषों द्वारा हृदय में हमें बाध रखा है। अशान्तिमय प्राणों के इस बन्धन को राजसिक बन्धन या सूक्ष्म शरीर का बन्धन भी कहा जा सकता है 'अधम बन्धन बिलकुल नीचे भौतिक या 'अन्न' का बन्धन है जिसने अपनी जड़ता से ज्ञान और जीवनकी परिमित गति को भी बाध दिया और हमें अत्यन्त सीमित कर दिया है।

यहां हम यह भी देख सकते हैं कि वस्तुओं के त्रिविध विस्तार का मन,

प्राण, शरीर से क्या सम्बन्ध है। यह हम जानते हैं कि स्थावर योनि (वृक्ष वनस्पति) अन्न-प्रधान है, इनमें प्राण और मन विकसित नहीं हुआ है, तिर्यक् योनि (पशु पक्षी) प्राण-प्रधान है ये अन्न से तो ऊपर हुए हैं पर इनमें भी मन विकसित नहीं हुआ हैं। मानव योनि मनःप्रधान है, मनुष्य अन्न प्राण से ऊपर उठे हैं और इनमें मन भी विकसित हुआ है। इसलिये शरीरप्रधान स्थावरों में मुख्यतया मोटाई है चौड़ाई (विस्तार) और लम्बाई (ऊँचाई) उनमें विकसित नहीं हुई। पर प्राणप्रधान तियक्योनि में मुख्य गुण चौड़ाई (विस्तार) है, लम्बाई (ऊंचाई) इसमें भी विकसित नहीं हुई। तिर्यक् गति का अर्थ संस्कृत में होता है तिरछी, आड़ी, दिगन्तसम (Horizontal) गति। वेद में तथा संस्कृत साहित्य में प्राण की गति या आकृति तिरश्चीन मानी गई है इसलिये पशुपक्षी पड़ी हुई, चौड़ाई के रुख अवस्था मे रहते हैं। पर मनःप्रधान मानव प्राणी खड़ा हो गया है, लम्बाई या ऊँचाई के रुख हो गया है। वृक्ष वनस्पति का मेरुदण्ड सुप्त है या उलटा है। पशु पक्षिओं का मेरुदण्ड प्राण के द्वारा तिर्यक्, पड़ा हुआ दिगन्तसम हो गया है। और मनुष्य का मेरुदण्ड मन के जाग जाने से खड़ा, लम्बाई की ओर हो गया है। मतलब यह है कि अन्न (स्थूलभूत का गुण मोटाई है, प्राण का चौड़ाई और मन का ऊँचाई। इसलिये हमारे इस जगत् की सब चीजें लम्बाई चौड़ाई मोटाई इस त्रिविध विस्तारवाली बनी हुई हैं। और इसीलिये मन ऊपर की गति को बाधता है (और यदि खुल जाय तो ऊपर के रास्ते का खोलता है), तथा प्राण और अन्न मध्यम और नीचे की गति को बाधते हैं (और यदि खुल जायें तो इन दोनों मार्गों के खोलने वाले बन सकते हैं।)

पर बात यह है कि इन बन्धनों मे कुछ मजा है इसलिए बहुत से मानव प्राणी भी इन बन्धनों में अपने एक निम्न कोटि के सुख मे रह रहे हैं। पर जहां आत्मा जाग चुका है, जहा उच्च सुख की प्यास लग चुकी है वहां ये तीनों बन्धन उत्तरोत्तर असह्य होते जाते हैं। अन्त में ऐसी अवस्था आ जाती है जब उनका आत्मा तीनों तरफ़ के इस आवरण को, ढकने को, बन्धन को खोलने, भेदन करने और तोड़ देने के लिये व्यग्र हो जाता है। (शेष अगले अङ्क में)

अध्यात्म सुधा—

ईश्वर प्रणिधान

१ तन मन धन सब अपना तेरे, चरणों में मैं लाता हूं।
हे जगदीश्वर तेरे आगे, मैं निज शीस झुकाता हूँ॥

२ तू मेरी मङ्गलमयि माता, तू करुणामय परम पिता।
इसी लिये मैं अचल भक्ति से, निशिदिन तुझको ध्याता हूँ॥

३ ज्ञान भानु तू परम तेज से, मेरे तम को हरता है।
परम गुरो मैं श्रद्धा पूर्वक, तेरे गुण गण गाता हूँ॥

४ जो कुछ भी करता मैं प्रभु सब, तेरे अर्पण करता हूँ।
मैं निज जीवन मय माला की भगवन् भेंट चढ़ाता हूँ॥

५ कर विशुद्ध मम बुद्धि सुधाकर, सुध अपने सुतकी नित ले।
यही प्रार्थना करता निशि दिन तेरे सन्मुख आता हू॥

६ बने यज्ञ मय मेरा जीवन, पर उपकार परायण हो।
इसकी आहुति देकर अन्दर, मैं ज्ञानाग्नि जलाता हूँ॥

७ चलते फिरते खाते पाते, हो ईश्वर तेरा प्रणिधान।
यही भावना मन में धर कर, तुझ में चित्त लगाता हू॥

—धर्मदेव

आर्य्य समाज के नियमोपनियमों पर विचार

[लेखक—श्री पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय एम० ए० उपप्रधान,
सार्वदेशिक आर्य्य प्रतिनिधि सभा]

सार्वदेशिक जून १९४३ पृ० १८२ के आगे

ये उपनियम सन् १८७७ से लेकर १९३७ ई० तक अर्थात् ६० वर्ष तक चलते रहे। इस बीच में कई प्रश्न उपस्थित होगये। पिछले नियमों में जो १८७७ ई० से पहले के हैं एक समाज के मुख्य और अन्य समाजों के शाखा मात्र होने का विधान है। परन्तु उस विधान मे यह नहीं बताया गया कि मुख्य और शाखा समाज का परस्पर क्या सम्बन्ध होगा और शाखा समाज का किन किन बातों में कहा तक स्वतन्त्रता रहेगी। यह विचार केवल दो ही वर्ष रहा था और उस समय समाज भी बहुत ही अल्प संख्या में थे। इसके अतिरिक्त श्री स्वामीजी महाराज जीवित थे अतः साधारण अवस्था में उनके मौखिक परामर्श से भी काम चल जाता होगा। परन्तु नये विधान के साठ वर्ष के लम्बे युग में नई नई समस्यायें खड़ी होगई जिनका इस नये विधान में भी समाधान नहीं था।

सब से प्रथम सैद्धान्तिक प्रश्न उठा। उसका रूप यह था कि क्या आर्य्य समाज का सदस्य होने के लिये केवल १० नियमों का स्वीकार करना ही पर्याप्त है या श्री स्वामीजी मन्तव्य-अमन्तव्यों को स्वीकार करना भी आवश्यक है। दस नियमों में वेदों का उल्लेख तो है, परन्तु बहुत से वेदों का मानने वाले जो अपने को सनातनधर्मी कहते हैं मूर्तिपूजा और मृतक श्राद्ध को भी मानते हैं। इनके विरुद्ध दस नियमों में कोई उल्लेख नहीं है। माना कि दूसरे नियम मे ईश्वर के गुण कर्म स्वभाव का विस्तृत उल्लेख है तथापि ऐसी कोई बात नहीं है जिससे "सनातनधर्म" के अवतारवाद का सर्वथा बहिष्कृत किया जा सके। स्वमन्तव्या-मन्तव्य को पूरा पूरा मानना भी मात्रा से बढ़ जाता है क्योंकि उनमें कई साधारण भौगोलिक बातें भी दी हुई हैं जिनको सिद्धान्तों की कोटि में नहीं लाया जा सकता। इसके अतिरिक्त एक बार समाज में 'मास-भक्षण' के वेदानुकूल या वेद-विरुद्ध होने का एक प्रबल प्रश्न उठ खड़ा हुआ जिसमें समाज के दो

दल हो गये और कम से कम पंजाब में दो भिन्न भिन्न दलों के दो भिन्न प्रकार के समाज बन गये यह झगड़ा बहुत दिनों चलता रहा। और अब भी समाप्त नहीं हुआ। परन्तु इस समय केवल इतना भेद है। मांसभक्षण को दोनों दल वेद विरुद्ध मानते हैं। परन्तु एक दल मांस-भक्षण करने वालों या मांस-भक्षण को विधेय समझने वालों को 'सदाचारी' की कोटि से बहिष्कृत समझता और दूसरा दल समझता है यह है सैद्धान्तिक प्रश्न।

परन्तु इसके अतिरिक्त वैधानिक समस्या भी है जिसका समाधान १८७७ ई० के उपनियमों में नहीं था। अर्थात् प्रत्येक समाज का एक स्वतन्त्र इकाई मानकर उसके सञ्चालन का विधान तो है परन्तु एक समाज का दूसरे समाज से क्या सम्बन्ध है। और क्या समाजों की प्रान्तिक या सार्वदेशिक केन्द्रीय संस्था भी कोई हो सकती है जो अन्त सामाजिक सम्बन्धों या संगठन पर शासन करे ऐसा कोई उल्लेख नहीं है। यह आवश्यकता तो थी ही। इस लिये उपनियमों में विधान न होने पर भी प्रान्तीय सभायें बनाली गईं। इनका नाम आर्य्य प्रतिनिधि सभा' रक्खा गया। पंजाब, संयुक्त प्रान्त, राजपूताना, मध्य प्रदेश, बिहार, बंगाल ब्रह्मदेश आदि में प्रान्तीय प्रतिनिधि सभायें खुल गईं और बहुत दिनों से काम कर रही हैं। पंजाब के दूसरे दल की समाजों ने भी अपनी एक प्रतिनिधि सभा अलग बनाली और उसका नाम प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा' रक्खा। कुछ दिनों पश्चात् सन् १९०८ में समस्त भूमंडल की प्रतिनिधि सभाओं या समाजों की एक केन्द्रीय संस्था की स्थापना हुई जिसका नाम सा० आ० प्र० सभा रक्खा गया। इसमें प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा को छोड़कर अन्य सब प्रतिनिधि सभाओं का प्रतिनिधित्व था और है। इन प्रतिनिधि सभाओं और सार्वदेशिक सभा के संचालन के लिये अलग नियमोपनियम बनाये गये, परन्तु आर्य्य समाज के उपनियमों में कोई धारा ऐसी न थी जिससे इन प्रतिनिधि सभाओं को प्रामाण्य प्राप्त होसके। १८७७ ई० के उपनियमों में ये दो बहुत बड़ी त्रुटियां थी एक सैद्धान्तिक जिसका वर्णन ऊपर किया गया और दूसरी अन्त सामाजिक। इसके अतिरिक्त छोटी मोटी अन्य बातें भी थीं जिनको मुख्य तो नहीं परन्तु गौण कहा जा सकता है।

एक और बहुत बड़ी त्रुटि थी जिस पर यद्यपि अभी तक कोई आपत्ति नहीं उठी परन्तु उठ सकती थी। सन् १८७७ ई० के उपनियमों की एक धारा (४०वीं) यह है:—

'ये उपनियम वर्ष वर्ष पीछे यथोचित विज्ञापन देने पर शोधे वा बढाये घटाये जा सकते हैं"।

यहा यह स्पष्ट नहीं है कि विज्ञापन कौन द किस को दे, और कौन परिवर्तन करे। यदि एक प्रान्त के दस समाज अलग अलग विज्ञापन देकर अपने अपने लिये अलग अलग परिवतन करलें ता परिणाम यह होगा कि भिन्न २ समाजों के उपनियम भिन्न २ हो जायेंगे और किसी प्रकार की समानता न रहेगी जिसके आधार पर सगठन रक्खा जा सके। भविष्य मे समाज के सगठन को बहुत बडा धक्का लग सकने की आशका है। महर्षि दयानन्द ने परोपकारिणी सभा का जो विधान रचा था उसमे कुछ कुछ ऐसा विधान पाया जाता है कि भिन्न २ समाज परस्पर कन्हीं अशों मे सगठित हो सकें। परन्तु परोपकारिणी सभा को प्रतिनिधि सभा का रूप प्राप्त नहीं हा सका और वह सभा केवल ऋषि की पुस्तकों की प्रकाशक मात्र रह गई। इस बीच मे प्रतिनिधि सभायें पूरा बल पकड गई। इस लिये आवश्यक समझा गया कि उपनियमों मे परिवर्तन किया जावे और आर्य्य समाजों को विज्ञापन देकर जो उपनियमों का नया रूप बनाया गया उसे १९३७ ई० में सार्वदेशिक सभा की ओर से प्रकाशित कर दिया गया। प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा से सम्बद्ध समाजों को छोडकर क्योंकि यह सभा अभी तक सार्वदेशिक के अन्तर्गत नहीं है) शेष सभी समाजो मे यही उपनियम माने जाते हैं। और इनकी धारा ४८ इस प्रकार है. –

ये उपनियम आवश्यकतानुसार 'सार्वदेशिक आर्य्य प्रतिनिधि सभा' द्वारा यथोचित विज्ञापन देने पर शोधे वा बढाये घटाये जा सकते हैं।

१९३७ ई० की ४८ वी धारा और १८७७ की ४० वी धारा की तुलना करने पर स्पष्ट हो जाता है कि अब आर्य्य समाज की नीव पहले की अपेक्षा अधिक सुदृढ़ होगई है। अब यदि कोई परिवतन हुआ भी तो समस्त समाजों की अनुमति से होगा और सब समाजों पर लागू होगा। अब यह आशका नहीं रही कि भिन्न २ समाज आपा धापी करके अपने अपने स्वार्थ के अनुसार भिन्न २ परिवतन करलें और शनै २ समस्त कलेवर ही भिन्न होजाय। अब यह भी नहीं होसकता कि प्रतिवर्ष उपनियम बदले जा सके। स्थायित्व के लिये आवश्यक है कि परिवर्तन बहुत कम हों। और अत्यन्त आवश्यकता पडने पर ही हों। यदि प्रत्येक समाज को

यह अधिकार हो जाय तो एक समाज जिस में दस या पचास सदस्य हैं बहुत ही सुगमता से आवेश में आकर अपने उपनियम बदल सकता है परन्तु सर्वदेशीय सहस्रों समाजों की अनुमति प्राप्त करना सुगम नहीं है, और न इतने बहु संख्यक समाजों के सभी सदस्य किसी क्षणिक आवेश का शिकार हो सकते हैं। इस प्रकार इस आवश्यक परिवर्तन ने आर्य्य समाज के विधान को क्षणिक होने से बचाकर स्थायी बना दिया।

प्रान्तीय तथा सार्वदेशिक सभाओं की केन्द्रीय शक्ति को बढ़ाने के निमित्त निम्न तीन धारायें बढ़ाई गई —

४५—प्रत्येक प्रान्त में एक मुख्य सभा होगी जिसका नाम 'आर्य्य प्रतिनिधि सभा' होगा। सब समाजों की व्यवस्था उसी के अधीन तथा अनुकूल होगी। यह सभा अपने नियमादि स्वय बनायेगी।

४६—स्थानीय समाज की ओर से प्रान्तीय प्रतिनिधि सभा की किसी आज्ञा वा व्यवस्था का घोर और निरन्तर विरोध होने अथवा स्थानीय समाज में ऐसी व्यवस्था होजाने पर जो प्रान्तीय सभा की सम्मति में समाज के लिये हानिकारक हो प्रान्तीय सभा के प्रधान को अपनी अन्तरग—सभा की अनुमति से अधिकार होगा कि उस स्थानीय समाज के सगठन को नियत समय के लिये स्थगित कर देवे और समाज तथा समाज के आधीन सस्थाओं का प्रबन्ध उचित रीति से करावे।

४७—समस्त आर्य्य जगत् के लिये एक मुख्यतम सभा होगी जिसका नाम 'सार्वदेशिक आर्य्य प्रतिनिधि सभा' होगा। समस्त आर्य्य प्रतिनिधि सभाओं के पुरुषार्थ को संयुक्त करके आर्य्य जगत् की समुचित व्यवस्था करना उसका मुख्य कर्तव्य होगा। यह सभा अपने नियमादि स्वय बनावेगी।

इन तीन उपनियमों में आर्य्य समाजों के सगठन का मूल बीज निहित है। १८७७ ई० के उपनियमों में यह बात नहीं थी। इन उपनियमों के होते हुये कोई समाज सगठन से बाहर नहीं हो सकता। उसके उपनियम इस बात की आवश्यकता पर बल देते हैं कि प्रत्येक समाज को प्रतिनिधि या सार्वदेशिक सभा में प्रविष्ट और सम्बन्धित होना ही चाहिये और उसको उन सब नियमों का पालन करना चाहिये जो सगठन के लिये आवश्यक हैं। यहाँ एक बात और स्पष्ट हो जाती है। यह ठीक है कि प्रान्तीय प्रतिनिधि सभायें या सार्वदेशिक सभा

उन प्रतिनिधियों से मिलकर बनती हैं जिनका निर्वाचन समाजों के द्वारा होता है परन्तु इसका यह अर्थ नहीं है कि प्रतिनिधि सभाएँ या सार्वदेशिक सभा समाजों के आधीन है अथवा उनकी आज्ञा मानना या न मानना समाजों की अपनी इच्छा पर है। ऊपर की धाराओं से स्पष्ट है कि कोई समाज जो समाज के संगठन को अच्छा समझता है इन सभाओं की अवहेलना नहीं कर सकता। और यदि करे तो समस्त आर्य जगत् को इस अवहेलना को तिरस्कार की दृष्टि से देखना चाहिये। किसी समुदाय को सुसंगठित रखने का एक मूल मन्त्र यही है। आर्य समाज का १० वा नियम यह है —

"सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिये और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।"

यह नियम आर्य समाज और उसके सदस्यों से सम्बन्ध रखता है। परन्तु इसी नियम का विस्तृत रूप ऊपर की तीन धारायें हैं। क्योंकि जैसे व्यक्ति समाज की परतन्त्रता का उल्लङ्घन करके समाज को तोड़ सकते हैं इसी प्रकार एक समाज केन्द्रीय संस्था की परतन्त्रता का उल्लङ्घन करके समस्त केन्द्रीय संगठन को नष्ट कर सकता है। इसका अर्थ यही है कि प्रत्येक समाज को केन्द्रीय सभाओं के शासन में रहना चाहिये। इसी में इनका कल्याण है और यदि कोई समाज ऐसा करने को तैयार नहीं है तो उसका यह कार्य निन्दनीय समझा जाना चाहिये।

सैद्धान्तिक प्रश्न का समाधान करने के लिये इन उपनियमों में दो धारायें बढ़ाई गई हैं। पहली धारा (३) की टिप्पणी में यह थाः—

"मैं प्रसन्नतापूर्वक आर्य समाज के उद्देश्यों के (जैसा कि नियमों में वर्णन किये गये हैं) अनुकूल आचरण स्वीकार करता हूँ मेरा नाम आर्य समाज में लिखलें।"

अब इसके स्थान में इतना बढ़ाया गया —

"मैं प्रसन्नता पूर्वक आर्य समाज के उद्देश्यों को (जैसा कि नियमों में वर्णन किये गये हैं) तथा मन्तव्यों को (जो वेदों के आधार पर ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों में लिखे गये हैं) मानता और उनके अनुकूल आचरण स्वीकार करता हूँ। मेरा नाम आर्य समाज में लिख लेवें।"

वेद और ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों का उल्लेख करके इन उपनियमों में सैद्धान्तिक अनिश्चितता को बहुत कुछ कम कर दिया गया। अब यह तो सम्भव है कि गौण या अति परोक्ष बातों मे मतभेद रहे परन्तु उन सिद्धान्तों मे जिनका प्रभाव सर्व साधारण के जीवन पर पड़ता है मतभेद होने की सम्भावना नही रही। अब कोई यह नहीं कह सकता कि मै वेदों को भी धर्म ग्रन्थ मानता हू और वेदों के अनुकूल होने से मूर्ति पूजा को भी विहित मानता हू। यदि कोई ऐसा व्यक्ति है तो उसका अधिकार आर्य समाज का सदस्य रहने का नहीं है। यदि केवल 'वेदों' का नाम लेकर भिन्न २ मतावलम्बी आर्य समाज मे घुस आवें तो आर्य समाज चू चू का मुरब्बा हो जाय और ऋषि दयानन्द का मिशन सर्वथा विफल हो जाय।

(शेष अगले अङ्क मे)

महर्षि दयानन्द तथा अन्य धर्म सुधारक

(लेखक—श्री प० हरिदत्तजी वेदालंकार गुरुकुल कांगड़ी)

प्राय यह कहा जाता है, कि महर्षि दयानन्द ने अन्य मतों की बड़ी कड़ी आलोचना की है। वर्तमान युगके एक महापुरुष महात्मा गाधी ने इसी आधार पर, उनके सत्यार्थप्रकाश का कुछ वर्ष पूर्व बड़ा निराशाजनक ग्रन्थ पाया और यह लिखा, कि स्वामी जी असहिष्णु थे। स्वामी जी वास्तव मे अन्याय अत्याचार, पाप, दम्भ, ढोंग और धर्म के नाम पर चलने वाली ठगी के प्रति घोर असहिष्णु थे। उनका हृदय एक क्षणमात्र के लिये भी यह मिथ्या आडम्बर सहन नहीं कर सकता था। हिन्दू धर्म के विकृत रूप एवं दूसरे धर्मों के भ्रान्त स्वरूप देखकर उन्हे मर्मान्तिक वेदना होती थी। वे उन भ्रमों और गलतियों को दूर करना चाहते थे। धर्म में आये विकारों को हटाना चाहते थे। हिन्दू धर्म के शरीर में विष का सचार करने वाला जो मवाद इकट्ठा होगया था उसको निकालना उनका परम अभीष्ट था। इस मवाद को निकालने के लिये, यदि उन्हे नश्तर का प्रयोग करना पड़ा तो वे उससे तनिक भी नहीं हिचके। दर्द से कराहते हुए रोगी को डाक्टर का नश्तर थोड़ी देर के लिये, असह्य पीड़ा पहुँचाने वाला प्रतीत हो, किन्तु अन्ततोगत्वा वह उसका लाभ ही करता है। चतुर शल्य चिकित्सक कभी क्रूर या निष्ठुर नहीं कहा जाता। स्वामी जी की आलोचना इसी प्रकार के मवाद को निकालने वाली थी। उसे कठोर या अनुचित कहना स्वामी जी के साथ घोर अन्याय करना है।

इमसन के शब्दों मे सभी धर्म सुधारकों का जन्म पुञ्जीभूत पापों का अन्त करने के लिए होता है। गीता में श्रीकृष्ण ने कहा है कि धर्म की ग्लानि होने पर धर्म सस्थापन के लिये धर्मसुधारक जन्म लेते है। धर्मसुधारकों के हृदय मे प्रचलित बुराइयों का अन्त करने के लिये तीव्र अग्नि धधकती रहती है। वे अपने उपदेशों में उन बुराइयों की आलोचना करते हैं और अपने अनुयायियों को उन बुराइयों से बचने की प्रेरणा करते हैं। महात्मा जरथुस्त से लेकर स्वामी दयानन्द तक सभी धर्म सुधारकों ने प्रति पक्षियों की ऐसी आलोचना की है। यदि हम विभिन्न धर्म सुधारकों की आलोचना का मिलान करें तो हमें ज्ञात होगा कि स्वामी जी की आलोचना उन आलोचनाओं की तुलना मे बहुत ही नरम है।

विश्व के ज्ञात धार्मिक इतिहास में, सर्व प्रथम सुधारक महात्मा जरथुस्त हुए हैं। ईरान के धर्म में जब एक सच्चे ईश्वर की पूजा के स्थान पर, अनेक देवी-देवताओं की पूजा होने लगी, सोमयज्ञ के असली तत्व को भूलकर पुरोहितों ने उसे मदिरापान का हेतु बना लिया और यज्ञों के नाम पर जादू टोना और पाखण्ड का प्रचार होने लगा, उस समय महात्मा जरथुस्त ने विकृत धर्म के विरुद्ध विद्रोह का भण्डा खड़ा किया और धर्म को दूषित करने वालों की खूब निन्दा की। वैदिक भाषा में, देव शब्द अनेक अच्छे अर्थों में, तथा पूजा योग्य व्यक्तियों के लिये प्रयुक्त होता था। बाद में धर्म के विकृत होने पर, यह शब्द अग्नि, वायु, आदित्य आदि प्राकृतिक शक्तियों तथा फिर इन्द्र, शिव आदि देवताओं के लिये प्रयुक्त होने लगा। जरथुस्त ने इस विकृत धर्म के विरुद्ध आवाज उठायी। उन्होंने देवों अर्थात् उस समय के दूषित धर्म की पूजनीय शक्तियों की घोर निन्दा की। पारसी धर्म में दीक्षित होने का जो गुरु मन्त्र, यस्न (१२ १) में दिया गया है— उसमें इस बात पर बहुत बल है कि मैं आज से देवों का शत्रु बनता हूँ। उसी यस्न की चौथी ऋचा देखिये जो पारसी धर्म में दीक्षित प्रत्येक अनुयायी से कहलायी जाती है।

"मैं धूर्त, दुष्ट, शरारतों के उत्पादक, अतीव विषमय, नाशक एव नीचतम देवों का परित्याग करता हू।"[१] आर्यों के आराध्य देवों को ये विशेषण देना, उस समय पता नहीं अपराध था या नहीं पर इस समय तो यह भारतीय दण्ड विधान धारा २९५ अ का विषय अच्छी तरह बन सकता है।

स्पन्ता मन्यु गाथा में, परमात्मा के प्रति यह प्रार्थना की है। हे मज्दा। वे शक्तिशाली और साहसी व्यक्ति कब पैदा होंगे जो मादक द्रव (सोम) को भ्रष्ट करेंगे। यह शैतानी कला उन मूर्त्ति पूजकों को गुस्ताख बनाये हुए है और उनके देशों में सर्वत्र छायी हुई शैतानी भावना उनका अभिमान बढ़ा रही है।[२]

पारसी धर्म में देव का अर्थ ही दानव है और भारतीय देवों का राजा इन्द्र, उनके धर्म में एग्रामन्यु के बाद सबसे बड़ा शैतान है।[३] अपने विरोधी धर्म के

१. दे यस्न १२.४
२ दे यस्न ४८.४
३. दे वेन्ददाद १९:४३

देवताओं की इस प्रकार अवमानना वर्तमान समय में शिष्टजनानुमोदित नहीं मानी जा सकती।

महात्मा जरथुस्त के बाद और कुछ लोगों के मत में उसी समय भारत में महात्मा बुद्ध बहुत बड़े धर्मसुधारक हुए। महात्मा बुद्ध ने भी, समय के प्रचलित धर्म के विकारों को दूर करने का प्रयत्न किया। प्रति पक्षियों के प्रति उनकी भाषा इतनी उग्र नहीं थी जितनी प्रति पक्षियों की उनके प्रति। उनके एक विरोधी ब्राह्मण अम्बष्ठ ने जब उन्हें इभ्य (नीच) काला और ब्रह्मबन्धु के पैर की सन्तान तथा उनकी जाति को चंड क्षुद्र, और बकवासी (रभस) कहा[1] उस समय भी बुद्ध ने शान्त रहकर अम्बष्ठ के कृष्णायन गोत्र की ही निन्दा की तथा ब्राह्मणों की हीनता और क्षत्रियों की श्रेष्ठता प्रति पादित की है। अम्बष्ठ के प्रति कुछ दुर्वचन नहीं कहे। किंतु देवदत्त के प्रति महात्मा बुद्ध ने बहुत कठोर शब्दों का प्रयोग किया है। बुद्ध ने देवदत्त के सम्बन्ध में यह भविष्यवाणी की थी, कि देवदत्त अपायिक (दुर्गति में जाने वाला) है, देवदत्त नैरयिक (नरकगामी) है, देवदत्त कल्पस्थ (कल्पभर नरक में रहने वाला) है[2]। यह भविष्यद्वाणी देवदत्त के मुँह से कहलायी गयी है। इसलिये इस पर कुछ अविश्वास भी हो सकता है, किन्तु जब देवदत्त ने महात्मा बुद्ध से भिक्षु संबंधी याचना को तीसरी बार दुहराया तो महात्मा बुद्ध ने उत्तर दिया देवदत्त। सारिपुत्र मौद्गल्यायन को भी मैं भिक्षु संघ नहीं देता, तुम मुर्दे थूक को तो क्या[3]? देवदत्त के कट्टर विरोधी होने पर भी महात्मा बुद्ध के मुख से उपर्युक्त विशेषण शोभा नहीं देते।

महात्मा बुद्ध के बाद, हम यहूदी सुधारकों की आलोचना की ओर आते हैं यहूदियों में अपने से भिन्न मतवालों के लिए वाचिक असहिष्णुता पर्याप्त नहीं समझी गई। उन्होंने पारसी धर्म की तरह भिन्न मतावलम्बियों के आराध्य देवों की निन्दा नहीं की, किन्तु उनके प्रति क्रियात्मक असहिष्णुता दिखाई। पुराने अहदनामे की पहली पाँच पुस्तकें बहुत पवित्र एवं हजरत मूसा द्वारा ईश्वर प्रेरणा से लिखी हुई बताई जाती हैं। इस पंजनामे की पाँचवीं पुस्तक डिट्रानमी में अन्य मतवालों के साथ व्यवहार करने के विषय में जो निर्देश हैं, वे अधोलिखित हैं।

१ दे अम्बष्ठ सुत—बुद्ध चर्या पृ. २११—१२
२ दे अभयराजकुमार सुत बुद्ध चर्या पृ ४५६
३. देवदत्त सुत—

"यदि तेरा भाई, तेरी माता का पुत्र या तेरा पुत्र या तेरी लड़की या तेरी पत्नी या तेरा मित्र जो आत्मा जैसा है, तुझे प्रच्छन्न रूप से, प्रलोभित करता हुआ कहे कि, आओ हम दूसरे देवों की उपासना करें, जिनको तू नहीं जानता है, जो तुम्हारे चारों ओर हैं तू उससे सहमत मत हो, उसकी बात मत सुन, उस पर रहम मत खा, उसको मत छोड़, उसको मत छिपा-किन्तु उसे ❀ निश्चय से मार डाल, उसको मारने के लिए तेरा हाथ सब से पहले उठे और उसके बाद अन्य सब लोगों के हाथ उठें। तू उसे पत्थरों से मार। (डिट्रानमी Deuteronomy १३। ६, ७, ८, ९, १०)

लेविटिकिस (Leviticus) में परमात्मा की ओर से यह कहलाया गया है, मैं तुम्हारे ऊंचे स्थानों और मूर्तियों का नाश करूंगा, तुम्हारे शवों को तुम्हारी मूर्तियों के शवों पर डालूंगा और तुम से घृणा करूंगा। अध्याय (२६। ३०)

इन उद्धरणों से स्पष्ट है कि यहूदियों का परमात्मा अन्य मतों व देवी देवताओं की पूजा के प्रति घोर असहिष्णु है और इसलिये यहूदी मत के अनुयायियों का यह परम कर्त्तव्य है कि वे इतर देवों के उपासकों को निश्चय से मार डालें।

पुराने अहदनामे (Old Testament) से ही हमें ज्ञात होता है कि इतर धर्मावलम्बियों के ऊँचे स्थानों (मन्दिरों) के गिराने की उपर्युक्त ईश्वरीय आज्ञा का कई यहूदी राजाओं ने पालन किया। दाउद के बेटे जोशिया (Josiah) ने अपने राज्य के १२ वे वर्ष में जूडा राज्य व जेरुसलम को ऊँचे स्थानों, (मन्दिरों), उत्कीर्ण एवं पिघला कर बनाई हुई मूर्तियों से, शुद्ध करना शुरू किया।" उन्होंने उसकी उपस्थिति में बालिम की वेदिया तोड़ीं तथा ऊपर की मूर्तियों को नीचे काट गिराया तथा पिघला कर बनाई मूर्तियों के उसने तोड़ कर टुकड़े २ कर दिये। उसने पुरोहितों की हड्डियों को, उन्हीं की वेदियों पर जलाया, और जूडा और जेरुसलम को शुद्ध किया। (दूसरा क्रानिकल्स 2 Chronicles ३४।३,४,५,)

दूसरी राजाओं की पुस्तक (Kings 2) में जोसिया नाम के एक दूसरे राजा द्वारा इतर धर्मावलम्बियों के देवस्थानों के नष्ट करने, इन्हें हड्डियों आदि द्वारा अपवित्र करने तथा मूर्ति पूजक पुरोहितों के दमन करने का विस्तृत वर्णन है।

ईजेकियल (Ezekiel) में परमात्मा का उपर्युक्त आदेश फिर दोहराया गया है—"तुम्हारी वेदियाँ उजाड़ होंगी, तुम्हारी मूर्तियाँ तोड़ दी जाएंगी और मैं तुम्हारे मारे

हुए आदमियों को तुम्हारी मूर्तियों के आगे रखूगा। मैं तुम्हारी वेदी के चारों ओर, तुम्हारी हड्डिया बिखेर दूगा। (इजे - ६। ४। ५)

मूर्ति पूजकों के लिए पुराने अहदनामे में एक ही विधान है। और वह है मृत्यु। द्वि० Deuteronomy 17-2-7 (१७। २। ७)

१०।२।७। द्विट्रानमी में विस्तार से इसका विधान दिया गया है और परमात्मा की ओर से वह आदेश दिया गया है कि, यदि तुम्हारी सीमा के भीतर, कोई अन्य देवों, सूर्य, चन्द्र आदि का उपासक हो, और परिश्रम पूर्वक जाच करने बाद, उसका अपराध सिद्ध हो जाय, उसे पत्थरों से तब तक मारते रहो, जब तक कि मर न जाय।

पुराने यहूदी पैग़म्बरों में इजाया (Isaiah) का स्थान बहुत ऊँचा है। मूसा के बाद यही सबसे बड़ा पैग़म्बर समझा जाता है। इस पैग़म्बर की वाणी पुराने अहदनामे में इसी के नाम से ६६ अध्यायों में सगृहीत है। इसमे विधर्मियों को जिन विशेषणों से स्मरण किया गया उसकी—बानगी यह है—

"उसके प्रहरी (धर्मयाजक) अन्धे हैं, अज्ञानी हैं, मूक कुत्ते हैं वे भौंक नहीं सकते—वे स्वप्न लेने वाले, लेटने वाले, और ऊँघ चाहने वाले हैं। वे लोभी कुत्ते हैं जो तृप्त नहीं होते। उन सबने अपने भले के लिए अपना अपना मार्ग चुना है।"१ His watch men are blind, they are all ignorant, they are all dumb dogs इत्यादि।

महात्मा ईसा को शान्ति का दूत एव अवतार समझा जाता है। उन्होंने अपने शत्रुओं से भी प्रेम करने का उपदेश किया है। किन्तु उस समय के यहूदी पुरोहितों की आलोचना करते हुए उन्होंने जिन शब्दों का उपयोग किया है, वे शत्रुओं से भी प्रेम करने वाले शान्ति के दूत के मुँह से शाभा नहीं देते। ईसा का प्रेम का यह उपदेश, शायद धर्म से भिन्न क्षेत्रों के लिए था। धर्म के क्षेत्र में तो वे विरोध उचित और प्राप्य मानते थे। उन्होंने अपने शिष्यों को प्रवचन करते हुए कहा है, यह मत सोचो कि मैं पृथ्वी पर शान्ति स्थापित करने के लिए आया हू। मैं शान्ति स्थापित करने नहीं, पर तलवार चलवाने आया हूँ।२ "Think not that I am come to send peace on earth, I came not to send peace, but a sword" Matt 10 34

१—इजाया ५६' ६-१०

२—मैथ्यू १०. ३४, ल्यूक की गास्पल मे भी ईसा ने ऐसे ही विचार व्यक्त किए हैं—दे ल्यूक १२: ४६,'५१, ५२, ५३।

ईसा के समय, फिलस्तीन में, यहूदियों में सबसे प्रबल, एव ईसा का जबर्दस्त विरोधी सम्प्रदाय फरीसियों का था। वे पुराने अहदनामे के शब्दों एवं कर्म काण्ड के पीछे, चिपटे हुए थे। ईसाने उनकी बड़ी कड़ी आलोचना की है। मैथ्यू के २३ वें अध्याय का अधिकांश भाग फरीसियों का निन्दागान है। जिसकी प्रत्येक आयत की यह टेक है कि तुम्हारा बुरा हो। विस्तार-भय से, हम यहा इसके दो-चार नमूने ही उपस्थित करेंगे।

Ye fools and blind etc (Matt 23-17)

ऐ मूर्खों और अधा। कौन बड़ा है सोना या वह मन्दिर जिससे सोना पवित्र होता है। (२३ १७)

हे मूर्खों और अन्धो। भेंट या वेदी, जिससे भेंट पवित्र होती है। (२३ १६) Woe unto you, Scribes and Pharises heygproorites

हे ढोंगी शास्त्रियों (लेखको) और फरीसियो, तुम पर हाय। (२३ २१)

हे अन्धे पथप्रदर्शको जो मच्छर को तो छान डालते हो, पर ऊँट को निगल जाते हो। (२३ . २४) Ye blind guides, which strain at a gnat and swallow a camel

हे कपटी शास्त्रियो और फरीसियो, तुम पर हाय। तुम कटोरे और थाली को ऊपर से माँजते हो पर भीतर वे चोर जबर्दस्ती और अन्याय से भरे हुए हैं। (२३ २५)

हे कपटी शास्त्रियो और फरीसियो, तुम पर हाय। तुम चूने से पुती कबरों के समान हो, जो ऊपर से सुन्दर दिखाई देती हैं पर भीतर मुरदों की हड्डियों और सब प्रकार की मलिनता से भरी हैं। (२३ २४)

हे साँपों और विषैले नागों (Vipers) * के बच्चो, तुम नरक के दण्ड से क्यों कर बच सकते हो। (२३ ' ३३) Ye serpents, ye generation of Vipers! how can ye escape the damnation of hell? (Matt 23-33)

साँप बाइबिल में धूर्तता क्रूरता, और धोके बाजी का प्रतीक समझा जाता है। आदम और हव्वा को शैतान ने साँप के रूप में अदन के बाग में परमात्मा की आज्ञा का विरोध करने के लिये प्रेरित किया था। इसलिये साँप बाइबिल की परिभाषा में एक बहुत कठोर दुर्वचन और अपशब्द है। ईसाके गुरु जॉन दि बैप्टिस्ट ने भी इसका प्रयोग किया है।

* मूल में Viper शब्द है। बाइबिल में यह विषधर सर्प के लिये है।

(७) "जब उस जौन दि (बैप्टिस्ट) ने बहुत से फरीसी और सदूसियों को अपने बप्तिस्मे के लिये आते देखा तो उसने उन्हें कहा—हे विषैले नागों की सन्तान। तुम्हें किसने आने वाले भय से भागने की चेतावनी दी है ? मैथ्यू ३-७

O generation of Vipers ! who hath warned you to flee from the wrath to come ? (Matt 3-7)

ईसा ने दूसरे स्थान पर इसी अपशब्द का दुबारा प्रयोग किया है।

'हे विषैले नागों की सन्तान। तुम बुरे होते हुए अच्छी चीजें कैसे बोल सकते हो मैथ्यू १२-३४) O generation of vipers how can ye being evil, speak good things ? (Matt 12-34)

ईसा के प्रमुख शिष्य तथा अनेक विद्वानों के मत में ईसाइयत के वास्तविक जन्मदाता सन्तपाल (Saint Paul) ने मकदूनिया के प्रसिद्ध शहर फिलीप्पी में रहने वाले अपने अनुयायियों के नाम जो चिट्ठी लिखी उसमें विरोधियों को इन शब्दों से स्मरण किया गया है।

उन कुत्तों, बुरा काम करने वाले और खतना करने वालों से सावधान रहो।

(अपूर्ण)

हिन्दू धर्म शास्त्रों में मांस भोजन का विधान

हिन्दू पण्डितों पर षड्यन्त्र का दोषारोपण

(लेखक—श्री प० जयदेवजी शर्मा वेदालङ्कार चतुर्वेद भाष्यकार अजमेर)

मि० अमरसिंह जी ने अपनी पुस्तक का चौथा अध्याय 'हिन्दूधर्म शास्त्रों में मास विधान' पर लिखा है। आप लिखते हैं—

"हिन्दू धर्म शास्त्रों ने मास को वर्जित नहीं किया है। यह तो जैनों और वैष्णवों ने मास को वर्जित किया है। पातञ्जलाश्रम हरद्वार के तेजनाथ स्वामी ने मांस निर्णय नाम पुस्तक में ३२६ ग्रन्थों से मास भक्षण को पुष्ट किया है। उनके पढ़ने से मालूम होता है कि पुराने आर्य मास के कितने चटोरे थे। जैनों, बौद्धों से दबकर उन्होंने मांस को त्यागा है। चाहे वे धर्म अब लुप्त प्राय हैं, तो भी इनका सिद्धान्त 'अहिंसा' वैष्णवों ने अपना लिया है। इसी का हिन्दू मस्तिष्कपर आतंक है। हिन्दू पण्डितों ने मासके विषयमें चुप्पी लगाने का षड्यन्त्र रच रक्खा है। महाभारत और रामायण के मांस विधायक भागों को वे लोग पाठ करते हुए छोड़ जाते हैं। इससे लोग समझते हैं कि इनमें मास विधान नहीं है। राधास्वामियों ने तो शाका भोजी होने का अपना सिद्धान्त बना रखा है इससे उनको बहुत सख्या में मुरीद मिले हैं। जो मास खाते हैं वे भी उसे पाप समझते हैं। मासाहारी शाकाहारियों के मास भक्षण पर किये आक्षेपों को अपना अपमान समझते हैं। कभी आर्य समाज में भी यह बात होती रही है। आर्य समाज में महात्मादल में यह बहुत दिनों तक चला। मास भक्षियों को बहुत बुरा-भला कहा गया। इसी कारण दो दल होगये" इत्यादि। आगे आपने मांस भक्षियों पर किये गये शाकाहारियों के आक्षेपों की बानगी दिखलाई है और बतलाया है कि बाद में आर्य समाज में मास पार्टी, घास पार्टी दो दल होगये। तबसे मास पार्टी की समाजों का संगठन अलग होगया। आपकी सम्मतिमें मास भोजी पर्याप्त प्रभाव से आर्य समाज में घास पार्टी वालों का मुकाबला कर सकते हैं। स्वा० दयानन्द की सम्मति खुलेआम रख सकते हैं। उन्होंने मास भोजन को अपवाद रूप में रखा है। इस प्रकार वे शाक भोजियों को सदा के लिये चुप करा सकते हैं।

(समीक्षा)—इस अध्याय में म० अमरसिंह जी ने अपने पक्ष में किसी धर्म शास्त्र का कोई उद्धरण नहीं रखा जिससे उनपर विचार किया जाता कि उनका क्या अभिप्राय धर्म शास्त्रों से है। क्या वे धर्म शास्त्र (प्राचीन लॉ—बुक्स Law-Books) मास का विधान कर रहे हैं या मास भोजियों पर पाबन्दिया लगा रहे हैं ? धर्म शास्त्र अपने २ समय के राजधर्म या राज नियमों के प्रतिनिधि हैं। राज्य में अच्छे-बुरे नीच और ऊँच सब प्रकार की प्रजाओं का होना सम्भव है। उनपर राजाओं ने अपनी २ प्रवृत्ति के अनुसार बराबर राज नियम बनाए हैं तदनुसार भोजन के पदार्थों पर भी धार्मिक व सामाजिक और राजनैतिक नियम बनाये हैं। उनको अमरसिंह जी 'मास का विधान' बतलाते हैं।

अमरसिंह जी को विदित होना चाहिये कि धर्म प्रवृत्ति रूप नहीं है, निवृत्ति रूप होता है। प्रवृत्ति तो मनुष्य क्या, जीवमात्र मे विद्यमान है, उसके लिये धर्म शास्त्र की क्या आवश्यकता है ? मद्य, मास मैथुन, आदि कार्यों में जीवमात्र प्रवृत्त हैं तब धर्म शास्त्रों ने न्यूनाधिक भाव से राज्य शासन की सुविधा के लिये उन पर पाबन्दिया लगाई हैं। वे विधान नहीं है।

यह कहना कि अहिंसा का सिद्धान्त जैनों और वैष्णवों का है। यह उनका भ्रम है। अहिंसा महाव्रत योगदर्शन का मुख्य महाव्रत है। वेदों के अनुसार ब्राह्मणों में भी कहा है, माहिंस्यात् सर्वा भूतानि। किसी भी प्राणी का घात न करो। फिर वेद तो जैनों और वैष्णवों से पूर्व के आर्यों के धर्म ग्रन्थ हैं। उनमें तो उन प्राणियों के नाम ले २ कर भी उनको न मारने की अपील की है, जिनके मासों को ठूस २ कर मासाहारी अपने शरीर का जीवों का कबरिस्तान बना रहे हैं जब वेद के द्वारा उन प्राणियों का घात सर्वथा रुक जायेगा, तो मैं पूछता हूँ श्री अमरसिंहजी के घर की डेगची में 'मास' (Meat) बकरे या भेड़, गाय या भैस का, क्यों कर पक सकेगा ?

हाँ यदि सरकारें या राजा लोग ऐसे कानून बनादेंगे कि खूब गौएँ मारी काटी जायें, उनका मास खूब खाया जावे, पशु बध कर २ के धर्म कृत्यकिये जाय, तो निश्चय ही रन्तिदेव का जमाना और वाममार्गियों का राज्य पुन आ सकता है। भारतवर्ष में तो इस समय मासाहारी शासक होने से जिस निर्धनता से भारत का पशुधन सहार होरहा है उससे अमरसिंह जी और उनके भाइयों की करोड़ों

सन्तानों को घी, दूध, और अन्न भी पर्याप्त मात्रा में नहीं मिल रहा है। इधर ऐडवोकेट साहेब कसाई खानों के बूते पर मास का प्रचार कराकर 'सिंह' बनाने स्वप्न देख रहे हैं। अमरसिंह जी को खूब समझ लेना चाहिये कि मास की बोटियों पर कौए, चील, गीदड़ और कुत्ते भी पाले जाते हैं। जो मास खाता है, वह शेर ही बन जाता है, यह कोई सार्वभौम नियम नहीं है। यही बात शाकाहार पर भी है। शाक-अन्न पर समस्त जगत् पलरहा है। करोड़ों जीव केवल शाक खाते हैं परन्तु वीरता, तेजस्विता, यह गुण उत्तम भोजन और सात्विक और उदात्तवृत्ति पर निर्भर है। एक गाय भी शेर का मुकाबला कर सकती है। एक सूअर भी शेर का पेट फाड़ सकता है।

जिसको कोई प्राणी मार ले वह उसका मास खाये यह कोई आवश्यक नियम नहीं है। वीरता शत्रु, मित्र, और उदासीन प्राणियों के मास खाने से उत्पन्न नहीं होती। वीरता कर्त्तव्य परायण होने के दृढ़ सकल्प से उत्पन्न होती है। यदि कमज़ोर का मांस खाने से वीरता आती हो, तो मनुष्यों का स्त्रियों, बालकों बच्चों वृद्धों को मार कर उनका मास खाना चाहिये। जो मुट्ठीभर युरोपीयन करोड़ों जन सख्या पर Divide & Rule भेद नीति के सिद्धान्त से शासन करते हैं वे महाभारत के काल के राक्षसों के समान बस्तियों पर नर मास का खाने का सिद्धान्त आवश्यक समझते और बकासुर के समान मनुष्यों को कच्चा खाने का टैक्स लगाते हैं परन्तु वैसी बात नहीं है। महाभारत कारने ही सिद्ध कर दिया है कि बकासुर को मारने वाला अन्न भोजी भीम अधिक पराक्रमी है। वह राक्षसों की पीठ तोड़ सकता है परन्तु खेद है कि एक भी हर्बर्ट स्पेंसर पर उसके किसी भाई ने बकासुर का सिद्धान्त वीरता उत्पन्न करने के लिये नहीं लिखा। अमर सिंह जी स्वय बतलावें कि आदमखोर जङ्गली लोगों को बुरा क्यों समझा जाता है। उनको (Savage वहशी क्यों कहा जाता है, क्योंकि वे मनुष्य मांस भी खाते हैं दूसरा कारण कि, वे अपने जैसा दूसरे आदमी को नहीं समझते हैं। वे ईसाई, मुसलमान या मासाहारी हिन्दुओं के समान गाय, भेड़, बकरियों के समान मार कर मनुष्यों को भी मार कर उनका मास खाते हैं। उनको अपना भाई-बन्धु नहीं समझते। ऐडवोकेट सा० यह नहीं कह सकते कि मनुष्य का मास स्वादु नहीं होता। स्वादु तो अवश्य होता होगा, क्योंकि मासाहारी शेर चीता आदि जिसको नर मास का स्वाद (चस्का)

लग जाता है, वह उसके लिये पागल हो जाता है, और खूब मनुष्य पर हाथ साफ़ करता है। इसी प्रकार यदि नर मांस का स्वाद उक्त मांसाहारी सम्प्रदायों को लग जावे तब वे वाममार्गी अघोरियों के समान नर मांस के लोलुप होकर घोर अनर्थ करने से नहीं चूकें। पर एक सार्वभौम Unwritten Law है जो अभी तक करोड़ों नर संहार होने पर भी उनका मांस खाने से योरोप एशिया अमेरीका के सभ्य संसार को रोक रहा है।

अब रहा पशु पक्षी-जगत् के मांस खाने के सम्बन्ध में—सो यह तो अब केवल समझने की बात है, क्या पशु-पक्षियों को अपने भाई-बन्धु के समान जीव समझें या केवल पेट-भराई करने के लिए खेती समझें। यदि उनको अपने साथ रहने वाला पड़ोसी समझा जावे तो उनका मांस खाना पड़ोसी का मांस खाने के समान है। यदि उनको अपना सेवक समझें तो उनका मांस खाना अपने दासों का मांस खाने के समान है। यदि शत्रु समझें तो सांप बिच्छु, शेर चीता का मांस खाने के समान हैं, यदि खेती समझें तो यह उनकी समझ को बलिहारी है। जिसका दूध पीना वह दूध पीने के लिये माता, और मांस खाने के लिये खेती समझना चाहते हैं तो जिन जंगलियों ने अपने बूढ़ों को भून कर उनका मांस खाने का रिवाज बना रखा है उन्होंने भी यदि यही सिद्धान्त बनाया कि पालने पासने को माँ बाप, बूढ़ा होने पर वे हमारा अन्न-खाद्य। बस मांसाहारी उनके छोटे भाई हैं। जरा न्याय कीजिये। बच्चों या गर्भों का नाश करने वालों के लिये तो आप कचहरियों और पुलिस का दरवाजा खट खटाते हैं, न्याय की दोहाई करते हैं परन्तु आप, अपने पापी पेट, और जीभ के लिये या अमर सिंह जी, अपने में आक्रमणकारी स्वभाव हिंसक-क्रूर स्वभाव पैदा करने के लिये लाखों करोड़ों मूक पशुओं की हत्या कराना चाहते हैं तो क्या आप समझते हैं कि भगवान् के राज्य में रहने वाले जीवों पर इस प्रकार का अत्याचार करने वालों के विरोध में कोई कचहरी, कोई पुलिस और किसी न्याय की पुकार नहीं होती ? यदि अमर सिंह जी का विश्वास है कि ब्रिटिश सम्राट् के ऊपर कोई सम्राट् नहीं हैं तब तो ठीक है, परन्तु मेरे विचार में अभी अमर सिंह जी की इतनी स्थूल दृष्टि नहीं हुई है।

मि० अमर सिंह 'अहिंसा' के सिद्धान्त पर बहुत रुष्ट हुए हैं, आपका विचार यह है कि इसी सिद्धान्त ने हिन्दुओं के मस्तिष्क बहुत पोपले कर दिये हैं। इसके विपरीत महात्मा बुद्ध महात्मा गाँधी, महर्षि दयानन्द का विचार

है कि मांस भोजन की लोलुपता ने अन्य लोगों के समान ही जगत् भर के लोगों को हृदयहीन, क्रूर कर दिया है, जिसका प्रमाण प्राचीन समस्त धर्म पुस्तकों में सहस्रों स्थलों पर है।

स्वामी तेजनाथ ने तो केवल माँस भक्षण के ३२६ उद्धरणों से मास भक्षण का पोषण किया है, यदि वे अहिंसा के पोषक वाक्यों का संकलन करके देखें तो कदाचित् ३२६ से कई गुना आदेश वचन संकलित हो सकेंगे।

यदि पशु शेर चीते, बाज, उकाब आदि तिर्यिग् योनियों को दृष्टि में रखकर ही अमर सिंह जी माँस भोजन को महत्त्व देकर उसको वीरता का नुसखा बतलाना चाहते हैं तो पशु बनकर तो मनुष्य को और बहुत से अधिकार प्राप्त हो सकते हैं। पशु दशा में रहने वाली जंगली जातियों की दृष्टि में तो आदमी का गोश्त भी क्यों छोड़ा जाय, उसे खाकर तो वह अपने से प्रबल जाति को भी खा-पीकर खतम कर सकता है। ऐसी दृष्टि से भीम ने जो दुःशासन की छाती से रुधिर पान किया वह सब से प्रबल शेर बहादुर बनने की आदर्श साधना होगी ?

यदि भोजन के घटक अवयवों की दृष्टि से मास पर विचार करके मि० अमर सिंह मास भोजन का महत्त्व बढ़ाना चाहते हैं, तो उनको वैद्यक व डाक्टरी की दृष्टि से ही विचार करना चाहिये तब निःसन्देह उसी परिणाम पर पहुँचेंगे जिस पर अमरीका के प्रसिद्ध विज्ञान शास्त्री H. G. Wells पहुँचे हैं, अर्थात् मानव माँस ही सर्व श्रेष्ठ भोजन है, जिसके आस्वाद मात्र से सिंह का भी मृत्यु भय भाग जाता है, शेर डबल शेर हो जाता है, वह रात को छोड़ दिन दहाड़े भरी बस्तियों पर आक्रमण करता है, अर्थात् जिसके भोजन से आक्रामक शक्ति चौगुनी हो जाती है, फिर उसी मानव मांस भोजन की पुष्टि अमरसिंहजी क्यों नहीं करते ?

अमर सिंह जी की प्रबलयुक्ति मास भोजन के पक्ष में यही है कि वह मनुष्यों में आक्रमणकारी बनता है, तब इसी युक्ति से अमरसिंह जी 'शराब' से भी नहीं बच सकते। उसमें तो हिंसा भी नहीं है, शराब के साथ २ फिर आखेट (मृगया) और अन्य भी व्यसन आवेंगे और धर्म शास्त्रों से फिर माँस भक्षी सैनिक दलों के लिये बड़े २ वेश्यालयों को भी प्रमाणित करने का साहस किया जावेगा। हम आगे नहीं बढ़ते।

अगले लेख में हम मि० अमर सिंह जी के ५ वें अध्याय की आलोचना करेंगे।

आर्य समाज के सामने भारी खतरा

[ले० श्री० स्वा० वेदानन्द जी आचार्य दयानन्द उपदेशक विद्यालय लाहौर]

आर्य समाज के सिद्धान्त बहुत स्पष्ट तथा शका रहित हैं। ऋषि दयानन्द के प्रादुर्भाव से पहले किसी आचार्य ने वैदिक सिद्धान्तों को इतना स्पष्ट नहीं किया जैसाकि महर्षि ने, महर्षि लिखते हैं कि "जो वेदादि सत्यशास्त्रों और ब्रह्मा से लेकर जैमिनि मुनि पर्यन्तों के माने हुए ईश्वरादि पदार्थ हैं जिनको मैं भी मानता हू" साराश यहहै कि महर्षि अपना कोई मत नहीं चलाना चाहते थे। जैसाकि महर्षि के शब्दों से प्रकट होता है कि "मेरा कोई नवीन कल्पना या मतमतान्तर चलाने का अभिप्राय नहीं है, किन्तु जो सत्य है उसको मानना मनवाना और जो असत्य है उसको छोड़ना छुड़वाना अभीष्ट है।" (स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश)

महर्षि दयानन्द से पहले, ईश्वर के स्थान पर पशु पक्षियों तक की पूजा होती थी। इसमें मनुष्य, पशु पक्षी तथा जड़ प्रकृति सब ही थे। यहाँ तक चेतना शून्य, ज्ञान रहित पाषाणादि को भी ईश्वर के स्थान पर पूजा जाने लगा।

महर्षि ने इसके विरुद्ध जबर्दस्त आवाज उठाई।

महर्षि ने मूर्ति पूजा के १६ दोष सत्यार्थ प्रकाश नामक ग्रन्थ में प्रकाशित किये। महर्षि मूर्तिपूजा को देश की स्वतन्त्रता में बाधक समझते थे। महर्षि के शब्द हैं ' इसमें क्या सन्देह जो आर्यावर्त्त की प्रति दिन महा हानि पाषाणादि मूर्तिपूजकों का पराजय इन्हीं के कर्मों से होता है, क्योंकि पाप का फल दु ख है। इन्हीं पाषाणादि मूर्तियों के विश्वास से बहुत सी हानिया हो गई, जो न छोड़ेंगे तो प्रति दिन अधिक २ होती जावेगी"। सत्यार्थ प्रकाश के इस ही ग्यारहवें समुल्लास में महमूद गजनवी के हाथों सोमनाथ के मन्दिर की दुर्दशा का वर्णन करते हुए ऋषि लिखते हैं कि "हाय। क्यों पत्थर की पूजा कर सत्यानाश को प्राप्त हुए, क्यों परमेश्वर की भक्ति न की जो विदेशी म्लेच्छों के दात तोड़ डालते और अपने देश की स्वतन्त्रता की रक्षा करते।"

इन उद्धरणों से प्रकट होता है कि महर्षि देश में समस्त बुराइयों का कारण मूर्तिपूजा को ही मानते हैं। ऋषि ने अपना प्रति निधि आर्य समाज को बनाया।

किन्तु आर्य समाज ने ऋषि के मिशन को पूरा करने में बलपूर्वक कार्य नहीं किया। आर्य समाज के मुख्य सिद्धान्तों के प्रचाराभाव के कारण ही देश में अब भी मूर्ति पूजा नये २ रूपों में प्रकट हो रही है और देश को रसातल में पहुँचा रही है।

आज का क्या खतरा है ?

किन्तु आज हम आर्य समाज का ध्यान एक और भयङ्कर खतरे की ओर आकर्षित करना चाहते हैं। जो कि आर्य समाज की जड़ों को खोखला कर रहा है। आज हमको शिकायत है कि नवयुवक आर्य समाज में आते नहीं। किन्तु देश मे आजकल एक ऐसी लहर चल रही है जिस मे आर्य समाज के अनेक नेतृत्वाभिमानी शामिल हैं। जो कि नवयुवकों को आर्य समाज से बहुत दूर ले जा रही है। और जो ऋषि दयानन्द और आर्य समाज के विरुद्ध एक विशेष तरीके से आर्य समाज के स्थानों में प्रचार का काम कर रही है।

हमारा मतलब राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ से है

इसकी नींव महाराष्ट्र में पड़ी, इसके चलाने वाले सज्जन कट्टर मूर्ति पूजक थे और हैं।

महाराष्ट्र मे वैदिक धर्म का प्रचार अभी प्रारम्भिक अवस्था में है।

महाराष्ट्र की इस लहर के सञ्चालकों ने मूर्ति पूजा के लिये एक ऐसे मार्ग का अवलम्बन किया कि जिसके लिये उनकी बुद्धि की प्रशंसा करनी चाहिये। उन्होंने सोचा कि यदि कोई मूर्ति आदि रखवा कर उस पर पुष्प और पैसे आदि चढ़ाने को कहा तो आर्य समाज से प्रभावित जनता इनको न मानेगी। उन्होंने झण्डा गेरुआ खड़ा किया और योरोपियन विचारों के आधार पर जिनसे कि आजकल के गुलाम मस्तिष्क वाले नवयुवक प्रभावित हों, ध्वजा का परिचय दिया। 'ध्वजा किसी देश तथा जाति की आन बान और शान का परिचय होता है। जीवित जातियां अपनी ध्वजा की रक्षा के लिये जानें तक लड़ा देती हैं। आर्य संस्कृति में संन्यासियों का बड़ा मान है। संन्यासी गेरुए कपड़े पहिनते हैं। हमारे झण्डे का रङ्ग भी गेरुआ है। आरम्भ में इस प्रकार के विचार देकर नवयुवकों को इकट्ठा किया जाता था। कभी २ यह भी कह दिया जाता रहा कि "ऋषि दयानन्द बहुत अच्छे थे। किन्तु आर्य समाज

बहुत खराब है। यह हिन्दू जाति में फूट डलवाता है। शास्त्रार्थ करके झगड़े खड़े करता है।"

और अब नौबत यहाँ तक पहुँची है कि इनमें से कई लोग खुल्लमखुल्ला कहने लगे हैं कि "ऋषि दयानन्द ने देश को नुकसान पहुँचाया है"। लोग इस प्रकार की बातें विशेष रूप से उन आर्य नवयुवकों से करते हैं जो अपने सिद्धान्तों को भली प्रकार नहीं जानते होते। मैंने स्वयं इन लोगों को बातें करते सुना है। क्योंकि ये लोग ड्रिल और परेड सिखाते हैं। इस लिये नवयुवकों का इनकी ओर आकर्षित होना स्वाभाविक है। फौजी परेड के लिये झण्डा भी चाहिए। शनैः २ झण्डे की सलामी शुरू हुई और अब गुरु पूजा आदि पर्वों पर झण्डे की सविधि पूजा होती है। फूल चढ़ाए जाते हैं रुपये पैसे भी चढ़ाए जाते हैं। झण्डे के साथ संस्थापक का फोटो भी रक्खा जाता है। मैं एक बार इनकी गुरु पूजा देखने गया था। वहाँ इनके एक लीडर ने कहा कि "हम इस झण्डे को अपना गुरु और नेता मानते हैं क्योंकि मनुष्य भूलें करता है। किन्तु यह झण्डा भूलों से रहित है इत्यादि"। जो लकड़ी का टुकड़ा एक धक्का देने मात्र से गिर जाता है और अपने आपको सम्भाल नहीं सकता जिस पर कोई उद्देश्य अङ्कित नहीं है ऐसे जड़ रूप निरुद्देश्य कपड़े और लकड़ी के टुकड़े को आराध्य देव के स्थान पर पुजवाना नवयुवकों के हृदय में भयंकर विष का सञ्चार करना है।

आर्य पुरुषो! यह हालाहल विष है जिसे देश और जाति के नाम पर आर्य जाति के नवयुवकों के मस्तिष्क में उडेला जा रहा है। इसका क्या फल होगा? जिस अविद्या के गहरे खड्डे से महर्षि जाति को निकालना चाहते थे उसमें ये लोग धकेल रहे हैं।

समय है, प्रबन्ध करलो, फिर पछताना पड़ेगा।

सत्यार्थप्रकाश की प्रत्येक वैध उपाय से रक्षा की जायगी ।

संयुक्त प्रान्तीय जाट सभा का निश्चय

जाट प्रान्तीय सभा सयुक्तप्रान्त की कार्यकारिणी ने जिसकी बैठक २८। ११। ४३ को मेरठ में हुई थी निम्न प्रस्ताव पास किया है—

संयुक्तप्रान्त के जाटों की यह एक मात्र प्रतिनिधि सभा अपनी सुनिश्चित सम्मति की घोषणा करती है कि ऋषि दयानन्द सरस्वती द्वारा प्रतिपादित वैदिक धर्म पर लिखे हुए ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश में ऐसी कोई वस्तु नहीं है जो किसी व्यक्ति की धार्मिक और सामाजिक भावनाओं को ठेस पहुँचाने के विचार से लिखी गई हो अथवा जो वास्तव में ठेस पहुँचाती हो।

यह सभा भारत सरकार से प्रार्थना करती है कि वह मुस्लिम लीग वालों के समस्त प्रयत्नों की उपेक्षा करे जो उपर्युक्त धर्म ग्रन्थ की जब्ती के लिये सरकार को प्रेरणा करने का व्यर्थ प्रयास कर रहे हैं जिसे ५० वर्ष से अधिक से देश और विदेश के करोड़ों भारतीयों ने पढ़ा और जिसकी शिक्षाओं को जीवन में धारण किया है।

यह सभा पहले से ही भारत सरकार को सूचित कर देना अपना कर्तव्य समझती है कि यदि सरकार ने इस ग्रन्थ की जब्ती की आज्ञा दी तो सयुक्त प्रान्त के समस्त जाट इस आज्ञा को अपने नागरिक और धार्मिक अधिकारों में सीधा हस्तक्षेप समझेंगे और वे इस ग्रन्थ के यथापूर्व स्वाध्याय और प्रचार को देखने के लिये, जो कि उनका मुख्य धर्मग्रन्थ है, कोई वैध उपाय न छोड़ेंगे।

(ह.) वीरेन्द्रसिंह B., A LL B.,
मन्त्री, संयुक्त प्रान्तीय जाट सभा, शामली, यू० पी०

अखिल भारतीय आर्य सम्मेलन विषयक सूचनाएँ

अखिल भारतीय आर्य सम्मेलन की स्वागत समिति का चुनाव।

अखिल भारतीय आर्य महा सम्मेलन की (जो २० से २२ फर्वरी १९४४ तक देहली में होगा) स्वागत समिति का अधिवेशन पदाधिकारियों के चुनाव के लिये दीवान हाल आर्य समाज मन्दिर मे मगलवार २१ दिसम्बर की रात को ८ बजे प्रो० इन्द्र जी विद्यावाचस्पति के सभापतित्व में हुआ। निम्न पदाधिकारी चुने गये। स्वागताध्यक्ष श्री ला० नारायणदास जी ठेकेदार।

उपस्वागताध्यक्ष—श्री प्रो० इन्द्र जी विद्यावाचस्पति, श्री ला० ज्ञानचन्द्र जी ठेकेदार, श्री चौ० देशराज जी मा० ईश्वरदास जी, प० श्यामदेव जी, शास्त्री श्र बाबा मिलखासिंह जी श्री ला० घासीराम जी, लाहिया. श्री प० रामचन्द्र जी देहलवी, ला० बुद्धिप्रकाश जी, मास्टर केदारनाथ जी, प० रामस्वरूप जी।

प्रधान मन्त्री—श्री प्रो० सुधाकर जी एम० ए०। भिन्न २ कार्यों के लिये निम्न विभागों के निम्न लिखित सज्जन मन्त्री चुने गये।

कार्यालय मन्त्री—श्री शिवचन्द्र जी, स्वय सेवक विभाग—ला० रामगोपाल जी शालवाले, अतिथि सेवा वि०—प० रामचन्द्रजी जिज्ञासु प्रचार वि०—श्री देवव्रतजी धर्मेन्दु चन्दा विभाग—ला श्यामलाल जी, स्वागत विभाग—डा० ज्ञानचन्द्र जी, जलूस—ला० विशनस्वरूप जी गोटे वाले स्वास्थ्य विभाग—डा० तुलसीराम जी, प्रकाशन विभाग—प० सत्यदेवजी विद्यालङ्कार, पण्डाल विभाग—बाबा मिलखासिंहजी, इनके अतिरिक्त कार्य समिति के लिये निम्न बारह सदस्य और चुने गये।

सर्व श्री ला० हरिश्चन्द्र जी एम० ए०, ला० श्यामलाल जी गुड़वाला, प० धर्मवीर जी वेदालकार, ला० बालमुकन्द जी आहूजा, प० चन्द्रभानु जी, चौ० महासुख जी, ला० धर्मपाल जी गुप्त सम्पादक तेज, प्रो० रामसिंह जी म्युनिसिपल कमिश्नर, म० कमचन्द्र जी, प० धर्मदेव जी विद्यावाचस्पति, ला० नौबतराम जी तथा वैद्य मूलचन्द्र जी।

स्वागत समिति का कार्यालय आर्य समाज दीवान हाल मे खोला जा रहा है। आर्य सम्मेलन को सब प्रकार से सफल बनाने का यत्न आरम्भ कर दिया गया है।

शिवचन्द्र
कार्यालय मन्त्री
पंचम अखिल भारतीय आर्य सम्मेलन, देहली

पंचम आर्यन कांग्रेस की स्वागत समिति का कार्यालय खुल गया। आर्य जनता को आर्यन कांग्रेस में सम्मिलित होने के लिये आवाहन

समस्त देश में प्रचार आरम्भ करने की अपील

पञ्चम अखिल भारतीय आर्य महासम्मेलन की स्वागत समिति का कार्यालय आर्य समाज दीवान हाल देहली में खुल गया है। स्वागत समिति सम्बन्धी सब पत्र व्यवहार प्रधान मन्त्री, स्वागत समिति, पञ्चम अखिल भारतीय आर्यन कांग्रेस आर्य समाज दीवानहाल देहली के पते पर होना चाहिये। आर्यावर्त की प्राचीन तथा अर्वाचीन राजधानी देहली नगर में आर्यों का यह महोत्सव सन् १९२७ के बाद बड़ी धूम धाम के साथ अपनी शान का निराला होगा जिसमें आर्य जाति तथा देश की धार्मिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक तथा सामाजिक समस्याओं पर विचार किया जावेगा। प्रत्येक आर्य भाई तथा बहिन को यत्न करना चाहिये कि वह इस आर्य महोत्सव मे अवश्य सम्मिलित हो और उस अवसर पर देहली पधारने के लिये अभी से तैयारी आरम्भ करदें। आर्य महासम्मेलनार्थ आर्य समाजों की ओर से प्रतिनिधियों के नाम भेजने के लिये सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से आर्य समाजों के नाम पृथक् निमन्त्रण भेजा जा चुका है।

देश के प्रत्येक नगर तथा ग्राम से जो भाई और बहिन आर्यन कांग्रेस में दर्शक के रूपमे सम्मिलित होना चाहें उन्हें आने वालों की संख्या अधिक से अधिक ता० २५ जनवरी १९५४ तक स्वागत समिति के कार्यालय मे अवश्य भेजदेनी चाहिये ताकि स्वागत समिति को उनके ठहरने की समय के अन्दर उचित व्यवस्था करने मे सुविधा हो

देहली नगर तथा प्रान्त मे आर्यन कांग्रेस सम्बन्धी प्रचार आरम्भ कर दिया गया है। देहली नगर की समस्त आर्य समाजों के प्रचारक, अधिकारी तथा कार्यकर्ता आर्यन कांग्रेस को सफल बनाने में जुट गये हैं। समस्त प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाओं, आर्य समाजों के प्रचारकों, अधिकारियों, कार्यकर्ताओं तथा आर्य समाचार पत्रों के सम्पादक महोदयों से प्रार्थना है कि वे आर्यन कांग्रेस के महत्त्व के प्रचार को अपने कार्यक्रम का एक मुख्य अंग बनालें और प्रत्येक स्थान पर आर्यन कांग्रेस की चर्चा करें तथा आर्य जनता को भारी संख्या मे आर्यन कांग्रेस में सम्मिलित होने की प्रेरणा करें।

शिवचन्द्र
कार्यालय मन्त्री,
पंचम अखिल भारतीय आर्य कांग्रेस, देहली।

कुरान में अन्य मतावलम्बियों के लिये कुछ उत्तेजक अति कठोर वाक्यों का संग्रह

(समीक्षा—अरबी के सुप्रसिद्ध विद्वान् श्री प० रामचन्द्र जी देहलवी)

(१) व इज़ा लक़ुल्लज़ीन आमनू क़ालू आमन्ना, व इज़ा ख़ली इला शयात्वीनिहिम् क़ालू इन्ना मअकुम् इन्नमा नःनु मुस्तःज़िऊन। सू०२। रुकू २। आ० १४ ॥

George Sale's Translation—

"When they meet those who believe, they say we believe, but when they retire privately, to their devils they say, we really hold with you and only mock at those people".

FOOT NOTE—The prophet making use of the liberty zealots of all religions have, by prescription of giving ill language, bestows this name on the Jewish rabbins and Christian priests, though he seems chiefly to mean the former against whom he had by much the greater spleen.

अर्थः—और जब उन लोगों से मिलते हैं जो ईमान लाचुके तो कहते हैं हम ईमान ला चुके हैं, और जब तनहाई में अपने शैतानों से मिलते हैं तो कहते हैं हम तुम्हारे साथ हैं, हम तो सिर्फ (मुसलमानों को) बनाते हैं।

(इस आयत में ईसाई और यहूदी विद्वानों को शयातीन कहा गया है)

(२) But if ye do it not, nor shall ever be able to do it, justly fear the fire whose fuel is MAN and stones prepared for the unbelievers

(इस आयत में दोज़ख की आग का ईंधन मूर्ति पूजकों और मूर्तियों को बताया गया है। यह आयत सत्यार्थ प्रकाश के १४वें समुल्लास के खण्ड नं० ८ में आचुकी है)।

सेल (Sale) साहब False gods and idols मुराद ली हुई फर्माते हैं देखो पृष्ठ ३ (Foot Note)

(३) फ इम्मायातियन्नकुम् मिन्नी हुदन् फमन् तबिआ हुदाया फला खौफुन् अलैहिम् वलाहुम् यह्ज़नून्

वल्लज़ीन कफ़रू व कज़्ज़बू बिआयातिना उलाइक अस्हाबुन्नारि, हुम् फ़ीहा खालिदून् । सू० २ । रु० ४ । आ० ३९

अर्थः—अगर हमारी तरफ़ से तुम लोगों के पास कोई हिदायत पहुँचे (तो उस पर चलना क्योंकि) जो हमारी हिदायत की पैरवी करेंगे उन पर न तो (किसी क़िस्म का) खौफ़ होगा और न वह आज़ुर्दा खातिर (दुःखित) होंगे ।

और जो लोग ना फ़र्मानी करेंगे और हमारी आयतों को झुठलायगे वही दोज़खी (नरक वासी) होंगे, और वह हमेशा २ दोज़ख में रहेंगे।

"Hereafter shall there come unto you a direction from me and whoever shall follow my direction, on them shall no fear come neither shall they be grieved '

But they who shall be unbelievers, accuse our signs of falsehood, they shall be the companions of hell-fire, therein shall they remain for ever".

(इस आयत में क़ुर्आन् से इकार करने वालों को और उनको झुठलाने वालों को) दोज़ख (नरक) में हमेशा के लिए रहने वाला बताया गया है ।

(४) सू० २ । रु० ६ । आ० ५४

"And when Moses said unto his people, O my people Verily ye have injured your own souls, by your taking the calf for your God, therefore be turned unto your Creator, and SLAY THOSE AMONG YOU WHO HAVE BEEN GUILTY OF THAT Crime this will be better for you in the sight of your Creator'

Foot note—in Sale s translation, The Commentators of the Koran make the number of the slain to amount to 70,000, and add that God sent a dark cloud which hindered them from seeing one another lest the sight should move those who executed the sentence to compassion. (Page 6)

अर्थ—और जब मूसाने अपनी क़ौम से कहा कि भाइयो। तुमने बछड़े की पूजा के इख्तयार करने से अपने ऊपर बड़ा ही ज़ुल्म किया तो (अब) अपने ख़ालिक़ की जनाब में तोबा करो और (वह यह कि अपने लोगों के हाथों से) अपने तईं हलाक करो। जिसने तुमको पैदा किया है उसके नज़दीक तुम्हारे हक़ में यही बिहतर है।

(इस आयत में बछड़े या गाय वगैरा की पूजा करने वालों को) वाजिबुल क़त्ल (मारने योग्य) क़रार दिया है, जो हमेशा के लिए हिन्दू मुसलमानों में झगड़े का कारण है।

(५) सू० २। रु० ११। आ० ६०॥

And the unbelievers SHALL SUFFER AN IGNOMINOUS PUNISHMENT

अर्थ—और मुंकिरों के लिये ज़िल्लत का अज़ाब है। (इस्लाम को न मानने वालों को भयङ्कर तिरस्कार होगा)

(६) सू० २। रु० १२। आ० ६८

Whosoever is enemy to God, or his angels, or his apostles, or to Gabriel, or Michael, verily God is an enemy to the unbelivers

यह आयत १४ वें समुल्लास के २१ वें अवतरण में आ चुकी है। इसका अर्थ यह है कि जो अल्लाह, फ़रिश्तों पैग़म्बरों और जिब्राइल का शत्रु है अल्लाह भी ऐसे क़ाफ़िरों का शत्रु है।

(७) "Surely they who BELIEVE NOT AND DIE, IN their unbelief, upon them shall be the CURSE of GOD AND OF the angels and of all men, they shall REMAIN UNDER IT FOR EVER THEIR punishment SHALL NOT BE ALLEVIATED, neither shall they be regarded"

F.N.:—(b) Or as Jallaloddin expounds it, God will not wait for their repentence

सू० २। रु० १६। आ० १६१

अर्थः—जो लोग (जीते जी दीन हक़ से या सच्चे धर्म (इस्लाम) इंकार करते रहे, और इंकार ही की हालत में मर गए यही हैं जिन पर खुदा की लानत

और फ़रिश्तों की और आदमीयों की सब की, हमेशा २ इसी (फिटकारों) में रहेंगे, न तो उन (पर) से अज़ाब (दु:ख) ही हलका किया जावेगा और न उनको (अज़ाब के बीच बीच में) मुहलत ही मिलेगी।

(८) सू० २। रु० २१। आ० १७१

"और जो लोग काफ़िर हैं (बुतपरस्ती या मूर्ति पूजा में) उनकी मिसाल उस शख्स की सी है जो एक चीज़ के पीछे पड़ा चिल्ला रहा है (और) वह सुनती सुनाती ख़ाक नहीं (तो उसका चिल्लाना) महज़ (बेसूद) बुलाना और पुकारना है (जिसका कुछ नतीजा नहीं बुतों पर क्या मुंहसर है यह लोग खुद भी) बहरे गूंगे, अंधे हैं तो यह समझते (बूझते) कुछ भी नहीं।

"The unbelievers are like unto one who crieth aloud to that which heareth not so much as his calling or the sound of his voice. *They are deaf dumb and blind, therefore they do not understand*".

इस आयत में मूर्ति पूजकों की और उनकी मूर्तियों की हंसी उड़ाई गई है और दोनों को बहरे, गूंगे और अन्धे कहा गया है।

(९) सू० २। रु० २७ आ० २१७

और जो तुममें अपने दीन से बरगश्ता (विमुख) होगा और कुफ्र ही की हालत में मर जायगा तो ऐसे लोगों का किया कराया (क्या दुनिया और (क्या) आख़िरत (परलोक) (दोनों) में अकारत और यही हैं दोज़खी (और) वह हमेशा (हमेशा) दोज़ख (नरक) ही में रहेंगे।

"But whoever among you shall turn back from his religion and die an infidel, their works shall be vain in this world and the next, they shall be the COMPANIONS OF HELL FIRE THEY shall REMAIN THEREIN FOR EVER.

(१०) सू० २। रु० ३८ आ० २७५

और जो (मनाही हुए पीछे) फिर (सूद) ले तो ऐसे ही लोग दोज़खी हैं और वह हमेशा दोज़ख ही में रहेंगे।

"But whoever returneth to usury they shall be the companions of hell fire, they shall continue there in for ever.

(११) सू० ३ । रु० । आ० ६

जो लोग (दीन इस्लाम से) मुंकिर हैं। अल्लाह के हा न तो उनके माल ही उनके कुछ काम आएगे और न उनकी औलाद ही (उनके कुछ काम आएगी) और यही हैं जो दोज़ख़ के ईंधन होंगे।

"As for the infidels their wealth shall not profit them anything nor their children against God, they SHALL BE THE FUEL OF HELL FIRE"

(१२) सू० ३ । रु० ३ । आ० २७

मुसल्मानों को चाहिये कि मुसल्मानों को छोड़कर काफ़िरों को अपना दोस्त न बनाएं, और जो ऐसा करेगा तो उससे और अल्लाह से कुछ सरोकार नहीं, मगर (इस तदबीर से) किसी तरह पर उन (की शरारत) से बचना चाहो (तो ख़ैर)

Let not the faithful take the infidels for their protectors rather than the faithful, he who doth this shall not be protected of God at all, unless ye fear any danger from them

(यहां मौलवी मुहम्मद अली आदि अन्य सब अनुवादकों ने Protectors की जगह Firends यही अनुवाद किया है)

(१३) सू० ३ । रु० ६ । आ० ५५

तो जिन्होने (तुम्हारी पैग़म्बरी नबुव्वत से) इकार किया उनको तो दुनिया और आख़िरत (दोनों में बड़ी सख़्त मार देंगे और कोई उनका हामी या मददगार न होगा (कि उनको हम से बचाए)

"Moreover, as for the infidels, I will punish them with a grievous punishment in this world, and in that which is to come and there shall be none to help them"

(१४) सू० ३ । रु० ६ । आ० ८४ । ८५

और जो शख़्स इस्लाम के सिवा किसी और दीन को तलाश करे तो ख़ुदा के हां उसका वह दीन मक़्बूल (स्वीकृत) नहीं और वह आख़िरत में

किर्बाकारों (टोटे वालों) में होगा,खुदा ऐसे लोगों को क्यों हिदायत देने लगा जो (तौरात की पेशीनगोइयों (भविष्य वाणियों) से पैग़म्बर-आखिरुज्ज़माँ पर) ईमान लाए पीछे लगे कुफ्र करने।

"*Whoever followeth any other religion than Islam it shall not be accepted of him and in the next life he shall be of those who perish.* How shall God direct men who have become infidels after they had believed ?

आ० ८६ । ८७

इनकी सजा यह है कि इन पर खुदा की और फ़रिश्तों की और (दुनिया जहान के) लोगों की सब की फिटकार, कि उसी फिटकार में हमेशा (हमेशा) रहेंगे, न तो (आखिरत में) इनसे अज़ाब (कष्ट) ही हलका किया जावेगा और न उनको मुहलत ही दी जावेगी।

Their reward shall be, that on them shall fall the curse of God and of angels, and of all mankind they shall remain under the same for ever, their torment shall not be mitigated neither shall they be regarded

आ० ९० :—

जो इस्लाम से मुंकिर हुए और इंकार ही की हालत में मर गए उनमें का कोई शख्स (कुरैश) ज़मीन (की गोल) भर कर भी सोना मुआवज़े में देना चाहे तो हर्गिज़ क़बूल नहीं किया जावेगा, यही लोग हैं जिनको दर्दनाक अज़ाब होगा और (उस वक़्त) उनका कोई भी मददगार न होगा।

Verily they who believe not, and die in their unbelief, the world full of gold shall in no wise be accepted from any of them, even though he should give it for his ransom, they shall suffer a grievous punishment, and they shall have none to help them

(१५) सू० ३ । रु० १८ । आ० १७७ ॥

और जो लोग (दीन इस्लाम से) इकार कर रहे हैं, इस ख़याल में न रहें कि हम जो उनको ढील दे रहे हैं वह कुछ उनके हक़ में बिहतर है, हम तो उनको

सिर्फ इसलिए ढील दे रहे हैं ताकि और गुनाह (पाप) समेट लें और (आख़िर कार) उनको ज़िल्लत (तिरस्कार) की मार है ।

"And let not the unbelievers think because we grant them lives long and prosperous that it is better for their souls, we grant them long and prosperous lives only that their inequity may be increased, and they shall suffer an ignominous punishment"

(१६) सू० ४ । रु ८ । आ० ५६

जिन लोगों ने हमारी आयतों से इन्कार किया हम इनको (कयामत के दिन) दोज़ख (नरक) में (लेजा) दाखिल करेंगे, जब उनकी खालें गल जायंगी तो हम इस गर्ज़ से कि अज़ाब (का मज़ा अच्छी तरह) चखें, गली हुई खालों की जगह उनकी दूसरी (नई) खालें पैदा कर देंगे बेशक अल्लाह (बड़ा) ज़बरदस्त साहब तदबीर है ।

Verily those who disbelieve our signs or communications we will SURELY CAST TO BE BROILED IN HELL FIRE, so often as their skins shall be well burned, we will give them other skins in exchange that they may last the sharper torment, for God is mighty and wise

(१७) सू० ७ । रु० ५ । आ० ४०, ४१

बेशक जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया और उनसे अकड़ बैठे न तो उनके लिए आसमान के दर्वाजे खोले जावेंगे और न बहिश्त ही में दाखिल होने पाएंगे यहां तक कि ऊंट सुई के नाके में से (होकर न) गुज़र जाए, और मुज्रिमों (अपराधियों) को हम ऐसी ही सज़ा दिया करते हैं ।

Verily they who shall charge our signs or communications with falsehood, and shall proudly reject them the gates of heaven shall not be opened unto them, neither shall they enter into paradise until a camel pass through the eye of a needle and thus will we reward the wicked doers.

Their couch shall be in hell and over them shall be coverings of fire, and thus we reward the unjust.

कि उनके लिए आग का बिछौना होगा और उनके ऊपर से आग ही का ओढ़ना, और नरकशालों । हम ऐसी ही सज़ा दिया करते हैं।

(१८) सू० ५ । रु० ३ । आ० १७

जो लोग कहते हैं कि मर्यम के बेटे मसीह वही ख़ुदा हैं, कुछ शक नहीं कि यह काफ़िर होगए।

They are infidels who say Verily God is Christ the son of Mary

(शेष अगले अङ्क में)

सत्यार्थ प्रकाश और हमारा कर्त्तव्य

(ले० श्री डाक्टर सूर्यदेव जी शर्मा साहित्यालङ्कार सिद्धान्त शास्त्री
एम ए एल टी, डी लिट्, डी ए वी कॉलेज, अजमेर)

संसार के समस्त मतों और धर्मों में कोई न कोई ऐसा मान्य ग्रन्थ होता है जिसके आधार पर उस मत या धर्म के सिद्धान्त निश्चित किए जाते हैं। कोई भी धर्म अथवा सम्प्रदाय उस समय तक सफल नहीं हो सकता और प्रचार नहीं पा सकता जब तक कि उसके कुछ सिद्धान्त निश्चित न हों और जिस पुस्तक या ग्रन्थ में उन सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया जाता है वही ग्रन्थ उस मत का धर्म ग्रन्थ कहलाता है। किस मत का कौनसा धर्म ग्रंथ है इस बात का निर्णय उस मत के माननेवाले लोग ही कर सकते हैं। अन्य मतावलम्बी इस बात का निर्णय नहीं कर सकते कि उस मतका धर्म ग्रंथ क्या हो और क्या न हो। यह दूसरी बात है कि किसी धर्म वाले अपने धर्म ग्रंथ को ईश्वरीय ज्ञान या इलहाम कहते हैं और कुछ धर्म वाले अपने धर्म ग्रन्थ को ईश्वरीय ज्ञान न कह कर उसको सर्वोच्च कोटि में इस लिए रखते हैं कि वह उनके धर्म के प्रवर्त्तक अथवा आचार्य द्वारा रचा हुआ होता है। कुछ भी हो, प्रत्येक धर्म के अनुयायी अपने धर्म ग्रंथ को सर्व-श्रेष्ठ और सर्व मान्य समझते हैं और यही कारण है कि वे उसके लिए प्राण निछावर करने तक को उद्यत रहते हैं।

जिस धर्म के अनुयायियों में अपने धर्म ग्रंथ के लिए सर्वश्रेष्ठ मान्यता का भाव और उसके लिए अपने तन-मन-धन तक का बलिदान करने की भावना नहीं होती, वह धर्म संसार में कभी फलता फूलता नहीं और शीघ्र ही विनाश को प्राप्त हो जाता है। प्राचीन रोमन साम्राज्य के समय में जब कि ईसाई मत का प्रचार यूरोप के देशों में और रोमन साम्राज्य में होना आरम्भ हुआ था, ईसाई मत के प्रचारकों पर क्या २ अत्याचार नहीं हुए, क्या २ जुल्म नहीं किये गये और उनको क्या २ यातनायें नहीं दी गई, किन्तु फिर भी उन सहनशील प्रचारकों ने अपने धर्म ग्रंथ बाईबिल को हाथ में लेकर अपने प्राण देना स्वीकार किया। बहुत से जीवित चिताओं में जला दिये गये, बहुत से सूली पर चढ़ाये गये और बहुत से

रोम और स्पेन के वृहत् प्रदर्शन गृहों में भूखे सिंहों के सामने डाल दिये गये, लेकिन उनमें ऐसा कोई नहीं था जिसने अपने बलिदान के समय आह ! की हो और जो अपने धर्म ग्रंथ बाईबिल को अपनी छाती से चिपटाए मृत्यु का आलिंगन करने को आगे न बढ़ा हो।

उस दीन की ज्योती के वे बन गए परवाने,
कुरबान कर दिया सब उस दीन को बचाने।
पर जिल्द मुक़द्दस को मरते हुए न छोड़ा,
राहे अदम के साथी से मुँह कभी न मोड़ा।।

यही कारण था कि उस अत्याचार करने वाले रोमन साम्राज्य का तो पतन हुआ और बाईबिल का बोल बाला हुआ। बलिदान कभी निष्फल नहीं जाते। बाईबिल का यह इतना प्रचार तो उस समय हुआ जब कि छापे के प्रेस नहीं थे लेकिन उसके प्रचारकों के हृदयों में अपने धर्म ग्रंथ के प्रचार की एक आग जल रही थी। यहां तक कि जब किसी ईसाई प्रचारक को बिना लंगर की नौका में बिठा कर मरने के लिए समुद्र में छोड़ दिया जाता था तो वह भी नौका में भोजन रखने के स्थान में बाईबिल रख देने की प्रार्थना करता था ताकि वह भूख से तड़पने के समय बाईबिल को अपनी छाती से लगाकर शांतिपूर्वक प्राण त्याग सके। ऐसे की जाती है अपने धर्म ग्रन्थ की रक्षा। क्या आर्यों में अपने धर्म की रक्षा की उतनी भी भावना नहीं है जितनी कि प्राचीन काल के ईसाई प्रचारकों में थी ? यदि है तो उन्हें इस समय अपने प्राण प्रण से भी अपने धर्म ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश की रक्षा करनी पड़ेगी। सत्यार्थ प्रकाश उनका जीवन धन है, उनका प्राण और प्रण है उनका धार्मिक सर्वस्व है, वीर्य और वर्चस्व है, उनकी शक्ति का स्रोत है, उसी में उनका ज्ञान ओत प्रोत है, यदि सत्यार्थ प्रकाश नहीं तो आर्य समाज नहीं। सत्यार्थ प्रकाश को जब्ती का आन्दोलन आर्य समाज के लिए खतरे की घंटी है। उसकी रक्षा के लिए उन्हें सब प्रकार से तुरत कटिबद्ध हो जाना चाहिए।

धर्म रक्षा के लिए क्षेत्र में आना होगा,
हर्ष से मृत्यु को निज पास बुलाना होगा।
सत्य रक्षा के लिए प्राण भले ही जाये,
हम को मरके भी अमर ग्रन्थ बचाना होगा।।

लेकिन सत्यार्थ प्रकाश की रक्षा केवल कथन मात्र से नहीं हो सकती। रक्षा २ चिल्लाने से कुछ नहीं होगा। इसमें तो कोई सन्देह नहीं कि सत्यार्थ-प्रकाश हमारा धर्म ग्रंथ है और उसकी रक्षा करना हमारा अनिवार्य कर्त्तव्य है। लेकिन वह रक्षा एक निश्चित प्रोग्राम के अनुसार होनी चाहिए। अनिश्चित रूप से कार्य करने से हमारी शक्ति का व्यर्थ अपव्यय होगा और उसमें हमारी सफलता भी सन्देहास्पद होगी। इस समय हमें निम्न लिखित कार्य विशेष रूप से करने चाहिए —

(१) **सत्यार्थ प्रकाश का प्रचारः**—सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार के लिए यह सुवर्ण अवसर है। इस समय मुस्लिम लीग द्वारा किए गये आन्दोलन के कारण सत्यार्थ प्रकाश की चर्चा सर्वत्र हो रही है। समाचार पत्रों में भी सत्यार्थ प्रकाश के संबन्ध में लेख और टिप्पणियाँ निकल रही हैं। इस अवसर से लाभ उठा कर सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार के सब साधन हमें काम में लाने चाहिए। (अ) नगर २ और ग्राम २ में और प्रत्येक मोहल्ले में सभायें करके सत्यार्थ प्रकाश सबंधी व्याख्यान कराने चाहिए (ब) स्थान २ पर सत्यार्थ प्रकाश की कथा का आयोजन किया जाना चाहिए (स) हम में से जो अच्छी तरह पढ़ सकते हैं वे अड़ोस पड़ोस के लोगों को सत्यार्थ प्रकाश पढ़ कर सुनाया करें। (द) जो पढ़ नहीं सकते वे सत्यार्थ प्रकाश की बिक्री का प्रयत्न करें। प्रतिज्ञा करलें कि जब तक कम से कम पाँच सत्यार्थ प्रकाश प्रति दिन नहीं बेच लेंगे तब तक रात्रि को विश्राम नहीं करेंगे। बाजारों में, मेलों में, नगरों में स्कूलों में घूम २ करके सस्ते दामों पर सत्यार्थ प्रकाश लोगों को दें। यह सबसे बड़ा पुन्य का कार्य होगा।

(२) भारत की समस्त भाषाओं के समाचार पत्रों में सत्यार्थ प्रकाश संबंधी, उसकी महत्ता सूचक लेख प्रकाशित किए जाने चाहिए। (३) सत्यार्थ प्रकाश सबंधी छोटे २ ट्रैक्ट लिखे जावें जैसे कि हैदराबाद आर्य प्रतिनिधि सभा आदि की ओर से कार्य आरंभ भी होगया है, और वे ट्रैक्ट देश के बडे २ सब लोगों के पास भेजे जावें। (४) समस्त प्रांतीय सरकारी अफसरों, कौंसिलों के मेम्बरों, और वाइसराय की कार्य कारिणी के सदस्यों के पास एक विशेष मैमोरियल अंग्रेजी में छपा के भेजा जाना चाहिए

(५) विभिन्न प्रांतीय भाषाओं में अनुवादित सत्यार्थ प्रकाश का जितना प्रचार हो सके किया जाना चाहिए। (६) जो लोग व्याख्यानों और लेखों द्वारा

कार्य नहीं कर सकते और न घूम कर उसका प्रचार कर सकते हैं उन्हें धन द्वारा इस कार्य में सहायता करनी चाहिए और सत्यार्थ प्रकाश की लाखों प्रतियाँ छपा कर मुफ्त बँटवानी चाहिए। (७) यह सब कुछ करते हुए भी प्रत्येक आर्य-स्त्री-पुरुष और वीर बालक को प्रत्येक समय सत्यार्थ प्रकाश की रक्षा के लिए तन मन धन से तैय्यार रहना चाहिए और प्रत्येक क्षण यह प्रतिज्ञा ध्यान में रखनी चाहिए।

अपने धर्म ग्रंथ के हित में, हम सर्वस्व लुटा देंगे।
तन मन धन को, जन जीवन को, उसके हेतु मिटा देंगे ॥
प्रिय सत्यार्थ प्रकाश रहेगा, तभी हमारा जीवन है।
आर्य जाति के वर वीरों का वह सर्वस तन मन धन है ॥

उद्बोधन

[रचयता—ठाकुरप्रसाद विद्यार्थी]
डी० एम० एच० इ० स्कूल, शेखपुरा (मुंगेर)

केवल लेकर जन्म जगत में, सफल न कर सकते जीवन।
यदि इच्छा है तो आजाओ, दूँ उपाय बतला नूतन ॥
नदियाँ यदि निज "कल-कल" छोड़ें, औ निर्झर छोड़ें "झर-झर"।
यदि समुद्र छोड़ें निज लहरें, तो क्या पा सकते आदर ?
यदि दिनकर त्यागे निज विक्रम, रहे न उसमें किरण प्रखर।
क्या तूफान कहोगे उसको, अगर चले वह नहीं लहर ?
निज विक्रम से ही मृगेन्द्र, आरण्य-राज कहलाता है।
कायरता से ही शृगाल, सर्वत्र खदेड़ा जाता है ॥
अत: पुरुष ! पुरुषत्व तुम्हें, यदि अपना आज बचाना है।
जग में लेकर जन्म सफल, जीवन को अगर बनाना है।
तो त्यागो आलस्य जगत् में, उठो और पुरुषार्थ करो।
भय का भूत भगा निज दिल से, हो स्वतंत्र जग में विचरो ॥

महिला जगत्—

उन्नति द्वार

[कवयित्री श्रीमती कृष्णाकुमारी जी चौहान कालपी]

मेरा उन्नति द्वार न रोको, जरा समय की गति अवलोको ॥ ध्रुव ॥
आज नहीं है समय निकम्मे—बन पल पल निश्वास बिखेरें।
आज नहीं वह समय कि हमको जय के मधुमय सपने घेरें ॥
आज हमारे मन में हो उत्साह—देह में अभिनव बल हो।
ज्ञान-कर्म अरु सदाचरण, सूने जीवन पथ के सबल हों ॥
पल पल दृढ होने वाले मेरे—स्वाधीन विचार न रोको ॥ मेरा ॥
मुर्झीसीं आशायें जागें, जीवन अनुपम चाह भरा हो।
लक्ष्य प्राप्ति के हेतु चली, सरिता सा तीव्र प्रवाह भरा हो ॥
उच्च भावनाओं को अपना—सच्चा साथी आज बना लू।
विमल प्रेम की स्वच्छ धार मे—अपनी जीवन नौका खे लू ॥
हँस हँस प्रतिपल आगे ही—बढ़ने का प्रिय व्यापार न रोको ॥ मेरा ॥
जीवन के इस गहन जाल को, मानव अपने हाथ बनाता।
सदा उसी पर हँसता-रोता, सुख दु:खों के भार उठाता ॥
क्योंकि हमीं पर है अवलंबित, निज जीवन की उन्नति अवनति।
बन जायेगा जीवन वैसा—जैसी होंगी भावों की गति ॥
बना रही मन को अपने शुभ—भावों का आगार न रोको।
मेरा उन्नति द्वार न रोको।

आर्य कुमार जगत्

"धार्मिक-परीक्षाओं की तिथियाँ"

अखिल भारतवर्षीय आर्य कुमार परिषद् की सिद्धान्त शास्त्री आदि चारों परीक्षायें ता० २३, तथा ३० जनवरी १६५४ का भारत के लगभग १५० केन्द्रों में होंगी। सिद्धान्त शास्त्री आदि चारों परीक्षाओं के पहले और दूसरे प्रश्न पत्र ता० २३ को तथा सिद्धान्त भास्कर और सिद्धान्त शास्त्री परीक्षा के तीसरे और चौथे पत्र ३१ जनवरी को होंगे। पहला प्रश्न पत्र प्रात १० बजे से १ बजे तक तथा दूसरा १½ से ४½ बजे तक हुआ करेगा।

देवव्रत
धर्मेन्दु
परीक्षा मन्त्री

परीक्षाओं के केन्द्र व्यवस्थापकों को सूचना

अखिल भारत वर्षीय आ० कु० परिषद् की सिद्धान्त शास्त्री आदि धार्मिक परीक्षाओं के समस्त केन्द्र व्यवस्थापकों को परीक्षा सम्बन्धी सब प्रकार का सामान जनवरी के प्रथम सप्ताह तक भेज दिया जावेगा जिन २ केन्द्रों का १० जनवरी तक सामान न पहुँचे उन्हें तत्काल श्री० प० देवव्रत जी धर्मेन्दु परीक्षा मन्त्री भारतवर्षीय आर्य कुमार परिषद् दीवान हाल देहली को सूचित करना चाहिए। ताकि उन्हें परीक्षा तिथियों से पूर्व सारा सामान दो बारा पहुँचाने की व्यवस्था की जावे।

देवीदयाल उपमन्त्री

अखिल भारतीय आर्य सम्मेलन का पाँचवाँ अधिवेशन

ता० २०। २१, और २२ फरवरी १९४४ को देहली में

आर्य (हिन्दू) जनता से अपील

आर्य समाज अपने जीवन काल में आर्य (हिन्दू) जाति के मान और प्राण की रक्षा के लिये पिछले १०० वर्षों से जो २ महान् प्रयत्न, त्याग और बलिदान करता आ रहा है वह किसी से छिपे नहीं है। इस समय हिन्दू जाति तथा आर्य समाज पर चहुँओर से भीषण से भीषण आक्रमण किये जा रहे हैं। देश के भिन्न २ भागों में हिन्दुओं के विरुद्ध नये २ कानून और आज्ञायें जारी करके उनके अधिकारों पर आघात किया जा रहा है। हमारी मातृभाषा हिन्दी का गला घोटने का जाल रचा जा रहा है इसके साथ ही साथ जहाँ मुसलमानों द्वारा पाकिस्तान के नाम पर हमारी मातृभूमि अखण्ड भारत देश को खण्ड २ करने का षड्यन्त्र रचा जा रहा है वहा हिन्दुओं और विशेष कर आर्य समाज की ७० साल से लाखों की संख्या में भारत की भिन्न २ भाषाओं में छपने वाली लोक प्रिय धर्म पुस्तक सत्यार्थप्रकाश के विरुद्ध एक बवडर खड़ा करने की कुचेष्टा की जा रही है। मुस्लिम लीग ने अब इस निन्दनीय आन्दोलन को उग्र रूप देने का निष्फल यत्न करना आरम्भ किया है। इस घृणित कुचेष्टा को प्रारम्भ में ही बलपूर्वक कुचल देने की महती आवश्यकता है जिसमें मुसलमनों को भविष्य में किसी भी अन्य धार्मिक पुस्तक के विरुद्ध आख उठा कर देखने का दुस्साहस न हो। अब ऐसी विकट परिस्थिति उत्पन्न हो गई है कि हिन्दुओं और विशेषत आर्यों को अपनी, अपने धर्म ग्रन्थों की और अपने अखण्ड भारत देश की रक्षा के लिये सक्रिय प्रयत्न करना नितान्त आवश्यक हो गया है।

इन्हीं गम्भोर परिस्थितियों और समस्याओं पर विचार करने तथा इनका निराकरण करने के लिये देहली मे पचम अखिल भारतीय आर्य सम्मेलन २०, २१, और २२ फरवरी ४४ को बडे समारोहपूर्वक करने का महान् आयोजन किया जा रहा है। देहली नगर की विशालता और गौरव तथा सम्मेलन के महत्त्व को दृष्टि में रखते हुये सम्मेलन के लिये बहुत बड़ी तैयारी की आवश्यकता है।

आप क्या करें।

१ स्वागत कारिणी समिति के स्वय सदस्य बनें और अपने परिचितों को बनावें। सदस्य शुल्क केवल ५ रु० है।

२ सम्मेलन के प्रबन्ध के लिये स्वय सेवकों मे नाम लिखाइये। हिन्दूमात्र का परम कर्तव्य है कि तन, मन और धन से इस महान् पवित्र धर्म यज्ञ में अपना सहयोग और सहायता देकर इसे सफल बना पुण्य तथा यश लाभ करें।

देवव्रत धर्मेन्दु

प्रचार मन्त्री, अखिल भारतीय पचम आर्य सम्मेलन

अखिल भारतीय आर्य सम्मेलन भ्रमण पत्रिका सं० १

कार्यालय—
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा.
श्रद्धानन्द बलिदान भवन, देहली।

समस्त आर्य्य समाजों के मन्त्रियों से।

आपको विदित हुआ होगा कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने सत्यार्थ प्रकाश विरोधी आन्दोलन तथा कई अन्यान्य आवश्यक विषयों पर आर्य जनता के सामूहिक विचार के लिये देहली में अखिल भारतीय आय सम्मेलन करने का निश्चय अपनी २२।१२।४३ की अन्तरग सभा मे किया था और सम्मेलन की तिथिया १। २ जनवरी १६४४ नियत की थी परन्तु इसे पूर्णतया सफल बनाने के लिये समय की कमी तथा प्रबन्ध की विशालता को दृष्टि में रख कर इन तिथियों में परिवर्तन करके अब ऋषि बोधोत्सव दिवसों पर अर्थात् २०, २१ और २२ फ़रवरी १६४४ को यह सम्मेलन करने का निश्चय किया गया है।

अत अब प्रत्येक आर्य समाज, आर्य संस्था और आर्य भाई बहिन को इस सम्मेलन को हर प्रकार से सफल बनाने क कार्य मे लग जाना चाहिये।

इस आर्य सम्मेलन के लिय सार्वदेशिक सभा द्वारा बने हुये नियमों की समाजों से सम्बन्धित सगठन की धारा निम्न प्रकार है—

१ आर्य समाज का प्रत्येक सभासद् प्रतिनिधि होने का अधिकारी होगा।

२. प्रत्येक आय समाज को जिनमे स्त्री समाज भी सम्मिलित है कम से कम एक प्रतिनिधि भेजने का अधिकार होगा।

३. जिन समाजों के दस या दस से अधिक सभासद् होंगे उन्हे प्रत्येक १० सभासद् के पीछे १ प्रतिनिधि भेजने का अधिकार होगा।

अब आप इन नियमों के अनुसार अपने प्रतिनिधियों को निर्वाचित करके उनकी सूची अधिक से अधिक २०-१-४४ तक सभा के कार्यालय में भेज दीजिये।

सम्मेलन विषयक आवश्यक सूचनाए समय २ पर आपको दी जाती रहेंगी।

नाट —गत मार्च मास में गुरुकुल कांगड़ी के उत्सव के अवसर पर जो आर्य सम्मेलन होने वाला था उसके लिये कुछ समाजों के प्रतिनिधि सदस्यों के नाम प्राप्त हुये थे। वे नाम इस सम्मेलन में कार्य में न आ सकेंगे अत. पुन: नये सिरे से नयी नामावली भिजवायें।

भवदीय—
धर्मदेव विद्यावाचस्पति
स० मन्त्री सार्वदेशिक सभा

Light of Truth

(By Dr Surya Dev Sharma S Shastri, M A L T, D Litt,
D A V College Ajmer)

(1)

O Light of truth and faith divine !
O holy Vedic Text's ensign !
On earth as glory's "Sun" do shine,
Do dispel darkness, death, decline.

(2)

Thou art a ship in worldly main,
Thou Aryans' pivot to sustain,
Thy perusal is sacred gain,
To thirsty souls a blessed rain

(3)

Thou art the heart and thou art soul
Thou art the part and thou art whole,
Thou art the glory and the goal,
Thou art the oppresst souls' console

(4)

Thou art Swami's Magnum opus,
Thou art Vedas' key marvellous,
To the Heaven's home do guide us,
Be immortal e'er beside us

(5)

Thee we will save with main and might,
For thy sake we shall ever fight,
We hold thee high whole day and night,
Thou art the Aryans' life and light

Madras Arya Samaj (Central)

SHRI SWAMI SHRADDHANANDA DAY 26-12-1943

(Pt Ganga Prasad ji President of Sarvadeshik Sabha in chair)

RESOLUTION

This meeting of the Hindus and Aryas of Madras assembled to observe Shri Swami Shraddhananda Day has learnt with deep regret the resolution passed by the Moslem League at its meeting held at Karachi on 25-12-1943 demanding the proscription of certain portions of the Satyartha Prakash on the allegation that it contains passages which are held objectionable by Moslems This meeting feels compelled to invite the attention of the Government to the fact that there are passages in the Quran explicitly teaching the use of force against infidels or kafirs which may well be held to be responsible for such atrocious murders as the assasination of Swami Shraddhananda to deplore which we are meeting today Still the Aryas and Hindus have not so far considered it advisable to demand the proscription of the aforesaid passages This meeting strongly hopes that the Government of India will pay no need to such unreasonable demands in respect of a deeply venerated work which is being used as a sacred book by millions of people for the last sixty years

Moved by Sri S Sreenivasan, B A B L, Advocate

Seconded by Sri V N Kumaraswami (President Arya Samaj Madras)

Subject introduced by Chair

Resolution passed unanimously

बिहार प्रान्तीय आर्य कुमार परिषदों से

प्रान्तीय समस्त आर्य कुमार परिषदों के मन्त्रियों से निवेदन है कि अपने अपने आर्य कुमार परिषदों के वर्तमान सदस्यों की नियमावली, पदाधिकारियों के नाम विगत दो वर्ष के कार्यों की रिपोर्ट, "निकट भविष्य में कौन सा कार्य-क्रम हो" दूसरी पूरी रिपोर्ट शीघ्राति शीघ्र कार्यालय आर्य समाज मन्दिर बाकीपुर पटने के पते से भेज दें। प्रान्तीय नया चुनाव सम्बन्धी सूचना तथा भविष्य का कार्यक्रम सम्बन्धी बुलेटिन शीघ्र सभी मन्त्रियों को भेजे जाने का प्रबन्ध हो रहा है।

रामनारायण

मन्त्री प्रान्तीय आर्य कुमार परिषद

पूर्वीय अफ़रीका का आर्य-सम्मेलन

आर्य समाज नैरोबी के ४०वें वार्षिकोत्सव पर किये गए "पूर्वीय अफ़रीका के आर्य-सम्मेलन" में निम्न आवश्यक प्रस्ताव सर्व सम्मति से स्वीकृत हुए।

स्थान —आर्य कन्या पाठशाला नैरोबी, केनिया।

सभापति :—श्री देवीदास जी पुरी।

१—यह सम्मेलन केनिया के सरकारी शिक्षा-विभाग द्वारा कन्या-शालाओं में शिक्षा के माध्यम के लिए कन्याओं की मातृ भाषा के स्थान पर अङ्गरेज़ी पर बल देना और उसे प्रचलित करना, भारतीय कन्याओं की मातृ-भाषा, संस्कृति तथा विभिन्न विषयों की शिक्षा के लिए, अत्यन्त घातक समझता है, इस लिए यह सम्मेलन केनिया की सब भारतीय-कन्या शालाओं से अनुरोध करता है कि वे शिक्षा-विभाग की इस प्रवृत्ति का तीव्र विरोध करते हुए मातृ-भाषाओं को पाठ्य-क्रम में समुचित स्थान देने के लिए व्यक्तिगत या सामूहिकरूप से आवश्यक कार्यवाही करें।

२—इस सम्मेलन की सम्मति मे भारतीय विद्यार्थियों मे भारतीय-संस्कृति, धर्म तथा जातीय जीवन की रक्षा के लिए और भारतराष्ट्र की मातृ-भाषा हिन्दी के प्रचार के लिए "आर्य-स्कूल" (Arya Boys' School) की स्थापना करना आवश्यक है, इसे कार्यरूप में परिणत करने के लिए यह सम्मेलन आर्य प्रतिनिधि सभा ई० अ० तथा आर्य समाज नैरोबी के अधिकारियों से साग्रह प्रार्थना करता है कि अवस्थाओं का ध्यान रखते हुए शीघ्र ही अव्यवस्थित हिन्दी स्कूल को एक संगठित 'आर्य-स्कूल" के रूप में सचालित करने का पूर्ण प्रयत्न करें।

३—(क) यह सम्मेलन भारतीय लोगों में अपने शुद्ध तथा सार्थक नामों को यूरोपियन तरीके से निरर्थक तथा सङ्क्षिप्तरूप से बिगाड़ कर लिखने की बढ़ती हुई प्रवृत्ति को अन्धपरम्परा तथा आत्म-अवज्ञा के रूप मे अनुभव करता है, अतः सब भारतीयों से इस प्रवृत्ति को दूर करने के लिए साग्रह प्रार्थना करता है।

(ख) इस सम्मेलन की सम्मति में भारतीय सभाओं तथा उत्सवों में अनावश्यक अङ्गरेज़ी का प्रयोग करना भारतीयों के आत्म सन्मान का बाधक है, इस लिए यह सम्मेलन पूर्वीय अफ़रीका के सब भारतीयों से प्रार्थना करता है कि ऐसे अवसरों पर अङ्गरेज़ी को अनुत्साहित करते हुए हिन्दी या दूसरी भारतीय भाषाओं का अपने व्याख्यानों तथा कार्यक्रम में प्रयोग करें।

४—इस सम्मेलन की सम्मति में धार्मिक दृष्टि से भारतवर्ष का विभाग करना भारत के शान्तिपूर्ण स्वाभाविक विकास तथा उज्जवल भविष्य का घातक है, इस लिए यह सम्मेलन भारत के सब धर्मों के उत्तरदायी नेताओं से साग्रह अनुरोध करता है कि वे भारत-विभाग की प्रवृत्ति का भारतीय जनता में शान्तिपूर्ण उपायों से दूर करें।

सत्यदेव वेदालङ्कार,
मन्त्री, पूर्वीय अफ़रीका आर्य सम्मेलन।

दान सूची सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा मास दिसम्बर १९४३
बंगाल अकाल पीड़ित सहायता निधि

१५) श्री विजयसिंह जी सदर बाजार देहली
८६) मन्त्री वानप्रस्थाश्रम, ज्वालापुर
३०) मन्त्री आर्य समाज, देवनगर देहली
२५) कविरत्न बाल दिवाकर जी हंस' आर्य समाज सरदारपुरा जोधपुर
१५) श्री बी० आर० पाठक एम० ए० सिविल सेक्रेटेरियेट लखनऊ
२५) श्री बा० बुद्धसैन जी बी० ए० केन डिवलप मेन्ट लखनऊ
२६) आर्य समाज, सब्जी मन्डी देहली
१००) आर्य प्रतिनिधि सभा सिंध कराची
२) श्री यज्ञदत्त जी पुरी लाहौर
५) डा० धर्मपाल जी मेडीकल आफीसर मकसाली (रोहतक)
१०१) श्री बा० अम्बाप्रसाद जी S D O बंगलौर कैन्ट
५) श्री बा० गुरुदत्त जी गौतम, देहली
१०) मन्त्री आर्य समाज कार्केल (S K)
४२) विद्यार्थी गण भारतीय विद्यालय बुरहानपुर सी० पी०
१०) श्री चन्द्रकान्त जी X कक्षा
५) श्री रमेशचन्द्र जी IX ,,
५) श्री कृष्णदास ,, ,,
५) श्रीमती चन्द्रो बाई जी
१) कु० शर्मिष्ठा V
१) नटवर X
१) श्री गोवर्धन
२३) विद्यार्थी गण गर्वन० कालेज झंगमघयाना
४) रामजीदास कटरा
५) रामजीदास सिक्का
१०) रामसरनदास जी
१) ऐस० गुलाबसिंह
१) रामजीदास
१) बो० लालचन्द्र
१०) मन्त्री आर्य समाज नागरथपेट बंगलौर सिटी
१) श्रीमती सुरेन्द्रबाला गगोह जि० सहारनपुर धर्मपत्नी श्री श्यामलाल जी
१०) कु० पुष्पावती जी बरनाला
१०) श्री डा० ऐल० के० उपमन्यु खजनेर (सी० आई)
५) श्री केशवधरमसी जी खोड़परा जैतपुर काठियावाड़

६२८)

४८६) आर्य समाज गाजियाबाद
४०) स्त्री आर्य समाज गाजियाबाद
३) आ० स० रेलवे स्टेशन बिलासपुर
२७॥≡) रणजीतसिंह जी अकाउन्टेन्ट जयपुर
४) डो० ऐन० अकाउन्टेन्ट जनरल जयपुर
१०) शादीराम पटवारी Chak No ८० लायलपुर

११९८॥≡)

७॥।=) आर्य समाज अलवर स्टेट
५००) आर्य समाज नैरोबी पू० ईस्ट अफ्रीका
२०) ला० गोपालदास श्री दयालजी घिरोर (मैनपुरी)
५) रामेश्वरदयाल जी घिरोर (मैनपुरी)
२०) शान्तिदेवी जी धर्मपत्नी जैप्रसादजी देहरादून
३०) मन्त्री आर्य समाज मैनपुरी
५) धर्मपाल जी मेडीकल ऑफीसर जाखौली (रोहतक)
१०००) द्वारा जनरल मैनेजर नयासंसार कराची (सिन्ध)
२) आर्य समाज गंगोह (सहारनपुर)

२७८८॥।-)

दान आर्य समाज स्थापना दिवस

१५) आर्य समाज सरदारपुरा जोधपुर
३०) आर्य समाज उडपी द० कर्णाटक

४५)

दान

१६॥।) आर्य समाज सुलतानपुर लोदी (कपूरथला)
२) सूरजप्रसाद जी आर्य कानपुर
२) रामदास रामचरन जी आर्य कानपुर
१) गुरुदयाल जी वैद्य अलीगढ़
१) बा० छज्जनलाल जी देहली शाहदरा (देहली)
।) श्री सुन्दरराज जी फ्रौजपेट

२१)

दान सत्यार्थ प्रकाश रक्षा फण्ड

१०) श्री भीष्मदेव जी बजाज रौपड़
२) आर्य समाज रेलवे स्टेशन बिलासपुर (सी० पी०)

१२)

दान स्थिर पुस्तकालय सभा

६॥।=) आर्य समाज रेवाड़ी (गुड़गाँवा)

निम्नांकित सज्जनों ने बंगाल अकाल पीड़ित सहायता निधि में वस्त्र दान दिये हैं।

(१) श्री गिरधरलाल बैजनाथ देहली
(२) श्री आनन्दस्वरूप जी देहली
(३) श्री राजगुरु जी, देहली
(४) आर्य कुमार सभा नई देहली

इन सबको सभा की ओर से हार्दिक धन्यवाद।

धर्मदेव विद्यावाचस्पति
स० मन्त्री सार्वदेशिक सभा

अशुद्धि निवारण

गत मास की दान सूची में भूल से आर्य स्त्री समाज मेरठ के २५०) के दान के स्थान में आर्य समाज मेरा (पञ्जाब) का नाम छप गया था। इस भूल का हमें खेद है। आर्य स्त्री समाज मेरठ के इस दान के लिये सभा की ओर से हार्दिक धन्यवाद।

—मन्त्री



अखिल भारतीय मुस्लिम लीग और सत्यार्थ प्रकाशः—

ऋषि दयानन्द और इस्लाम के अन्य समालोचकः—

२५ दिसम्बर सन् १९४३ को कराची में मि० मुहम्मदअली जिन्ना के सभापतित्व में जो मुस्लिमलीग का अधिवेशन हुआ उसने सर्वसम्मति से विषय निर्धारिणी समिति के निम्न प्रस्ताव को स्वीकृत किया कि

"अखिल भारतीय मुस्लिम लीग का यह अधिवेशन केन्द्रीय सरकारतथा प्रान्तीय सरकारों का ध्यान स्वामी दयानन्द द्वारा लिखित 'सत्यार्थ प्रकाश' नामक ग्रन्थ के उन अध्यायों की ओर आकर्षित करता है जिनमें पवित्र पैगम्बर मुहम्मद साहेब और अन्य धर्म प्रवर्तकों के विरुद्ध आक्षेप योग्य, अपमानजनक और उत्तेजक समालोचना की गई है और बल पूर्वक यह माग पेश करता है कि उक्त सरकारें इन समालोचनात्मक अध्यायों का जब्त करलें और भारतीय दण्ड विधान की उचित धाराओं का प्रयोग करके उनके प्रकाशकों पर मुकद्दमा चलाएँ ताकि ऐसे साहित्य के प्रचार को प्रभाव जनक रूप में रोका जा सके।" (Dawn Delhi २६ दिस० १९४३ में प्रकाशित प्रस्ताव का हिन्दी अनुवाद)

इस प्रस्ताव को उपस्थित करते हुए लाहौर के प्रो० मलिक इनायतुल्ला ने कहा कि 'इस्लाम ने प्रारम्भ से अब तक कभी भी अन्य मतों के विरुद्ध कठोर आलोचना नहीं की। मुसल्मान इस बात को कभी सहन नहीं कर सकते कि सत्यार्थप्रकाश में १२ वें १३ वें और चौदहवें समुल्लास को रहने दिया जाए जिन की भारत भर के मुसल्मानों ने निन्दा की है।' वक्ता ने कुछ उद्धरण देने चाहे पर मि० जिन्ना ने यह कह कर उन्हें रोक दिया कि ये वाक्य इतने आक्षेप योग्य हैं कि मैं उन्हें प्रकाशित नहीं होने देना चाहता। हैदराबाद के हाजी अली अकबरशाह ने उपर्युक्त प्रस्ताव का अनुमोदन करते हुए कहा कि 'All copies. of the book

should be seized by the Government of India" अर्थात् भारत सरकार को इस पुस्तक (सत्यार्थ प्रकाश) की सब प्रतियों को जब्त करके छीन लेना चाहिये। मौ० अब्दुलहमीद ने कहा कि महात्मा गान्धी ने यङ्ग इन्डिया में लिखा था कि जब तक सत्यार्थ प्रकाश विद्यमान है भारत में हिन्दू मुस्लिम एकता नहीं हो सकती। मुसल्मान इस बात को देखने के लिये कि आक्षेप योग्य अध्याय जब्त कर लिये जाएँ सब प्रकार का त्याग करने को तय्यार हैं। (Dawn 26-12-43)

हमारा विश्वास था कि मुस्लिम लीग कौन्सिल के १४ नव० के सत्यार्थ प्रकाश की जब्ती विषयक प्रस्ताव का जो घोर विरोध समस्त आर्य्य (हिन्दू) जगत् में ही नहीं बल्कि कई विचार शील मुसल्मानों की ओर से भी किया गया था उसको दृष्टि में रखते हुए मुस्लिम लीग इस अविवेक पूर्ण, अन्याय्य मागको पुनः प्रस्तुत करने की मूर्खता न करेगी किन्तु इतने विवेक की मुस्लिम लीग के वर्तमान कर्णधारों से आशा करना व्यर्थ था। वे तो अशिक्षित वा अर्धशिक्षित मुसल्मानों को मतान्धता को प्रोत्साहित करके ही अपनी गद्दी कायम रखना चाहते हैं। मुस्लिम लीग की कार्य कारणी के गत नवम्बर अधिवेशन में एक सुप्रसिद्ध मुस्लिम नता ने यहा तक कह डाला था कि यदि 'सत्यार्थ प्रकाश' को जब्त न कराया गया तो इस्लाम नष्ट हो जावगा याद इस्लाम को जिंदा रखना है तो 'सत्यार्थ प्रकाश' को नष्ट वा ज़ब्त कराना ही होगा। ऋषि दयानन्द ने जो समालोचना अन्य मतों की की है वह सत्य के प्रकट करने और उसके प्रचार के विशुद्ध उद्देश्य से की न कि किसी का दिल दुखाने के लिये। इस बात को उन्होंने बार २ सत्यार्थ प्रकाश की भूमिका और अनुभूमिकाओं में दुहराया है। इस पर भी उस समालोचना का युक्ति युक्त उत्तर न देकर उसकी जब्ती का बवन्डर खड़ा करना मुसल्मानों की निर्बलता को सूचित करता है और कुछ नहीं। सभी सुधारक अपने २ समय में प्रचलित बुरे विश्वासों और प्रथाओं का घोर विरोध करते रहे हैं जैसे कि इसी अङ्क में प्रकाशित प्रो० हरिदत्त जी वेदालङ्कार के 'ऋषि दयानन्द और अन्य धर्म सुधारक' शीर्षक लेख में दिखाया गया है। मुहम्मद साहेब के कुरान में वर्णित इस विषयक आदेश तो समालोचना की उचित सीमा का सर्वथा उल्लङ्घन करके अन्य मतावलम्बियों के प्रति क्रूरव्यवहार तथा हिंसा के स्पष्ट समर्थक हैं जैसे कि—अरबी के भारत में सबसे बडे विद्वान् तर्क शिरोमणि श्री प० राम-

चन्द्र जी देहलवी ने अपने समग्रहत्मक लेख मे दिखाया है जो इसी अङ्क में प्रकाशित किया गया है। ऋषि दयानन्द की युक्ति युक्त समालोचना की जब हम अन्य सुप्रसिद्ध आलोचकों के लेखों से तुलना करते हैं तो हमे उस मे कुछ भी कठोरता नहीं प्रतीत होती। उदाहरणार्थ वर्तमान समय के सुप्रसिद्ध विचारक मि० वेल्स ने (Short History of the world) में मुहम्मद साहेब के विषय में अपनी सम्मति इस प्रकार क शब्दों में प्रकट की है "Muhammed seemes to have been a man compounded of very considerable vanity greed, cunning self deception and quite sincere religious passion

(Short History of the world by H G Wells P 137)

अर्थात् मुहम्मद मे अत्यधिक अहङ्कार लोभ कपट आत्म वचन और सच्चा धार्मिक उत्साह प्रतीत होता है। वतमान काल के दूसरे सुप्रसिद्ध विचारक बर्नार्ड शॉ ने The adventures of the Black Girl in her Search for God मे मुहम्मद साहेब का जा चारत्र चित्रण किया है जिसमे नीग्रो लड़की के यह पूछने पर कि तुम्हारी कितनी स्त्रिया विद्यमान हैं जा मुझे भी तुम अपनी बीबी बनाना चाहते हो उनके मुख से उत्तर दिलवाया है I have long since ceased to count them' अर्थात् बहुत समय से मैंने उन्हें गिनना छोड़ दिया है और जिसकी समाप्ति इन शब्दों से की है कि 'What other chief can write a Book and promise them an eternity of bliss after their death with all the authority of a mind that can surround its own inventions with the majesty of authentic inspiration (P 68)

अर्थात् कौन सा और नेता है जो एक पुस्तक लिखकर मृत्यु के पश्चात् उन अपने अनुयायियों को सदा के लिये आनन्द देने की प्रतिज्ञा कर सकता है और अपनी मन घड़न्त बातों के लिये इलहाम की शान का दावा कर सकता है इत्यादि उसके आगे सत्यार्थ प्रकाश की युक्ति युक्त समालोचना आ विशुद्ध सद्भावना से प्रेरित है सर्वथा कोमल प्रतीत होती है। Encyclopedia of Religions and Ethics में मुहम्मदीय मत (Mohammedanism) विषयक लेख के लेखक डा थामस हन्टर B D. ने अपने लेख में इस्लाम की सहिष्णुता और मतान्धता के विषय मे बताया है कि 'On the question of religious toleration the Quran contains a series of utterances belonging to different periods and varying from large minded tolerance to extreme

fanaticism. At times no form even of controversy is permitted Else where the Muslims are told to fight with *other cummunities relentlessly until they accept Islam* or *pay tribute which they are to bring in humiliation Friendship with members of other cummunities is for bidden The most intolerant utterances are the latest ones* " Encyclopedia of Religions and Ethics Mohammedanism by Dr Thomas Hunter B D Vol 8 P 877.)

अर्थात् धार्मिक सहिष्णुता के विषय में कुरान में भिन्न भिन्न समयों में भिन्न भिन्न प्रकार के वाक्य पाये जाते हैं जो उदारतापूर्ण सहिष्णुता से पहले दर्जे की मतान्धता तक हैं। किसी प्रकार के वाद विवाद वा समालोचना का भी अधिकार नहीं रखा गया। अन्य स्थानों पर मुसलमानों से यह कहा गया है कि वे अन्य मत वा जातियों के लोगों से तब तक निर्दयतापूर्वक युद्ध करें जब तक कि वे इस्लाम को न स्वीकार करलें वा बड़ी नम्रता के साथ कर देना न शुरू करें। अन्य जातियों के साथ मित्रता भी निषिद्ध ठहराई गई है (मुहम्मद साहेब की) अन्तिम उक्तियां सबसे अधिक असहिष्णुता की सूचक हैं। इत्यादि

मुहम्मद साहेब के चरित्र के विषय में डा हन्टर जैसे विद्वान् ने जो अरबी के ग्लासगो युनिवर्सिटी में प्रोफ़ेसर हैं अनेक ग्रन्थों के आधार पर निम्न वाक्य लिखे हैं "His (Muhammed s) career as tyrant of Medina is that of a *Robber chief* whose political economy consists in securing and dividing plunder '

"He is an un-bridled libertine and encourages the same passion in his followers For what ever he does, he is prepared to plead the express authorisation of the Deity" "The theory that this person s conduct was a model for his followers has in consequence done serious mischief".

(Vol 8 P. 878).

उपर्युक्त उद्धरण में मुहम्मद साहेब के चरित्र की इतनी कठोर आलोचना है कि उसका हिन्दी में अनुवाद तक देने में हमें सकोच होता है। इसमें उनके लिये। 'Robber Chief' (डाकुओं का सरदार) 'unbridled libertine' (स्वच्छन्द विषयी वा कामी) जैसे भयङ्कर शब्दों का प्रयोग किया गया है।

ऐसे सैकड़ों पाश्चात्य और दूसरे विद्वानों के ग्रन्थों से कठोर समालोचनात्मक वाक्य उद्धृत किये जा सकते हैं किन्तु स्थानाभाव से ऐसा करना असम्भव है। क्या हमारे मुसलमान बन्धु इन सब ग्रन्थों की जब्ती के लिये भी वैसा ही बवन्डर मचाएंगे जैसा कि सत्यार्थ प्रकाश के विषय में उसके प्रकाशित होने के लगभग ६० वर्ष बाद आज मचाया जारहा है? गत १ई सदियों के हजारों निरपराध हिन्दुओं के अतिरिक्त आर्य पथिक प० लेखराम जी और अमर धर्मवीर श्रद्धेय स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज जैसे कितने ही आर्य नेता मुसलमानों की मतान्धता की वेदि पर बलि दे चुके हैं उस पर भी उनके अपनी उदारता का गुणगान को कौन निष्पक्ष इतिहास का विद्यार्थी स्वीकार करेगा? मुस्लिम लोग तथा सरकार को यह भली भांति समझ लेना चाहिये कि वे अपने किसी भी आन्दोलन से आर्यों को अपनी इस प्राण प्रिय धर्म पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश से जिस ने उनकी आन्तरिक दृष्टि खोल कर उन में नवजीवन का सचार किया है वंचित करने में कभी सफल नहीं हो सकते। समस्त आर्य और हिन्दू (जैसे कि हिन्दू महासभा ने सर्व सम्मति से सत्यार्थप्रकाश विषयक प्रस्ताव को स्वीकृत करके स्पष्ट कर दिया है) प्राण पण से महर्षि दयानन्द की इस अमर कृति की रक्षा करेंगे और आवश्यकता हुई तो प्रबल से प्रबल सरकार का भी इस विषय में अहिंसात्मक रीति से मुकाबिला करेंगे यद्यपि हमें आशा नहीं कि कोई भी सरकार इतनी अविवेक पूर्ण कार्यवाही के करने का स्वप्न में भी विचार करेगी। यह आर्यसमाज के लिये जीवन मरण का प्रश्न है और इस में महात्मा गान्धी जैसे महापुरुषों की सम्मति का भी आर्य कोई मूल्य नहीं समझते। यद्यपि यह असत्य है कि महात्मा गान्धी जी ने अपनी सम्मति उस प्रकार के शब्दों में दी थी जिन्हें मौ० अब्दुल हमीद ने प्रकट किया है। महात्मा गान्धी जी से १७-१-३३ तथा ६-३-३३ को यरवदा जेल में मेरी जो भेंट और पत्र व्यवहार हुए उसके तथा अन्य विश्वस्त सूत्रों से प्राप्त सूचना के आधार पर मैं कह सकता हूँ कि महात्मा जी की सत्यार्थ प्रकाश विषयक सम्मति में (जो सन् १६२४ में किसी येन केन प्रकारेण एकता स्थापन विषयक भावावेश में प्रकट की गई थी) काफ़ी परिवर्तन आ चुका है अतः मौलाना अब्दुल हमीद का १६ वर्ष पूर्व की उनकी सम्मति को अपने मत पक्षस्थ रूप में प्रकट करना सर्वथा अनुचित है। मुसल्मानों ने अन्य मतों की कठोर आलोचना नहीं की यह बात इतनी असत्य और उपहासास्पद है कि इसका

गम्भीरता से निराकरण अनावश्यक है।

डाक्टर श्याम प्रसाद मुखोपाध्याय का भाषणः—

अखिल भारतीय हिन्दू महा सभा के अमृतसर अधिवेशन में सभापति रूप से दिया गया डा० श्यामप्रसाद मुखोपाध्याय का भाषण अत्यन्त सारगर्भित तथा प्रत्येक दृष्टि से प्रशसनीय था जिस में उन्हों ने इस बात की स्पष्ट शब्दों में घोषणा की थी कि पाकिस्तान जैसी देश के लिये आर्थिक तथा राष्ट्रीय दृष्टि से सर्वथा घातक योजना के आधार पर मुस्लिम लीग से किसी प्रकार का समझौता नहीं हो सकता। उन्होंने पूर्ण स्वतन्त्रता की प्राप्ति को हिन्दू महा सभा का लक्ष्य बनाते हुए उसकी वर्तमान परिस्थिति में राष्ट्रीय तथा सामाजिक दृष्टि से आवश्यकता पर बड़ा उत्तम प्रकाश डाला है और संगठन पर बल दिया है। खेद है कि जाति भेद और अस्पृश्यता जैसी कुप्रथाओं का समूल नाश किये बिना दृढ़ संगठन सर्वथा असम्भव है इस बात को जितना स्पष्ट करने की आवश्यकता है उतना स्पष्ट इस भाषण में नहीं किया गया यद्यपि इसका कुछ निर्देश अवश्य किया गया। हिन्दू महा सभा को संगठन की दृष्टि से भी इस बात को स्पष्ट कर देना चाहिये तथा बाल विवाह, दहेज प्रथा आदि समाज के लिये अत्यन्त हानिकारक प्रथाओं के विरुद्ध प्रबल आन्दोलन करना चाहिये जिससे हिन्दू समाज एक बलशाली और सुसंगठित समाज बन सके। हिन्दू महासभा के जलूस पर किये गये लाठी प्रहार को हम अत्यन्त निन्दनीय समझते हैं जिसका प्रतीकार आवश्यक है।

अखिल भारतीय आर्य महा सम्मेलनः—

अखिल भारतीय आर्य महा सम्मेलन विषयक आवश्यक सूचनाएँ पाठक इसी अङ्क में अन्यत्र पढ़ चुके हैं जो २०, २१, २२ फर्वरी (ऋषि बोधोत्सव वा शिवरात्रि के दिनों में) को देहली में बड़े समारोह के साथ किया जाएगा। मुस्लिम लीग के सत्यार्थ प्रकाश विरोधी आन्दोलन का क्रियात्मक उत्तर इस सम्मेलन को अधिक से अधिक सफल बना कर आर्यों को अपने दृढ़ संगठन और सामूहिक शक्ति तथा अदम्य उत्साह का परिचय देना है। वैदिक धर्म प्रचार, समाज तथा देश की उन्नति के साथ सम्बन्ध रखने वाली सब समस्याओं पर इस सम्मेलन में विचार करके भविष्य कार्यक्रम का निश्चय किया जाएगा। अतः प्रत्येक आर्य नर नारी को इस सम्मेलन को सफल बनाने के लिये पूर्ण सहयोग देना चाहिये ताकि

आर्यों की सुसंगठित सामूहिक शक्ति का देख कर उसका विरोध करने का किसी को साहस न हो सके।

पंजाब सरकार और डाक विभाग की हिन्दी विरोधनी नीतिः—

पंजाब सरकार जिस हिन्दी विरोधिनी नीति का अनुसरण कर रही है वह अत्यन्त निन्दनीय है। विद्यालयों तथा डाक विभाग से इसके क्रियात्मक बहिष्कार अथवा तिरस्कार के अनेक उदाहरण पाठकों ने सुने ही होंगे पर अभी हाल में जो नादिरशाही हुक्म जेल विभाग के अधिकारियों ने जारी किया है उसने तो सभी को मात कर दिया है। जेल विभाग के अधिकारियों ने क़ैदियों को आज्ञा दी है कि वे हिन्दी मे पत्र नहीं लिख सकते और न प्राप्त कर सकते हैं। इसका परिणाम पंजाब की देवियों के लिये जिन्होंने विशेष रूप से हिन्दी भाषा को अपनाया हुआ है कितना भयङ्कर होगा इसकी सहज में कल्पना की जा सकती है। अपने पतियों से अंग्रेज़ी या उर्दू में प्राप्त पत्रों को पढ़वाने के लिये देवियों को दूसरों के द्वार खटखटाने पड़ेंगे तथा अपने पतियों को पत्र भी उन्हें दूसरों से लिखवाने पड़ेंगे यदि वे अंग्रेजी उर्दू या गुरुमुखी नहीं जानती जैसे कि बहुत सी हैं। यह आदेश सर्वथा अनुचित, शिष्टता विरुद्ध तथा उपहासजनक है। कहा जाता है कि कुछ लोगों ने हिन्दी मे आक्षेप जनक बातें लिखी थीं इस लिये सरकार को ऐसी आज्ञा निकालनी पड़ी। ऐसा करने वालों के विरुद्ध उचित कार्यवाही की जा सकती थी पर कुछ थोड़े से व्यक्तियों के अपराध के कारण निरपराध देवियों को दण्ड देना सर्वथा अन्याय है। इस विषय में आन्दोलन करके इस नादर शाही हुक्म को लौटाने के लिये सरकार को बाधित करना चाहिये यदि अपनी भूल को स्वीकार कर के वह स्वयं ही ऐसा न करले।

डाक विभाग में हिन्दी विरोधिनी जिस नीति को बर्ता जा रहा है उसके अनेक उदाहरण हमारे सामने आये हैं। १६-११ ४३ को सार्वदेशिक सभा कार्यालय से एक पत्र श्री पुस्तकालयाध्यक्ष जी गुरुकुल काङ्गड़ी के नाम भेजा गया जिस में २२ ११ ४३ को देहली में होने वाली धर्मार्य सभा के विचारार्थ कुछ आवश्यक पुस्तकें भेजने की प्रार्थना की गई थी। लग भग १ मास बाद पुस्तकालयाध्यक्ष श्री प० वागीश्वरजी विद्यालङ्कार ने सूचना दी कि सभा का वह आवश्यक पत्र उन्हें १३-१२-४३ को घूम फिर कर मिला क्यों कि उस पर पता शुद्ध हिन्दी में टाइप

किया हुआ था। डाक विभाग की कृपा से धर्मार्य सभा उन पुस्तकों से लाभ न उठा सकी। १५-१२-४३ को देहली के एक सार्वदेशिक पत्रके ग्राहक श्री ओंप्रकाशजी के नाम सभा कार्यालय से चन्दे के लिये पत्र भेजा गया जो मृत पत्रालय (Dead letter office) मद्रास की सैर करता हुआ २६ दिस० को देहली पहुंचा। कारण पूरा पता शुद्ध हिन्दी में लिखना था। ऐसी ही गति अन्य बहुत से पत्रों की हुई जिन पर पता शुद्ध हिन्दी में लिखा हुआ था। सरकार तथा डाक विभाग की इस हिन्दी विरोधिनी नीति के विरुद्ध प्रबल आन्दोलन की आवश्यकता है जिस से राष्ट्र भाषा के प्रति इस घोर अन्याय को शीघ्र दूर किया जा सके। इस विषय में सब राष्ट्रभाषा प्रेमियों को सगठित रूप से प्रबल आन्दोलन करना चाहिये।

भारत का घोर अपमानः—

आस्ट्रेलिया के सैनिक अधिकारी मि० केसी की बगाल के गवर्नर पद पर नियुक्ति सच मुच भारत के लिये घोर अपमान सूचक है जिस ने सारे भारत में घोर असन्तोष उत्पन्न कर दिया है। आस्ट्रेलिया जैसे देश के एक नागरिक को जहा भारतीयों को बसने का भी अधिकार प्राप्त नहीं है और उनके साथ मनुष्यो-चित व्यवहार नहीं किया जाता भारत के एक बडे प्रान्त का शासक बना देना वस्तुत' अत्यन्त निन्दनीय कार्य है जिसे कोई भी आत्म सम्मानयुक्त व्यक्ति पसन्द नहीं कर सकता। क्या ब्रिटिश सरकार ने इस युद्ध काल मे भारतीयों को करने का यही उपाय सोचा है?

श्री राजगोपालाचार्य का धार्मिक पतन—

हमने 'सार्वदेशिक' के फरवरी १९४३ के अङ्क में श्री राजगोपालाचार्य पर 'विवेक भ्रष्टानां भवति विनिपात शतमुख' इस भर्तृहरि कवि की सुप्रसिद्ध उक्ति को चरितार्थ होते हुए बताया था। राजनैतिक क्षेत्र में श्री राजगोपालाचार्य का राष्ट्रीय महासभा से पृथक् हो जाने के बाद कोई प्रभाव नहीं रहा किन्तु प्रतीत होता है कि अब वे घट भित्वा पटं छित्वा, कृत्वा रुधिरकर्दमम्। येन केनाप्युपायेन, प्रसिद्ध' पुरुषो भवेत्॥" इस नीतिवाक्य का अनुसरण करते हुए प्रसिद्धि प्राप्त करना चाहते हैं और ऐसा करते हुए जो आर्य धर्म की दृष्टि से उनका पतन हो चुका है उसका उदाहरण उनकी मद्रास के बकरीद उत्सव पर

दी गई वह विचित्र वक्तृता है जिस में उन्होंने मुसलमानों द्वारा धार्मिक दृष्टि से किये गये गोवध और गामांस भक्षण तक का समर्थन किया है—"There was sacrifice when what one owned was killed as an act of consecration If a person made such a consecrated or ceremonial sacrifice, one should not interfere After all, beef was not quite so harmful as drink (Hindu 9 12-43)

इस प्रकार के वाक्य श्री राजगोपालाचार्य जैसे मद्रासी ब्राह्मण कुलोत्पन्न व्यक्ति के मुख से निकल सकते हैं इस बात की कल्पना भी कुछ वर्ष पूर्व न की जा सकती थी पर अब तो मुसलमानों से लोकप्रियता प्राप्त करने के लिये ऐसे आर्य हिन्दू मात्र के चित्त दुखानेवाले वाक्यों का प्रयोग करके वे केवल अपने धार्मिक पतन का ही ढिंढोरा पीट रहे हैं। हम श्री राजगोपालाचार्य की इस मनोवृत्ति को अत्यन्त निन्दनीय समझते हैं और उनको ठीक मार्ग पर लाने के लिये आवश्यक समझते हैं कि आर्य हिन्दू मात्र उनके इन विचारों का घोर प्रतिवाद सार्वजनिक सभाओं में करें। 'उपनिषदों' पर उत्तम ग्रन्थ के लेखक एक ब्राह्मण का इतना धार्मिक पतन कितना शोचनीय और निन्दनीय है। जिस प्रकार आर्य समाज मद्रास ने इस विषयक निन्दा सूचक प्रस्ताव पास किया है उसी प्रकार अन्य सब आर्य हिन्दू सभाओं को भी कर के इस मार्ग भ्रष्ट आचार्य को सच्चे मार्ग पर लाने का यत्न करना चाहिये।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अधिकारियों की धांधली—

जयपुर में दिसम्बर के अन्तिम सप्ताह में होने वाले हिन्दी साहित्य-सम्मेलन के अधिवेशन को (जब कि उसके लिये तय्यारियां बड़े जोर शोर से हो रही थीं) ईस्टर तक स्थगित कर और हिन्दी के सुप्रसिद्ध विद्वान् और उद्‌भट लेखक श्री प० इन्द्रजी विद्यावाचस्पति के बहुमत से हुए सभापति पद पर चुनाव को रद्द करके सम्मेलन की स्थायी समिति ने घोर असन्तोष की ज्वाला को सर्वत्र प्रज्वलित कर दिया है जैसे कि हिन्दी के प्रायः सब प्रान्तों के सुप्रसिद्ध पत्रों में प्रकाशित टिप्पणियों और इस धांधली के विरुद्ध श्री प० कन्हैयालाल जी मिश्र 'प्रभाकर' के आमरणान्त अनशन की घोषणा से स्पष्ट ज्ञात होता है। सम्मेलन के प्रधान मन्त्री का लम्बे मौन के बाद प्रकाशित वक्तव्य कुछ भी सन्तोष जनक नहीं है। हिन्दी साहित्य सम्मेलन को एक जीवित जागृत संस्था बनाने और उसके

द्वारा राष्ट्र भाषा के गौरव की रक्षा के लिये ऐसी धांधली का घोर प्रतिवाद करना और स्थायी समिति को अपने अविवेक पूर्ण तथा दलबन्दीसूचक निर्णय को बदलने लिये बाधित करना सब राष्ट्र भाषा प्रेमियों का कर्तव्य है।

मद्रास सरकार का मद्यपान समर्थक निन्दनीय कार्यः—

कांग्रेस मन्त्रि मण्डल द्वारा प्रवर्तित मद्यपान निषेधक कानून का जो मद्रास सस्थान के अनेक भागों में प्रचलित था और जिससे सर्व साधारण को नैतिक तथा आर्थिक दृष्टि से बड़ा लाभ हो रहा था स्थगित करके मद्रास सरकार ने बड़ा ही अनुचित तथा निन्दनीय कार्य किया है जिसका सर्वत्र घोर प्रतिवाद किया जा रहा है। सेलम उत्तर आरकाट जिला चित्तूर आदि में अब पुनः शराब का दौरा चल रहा है और ज्ञात हुआ है कि शराब का अब ३०० प्रतिशतक अधिक भाव से बेचा जा रहा है। अपनी आमदनी को बढ़ाने के लिये इस पाप को प्रोत्साहन देना और इस प्रकार जनता की नैतिक तथा धार्मिक अवस्था को खराब करना किसी भी सरकार के लिये अत्यन्त निन्दनीय बात है जिस के विरुद्ध प्रबल आन्दोलन करना चाहिये।

चीनी प्राच्य विश्वविद्यालय में हिन्दी को स्थानः—

हमें यह जान कर अत्यन्त प्रसन्नता हुई है कि चीन के युन्नान प्रान्त की कुनमिंग ओरियेन्टल युनिवर्सिटी ने हिन्दी भाषा और साहित्य के अध्ययन के लिये एक गद्दी स्थापित की है। गुरुकुल कांगड़ी विश्व विद्यालय ने जो हिन्दी भाषा के माध्यम द्वारा सब विषयों में उच्चतम शिक्षा देने वाली प्रथम जगद्विख्यात संस्था है भारतीय संस्कृति, सभ्यता और इतिहास विषयक अपने सब प्रकाशनों को एक २ प्रति चीन के उक्त प्राच्य विश्वविद्यालय को एक अभिनन्दनात्मक हर्ष सूचक पत्र के साथ प्रेमोपहार स्वरूप भेजी है। चीन और भारत में पारस्परिक प्रेमसम्बन्ध के दृढ़ी करण में यह प्रशंसनीय प्रयत्न भी सहायक होगा इसमें संदेह नहीं।

श्री स्वामी शंकरानन्द जी सरस्वती का देहावसानः—

यह जान कर हमें अत्यधिक दुःख हुआ कि देश विदेश में वैदिक धर्म के सुप्रसिद्ध प्रचारक श्री स्वामी शङ्करानन्द जी सरस्वती का लग-भग ७६ वर्ष की आयु में काठियावाड़ में गत मास देहावसान हो गया है। उनके सहयोगी श्री स्वामी

भवानीदयाल जी ने ठीक ही लिखा है कि 'स्वामी श्रद्धानन्द जी के निधन से वैदिक धर्म का एक प्रबल प्रचारक उठ गया आर्य संस्कृति का एक चमकता हुआ सितारा डूब गया और हिन्दुत्व का एक आधार स्तम्भ ढह गया।" हमें खेद है कि स्थानाभाव से श्री स्वा० भवानीदयाल जी के स्व० स्वामी जी विषयक अत्युत्तम लेख को स्थानाभाव से हम इस अङ्क में नहीं दे सके अगले अङ्क में उसे चित्र सहित प्रकाशित किया जायगा। हम स्वर्गीय स्वामी जी के (जिनके मगलौर बगलौर इत्यादि में दर्शनों का सौभाग्य हमें भी कई बार प्राप्त हुआ था) वैदिक धर्म प्रचारार्थ अदम्य उत्साह तथा आर्य जाति की ठोस सेवा के लिये उनके प्रति आर्य-जगत् की ओर से श्रद्धाजलि अर्पण करते और उनके समस्त मित्रों तथा भक्तों के प्रति-जिन में से अनेक राजा महाराजा भी थे-हार्दिक समवेदना प्रकट करते हैं।

—धर्मदेव विद्यावाचस्पति

नई देहली में श्रद्धानन्द बलिदान दिवस के उपलक्ष्य में

सार्वजनिक सभा

आर्य्य कुमार सभा डी० ए० वी० हायर सैकण्डरी स्कूल नई देहली की ओर से ता० १८। १२। ५३ शनिवार—प्रातः १० बजे से 'स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज के बलिदान दिवस के उपलक्ष्य मे एक सार्वजनिक सभा श्री० लाला हरिश्चन्द्र जी एम० ए० प्रिंसिपल के सभापतित्व मे हुई। श्री प० देवव्रत जी धर्मेन्दु सचालक कुमार सभा ने प्रारम्भिक भाषण मे श्री स्वामी जी के जीवन कार्य्यों व बलिदान के सम्बन्ध मे परिचय दिया कुछ आर्य्य कुमारों ने स्वामी जी के बारे में कविताएँ पढ़ीं व गायन गाए तदुपरान्त श्री प० धर्मदेवजी विद्यावाचस्पति स० मन्त्री सार्वदेशिक आर्य्य प्रतिनिधि सभा का लगभग १½ घण्टे तक मनोहर तथा प्रभावशाली भाषण हुआ। आपने अपने भाषण में स्वामी जी के जीवन व कार्य्यों का भरपूर परिचय दिया तथा कुछ कविताएँ भी पढ़कर सुनाईं। अन्त मे धन्यवाद व शान्ति पाठ आदि के उपरान्त सभा समाप्त हुई। —मन्त्री

स्वाध्याय योग्य उत्तम साहित्य

श्री महात्मा नारायणस्वामी जी कृत

कतिपय ग्रन्थ

(१) मृत्यु और परलोक

शरीर, अन्तःकरण तथा जीव का स्वरूप और भेद, जीव और सृष्टि की उत्पत्ति का प्रकार, मृत्यु का स्वरूप तथा बाद की गति, मुक्ति और स्वर्ग नरक इत्यादि का ..., मुक्ति के साधन आदि आदि विषयों पर अद्भुत पुस्तक। मूल्य ॥=)

(२) विद्यार्थी जीवन रहस्य

विद्यार्थियों के लिए उनके मार्ग का सच्चा पथ प्रदर्शक, उनके जीवन के प्रत्येक पहलू पर श्रृङ्खलाबद्ध प्रकाश डालने वाले उपदेश। तृतीय संस्करण ।-)

(३) उपनिषद् रहस्य

केन, कठ, प्रश्न, मुंडक माण्डूक्य, ऐतरेय, तैत्तिरीय, बृहदारण्यक उपनिषदों की बहुत सुन्दर खोजपूर्ण और वैज्ञानिक व्याख्यायें।

मूल्य क्रमशः—

।-), ≡), =)॥, =)॥, -)॥ ≡)॥, ।), ।=)॥, २)

नोट—उपर्युक्त पुस्तकें प्रत्येक आर्य समाज पुस्तकालय में रहनी चाहियें।

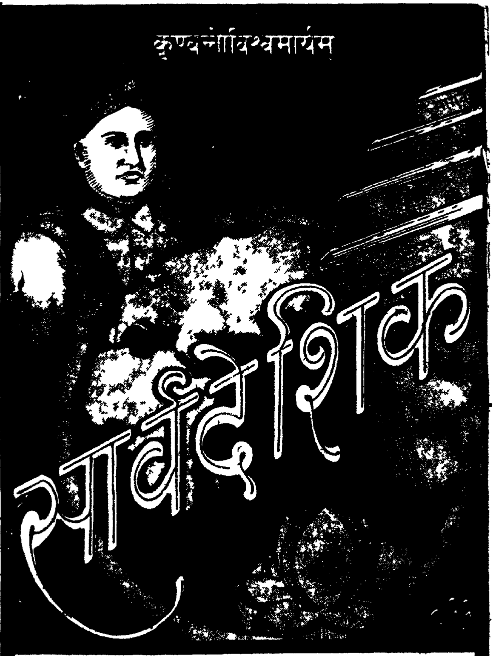
मिलने का पताः—सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, देहली।

श्री प० रघुनाथप्रसाद पाठक—पब्लिशर के लिये लाला सत्याराम चावला द्वारा 'चन्द्र प्रिंटिङ्ग प्रेस", श्रद्धानन्द बाजार, देहली में मुद्रित।

Regd No L. 2121

सार्वदेशिक सभा पुस्तक भण्डार की उत्तमोत्तम पुस्तकें

(१) वैदिक सिद्धान्त सजिल्द १)
(२) यमपितृ परिचय २)
(३) अथर्ववेदीय चिकित्सा शास्त्र २)
(४) वेद म असित शब्द -)।
(५) ऋग वेद म देवृकामा वा देवकामा -)
(६) विदेशो म आर्य्य समाज ॥)
(७) दयानन्द सिद्धान्त भास्कर १।)
(८) आर्य्य सिद्धान्त विमर्श १॥)
(९) भजन भास्कर ॥)
(१०) समस्त आर्य्य समाजों की सूची ॥)
(११) सार्वदेशिक सभा का इतिहास अ० २) स० २॥)
(१२) बलिदान ॥)
(१३) आर्य डायरेक्टरी अ० १।), स० १॥)
(१४) वैदिक सन्ध्या रहस्य ≈)॥
(१५) सत्यार्थ निर्णय १॥)
(१६) सस्कृत सत्यार्थप्रकाश (अजिल्द) ।)
(१७) हिन्दू मुस्लिम इत्तिहाद (उर्दू में) -)
(१८) इजहारे हकीकत (उर्दू में) ।।।≈)
(१९) सत्य निर्णय १।)
(२०) नारायण स्वामीजी की आत्म कथा २।)
(२१) मातृत्व की ओर अ० १।) स० १॥)
(२२) कथा माला ॥)
(२३) आर्य्य जीवन और गृहस्थ धर्म ।≈)
(२४) [illegible] आर्य्यावर्त्त की वाणी ≈)॥
(२५) [illegible] वीर दल शिक्षण शिविर ≈)
(२६) आर्य [illegible]माज का इतिहास
(२७) बहिनों की बातें ॥)
(२८) भक्ति कुसुमाञ्जलि ।।।)
(२९) विमान शास्त्र ।≈)॥
(३०) वेद में दो बड़ी वैज्ञानिक शक्तियां १)
(३१) Agnihotra— १॥)
(३२) Crucifixion [illegible] eyewitness
(३३) Truth and [illegible]
(३४) Truth-bed-r[illegible] Culture
(३५) Vedic Teach[illegible] [illegible])
(३६) Voice of Arya Varta ≈)
(३७) Christianity in India ।)
(३८) The Scope and Mission of AryaSamaj-Unbound ।)
(३९) Eclesia Divina-Bound ५)
(४०) The Glory of Vedas -)॥
(४१) Arya Samaj and Vedic Dharma ॥)
(४२) Commentary on Ishopanishad)
(४३) Kenopanishat English ।)



फरवरी १९४४ ई० माघ २००० सं०

सम्पादक—
श्री पं० धर्मदेव जी सिद्धान्तालङ्कार विद्यावाचस्पति
साहित्य भूषण

वार्षिक मूल्य
स्वदेश ३)
विदेश ७ शि०
१ प्रति का ।=)

॥ ओ३म् ॥

सार्वदेशिक

* सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली का मासिक मुख पत्र *

वर्ष १६ | फरवरी १६४४ ई०] माघ २००० [दयानन्दाब्द १२० | अङ्क १२

* वैदिक प्रार्थना

ओ३म् बृहस्पतिर्न परि पातु पश्चादुतोत्तरस्मादधरादघायो ।
इन्द्र पुरस्तादुत मध्यतो न सखा सखिभ्यो वरिव॰ कृणोतु ॥ अथर्व २० ६४-११

शब्दार्थ—(बृहस्पति) बड़े २ लोक लोकान्तर और वेदज्ञान का स्वामी परमेश्वर (न) हमारी (पश्चात्) पश्चिम (उत) और (उत्तरस्मात्) उत्तर दिशा से (अधरात्) नीचे से (परि) चारों ओर से (अघायो) पापी पुरुषों से रक्षा करे (सखा) मित्र रूप (इन्द्र) सारे ऐश्वर्य का स्वामी परमेश्वर (पुरस्तात्) आगे से (उत मध्यत) और म ध्य से (न सखिभ्य) हम मित्रों के लिये (वरिव कृणोतु) ज्ञानादि रूप स्वीकरणीय उत्तम ऐश्वर्य का दान करे ॥

विनय—हे समस्त ससार ज्ञान और ऐश्वर्य के स्वामिन् । हम सब आप के पुत्र और मित्र रूप भक्त अपने जीवनों को पवित्र बनाना चाहते हैं। आप इस में हमारे सहायक हों तथा उन पापियों से हमारी सब ओर से रक्षा करें जो हमें अपने आदर्श से गिराना चाहते हैं। आप ज्ञानादि शुभ धन देकर हमें इतना समर्थ बना दें जिससे हमें धर्म न्याय और सत्य के अवलम्बन और प्रचार से कभी कोई विचलित न कर सके। अपने प्राणों की आहुति देकर भी हम सत्य को निर्भयता पूर्वक स्वीकार करें और उसके प्रचार में सदा तत्पर रहें ॥

अध्यात्म सुधा

आत्मिक दृश्य

[लेखक—अमर धर्मवीर स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज, संग्रहीता श्री लब्भूराम जी, आनन्द आश्रम, लुधियाना]

(१)

अविद्या अन्धकार से अन्धा हुआ मनुष्य अपने आपको कैसा बलवान् समझ लेता है। आग, हवा, पानी और पृथ्वी को वश में करनेवाला विद्वान् पुरुष यदि इस प्रकार का अभिमान करे तो कुछ आश्चर्य न हो यद्यपि उसका भी अभिमान एक दिन नीचा देखता है परन्तु आश्चर्य है तो यह कि मूर्ख से मूर्ख मनुष्य भी अपने बल का अभिमान करता है। बड़ी से बड़ी ईश्वरीय शक्तियों की उपस्थिति केवल अपनी खुशी के लिये ही समझता है। परन्तु एक झोंका ईश्वरीय नियम का ऐसा चलता है जो सारा अभिमान खाक में मिला देता है। कहा हैं वे पदार्थ वेत्ता जो आग और हवा को अपना गुलाम समझते थे। क्या यह वही फ़िलासफ़र है जो उसकी हस्ती पर हँसी उड़ाता था? अब क्यों हाय २ के नारों से आसमान सिर पर उठा रहा है। मनुष्य क्या और उसकी हस्ती क्या। निर्बल मनुष्य बल को अपना स्वाभाविक गुण समझता हुआ भाँति २ के क्लेशों के अन्दर फँसता है। कितनी ही बार तो अविश्वास के गढे मे गिर कर आखों को मूँदते हुए मैंने अपने आप को दुनिया भर के जीव-जन्तुओं का मालिक समझा है परन्तु एक ही हवा की आँधी या पानी के तूफ़ान, बिजली की कड़क या बादल की गरज ने दिल को ऐसा दहला दिया कि अपने आप पर ही विश्वास न रहा। मेरी निर्बलता की कोई सीमा नहीं है। निर्बलो के बलदाता इस दीन की पुकार को सुनो और अपने अनन्त बल से मुझे बलवान् करो ताकि मै दृढ़ता के साथ सांसारिक आपत्तियों का मुकाबला करता हुआ अपने जीवन के उद्देश्य को पूर्ण कर सकू।

(२)

प्रभो। शब्द को आपने कैसी प्रबल शक्ति प्रदान की है और जब शब्द मनुष्य की वाणी द्वारा प्रकाशित होता है उस समय उसकी शक्ति ही कुछ और होती है। वही वाणी जो अपनी कोमलता से मनुष्य के मन को वशीभूत कर लेती है

कठोर होकर मनुष्य को दुर्जन बना देती है। वही वाणी जो किसी समय में बादशाहत को भी हिला सकती है उल्टी चलकर अपने मालिक जीवात्मा को भी कलङ्कित करती है। एक ही वाणी के कार्य से इस प्रकार भिन्न २ परिणाम क्यों उत्पन्न होते हैं? वाणी वही रहती है परन्तु उसके प्रयोग में भेद होता है। परमात्मा की आज्ञा के प्रतिकूल चल कर जो वाणी मनुष्य की हानि का कारण होती है वही उसकी आज्ञा के अनुकूल चल कर मनुष्य की मुक्ति का साधन बनती है, परन्तु परमात्मा की आज्ञा का पता क्यों कर लगे? कैसा दर्दनाक प्रश्न है परमात्मा की सृष्टि में विचरते हुए परमात्मा के बनाये हुए शीतल जल और सुगन्धित पवन से शान्ति लाभ करते हुए भी यदि परमात्मा की आज्ञा का पता हम न लगा सकें तो हम से बढ़ कर शोचनीय अवस्था और किसकी हो सकती है? परमात्मन्! हम सब आपकी आज्ञा को भूले हुए हैं और इसीलिये भूल कर इस वाणी को जो आपने हमें अपने भीतर के स्वच्छ विचार दूसरे भाइयों पर प्रकट करने के लिये दी थी उसको धोखे में डालने का साधन बनाते हैं। जो वाणी हमें सचाई के फैलाने के लिये प्रदान की थी उसे असत्य के राज्य का मन्त्री बनाते हैं। इसलिये हे करुणा निधे पिता! हम सब की वाणियों को अपनी आज्ञा के अनुकूल चलने की प्रेरणा करते हुए हमारी रक्षा कीजिये॥

आनन्द सागर

१ आनन्द सागर ईश के मैं साथ चित्त को जोड़ता।
उस प्रेम सागर से कभी, मैं हूं नहीं मुँह मोड़ता॥
इस में मजा जो मिल रहा, वर्णन न उसका हो सके।
इस ध्यान से ही भक्तजन, निज दुःख सारा खो सके॥
२ सुख मूल को जाने बिना अज्ञानिजन यों भटकते।
इस वस्तु पर उस वस्तु पर, वे मुग्ध होकर अटकते॥
पर तुच्छ विषयों से कहां, सुख वह अनश्वर मिल सके?
वह तो अनश्वर ईश के नित, मेल से ही मिल सके॥
३ हां मेल जब वह हो गया, सुख धाम जब वह मिल गया।
उसकी कृपा से मैल दिल का, जब कि सारा धुल गया॥
आनन्द ही आनन्द तब, हैं भक्त जन पाते सदा।
आनन्द गङ्गा में नहा, जगदीश गुण गाते सदा॥
४ सुख शान्ति पाने इसलिये, बाहर भटकना छोड़ दे।
रे मूढ़ मन सुख मूल से, सम्बन्ध अपना जोड़ ले।
आपत्ति जो आवे उसे, सन्तोष से तू सहन कर।
अर्पण उसे सब कर अचल, विश्वास रख चिन्ता न कर॥
५ उद्धार तब तेरा करेगा, प्रेम सागर प्रेम से।
बस ध्यान कीर्तन देव का तू, नित किया कर नेम से॥
आनन्द के साम्राज्य में, विचरा करेगा तब सदा।
आनन्द अमृत पान कर, सुख से फिरेगा 'ध्रुव' सदा॥ —'ध्रुव'

वेदोपदेश

ओ३म् उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं वि मध्यमं श्रथाय ।
अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम ॥ ऋग्वेद १-२४-१५

तीन प्रकार का योग

(लेखक—श्री स्वामी अभय देव जी विद्यालङ्कार सम्पादक 'अदिति')

(गताङ्क से आगे)

यह तो कहने की जरूरत नहीं कि ऐसी अवस्था लाने के और इसे पार करने के जो साधन हैं उन्हें योगसाधन नाम से पुकारा जाता है। योग का जो एक प्रकार से ज्ञानयोग, भक्तियोग और कर्मयोग यह त्रिविध विभाग किया जाता है वह हमारे इस प्रकरण में बहुत उपयुक्त है। ज्ञानयोग है जिससे कि ऊपर का बन्धन खुलता है। ज्ञान की सत्त्वगुणी वस्तु होने से ऊर्ध्वमुखी गति होती है। ज्ञान की उपासना करने से अन्त में आत्मा ऊपर के बन्धन को खोल ऊपर चढ़ने का रास्ता बना लेता है और ऊपर एक से एक बड़े प्रकाशमय लोकों में पहुँचता हुआ, ज्योतिष्मती ऋतंभरा आदि प्रज्ञाओं को प्राप्त करता हुआ, श्रीअरविन्द की परिभाषाओं के अनुसार उच्च मानस, प्रकाशित मानस, स्फुरणात्मक मानस, अधिमानस से होता हुआ अतिमानस तक पहुंच जाता है। इस ऋचा में जो ऐसा कहा गया है कि 'ऊपर के बंधन को ऊपर की तरफ खोल दे' (उत्तमं पाशं उत् श्रथाय) इसका आशय अब पाठकों को स्पष्ट हो गया होगा। क्योंकि यह ऊपर ऊपर जाना मानसिक चेतना से ऊपर, मानवीय चेतना को अतिक्रान्त कर ऊपर अतिचेतन में पहुँच जाना है। सो बन्धन को ऊपर की तरफ खोलने का मतलब यह हुआ कि उसके खुलने से ऊपर की तरफ गति हो सके। एवं भक्तिमार्ग द्वारा हृदय का मध्यवर्ती बन्धन खुलता है। यह प्रेम का मार्ग है। प्रेम की साधना द्वारा हम हृदय की गहराई में रहने वाले अपने प्रेममय अन्तरात्मा को पावें, यही संक्षेप में भक्ति-साधना है। उसे अन्दर पाने से फिर वह बाहर भी पाया जाता है, और वही सच्चा प्रेम बाहर की सब क्रियाओं का भी प्रेरक हो जाता है। पर यह काफी कठिन काम है। विशुद्ध व्यापक आत्मिक प्रेम द्वारा प्राण के बाकी सब आवेगों, उद्वेगों, भावावेशों, रागद्वेषों को पराभूत कर आत्मिक प्रेम का राज्य स्थापित करना आसान काम नहीं है, इसीलिये शायद इस मध्यम बन्धन को खोलने के लिये

वेदमन्त्र में 'वि' विशेषण लगाया गया है, जिसका अर्थ है विशेषतया या विविध प्रकार से। और तीसरे स्थूल शरीर के अधम बन्धन को खोलने का साधन कर्मयोग है। शरीर से भी निष्काम, भगवदर्पण-पूर्वक कर्म करने की साधना से आत्मविशुद्धि होती है और इस स्थूल भौतिक जगत् में भी सब जगह, सब भूतों में, प्रत्येक छोटी बड़ी वस्तु में परमात्म-दर्शन सहज हो जाता है। स्थूल जगत् में भी परमात्मा की प्राप्ति होने से स्थूल शरीर भी हमारे लिये बन्धन कारक नहीं रहता, स्थूल हमें परिमित करने वाला नहीं रहता। हमारा अपना स्थूल देह तो आत्मा के कार्य में बाधक रहता ही नहीं। पर यह काम पूरा तब होता है जब आत्मा का प्रकाश स्थूल देह से भी नीचे अवचेतना तक में पहुँच जाता है; नहीं तो अवचेतना की शुद्धि हुए बिना, अवचेतना के विकार हमारे स्थूल देह को खराब करते ही रहते हैं। अत: वेदमन्त्र में 'अव श्रथाय' का अभिप्राय 'नीचे की ओर, नीचे तक, अवचेतना तक खोल दो' ऐसा समझना चाहिये।

यह दोहराने की जरूरत नहीं कि जैसे आत्मा की ऊँचाई, गहराई और विस्तार की गति आखिर में एक हो जाती है, आत्मा के लिये ये शब्द बोलना केवल मानवीय भाषा प्रयोग करने के कारण ही है, वैसे ज्ञान, भक्ति और कर्म भी प्रत्येक अपनी पराकाष्ठा में पहुँच शेष दो से अभिन्न हो जाते हैं। पर साथ ही यह भी ठीक है कि साधना की अवस्था में इन तीनों योगों—ज्ञान, भक्ति, कर्म की आवश्यकता होती है, किसी एक या दो से काम नहीं चल सकता। कम से कम श्रीअरविन्द द्वारा प्रतिपादित योग इन तीनों का ही समन्वय चाहता है। सचमुच महात्मा होने के लिये तीनों ही दिशाओं में प्रगति करके तीनों ओर ही महान् होना होता है, तीनों बन्धन तोड़ना आवश्यक होता है।

आदित्य के व्रत में

इन तीनों पाशों, बन्धनों से छूट जाने पर क्या होता है? क्या तब हम लय को प्राप्त हो जाते हैं, हमारे मन, प्राण, शरीर प्रकृति में लीन हो जाते हैं? वैदिक प्रार्थना तो इस प्रयोजन के लिये नहीं है। तीनों बन्धनों से छुड़ाने की याचना करने के बाद वेदमन्त्र के तीसरे चरण में जो कहा गया है वह तो यह है 'जिससे हम तेरे व्रत में, हे आदित्य, हो जायें'। तीनों बन्धनों से छुटकारा इसलिये मांगा गया है जिससे कि 'आदित्य के व्रत में हम आयें और अदिति के लिये अनागस हो जाय।' मन प्राण, देह नष्ट नहीं होते किन्तु वे बदल जरूर जाते हैं, इनका दिव्य

रूपान्तर हो जाता है। ये अब दिव्य व्रत के, दिव्य नियम के अधीन हो जाते हैं, अपने अदिव्य नियमों को छोड़ देते हैं। मन के बन्धन के खुलने का अर्थ यही है कि मन तब अपने मानसिक (अदिव्य) नियम को छोड़ देता है, उस नियम-बन्धन से छुटकारा पा जाता है। इसी तरह प्राण और देह भी अपने प्राणगत और दैहिक नियम के बन्धन से मुक्त हो दिव्य नियम में, आदित्य के व्रत में चले जाते हैं। ये सब एक अबद्ध, असीम आत्मा के नियम में आ जाते हैं, अन्य सभी नियमों से मुक्त हो जाते हैं।

वैसे तो दिशायें अनन्त हैं, जो जिधर चाहता है उधर ही जाता दीखता है। पर सूक्ष्मतया देखने से मुख्य छः दिशायें हैं जिनका हम ऊपर वर्णन कर चुके हैं जब तक मनुष्य सचमुच में मुमुक्षु नहीं होता तब तक वह बद्ध रहता छओं दिशाओं में गति करता है अर्थात् वह ऊपर जाता है तो नीचे भी जाता है, इधर (उत्तर) जाता है तो कभी उधर (दक्षिण) भी जाता है, सामने जाता है तो पीछे भी हटता है। पर मुमुक्षु हो जाने पर मानो उसको तीन ही दिशायें हो जाती हैं। वह ऊपर ही जाता है, उत्तरायण पथ का ही अवलम्बन करता है, आगे (प्राक्) ही जाता है, बन्धन तोड़ने के लिये वह उन तीनों ओर ही जाता है। पर बन्धनमुक्त हो जाने पर ये तीनों दिशायें भी एक हो जाती हैं, यों कहना चाहिये कि वह दिशाओं की दुनिया में ही परे आदित्यलोक का हो जाता है, जहां से सब दिशा, अनन्तों दिशा, उत्पन्न होती हैं वहां का वह हो जाता है। अत एक दिशा का न रह, अनन्त का असीम का, अदिति का हो जाता है।

आगस्, पाप तभी तक हो सकते हैं, होते हैं जब तक कि मन, प्राण और देह बन्धनमुक्त नहीं होते, जब तक कि ये अपने नियमों से चलते हैं अतएव अनृत गतियां भी करते हैं, जब तक ये आदित्य के व्रत में नहीं आ जाते। तीनों पाशों को तोड़ आदित्य के व्रत में आ जाने से हम 'अनागस्' हो जाते हैं, हमारे मन, प्राण, शरीर आत्मप्रेरित दिव्यनियमानुसार चलते हुए बिलकुल अनागस्, शुद्ध, निष्पाप, त्रुटिरहित अविकल, पूर्ण कार्य करने वाले हो जाते हैं।

तब हम वस्तुत 'अदिति के लिये' हो जाते हैं। अदिति जो बन्धनरहित मुक्तिस्वरूपा है, असीम अनन्त देवजननी जगज्जननी है उसके अमृत पुत्र हो जाते हैं, अमृत पुत्र होकर रहते हैं।

हमारा जीवन-धन

(लेखक—डाक्टर सूर्यदेव शर्मा साहित्यालंकार, सिद्धान्त शास्त्री, काव्य मनीषी,
एम० ए० एल० टी० डा० लिट्०, डी० ए० वी० कॉलेज अजमेर)

(१)

अन्धकार, अज्ञान, अविद्या का छाया था ।
तम का तोम महान्, मनुज के मन भाया था ॥
अड बड पाखण्ड चण्ड होकर आया था ।
अनय अजस्र अखण्ड अबुध जन अपनाया था ॥
हत भारत भू के भाग में, भ्रम का भारी भूत था ।
पर प्रभु के अति अनुराग में, निहित दयामय दूत था ॥

(२)

दिनकर दैवी दूत, भव्य भारत में आया ।
पावन पुण्य प्रभूत, प्रेम का पाठ पढ़ाया ॥
जागा जगमग लोक, छोड़कर छल की छाया ।
हुआ दिव्य आलोक, मिटी मन मोहक माया ॥
अति, "सूर्य" रूप से उदित हो, दयानन्द ऋषि राजता ।
शुभ सत्य पथ सम्मुदित हो, पुण्य प्रकाश विराजता ॥

(३)

वह सत्यार्थ-प्रकाश, हमारा धन, साधन है ।
वह सत्यार्थ-प्रकाश, हमारा जग-जीवन है ॥
वह सत्यार्थ-प्रकाश, हमारा प्रण है, पण है ।
वह सत्यार्थ-प्रकाश, आर्यगण पर ऋषि ऋण है ॥
वह गुरु का आशीर्वाद है, वही हमारा प्राण है ।
वह आर्य राष्ट्र का नाद है, वही हमारा त्राण है ॥

(४)

किसकी है वह शक्ति, ग्रन्थ पर आँख उठाये ?
किसको है आपत्ति, कौन बढ़ आगे आये ?

बनकर अबुध उलूक, सूर्य से क्यों घबड़ाये ?
क्यों न रहे वह मूक, ज्ञान रवि जिसे न भाये ?
वह तर्क तीर को हाथ ले, क्यों न बढ़े संग्राम में ?
थोथी बातों को साथ ले, क्यों उलझा इलहाम में ?

(५)

आर्य शिरोमणि वीर, न साहस को हारेंगे।
रहें सदा रणधीर, प्राण तन धन वारेंगे ॥
ले सत्यार्थ कृपाण, असत मत को मारेंगे।
देकर निज बलिदान, अमर कृति उद्धारेंगे ॥
समुदित सत्यार्थ-प्रकाश जब, जग में "सूर्य" समान हो।
इस आर्य जाति का अमिट तब, गौरव–गरिमा–गान हो ॥

—"सूर्य"

महर्षि दयानन्द व अन्य धर्म सुधारक

(२)

[लेखक—पं० हरिदत्त जी वेदालङ्कार गुरुकुल कांगड़ी]

गताङ्क से आगे

योरोप में १६ वीं सदी में एक बड़ी धार्मिक सुधारणा हुई। जर्मनी के मार्टिन लूथर (१४८३-१५४६) नामक व्यक्ति ने उसमें प्रमुख भाग लिया। मार्टिन लूथर ने उस समय के चर्च की प्रचलित बुराइयों का घोर विरोध किया। पोप उस समय धर्म की चिन्ता छोड़ कर धन की चिन्ता में अधिक पड़े हुए थे। धर्मप्राण एवं सरल हृदय ईसाई जनता से धर्म के नाम पर धन का अपहरण करने के लिये कई साधनों का आविष्कार किया गया था। इसने १५०६ ई० में पोप जूलियस द्वितीय सैंएट पीटर के विशाल चर्च की नींव रखी। रैफल और माइकेल एञ्जलो इसके चित्रकार थे। जूलियस के बाद पोप लियो दशम ने इस कार्य को जारी रखा। यह कार्य विपुल व्यय-साध्य था। इस विशाल व्यय को पूरा करने के लिये मुक्ति पत्र (Indeugences) का आविष्कार हुआ। विट्टन वर्ग विश्व विद्यालय के अध्यापक एवं सैंएट आगस्टाइन सम्प्रदाय के परिव्राजक मार्टिन लूथर ने ६५ मन्तव्यों द्वारा मुक्तिपत्रों की आलोचना कर पोप की प्रभुता के विरुद्ध विद्रोह कर योरोपीय धर्म सुधारणा का श्रीगणेश किया।

लूथर की आलोचना की भाषा अत्यन्त कठोर एवं बहुधा शिष्टता की मर्यादा को भी लाघ जाने वाली है। लूथर का वार्त्तालाप पढ़ने से पता लगता है कि वह निकृष्ट कोटि के वार्त्तालाप करने का आदी था। ॐ लूथर की यह मान्यता थी कि आलोचना सदैव अधिक से अधिक कठोर एवं कटु होनी चाहिए। लूथर ने पोप लियो II को एक पत्र में लिखा था कि मैंने ईसा विरोधी कुछ सिद्धान्तों की आलोचना की है और अपने शत्रुओं पर उन के पापिष्ठ होने के कारण गहरा घाव किया है किन्तु मुझे इसका पश्चात्ताप नहीं। ईसा का उदाहरण,

१ जोसफ मैकेब The Social Record of Christianity by foseph Macbe P. 87

मेरे सामने है। उस नमक का क्या लाभ जिसका तीखापन नष्ट हो चुका हो या तलवार की वह धार किस काम की है, जो काटती ही न हो ? १

लूथर की इस काटने वाली तलवार की धार के कुछ नमूने देखिये। पोप को लूथर ने नरम से नरम विशेषण भेड़िये (Ravenous wolf See P 212) का दिया है। २ उसे कुत्ता, डाकू और लुटेरे की उपाधियों से विभूषित किया है और उसके बारे में यह लिखा है कि वह चाहता है कि वह आलस्य, आडम्बर और दुराचार से जीवन व्यतीत करे, तथा पोप आज्ञा देना, डराना, ठगना, झूठ बोलना, बदनाम करना, बहकाना, (Seduce) तथा प्रत्येक प्रकार का कुकर्म शान्ति और सुरक्षा के साथ करना चाहता है। ३. अन्यत्र पोप को उसने हत्यारों का सरदार और शैतान का दूत कहा है। ४. रोम के एक पादरी ने लूथर के सिद्धान्तों के विरुद्ध एक पुस्तक लिखी। लूथर को जब यह पता लगा तो उसने कहा कि मैं इटली के इस पशु का पित्त उभारूंगा और उत्तर में यह कहा कि बाइबल में जिस ईसा-विरोधी शैतान के राज्य का उल्लेख है -वह पोप का ही राज्य है। ५ इरेस्मस ने जब लूथर के इच्छा (Will) संबन्धी सिद्धान्त की आलोचना की तो लूथर ने लिखा कि यह तो सोने चांदी की थालियों में कीचड़ और चूरा परोसा गया है॥

1 It is true that I have attacked certain anti Christian doctrines, and have inflicted a deep deep wound upon my adversaries, because of their impiety I do not repent of this, for I have the example of Christ before me What is the use of salt, if it hath lost its pungency or of the edge of the sword, if it cuts not ? (Robin's History of Reformation Part II. P 130)

2 He, (Pope) snarls ad snaps like a dog that fears his bone will be taken from him Who can be a greater corsair and pirate than he (Pope) that robs souls, imprisons them and puts them to death For the Holy See desires only to live in idleness, in magnificence and debauchery, to command, to intimidate, to deceive, to lie, to dishonour, to seduce and commit every kind of wickedness in peace and security. (History of Reformation Part II P. 215)

3 'The most holy *adversary of Christ, the father, the master the generalissimo of murderers* .
I said formerly that the Pope was Christ's vicar, now I assert that he is our lord's adversary and the *devil's apostle* "
(Ibid P 216)

4 "I will stir up the bile of this Italian beast (Italicae bestial bibem movedo) The reign of Anti-Christ predicted and described in Bible was the Papacy "
(Ibid P 170)

5 "It is as if a man were to serve up mud and dung on dishes of silver and gold " (Ibid Part II P 280)

इंगलैण्ड के तत्कालीन राजा हेनरी दम ने लूथर के सिद्धान्तों की आलोचना में Defence of Seven Sacraments Against Martin Luther by the most Invincible king of England and France, Lord of Ireland, Henry the VIIIth of that name नामक ग्रन्थ लिखा। हेनरी ने उसमें लिखा था कि मैं चर्च की रक्षा के लिये सबसे आगे दौड़ूगा और शत्रुओं के विषैले तीरों को अपनी छाती पर लूँगा। (उस समय हेनरी को यह पता नहीं था कि कुछ वर्ष बाद अपनी स्त्री के तलाक़ के प्रश्न पर वह इंगलैण्ड में, पोप के चर्च से भिन्न एक चर्च की स्थापना करेगा)। हेनरी ने अपने प्रतिपक्षी पर गालियों की तीरों की पर्याप्त वर्षा की और उसे नरक का भेड़िया, विषधर सर्प और शैतान का अग लिखा। पोप को यह ग्रन्थ बहुत पसन्द आया और उसने प्रसन्न होकर राजा को धर्म-रक्षक (Defender of faith) की उपाधि दी, जिसे आज तक इंगलैण्ड के राजा धारण किये हुए हैं।

लूथर को जब यह समाचार मिला तो उसे यह लगा कि राजा ने यह पुस्तक इंगलैण्ड के उस समय के प्रसिद्ध धर्म-तत्त्वज्ञ थामस एकिनास की सहायता से लिखी हो। अतः लूथर की गालियों की बाणवर्षा दोनों पर हुई। पुस्तक में लूथर को जलाने की धमकी दी गई थी। लूथर ने उत्तर में लिखा कि थामस एकिनास की

१ हिस्ट्री आफ रिफोमेशन—तीसरा भाग पृ० २८०

1 History of Reformation Vol. III P 280

जाति के बेवकूफ गधों और सुअरों का यह रोष। और हिम्मत हो तो ये सुअर आगे बढ़ें। १ आगे चलकर लूथर ने यह लिखा—'मै पुरानी परम्पराओं का विरोधी नहीं हूँ किन्तु मैं सनातन महत्त्व के शब्द-सुसमाचार (Gospels) का कट्टर अनुयायी हूँ। इसी पर मैं गर्व करता हू। इसी बात मे पोप के अनुयायियों, थामस के मतवादियों हेनरियों (Sophists) तथा नरक के तमाम सुअरों पर विजय पाने वाला हू। २ लूथर की पुस्तक इसी प्रकार की गालियों मे भरी हुई है। थामस एक्विनास ने बडे मनोरंजक ढग से उसके ग्रन्थ के निर्माण का प्रकार लिखा है—लूथर ने अपने साथियों को बुलाया और कहा कि प्रत्येक अपने ढग से काम करता हुआ सब तरह की गालियों और अपशब्दों का चयन करे। इनके चयन के लिये एक साथी सार्वजनिक सवारियों तथा किश्तियों में जाता रहा, दूसरे ने सार्वजनिक स्नानागार और जुआ घर चुने। तीसरा सरायों तथा नाइयों की दुकानों पर गया और चौथा चक्कियों और चकलों में। उन्होंने वे सब अत्यधिक धृष्टता पूर्ण गन्दी बातें जो वहाँ पर सुनी उन्हें नोट कर लिया और ये सब दुर्वचन (Abominations) और मलिनतायें उन्होंने लूथर के मन में डाल दीं। ३ उसी लेखक ने लूथर की शैली का गन्दे नालों एव पाखानों का उद्गिरण या वमन कहा है। ४

1 If this heretic does not recant, says Henry VIII the new Thomas, he must be burnt alive Such are the weapons they are now employing against me, the fury of stupid asses and swine and brood of Thomas Aquinas, and then the stake, well then it be so Let these hogs advance if they dare Go, then, swine of It Thomas, do what seemeth good to you You will ever find Luther like a bear upon your way, and as a lion in your path He will spring upon you whither so ever you go and will never leave you at peace, until he has broken your iron heads and ground your brazen foreheads into dust

(The History of Reformation Part III P. 91)

2. To all the words of Fathers and of men, of angels and of devils, I oppose, not old customs not multitude

of men, but the word of eternal majesty,— the Gospel which even my adversaries are obliged to recognise To this I hold f ist, on this I repose, in this I boast, in this I exult and triumph over the papists, the Thomists the Henrys, the sophists and all the *swine of hell* (Ibid P 92)

3 'He (Luther) called his companions together and desired them to go each his own way to pick up all sorts of abuses and scurrility One frequented the public carriages and boats, another the baths and gambling houses, a third the taverns and barbers' shops, a fourth the mills and brothels They noted down in their tablets all the most insolent filthy and infamous things they heard and bringing back all these abominations and impurities, they discharged them into that filthy Kennel which is called Luther's mind"

(Ibid P 94)

4 "But if he (Luther) proceeds as he has begun, joking, teasing, fooling, caluminating, Vomitting sewers and cesspools

लूथर ने क्षणिक आवेश में आकर ये शब्द लिखे हों-यह बात नहीं। लूथर यह अनुभव करता था कि तीव्र आलोचना ही फलप्रद हो सकती है। चार्ल्स पंचम ने लूथर को जब सब जर्मन सरदारों व राजाओं के समक्ष वार्म्स की परिषद् (Council) में अपने सिद्धान्तों व मन्तव्यों को छोड़ने की प्रेरणा की तो लूथर ने अपने सिद्धान्तों का समर्थन करते हुए अपनी भाषा का समर्थन किया—उसने कहा मैं स्पष्ट रूप से स्वीकार करता हूं कि मैंने पोप के समर्थकों पर कहीं अधिक कटुता से आक्रमण किये हैं जो एक धार्मिक पेशे वाले के लिये उचित हैं। मैं सन्त नहीं हूँ। मैं इन लेखों को वापिस नहीं ले सकता। १

"I frankly confess that I have Attacked them with more acrimony than is becoming my Ecclesiastical profession. I do not consider myself a saint, but I cannot disavow these writings." (Ibid P. 246)

इस परिषद् के बाद भी लूथर की इस प्रकार की रचनायें जारी रहीं। लूथर की अन्तिम रचना की भाषा ही नहीं, अपितु नाम भी बड़ा भड़काने वाला एवं अनुचित था। ग्रन्थ का नाम था—रोम के पोप पन के विरुद्ध जो शैतान द्वारा स्थापित है —

(Against the papacy at Rome, Instituted by the devil) सारी पुस्तक गालियों से भरी हुई है। लूथर के एक प्रशंसक ने इन गालियों का सारा श्रेय लूथर की अन्तिम बीमारी को दिया है। किन्तु इस बीमारी से पहले भी लूथर ने जो लिखा, उसके नमूने हम ऊपर देख चुके हैं।

इरेस्मस ने (जिसे स्वयं लूथर की आलोचना का शिकार होना पड़ा था) लूथर की कटु आलोचना का यह समाधान किया था कि बीमारियां इतनी बढ़ चुकी थीं कि वैद्य को भयंकर ओषधियों का प्रयोग करना पड़ा। हम यह थोड़ी देर के लिये ठीक मानते हैं किन्तु यूनान के महान् दार्शनिक अरस्तू के लिये लूथर ने जिन शब्दों का प्रयोग किया है, वह कदापि क्षम्य नहीं। लूथर ने लिखा कि अरस्तू वास्तव में शैतान एक भयंकर निन्दक, एक धूर्त, चापलूस, अन्धकार का राजा, Apollyoin, एक पशु, एक महाभयंकर ठग—एक सार्वजनिक और पक्का झूठा पूरा चार्वाक (Epicise) है। उसके मत में उस समय के दार्शनिक (स्कूलमैन) टिड्डिया, (Caterpiller) मेंढक और जुयें हैं।

इग्लैण्ड में, लूथर से दो सदी पहले धार्मिक सुधारणा का श्रीगणेश करने वाला जान विक्लिफ (१३२०—१३८४) था। उसकी भाषा का एक नमूना देखिये। यह जान विक्लिफ ने पार्लियामैण्ट को दिये एक आवेदन पत्र में प्रकट की है—इसका ध्रुव चिन्ह यह है, कि शैतान से उत्पन्न ज़हर इस समय पादरियों के हृदय में शासन कर रहा है।

स्वामित्व की लालसा का अभिमान भौतिक पदार्थों की लालसा के साथ मिलकर, शैतान के बच्चे पैदा कर रहा है जब कि शुद्ध पादरियों की सन्तान कम हो रही है। २

---

१ हेनरी जैकन्स—मार्टिन लूथर पृ० ३४६
Draper's Conflict between Religion and Science P. 213
१. लुईस मारजेन्ट—जोन विक्लिफ. पृ० १८१

यूरोप में मध्यकाल में, किस प्रकार की धार्मिक आलोचना होती थी अधोलिखित सन्दर्भ इसका एक सुन्दर नमूना है। ज़्विंगली (१४८४-१५३१) लूथर का सम-सामयिक तथा स्विटजरलैंड में धार्मिक सुधारणा का आन्दोलन करने वाला प्रथम व्यक्ति था। ल्यूसरीन के परिव्राजक मर्मेर ने ज़्विंगली की आलोचना करते हुए लिखा—मैं यह घोषणा चालीस बार करता हूँ कि जूरिच का अत्याचारी शासक (ज़्विंगली) और उसके समर्थक धोखेबाज, झूठे, झूठीसाक्षी देने वाले (Perjurers) व्यभिचारी, काफ़िर डाकू धर्मनिन्दक हैं और ऐसे व्यक्ति हैं, कि प्रत्येक ईमान्दार व्यक्ति उनसे किसी प्रकार का सम्बन्ध रखने मे लज्जा अनुभव करेगा। २ यह तो पता नहीं कि उक्त परिव्राजक के कहने से किसी ईमान्दार व्यक्ति ने ज़्विंगली व उसके साथियों के साथ व्यवहार करने में लज्जा अनुभव की, किन्तु इतना अवश्य सत्य है, कि प्रत्येक ईमान्दार परिव्राजक इन शब्दों का प्रयोग करने में लज्जा अनुभव करेगा।

यह लिखने की आवश्यकता नहीं कि ऋषि दयानन्द ने इस प्रकार की भाषा का सत्यार्थप्रकाशादि मे कहीं प्रयोग नहीं किया। उनकी अन्य मत समालोचना इन धर्म सुधारकों की तुलना मे अत्यन्त कोमल प्रतीत होती है। (अपूर्ण)

"I declare forty times that the tyrant of zurich and all his partisans are traitors liars, perjurers, adulterers, infidels, robbers sacrilegers, gallowbirds andthat every honest man must blush at having an intercourse whatever with them"
(The History of Reformation Part III P 300)

शंका समाधान

हृदय और आत्मा

(श्री महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज)

एक भाई ने निम्न पत्र में एक शङ्का का उल्लेख किया है —

कुछ मास पूर्व आपकी सेवा में हृदय और आत्मा के शरीर में स्थान सम्बन्धी जिज्ञासा उपस्थित की गई थी क्योंकि श्री स्वामी सत्यप्रकाश जी एक अथर्व वेद के मन्त्र बल से इन दोनों का स्थान मस्तिष्क बतलाते हैं। उत्तर मे आपने लिखा था कि हृदय तथा आत्मा का स्थान कठोपनिषद् के वचनानुसार दोनों फेफड़ों के बीच का स्पेस है। मस्तिष्क = Cerebellum और Cereberum यह दोनों मन और चित्त के गोलक हैं। मन और चित्त छाती में होते हुए भी दूरस्थ अपने गोलकों से काम लेते और ले सकते हैं क्यों कि सभी इन्द्रियों के गोलक इन्द्रियों से पृथक् और दूर होते हैं।

उन दिनों श्री० स्वामी सत्यप्रकाश जी का अपने हाथों से लिख कर दिया प्रमाण मिल नहीं रहा था। अब वह पुराने कागजों में मिल गया है जो निम्न प्रकार है—

मूर्धानमस्य ससीव्याथर्वा हृदय च यत्।
मस्तिष्कादूर्ध्व प्रैरयत् पवमानोऽधिशीर्षत ॥ २६ ॥ अथ १० । २

कृपया इस मन्त्र पर विचार कर, सगति तथा सम्मति लिखने का अनुग्रह करें। मस्तिष्क को हृदय मानने वालों की युक्तियाँ तथा उनके समाधान भी सक्षेप से लिख भेजें तो अधिक उपकार होगा।

समाधान

ऊपर अंकित मन्त्रार्थ इस प्रकार है —

"वह (पवमान) शुद्ध और (अथर्वा) एक रस रहनेवाला (ईश्वर) (अस्य) इस (मनुष्य) के (मूर्धानम्) मस्तिष्क और (यत्) जो (हृदयम्) हृदय है (उन्हें) (संसीव्य) सीकर = मेल रखने वाला बनाकर (भेजे, जिससे) वह मनुष्य (मस्तिष्कात्+ऊर्ध्व) मस्तिष्क अर्थात् उसके कार्य तर्क से ऊपर और

(शीर्षत +अधि) शिर से नीचे हृदय में) होकर (प्र+ऐरयत्) बाहर=जगत् में आवे"।

मन्त्र का भाव यह है कि मनुष्य के मस्तिष्क और हृदय में, व्यावहारिक जगत् में मेल रहना चाहिये जिससे मस्तिष्क के कार्य्य तर्क और हृदय के कार्य्य श्रद्धा और विश्वास में मेल रहे, न तर्क की अवहेलना करके मनुष्य अन्ध विश्वासी बने और न श्रद्धा और विश्वास से उदासीन होकर कुतर्की बनजावे।

(२) मन्त्र में आत्मा और हृदय के मस्तिष्क में होने की गन्ध भी नहीं है। आत्मा और हृदय दोनों का स्थान गुहा है। कठोपनिषद् में कहा गया है "गुहा प्रविष्टौ परमे परार्धे, छायातपौ ब्रह्मविदो वदन्ति।" (कठ० ३। १) अर्थात् गुहा=वक्ष के स्पेस=हृदयाकाश में आत्मा और परमात्मा छाया और आतप= प्रकाश की तरह प्रविष्ट हैं। इस प्रकार के भाव और भी अनेक जगह वैदिक साहित्य में प्रदर्शित हुये हैं। पश्चिमी मनो वैज्ञानिक मस्तिष्क में मन (mind) कल्पना करते हैं परन्तु इन वैज्ञानिकों के इस विषय में दो भेद होगये हैं। एक ब्रेन (Brain) ही को माइन्ड कहते हैं दूसरे ब्रेन में माइन्ड के होने की कल्पना करते हैं परन्तु बतला नहीं सकते कि ब्रेन के किस भाग में माइड है। उनका आत्मा सम्बन्धी ज्ञान नहीं के बराबर है। उनके यहाँ माइन्ड ही एक वस्तु है जिसे चाहे आत्मा कहलो चाहे मन समझलो अथवा कुछ और कहलो। वैदिक साहित्य में मनको "हृत्प्रतिष्ठ" (देखो यजुर्वेद का ३४ वा अध्याय शिव सकल्प के मंत्र) कहा गया है। इसलिये मन का हृदय में होना निश्चित है। हृदय वक्ष के रिक्त स्थान में है इसे पश्चिमी तथा पूर्वी सभी विद्वान् सर्व सम्मति से स्वीकार करते हैं और आत्मा का हृदय मन्दिर या मन मन्दिर में स्थान वैदिक साहित्य में स्वीकृत सिद्धान्तसा है। इसी लिये शिर की अपेक्षा हृदय अधिक महत्व का स्थान है। हृदय के भाग विशेष में चोट पहुँचाने से प्राणी तत्काल मर जाता है परन्तु शिर पर वैसी चोट पहुँचने से वह जीता रह सकता है।

(३) तर्क मन का काम नहीं अपितु बुद्धि का काम है। बुद्धि का स्थान मस्तिष्क है। मन, चित्त, हृदय और आत्मा इन सबका स्थान हृदयाकाश, अर्थात् नाभि का ऊपरी आकाश है।

(४) सेरिब्रम (Cerebrum) और सेरिबेलम (Cerebellum) के शरीर

विद्या (physiology) के अनुमोदित शिरो भाग हैं और प्राकृतिक तथा स्थूल, हैं। पश्चिमी विद्वानों के अनुसार माइन्ड इन के द्वारा काम करता है। माइन्ड आत्मा मन और चित्त इन तीनों की जगह पश्चिमी मनोविज्ञान का, एक कल्पित पदार्थ है जैसा ऊपर कहा गया है परन्तु उसका स्थान अनिश्चित है अथवा यों कहिये कि इस सम्बन्ध में कोई सर्व सम्मत निश्चय नहीं है। पश्चिमी मनो वैज्ञानिक चेतना के सम्बन्ध मे विचार करते हुये अपना विचार क्षेत्र केवल शिर को बनाते हैं परतु हम जब इस सम्बन्ध में विचार करते हैं तो हमारा विचार क्षेत्र समस्त शरीर हुआ करता है इसीलिये हम कहते हैं कि मस्तिष्क के, शरीर विद्या के दोनों अनुमोदित भाग मन और चित्त के गोलक है।

(५) मस्तिष्क दो अर्थों मे प्रयुक्त होता है —एक बुद्धि का केन्द्र होने से बुद्धि के अर्थों मे जिसका काम तर्क है। यह मस्तिष्क सूक्ष्म भूतों से बनता है और इसका सम्बन्ध मनो विज्ञान से है। मस्तिष्क के दूसरे अर्थ शरीर विद्या के बतलाये स्थूल भूत निर्मित सेरिब्रम और सेरिबेलम है जिनका ऊपर उल्लेख हुआ है। इन्हीं को मन और चित्त की गोलक कहा जाता है। बुद्धि इन से सर्वथा भिन्न और सूक्ष्म पदार्थ है।

आर्य समाज की प्रारम्भिक उग्र प्रगति

[लेखक—श्री प० बालमुकुन्द जी मिश्र साहित्यालङ्कार दिल्ली]

आर्य समाज प्रवर्तक का ध्येय था—

" जो जो बात सब के सामने माननीय हैं उनको मानता हूँ ऐसे सिद्धान्तों को स्वीकार करता हू और जो मतमतान्तर के परस्पर विरुद्ध झगडे हैं उनको मैं प्रसन्न नहीं करता क्यों कि इन्हीं मतवालों ने अपने मतों का प्रचार कर मनुष्यों को फँसा के परस्पर शत्रु बना दिये हैं। इस बात को काट सर्व सत्य का प्रचार कर, सबको ऐक्यमत में करा, द्वेष छुड़ा, परस्पर में दृढ़ प्रीतियुक्त कराके सब को सुख लाभ पहुंच ने के लिये मेरा प्रयत्न और अभिप्राय है। . . सब लोग सहज से . सदा उन्नत और आनन्दित होते रहें यही मेरा मुख्य प्रयोजन है।"

[सत्यार्थ प्रकाश, स्वमन्तव्यामन्तव्या प्रकाश]

इसी शुभ संकल्प मय प्रयोजन की परिपूर्ति के लिये श्री स्वामी दयानन्दजी सरस्वती ने अपना प्रतिनिधि स्वरूप, मत मतान्तरों की झंझावों के मध्य आर्य समाज को छोड़ा। भारतवर्ष की सभ्यता, संस्कृति अपने अस्तित्व को धुन्ध में छुपा चुकी थी। स्वामी दयानन्द जी की प्रगति से भारतीय पुरातन सभ्यता का पुन भाग्योदय हुआ। आर्य समाज स्थापित होजाने के उपरान्त आर्य समाज में वे लोग, जो विश्व प्रगति की दौड़ में आर्य संस्कृति-विभाग की ओर से दौड़ लगाने की शक्ति रखते थे—प्रविष्ट हुए।

वह था आर्य समाज का प्रारम्भिक युग। उस समय आर्य समाज की वैयक्तिक और सामाजिक दोनों अवस्थाएं आचार-विचार, स्वाध्याय, धर्मनिष्ठा, पारस्परिक स्नेह, प्रचार धुन आदि प्रगतियाँ साधना से लबालब भरपूर थीं।

प्रत्येक आर्य समाजी स्वसमाज प्रवर्तक के ग्रन्थों का अधिक से अधिक मात्रा में स्वाध्याय करता था और वैदिक धर्म में श्रद्धा उत्पन्न करवाने वाली नीति को अपना और रूढ़ियों की धज्जियाँ बखेरता हुआ—वैदिक ज्ञान की आभा को महातल से खोद लाने की चेष्टा करता था। स्वय उसका जीवन श्रद्धायुक्त और नैत्यिक कर्म युक्त बनाने की ओर अग्रसर होता था। सन्ध्यावंदन, ईश्वर ध्यान से कदाचित् ही कोई २ आर्य समाजी विमुख वा अनभ्यासी होगा। वह

सत्याचरण और सत्यवादिता को अपने जीवन में ढालने की चेष्टा करता था।

प्रत्येक आर्य समाजी स्वयं ही आर्य समाज का प्रचारक और आर्य समाज का सैनिक, सेवक, अनुचर था। आर्य समाजियों की व्यक्तिगत उन्नतियों का ही प्रतिफल था, जो 'नमस्ते' के पारस्परिक उच्चारण घोषों से आर्य समाज का आतङ्क उनके विरोधियों पर भूत की भाँति आक्रमण करता था। जिस ओर भी किसी आर्य समाजी के पैर जाते थे उधर वेदों का नाम लोगों के हृदय में अगाध आस्था से कम से कम कुछ क्षण का तो अवश्य हो, अगाध समुद्रवत् हृदय प्रेम तरङ्गों से आच्छादित हो जाते थे।

आर्य समाजी स्वयमेव स्वयं सेवक होने के कारण समाजी भाइयों की किस प्रकार सेवा करते थे? जिस प्रकार आजकल के ब्वाय स्कॉउट बिना किसी मजहब-मिल्लत के नर-नारायण की सेवा करते हैं। वे स्वयं सेवक कितने सुव्यवस्थित होते थे? इसका वर्णन करना अशक्य नहीं तो अति कठिन अवश्य है। आर्य समाज का प्रत्येक सदस्य अन्य सदस्यों के साथ सहोदर भाई से सम्भवतः ही कम भ्रातृस्नेह में बधा हुआ होगा। परिवर्तित जीवन पथ पर वह इतना दृढ़ होता था कि आर्य समाज प्रदर्शित-सिद्धान्तों के ग्रहण करने के कारण, जो पूर्वतः उसकी धारा की ओर से जातीय उत्पात उसके प्रति होते थे उनको तृणवत् समझ कर उनका साम्मुख्य करता था।

आर्य समाजियों की आदर्श परिपूर्ण वैयक्तिक और सामाजिक आस्थामयी निष्ठा से सर्व सामान्य लोगों में आर्य समाज के प्रति आन्तरिक आदर का भाव जागृति के साथ उदय होता था। कुछ ऐसे उदाहरण भी उपलब्ध होते हैं, जबकि कतिपय सरकारी न्यायालयों में आर्य समाजी की साक्ष्य पर अनेक साक्षियों के प्रतिकूल होने पर भी अभियोग का निर्णय किया गया।

आर्य समाज का प्रारंभिक युग वैदिक धर्म का किसी सीमा तक एक उज्ज्वल जागृत स्वरूप था। भारतीय संस्कृति की पुनः नवचेतना का, आर्य समाज की आदिकाल की उग्र-प्रगति को देखकर अनेक पाश्चात्य उच्च-कक्षा के पंडित, आर्य समाज के विरोधी मत-मतान्तर, पंथ, सम्प्रदाय, समाजें यह स्वप्न देखने लग गये थे; कि सम्पूर्ण भूतल के कहीं मत-मतान्तर शीघ्र नष्ट न हो जाँय! स्वार्थलिप्त रूढ़िग्रस्त कई उग्र महानुभाव आशा भरी दृष्टि से आर्य समाज की ओर देखते थे, कि निकट भविष्य में आर्य समाज हमारे सिंहासनों को ध्वस न करदे।

आर्य समाज के उज्ज्वल रत्न
स्व० स्वामी शंकरानन्दजी

(लेखक—स्वामी भवानी दयाल जी प्रवासी भवन अजमेर)

देश और विदेशोंसे मेरे पास प्रायः इतने तार आते रहते हैं कि अब तार मे मेरे लिये कोई विशेष आकर्षणकी बात नहीं रह गई किन्तु गत २३ दिसम्बर



को खरवन (मध्य भारत) के ठाकुर महेन्द्र सिंह का तार पाकर एक अज्ञात आशंकासे मेरा चित्त विचलित हो उठा। उसका मजमून पढने पर मालूम हुआ कि स्वामी शंकरानन्दजी महाराज इस लोकसे सदा के लिये विदा हो गये। हा हन्त !

वैदिक धर्म और आर्य संस्कृतिका वह देदीप्यमान दीपक बुझ गया, जिसने अर्द्ध-शताब्दी तक अज्ञान-तिमिराच्छन्न रजनीमें मार्ग भूल-कर भटकते हुए भारत और दक्षिण अफ्रिकाके हिन्दुओंको पतनके गहरे गर्तमे गिरनेसे बचाया और उनमें स्वदेशाभिमान, जातीय उत्थान एव आत्म सम्मान के भव्य-भाव भरकर नवयुगके प्रशस्त पथपर आगे बढाया। उनका व्यक्तित्व जैसा विशाल था, वाणी भी उनकी वैसीही बलवती थी और ठीक लक्ष्यपर जाकर लगनेवाली थी उनकी तर्कशैली। हिन्दी और अँगरेजी के वे धुरन्धर वक्ता थे और संस्कृत, फारसी तथा उर्दू के एक अच्छे विद्वान्। वैदिक धर्म और आर्य संस्कृतिपर उनकी अनुपम अनुरक्ति थी और हिन्दुत्वकी रक्षा एव उन्नतिके लिये उत्कट अभिलाषा। उनके निधन से वैदिक धर्म का एक प्रबल प्रचारक उठ गया, आर्य-संस्कृतिका एक चमकता हुआ सितारा डूब गया और हिन्दुत्व का एक आधार-स्तम्भ टूट गया।

स्वामी शंकरानन्द ने सम्वत् १९२४ मे पंजाबमे जन्म लिया था और लगभग ७६ वर्ष की आयुमें उनका शरीरान्त हुआ है काठियावाड़ मे। इस दरम्यानमें हिन्दुत्वके विकास और उत्कर्षके लिये देशमे जो छोटे बडे आन्दोलन हुए हैं उनमें, स्वामीजीका विशेष भाग रहा है। जिस समय पंजाबमे आर्य समाज का पैगाम पहुँचा जनतामे एक नई जागृति पैदा हुई, युवकोंमे देशसेवाकी भावनाएँ उमड़ने लगीं, महात्मा मुंशीराम ला० हँसराज, ला० लाजपतराय ला० देवराज आदि महाभागों ने मातृभूमि के चरणोंपर अपने जीवन-सुमनको चढाया और वे आर्य जातिको उठाने तथा आगे बढ़ाने के लिये कटिबद्ध होकर कार्यक्षेत्रमे कूदे। ठीक उसी समय स्वामी शंकरानन्दने भी अपने जीवनका लक्ष्य स्थिर कर लिया और वह था—वैदिक धर्मका प्रचार, आर्य जातिका सुधार एव आर्य संस्कृतिका पुनरुद्धार। इसी काममें उनका जीवन बीता और इसी कामके बीचमे उनकी मृत्यु भी हुई।

स्वामीजीने भारतके अतिरिक्त विलायत, दक्षिण अफ्रीका और लङ्कातक वैदिक धर्मका पवित्र पैग़ाम पहुंचाया था। विलायत-प्रवासके समय जब उन्हे दक्षिण अफ्रीका-प्रवासी हिन्दुओंकी धार्मिक और सामाजिक अधोगतिकी खबर मिली तो उनका हृदय दहल उठा। वे विलायतके गौराङ्गों की आध्यात्मिक उन्नतिकी चिन्ता छोड़कर दक्षिण अफ्रीका जा पहुँचे और वहाँ लगातार चार साल तक वैदिक धर्मका प्रचार कर प्रवासी हिन्दुओंकी हस्ती बचा ली। स्वामी विवेकानन्द

और स्वामी शकरानन्दकी प्रचार-पद्धतिमें यही अन्तर था। एकने अर्थलोलुप अमेरिकनों को आध्यात्मिकता की ओर आकर्षित करनेमें अपनी शक्ति लगाई और दूसरेने अपने दीन-हीन प्रवासी बन्धुओंमें वैदिक धर्मका प्रचार और आर्यसंस्कृति का सचार करनेमें। जिस समय स्वामी विवेकानन्द न्यूयार्क, वाशिङ्गटन, चिकागो आदि नगरोंमें मुट्ठी भर अमेरिकनों को वेदान्त की दीक्षा देकर मठोंकी स्थापना में व्यस्त थे, ठीक उसी समय उसी अमेरिकाके दक्षिणीय भागमें—डेमरारा, ट्रिनीडाड, सुरीनाम, जमैका, ग्रनेडा आदि उपनिवेशों के हजारों शिक्षित युवक हिन्दू धर्मको त्यागकर धड़ाधड़ ईसाई हो रहे थे। उन अभागे हिन्दुओंकी ओर स्वामी विवेकानन्दकी दृष्टि नहीं फिरी, जो दक्षिणीय अमेरिका के उपनिवेशोंमें शर्तबन्दी मजदूरीका पट्टा लिखाकर गये थे और अपने धर्मके मर्मसे अनभिज्ञ होने के कारण सहज ही ईसाई पादरियोंके शिकार हो रहे थे। आज उन उपनिवेशोंमें कोई विरला ही शिक्षित व्यक्ति हिन्दू रह गया है अन्यथा सबके सब ईसाई हो गये हैं। सदियोंकी दासता ने हमारे दृष्टि कोण को ऐसा दूषित बना दिया है कि स्वामी विवेकानन्दके दस-बीस श्वेताङ्ग शिष्यों को देखकर हम फूले नहीं समाते हैं किन्तु यह भूल जाते हैं कि उसी अमेरिकाके समीपवर्ती उपनिवेशों में हजारों-लाखों हिन्दू ईसाई हो गये और ऑनरेबल शरण तिलक सिंह ऑनरेबल सी डी लाला, ऑनरेबल लक्खू के० सी० प्रभृति जैसे नररत्न हमसे सदाके लिये बिछुड़ गये।

इस कसौटीपर कसनेपर स्वामी शकरानन्दका कार्य अधिक महत्वपूर्ण मालूम देगा। वे खासकर यहाँ से गये तो थे यूरोप में वैदिक धर्मकी ध्वाजा फहराने किन्तु जब उन्हें प्रवासी हिन्दुओंकी तत्कालीन परिस्थिति का परिचय मिला तो उन्होंने अपना सकल्प और कार्यक्रम बदल दिया। यूरोप के श्वेताङ्गों की अपेक्षा दक्षिण अफ्रिकाके अपने प्रवासी भाइयोंकी सेवा करना उनको अधिक उचित जँचा और वे यूरोप का मोह त्यागकर दक्षिण अफ्रिका पहुच गये। वहाँ उन्होंने प्रवासी हिन्दुओंको विधर्मियोंकी शरण में जाने से बचा लिया। दक्षिणीय अमेरिका के उपनिवेशोंसे दक्षिण अफ्रिकाके प्रवासी हिन्दुओंकी हालत किसी दृष्टिसे अच्छी नहीं थी किन्तु स्वामीजी ने नेटाल के अर्द्धशताब्दी से दलित और पतित हिन्दुओं का केवल अस्तित्वही नहीं बचाया प्रत्युत उनको उठाकर अपने पैरों पर भी खड़ा किया। उन्होंने अपनी वाणी से गौराङ्गों का भी यह भ्रम मिटा दिया कि भारतवर्ष

केवल कुलीकबाड़ियों की जन्म भूमि है। जो श्वेताङ्ग हिन्दुओं को मूर्तिपूजक, धर्महीन और नास्तिक समझते थे उनकी सभाओं में स्वामीजी ने सभाषण करके यह सिद्ध कर दिया कि वैदिक धर्मही सब धर्मों का मूल है और आर्य संस्कृति ही सारे ससार की संस्कृतियों का स्रोत।

यदि स्वामी शकरानन्द को हिन्दू-महासभा का आद्य प्रवर्तक कहा जाय तो कोई अत्युक्ति न होगी। आज से ३१ साल पहले सन् १९१२ में उन्होंने "दक्षिणीय अफ्रिका हिन्दू महासभा" की बुनियाद डाली थी जो किसी तरह अबतक जीवित है। उसके बाद भारत में हिन्दू महासभा की स्थापना हुई है जिसके पच्चीसवें साल पर रजत-जयन्ती हाल ही में मनाई गई है। भारत की हिन्दू-महासभा की स्थापना में भी स्वामीजी का सहयोग रहा है।

सन् १९१३ में दक्षिण अफ्रिका से लौटकर उन्होंने कईबार देशभरका दौरा किया और वैदिक धर्म का प्रचार, किन्तु उनके कार्य का केन्द्र काठियावाड़ रहा है। काठियावाड में 'वीरपुर' नामक एक रियासत है, वहा के ठाकुर साहब की स्वामीजी पर विशेष श्रद्धा रही है। अतएव वीरपुर में ही वे कुटी बनाकर रहने लगे और वहा से काठियावाड़ की छोटी बड़ी रियासतों में वैदिक धर्म का प्रचार करते रहे। आज काठियावाड़ के राजवशियों और वहां की जनता में जो जागरण दिखाई देता है उसका बहुत कुछ श्रेय स्वामीजी को ही है।

स्वामी शकरानन्दजी से मेरा परिचय बहुत पुराना है जब मैं यहा से दक्षिण अफ्रिका गया, ठीक उसी समय वे भारत लौटे। उनपर मेरा सच्चा स्नेह था और मुझपर उनका अच्छा अनुग्रह। पिछली चौथाई सदी के अन्दर अनेकवार उनके दर्शन और सत्सङ्ग के सौभाग्य प्राप्त हुए। उनसे घनिष्ठता और मित्रता होते हुए भी उनके विचारों और कार्यों से मेरा मतभेद रहा है किन्तु उससे व्यक्तिगत स्नेह-सम्बन्ध में कोई फ़र्क नहीं पड़ा। स्वामीजी की साम्प्रदायिक मनोवृत्ति और नीतिका मैने कभी समर्थन नहीं किया। वे हिन्दू महासभा के हिमायती थे। यदि हिन्दू-महासभा का उद्देश्य होता—हिन्दुओं की धार्मिक और सामाजिक उन्नति, तो उससे किस हिन्दू का सम्पर्क न होता पर वह तो बन गई है एक राजनीतिक सस्था, और साम्प्रदायिक राजनीति से मेरी कोई सहानुभूति नहीं है। मैं राजनीतिक क्षेत्र में हिन्दू-मुसलमान का भेदभाव देश के लिये घातक समझता हूँ

और इस लिये सन् १९०६ से ही कांग्रेस से मेरा सम्बन्ध है। हिन्दू महासभावादी और कांग्रेसवादी में जो मतभेद होना चाहिये वही स्वामीजी और मेरे बीच में था।

इस लेख में स्वामीजी के जीवन और कार्योंपर सक्षेप में भी प्रकाश डालना असम्भव है। हिन्दी में उनकी दो विस्तृत जीवनी निकल चुकी हैं—एक तो मेरी ही कृति है और दूसरी प० श्रीकृष्ण शर्मा आर्य मिश्नरी की। भावनगरके श्री उमेश कवि गुजराती में उनकी जीवनी लिख रहे हैं। स्वामीजी के अँगरेजी व्याख्यानों का भी एक सग्रह प्रकाशित करने का विचार हो रहा है। यहाँ तो इतना ही कह-कर सन्तोष करना पडेगा कि स्वामीजी के निधन से आर्य समाज ने अपना एक पुराना सेवक खोया, आर्य जाति ने अपने एक महान् सन्यासी से हाथ धोया और दक्षिण अफ्रिका प्रवासी हिन्दुओं का तो वह उद्धारक चल बसा, जिसने उनको विनाश से बचाया था और अन्य जातियों के समकक्ष में सम्मान से बैठाया था।

स्वामीजी ने अपने जीवन को सार्थक बनाया। जिस कार्य के लिए उनका आविर्भाव हुआ था उसे उन्होंने निष्ठा के साथ पूरा किया। इस ससार में स्थायी कौन रहा है ?

"धराका स्वभाव यही तुलसी, जो फरा सो झरा बरा सो बुताना।"

पर उसीका जीवन धन्य है जो मातृभूमि की सेवा में निछावर हुआ, उसीका नाम अमर रहेगा, जिसने देश वासियों के कल्याण और उत्थान में आत्मोसर्ग कर दिया और भावी पीढ़ी उसीको श्रद्धा से पूजेगी, जो देश और राष्ट्र की वेदीपर अपने प्राणों का बलिदान चढ़ावेगा। भारतके धार्मिक इतिहास में स्वामी शंकरानन्द का नाम और यश चिरस्थायी बना रहेगा।

वर्तमान शिक्षा-क्रम व आर्य समाज

[लेखक—श्री प्रेमबहादुर जी वर्मा M Sc. B T Inspector of Schools कोटा]
(राज स्थान)

आज कल शिक्षा-जगत् में एक प्रकार की उथल पुथल मची हुई है। मौलिक शिक्षा (Basic Education) का जब से सूत्र पात हुआ है तब से शिक्षा का अभिप्राय बिलकुल पलट गया है। निस्सन्देह इसका उद्देश्य कोरे आदर्शों के अतिरिक्त अधिक व्यावहारिक हो गया है। जिस क्रिया-कौशल को हम गौण व तुच्छ समझते थे वही आज हमारी शिक्षा-पद्धति का मूल रूप से आधार बना हुआ है तथा हम उसे मौलिक हस्तकला (Basic Craft) के नाम से पुकारने लगे हैं। अब हम उस शिक्षा-पत्र का मानने को तैयार नहीं हैं जिसमें हस्त-कौशल को कोई स्थान नहीं दिया गया अर्थात् अब हमने परिश्रम (Labour) की उच्चता व श्रेष्ठता को स्वीकार कर लिया है। हस्त-कौशल के अतिरिक्त शिक्षा-क्रम में अन्य बालोपयोगी विषय भी प्रारम्भ से ही सम्मिलित कर लिये गये हैं जिनसे विद्यार्थी की मनोवृत्ति व चरित्र साथ साथ ही सुन्दर रूपमें ढल जॉय।

इस समय हम आय समाजियों को यह न भूल जाना चाहिये कि इस नवीन शिक्षा-क्रम से हमारा कोई सम्बन्ध ही नहीं है। हमारा कार्य क्रम धार्मिक अवश्य है परन्तु शिक्षा को हम धर्म व धार्मिक प्रचार से अलग नहीं कर सकते हैं, क्योंकि धर्म के सूक्ष्म तत्वों को इसी के द्वारा अविचल रूप से बोया जा सकता है। यही कारण है कि आय समाज की ओर से अनेकों गुरुकुलों व डी० ए० वी० स्कूलों तथा कालिजों की स्थापना की गई है।

उपरोक्त मौलिक शिक्षा (Basic Education) के शिक्षा-क्रम (Curriculum and Syllabus) में हस्त कौशल के अतिरिक्त दो और विषयों का समावेश किया गया है। ये सामाजिक विषय व सामान्य विज्ञान हैं। इनकी शिक्षा प्रारम्भिक बाल कक्षाओं से आरम्भ हो जाती है, अर्थात् तब से जब से कि बालक का अक्षर-ज्ञान आरम्भ किया जाता है जिससे सब ही उपयोगी बातें बालक के हृदय में प्रारम्भ से ही स्थान पावें। सामाजिक विषय के अन्तर्गत तीन विषय इतिहास, भूगोल और नागरिक ज्ञान हैं जैसा कि ऊपर प्रकट किया जा चुका है ये प्रारम्भिक बाल-कक्षाओं से आरम्भ हो जाते हैं। यहा पर हम वर्तमान शिक्षा-क्रम

के सब अंगो को न लेकर केवल एक ही अंग सामाजिक विषय को तथा उसके भी केवल एक खण्ड इतिहास को लेंगे। आर्य समाज को इस इतिहास की शिक्षा पर विशेष ध्यान देना है क्योंकि इसी के द्वारा हमारी आर्य-सस्कृति को दूषित किया जारहा है। अब समय है कि हम उसे अधिक दूषित न होने दें तथा जो कुछ भी दूषित प्रचार उसके विरुद्ध किया गया है उसका प्रभाव बिलकुल नष्ट करदें।

वर्तमान शिक्षा-क्रम (Curriculum) में इतिहास का जो पाठ्य-क्रम (syllabus) है वह आर्य-सस्कृति के बिलकुल विपरीत है अत वह त्याज्य है। इतिहास का वर्तमान पाठ्य-क्रम डारविन के विकास-वाद पर निर्धारित है जो अब अमान्य हो चुका है, परन्तु हमारे स्कूलों में वह बदस्तूर उसी प्रकार चला आरहा है तथा उसका बुरा असर स्पष्ट ही है। ऐसी स्थिति में हमारा कर्त्तव्य है कि आर्य समाज की ओर से पर्याप्त प्रयत्न किया जाय कि स्कूलों में इतिहास का ऐसा पाठ्य-क्रम स्वीकृत हो जाय जो कि आर्य-संस्कृति विरुद्ध न हो। इस अभिप्राय से इतिहास का, प्राम्भिक कक्षाओं में, क्या पाठ्य-क्रम (syllabus) होना चाहिये, उसका नमूना नीचे प्रकट किया जाता है। परिस्थिति के अनुसार इसमें हेरफेर होना आवश्यक है। यह पाठ्य-क्रम केवल वैदिक काल ही से सम्बन्ध रखता है और प्रारम्भिक कक्षाओं के लिये ही है —

प्रारम्भिक काल

(अर्थात् वैदिक काल के मनुष्यों का इतिहास)

१. सृष्टि के आरम्भ में एक अति सभ्य जाति का होना। उसका आर्य नाम से प्रसिद्ध होना।

२ "त्रिविष्टप" (तिब्बत) या हिमालय प्रदेश में उनकी उत्पत्ति होना और वहा से सारी दुनिया में फैलना।

३. उनमें चार ऋषि (अर्थात् उच्च चरित्र वाले, उच्च विद्वान्) हुए। इन्हीं के द्वारा वेद के ज्ञान का फैलाना।

४ आर्यों का नाना प्रकार के अन्न उत्पन्न करना तथा खाने के लिये उत्तम भोजन बनाना

५. नगर के रहने वालों का सुन्दर वस्त्र पहनना। ऋषि-मुनियों का बस्ती से दूर रहने पर अपनी आवश्यकताओं को सीमित करने के लिये वृक्षों की छाल के वस्त्र भी पहनना।

६ उनका सुन्दर घर बना कर उन्हें कलशों आदि से सजाना।

७ स्वच्छ सड़कों का होना और उन्हें जल से छिड़का जाना।

८ जीवन के लिये आवश्यक वस्तुओं का बनाना जानना।

९ विविध कलाओं-चित्र कला व काव्य-कला आदि की पर्याप्त व अच्छी उन्नति होना।

१० युद्ध में विचित्र व उपयोगी हथियारों नलिकास्त्र आदि का प्रयोग करना।

११ केवल एक ईश्वर का मानना।

१२ वायु, जल आदि प्राकृतिक पदार्थों को अत्यन्त उपयोगी समझ कर उन्हें आदर की दृष्टि से देखना और ईश्वर भाव से उन्हें न पूजना।

१३ वायु-जल की शुद्धि के लिये अग्नि होत्र प्रति दिन प्रात व साय करना।

१४ परोपकार में बड़ी रुचि होना और सारे परोपकारी कार्यों को यज्ञ कहना। यज्ञ का बड़ा आदर करना।

१५ बालकों के लिये अच्छी पाठशालाओं का होना।

१६ बडे २ और ऊँचे विद्यालयों में बड़ी उम्र के विद्यार्थियों का पढ़ना अर्थात् परिषदों का होना।

१७ कुछ वान-प्रस्थियों का अपने आश्रमों में व्यक्तिगत रूपसे केवल भोजन ही पर शिक्षा दान करना।

उपरोक्त पक्तियों में इतिहास का जो पाठ्य-क्रम प्रकट किया गया है वह हमारी आर्य-सस्कृति के अनुकूल है। परिस्थिति के अनुकूल उसमें थोड़ी बहुत हेर फेर करनी उचित ही है। यह पाठ्य-क्रम प्रारम्भिक कक्षाओं के लिये है परन्तु उच्च कक्षाओं का भी इसी सिद्धान्त पर बनाया जा सकता है।

जब यह निश्चय हो गया कि इतिहास का प्रचलित पाठ्य-क्रम अनुपयुक्त है तो यह हमारा कर्त्तव्य है कि हम उपयुक्त पाठ्य-क्रम रखने के लिये सरकार से प्रार्थना करें। इस के लिये आर्य समाज की ओर से पर्याप्त छान बीन करके छोटी छोटी कक्षाओं के योग्य पाठ्य-क्रम पुस्तकें लिखी जावें। इन पुस्तकों को सरकार से स्वीकृत कराकर पाठशालाओं में लागू कराया जाय। ऐसा करने से ही हमारी सस्कृति के विपरीत विचारों का अन्त होकर आर्यों की उच्च सस्कृति प्रकट हो जावेगी॥

पुराण और मुहम्मद साहेब

(लेखक—चतुर्वेदभाष्यकार श्री प० जयदेव जी शर्मा विद्यालंकार मीमांसातीर्थ,
आदर्श नगर, अजमेर)

खण्डन-मण्डन का कार्य केवल आर्य समाज ने ही नहीं किया, प्रत्युत सनातन धर्म के ग्रन्थों में सैकड़ों पारस्परिक मतों व पन्थों के खण्डन-मण्डन पुराणों में विद्यमान हैं जिनको सनातनधर्मी बहुत श्रद्धापूर्वक, साक्षात्—श्री व्यासदेव जी महाराज का बनाया हुआ मानते हैं। यदि सनातन-धर्मी पुराणों में भी मुहम्मद सा० की खूब आलोचना की गई हो तो अगले दिन मुसलिम लीग पुराणों को जप्त कराने की भी धमकी देगी क्योंकि उसमें मुहम्मद साहेब और कुरान के धर्म की कड़ी आलोचना की गई है।

पाठक यह न समझें कि पुराणों में मुहम्मद साहेब और उनके पन्थ को अछूता छोड़ दिया है। प्रत्युत, पुराणों में मुहम्मद साहेब की खूब तीव्र आलोचना की गई है जिसका नमूना इस लेख में दिखाने का यत्न किया जावेगा।

भविष्य पुराण १८ पुराणों में से एक पर्याप्त बड़ा प्रसिद्ध पुराण है। यदि मौलाना श्री अब्दुल हक के कथनानुसार भविष्य पुराण में सब भविष्य की बातें बतलाई हैं तब तो यह एक बहुत मनोरजक बात सिद्ध हो जाती है कि सनातन धर्म के पुराणों में मुहम्मद साहेब के पैदा होने से ३५०० (साढे तीन हजार) वर्ष पहले ही व्यासदेव ने मुहम्मद साहेब को गति-विधि परखली थी, और उससे समस्त दुनिया को सचेत भी कर दिया था।

अब पाठक देखें कि भविष्य पुराण के बनाने वाले ने मुहम्मद साहेब को कैसा माना है और उसके प्रचारित धर्म की किन शब्दों में आलोचना की है।

भविष्य पुराण प्रतिसर्गपर्व, अध्याय तीन में शालिवाहन वंश के राजा भोजराज धारानरेश का वर्णन किया है। उसके दिग् विजय का वर्णन करते हुए लिखा है कि—

(१) 'शालि वाहन वंश में दस राजा हुए थे, उन्होंने पांच सौ वर्ष राज्य किया था, उस समय भूमण्डल पर शनैः २ आर्य मर्यादाओं का लोप होता जारहा था। शालि वाहन वश के राजाओं मे से दसवें राजा महाराज श्री भोज राज थे।

प्रसंग वश हम राजा भोज के सम्बन्ध में इतना बतला देना आवश्यक समझते हैं कि राजा भोज के सम्बन्ध में भोज प्रबन्ध नामक ग्रन्थ में लिखा है कि—

पचाशत् पचवर्षाणि नवमासदिनत्रयम्।
भोजराजेन भोक्तव्य सगौडो दक्षिणापथ ॥

राजा भोज ने ५५ वर्ष ६ मास ३ दिन उत्तर भारत महित दक्षिण भारत पर अपना शासन किया था। ऐसे प्रतापी राजा के सम्बन्ध में भविष्य पुराण में लिखा है—

(२) 'भोज राज ने प्रबल होकर आर्य धर्म की मर्यादाओं को क्षीण होते देख कर दिग्विजय करना प्रारम्भ किया। वह अनेक ब्राह्मणों, विद्वानों को साथ लेकर १० सहस्र सेना के साथ सिन्धु नदी पार करके यवन देश में गया। उसने गाधार (काबुल-कन्धार) कश्मीर और छली, दुष्ट अरब वासियों को विजय किया। उसने उनका खज़ाना छीन लिया और उनको खूब दण्ड दिया। इसी बीच में 'मुहम्मद' (महामद) नाम का म्लेच्छ अपने बहुत से शिष्यों सहित बहुत प्रसिद्ध हो गया था।

(१) शालि वाहन वशे च राजानो दश चाभवन्।
राज्य पचशताब्द च कृत्वा लोकान्तर ययु ।
मर्यादाक्रमतो लीना जाता भूमण्डले तदा।
भूपतिर्दशमो यो वै भोजराज इति स्मृत' ।

(२) दृष्ट्वा प्रक्षीणमर्यादा बली दिग्विजय ययौ।
सनाया दशसाहस्या कालिदासेन संयुत ।
तथाऽन्यैर्ब्राह्मणैः सार्ध सिन्धुपारमुपाययौ।
जित्वा गान्धारजान् म्लेच्छान् काश्मीरान् अरवान् शठान्।
तेषा प्राप्य महाकोषं दण्डयोग्यान् अकारयत्।
एतस्मिन्नन्तरे म्लेच्छः शिष्यशाखासमन्वित ।
'महामद' इति ख्यात..... . . ।

(३) उस समय राजा भोज राजने अपने आचार्य कालिदास को लिये हुए मरुस्थल निवासी महादेव को पञ्च गव्यों सहित गङ्गा जलों से स्नान कराया। और चन्दनादि से सुशोभित करके मनसे हर (महादेव) की स्तुति की। स्तुति सुनकर महादेव ने राजा को कहा कि—तुम महा कालेश्वर (मक्का = महा कालेश्वर) के स्थान में जाओ, वहा म्लेच्छोंने भूमि को दूषित किया हुआ है। यह भूमि 'वाहीक' नाम से प्रसिद्ध है। यहा आर्य धर्म नहीं है। वह देश बहुत दारुण अर्थात् भयानक, खतरनाक है, इस देशमें बड़ा भारी मायावी, त्रिपुरासुर जिसको मैंने पहले भस्म कर डाला था, वह दैत्यराज बलि की प्रेरणा से पुन उतर आया है। वह अयोनि है अर्थात् उसका कोई स्थाननिश्चित नहीं, वा न उसके मा-बाप या घरबार का पता है वह दैत्यों को बढ़ाने वाला, मुझसे ही वर प्राप्त कर, मदमत्त हो गया है। वह महामद (मुहम्मद) नाम से प्रसिद्ध होकर पिशाचों के आचार व्यवहारों में लगा रहता है।

(४) हे राजन्! धूर्तों से भरे पिशाचों के इस देश में तुझे न आना चाहिये। [परन्तु तू अब आ ही गया है] सो मेरी कृपा से तेरी शुद्धि हो रही है। यह सुनकर राजा भोज पुनः अपने देश में आ गया, 'महामद' भी राजा भोज

---

(३) आचार्येण समन्वितः।
नृपश्चैव महादेव मरुस्थलनिवासिनम्।
गगाजलैश्च सस्नाप्य पचगव्य समन्वितै।
चन्दनादिभिरभ्यर्च्य तुष्टाव मनसा हरम्।
इति श्रुत्वा स्तव देव शब्दमाह नृपाय तम्।
गन्तव्य भोजराजेन महाकालेश्वरस्थले।
म्लेच्छै सुदूषिता भूमिर्वाहीका नाम विश्रुता।
आर्य धर्मो हि नैवात्र वाहीके देशदारुणे।
बभूवात्र महामायी योऽसौ दग्धो मया पुरा
त्रिपुरो बलि दैत्येन प्रेषित पुनरागत।
अयोनि स वरान् मत्तः प्राप्तवान् दैत्यवर्धन।
महामद इतिख्यातः पैशाचकृतितत्परः।

(४) नागन्तव्यं त्वया भूप पैशाचे देश धूर्तके।
मत्प्रसादेन भूपाल तव शुद्धि प्रजायते।
इति श्रुत्वा नृपश्चैव स्वदेशान् पुनरागमत्।

और अपने शिष्यों सहित सिन्धु नदी के तट तक साथ आये। महम्मद माया करने में और मद में बड़ा सिद्ध हस्त था। वह राजा से बहुत प्रेम से बोला—हे महाराज! आपका इष्टदेव (महादेव) मेरा दास बन गया है, हे राजन्! देखो वह मेरा जूठा खा सकता है।

(५) राजा भोज यह सुनकर बहुत आश्चर्य में पड़े, उस समय राजा भोज की भी गति-मति इस क्रूर म्लेच्छ धर्म मे झुकने लगी, ऐसा सुनकर आचार्य कालिदास ने बड़े क्रोध से महम्मद (महामद) से कहा—ऐ धूर्त, छली कपटी! तूने राजा को ठगने के लिये यह प्रपञ्च जाल (माया) किया है, नीच, बाही कों में भी पतित, दुराचारी! तुझे मै जान से मार डालूगा।

(६) कालिदास नामक ब्राह्मण ने ऐसा कह कर नवाक्षर महामन्त्र का दससहस्र जप किया, और १००० आहुति दी, इतने से वह महम्मद (महामद) भस्म होकर म्लेच्छों का इष्ट देव बन गया। महम्मद के शिष्य सब डरकर अपने वाहीक (गडरियों के) देश को लौट गये। वे मद से हीन हुए। अर्थात् वहाँ उनका सब मद (नशा) उतर गया। गुरु की भस्म को लेकर उन्होंने पृथ्वी में गाडदी और स्वयं फिर मदमत्त (उद्धत) होकर रहने लगे। वह स्थान जहा वह भस्म गाडी गई, म्लेच्छों का एक भारी तीर्थ के तुल्य हो गया।

महामदश्च तै सार्धं सिन्धुतीर मुपाययौ।
उवाच भूपतिं प्रेम्णा मायामद विशारदः।
तवदेवो महाराज मम दासत्व मागत।

(५) इति श्रुत्वा तथा दृष्टा परं विस्मय मागतः।
म्लेच्छधर्मे मतिश्चासीत् तस्य भूपस्य दरुणे।
तच्छ्रुत्वा कालिदासस्तु रुषा प्राह महामदम्।
माया ते निर्मिता धूर्त नृप मोहनहेत वे।
हनिष्यामि दुराचार वाहीक पुरुषाधमम्।

(६) इत्युक्त्वा स द्विजः श्रीमान् नवार्णं जप तत्पर।
जप्त्वा दश सहस्रं च तद्दशांश जुहाव स।
भस्म भूत्वा स मायावी म्लेच्छ देवत्वमागत।
भयभीतास्तु तच्छिष्या देश वाहीकमाययुः।
गृहीत्वा स्वगुरोर्भस्म मदहीनत्वमागतम्।
स्थापितं तैश्च भूमध्ये तेषा तीर्थसमं स्मृतम्।

(७) एकबार रात के समय अनेकों मायाएँ करने में चतुर वह (महम्मद) देव का सा रूपधर पिशाचों का सा रूप बनाकर भोजराज को बोला—राजन्! तेरा आर्य धर्म सबसे उत्तम कहा गया है, तो भी महादेव की आज्ञा से मैं भयंकर, त्रासकारी, सबको दुख देने वाला, पैशाच धर्म चलाऊँगा। जिसके अनुयायियों को लिंग कटाना (सुन्नत करानी) होगा, चोटी कटानी होगी, (मूंछ कटाकर) दाढ़ी रखानी होगी, वह सब धर्मों का नाशक होगा, उसमें ऊँचा बाङ्ग दिया जायेगा, सब प्रकार के पदार्थ खाये जा सकेंगे, एक सूअर को छोड़कर सब पशु मेरे मत में खाने योग्य होंगे, जैसे आर्यों में कुशाओं से संस्कार होता है उनसे पवित्र किया जाता है, वैसे मेरे मत में सबको मूसल से (दण्डे मारकर, जबरदस्ती से) संस्कार किया जाया करेगा। इसी कारण से वे मुसलमान् (मुसलमान्) जातियां धर्म का नाश करने वाली हैं। मेरा यह चलाया धर्म पिशाचों का धर्म होगा। वह ऐसा कहकर चला गया, और देवता स्वरूप, राजा भोजदेव जी अपने देश में चले आये।

समीक्षा—महात्मा व्यासदेव ने आज से ५००० वर्ष पूर्व वह बातें पुराण में लिख दी हों, सो बात तो कोई विचारवान् पुरुष नहीं मानेगा। परन्तु हाँ, यदि पुराणों को इतिहास माना जाय तो अवश्य एक ऐतिहासिक बात सामने आ जाती है कि—राजा भोजदेव छठी शताब्दी में हुए, उन्होंने दिग्विजय की, उस समय अरब के लोग सब शिव के उपासक थे, वे हिन्दू धर्म के मानने वाले थे, मक्का में महाकालेश्वर का मन्दिर था, उसी समय मोहम्मद सा० ने अपने मौजजों (मायाओं) से अरब में अपना बड़ा भारी शिष्य दल एकत्र कर लिया था, उसने भोजराज

(७) रात्रौ स देवरूपश्च बहुमाया-विशारदः।
पैशाच देहमास्थाय भोजराज हि सो ऽब्रवीत्।
आर्यधर्मो हि ते राजन् सर्व धर्मोत्तमः स्मृतः।
ईशाज्ञया करिष्यामि पैशाच धर्म-दारुणम्।
लिंग च्छेदी शिखाहीनः श्मश्रुधारी स दूषकः।
उच्चालापी सर्वभक्षी भविष्यति जनो मम।
बिना कोल च पशवस्तेषा भक्ष्या मता मम।
मुसलेनैव संस्कारः कुशैरेवभविष्यति।
तस्मान्मुसलवन्तोहि जातयो धर्मदूषकाः।
भूति पैशाचधर्मश्च भविष्यति मयाकृतः।
इत्युक्त्वा प्रययौ देवः स राजा गेहमाययौ।

को भी चक्कर में डाल दिया, परन्तु आचार्य ब्राह्मण कालिदास ने उसे भस्म किया, मुहम्मद सा० का शरीर भस्म हुआ था, वह मट्टी दफ़न नहीं की गई परन्तु मदीना में उसकी राख पर समाधि बनाई गई, क्योंकि उसके शिष्यों के केवल राख ही हाथ में आई। उस समाधि स्थान को अरब वालों ने अपना तीर्थ बना लिया, तबसे समाधिपूजा और कबरपूजा मृतक-कबर परस्ती मुसलमानों में प्रचलित होगई। वही पिशाच धर्म चला, जिसमें सिवाय सूअर के सब मांसों को भक्ष्य कहा गया। सुन्नत कराना, चोटी कटाना, मूछ कटाकर दाढ़ी बढ़ाना, बांग देकर पुकारना, सर्व भक्षी होना ये सब चिन्ह भोजदेव से पराजय मानकर, आर्य धर्म त्याग कर रहना मुहम्मद साहब ने प्रचारित किया। ऐसी घटना पहले भी कई बार हुई, राजा सगर ने भी दिग् विजय करके पश्चिमी म्लेच्छ देशों को इसी प्रकार पराजित करके, उनके आर्य चिन्हों का लोपकर उनको म्लेच्छ चिन्ह धरा दिये थे, ऐसा पुराण महाभारत में लिखा पाया जाता है।

इसके अतिरिक्त पुराणकार ने महम्मद सा० को (महामद) अर्थात् बहुत मद (नशा) वाला, नाम से लिखा है। उसको धूर्त्त, मायावी, पिशाच, म्लेच्छ, अयोनि (=बे घर बार, बे मा बाप खानाबदोश) और त्रिपुरासुरका अवतार और पिशाचों के तुल्य घृणित कामों में लगा हुआ बतलाया है। महम्मद सा० के नाम से पुराणकार ने 'आर्य धर्म' की प्रशंसा भी कराई है। इस प्रकार पुराणकार ने आर्य धर्म का महत्त्व और इसलाम धर्म की हीनता का भारी प्रोपेगेन्डा किया है।

कालीदास ने मुसलमानों का जो नशा (मद-गर्व) उतारा, उसका वर्णन भी आलंकारिक है। 'नवार्ण मन्त्र का १००० जप, वा १००० आहुति करना' यह एक आलंकारिक भाषा है, वस्तुतः इसका अभिप्राय यह है कि कालिदास ने महम्मद सा० का जादू (माया) का प्रवाह राजा भोज पर होते देख, १०००० सेना लेकर उसमें १००० सहस्र वीर लड़ा दिये, और मुहम्मद साहब को भस्म कर दिया, उनका नशा 'मदीने' में उतर गया, वहां उनकी कबर बनी, (मद) नशा उतरने से उस स्थान का नाम मदहीन (मदीना) का पड़ा। यह पुराणकार का अभिप्राय मालूम होता है।

आगे ऐतिहासिकों की खोज का विषय है कि वे मुहम्मद सा० की मदीना की लड़ाई, पराजय आदि के साथ भोज के दिग्विजय की घटना के सम्बन्ध में

पता लगावें। अब प्रश्न है कि क्या स्वामी दयानन्द ने अपने सत्यार्थ प्रकाश में पुराणकार के शब्दों से भी कठोर शब्द लिखे हैं? कम से कम सत्यार्थ प्रकाश के १४ वें समुल्लास में एक स्थान पर भी मुहम्मद साहब के नाम को तिरस्कार की दृष्टि से नहीं लिखा, सर्वत्र उचित आदर से 'मुहम्मद साहब' लिखा है।

सत्यार्थ प्रकाश के १४ वें समुल्लास में आलोचना केवल कुरान सम्मत खुदा के स्वरूप और प्रचलित कुरान के मन्तव्यों की है, स्वामीजी को मुहम्मद साहब के व्यक्तित्व से कुछ भी सरोकार नहीं था। मुहम्मद सा० का चरित्र जिस प्रकार का स्वयं कुरान शरीफ और मुसलमान लेखकों और कुरान शरीफ के तफसीर लेखकों (भाष्यकारों) ने लिखा है उस पर आलोचना अवश्य की गई है। परन्तु उसके दोषी सत्यार्थ प्रकाश के लेखक नहीं प्रत्युत स्वयं कुरान शरीफ व मुसलमान लेखक ही हैं। उन्होंने मुहम्मद सा० को वैसा ही रंगा है और कुरान शरीफ में मुहम्मद साहब का चरित्र भी वैसा ही लिखा है जैसे जैद (मुहम्मद साहब के लेपालक बेटे) की स्त्री को अपनी स्त्री बना लेना आदि। (सत्यार्थ प्रकाश १४ समु० स० १४३) इसी प्रकार बहुत से पर्दे उन तफसीर-लेखकों ने खोले हैं, मुसलमान लेखक जिनको अपना प्रामाणिक धर्मग्रन्थ मानते हैं।

बात सत्य यह है कि मुसलमान लोग अपने घर की गन्दगी को साफ करना नहीं चाहते, वे तो म्युनीसपैलिटी के हेल्थ-औफिसर को मौकूफ करना चाहते हैं। क्योंकि वह कच्चे झोंपड़ों और गन्दी गलियों को रोगों का घर बनाता है और उनकी सफाई पर जोर देता है।

ऋषि दयानन्द ने सबसे बड़ा उपकार मुसलमानों का यह किया है कि उनके धर्म ग्रन्थ कुरान शरीफ की ३०५ आयतों का हिन्दी अनुवाद सबसे पहले अपनी टिप्पणी सहित देवनागरी हिन्दी भाषा में सबके सामने रखा। जिससे मुसलमानों को यह बात मालूम हो जावे कि अन्य धर्म के विद्वान् कुरान की बातों को किस दृष्टि से देख सकते हैं।

यदि मुसलमानों को हमारी इन बातों पर विश्वास न हो तो वे अँग्रेजी में कुरान शरीफ की आलोचना के पुस्तक जो पादरियों ने लिखे हैं पढ़लें। उनमें भी कुरान शरीफ और पैगम्बर साहब की कम 'आवभगत' नहीं है।

जैसा पुराण मे ऊपर दर्शाया है। हिन्दू जनता कुरान के धर्म को पिशाच और म्लेच्छ धर्म समझती थी, उसका हिन्दू लोग कभी पढ़ते तक न थे, परन्तु वे अब यह मानने की दृष्टि से नहीं तो, कम से कम धार्मिक आलोचनात्मक तुलनात्मक दृष्टि से ही कुरान शरीफ खरीदते हैं, और पढ़ते हैं। यही कारण है कि हसन निजामी का प्रकाशित किया हुआ कुरान शरीफ का हिन्दी तर्जमा १०) रु० मूल्य का होकर भी हजारों की संख्या में हिन्दुओं ने खरीदा, और पढ़ा। अब आवश्यकता है कि सत्यार्थ प्रकाश के साथ एक और परिशिष्ट ऐसा जोड़ा जावे जिसमें हसन निजामी और मौलाना मुहम्मद अली आ० के किये अनुवादों और टिप्पणियों पर भी आलोचना की जावे।

खेद है कि मुसलमान लोग ऋषि दयानन्द के उपकार को मानना नहीं चाहते। हमें तो स्पष्ट मालूम होता है कि यदि ऋषि दयानन्द की आलोचना न होती तो मौ० मुहम्मद अली और हसन निजामी के कुरान के भाष्य उत्पन्न ही नहीं होते

कानपुर से भी 'इसलाम' पत्र के सम्पादक महोदय एक कुरान का हिन्दी अनुवाद अच्छी परिष्कृत भाषा मे निकाल रहे थे जिसमें मुहम्मद साहेब को 'श्री मुहम्मद' बना दिया गया है। मालूम नहीं, वह अनुवाद पूरा हुआ कि नहीं, परन्तु यह सब कुरान की छान बीन और ऊह पोह और हिन्दी अंग्रेजी परिष्कार सब ऋषि दयानन्द के सत्यार्थ प्रकाश के १४ वें समुल्लास की कृपा है। यदि ऋषि दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न बनाते तो हसन निजामी आदि इसलाम महारथी भी अपने हाथ पाव न हिलाते॥

कुरान में अन्य मतावलम्बियों के लिये कुछ उत्तेजक अति कठोर वाक्यों का संग्रह

(संग्रहीता—अरबी के सुप्रसिद्ध विद्वान् श्री प० रामचन्द्र जी देहलवी)

[गताङ्क से आगे]

(१६) याऐयुहल्लज़ीन आमनू लातत्तख़िज़ुल्यहूद वन्नस्वारा औलियाअ; बअ्ज़ुहुम् औलियाउ बअ्ज़िन्, वमंय्यतवल्लहुम् मिन्कुम् फ़इन्नहुम् मिन्हुम् , इन्नल्लाह लायःदिल् कौमज़्ज़ालिमीन् । सू० ५ । रु० ८ । आ० ५४

डिपुटी नज़ीर अहमद का अनुवाद :—

मुसलमानो यहूद व नसारा को दोस्त न बनाओ यह (लोग तुम्हारी मुख़ालिफ़त में बाहम) एक दूसरे के दोस्त हैं और तुम में से कोई उनको दोस्त बनायगा तो बेशक वह (भी) उनही में का (एक) है क्योंकि खुदा (ऐसे) ज़ालिम लोगों को राह (रास्ता) नहीं दिखाया करता है।

Sale's Translation —

O true believers, take *not the Jews or Christians for your friends*, they are friends the one to the other, but whoso among you taketh them for his friends, he is surely one of them, Verily God directeth not unjust people

(२०) व मंय्युशाक़िक़र्रसूल मिम् बअ्दि मातबैयन लहुल् हुदा व यत्तबिअ् गैरसबीलिल् मोमिनीन नुवल्लिही मातवल्ला वनुस्लिही जहन्नम, वसाअत् मस्वीरा । सू०४ । रु० १७ । आ० ११५

और जो शख्स राहे रास्त के ज़ाहिर हुए पीछे पैग़म्बर से किनारा कश रहे और मुसल्मानों के रस्ते के सिवा (दूसरे रस्ते) होले तो जो (रस्ता) उसने इख़्तयार कर लिया है हम उसको उसी रस्ते चलावेंगे और (आख़िरकार) उसको जहन्नम (नरक) में (लेजा) दाख़िल करेंगे और वह (बहुत ही) बुरी जगह है।

But whoso separateth himself from the apostle, after true direction hath been manifested unto him, and followeth

any other way than that of the true believers we will cause him to obtain that to which he is inclined*, and *will cast him to be burned in hell, and an unhappy journey shall it be thither*

*(Viz, Error, and false notions of religion)

(२१) याऐयुहल्लजीन आमनू लातत्तख़िज़ू आबाअकुम् व इख़्वानाकुम् औलियाअ इनिस्तहब्बुल् कुफ़्रा अलल् ईमानि, व मैयतवल्लहुम् मिन्कुम् फ़उलाइक हुमुज़्ज़ालिमून् । सू० ६ । रु० ३ । आ० २३

अगर तुम्हारे बाप और तुम्हारे भाई ईमान के मुक़ाबले मे कुफ़्र को अज़ीज़ रखें तो उनको (अपना) रफ़ीक (मित्र) न बनाओ, और जो तुम मे से ऐसे बाप भाईयों के साथ दोस्ती रखेगा तो यही लोग (हैं जो ख़ुदा के नजदीक) ना फर्मान हैं।

O true believers, take not your fathers or your brothers for friends, if they love infidelity above faith, whosoever among you shall take them for his friends they will be unjust doers

(२२) फ़इज़न् सलख़ल् अश्हुरुल् हुर्मु फक़्तुलुल् मुश्रिकीन हैसु वजत्तुमूहुम् वख़ुज़ूहुम् वःसुरूहुम् वक़् उदूलहुम् कुल्ल मर्सदिन्, फइन् ताबू व अक़ामुस्सलात व आतुज़्ज़कात फख़ल्लू सबीलहुम् इन्नल्लाह गफूर्रहीम् । सू० ६ । रु० १ । आ० ५ ।

फिर जब अदबके महीने निकल जाएं तो मुश्रिकीन (मूर्त्तिपूजकों या ईश्वरेतर पदार्थ के पूजकों) को जहा पावो कत्ल करो और उनको गिरफ्तार करो और उनका मुहासरा करो और हर घात की जगह उनकी ताक म बैठो फिर अगर वह लोग तौबा करें और नमाज पढ़ें और जकात (धामिककर) दें तो उनका रस्ता छोड़ दो क्योंकि अल्लाह बख्शने वाला मिहरबान है।

And when the months wherein ye are not allowed to attack them shall be past, kill the *idolaters wheresoever ye shall find them*‡ *and* take them prisoners, besiege them, and lay wait for them in every convenient place But if they shall repent and observe the appointed times of prayer, and pay the legal alms, dismiss them (freely) for God is gracious and merciful

(‡Either within or without the sacred territory)

(२३) याऐयुहल्लज़ीन आमनू इन्नमल् मुश्रिकून नज्सुन् फ़ला यक़्रबू मस्जिदल्ह़राम बअ़्द आमिहिम् हाज़ा, वइन्ख़िफ़्तुम् .अ़लतन् फ़सौफ़ युग्नीकुमुल्लाहु मिन् फ़ज़्लिही. इन्शाअ, इन्नल्लाह अ़लीमुन् .हकीम् । सू० ६ । रु० ४ । आ० २८

क़ातिलुल्लज़ीन लायोमिनून बिल्लाहि वलाबिल् योमिल् आखिरि वला युह़रिमून माहर्रमल्लाहु वरसूलुहू, वला यदीनून दीनल् .हक़्क़ि मिनल्लज़ीन ऊतुल् किताब ह़त्ता युअ़्तुल् जिज़्यत अंय्यदिंव्वहुम् स्वाग़िरून् । आ० २९

मुसल्मानो मुश्रिक तो निरे गदे हैं तो इस बरस के बाद (अदब) व हुर्मत वाली मस्जिद (यानी खाने काबा) के पास भी न फटकने पावें। और (उनके साथ लेन देन बंद हो जाने से) तुम को मुफलिसी (गरीबी) का अंदेशा हो तो खुदा (पर भरोसा रखो वह) चाहेगा तो तुमको अपने फजल (अनुग्रह) से गनी (समृद्ध) कर देगा, बेशक खुदा (सबकी नीयितों को) जानता (और) हिकमत वाला है।

O true believers, verily the *idolators are unclean, let them not therefore come near unto the holy* temple after this year * And if ye fear want by the cutting of trade and communications with them, God will enrich you of his abundance, if he pleaseth, for God is knowing and wise

अहले किताब जो न खुदा को मानते हैं (जैसा कि मानने का हक है) और न रोज आखिरत को और न अल्लाह और उसके रसूल की हराम की हुई चीजों को हराम समझते हैं और न दीन हक का तस्लीम करते हैं (मुश्रिकों के अलावा) इन (लोगों से भी लड़ो यहां तक कि जलील होकर अपने हाथों से जजिया दें।

Fight against them who believe not in God nor in the last day, and forbid not that which God and his apostle have forbidden and profess not the true religion, of those unto whom the scriptures have been delivered, until they pay tribute by right of subjection, and they be reduced low.

F N (*Which was the ninth month of the Hijra In consequence of this prohibition neither Jews nor Christians, nor those of any other religion are suffered to come near **Macca to this day**

(२४) याऐयुहल्लजीन आमनू क़ातिलुल्लज़ीन यलूनकुम् मिनल् कुफ़्फ़ारि वल् यजिद् फ़ीकुम् गिल्ज़्ता। सू० ६। रु० १६। आ० १२३)

मुसल्मानों! अपने आस पास के काफ़िरों से लड़ो, और चाहिये कि वह तुम में करारापन मालूम करें। और जाने रहो कि अल्लाह उन लोगों का साथी है जो उससे डरते हैं।

O true belivers, wage war against such of the infidels *as are near you,‡ and* let them find severity* in you and know that God is with those who fear Him

F N ‡ Either of your kindred or neighbours, for these claim your pity and care in the first place, and their conversion ought first to be endeavoured The persons particularly meant in this passage are supposed to have been the Jews of the tribes of Koreidha and Nadhir, and those of Khaibar, or else the Greeks of Syria

* Or fierceness in war

(२५) उलाइकल्लज़ीन कफ़रू बिआयाति रब्बिहिम् वलिक़ाइही फ़हृबित्वत् अअ्मालुहुम् फलानुक़ीमु लहुम् यौमल् क़ियामति वज़्ना। ज़ालिक जज़ाउहुम् जहन्नमु बिमा कफ़रू वत्तख़ज़ू आयाती व रुसुली हुज़्वन्। सू० १८। रु० १२। आ० १०५। १०६॥

यही वह लाग हैं जिन्होंने अपने पर्वदिगार की आयतों को और उसके हुज़ूर में हाजिर होने को न माना तो उनके अमल अकारत होगए, तो कयामत के दिन हम उनके (आमाल नेक) का (रत्ती बराबर) वजन (भी हिसाब में) क़ायम नहीं रखेंगे।

यह जहन्नम इनकी उस बद किरदारी का बदला है कि इन्होंने कुफ्र किया और हमारी आयतों और हमारे पैगम्बर की हँसी उड़ाई॥

अमल=काम, जहन्नम (नरक) बदकिरदारी (दुष्कर्म)

These are they who believe not in the *signs* (communications) of their Lord, or that they shall be assembled before him, wherefore their works are Vain, and we will not allow them any weight on the day of resurrection.

This shall be their reward, namely, hell, for *that they have disbelieved,* and have held my signs and my apostles in derision.

(२६) वजअल्नल्अग्लाल फी अअ्नाकिल्लज़ीन कफ़रू। सू० ३४। रु० ४। आ० ३३

और जो लोग (दुनिया मे) कुफ़् करते रहे हम उनकी गर्दनों मे तौक़ डाल देंगे।

And we will put shakles on the necks of those who disbelieved

आर्य कुमार जगत्

भारतवर्षीय आर्य कुमार परिषद् की सूचनाएँ

(१) भारत वर्षीय आर्य कुमार परिषद् की कार्य कारिणी समिति की १६ वीं बैठक ता० २४-१-५४ सोमवार को साय काल ६ बजे से प्रो० सुधाकर जी एम० ए० के सभा पतित्व में श्रद्धानन्द बलिदान भवन में हुई।

(अ) गत कार्य कारिणी समिति की रिपोर्ट पढ़ी गई जो सर्व सम्मति से स्वीकृत हुई।

(आ) आर्य कुमार सभा लश्कर व धामपुर को परिषद् में सम्मिलित किया गया।

(इ) स्वागत समिति द्वारा भेजी हुई, सम्मेलन की १६-२०-२१-व २२ मई की तारीखें निश्चित हुई।

(ई) आर्य कुमार सभाओं से प्रधान पद के लिये सम्मतियाँ मँगाने का निश्चय हुआ।

देवीदयाल उपमंत्री

सत्यार्थ प्रकाश दिवस

आर्य कुमार सभा डी० ए० वी० हाई स्कूल नई देहली ने सत्यार्थ प्रकाश दिवस बडे समारोह से मनाया। कुमारों के लेखों, भाषणों तथा गायनादि के अतिरिक्त श्री हेडमास्टर साहिब व श्री प० देवव्रत जी धर्मेन्दु के सत्यार्थ प्रकाश सम्बन्धी भाषण हुये। एक प्रस्ताव द्वारा सत्यार्थ प्रकाश जैसी धार्मिक पुस्तक के विरुद्ध आन्दोलन करने वालों की निन्दा की गई तथा भारत सरकार से अनुरोध किया गया कि वह इस झूठे आन्दोलन से प्रभावित न हो प्रत्युत इसे बंद कर देवे।

सत्यार्थ प्रकाश सस्ते दामों पर बेचे गये १० मुफ्त बाँटे गये। कुमारों ने सत्यार्थप्रकाश पढ़ने की प्रतिज्ञा भी ली।

मन्त्री कुन्दनसिंह

ग्राम प्रचार

आर्य कुमार सभा डी० ए० वी० हाई स्कूल नई देहली की ग्राम प्रचार मण्डली श्री पं० देवव्रत जी धर्मेन्दु की अध्यक्षता में समय २ पर देहली के ग्रामों में प्रचार के लिये जाया करती है।

विगत सप्ताह मण्डली जूड़ बाग ग्राम में प्रचार के लिये गई। हवन, यज्ञ तथा भजनों के पश्चात् श्री० चौ० कमाल सिंह जी की प्रधानता में ग्राम में बड़ी भारी सभा हुई जिसमें कुमारों के भजन भाषण व लेखों के अतिरिक्त श्री० प० वेदव्रत जी शास्त्री श्री० प० दयाराम जी शास्त्री श्री० प० देवव्रत जी धर्मेन्दु के भाषणादि तथा श्री० चौ० सॉवलदास जी के भजन भी हुए। ग्राम का निरीक्षणादि करने तथा सफ़ाई आदि के लिये क्रियात्मक साधन बताने के बाद ६ घन्टे के बाद मण्डली देहली वापस लौट आई।

रामधन आनन्द मन्त्री ग्राम प्रचार मण्डली

आर्य्य सम्मेलन दिवस

अखिल भारतीय पचम आर्य सम्मेलन की आवश्यकता महत्ता, तथा जनता के कर्त्तव्यों आदि का परिचय व पचार करने के लिए देहली प्रान्त में "सम्मेलन दिवस" १६ जनवरी १९४४ को बड़े समारोह से मनाया गया। भिन्न २ आर्य समाजों, आर्य कुमार सभाओं तथा आर्य सँस्थाओं की ओर से उस दिन ३० से ऊपर सभाएँ हुई। मम्मेलन के उद्देश्य, के स्पष्टी कारण के साथ २ स्वागत समिति के सदस्य भी बनाये गये।

देवव्रतः धर्मेन्दु
प्रचार मन्त्री

आर्य वर की आवश्यकता

ब्राह्मणकुलोत्पन्न, विवाह योग्य, सुरूप, सुन्दर, गृहकार्यदक्ष, सुशिक्षित कन्या के लिये योग्य अनुरूप सुशिक्षित, उत्तमस्थिति का योग्य वर चाहिये। दहेज आदि दूषित प्रथाओं से रहित विवाह के इच्छुक युवक हो पत्र व्यवहार करें।

जयदेव शर्मा विद्यालङ्कार, मीमांसातीर्थ
ज्ञान भवन, आदर्श नगर, अजमेर।

महिला जगत्

हाहाकार !!

(कवयित्री—श्रीमती कृष्णा कुमारी जी चौहान कालपी)

मन द्रवित क्यों हो रहा है ?
विश्व की करुणा-कलित यह, दुर्दशा लख रो रहा है। =मन०
चहुँ ओर हाहाकार है, फैला यथेच्छाचार है।
पाशविक अत्याचार हैं, न है धर्म-कर्म, न प्यार है॥
रख के परस्पर द्वेष 'मानव' बीज विष के बो रहा है। =मन०
हिंसा असत्य अनीति का अरु, छल कपट मय प्रीति का
दुराचार-कुकर्म का—अन्याय और अधर्म का—
सिक्का जमा मति हीन 'मानव' शांति अपनी खो रहा है =मन०
वासना से तृप्ति हो अरु, कर्म में अनुरक्ति हो।
शुभ सद्गुणों में भक्ति हो तो क्यों न दुख से मुक्ति हो ?
पर कार्य कर प्रतिकूल 'मानव' बोझ दुख के ढो रहा है॥ =मन०
धर्म का अवलंब ले—जो कर्म की वीणा बजाता,
स्वावलम्बन-देशभक्ति व, सत्य के शुचि राग गाता।
दयामय की दया से वह शांति-सुख पाता रहा है॥ =मन०
मन दुखित क्यों हो रहा है ?

"अवश्य पधारिये"

देहली में २० २१, २२ फरवरी १९४४ को होने वाले पंचम अखिल भारतवर्षीय आर्य्य सम्मेलन (आर्य्येन कांग्रेस) में अधिक से अधिक संख्या में स्वयं पधारें और परिचितों को साथ लावें जिससे आपको अपने समाज के संगठन के बल का परिचय मिले और विधर्मियों को आर्य्य समाज की शक्ति, त्याग और बलिदान का पता लगे। इसके साथ ही साथ हमारे सामाजिक जीवनों में नया उत्साह क्रान्ति और जागृति उत्पन्न हो।

देवव्रतः धर्मेन्दु "प्रचार मन्त्री"

सत्यार्थप्रकाश-माहात्म्य

[लेखक—कु० रणजीतसिंह सिद्धान्त शास्त्री, जयपुर]

जब सारा संसार प्रकृति की उपासना में संलग्न था, जब अशिक्षा पिशाचिनी और पाश्चात्य-शिक्षा-सर्पिणी आर्य सभ्यता की जड़ों में मट्ठा डालने और विष उण्डेलने में लगी हुई थी, जब सिंहों की सन्तानें गीदड़ उत्पन्न कर रही थीं, जब करोड़ों साधु नामधारी पाखण्डी और पण्डे पुजारी रूपी मुफ्तखोर लोग आर्य जाति की छाती पर मूँग दल रहे थे, जब स्त्रियों को पैर की जूती और ताड़ना की अधिकारिणी बता ठुकराया जा रहा था, जब जड़ की उपासना करते २ हमारी बुद्धियां भी जड़ होगई थीं और हमारे मध्य जात्यभिमान, धर्माभिमान, एवं स्वदेशाभिमान एक स्वप्न की वस्तु बन चुके थे; जब जगत् को मिथ्या मान हम उद्यम से हीन हो भाग्य के भरोसे हाथ पर हाथ धरे राम नाम जप रहे थे, जब एक दूसरे के हाथ का न खाने में ही हम धर्म की इतिश्री समझे बैठे थे, जब स्वराज्य के सम्बन्ध में मुख खोलना और मृत्यु के मुख में जाना पर्य्यायवाची हो रहा था, जब नाना मत मतान्तरों के कारण यह अखण्ड आर्य जाति खण्ड २ हो रही थी, जब अनैक्य और छूआछूत के भयंकर अजगर इसे निगलने को मुंह बाये बैठे थे, जब विरोधी गण चारों ओर से जोंक की भांति इसके रक्त शोषण में संलग्न थे और इसका अस्थिपञ्जर मात्र अवशिष्ट रह गया था, जब गौओं, अनाथों और विधवाओं के करुण क्रन्दन से भारतभूमि मानों फटी सी जा रही थी, जब हम मन्त्र जाप और शब्दध्यान को ही मुक्ति का चरम साधन समझे बैठे थे, जब वेदों को गड़रियों के गीत बतलाकर लोग उनके अशिष्ट से अशिष्ट अर्थ करने में भी नहीं चूकते थे, जब हम 'जाल ग्रन्थों' के माया जाल में फंसे हुए अंधों की भांति निरुद्देश चक्कर खा रहे थे, अभिप्राय यह कि जब हमारा इतना पतन हो चुका था कि हम अपने आपको सर्वथा भूल चुके थे, संसार के क्या धार्मिक, क्या राजनैतिक और क्या सामाजिक सब क्षेत्रों में घोर अशांति फैली हुई थी और प्राणी-मात्र अन्याय एवं अत्याचार की भट्टी में झुलसे जारहे थे, जब वैदिक सभ्यता संस्कृति अंतिम घड़ियां गिन रही थी और हम वर्तमान और भावी सब आपत्तियों में सर्वथा निश्चिन्त हो असावधानी और अचेतनता की गाढ़ निद्रा में प्रसुप्त थे।

उस समय नास्तिकता के गर्त से निकाल श्रेष्ठतम चेतनतत्त्व की उपासना सिखाने और एकेश्वरवाद का अद्वितीय प्रचार करने, स्त्री, शूद्रों को भी साधारण पठन-पाठन का ही नहीं अपितु वेदों के स्वाध्याय का भी पूर्ण अधिकारी उद्घोषित करने और मानव मात्र को वेदों की पवित्रतम कल्याणकारिणी शिक्षा की ओर पुनः लाने, ब्रह्मचर्य प्रणाली के आधार पर भारतीयों को पुनः पूर्ववत् वीर, एव सभ्य, सुशिक्षित करने, आर्य सभ्यता व सस्कृति को पुनर्जीवित करने, मृतप्राय आर्य जाति को वेद रूपी सजीविनी बूटी पिला पुन संसार मेंसर्वतोऽधिक बलवान्, बुद्धिमान् और अग्रणी बनाने, स्वकीय और परकीय मुफ्तखोरों, चोरों, डाकुओं और लुटेरों से बचाने, गौओं, अनाथों और विधवाओं का कष्ट हरने, हममें जात्यभिमान, धर्माभिमान, और स्वदेशाभिमान की अमिट भावना भरने और तदर्थ मर मिट जाने का अनुपम पाठ पढ़ाने, सब प्रकार के दु ख दारिद्रय का सर्वनाश करने के लिये सेवा, उद्यम, और उत्साह की धधकती आग लगाने और अन्याय, अत्याचार के कूड़ाककट को क्राति की भट्टी में झोंकने, धर्म का सच्चा स्वरूप समझाने, आर्यों को उनके प्राचीन गौरव की याद दिलाकर उसे अपने खोये हुए चक्रवर्ती साम्राज्य को पुनः प्राप्त करने का मार्ग दिखाने, सगठन का बिगुल बजाने, सत्य के विरोधियों के मुँह पर ताला लगाने, आर्य जाति को आत्मज्ञान दे शुद्धि आदि अमोघ औषधिसाधनों द्वारा अपने आपको परिपुष्ट करने का उपाय बताने, अनार्ष ग्रन्थों के जालपाश से छुड़ाने, ५००० वर्ष के पश्चात् वेदों का पुन सच्चा अर्थ समझाने और समस्त भूमण्डल में वैदिक नाद बजाने, अध्वर (यज्ञ) की आर्ष व्याख्या कर स्वास्थ्यसुख का प्रसार करने, तात्पर्य्य यह कि एक सर्वतोमुखी क्राति मचा इस प्रसुप्त जाति को सचेत, सावधान और सन्नद्ध बना विश्व भर का कल्याण करने के लिये इस युग के श्रेष्ठतम वैदिक विद्वान्, सफलतम सुधारक, आदर्श बालब्रह्मचारी, योगीराज, महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज ने अपने इस अपूर्व क्रातिकारी ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश की रचना की।

यह वह अनुपम धर्मग्रन्थ है जिसने सारे ससार की काया पलट कर दी है। यह बुद्धिमानों के हृदय का भूषण है, विद्वानों के गले का हार है, ग़रीबों के घर का दीपक है, अनाथों का नाथ है, दुःखियों का मार्ग प्रदर्शक है, भूले भटकों को प्रकाश स्तभ है, पीड़ितों की ढाल है, सज्जनों केलिये सुख साधन सार है और

सत्यार्थप्रकाश

[लेखक—पं० उदयवीर जी विद्यालङ्कार]

यह दीप नहीं, है दावानल।

तुम समझे, तम फैला काला,
यह जली अत दीपक ज्वाला,
जिससे पथ देख सके दुनियाँ—
भटके न कहीं आँखों वाला,
यह भूल तुम्हारी थी केवल।

था घिरा क्योंकि भीषण तम वन,
थे तीक्ष्ण शूल औ शुष्क सुमन,
चुभते थे, थी पीड़ित जगती,
इसलिए बना उसको इन्धन—
यह दावानल है जला प्रबल।

मिथ्या हो राख न जब जलकर,
तब तक यह सत्य जले भास्वर,
यह नहीं बुझाए बुझने का—
यह लेगा उतना जोर पकड़—
होगा जितना तूफ़ान सबल।

दुष्ट पाखण्डियों के लिये वज्रप्रहार है, धार्मिकों को कामधेनु है और भारतीय आशाओं का कल्पवृक्ष है, साराश यह कि ऐहलौकिक और पारलौकिक सुखों के साधनों की कुञ्जी है। सभी धर्म के स्वदेशीय और परदेशीय विद्वानों ने इसकी मुक्त कण्ठ से प्रशसा की है। इसकी सर्वप्रियता का इससे अधिक अपरिहार्य प्रमाण और क्या हो सकता है कि इस अत्यल्प रचना काल में ही अपेक्षाकृत सर्वतोधिक स्वदेशी और विदेशी भाषाओं में इसका अनुवाद हो चुका है। पौराणिक गाथास्थदेवों ने क्षीर सागर को मथ कर जो चौदह रत्न प्राप्त किये थे, वह तो एक आलकारिक वर्णन है, परन्तु वास्तवमें चतुर्दश रत्नोदधि तो यह ही ग्रन्थ है। अपितु इस ग्रन्थ सागर में करोड़ों उपदेशरत्न भरे पडे हैं जिनसे ससार कृतकृत्य होरहा है। यही कारण है कि आज ही नहीं वरन् अनन्त काल तक वह ग्रन्थरत्न विद्वानों के श्रवण, मनन, निदिध्यासन और समालोचना का विषय बना रहेगा।।

(शेष अगले अङ्क में)

आर्य-सम्मेलन का अधिवेशन किस लिए?

(लेखक—श्री ५० इन्द्र जी विद्यावाचस्पति, मन्त्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली)

फरवरी १६४४ की २०, २१ और २२ तारीखों मे, दिल्ली में अखिल भारतवर्षीय आर्य सम्मेलन का जो बृहद् अधिवेशन होने जा रहा है, वह अपने ढग का तीसरा अधिवेशन होगा। इससे पूव, दो महत्त्वपूर्ण अवसरों पर आय-सम्मेलन के ऐसे ही अधिवेशन हो चुके हैं। प्रथम अवसर वह था, जब श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज के बलिदान के पश्चात् आर्य जाति का विक्षोभ सीमा का उल्लघन कर रहा था। उस विक्षोभ को रचनात्मक रूप देने और ससार को यह बतला देने के लिये कि आय समाज आक्रमणकारी की तलवार का जवाब तलवार से नहीं, सत्य की ढाल से देगा, १६२७ में, दिल्ली मे ही सम्मेलन का पहला अधिवेशन किया गया था। उस अधिवेशन ने जहा ससार को यह विश्वास दिला दिया था कि आर्य समाज एक चेतन समाज है, जिसे छेड़ना खतरे से खाली नहीं है, वहा उसने आर्य समाज को एक विशाल रचनात्मक कार्यक्रम के मार्ग पर डाल दिया था।

दूसरा अवसर तब आया, जब हैदराबाद की रियासत में आर्य समाजियों के धार्मिक अधिकारों पर प्रतिबन्ध डालने की चेष्टा की गई। उन प्रतिबन्धों के विरुद्ध आर्य जगत् में जो असन्तोष की भावना उत्पन्न हुई, उसे प्रकाशित करने और रियासत की अनीति का क्रियात्मक उत्तर देने के लिये १६७७ में शोलापुर मे आर्य सम्मेलन का दूसरा स्मरणीय अधिवेशन हुआ, जिसमें आर्यों के धार्मिक अधिकारों की घोषणा करते हुए यह निश्चय किया गया कि यदि रियासत ने अपनी नीति मे परिवर्तन न किया तो सत्याग्रह जारी किया जायेगा। रियासत ने उस समय अपनी नीति बदलनी पसन्द न की, आर्य समाज को सत्याग्रह करना पड़ा, जिसका परिणाम यह हुआ कि अन्त में रियासत को झुकना पड़ा और धार्मिक स्वतन्त्रता की घोषणा करनी पड़ी।

अब फिर वैसा ही महत्त्वपूर्ण अवसर उपस्थित हुआ है। कुछ वर्षों से मुस्लिम लीग के वर्तमान नेता मि० मुहम्मदअली जिन्ना, पाकिस्तान के कल्पनात्मक आधार पर भारत के मुसलमानों को एक झण्डे के नीचे लाने का प्रयत्न कर रहे हैं। पाकिस्तान की सुन्दर आशा से प्रभावित होकर भोले मुसलमान लीग के चारों ओर एकत्र हो गये हैं। मि० जिन्ना अपने मनमे खूब समझते हैं कि जिस आधार

पर वह मुस्लिम एकता का महल बना रहे हैं, वह सर्वथा अवास्तविक है। अंग्रेजी सरकार, हिंदू, सिख राष्ट्रीय मुसलमानों में से कोई भी ऐसा समूह नहीं जो पाकिस्तान की कल्पना का कट्टर विरोधी न हो। सब का विरोध होते हुए मि० जिन्ना किसी तरह भी मुसलमानों को पाकिस्तान नहीं दिला सकते। स्वभावत मि० जिन्ना को यह डर है कि यदि साधारण मुसलमानों के जोश को किन्हीं अन्य उपायों से कायम न रखा गया तो थोड़े आधार पर बनाया हुआ मुस्लिम एकता का भवन रेत के महल की तरह गिर जायगा। उस जोश को कायम रखने के लिये मि० जिन्ना और मुस्लिम लीग के अन्य नेताओं ने सत्यार्थप्रकाश की जब्ती का प्रश्न खड़ा किया है। उन्होंने समझा है कि आर्य समाज एक छोटी सी सोसायटी है। उसके विरुद्ध जहाद बोलने से मुसलमानों का जोश जीवित रह सकेगा, और पाकिस्तान की असफलता को जनता भूल जायगी। वह आर्य समाज का कुर्बानी का बकरा बनाना चाहते हैं। आर्यसमाज के सामने इससे पूर्व कई कड़ी परीक्षायें आ चुकी हैं। यह शायद उन सबसे कड़ी परीक्षा होगी, क्योंकि महायुद्ध के कारण संसार के सम्पूर्ण वातावरण में उग्रता और आतंक की जो लहर चल रही है, उसका इस परीक्षा पर—यदि वह आ गई—तो असर हुए बिना न रहेगा।

इस अत्यन्त महत्त्वपूर्ण और गम्भीर अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने दिल्ली में अखिल भारतवर्षीय आर्य-सम्मेलन का अधिवेशन करने का निश्चय किया है। आर्यसमाज एक जीवित संस्था है। वह शान्तिपूर्वक अपना कार्य करना चाहती है, परन्तु संघर्ष आ जाने पर पीछे हटना भी नहीं जानती। उसका इतिहास बलिदानों से भरा पड़ा है। वह एक से अधिक बार विरोध के उमड़ते हुए जल-प्रवाह के सामने चट्टान की तरह खड़ी रह कर इस बात का सबूत दे चुकी है कि उसे कुर्बानी का बकरा नहीं बनाया जा सकता।

इसी भावना का प्रकट करना और आत्मरक्षा के कार्यक्रम का निर्माण करना आर्यसम्मेलन के आगामी अधिवेशन का मुख्य कार्य होगा। आर्य जगत् का इस अवसर पर क्या कर्तव्य है, यह बतलाने की आवश्यकता नहीं। आर्य जाति के प्रत्येक व्यक्ति का हृदय उस कर्तव्य का अनुभव कर रहा है। पूरा भरोसा रखना चाहिये कि आर्य-सम्मेलन का यह अधिवेशन हर दृष्टि से पूर्व के अधिवेशनों से भी अधिक सफल होगा, जिससे उन लोगों को जो आर्य समाज पर प्रहार करके सस्ती लोकप्रियता हासिल करना चाहते हैं, मालूम हो जायगा कि यह लोहे के चने हैं, जिनको चबाने की चेष्टा करने से दाँत भी टूट सकते हैं।

अ० भा० आर्य महासम्मेलन (आर्यन् कांग्रेस) के आवश्यक समाचार तथा निर्देश

ता० ६ फरवरी से १३ फरवरी तक आर्य महासम्मेलन सप्ताह मनाने की अपील

पंचम अखिल भारतीय आर्य महासम्मेलन की स्वागत समिति का एक प्रतिनिधि मंडल जिसमें सर्व श्री ला० नारायणदत्त जी स्वागताध्यक्ष, प्रो० सुधाकर जी M A प्रधान मन्त्री, श्री शिवचन्द्र जी कार्यालय मन्त्री, ला० ज्ञानचन्द्र जी आर्य, ला० ईश्वरदास जी, ला० रूपलाल जी तथा ला० अमृतलाल जी सेठी सम्मिलित थे श्री डा० श्यामप्रसाद मुकर्जी से श्री बाबा मिलखासिंह जी के निवास-स्थान पर जिनके वे अतिथि थे मिला। प्रतिनिधियों ने डा० मुकर्जी से आर्य महासम्मेलन के इस अधिवेशन की आवश्यकता और उपयोगिता पर विचार विनिमय किया तथा उनसे इस सम्मेलन के प्रधान पद को अलंकृत करने की प्रार्थना की जिसे उन्होंने सहर्ष स्वीकार कर लिया है।

आर्य महासम्मैलन का अधिवेशन फव्वारे के समीप गांधी-ग्राउण्ड में होगा जो रेलवे स्टेशन से भी बिलकुल समीप है। देहली म्युनिसिपल कमेटी ने आर्य महासम्मेलन के अधिवेशन के लिये सफाई, बिजली तथा जल आदि की व्यवस्था करने की स्वीकृति दे दी है। आर्य महासम्मेलन के स्थान का नाम आर्यनगर होगा जिसका Plan तय्यार हो चुका है। आर्यनगर का मुख्य द्वार श्रद्धानन्द द्वार के नाम से कहलायेगा। आर्य महासम्मेलन का प्रोग्राम तय्यार हो चुका है जो शीघ्र ही जनता के सामने आयेगा।

देश के प्रत्येक कोने से प्रतिनिधियों के नाम आरहे हैं। तीन सहस्र (३०००) से अधिक प्रतिनिधियों के आने की आशा है। कई सहस्र आर्य दर्शक के रूप में भी बाहर से आरहे हैं। बम्बई, कलकत्ता, मद्रास, कराची तथा हैदराबाद दक्षिण जैसे दूरस्थ स्थानों से भी सैकड़ों की संख्या में आर्यों के सम्मिलित होने के समाचार प्राप्त हो रहे हैं। देश की समस्त आर्य समाजें तथा प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभायें अपनी शिरोमणि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा निश्चय किये हुये आर्य

महासम्मेलन में अपना पूर्ण सहयोग दे रही हैं। प्रान्तीय सभाओं के प्रचारकों ने अपने प्रान्तों मे आर्य महासम्मेलन की धूम मचा दी है। समस्त आर्य जगत् अपने महान् आचार्य की अमर रचना (सत्यार्थ प्रकाश) की प्राण पण से रक्षा करने के लिये उद्यत है। एक बार पुन समस्त आर्य जगत् मे उत्साह का सागर उमड पड़ा है। हैदराबाद सत्याग्रह की महान् विजय के पश्चात् यह सोया हुआ सिंह आर्य समाज पुन जाग गया है और इस सिंह के परिवार के सहस्रों वीर सदस्य आर्यावर्त की प्राचीन तथा अर्वाचीन राजधानी में ता० २०, २१ तथा २२ फरवरी १९४४ को एकत्रित होंगे और समस्त आर्य जगत की शिरोमणि सार्वदेशिक सभा के तत्वावधान में होने वाले इस महान् यज्ञ में अपनी आहुति डालेंगे।

इस यज्ञ में आहुति डालने के निमित्त देहली आने से पूर्व घर घर में आर्य महासम्मेलन के समाचार पहुँचाने के लिये ता० ६ फरवरी से १३ फरवरी १९४४ तक समस्त आर्य समाजें अपने अपने नगर तथा ग्राम में आर्य सम्मेलन सप्ताह बड़े धूमधाम से मनावें जिसका प्रोग्राम इस भांति हो— प्रातः प्रभात फेरी, सायंकाल प्रत्येक मुहल्ले में सार्वजनिक सभाएं (Public Meetings) जिनमें सत्यार्थ-प्रकाश तथा आर्य कांग्रेस के विषय में भाषण हों। ता० १३ को समस्त नगर की ओर से किसी केन्द्रीय स्थान में बड़ी सार्वजनिक सभाएं की जायें। यह दिवस आर्य काँग्रेस दिवस के रूप में विशेष रूप से मनाया जावे।

जो लोग अपने अपने स्थानों से देहली के आर्य महासम्मेलन में सम्मिलित होने के लिये प्रस्थान करें वे मार्ग में 'वैदिक-धर्म की जय' 'भारत माता की जय' 'महर्षि दयानन्द की जय' तथा 'सत्यार्थ प्रकाश अमर रहे' के नारे लगाते हुये और साथ में 'ओ३म्' की पताका फहराते हुये आयें। वैदिक धर्म, आर्यसमाज तथा महर्षि दयानन्द विषयक भजन गायें। एक बार पुन मार्ग में तथा देहली में मथुरा शताब्दी और हैदराबाद सत्याग्रह के दृश्य दिखला दें।

बाहर से सभी आने वालों के लिये ठहरने की उचित व्यवस्था की जारही है, जिन्होंने अभी तक अपने आने की सूचना नहीं दी है वे कृपया अब शीघ्र दे दें ताकि स्वागत समिति को समय के अन्दर ठहरने की व्यवस्था करने में सुविधा हो। भोजन के लिये भोजन की दुकानों का समुचित प्रबन्ध किया जारहा है। देहली में

अभी सर्दी काफी है आने वाले महानुभावों को ओढने बिछाने तथा पहनने के लिये गर्म कपडे अवश्य लाने चाहिये।

प्रतिनिधियों का कोई निश्चित फाम नहीं है केवल आर्य महासम्मेलन के नियमों के अनुसार जो सभी आर्य समाजों को भेजे जा चुके हैं प्रतिनिधियों के नाम भेज देने चाहिये। जब तक स्वागत समिति के कार्यालय से आर्य समाजों द्वारा भेजे सदस्यों के नामों की अस्वीकृति न पहुचे उस समय तक उन सब को ही स्वीकृत समझ लेना चाहिये और वे सब देहली अवश्य पधारें। जिन समाजों ने अभी अपने प्रतिनिधियों के नाम नहीं भेजे हैं वे कृपया अब शीघ्र भेज दें। प्रतिनिधियों का यथासम्भव ता० १९ फरवरी मध्याह्न तक देहली पहुँचने का यत्न करना चाहिये ताकि वे उसी दिन सायकाल तक अपना टिकट आसानी से प्राप्त कर सकें क्योंकि ता० २० फरवरी को कार्य की बहुत अधिकता होगी।

आर्य सम्मेलन में खुले अधिवेशन के अतिरिक्त, आर्य प्रचारक सम्मेलन आर्य युवक तथा आर्य वीर दल सम्मेलन, आर्य शिक्षा सम्मेलन, आर्य धर्म विस्तार सम्मेलन तथा आर्य महिला सम्मेलन की भी आयोजना की जा रही है। आर्य प्रचारक सम्मेलन में केवल प्रमाणित आर्य प्रचारक आर्य प्रतिनिधि सभाओं के अधिकारी तथा आमन्त्रित आय पुरुष ही भाग ले सकेंगे। इस सम्मेलन मे आर्य समाज की प्रचार पद्धति के विषय मे गम्भीरता पूर्वक विचार किया जायेगा।

शिवचन्द्र, कार्यालय मन्त्री
पचम अखिल भारतीय आर्य सम्मेलन

समस्त आर्य वीर दलों के लिये

भारत वर्ष के प्रत्येक आर्य वीर दल को सूचित किया जाता है कि ता० २०। २। ५४ फरवरी से होने वाले अखिल भारतीय आर्य महा सम्मेलन के अवसर पर जो दल सेवा तथा रक्षा कार्य के लिये आ रहे हैं वे कृपया अपनी संख्या तथा अध्यक्ष के नाम ता० १५। २। ५४ तक आर्य वीर दल कार्यालय बलिदान भवन देहली के पते पर भेजदें ताकि उनके ठहरने तथा भोजन इत्यादि का उचित प्रबन्ध किया जा सके। आने वाले वीरों को कठोर अनुशासन के अन्दर प्रत्येक कार्य अथवा अपने अध्यक्ष के प्रत्येक आदेश को तुरन्त पालन करने के लिये तैयार होकर आना चाहिये। देहली में ठंड अधिक है इसीलिये प्रत्येक वीर को पूरा बिस्तर लेकर आना चाहिये।

ओंप्रकाश त्यागी स० प्रधान सेनापति,
अखिल भारतीय आर्य वीर दल, देहली।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली की ता० ३० । १ । ४४ की अन्तरंग सभा द्वारा स्वीकृत कुछ महत्त्वपूर्ण प्रस्ताव ।

१. सार्वदेशिक सभा की साधारण सभा का अधिवेशन २५, २६ मार्च १९४४ को होगा—

विज्ञापन का विषय सं० २—सार्वदेशिक सभा की साधारण सभा के आगामी अधिवेशन की तिथि निश्चय किये जाने का विषय उपस्थित हुआ। निश्चय हुआ कि यह अधिवेशन आगामी २५ २६ मार्च १९४३ को बुलाया जावे। उसी के साथ सार्वदेशिक सभा के नियमों के संशोधनार्थ नैमित्तिक सभा का अधिवेशन भी बुलाया जावे।

२. पौरोहित्य परीक्षा पटल बनाया जायेगा—

विज्ञापन का विषय सं० ४ श्री महात्मा नारायण स्वामी जी तथा श्री प० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय का निम्न प्रस्ताव उपस्थित हुआ।

'आर्य समाज में यथाविधि संस्कार कराने और वेद मन्त्रों को शुद्ध और सार्थक पढ़ने योग्य पुरोहितों की प्राय कमी है। इस त्रुटि को पूर्ण करने के लिये आवश्यक है कि सार्वदेशिक सभा द्वारा पौरोहित्य परीक्षा पटल बनाया जावे जो परीक्षा पाठविधि तैयार करे और वार्षिक परीक्षा लिया करे। परीक्षार्थियों की शिक्षा के लिये भिन्न २ गुरुकुलों मे शिक्षाकेन्द्र बनाये जायें और आर्य प्रतिनिधि सभाएँ इसका प्रचार करें कि उन पुरोहितों से कार्य लिया जावे।"

निश्चय हुआ कि योग्य पुरोहितों की न्यूनता को दूर करने के लिये सार्वदेशिक सभा की ओर से पौरोहित्य परीक्षा पटल बनाने के लिये निम्न सदस्यों की उपसमिति बनाई जाये जो परीक्षा की योजना तथा पाठविधि बनाकर आगामी अन्तरंग सभा में उपस्थित करे।

१ श्री महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज।
२ श्री प० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय (संयोजक)।
३. श्री प० रामदत्त जी ऐडवोकेट।
४ श्री पं० धर्मदेव जी विद्यावाचस्पति।
५. श्री पं० प्रियव्रत जी वेदवाचस्पति आचार्य गुरुकुल कांगड़ी।
६ श्री पं० नारायणदत्त जी सिद्धान्तालंकार।
७. श्री राजगुरु प० धुरेन्द्र जी शास्त्री।

३. सत्यार्थप्रकाश की रक्षार्थ २ लाख रुपये की निधि एकत्रित की जावे—

विज्ञापन का विषय स० ६ । क । श्री प० इन्द्र जी विद्यावाचस्पति, मन्त्री सभा का सत्यार्थप्रकाश विषकय निम्न प्रस्ताव उपस्थित हुआ —

"ऋषि दयानन्द कृत सत्यार्थ प्रकाश की हर प्रकार के आक्षेपों से रक्षा तथा प्रचार के लिये एक सत्यार्थप्रकाश निधि स्थापित की जावे जिसके लिये इस समय एक लाख रुपये एकत्रित किये जावें। उक्त प्रस्ताव मे एक लाख के स्थान पर २ लाख कर दिये जावें श्री ला० ज्ञानचन्द्र जी आर्य के इस सशोधन के साथ प्रस्ताव स्वीकृत हुआ।

धर्मदेव विद्यावाचस्पति
स० मन्त्री
सावदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, देहली।

हमारी साहित्यिक आवश्यकतायें

मैं निम्नलिखित आवश्यकताओं को बहुत अनुभव कर रहा हू —

(१) Vedic Conception of Govt in English

इसमे श्री स्वामी जी महाराज के लेखों तथा अन्य वैदिक साहित्य से शासन पद्धति का विधान दिया जाय।

(२) The Suggestions of the Arya Samaj about the Indian Constitution in English

जैसे श्री प० मोतीलाल जी ने एक विधान बनाया था उसी ढग पर अपने विचारानुसार एक विधान का निर्माण होना चाहिये।

इन दोनों पुस्तकों की रचना कोई ऐसे महानुभाव करें जो आर्य्य साहित्य से अभिज्ञ होने के अतिरिक्त प्राचीन और अर्वाचीन राज नीति के साहित्य की अच्छी जानकारी रखते हों।

पुस्तकें बाजारू ढग की न होकर ऐसी होवें जो व्यावहारिक राज नीति से सम्बन्ध रखती होवें।

(३) मैं श्री डाक्टर भारद्वाज के सत्यार्थप्रकाश के अगरेजी अनुवाद का सशोधन कर रहा हूं। यदि कोई महानुभाव उसके विशेष स्थलों की ओर ध्यान आकर्षित करना आवश्यक समझें तो मुझे लिखने की कृपा करें अन्यथा सभव है कि कोई चीज मेरी दृष्टि से रह जाय।

—गङ्गाप्रसाद उपाध्याय

Rishi Dayananda Saraswati and 31st Indian Science Congress

(By R B Ram Chandra M A)

Ancient Indian Aryans were fortunate to have many a scientist Knower), technically called seer' (Rishi) Their knowledge was chiefly derived from the Vedas (knowledge of all kinds generally expressed in figurative Sanskrit)

The 31st *Indian Science Congress* held its session in Delhi, the ancient Indraprastha (abode of Indra, where the Greatest Scientist—Knower of all Knowledge—is fully established), on 3rd, 4th, 5th, 6th January 1944, practically the whole of the 1st week of the new year

The Congress was opened by H L the Viceroy on 3 1-44, when illuminating speeches were delivered by His Excellency, President of the Reception Committee General President and Professor Hill Secretary Royal Society of London who admitted, on behalf of that Great Society of London, some Indian scientists of great distinction as its fellows

The scientists dealt with various subjects covering several branches of science and all kinds of entities, *(i) inorganic, (ii) organic, (iii) thinking and speaking organic,* under 12 sections, viz

(1) Mathematics and statistics
(2) Physics
(3) Chemistry
(4) Geology and geography.
(5) Botany
(6) Zoology and Entomology
(7) Anthropology and archæology
(8) Medical and Veterinary sciences
(9) Agricultural science
(10) Physiology
(11) Psychology and Educational science
(12) Engineering and metallurgy

It will be noticed at a glance that Sections No (1) to (4) deal with entities which are *inorganic*, No (5) with *organic* and the remaining sections (6) to (12) with those that think and speak too, at times

The *seer* of modern times, Swami Dayanand Saraswati has included all the entities of the universe in one single term samarthya (सामर्थ्य), as will be clear from his own words in

connection with the creation or manifestation of this world in his 'Rig-Vedadi Bhashya Bhumika' —

तस्मात् स्वयमज सन् सर्वं जनयति । स्व सामर्थ्यादि कारणात कार्यं जगदुत्पादयति । नास्यादि कारण किञ्चिदस्ति । किञ्चसर्वस्यादि निमित्तकारण पुरुष एवास्तीति वेद्यम् ॥

"Therefore, Himself being unborn, (He) creates *all.* (He) creates Karya Jagat (effected or manifested world) with His Samarthya (Capacity, Power), the first cause There is no first cause whatever of That (the Creator or Power). Besides, the first (Ultimate) efficient cause of all is the *Purusha* (Person) alone This must be Known '

It is evident that the Greatest Scientist (Omni-scient Omni-potent, Omni-present) uses as it were, only a fraction of His great power in manifesting all, at fixed intervals as well as constantly, the major power remaining non manifest Sat (सत्) non-conscious entities, Sachchit (सचित्) conscious entities, all members of the animate kingdom and Sachchidananda (सच्चिदानन्द) are the special terms used by the Rishi for the so-called nature, individual soul and the Lord of all

Scientists may just pause to consider if "Scientists' Congress" would not be a better, truer and more significant designation than "Science Congress' Sciences in themselves are regarded of little or no use *without* the scientists The great knower of reality (scientist of India) Kapila thinks that the whole of Nature is for the use of the Greatest Scientist as well as for other scientists who know little or nothing when compared with the Greatest

It is generally admitted that the greatest scientist on earth thinks I know very little while the whole ocean of knowledge lies before me unknown and unfathomed' This shows the अल्पज्ञता of the individul soul in cantrast to the सर्वज्ञता of the Lord and Controller of all, as repeatedly pointed out by Rishi Dayanand and all ancient *seers* of India

Some extracts from the sectional presidential addresses may interest the readers —

1 Mathematical section "This is where the matter rests at present But the mathematical treatment is becoming extremely complicated The development of theoretical physics has been of absorbing interest though the mere mathematician is apt to find himself sometimes befogged in the rather *uncertain* atmosphere of new *physical intuitions* which frequently lack definiteness, at least at the initial stages"

(*To be Continued, Time-space Continuum permitting.*)

साहित्य समीक्षा

(समालोचनार्थ पुस्तकादि की २ प्रतियाँ भेजनी चाहियें)

(१) विचार धारा—सम्पादक-श्री प्रो० गोपाल जी, बी० ए०

प्रकाशक—प्राच्य साहित्य सेवा मण्डल १५ हनुमान् रोड नई देहली पृष्ठ संख्या, १२२ मूल्य ।।।)

इस पुस्तक में डा० इन्द्रसेन जी M A Ph D के 'दमन और निरोध' दार्शनिक विचार, बच्चा और घर, क्या आप मेरी कठिनाई दूर करेंगे ? मैं झगडे क्यों मोल लेता हूँ ? हमारे समाज का निचला मध्यम वर्ग" विषयक श्री स्वामी अभयदेव जी सन्यासी के 'श्री अरविन्द की योग पद्धति' विषयक श्री प्रो० नित्यानन्द जी वेदालङ्कार के 'श्रेय और प्रेय' विषयक तथा श्री प्रो० गोपाल जी के 'प्रेम' जीवन ख्याति' और बुद्ध वचन' विषयक उत्तम और जीवनोपयोगी लेखों का संग्रह है। पुस्तक प्रत्येक मनोविज्ञान, योग और दार्शनिक विचारों के प्रेमी के लिये संग्रहणीय है

(२) आत्म-कथा—लेखक श्री महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज

प्रकाशक—आर्य साहित्य मदन देहली शाहदरा पृष्ठ संख्या ल० ३८० मू० २।)

आर्य जगत् के सुप्रसिद्ध अनुभवी अत्यन्त रोचक शैली से वृद्ध नेता श्री महात्मा नारायण स्वामीजी द्वारा ५१ अध्यायों मे लिखी हुई यह आत्म कथा न केवल उनके जीवन को मुख्य २ घटनाओं पर प्रकाश डालती है अपितु आर्य समाज के इतिहास पर भी जिसके निर्माण मे पूज्य स्वामीजी के पवित्र जीवन के लगभग ५० वर्ष व्यतीत हो चुके है, हैदराबाद आर्य सत्याग्रह विषयक अनेक घटनाओं पर भी इसमे प्रामाणिक प्रकाश डाला गया है। प्रत्येक आर्य नर नारी को इस आत्मकथा के अनुशीलन से लाभ उठाना चाहिये तथा यह प्रत्येक आर्य समाज के पुस्तकालय मे अवश्य होनी चाहिये।

(३) वैदिक प्रार्थना—(The Vedic Prayer) पञ्चम संस्करण लेखक—श्री भवानीदयाल जी सन्यासी प्रस्तावना लेखक—प० हरिशंकर जी शर्मा

प्रकाशक—प्रवासी भवन आदर्श नगर अजमेर पृष्ठ संख्या ल० १२६ मूल्य १)

इस पुस्तक में वैदिक सन्ध्या, हवन, स्वस्ति वाचन, शान्ति प्रकरण तथा अन्य कुछ प्रार्थना और स्तुति परक मन्त्रों का सरल सरस हिन्दी कविता और

अँग्रेजी में भाषानुवाद दिया गया है। जो अत्यन्त हृदयङ्गम है जैसे कि प्रस्तावना में सुप्रसिद्ध कविरत्न प० हरिशंकर जी शर्मा ने 'भक्ति भाव से भरी धर्म की धारा है यह भ्रान्त जनों के लिये सुबोध सहारा है यह।' इत्यादि सुन्दर पद्यों द्वारा बताया है। इस पुस्तक की लोकप्रियता का यह प्रबल प्रमाण है कि कुछ ही वर्षों में यह पञ्चम परिवर्धित संस्करण जनता के सम्मुख आया है तथा ईसाइयों की कई संस्थाओं ने भी इसे अपनाया है जैसे कि फिजी द्वीपके रेवरेन्ड दुर्गाप्रसाद मिश्र के मान्य लेखक के नाम लिखे पत्र से ज्ञात होता है। पुस्तक के अन्त में देशभक्ति विषयक लेखक की कुछ अत्युत्तम रचनाएँ भी दी गई हैं। इस प्रकार यह पुस्तक अत्यन्त उपयोगी है जिसका खूब प्रचार होना चाहिये।

स्वामी दयानन्द और क़ुरान अर्थात् सत्यार्थप्रकाश के १४ वें समुल्लास पर विशेष वक्तव्य—लेखक—प्रा० महेशप्रसाद जी मौलवी आलिम फ़ाज़िल हिन्दी यूनिवर्सिटी बनारस—प्रकाशक आलिम फ़ाज़िल बुक डिपो ११५ मुट्ठीगंज इलाहाबाद मूल्य ।) श्री प्रा० महेशप्रसाद जी ने जो अरबी फ़ारसी के प्रसिद्ध विद्वान् हैं इस छोटी सी पुस्तिका में सत्यार्थप्रकाश के १४ वें समुल्लास पर प्रकाश डालते हुए यह कैसे क्यों और कब लिखा गया इन विषयों पर उत्तम प्रकाश डाला है तथा इस भ्रम का जिसे बहुत से लोगों ने फैला रक्खा है निवारण किया है कि यह तथा १३ वाँ समुल्लास ऋषि दयानन्द की मृत्यु के पीछे किसी ने सत्यार्थप्रकाश में मिला दिये। ऋषि दयानन्द ने जिन क़ुरान के उर्दू अनुवादों के आधार पर विशेषत (मौलाना शाह रफ़ीउद्दीन साहेब कृत तथा मौ० शाह अब्दुल उर्दू अनुवाद) समालोचना की उनका भी निर्देश किया गया है। पुस्तक संग्रह करने योग्य है। **अमर सत्यार्थ प्रकाश** मूल्य ‒) Immortal Satyarth Prakash ‒) दोनों के लेखक प्रो० महेशप्रसाद जी प्रकाशक पूर्ववत् दोनों पुस्तकों में सत्यार्थप्रकाश की आवश्यकता उपयोगिता और निर्माण प्रकार आदि पर उत्तम प्रकाश डाला गया है। ये पुस्तिकाएँ विशेष प्रचार करने योग्य हैं।

सार्वदेशिक आर्य डायरी—सन् (१९४४) मिलने का पता—श्री गोविन्दराम हासानन्द आर्य साहित्य भवन नई सड़क देहली मूल्य १)

अनेक वर्षों से कोई आर्य डायरी प्रकाशित नहीं हो सकी थी इस वर्ष श्री गोविन्दराम जी ने इस कमी को पूरा करके प्रशंसनीय कार्य किया है।

सार्वदेशिक सभा द्वारा स्वीकृत आर्य समाज के त्रैवार्षिक कार्य-क्रम, आर्य समाज के नियम, मन्तव्य, आर्य पर्व सूची, आर्यों की दिनचर्या (प्रातः रात्रि उच्चारणीय मन्त्र सहित), १६ संस्कार, आर्य समाज के अमर रत्न, स्वाध्याय योग्य उत्तम आर्य साहित्य इत्यादि के द्वारा इस डायरी की उपयोगिता बहुत बढ़ गई है। १) मूल्य आजकल की मँहगाई की दृष्टि से उचित ही है। कागज, छपाई इत्यादि भी उत्तम है। प्रत्येक आर्य समाज को इसकी अधिक प्रतियां खरीद कर इस शुभ प्रयत्न को प्रोत्साहित करना चाहिये।

'Three—quarter Century of Arya Samaj" by Shri Amar Singh Advocate Lahore Pages 64 Price 0—8—0

इस पुस्तक में श्री अमरसिंह जी ने यह सिद्ध करने का निन्दनीय और निष्फल प्रयत्न किया है कि स्वामी दयानन्द जी मांसभक्षण के अन्त तक पक्षपाती थे तथा सत्यार्थप्रकाश और संस्कार विधि के प्रथम संस्करण ही प्रामाणिक हैं, इसके बाद जो संस्करण निकले उनमें मांस समर्थक भागों को मुन्शी समर्थदान आदि ने निकाल दिया। पुस्तक को आद्योपान्त ध्यान पूर्वक पढ़ने पर हम इसी परिणाम पर पहुँचे हैं कि लेखक की उपर्युक्त कल्पनाएँ मनघड़न्त हैं जिनका समर्थन पुष्ट प्रमाणों से करने में वे सर्वथा असमर्थ रहे हैं। सत्यार्थप्रकाश के अतिरिक्त "गोकरुणा निधि" नामक ग्रन्थ में ऋषि दयानन्द ने मांसभक्षण विषयक अपने विचार निम्न प्रकार के अति स्पष्ट शब्दों में प्रकट किये थे।

"मनुष्यों को अति उचित है कि मांस खाना सर्वथा छोड़ देवें।"

(दयानन्द ग्रन्थ माला शताब्दी संस्करण पृष्ठ ६२६)

'फिर मांस का खाना व्यर्थ और हानिकारक, अन्याय, अधर्म और दुष्ट कर्म क्यों नहीं?" (पृष्ठ ६०७) "देखो मांसाहारी मनुष्यों में दया आदि उत्तम गुण होते ही नहीं किन्तु वे स्वार्थवश होकर दूसरे की हानि करके अपना प्रयोजन सिद्ध करने में ही सदा रहते हैं। इसीलिये मांस का खाना किसी मनुष्य को उचित नहीं" (पृष्ठ ६०६) "इसलिये मांसाहार का सर्वथा निषेध होना चाहिये।" (पृष्ठ ६०६) इत्यादि।

ऋषि दयानन्द के मांसाहार के विरुद्ध इतने स्पष्ट विचार होते हुए म० अमरसिंह जी का उन्हें मांसभक्षण समर्थक सिद्ध करने का यत्न सर्वथा निन्दनीय है। इस पुस्तक की विस्तृत समालोचना समयानुसार फिर की जाएगी। अमरसिंह जी गो करुणा निधि को केवल विदेशियों के लिये लिखा हुआ बतलाते हैं जो एक मनघड़न्त असङ्गत कल्पना है। केवल विदेशियों के लिये आर्य भाषा में लिखने का अर्थ ही क्या हो सकता था? हमारे विचार में ऐसी पुस्तक लिखकर जनता में भ्रम फैलाना सर्वथा अनुचित और समय तथा शक्ति का दुरुपयोग है।

—धर्मदेव

सत्यार्थ प्रकाश गौरव-गान

[लेखक—श्री प० हरिशङ्कर जी शर्मा]

प्राणों से भी बढ़कर प्यारा।
है 'सत्यार्थ प्रकाश' हमारा ।। ध्रुव ।।

१ मोह महातम हरने वाला ज्ञान-उजाला करने वाला।
भव्य भावना भरने वाला दिव्य ज्योतिका स्रोत-सितारा ।।
है 'सत्यार्थ प्रकाश' हमारा।

२ वैदिक पाठ पढ़ाने वाला गत गुण-गौरव गाने वाला।
फिर से 'सतयुग' लाने वाला दयानन्द ऋषि का चखतारा ।।
है 'सत्यार्थ प्रकाश' हमारा।

३ शुभ सन्मार्ग सुझाया इसने बुद्धिवाद उमगाया इसने।
'गुरुडम'का गढ ढाया इसने जग मे निर्भय भाव प्रचारा ।।
है 'सत्यार्थ प्रकाश' हमारा।

४ सोता देश जगाया जिसने प्रेम-प्रवाह बहाया जिसने।
स्वावलम्ब सिखलाया जिसने जिसने 'सत्यधर्म्म' विस्तारा ।।
है 'सत्यार्थ प्रकाश' हमारा।

५ कोटि-कोटि जनताका जीवन अर्पित है इस पर समोद मन।
त्यागी, सुधी, साधुओं का धन मानवता का सबल सहारा ।।
है 'सत्यार्थ प्रकाश' हमारा।

६ यदि इस पर सकट आएँगे रक्षा हित हम डट जाएँगे।
मर जाएँगे, कट जाएँगे मिटा न आगे मिटने हारा ।।
है 'सत्यार्थ प्रकाश' हमारा।

७ जब हम प्रण पर अड़ जाते हैं कुछ न विरोधी कर पाते हैं।
सबके पॉव उखड़ जाते हैं मिलता है जिससे बल सारा ।।
है 'सत्यार्थ प्रकाश' हमारा।

८ वैदिक धर्म्म-ध्वजा फहराए बलि-वेदी पर सीस चढ़ाए।
मरते-मरते गाते जाएँ— अजर, अमर अक्षय ध्रुव धारा ।।
है 'सत्यार्थ प्रकाश' हमारा।

[सत्यार्थ प्रकाश आन्दोलन मे इसे लोकप्रिय गीत के रूप में विशेष रूप से अपनाया जा सकता है। —सम्पादक]

दान सूची सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा जनवरी १९४४

बंगाल पीड़ित सहायता

४०) आर्य समाज मोरसराय देहली
१०) बांके बिहारी गुप्त नौबतपुर (पटना)
६८) ब्रह्मचारी तथा कार्यकर्ता गुरुकुल आश्रम सानगढ (काठियावाढ)
१००) श्री ला० बालमुकन्द जी मेरठ
१००) श्रीमती लीलावतीदेवीजी मेरठ
१००) मन्त्री आपद्ग्रस्त आर्य समिति मेरठ
१२) आर्यसमाज हरदुआगंज, अलीगढ
५१) प० विद्याभूषण जी वैद्य एटा
५१) श्री के० रामप्रतापसिंह जी जमोदार निरुटपुर (एटा)
१०) श्री सोनपाल उलफतराय जी एटा
१) श्री गंगासिंह जी एटा
६) श्री रणजीतसिंह जी शास्त्री जयपुर सिटी
१०) श्री लक्ष्मीदास जी नई देहली
१०१) श्री जगदीशचन्द्र जी प्रधान आर्य समाज नगीना (गुड़गांव)
१५८) आर्य प्रतिनिधि सभा बम्बई
५) श्री झम्मनलालजी सरायतरीन (मुरादाबाद)
१०) ,, सेठ मूलचन्द्रजी उझियानी (बदायूं)
१०) , गिरधरलाल जी एम ए मीरपुर खास (सिंध)
१५) ,, आर्य समाज डरई (यू० पी०)
२०) ,, ,, मिठाटिवाना (पंजाब)

१६७०)

वेद प्रचार

५) आर्य बन्धु जी कन्नानोर
१०) A Kuhil annan Kizur
३११=) आर्य समाज पेशावर कैन्ट

४६।=)

दान

५ एम अच्युत पै० कार्कल
५) मन्त्री आ० स० प्रागपुर (कांगड़ा)
१५≡) दान द्वारा श्री डी सुन्दरराज जी क्लोजपेट

२५≡)

आ स स्थापना दिवस के उपलक्ष में

५) आर्य समाज गिरगांव बम्बई
७॥=) आर्य समाज इस्लामनगर बदायूं
६८) आर्य समाज नगला महाउद्दीनपुर पो० खुर्जा (बुलन्दशहर)
१०) आर्य समाज फैजाबाद
२) आर्य समाज मोहमनी
१) प० बूवादत्त जी वैद्य बलहड़वाल (अमृतसर)
१॥=) आर्य समाज देवास

३४॥)
१४५८=) पिछला योग

१४९२॥=) योग

दान स्थिर पुस्तकालय

२५) ला० श्यामलाल जी आर्य देहली

२५)

सब दाताओं को सभा की ओर से हार्दिक धन्यवाद।

—धर्मदेव विद्यावाचस्पति

सार्वदेशिक सभा को इस सूची के अलावा निम्नराशि और प्राप्त हुई है। यह किस मद में जमा होगी इसके सम्बन्ध में पूछा हुआ है।

१०३॥) आर्य समाज गु कु. रावलपिंडी



सत्यार्थप्रकाश और इन्डियन सोशल रिफ़ार्मर—कुछ निर्मूल आरोप

बम्बई के साप्ताहिक अंग्रेज़ी पत्र Indian 'Social Reformer' के सम्पादक महोदय ने १ जनवरी १६४४ के अङ्क में 'सत्यार्थप्रकाश' इस शीर्षक की एक सम्पादकीय टिप्पणी लिखी है जिसमें मुस्लिम लीग के सत्यार्थप्रकाश की ज़ब्ती विषयक प्रस्ताव का विरोध करते हुए हिन्दू महासभा के प्रधान वीर सावरकर जी की इस घोषणा पर आश्चर्य प्रकट किया है कि सत्यार्थ प्रकाश हिन्दुओं की धार्मिक पुस्तक है। सम्पादक महोदय ने 'सत्यार्थ प्रकाश' के अमर कीर्ति लेखक महर्षि दयानन्द की अन्यमत समालोचना के विषय में लिखा है कि वह यथार्थ नहीं पर प्रायः अशुद्ध और उपहास-जनक है। It may even be said that, Swami Dayandnd's presentation of other religions fs a travesty" no religion has been more crueely and ignorantly sacrificed in the Satyarth Prakash than Hinduism in all its sects Saivism, Vaishnavism, Buddhism, Jainism have all come under his lash" इत्यादि वाक्यों द्वारा मि० नट राजन् सम्पादक ने बताया है कि सत्याथ प्रकाश में अन्य किसी मत की इतनी क्रूरता और अज्ञता से हत्या नहीं की गई जितनी कि हिन्दू धर्म को इसके समस्त सम्प्रदायों के साथ शैव वैष्णव, बौद्ध जैन मत सब स्वामी दयानन्द के चाबुक का शिकार बने हैं। इसके बाद वे लिखते हैं "How Mr. Savarkar could proclaim as a sacred book of the Hindus, the Satyarth Prakash which rejects the Upanishads, the Geeta and the Brahma Sutras which form the tripod of, Hinduism, we are unable to understand" अर्थात् श्री सावरकर उपनिषद्, गीता और ब्रह्मसूत्र इस हिन्दू धर्म की प्रस्थानत्रयी को इन्कार करने वाले सत्यार्थ प्रकाश को कैसे हिन्दुओं की धार्मिक पुस्तक कह सकते हैं, यह हमारी समझ में नहीं आता। इत्यादि

न मालूम मि० नट राजन् जैसे उत्तरदायी सुशिक्षित सम्पादक ने इस प्रकार के भ्रान्तिपूर्ण असत्य आक्षेप सत्यार्थ प्रकाश जैसे महान् अमर ग्रन्थ तथा उसके अमर कीर्ति संस्कृत के अपने समय के अनुपम प्रकाण्ड पण्डित मान्य लेखक पर लगाने का कैसे साहस किया। यदि आज पौराणिक तथा ईसाइयत, इस्लाम आदि मतों के अनुयायी ऋषि दयानन्द जैसे समालोचकों की विवेकपूर्ण आलोचना से लाभ उठा कर अपने मन्तव्यों की व्याख्या बदलने लगे हैं तो इसका श्रेय सत्यार्थप्रकाश जैसे ग्रन्थ रत्नों को है। ऋषि दयानन्द ने तो सत्यार्थ प्रकाश की प्रारम्भिक तथा पिछले चार समुल्लासों की भूमिकाओं में स्पष्ट कर दिया है कि उनका एकमात्र उद्देश्य सत्य धर्म का प्रकाश करना है न कि किसी के दिल को दुखाना। उपनिषद् गीता और ब्रह्मसूत्र (वेदान्त शास्त्र) की प्रामाणिकता से स्वामी दयानन्द ने इन्कार किया, यह मि० नट राजन् का लेख भी सत्य नहीं है। यह ठीक है कि ऋषि दयानन्द ही नहीं बल्कि सभी प्राचीन ऋषियों तथा शास्त्रकारों के मन्तव्यानुसार वेद हमारे धर्म का मूल और स्वतः प्रमाण हैं। अन्य सब ग्रन्थ परतः प्रमाण हैं जैसे कि मनु महाराज ने "सत्य जिज्ञासमाना प्रमाणं परमं श्रुतिः। इत्यादि श्लोकों द्वारा बताया है पर इसका अर्थ उपनिषद् गीता, वेदान्त सूत्र आदि का सर्वथा निराकरण करना नहीं है। मि० नटराजन् ने अपने लेख में बार २ यह दिखाने का यत्न किया है कि वेद केवल कर्म काण्ड परक ग्रन्थ हैं जिन्हें स्वामी दयानन्द मानते हैं। यह विचार भी उनके वेद तथा ऋषि दयानन्द के मन्तव्य विषयक अज्ञान को ही सूचित करता है और कुछ नहीं। ऋषि दयानन्द वेदों को सारे धर्म और विज्ञान का मूल मानते हैं न कि केवल यज्ञयागादि कर्मकाण्ड परक। मि० नटराजन् अन्त में लिखते हैं कि 'The Satyarth Prakash is not and can not be a Sacred Book of Hindus because it rejects all the basic principles of Hindu Religion and Philosophy' न जाने मि० नट राजन् ने हिन्दू धर्म के क्या मौलिक तत्त्व समझ रखे हैं जिनका निराकरण सत्यार्थप्रकाश में होने के कारण वे सत्यार्थप्रकाश को हिन्दुओं का धर्म ग्रन्थ मानने के प्रबल विरोधी हैं। 'हिन्दू धर्म' शब्द स्वयं सर्वथा अनिश्चित है जिसका लक्षण करना असम्भव है किन्तु शुद्धरूप में प्राचीन आर्य धर्म का आधार वेदों पर है जिनमें प्रतिपादित धर्म का ही ऋषि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश में निर्भयता पूर्वक स्पष्ट निरूपण किया है। ईश्वर विश्वास, आत्मा की अमरता, पुनर्जन्म,

मुक्ति कर्म नियम वर्णाश्रम व्यवस्था आदि आर्य (हिन्दू) धर्म के मौलिक तत्त्वों से ऋषि दयानन्द ने कभी इन्कार नहीं किया बल्कि उनका वेदादि सत्य शास्त्रों के आधार पर बहुत ही उत्तमता से प्रतिपादन किया है अत श्री नट राजन् का लेख सर्वथा भ्रमजनक तथा अयथार्थ है।

सत्यार्थप्रकाश निधि—

गत कुछ मासों से महर्षि दयानन्द की अमर कृति सत्यार्थप्रकाश के कुछ भागों की ज़ब्ती कराने के सम्बन्ध में जो निन्दनीय आन्दोलन मुस्लिमलीग आदि की ओर से होता रहा है उससे पाठक भली भाँति परिचित हैं। २१-१०-४३ के 'अलवहीद' नामक सिन्धी पत्र में यह समाचार पीर आगा मजीद ने प्रकाशित किया था कि "१८ अक्टूबर १९४३ को मुसलमानों की एक सार्वजनिक सभा हैदराबाद (सिन्ध) में हुई जिसमे सर्वसम्मति से यह निश्चय किया गया कि आर्यों के सत्यार्थप्रकाश के १४ वें समुल्लास के विरुद्ध जिसमे पैगम्बर मुहम्मद साहेब पर आक्षेप किये गये हैं प्रबल आन्दोलन किया जाए जिसके लिये सैय्यद हाजी अली अकबर शाह के प्रधानत्व और मौलवी फ़ज़ल अहमद के मन्त्रित्व मे एक उपसमिति नियत की गई और मौखिक तथा लिखित आन्दोलन के अतिरिक्त सेठ अब्दुल लतीफ़, मुन्शी वकील, अब्दुल जलेह वकील इत्यादि की एक उपसमिति आर्यों पर मुकद्दमा चलाने इत्यादि के उद्देश्य से बनाई गई। भारत के एक सुप्रसिद्ध पत्र के द्वारा प्रबल आन्दोलन करने का दृढ़ निश्चय किया गया।"

यह उपसमिति सिन्धी सत्यार्थप्रकाश के अनुवादक तथा प्रकाशकों पर मुकद्दमा चलाने का विचार करके उसके लिये प्रयत्न कर रही हैं ऐसी सूचना सत्यार्थप्रकाश रक्षा समिति कराची से मिली है। ऐसे ही सम्भव है अन्यत्र भी यत्न किया जाए जिसके मुकाबले के लिये आर्यों को पूर्णतया तय्यार रहना चाहिये। इसके लिये पर्याप्त आर्थिक व्यवस्था का होना अत्यावश्यक है। सत्यार्थप्रकाश के विरुद्ध जो ग्रन्थ वा लेख ईसाइयों मुसल्मानों तथा अन्य मतावलम्बियों की ओर से लिखे गये वा लिखे जा रहे हैं उनके यथोचित उत्तर देने तथा सत्यार्थप्रकाश का महत्त्व और उपयोगिता जनता के सामने रखने के साथ ही विविध भाषाओं में अनुवाद प्रकाशनादि द्वारा इसका प्रचार करने के लिये सार्वदेशिक सभा की ३०-१-४४ की अन्तरङ्ग सभा ने सर्व सम्मति से यह निश्चय किया है कि "ऋषि दयानन्द कृत सत्यार्थप्रकाश की हर प्रकार के आक्षेपों से रक्षा तथा प्रचार के

लिये एक सत्यार्थप्रकाश निधि स्थापित की जाए जिसके लिये इस समय २ लाख रुपये एकत्रित किये जाएँ।"

हमें निश्चय है कि आर्य धर्म के प्रेमी समस्त नर-नारी सभा के इस महत्त्वपूर्ण निश्चय को क्रियात्मकरूप देने के लिये उदारतापूर्ण सहायता प्रदान करेंगे।

महाराज बड़ौदा का निन्दनीय कार्य—

गत मास बड़ौदा के महाराज ने अपनी पहली धर्मपत्नी और अनेक सन्तानों, के होते हुए भी पीठा पुरम् के महाराज की तृतीय पुत्री सीतादेवी के साथ विवाह कर लिया है। इस समाचार को जानकर हमें अत्यन्त आश्चर्य तथा खेद हुआ। २ वर्ष पूर्व महाराज की अनुमति से बड़ौदा राज्य की धारा सभा ने इस आशय का प्रस्ताव स्वीकृत किया था कि एक पत्नी के होते हुए दूसरा विवाह न किया जाए। महाराज ने इस कानून को स्वयं तोड़ कर एक अत्यन्त निन्दनीय कार्य किया है। महाराज पीठापुरम् ने भी इस विवाह को अत्यन्त निन्दनीय (Reprehensible) बताते हुए सूचित किया है कि सीतादेवी का उन्होंने कई वर्ष पूर्व से अपने घर में प्रवेश तक बन्द कर रक्खा था। उसका इस्लाम स्वीकार कर के पूर्व पति का परि त्याग और विवाह से ठीक पूर्व पुन हिन्दू धर्म स्वीकार करके महाराज बड़ौदा से विवाह करना इत्यादि को महाराज पीठापुरम् ने निन्दनीय कहा है। हमें यह निर्देश उचित प्रतीत होता है कि महाराज बड़ौदा जिनके इस कार्य के विरुद्ध उनकी प्रजा में तथा अन्यत्र घोर असन्तोष है या तो गद्दी का स्वय परित्याग करके प्रायश्चित्त करें अन्यथा उन्हें गद्दी से उतार दिया जाए। अन्य धनी लोगों में भी एक पत्नी के जीवित होते हुए द्वितीय तृतीय विवाह करने की इस बढ़ती हुई निन्दनीय प्रवृत्ति को रोकने के लिये प्रबल आन्दोलन तथा सामाजिक बहिष्कार तक की आवश्यकता प्रतीत होती है।

योग के नाम से एक नास्तिकता प्रसारक समाज—मुनि समाज

गोरखपुर में मुनिसमाज के नाम से एक नवीन समाज की स्थापना प० शिव कुमारजी शास्त्री नामक सज्जन ने की है जो अपने को योगिराज मुनीश्वर के नाम से कहते हैं। उन्होंने "मुनिसमाज और आर्य समाज" 'सृष्टि विज्ञान शास्त्र' 'योग और उसकी गुप्त सिद्धियों को प्राप्त करने का उपाय' इत्यादि अनेक पुस्तकों में अनीश्वर वाद का प्रचार इस प्रकार के शब्दों में किया है कि 'मजहबी ईश्वर,

काल्पनिक ईश्वर और आर्य समाजी ईश्वर तो सर्वथा झूठ और असत्य है उसका तो भाव ही नहीं है, उसका तो अस्तित्व ही नहीं है। ईश्वर कहीं नहीं है उसे तो केवल मजहबी लोगों ने कल्पना की आँखों से देखा है और अपनी कल्पना से बनाया है। ("मुनि समाज और आर्य समाज" पृ० १७)

"अतः यह सिद्ध है कि संसार का कोई पदार्थ ईश्वर ने नहीं उत्पन्न किया सब अपने आत्म भाव वा आत्म शक्ति की प्रेरणा से अपने ही कर्मों के कारण उत्पन्न होते और मरते हैं इसमें ईश्वर का कोई हाथ नहीं।" ('मुनिसमाज' पृ १६)

मुनि समाज वाले न केवल ईश्वर वाद के घोर विरोधी हैं अपितु 'सूक्ष्म अथर्ववेद' हिन्दी मुनीश्वर भाष्य में उन्होंने यहा तक सिद्ध करने का दुस्साहस किया है कि "वेद मन्त्रों में मजहबी ईश्वर की प्रार्थना नहीं है और न मजहबी ईश्वर का कहीं इनमे वर्णन है" पृ० ११)

'आर्य समाजादि सभी मजहबों की बुनियाद ईश्वर पर है। जब वेदों से मनुष्य और मनुष्य शरीर ही ब्रह्म सिद्ध होता है तो वेदों के अनुसार तमाम मजहबों की जड़ कट जाती है।" आर्य समाज और उसके अमर कीर्ति प्रवर्तक महर्षि दयानन्द पर निम्न प्रकार के निन्दनीय और असत्य आक्षेप इन तथाकथित 'योगिराज' 'मुनीश्वर' जी ने लगाने की धृष्टता की है। 'आर्य समाजादि कोई सम्प्रदाय या मजहब वेद के अनुसार नहीं। सबसे अधिक वेदों के विरुद्ध हैं आर्य समाजी, सब से अधिक वेदों के सिद्धान्तों के विरुद्ध चलने वाले और मानने वाले है आर्य समाजी। पर आश्चर्य यह है कि यही आर्य समजी अपने को वैदिक बता रहे हैं।" (सूक्ष्म अथर्ववेद मुनीश्वर भाष्य पृ ४३)

"आर्य समाजादि के साम्प्रदायिक पण्डितों ने वेदमन्त्रों से अपने २ मजहबी ईश्वरों को सिद्ध करके ससार को बड़ा भारी धोखा दिया है। स्वामी दयानन्दादि वेदों के मजहबी टीकाकारों और भाष्यकारों ने मजहबी पक्षपात के कारण इन वेद मन्त्रों का अत्यन्त अशुद्ध अर्थ करके इतना बड़ा पाप किया है जिसकी तुलना किसी पाप के साथ करनी बड़ी कठिन है।" (पृ० ६१) आर्य समाज के लोग कहा करते हैं कि हमारा मत वैदिक है यह कितना सफेद झूठ है? (पृ० ६२)

'वेदों में कहीं मजहबी ईश्वर का वर्णन नहीं है। ईश्वरवाद और मजहब दोनों भारतवर्ष में विदेशों से आये। हमारे यहाँ के ऋषि मुनि और ब्रह्मज्ञानी

कभी किसी काल में ईश्वरवादी न थे। वेदों में तो ईश्वरवाद का गन्ध तक नहीं है। ईश्वर खरहे को सींग और बन्ध्या के पुत्र के समान सर्वथा असत्य, अभाव मात्र और मिथ्या है।" (पृ० ६२)

वेद और योग के नाम से इस घोर अनीश्वर वाद के प्रचारक 'मुनि समाज' से जनता का सावधान रहना चाहिये तथा किसी प्रकार के भ्रम में नहीं पड़ना चाहिये। इनकी घोर अनीश्वर वाद समर्थक पुस्तकों का युक्तियुक्त सप्रमाण उत्तर भी आर्य विद्वानों को शीघ्र प्रकाशित करना चाहिये ताकि जनता मे भ्रम न फैले।

अ० भा० आर्य सम्मेलन पर श्री प्रधान जी का महत्त्व पूर्ण वक्तव्य—

सार्वदेशिक सभा के मान्य प्रधान श्री प० गङ्गाप्रसाद जी एम ए रिटायर्ड चीफ जज ने पाण्डीचरी से निम्न लिखित महत्त्वपूर्ण वक्तव्य भेजा है —

"सत्यार्थ प्रकाश का वा उसके कुछ भागों को जब्त कराने का प्रश्न सिंध सरकार के मुसलिम मन्त्रियों ने उठाया था और श्री गजदर होम मिनिस्टर महोदय ने अपने लाहौर के एक भाषण में कहा था कि यह मामला सारे भारतवर्ष से सम्बन्ध रखने वाला होने के कारण भारत सरकार में भेजा गया है। परन्तु जब इसमे सफलता न हुई तो यह प्रश्न मुसलिम लीग में भेज दिया गया और उक्त लीग ने २५। १२। ४३ को कराची के अधिवेशन में एक प्रस्ताव द्वारा भारत सरकार से सत्यार्थप्रकाश के कुछ भागों को जब्त किये जाने की माग की। इससे केवल आर्य समाजों ही मे नहीं किन्तु सारी हिन्दू जनता में सनसनी फैल गई। अमृतसर में जो हिन्दू महासभा का बृहदधिवेशन दिसम्बर मास में हुआ उसमें श्री चाँदकरण शारदा ने जो राजपूताने के प्रमुख नेता हैं सत्यार्थप्रकाश की रक्षा का प्रस्ताव बड़ी वीरता के शब्दों मे रक्खा जा सर्व सम्मति से पास हुआ। इस बात से तथा देश के पत्रों मे इस विषय पर जो आन्दोलन जारी है उस से स्पष्ट है, कि केवल आर्य समाज ही नहीं किन्तु समग्र हिन्दू जनता सत्यार्थप्रकाश की रक्षा को अपना महान् कर्त्तव्य समझती है। २०, २१, २२ फरवरी को देहली में जो एक विशाल अखिल भारतीय आर्य सम्मेलन होने वाला है और जिसके लिये बड़े उत्साह से तैयारियाँ की जा रही हैं, उसका एक मुख्य उद्देश्य सत्यार्थप्रकाश की रक्षा ही है, परन्तु उसमें और भी कई महत्वपूर्ण विषयों पर विचार होगा। पंजाब में मुसलिम सरकार की ओर से हिन्दी भाषा व देवनागरी अक्षरों के प्रचार को अनुचित रीति से रोका जा रहा है। श्री जिन्हा अपनी पाकिस्तानकी योजना को सब प्रकार से

सफल बनाने पर तुले हुए मालूम होते हैं। ऐसी दशा में हिन्दू जाति को अपना संगठन दृढ़ करने की परम आवश्यकता है, पत्र "हिन्दुस्तान" के २४। १। ४४के सम्पादकीय लेख में योग्य सम्पादक ने यह ठीक ही लिखा था कि आर्य समाज हिन्दू जनता की सफर मैना का काम करता रहा है। आर्य सम्मेलन में सगठन के प्रश्न पर विशेष विचार होना है। आर्य-हिन्दू जाति में क्षात्र बल की वृद्धि करने के अभिप्राय से आर्य वीर दल की स्थापना की गई थी। उसे अभी अधिक प्रबल और देश व्यापी बनाने की आवश्यकता है इत्यादि कई एक महत्त्व पूर्ण विषय आर्य सम्मेलन के विचार योग्य हैं।

स्वागत समिति ने श्रीयुत डा० श्यामाप्रसाद मुकर्जी जैसे परम योग्य सर्व मान्य और वीर नेता को सम्मेलन के सभापति पद के लिये चुना इसके लिये स्वागत समिति बधाई की पात्र है, और पूर्ण आशा है कि उक्त महानुभाव की अध्यक्षता में आर्य सम्मेलन सब प्रकार सफल होगा।

"युद्ध के पश्चात् नवयुग निर्माण का विषय भी बडे महत्त्व का है। आशा है कि यह आर्य सम्मेलन इस विषय पर भी आर्य जनता तथा ससार के सामने एक उपयोगी सन्देश रक्खेगा और आर्य समाजें तथा हिन्दू जनता उससे पूर्ण लाभ उठावेंगी।"

देहली में 'शतमुख कोटि होम' यज्ञ तथा अवैदिक प्रचार—

देहली में यमुना पार गत बसन्त पञ्चमी से हजारों पण्डितों द्वारा १०१ हवन कुण्डों में 'शतमुख कोटि होम' नामक एक यज्ञ किया जा रहा है। यज्ञ वैदिक धर्म का एक अत्यावश्यक अङ्ग है इसमें सन्देह नहीं (यद्यपि यह सत्य है कि उस के वेदों मे निर्दिष्ट विस्तृत अर्थ को प्राय भुला दिया जाता है।) अत हम वैदिक-धर्मी यज्ञ मात्र का कभी विरोध नहीं कर सकते और यज्ञों की उपयोगिता को हम स्वीकार करते हैं किन्तु इस यज्ञ के विरुद्ध आन्दोलन और असन्तोष के निम्नलिखित कारण हमें सर्वथा उचित प्रतीत होते हैं:—

(१) इस यज्ञ में सम्मिलित होने के लिये जो नर नारी दूर २ से आये हैं उनके लिये सन्तोष जनक व्यवस्था नहीं है जिससे उन्हें बहुत अधिक असुविधा हो रही है। यहा तक मुसल्मान गुण्डों द्वारा देवियों से छेड़ छाड़ के भी कई समाचार प्राप्त हुए हैं।

(२) इस यज्ञ पर इस आर्थिक कठिनाई और शुद्ध घी दूध आदि की दुर्लभता के दिनों में भी जबकि बगाल, मालाबार, उड़ीसा आदि में लाखों, करोड़ों लोग अकाल जनित कष्ट उठा रहे हैं कई लाख रु० का व्यय करना अनुचित है।

(३) इस यज्ञ में नवग्रह पूजा गणपति पूजनादि अवैदिक पद्धतियों के अनुष्ठान के अतिरिक्त इसके सचालक स्वामी हरिहरानन्द जो करपात्री आदि ऐसी अवैदिक बातों का प्रचार कर रहे हैं कि शूद्रकुलोत्पन्नों और स्त्रियों को 'ओ३म्' के जप तथा वेदाध्ययन का अधिकार नहीं है यहाँ तक कि जो स्त्री 'ओ३म्' का उच्चारण भी करती है उसकी सात पीढ़ियाँ नरक में जाती हैं। ऐसी ही अन्य अवैदिक, समाज घातकहित अन्ध विश्वासवर्धक पौराणिक बातों का प्रचार किया जा रहा है जिन विषयों में आर्य विद्वानों ने उनके साथ प्रेम पूर्वक शास्त्रार्थ के लिये धर्म सङ्घ के चैलेंज को स्वीकार कर लिया है। असत्य दम्भ और पाखण्ड का विरोध करना सर्वथा उचित ही है अन्यथा इनकी वृद्धि होकर जनता का अहित होता है।

पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा का प्रशंसनीय सेवा कार्य—

'सार्वदेशिक' के दिसम्बर १९४३ के अङ्क में बगाल अकाल पीड़ितों की सहायता के सम्बन्ध में जो सम्पादकीय टिप्पणी छपी थी उसमें भूल से पजाब आर्य प्रतिनिधि सभा का नाम रह गया था इस बात का हमें अत्यन्त खेद है। पंजाब आ प्र० सभा भी अन्य प्रान्तीय सभाओं की तरह धन, अन्न, ओषधि वितरण तथा कार्य कर्ताओं द्वारा बगाल के अकाल पीड़ितों की सेवा में तत्परता दिखाती रही है। अब भी उसके कार्य कर्ता प० सदाशिव जी आदि बगाल में सेवा तथा अकाल पीड़ित सहायता कार्य कर रहे हैं। पाठक इस भूल को सुधार लें।

—धर्मदेव विद्यावाचस्पति

एक अत्यन्त शोक जनक मृत्यु

गुरुकुल विश्व विद्यालय काङ्गड़ी के मान्य उपाचार्य श्री प्रो० लालचन्द्र जी एम ए के सुपुत्र ब्र विक्रम का जो गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ में षष्ठ श्रेणी में पढ़ता था २८ जनवरी की रात का अकस्मात् आग लग जाने से पाच दिन बाद इर्विन हस्पताल में ३ फ़र्वरी प्रात देहावसान हो गया इस समाचार को सर्वत्र बड़े दु ख के सुना जाएगा। गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ के मुख्याधिष्ठाता प धर्मवीरजी वेदालङ्कार तथा अन्य कार्य-कर्ताओं और सब सम्बन्धियों ने अत्यन्त तत्परता से दिन रात एक करके ब्रह्मचारी की सेवा शुश्रूषा और चिकित्सा का प्रबन्ध किया था किन्तु सब प्रयत्न करने पर भी दुर्भाग्यवश ब्र विक्रम का दु खप्रद देहावसान हो गया। हम इस अतिघोर कष्ट के समय श्रीयुत मान्य प्रोफेसर लाल चन्द्र जी और उनके शोक सन्तप्त परिवार से हार्दिक समवेदना प्रकट करते हुए दिवंगत पवित्रात्मा को सद्गति और उसके सब सम्बन्धियों को शान्ति तथा धैर्य प्रदान करने के लिये भगवान् से प्रार्थना करते हैं।

—सम्पादक

स्वाध्याय योग्य उत्तम साहित्य

श्री महात्मा नारायणस्वामी जी कृत

कतिपय ग्रन्थ

(१) मृत्यु और परलोक

शरीर, अन्तःकरण तथा जीव का स्वरूप और भेद, जीव और सृष्टि की उत्पत्ति का प्रकार, मृत्यु का स्वरूप तथा बाद की गति, मुक्ति और स्वर्ग नरक इत्यादि का स्वरूप, मुक्ति के साधनआदि आदि विषयों पर अद्भुत पुस्तक। मूल्य ॥=)

(२) विद्यार्थी जीवन रहस्य

विद्यार्थियों के लिए उनके मार्ग का सच्चा पथ प्रदर्शक, उनके जीवन के प्रत्येक पहलू पर शृङ्खलाबद्ध प्रकाश डालने वाले उपदेश। तृतीय संस्करण।-)

(३) उपनिषद् रहस्य

केन, कठ, प्रश्न, मुंडक माण्डूक्य, ऐतरेय, तैत्तिरीय, बृहदारण्यक उपनिषदों की बहुत सुन्दर खोजपूर्ण और वैज्ञानिक व्याख्यायें।

मूल्य क्रमशः—

।-), ≡), =)॥, =)॥, -)॥, ≡)।, ।), ।=)॥, २)

नोट—उपर्युक्त पुस्तकें प्रत्येक आर्य समाज पुस्तकालय में रहनी चाहियें।

मिलने का पताः—सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, देहली।

श्री प० रघुनाथप्रसाद पाठक—पब्लिशर के लिये लाला सेवाराम चावला द्वारा "चन्द्र प्रिंटिङ्ग प्रेस", श्रद्धानन्द बाजार, देहली में मुद्रित।

सार्वदेशिक सभा पुस्तक भण्डार की उत्तमोत्तम पुस्तकें

(१) वैदिक सिद्धान्त सजिल्द १)
(२) यमपितृ परिचय २)
(३) अथर्ववेदीय चिकित्सा शास्त्र २)
(४) वेद में असित शब्द -)
(५) ऋग् वेद में देवृकामा या देवकामा -)
(६) विदेशों में आर्य्य समाज ॥)
(७) दयानन्द सिद्धान्त भास्कर १)
(८) आर्य्य सिद्धान्त विमर्श १॥)
(९) भजन भास्कर ॥)
(१०) समस्त आर्य्य समाजों का सूची ।)
(११) सार्वदेशिक सभा का इतिहास अ० २) स० २॥)
(१२) बलिदान ॥)
(१३) आर्य डायरेक्टरी अ० १।), स० १॥)
(१४) वैदिक सन्ध्या रहस्य =)॥
(१५) सत्यार्थ निर्णय १॥)
(१६) संस्कृत सत्यार्थप्रकाश (अजिल्द) ॥)
(१७) इजहारे हकीकत (उर्दू में) ॥=)
(१८) सत्य निर्णय १)
(१९) नारायण स्वामीजी की आत्म कथा २।)
(२०) मातृत्व की ओर अ० १।) स० १॥)
(२१) कथा माला ॥)
(२२) आर्य्य जीवन और गृहस्थ धर्म ।-)
(२३) आर्य्यावर्त्त की वाणी =)॥
(२४) आर्य वीर दल शिक्षण शिविर =)
(२५) आर्य समाज का इतिहास ॥)
(२६) भक्ति कुसुमाञ्जलि
(२७) [illegible]
(२८) [illegible] परिचि[illegible]
(२९) Agnihotra— [illegible]
(३०) Crucifixion by an eyewitness ।-)
(३१) Truth and Vedas ।=)
(३२) Truth-bed-rock of Aryan Culture ॥)
(३३) Vedic Teachings १।)
(३४) Voice of Arya Varta =)
(३५) Christianity in India ॥)
(३६) The Scope and Mission of AryaSamaj-Unbound ॥)
(३७) Eclesia Divina-Bound ५)
(३८) The Glory of Vedas -)॥
(३९) Arya Samaj and Vedic Dharma ॥)
(४०) Commentary on Ishopanishad ।)
(४१) Kenopanishat English ।)



१९४४ ई०
२००१ सं०

सम्पादक— ... कांगड़ी

वार्षिक मूल्य
विदेश ७शि

विषय-सूची

सार्वदेशिक का यह पत्र मँगाने के लिये ।≈) का टिकट भेजना जरूरी है।

॥ ओ३म् ॥

सार्वदेशिक

* सार्वदेशिक-आर्य-प्रतिनिधि सभा देहली का मासिक मुख-पत्र *

वर्ष २० } अप्रेल, १९४४ ई०] चैत्र २००१ [दयानन्दाब्द १२१ { अङ्क २

* वैदिक प्रार्थना *

ओ३म् उहच्छेतारस्तवसुप्रणीतेऽग्ने विश्वानि धन्या दधानाः ।
सुरेतसा श्रवसा तुञ्जमाना अभिष्याम पृतनायूँऽदेवान् ॥ ऋ० ३।१।१६

शब्दार्थ— (सुप्रणीते अग्ने) हे उत्तम मार्ग से ले जाने वाले ज्ञान स्वरूप परमात्मन् । हम (तव उपच्छेतार॰) तेरे समीप रहने वाले-उपासक भक्त (विश्वानि धन्या दधानाः) सब शुभ गुणों को जिनसे मनुष्य धन्य बनता है धारण करते हुए (सुरेतसा) उत्तम वीर्य से और (श्रवसा) कीर्ति से-यश से (तुञ्जमानाः) दीप्त होते हुए वा चमकते हुए (पृतनायून् अदेवान्) सेना लेकर आक्रमण की इच्छा रखने वाले राक्षसों या राक्षसी भावनाओं को (अभिष्याम) दबा डालें-उन पर विजयी हो जाएं।

विनय—हे ज्ञान स्वरूप प्रभो। हम सब तुम्हारे सच्चे उपासक और भक्त बनें। हम उत्तम गुणों को अपने अन्दर सदा धारण करें। उत्तम वीर्य बल और यश से चमकते हुए हम सब बुराइयों को जीतने में समर्थ हों ऐसी शक्ति आप हमें प्रदान करें यही हमारी आप से प्रार्थना है ॥

वेदोपदेश

शिक्षा का वैदिक आदर्श

(१) ओं वाचं ते शुन्धामि प्राणं ते शुन्धामि चक्षुस्ते शुन्धामि श्रोत्रं ते शुन्धामि नाभिं ते शुन्धामि मेढ्रं ते शुन्धामि पायुं ते शुन्धामि चरित्रांस्ते शुन्धामि ॥ यजु० ६ । १४

(२) ओं मनस्त आप्यायतां वाक् त आप्यायतां प्राणस्त आप्यायतां चक्षुस्त आप्यायतां ७ श्रोत्रं त आप्यायताम् । यत्ते क्रूरं यदास्थितं तत्त आप्यायतां निष्ट्यायतां तत्ते शुद्धतु शमहोभ्यः । ओषधे त्रायस्व स्वधिते मैनं ७ हिं७सीः ॥ यजु० ६ । १५

(३) ओं ब्रह्मचर्येण तपसा राजा राष्ट्रं विरक्षति । आचार्यो ब्रह्मचर्येण ब्रह्मचारिणमिच्छते ॥ अथर्व ११ । ५ । १०

शब्दार्थः—(१) आचार्य की शिष्य के प्रति उक्ति—हे शिष्य (ते वाच शुन्धामि) मैं तेरी वाणी को शुद्ध करता हूं (ते प्राणं शुन्धामि) तेरे प्राण को शुद्ध करता हूँ (ते चक्षुः शुन्धामि) तेरी आंखों को पवित्र बनाता हूँ (ते श्रोत्रं ''ते नाभि '' ते मेढ्र ''ते पायु शुन्धामि) तेरे कान नाभि तथा उपस्थ गुदा आदि गुह्येन्द्रियों को पवित्र बनाता हूँ (ते चरित्राम् शुन्धामि) तेरे आचार व्यवहार को शुद्ध बनाता हूँ।

(२) हे शिष्य! (ते मनः आप्यातां) तेरा मन विकास को प्राप्त हो (ते वाक् आप्यायताम्) तेरी वाणी की शक्ति विकसित हो (ते चक्षुः आप्यायताम्) तेरी आंखों की शक्ति बढ़े (ते श्रोत्रम् आप्यायताम्) तेरी श्रवण शक्ति उत्तम बनी रहे (यत् ते क्रूरम्) जो तेरे अन्दर क्रूरता वा दुश्चरित्र है (तत् निष्ट्यायताम्) वह दूर हो जाए (यत् आस्थितम् तत् आप्यायताम्) जो तेरा उत्तम निश्चय हो वह विकास और दृढ़ता को प्राप्त हो इस प्रकार (ते) तेरा सब कुछ (शुन्धतु) शुद्ध पवित्र बन जाए (अहोभ्यः ते शम्) तेरे सब दिन शान्ति मङ्गल युक्त हों। (ओषधे) हे विज्ञानयुक्त सज्जन (एनं त्रायस्व) इस शिष्य की सदा रक्षा करो तथा (स्वधिते) शिष्याओं का अपनी सन्तान की तरह पालन करने वाली अध्यापिके!

इस शिष्य की (मा हिंसीः) हिंसा मत करो बुरी शिक्षा वा अनुचित ताडनादि से इसका नाश मत करो।

(३) (राजा) राजा (ब्रह्मचर्येण) आत्मसंयम और वेदाध्ययनादि तथा (तपसा) तप से (राष्ट्रं वि रक्षति) अपने राज्य की विशेषरूप से रक्षा करता है। (आचार्यः) सदाचार की ओर शिष्यों को प्रवृत्त करने वाला (आचार ग्राहयतीति आचार्यः—यास्को निरुक्ते) आचार्य (ब्रह्मचर्येण) ब्रह्मचर्य पूर्वक (ब्रह्मचारिणम् इच्छते) ब्रह्मचारी की इच्छा करता है।

इन वेदमन्त्रों में शिक्षा के आदर्श का बड़ी उत्तमता से प्रतिपादन किया गया है। शिक्षा ऐसी होनी चाहिये जो विद्यार्थी के जीवन को पूर्णतया पवित्र बनाए, जो उसे अपनी सब इन्द्रियों को उत्तम कार्यों में लगा कर पवित्र बनाने में सहायता दे। इस पूर्ण पवित्रता के साथ यह भी आवश्यक है कि शिक्षा के द्वारा विद्यार्थी की शारीरिक, वाचिक, मानसिक आत्मिक सब शक्तियों का सम विकास हो, सबकी शक्ति बढ़े। जो क्रूरता तथा अपवित्रता है वह सब दूर हो जाए। जो विद्यार्थी के उत्तम विचार तथा शुभ निश्चय हैं उनमें दृढ़ता उत्पन्न हो ताकि उनको कार्य रूप में परिणत करने में वह समर्थ हो सके। आचार्य तथा समस्त गुरुजनों का कर्तव्य है कि वह शिष्य शिष्याओं की उन्नति के लिये ही सदा सब कार्य करें तथा उनकी हिंसा न करते हुए सब प्रकार उनकी रक्षा करें। जिस प्रकार संयमी, विषय भोगों में अनासक्त राजा ही राज्य की वास्तविक रक्षा कर सकता है इसी प्रकार जो पूर्ण ब्रह्मचारी अथवा विशेष अवस्थाओं में गृहस्थ होते हुए भी संयमी आचार्यादि गुरु जन हैं वे ब्रह्मचारियों के लिये आदर्श मार्ग दर्शक बन सकते हैं। स्वयं दुराचारी अथवा असंयमी पुरुष शिष्यों को ब्रह्मचर्य तथा सदाचार की क्या शिक्षा दे सकते हैं? ब्रह्मचर्य (पूर्ण संयम और पवित्रता वेदाध्ययन तथा सब शक्तियों का सम विकास) ही वैदिक शिक्षा का आधार है। इसी वैदिक शिक्षादर्श के पुनरुद्धार के लिये महर्षि दयानन्द जी द्वारा प्रतिपादित गुरुकुल शिक्षाप्रणाली को अमर धर्मवीर श्रद्धेय स्वामी श्रद्धानन्दजी महाराज ने गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय आदि की स्थापना कर के क्रियात्मक रूप दिया था जिसकी तन मन धन से सहायता करना और उसे पूर्ण आदर्श शिक्षणालय बनाने का यत्न करना प्रत्येक वैदिक धर्म प्रेमी नर-नारी का कर्तव्य है। ब्रह्मचारी तथा शिक्षक इन उपर्युक्त तथा

ब्रह्मचर्य सूक्त में वर्णित अन्य आदर्शों पर चलने का जितना ही अधिक यत्न करेंगे उतनी ही अधिक सफलता उन्हें प्राप्त होगी। इन उत्तम शिक्षा के आदर्श प्रतिपादक मन्त्रों को पशुहिंसा परक लगाकर उव्वट महीधरादि वाममार्गी भाष्यकारों ने अपनी पशुता अथवा विवेक हीनता का ही परिचय दिया है॥ ध० दे०

अध्यात्म सुधा

सुखधाम

१ भय चिन्ता का क्या है काम ?
जब मम संचालक सुख धाम ॥ ध्रुव ॥
२ मैं निशिदिन भजता हरि नाम
वह है मेरा प्राणाराम ।
जननी सम देता आराम
मेरा घट घट वासी राम ॥
३ उसको स्मर करता सब काम
रहे सङ्ग मम आठों याम ।
सर्दी हो या होवे घाम
हो अनुकूल दशा या वाम ॥
४ हरि आनन्द शान्ति का धाम
बने उपासक आत्माराम ।
दूर करे व्याकुलता चाम
उसका जो भजता अविराम ॥

'ध्रुव'

पञ्चम अ० भा० आर्य सम्मेलन की सफलता

[लेखक—श्री पं० इन्द्र जी विद्यावाचस्पति मन्त्री सार्वदेशिक सभा देहली]

यदि मैं यह कहूँ कि पञ्चम आर्य सम्मेलन आशातीत सफलता से समाप्त हुआ, तो मुझे विश्वास है कि कडे से कडे समालोचक भी मेरे इस कथन का विरोध नहीं करेंगे। यह सम्मेलन के दर्शकों, प्रतिनिधियों और संयोजकों की सम्मतियों का निचोड़ है, केवल मेरी निजी सम्मति नहीं। इस सफलता के मुख्यत तीन कारण हैं। प्रथम कारण यह है कि जिस उद्देश्य से सम्मेलन बुलाया गया था, उसने आर्य जगत् के हृदयों को जड़ मूल से हिला दिया था। 'सत्यार्थ-प्रकाश' आर्य समाज के जीवन का प्राण है। मुस्लिम लीग ने आर्यसमाज पर बड़ा अनुग्रह किया है कि उसके प्राणों पर आक्रमण करके सम्पूर्ण आर्यजगत् को विचलित कर दिया है। आर्य सम्मेलन की सफलता का सबसे बड़ा कारण आर्य नर-नारियों का ऋषि दयानन्द और 'सत्यार्थप्रकाश' के लिये अगाध प्रेम था, जिसने रेल की कठिनाई, मौसम की सख्ती, प्रबन्ध की न्यूनता जैसी बाधाओं को पाव तले कुचलकर रख दिया। सफलता का दूसरा कारण, जिसे हम मुख्य कारण का सहायक कारण कह सकते हैं, आर्य पुरुषों का व्यवस्था से प्रेम है। आर्य समाज के विधान की यह सुन्दरता है कि वह आर्य पुरुषों को नियन्त्रण में रहना और स्वय अपना प्रबन्ध कर लेना सिखला देता है। प्रबन्ध की छोटी-मोटी त्रुटियों या प्रबन्ध की उलझनों से उत्पन्न होने वाले सामयिक विक्षोभों से उनके कार्यों पर कोई असर नहीं पड़ता। स्वावलम्बन और एकाग्रता की यह भावना आर्य समाज के विधान की पूर्णता का फल है। इस परिगणना में आर्य-सम्मेलन की सफलता का तीसरा कारण, परन्तु वस्तुतः सबसे बड़ा, और ससार की सफलताओं का मूल कारण, परमात्मा का अनुग्रह था, जो ऐसी स्पष्टता से प्रत्यक्ष रूप में आया कि नास्तिक को भी सन्देह करने का कोई अवसर नहीं मिल सकता। सम्मेलन २० फरवरी को आरम्भ होने वाला था। १८ फरवरी का प्रभात बुरी तरह मेघाच्छन्न था। दिन चढ़ते चढ़ते वर्षा आरम्भ हो गई और वह भी ऐसी वैसी नहीं। पानी तो बरसा ही—बड़े बड़े ओले भी दिल खोलकर बरसे। उत्सव मण्डप की छत में लगे हुए शामियाने भूमि को चूमने लगे। आर्य-नगर की भूमि तालाब बन गई।

दो दिन तक समय समय पर जोर का पानी बरसता रहा—परन्तु इसे ईश्वर की अपार कृपा के सिवा क्या कह सकते हैं कि २० फरवरी के प्रातःकाल आकाश साफ हो गया और तीन दिन तक बिल्कुल पानी नहीं बरसा। कभी बादलों के टुकड़े आये भी तो केवल आर्य सम्मेलन का दृश्य देखते रहे, बरसे नहीं। २२ फरवरी को आर्य सम्मेलन समाप्त हो गया। २३ की दोपहर को जो वर्षा आरम्भ हुई वह दो दिन तक जारी रही। इस प्रकार सम्मेलन के तीन दिन वर्षा का रुका रहना प्रभु की इच्छा का ही फल था।

सम्मेलन में नियमानुसार चुने हुए प्रतिनिधियों की संख्या लगभग अढ़ाई हजार थी। दर्शकों से पण्डाल खचाखच भरा रहता था। डा० मुकर्जी का जलूस अपने ढंग का अनूठा था। दिल्ली निवासियों की सर्वसम्मति है कि ऐसा शानदार जलूस इधर १५ वर्षों में नहीं निकला। इस प्रकार जहा तक बाह्य सफलता का प्रश्न है, यह असन्दिग्ध है कि आर्य सम्मेलन असाधारण रूप से सफल हुआ।

आर्य-सम्मेलन का सन्देश

क्या आर्य-सम्मेलन केवल प्रदर्शन के रूप में सफल हुआ या आर्य समाज और आर्य ससार के लिये उसका कोई सन्देश भी था? केवल प्रदर्शन का सफलता वस्तुत: कोई सफलता नहीं है। वह तो हरेक मेले को प्राप्त हो जाती है। असली सफलता इसमें है कि सम्मेलन अपने पीछे कोई सन्देश छोड़ जाय। इस दृष्टि से देखें तो भी असंदिग्ध रूप से कहा जा सकता है कि आर्य-सम्मेलन मे लगाये गये धन और परिश्रम सफल हुए। आर्य-सम्मेलन का पचम अधिवेशन जिस उद्देश्य की पूर्ति के लिये किया गया था, वह पूरा हुआ। पचम आर्य सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य मुस्लिम लीग के सत्यार्थप्रकाश जब्ती-विषयक प्रस्ताव का उत्तर देना था। आर्य-सम्मेलन ने वह उत्तर अत्यन्त स्पष्ट असंदिग्ध और जोरदार शब्दों में दे दिया, उसने मुस्लिम लीग को बतला दिया कि 'सत्यार्थप्रकाश' मिट्टी का ढेला नहीं है कि लीग के पांव की ठोकर से टूट जायगा, वह एक जबर्दस्त चट्टान है, जिससे टकरा कर ठोकर मारने वाला पांव भी चकनाचूर हो सकता है। अंग्रेजी सरकार को, जिससे लीग ने 'सत्यार्थप्रकाश' को जब्त करने की प्रार्थना की है, आर्य-सम्मेलन ने यह सूचित कर दिया है कि 'सत्यार्थप्रकाश' का आर्य मात्र के हृदय में वही आदरणीय स्थान है, जो ईसाइयों के हृदय में बाइबिल

का है। बाइबिल की जब्तीके प्रस्ताव का जो असर ईसाइयों पर होगा, 'सत्यार्थ प्रकाश' की जब्ती के प्रस्ताव का वही असर आर्य संसार पर होगा। इस प्रकार बाहिर की दुनिया को आर्य-सम्मेलन ने 'सत्यार्थप्रकाश' की जब्ती के सम्बन्ध में अपना रुख भली प्रकार बतला दिया है, परन्तु सम्मेलन का कार्य इतने में ही समाप्त नहीं हुआ। यह कार्य भी एक प्रकार से प्रदर्शन का ही अंग था। आर्य समाज का असली और ठोस कार्य वह था जो उसके आर्य समाज के प्रति संदेश के रूप में सन्निहित है। पंचम आर्य-सम्मेलन ने सम्पूर्ण आर्य जगत् को एक सन्देश दिया है, जिसे सुने और कार्य में परिणत किये बिना शेष सब बातें व्यर्थ हैं, वह केवल सारहीन प्रदर्शन मात्र रह जाती हैं। लीग और लीग जैसे विरोधियों का असली उत्तर केवल प्रदर्शन और प्रस्तावों से नहीं दिया जा सकता। उसके लिये आर्य समाज को वस्तुतः चट्टान की तरह मजबूत बनाना होगा, आर्य-सम्मेलन ने आर्य मात्र को अपने निश्चयों द्वारा जो आदेश दिये हैं, वही उसके असली सन्देश हैं। पंचम आर्य-सम्मेलन के निश्चयों में आर्य समाज के लिये एक क्रान्तिकारी सन्देश विद्यमान है, जिसे सुनना समझना और कार्य में परिणत करना आर्य मात्र का कर्तव्य है। हमने मुस्लिम लीग या वैसे ही अन्यविरोधियों की चुनौती का मुंहतोड़ उत्तर दे दिया, यह पर्याप्त नहीं है। हमें इन सब परीक्षाओं के लिये भी अपने को तैयार करना चाहिये, जो विरोधियों के कारण हमारे सामने आ सकती हैं। हमें यह प्रयत्न भी करना चाहिये कि हम लीग जैसे छुटभय्यों के आक्रमणों से ऊपर उठ जायँ, इसके लिये हमें शक्तिसम्पन्न होना पड़ेगा, और प्राप्त की हुई शक्ति का पूरा प्रदर्शन करना पडेगा। विरोधियों को मालूम होजाना चाहिये कि आर्य समाज पर हाथ उठाना आसान नहीं है। हाथ जल भी सकता है, और हाथ के साथ ही शरीर के अन्य अंग भी जल सकते हैं।

आर्य वीर दल का कार्य

आर्य सम्मेलन की सफलता में सभी का हिस्सा था। स्वागत कारिणी सभा ने स्वागत-सत्कार का प्रबन्ध किया, दिल्ली की म्युनिसिपलिटी ने स्वागतकारिणी सभा को हर प्रकार की सहायता दी, प्रतिनिधि और दर्शक महानुभाव पधारे, और स्वागत सभा को त्रुटियों की उपेक्षा करके सफलता में सहायक बने—ये सभी धन्यवाद और बधाई के पात्र हैं और अधिवेशन की समाप्ति पर सभी ने एक

दूसरे को धन्यवाद और बधाई दे लिये। इसके अतिरिक्त, और मेरी राय में इन सबसे अधिक जो धन्यवाद और बधाई के सबसे अधिक अधिकारी हैं, वे हैं आर्य वीर दल के नवयुवक आर्य वीर। उनका कार्य बहुत कठिन था। उनका कैम्प पानी से तर हो गया था। उनमें से अधिकांश अभी पूरा शिक्षण भी प्राप्त नहीं कर सके थे। ड्यूटी बहुत सख्त थी, एक ओर भीड़ का सामना, दूसरी ओर स्वागत-कारिणी के अधिकारियों के आदेश, जो कभी कभी एक दूसरे से टकरा जाते थे। आर्य वीर का कार्य विनयपूर्वक सभी की आज्ञाओं का पालन करना था। इन सब कठिनाइयों का सामना करते हुए आर्य वीरों और उनके दलपतियों ने जिस धैर्य और परिश्रम से अपने कठिन कर्तव्य का पालन किया, मैं उसकी प्रशंसा किये बिना नहीं रह सकता। मैं सार्वदेशिक सभा, स्वागत समिति, और सारे आर्य जगत् के हार्दिक भाव को प्रकाशित कर रहा हूं जब मैं अपने आर्य वीरों और उनके दल पतियों को साधुवाद देता हूँ, और उनका धन्यवाद करता हूँ।

दिल्ली आर्य्य सम्मेलन के मेरे संस्मरण

[लेखक—श्री कुंवर चांदकरणजी ऐडवोकेट मन्त्री राजस्थान आर्य्य प्रतिनिधि सभा]

ता० १६ फरवरी १६५४ को प्रातःकाल का सुहावना समय था। आकाश बादलों के दल से घिरा हुआ था। काली २ घटाओं की छटा से सम्मेलन के पंडाल की छटा दर्शनीय थी। वर्षा से घुले हुए गाधी-ग्राउण्ड के वृक्ष अपूर्व शोभा बढ़ा रहे थे। वर्षा का पानी पडाल में त्रिपालों और चादनियों से छन २ कर चटाइयों पर टपक रहा था। आर्य्य नगर में आर्य्य नर नारिया एव छोटे २ गुरुकुलों के ब्रह्मचारी हिरनों की भाति चौकड़िया भरते फिरते थे। जिन्हें देखकर बचपन की याद आजाती थी। कई कन्या गुरुकुलों की ब्रह्मचारिणिया केसरिया रग की साड़िया पहने हुये सम्मेलन को बसन्त मय बना रही थीं। उधर सन्यासी वृन्द भगवे रग के वस्त्र पहिने हुये थे जो कि प्राचीन ऋषि आश्रमों की स्मृति दिला रहे थे। सम्मेलन के उत्साही कार्यकर्त्ता बड़ी तत्परता से सम्मेलन को सफल बनाने में लगे हुये थे। पडाल के निर्माता बाबा मिलखासिंह जी पडाल में भरे हुये पानी को निकाल बाहर करते हुये भीष्म पितामह की उपमा को प्राप्त हो रहे थे। आर्य्य सम्मेलन में आये हुये आर्य्य वीर नवयुवकों को देखकर चित्त अत्यन्त प्रसन्न हुआ। वास्तव में हमें ऐसे नवयुवक चाहियें जो हृष्ट पुष्ट फुर्तीले चमकते दमकते चेहरे वाले एव छाती तानकर चलने वाले और हसमुख हों, तभी आर्य्यसमाज की छाप लोगों पर पड़ सकती है।

मैंने कई सम्मेलन देखे हैं परन्तु अनुशासन किंवा नियन्त्रण जो यहां के आर्य्य नेताओं, जनता एव स्वय-सेवकों में देखा वैसा विरले ही स्थानों पर देखा होगा। जब वक्ताओं को यह आज्ञा हुई कि सभापति के समर्थन में केवल एक ही वाक्य हो कि "मैं इस प्रस्ताव का समर्थन करता हूँ" तो सभी प्रान्तों के आर्य्य नेताओं ने सच्चे सिपाही की भाति अनुशासन में रहकर इस आज्ञा का पालन किया और धुआधार व्याख्यान देकर जनता का समय नष्ट नहीं किया।

विषय निर्धारिणी सभा एवं सम्मेलन की समस्त कार्यवाही राष्ट्रभाषा हिन्दी में ही होरही थी। मुझे और कई सम्मेलन देखने का अवसर प्राप्त हुआ है, प्राय

सब में अंग्रेजी में अधिकांश कार्यवाही करनी पड़ती है परन्तु यहा पर राष्ट्रभाषा हिन्दी को ही प्रमुख स्थान दिया गया। बगाली, मद्रासी, महाराष्ट्री, सिन्धी, पजाबी, राजस्थानी सभी राष्ट्र भाषा हिन्दी का प्रयोग करते पाये गये। जहा सिन्ध के प्रो० ताराचन्दजी गाजरा हिन्दी बोलते थे वहा मद्रास के गोपदेवजी भी हिन्दी में ही बोलते थे। सम्मेलन के सभापति श्री डा० श्यामाप्रसादजी मुकर्जी बगाली होते हुये भी राष्ट्रभाषा हिन्दी में ही सब कार्यवाही सचालित करते थे। यद्यपि वे शुद्ध हिन्दी न बोल सकते थे, परन्तु उनके मुखारविन्द से निकले हुये हिन्दी के वाक्य बडे ही मधुर एव कोमल प्रतीत होते थे। सम्मेलन वास्तव में महासम्मेलन था। सत्यार्थ प्रकाश किवा आर्य्य हिन्दुत्व सस्कृति की रक्षा के लिये घोषणा होगई कि ३० करोड़ आर्य हिन्दुओं की सस्कृति एव साहित्य को ससार की कोई शक्ति भी नहीं कुचल सकती है। वे अपने प्यारे मार्ग दर्शक महर्षि दयानन्द की अमर-कृति के लिये बडे-से बड़ा बलिदान कर सकते है। प्रस्ताव पर बोलते हुए वक्ताओं के जोशीले भाषणों से पता चल गया कि आर्यों के हृदयों में वैदिकधर्म के लिये कितना प्रेम है। बाबा मिलखा सिहजी के ये वाक्य कि 'मैं पहिला व्यक्ति हूँगा जो कि सत्यार्थप्रकाश के लिये बलिदान हूँगा" आर्यों के बलिदानी इतिहास की गंभीर चेतावनी थी। प्रसिद्ध सनातनी पडित गोस्वामी गणेशदत्तजी के ओजस्वी भाषण ने हिन्दू मात्र को आर्यसमाज की ओर आकर्षित कर दिया और सम्मेलन के सभापतिजी के अन्तिम भाषण के शब्द वेद के "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" के सिद्धान्त, कि 'भारत में एक भी व्यक्ति ऐसा न रहे जो आर्य न हो' आर्य समाज के उज्वल भविष्य की ओर इगित कर रहे हैं। आपने यह भी कहा कि सत्यार्थ-प्रकाश की रक्षा के लिये समस्त हिन्दू जनता आर्य समाज के साथ है।

सम्मेलन की कार्यवाही आनन्द निर्विघ्न संपन्न होगई। सत्यार्थप्रकाश सम्बन्धी प्रस्ताव जिस समय उपस्थित किया जारहा था घनघोर घटा घिर आई थी किन्तु प्रस्ताव पर जब धाराबाही भाषण आरंभ हुये तो घटायें विलुप्त होगई और तारापति गगन में अवतीर्ण होगये। आकाश निरभ्र होगया, और तारकावलि से आच्छादित निशा रानी मानों आर्यों के दृढ़ संगठन को देखकर खिलखिला उठी हो।

आर्य वर्षाजन्य कठिनाइयों से अधीर नहीं हुये अपितु सबके मुखों पर मृदु मुस्कान की रेखायें चित्रित थीं। आर्य एक तरफ विरोधियों के अनुचित आन्दोलन

को दमन करने विषयक प्रस्ताव पास करने में लगे हुए थे और दूसरी ओर वे प्रकृति से भी लोहा ले रहे थे। मैं अमृत नेत्रों से यह सब दृश्य देख रहा था कि आर्य समाज की फुलवाड़ी कैसी सुन्दर है। जिसे देखकर उसके वृद्धमाली बाबा मिलखासिंहजी व वयोवृद्ध आर्य नेता लाला नारायणदत्तजी ठेकेदार की प्रसन्नता का ठिकाना नहीं था। आर्य सार्वदेशिक सभा के मंत्री श्री प्रो० इन्द्रजी विद्यावाचस्पति ने मानों आर्यों की परीक्षा करने के लिये इन्द्रदेव को बुला लिया था, जिसमें आर्य उत्तीर्ण हुये। पहिले दिन इन्द्रदेव दल बल सहित आये और आर्यों के भीषण प्रतिरोध को देखकर कूच कर गये और सम्मेलन की समाप्ति पर २३ फरवरी को पुनः राष्ट्र माता कस्तूरबा गांधी के असामयिक निधन पर आंसू बहाने आये।

सत्यार्थप्रकाश किंवा वैदिकधर्म के ज्वलन्त प्रेम का दृश्य उस समय देखा गया जब कि सत्यार्थप्रकाश रक्षानिधि के लिये अपील की गई। उसी समय दर्शकों से ही नकद और प्रतिज्ञा मिलाकर २ लाख के लगभग बड़ी राशि एकत्रित होगई। आर्यों ने ३ वर्ष का प्रोग्राम बना कर यह सिद्ध कर दिया कि वे कोरी बातें बनाने वाले ही नहीं हैं और न कोरे प्रस्ताव पास करने वाले ही हैं, अपितु प्रस्तावों को कार्य रूप में परिणत करने के लिये बड़ा भारी कार्यक्रम अपनाने वाले हैं। इसके अनुसार आर्यों ने एक लाख तो आर्य वीर तैयार करने हैं और हजारों नवीन आर्यसमाजें स्थापित करनी हैं आदि २ अनेक दृढ़ व्रत लिये।

धर्म-युद्ध का आह्वान

[लेखक—डा० सूर्यदेव शर्मा साहित्यालङ्कार, सिद्धान्तशास्त्री, काव्यमनीषी,
एम ए. एल, टी० डी. लिट्, अजमेर]

[१]

उठो वीर वर! धर्म-युद्ध का, आज हमें आह्वान मिला।
धर्म-ध्येय पर मर मिटने का, सर्व श्रेष्ठ सन्मान मिला॥
धन्य हमारा जीवन जग में, धन्य हमारा भाग हुआ।
वेद धर्म की बलिवेदी पर, मरने का अनुराग हुआ॥

[२]

धर्म क्षेत्र में अरिगण हमको, आज खड़े ललकार रहे।
चलो वीरवर! निर्भय होकर, तर्कतीर तलवार गहे॥
बड़े भाग्य से नर जीवन में, ऐसा अवसर आता है।
जब स्वमान पर मर कर मानव, पुण्य परमपद पाता है॥

[३]

उत्सुक नेत्रों से पूर्वज गण, हमें स्वर्ग से देख रहे।
आर्य्य जाति के प्रतिनिधियों का, क्या कैसा उल्लेख रहे॥
अहो सपूतो! सावधान हो, यह संग्राम समुत्कट है।
आज आपके सम्मुख सारा, सकल सृष्टि का संकट है॥

[४]

किन्तु हमें आशा है जग में, वीर काम जो करते हैं।
बढ़ें निरन्तर निर्भय होकर, कभी न भय से डरते हैं॥
विजयी हों, असफल होवें वा, वहीं प्राण दे मरते हैं॥
सारे संकट सहें किन्तु वे, पीछे पैर न धरते हैं॥

[५]

"सूर्य" उदय पश्चिम में होवे, हिमकर ज्वलदङ्गार बने।
अनल बने अगलीतल शीतल, गरल सुधारस धार बने॥

अचल हिमाचल चले भले ही, सीमा सिन्धु अगाध तजे।
आर्य्य वीर बलिदान प्रतिज्ञा, की न किन्तु मर्याद तजे॥

[६]

तन मन जीवन धन साधन सब, वेद धर्म पर वारेंगे।
प्राणों की अन्तिम आहुति से, भी हम उसे उबारेंगे॥
अंग अंग कट जाय हमारा, रोम रोम का छेदन हो।
यदि "सत्यार्थप्रकाश" साथ हो, मोद रहे तो, खेद न हो॥

[७]

धर्म हेतु सर्वस्व समर्पण, कर हम स्वर्ग सिधायेंगे।
पुण्य प्रतापी आर्य्य जाति का, मुख उज्वल कर जायेंगे॥
उससे पहले पर अरि को, लोहे के चने चबायेंगे।
वेद धर्म की विश्वविजयिनी, धवल-ध्वजा फहरायेंगे॥

[८]

हो "सत्यार्थप्रकाश" प्रकाशित, मतवादी तमतोम मिटे।
सत्य "सूर्य" ही जग में सोहे, नवक विश्व से व्योम मिटे॥
शुभ "सत्यार्थप्रकाश" अमर हो, जग में ऋषि का नाम रहे।
आर्य्य जाति का जयनिनाद हो, विजयी यह सग्राम रहे॥ —"सूर्य"

ध्वज-गीत

जागा देश हमारा,

'ओ३म्' नाम की पुण्य पताका,
विजय-चिन्ह भारत वसुधा का,
देश जाति का अनुपम गौरव
अग्रदूत शुभ स्वतन्त्रता का
फहराता प्राची के नभ में
ज्ञान भानु उजियारा।

ब्रह्मपुत्र, यमुना, सुरसरिता,
पंचनदी ले सिन्धु उमड़ता,
लंका बर्मा शृङ्ग हिमालय
सीमा प्रान्त एक हो बढ़ता,
सागर की लहरों का गरजन
जीते हृदय दुलारा।

हिन्दू मुस्लिम सिक्ख इसाई,
आर्य्य जाति के सब अनुयायी,
ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र सब
आज मिले हैं भाई भाई,
माँ बहिनें मस्तक पर करतीं
विजय तिलक है प्यारा

कर में ले यह विजय निशानी
दयानन्द आगे सेनानी
युवक सैनिकों की जयध्वनि है
वाणी 'वेदों' की कल्याणी
पिता ज्ञान गुरु के चरणों पर
विश्व झुकेगा सार।
जागा देश हमारा

—सूर्य कुमार वेदालङ्कार

वैदिक धर्म तथा सिक्ख पन्थ

[लेखक—श्री देवजी विद्याभूषण वैदिक आश्रम ब्राह्म महा विद्यालय लाहौर]

प्राक्कथन

विदित हो कि वैदिक धर्म ही सिख (शिष्य) पंथ है। सब का आदि गुरु सच्चिदानन्द जगदीश्वर है। उस परमात्मा ने सृष्टि के आदि में अपना पूर्णज्ञान जीवों को दिया था। जिसके कारण वह 'गुरु' है, क्योंकि ज्ञान देने वाला ही गुरु कहाता है। वह ज्ञान वेद नाम से जगत्प्रसिद्ध है जो कि विषय प्रमाणतः संहिता रूप चार भागों में विभाजित है। आदि गुरु के इस अद्भुत ज्ञान के मानने वाले शिष्य ही वैदिक धर्मी कहे जाते थे, हैं तथा जायेंगे। संसार में परिवर्त्तन तो क्षण प्रति क्षण दृष्टि-गोचर ही हो रहा है. उस उत्थान पतन के प्राकृतिक नियमानुसार कभी नास्तिकों का प्राबल्य हो जाता है तो कभी आस्तिकों (गुरु मुखों) का। जिस समय गुरु नानक देवजी का प्रादुर्भाव हुआ, उस समय संसार में नास्तिकता का प्राबल्य तथा आस्तिकों (गुरु मुखों) अर्थात् वेद विहित मर्यादा का अभाव था, यथा.—

पालन हेत सनातन नेतै, वैदिक धर्म रखन के हेतै।
आप प्रभु गुरु नानक रूप, प्रगट भयो जग में सुख भूप॥
(पंथ प्रकाश सं० ५ पृ० ३५।

भावार्थ—प्रभु गुण युक्त, सुखों के भूप, गुरु नानक जी सनातन नियमों को पालने तथा वैदिक धर्म की मर्यादा की रक्षा करने के लिये जग में प्रकट हुये।

मेरे लिखने का भाव यह है कि आज उस वैदिक धर्म को छोड़ कर सिख किसी और मार्ग का अवलम्बन कर रहे हैं, क्योंकि एक वैदिक धर्मी का लक्षण षोडश संस्कार, वर्णाश्रम व्यवस्था पालन करना, यज्ञोपवीत, हवन यज्ञ करना, गुरु-वाणी (वेद) पढ़ना, एक ओ३म् की उपासना करना इत्यादिक कर्म हैं; जिसका कि आदेश सिक्ख पंथ की सभी पुस्तकें भली भाँति प्रकट कर रही हैं, इन्हीं कृत्यों के विषय में कुछ शब्द सिक्ख पथ की ओर लक्ष्य करके लिखे जावेंगे, ताकि परस्पर के मतभेद मिट कर ऐक्य स्थापित हो। आशा है कि पाठक गण निष्पक्ष भाव से पढ़ कर लेखक की त्रुटियों को सूचित करते हुये गुणग्राही बनेंगे।

१. आर्य

प्राचीन काल से आर्य शब्द वैदिक धर्मियों के लिये प्रयुक्त होता चला आ रहा है, इसी से भारतवर्ष का प्राचीन नाम आर्यावर्त्त (आर्यों के रहने का स्थान) है। इतिहास साक्षी है। आर्य शब्द सभी राजा महाराजों में सृष्टि की आदि से प्रयुक्त हुआ स्पष्ट पाया जाता है। वेद में तो स्पष्ट लिखा है 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" अर्थात् संसार को आर्य बना दो। श्री राम जी, श्री कृष्ण जी इत्यादि सभी आर्य थे, गुरु गोबिन्द सिंह जी महाराज भी आर्य पुरुष थे उन्होंने देखा कि वैदिकधर्मी आर्य भिन्न २ अशों में विभाजित हो गये हैं तो उनके हृदय में प्रबल इच्छा हुई कि सबको इकट्ठा करके एक झण्डे के नीचे लाया जावे, आय, आय नहीं रहे हैं। प्राचीन श्रेष्ठाचरणों को छोड़कर कल्पित मार्ग पर चलने के कारण मिलावट आ गई है, खालिस नहीं रहे, अनार्य बन गये हैं। हमारा जो प्राचीन ओ३म् का झंडा विनष्ट कर दिया जा चुका है, पुनरुत्थान करके धर्म पताका फहरानी चाहिए। इत्यादि कारणों को देखकर गुरु गोविन्द सिंहजी ने नवीन कल्पित मतों के स्थान पर **प्राचीन आर्य शब्द को ग्रहण** करके ठीक फ़ारसी भाषा में पथ का नाम **खालसा रक्खा,** क्योंकि आप फ़ारसी भाषा बहुत पढ़े लिखे थे तथा फारसी से प्रेम भी अति था और उस समय देश में इसका प्रचार भी अधिक बढ़ रहा था। किन्तु आज तो नहीं, आज तो पुन हमको अतीत गौरव पर ध्यान देना होगा, तथा हमको आर्य कहना ही श्रेयस्कर होगा क्योंकि देश प्रगति सस्कृत भाषा की ओर जा रही है तथा **खालसा और आर्य इन दोनों शब्दों में कोई आर्थिक अन्तर भी नहीं है।** तथा देश की सामयिक व्यवस्था का भी आह्वान आर्य-पद की ओर है जो कि एक सगठन का द्वार है तथा भारतीयों के आत्मपद का गौरव है। गुरु नानक जी से लेकर गुरु गोविन्दसिंह जी के पश्चात् कुछ काल तक खालसा अपने को आर्य ही समझते रहे क्योंकि 'खालसा' आर्य शब्द का उल्था ही है, देखिये :—

तृतीये जो नर-नारी आरज, होइ रहे निज धर्मो खारज ॥ (पंथ प्रकाश)

भावार्थ—यह वाक्य, गुरु गोविन्दसिंह जी का उस समय का है जिस समय एक बृहद्यज्ञ करने की योजना होरही थी, उस समय आपने अपनी सम्मति दी थी

कि हा वृहद्‌यज्ञ होना चाहिये क्योंकि इस समय देश में आर्य नर-नारी अपने कर्त्तव्य धर्मों से भ्रष्ट हो रहे हैं, इत्यादि।

आर्य धर्म रक्षक प्रगट्यो है तुम अब डरो न राई।
धर्म कल्प तरु सबज रखें हम अपना रक्त सिंचाई॥

(गुरु तेग बहादुर जी के बचन—पंथ प्रकाश)

भावार्थ—आर्य भाइयो। अब तुम मत डरो, क्योंकि आर्य धर्म की रक्षा करने वाला प्रकट हो गया है। हम अपना रक्त सिंचाकर अपने धर्म रूपी कल्प तरु को हरा भरा रखेंगे।

हुइ जाते जग पूजा बढ़े वैदिक रीत।
हुइ जाते देश भारत फिर धर्म पुनीत॥

(सुमेर सिंह कृत गुरु विलास)

भावार्थ—गुरु गोबिन्द सिंह जी परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि हे प्रभो। यज्ञ पूजा होने लगे जो कि वैदिक रीति है और फिर वही पवित्र आर्य धर्म देश में हो जावे। इत्यादि

२. वेद

१. ओङ्कार वेद निर्मये: रामकली म० १ आदि गुरु ग्रंथ।
अर्थात् परमात्मा ने वेदों का निर्माण किया।

२. चार वेद ब्रह्मा को दिये म० १ आदि ग्रंथ पृष्ठ ४२३
अर्थात् परमात्मा ने चारों वेद ब्रह्मा को दिये।

३. चौथा उपाये चारे वेदा म० १ पृष्ठ ८३९ आदि ग्रंथ
अर्थात् परमात्मा ने चार वेद उत्पन्न किये।

इस प्रकार के अनेकों वाक्य पंथ प्रकाश इत्यादि सभी सिख प्रमाणित ग्रंथों से उद्धृत किये जा सके हैं जिन से पता चलता है कि सृष्टि के आदि में परमात्मा ने स्वय वेद रूपी सूर्य, अज्ञान को हरने के लिये ससार में प्रकाशित किया।

[शेष अगले अङ्क में]

आर्य्यसमाज के नियमोपनियमों पर विचार

[ले०—श्री पं० गङ्गाप्रसादजी उपाध्याय एम ए प्रधान संयुक्त प्रान्तीय आर्य्य प्रतिनिधि सभा]

[जनवरी अङ्क से आगे]

मेरा विचार है कि यद्यपि प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा ने सम्प्रति इन उपनियमों को स्वीकृत नहीं किया है और वह १८७७ ई० के उपनियमों पर ही चल रही है। परन्तु उसके समक्ष भी ऐसी समस्यायें आ सकती हैं और एक बार १९३४ ई० में आचुकी हैं जब ऋषि दयनन्द के ग्रन्थों को सिद्धान्तों का आधार मानना दोनों दलों के मुख्य व्यक्तियों को स्वीकार करना पड़ा था। मेरा आशय उस सभा से है जो चावड़ी बाजार आर्य समाज दिल्ली में १७ मार्च १९३४ को हुई थी और जिसमें सार्वदेशिक और प्रादेशिक सभा के मुख्य मुख्य व्यक्ति सम्मिलित थे और उन्होंने प्रायः सर्व सम्मति से यह निश्चित किया कि नियमों का स्पष्टीकरण करने के लिये ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों को आधार मानना अनिवार्य है। वह निश्चय इस प्रकार है :—

"आर्य्यसमाज में प्रविष्ट होने और रहने के लिये दस नियमों के साथ उन सिद्धान्तों का भी जो वेदों के आधार पर ऋषि दयानन्द ने अपने ग्रन्थों में लिखे हैं मानना और उन पर आचरण करना आवश्यक है।"

इन उपनियमों में एक बड़ा परिवर्तन और है। १८७७ ई० के उपनियमों में 'सदाचार' शब्द का स्पष्टीकरण न था। (देखो ४ क)। परन्तु अब इसके लिये एक 'ख' उपधारा बनादी गई। वह यह है :—

उपधारा (क) में प्रयुक्त सदाचार की परिभाषा इस प्रकार है :—

संध्या आदि नित्यकर्म, शुद्धवृत्ति, वैदिक संस्कार, पतिव्रत तथा पत्नीव्रत आदि सदाचार हैं। व्यभिचार, मद्यादि मादक द्रव्यों और मांसादि अभक्ष्य पदार्थों का सेवन, जुआ, चोरी, छल-कपट, रिश्वत आदि दुराचार हैं।

सम्भव है कि जिन शब्दों का यहा प्रयोग किया गया है वे तर्क शास्त्र की तुला पर माशा रत्ती पूरे न उतर सकें और उनमें अतिव्याप्ति, अव्याप्ति आदि दोष हों जैसा कि 'आदि' शब्द से प्रतीत होता है। परन्तु थोड़ीसी भी बुद्धि का प्रयोग करने से व्यवहार में कोई बाधा नहीं पड़ सकती। जितनी बातें सदाचार में

गिनाई गई हैं उनको सभी आर्य्य जो ऋषि दयानन्द के अनुयायी हैं सदाचार मानते हैं और जिन बातों को दुराचार बताया गया है उनको दुराचार, और बातों में तो यह भेद भी नहीं है। केवल मांस भक्षण के विषय में कुछ लोगों को घोर आपत्ति है अर्थात् मास-भक्षण को दुराचार क्यों कह दिया गया। इसका मुख्य कारण तो यह प्रतीत होता है कि किसी समय मांस के प्रश्न को आगे करके दो दल बन गये थे। उनका परिशिष्ट अभी चला आरहा है। कुछ लोगों का कहना है कि विशेष व्यक्तियों को समाज के विधान स अलग रखने के लिये यह परिभाषा बनाई गई। और चूंकि कुछ न कुछ दल बन्दी रहा ही करती है इसलिये कोई दल अपने विशेष व्यक्तियों को सिद्धान्त के आधार पर छोड़ना नहीं चाहता। तथापि ससार की प्रवृत्ति को देखते हुये यह आवश्यक है कि सदाचार के कुछ लक्षण किये जायँ। दुर्भाग्य से पशुवध और मास-भक्षण को बहुतसी जातियों और धर्मों में बुरा नहीं समझा जाता। परन्तु क्या आर्य्यसमाज को अन्य समुदायों का अनुकरण करना चाहिए। जहा अन्य क्रूरतायें वैयक्तिक हैं मास-भक्षण और पशुवध सास्थिक (Institutional) हैं। सास्थिक दोष वैयक्तिक दोषों से अधिक अनिष्ट होते हैं और जब तक सास्थिक उपाय न हों वे दूर नहीं हो सकते। अतः वैयक्तिक कारणों के लिये सास्थिक नियमों का विरोध नहीं करना चाहिये। कभी कभी वैयक्तिक द्वेष को निकालने के लिये कुछ लोग नियमों का आश्रय लेकर दूसरे व्यक्तियों के प्रति अन्याय का व्यवहार कर बैठते हैं और इससे मन मुटाव उत्पन्न होकर सस्थाओं का संगठन ढीला पड़ जाता है। यह बात सर्वथा अनुचित और हानि प्रद है। परन्तु यदि उदारता से नियमों का पालन किया जाय तो व्यक्तियों में द्वेष न बढ़े और समाज का हित हो। आर्य्यसमाज सम्बन्धी प्रत्येक दल के नेताओं को दलों के क्षणिक हित को छोड़कर समस्त समाज के हित पर दृष्टि डालनी चाहिये। व्यक्तियों की अपेक्षा सस्थायें अधिक स्थायी हैं। एक व्यक्ति आज है कल नहीं रहेगा। परन्तु आर्य्यसमाज तो एक स्थायी सस्था है अतः क्षणिक हित के लिये स्थायी हित को त्यागना बहुत बड़ी भूल है। मेरी समझ में तो परिवर्त्तित उपनियमों में कोई ऐसा बड़ा दोष नहीं है जिसके कारण हमारे सगठन में बाधा पड़े। इनमें कुछ ऐसी छोटी छोटी बातें भी हैं जिनके विषय में मतभेद हो सकता है। जैसे क्या प्रत्येक सभासद् को मत (वोट) का अधिकार पाने के लिये साप्ताहिक सत्संगों में २५ प्रतिशतक उपस्थिति अनिवार्य है। परन्तु ये छोटी छोटी बातें हैं।

गौण बातों पर तो सदा मतभेद रहेगा। सैद्धान्तिक नियमों की एक व्यावहारिक सीमा होती है। यदि इस पर विचार कर लिया जाय तो बहुत से अनिष्ट निवारण हो सकते हैं या नियमों में सुगमता से परिवर्तन हो सकता है।

आर्य्यसमाज के संगठन की स्वाभाविक रीति वही है जो समाजों, प्रान्तीय प्रतिनिधियों तथा सार्वदेशिक सभा द्वारा बरती जारही है। अभी तो आर्य्य समाज का बाल्यकाल है। आगे चलकर इसको बड़ी बड़ी शक्तियों का सामना करना पड़ेगा। उस समय इसको सगठन की बड़ी आवश्यकता पड़ेगी। जो बड़े और संपन्न समाज अपने आपको पूर्ण समझकर इस सगठन को निर्बल करने में अपना गौरव समझते हैं उनको समझना चाहिये कि वे उस चमकीली सोने की ईंट के समान हैं जो दीवार से अलग रह कर दीवार को निर्बल बना रही हैं और अपने मूल्य को कम कर रही हैं। इसी प्रकार कुछ ऐसे समाज हैं जो दलबन्दी का लाभ उठाकर सगठन के आधीन रहना नहीं चाहते। वे समझते हैं कि यदि एक सभा से अलग होंगे तो दूसरी सभा में मिल जायेंगे या कोई तीसरी सभा बना लेंगे। ऐसी मनोवृत्ति अन्त में सदा ही नाशकारी सिद्ध होती है। अतः चाहे कितना ही मतभेद क्यों हो ऐसी मनोवृत्ति को कभी उत्साहित न करना चाहिये। जो व्यक्ति या समुदाय एक सगठन को तोड़कर दूसरे सगठन में मिलना चाहता है वह समय पड़ने पर दूसरे संगठन की भी निर्बलता का कारण सिद्ध होगा। इसलिये सगठनों के नेताओं को ऐसे व्यक्तियों या समुदायों से सावधान रहना चाहिये।

पिछले ६८ वर्षों में की ऊहापोह में आर्य्यसमाज के नियम-उपनियम विकसित होकर इस अवस्था तक पहुँचे हैं। इस समय मनोवृत्ति यह है कि दस नियमों में कोई परिवर्तन न होना चाहिये जिससे समाज के सिद्धान्त निश्चित रहें। उपनियमों में परिवर्तन करने का अधिकार केवल सार्वदेशिक सभा को है। जिससे आर्य्य जगत् की सामूहिक शक्ति यह विचार कर सके कि परिवर्तन आवश्यक है या नहीं। किसी व्यक्ति या एक समाज को परिवर्तन का अधिकार नहीं होना चाहिये, इससे सगठन की दृढ़ता रह सकेगी। अभी तो आर्य्य समाजों का अधिकार अधिकतर भारतवर्ष में ही है। इस देश के बाहर बहुत कम समाज हैं और उनकी शक्ति भी कम है। जब अन्य देशों में भी बहुत से समाज हो जायेंगे उस समय फिर उपनियमों के परिवर्तन का प्रश्न उठेगा। यदि आर्य्य समाज आरम्भ से ही सगठित रह सका तो उसका मार्ग सुगम होगा। अन्यथा कठिनाई होगी। आर्य्य समाज के सभी दलों को इस खतरे की घंटी का नोट लेना चाहिए।

सामाजिक जगत्

गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ का सफल वार्षिकोत्सव

प० कुंजरु, डा० खरे और प्रो० इन्द्रजी तथा प० रामचन्द्रजी देहलवी आदि के भाषण

चौदह हजार रुपयों का दान एकत्र हुआ

गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ का २८ वा वार्षिकोत्सव २४, २५, २६ मार्च को गुरुकुल के विभूषित पण्डाल में समारोह से मनाया गया। उत्सव में आर्य समाज के प्रसिद्ध नेताओं और विद्वानों के अतिरिक्त माननीय प० हृदयनाथ जी कुंजरु और वाइसराय कौंसिल के मेम्बर डा० खरे के प्रभावशाली व्याख्यान हुए। आर्य नेताओं में प्रो० इन्द्रजी, प० रामचन्द्र जी देहलवी, कुवर चादकरण जी शारदा, राजगुरु प० धुरेन्द्रजी शास्त्री, पं० धर्मदेवजी विद्यावाचस्पति, प० भीमसेन जी, प्रो० रामसिंह जी, प्रो० गोपाल जी, प० कृष्णचन्द्र जी विद्यालङ्कार तथा पं० बृहद्बलजी वैदिक मिशनरी आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। उत्सव में ग्रामप्रचार सम्मेलन, श्री स्वामी ब्रह्मानन्द जी, के सभापतित्व में हुआ। सत्यार्थ सम्मेलन प्रो० रामसिंह जी की अध्यक्षता में हुआ। विक्रम द्विसहस्राब्दि सम्मेलन का सभापतित्व करते हुए माननीय प० कुंजरु जी ने महाराजा विक्रमादित्य के राज्य काल की प्रशंसा करते हुए अपने विद्वत्तापूर्ण भाषण में बताया कि गुप्त काल हिन्दुस्तान का एक स्वर्णीय काल था। उस काल की प्रचलित पद्धतियों और रिवाजों का यदि आजतक हम अनुसरण करते, तो हिन्दुस्तान आज स्वतन्त्र होता। हमें चाहिये कि हम गुप्त काल के राजाओं की कामयाबी की कुंजी को हासिल करें, जिसमें हमारा देश आजाद होकर दुनियां के सब कामों में शरीक हो सके।

माननीय डा० खरे और प्रो० इन्द्रजी मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल काङ्गड़ी ने ब्रह्मचारियों को "दीक्षा स्मरण समारोह" की गम्भीर और महत्त्वपूर्ण कार्यवाही में उनके आदर्श बताते हुए हृदयग्राही उपदेश दिये। श्री पं० रामचन्द्र जी देहलवी ने आशीर्वाद दिया।

श्रीमान् बाबा विचित्रसिंह जी के सभापतित्व में गुरुकुल के ब्रह्मचारियों और उनके व्यायाम शिक्षक प्रो० एस आर. कैप्टेन की अद्भुत शारीरिक खेलों और शक्ति के अद्भुत प्रयोगों का शानदार प्रदर्शन हुआ और इसके साथ ही अखिल भारतीय धनुर्धर टूर्नमेंट हुआ, जिसमें प्रो० एस आर. कैप्टेन को प्रथम

पुरस्कार स्वरूप चैम्पियन शिप का कप मिला और श्री चौ० मत्थूसिंह जी की ओर से स्वर्णपदक मिला। द्वितीय पुरस्कार प्रो० रुद्रदेव जी शास्त्री को दिया गया। बाबा विचित्रसिंह जी ने ५००) का दान खेलों से प्रभावित होकर दिया और दर्शकों ने भी प्रसन्न होकर लगभग २००) की धन राशि पुरस्कार स्वरूप दी। हाकी वालीवाल के मैच हुए और ला० लक्ष्मी चन्द जी ठेकेदार की प्रधानता में प्रसिद्ध पहलवानों का दंगल हुआ। श्री सभापति जी ने इस अवसर पर १००) का दान दिया।

श्री पं० राजगुरु धुरेन्द्र जी की अपील के बाद गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता श्री प० धर्मवीर जी वेदालङ्कार ने चौदह हजार रुपयों का दान एकत्रित होने की सूचना देते हुए दानी महानुभावों का हार्दिक धन्यवाद किया। उत्सव सब तरह से सफल रहा। —कृष्णराव, वेदालङ्कार, प्रकाशन मन्त्री

महर्षि का महान् व्यक्तित्व

[लेखक—श्री हरिश्चन्द्र जी आर्य पीलीभीत]

(१)

महर्षि! तव व्यक्तित्व महान्।
सकल जग करता तव गुण-गान॥
देश हित तजा समस्त ऐश्वर्य।
सहे आजीवन कष्ट महान्॥महर्षि०॥

(२)

अपूरव अनुपम था तव त्याग,
तजा सम्बन्धियों से अनुराग।
बना कर जीवन को आदर्श,
सिखाया कर्म्म काण्ड का ज्ञान॥महर्षि०॥

(३)

किया धारण अखण्ड ब्रह्मचर्य्य,
देखकर दर्शक-गण आश्चर्य—
चकित रहते कहते सब साधु,
प्रभावित हो करते सम्मान॥महर्षि०॥

(४)

विरत सत्पथ से करने के यत्न,
विरोधियों के रहे केवल स्वप्न।
दिये प्रत्युत्तर सभी अकाट्य,
हुये वाचाल मूक-म्रियमाण॥महर्षि०॥

(५)

हुई ललना इकऋषि अनुरक्त,
हुये ऋषि चरणों मे अवनत्त।
नवाया मातृशक्ति को माथ,
कहा, "माता! मैं पुत्र समान"॥महर्षि०॥

(६)

दिया ब्राह्मण ने विष-साम्बूल,
हुआ बन्दी शासन अनुकूल।
कहा ऋषि ने—"मैं कराने मुक्त,
हूँ आया ईश का सकल जहान"॥महर्षि०॥

(७)

पढ़ाया निर्भयता का पाठ—,
निवारीं मिथ्या भ्रमों की गाँठ।
मिटा हृदयों से तुरत अन्धकार,
खुली जब पोल पुराण-कुरान॥महर्षि०॥

(८)

बजाया तुमुल वेदों का नाद,
किया प्रत्येक से वेद सवाद।
तेरी शैली तर्कों की अलभ्य,
तेरी ही शक्ति किया उत्थान॥महर्षि०॥

(९)

कहा, "हो देशी राज्य में दुःख,
विदेशी में अपार हो सुख।
सदैव अपनाये स्वदेशी राज्य,
विदेशी दुःखों की खान निदान"॥महर्षि०॥

(१०)

तेरा अद्भुत ऋषिवर था विवेक,
विजय किये शास्त्रार्थ अनेक।
बिठा जिज्ञासु को प्रेम से पार्श्व,
किया शङ्काओं का समाधान॥महर्षि०॥

(११)

तेरा अन्तस्तल ऋषे! उदार,
दया घातक पर भी की अपार।
बतायी प्राण-विधी तत्काल,
कर गया भारत-प्राण प्रयाण॥महर्षि०॥

आर्य कुमार जगत्

भारतवर्षीय आर्य कुमार परिषद् की सूचनाएं

भारतवर्षीय आर्य कुमार परिषद् की कार्य कारिणी समिति ने निम्न कार्य-क्रम ता० ११ मई सन् १९४४ से १४ मई सन् १९४४ तक, आर्य कुमार सभाओं के लिये स्वीकृत किया है।

११ मई—सत्यार्थप्रकाश दिवस १२ मई—दहेज विरोधी दिवस
१३ मई—स्वास्थ्य जीवन दिवस १४ मई—आर्य कुमार सम्मेलन दिवस।

प्रथम दिवस— सत्यार्थप्रकाश सम्बन्धी व्याख्यान हों तथा पंचम आर्य महासम्मेलन दिल्ली के अवसर पर आयोजित आर्य कुमार सम्मेलन का सत्यार्थ-प्रकाश सम्बन्धी प्रस्ताव पास हो, इसी दिन सत्यार्थप्रकाश के प्रतिदिन पाठ के लिये अधिक से अधिक वचन लिये जायें और उसकी सूचना भी परिषद् कार्यालय को भेज दी जाय।

द्वितीय दिवस—दहेज विरोधी व्याख्यान हों तथा पंचम आर्य महासम्मेलन दिल्ली के अवसर पर आयोजित आर्य कुमार सम्मेलन का दहेज विरोधी प्रस्ताव पास हो :—

प्रतिज्ञा पत्र भरवाये जाय कि हम अपनी शादी के अवसर पर इस प्रतिज्ञा पर दृढ़ रहेंगे।

तृतीय दिवस—मादक द्रव्य के बहिष्कार तथा व्यायामादि पर बल देना चाहिये और कुमारों का ध्यान उनके चरित्र गठन की ओर आकर्षित करना चाहिये जिससे वे ब्रह्मचर्य की रक्षा कर सकें।

चतुर्थ दिवस—आर्य कुमार सम्मेलन दिवस मनाया जाय इस दिन आर्य कुमार सभाओं के तथा परिषद् के अधिक से अधिक सदस्य बनाये जाय। आर्य कुमार परिषद् की परीक्षाओं की ओर बल देना चाहिये और मुरादाबाद में होने वाले २८ वें अखिल भारतवर्षीय आर्य कुमार सम्मेलन को सफल बनाने के लिये प्रचार हो। तथा पंचम आर्य महासम्मेलन के अवसर पर आयोजित आर्य कुमार सम्मेलन के अन्य प्रस्ताव पास हों।

प्रत्येक दिन प्रातः नगर में प्रभात फेरिया हों। समाज मन्दिरों में यज्ञ तथा सम्मिलित संकीर्तन हों।

देवीदयाल उपमन्त्री
भारतवर्षीय आर्य कुमार परिषद् दिल्ली।

बिहार प्रान्तीय आर्य कुमार सम्मेलन खगड़िया

स्थानीय आर्य कुमार सभा के वार्षिकोत्सव पर ता० १८। ३। ४४ को बिहार प्रान्तीय आर्य कुमार सम्मेलन, मनोनीत सभापति की आकस्मिक अस्वस्थता के कारण अनुपस्थिति में श्री राजगुरु धुरेन्द्र जी शास्त्री न्याय भूषण के सभापतित्व में सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ। सर्व प्रथम राष्ट्रमाता कस्तूर बा गांधी के निधन पर सभापति द्वारा शोक प्रस्ताव पास करने के उपरान्त, अन्त र्जातीय विवाह, वर्तमान समाजिक कुरीतियाँ एव आर्य कुमारों की रचना सम्बन्धी तीन जोरदार प्रस्ताव पास किए गये। इस सम्मेलन के द्वारा प्रान्तीय सभाओं में एक नवीन संगठन का सूत्रपात हुआ।

सरयूप्रसाद उपसभापति
बिहार प्रान्तीय आर्य कुमार सभा

आर्य समाज इटारसी का वार्षिकोत्सव

आय समाज इटारसी का छठा वार्षिकोत्सव बड़ी ही धूम धाम से ता० १५। ४ से १८। ४। ४४ तक मनाया जावेगा। आर्य विद्वानों से प्रार्थना है कि वह यदि उपरोक्त तिथियों में इधर से गुजरें तो एक दिन के लिए अवश्य ही रुक जावें और उत्सव में सम्मिलित होकर अपने सद् उपदेशों द्वारा इस सी० पी० प्रान्त की आर्य सिद्धान्तों में पिछड़ी हुई जनता को लाभ पहुंचावें।

सी० वी० शर्मा मन्त्री
आर्य समाज इटारसी

मुलतान छावनी में मुलतान कमिश्नरी के आर्य कुमारों का सम्मेलन

आर्य कुमार सभा मुलतान छावनी ने २१ से २३ अप्रेल तक मुलतान कमिश्नरी के कुमारों का सम्मेलन रक्खा है-प्रधान पद के लिये श्री स्वामी वेदानन्द जी महाराज ने स्वीकृति दे दी है—मुलतान कमिश्नरी के आर्य कुमारों की सेवा में निवेदन है—कि हमारे निमन्त्रण को स्वीकार करते हुए अधिक से अधिक सख्या में आने की सूचना देकर कृतार्थ करें—भोजन व स्थान का प्रबन्ध अति उत्तम होगा।

भवदीय
सत्यपाल मन्त्री
आर्य कुमार सभा मुलतान छावनी

सार्वदेशिक सभा की आवश्यक सूचनाएं

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का वार्षिक निर्वाचन

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली का वार्षिक निर्वाचन ता० २५।३। ४४ को श्रद्धानन्द बलिदान भवन, देहली में हुआ जिसमें संयुक्त प्रान्त, पंजाब, राज स्थान, बिहार, बंगाल, सी० पी०, बम्बई आदि भारत के प्राय सभी प्रान्तों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इस वर्ष के लिये निम्नांकित पदाधिकारी तथा अन्तरग सदस्य निर्वाचित हुये:—

प्रधान—श्री पं० गंगा प्रसाद जी एम० ए० रिटायर्ड चीफ़ जज (सर्व सम्मति से)
उपप्रधान—श्री राजगुरु प० धुरेन्द्र जी शास्त्री
श्री राजा नारायण लाल जी पित्ती
श्री प० बुद्ध देव जी विद्यालंकार।
श्री माननीय घनश्याम सिंह जी
मन्त्री—श्री पं० इन्द्र जी विद्यावाचस्पति (सर्व सम्मति से)
कोषाध्यक्ष—श्री ला० नारायण दत्त जी " "
पुस्तकाध्यक्ष—श्री ला० ज्ञान चन्द्र जी आर्य " "
अन्तरग सदस्य-श्री कुंवर चान्दकरण जी शारदा राज स्थान से
" श्री प० वासुदेव जी शर्मा बिहार से
" श्री प्रो० तारा चन्द्र जी एम० ए० सिन्ध से
" श्री पं० विजय शकर जी बम्बई से
" श्री मिहिर चन्द्र जी धीमान् बगाल से
" श्री बा० श्री राम जी प्रवासियों के प्रतिनिधि
" श्री बा० ज्योति स्वरूप जी दानियों के प्रतिनिधि
" श्रीयुत चौ० देश राज जी समाजों के प्रतिनिधि
" श्री महात्मा नारायण स्वामी जी प्रतिष्ठित
श्री पं० गंगा प्रसाद जी उपाध्याय संयुक्त प्रान्त से
श्री प्रो० महेन्द्र प्रताप जी शास्त्री " " "
श्री प० ज्ञान चन्द्र जी आर्य सेवक पंजाब से
श्री म० कृष्ण जी बी० ए० "

धर्म देव विद्यावाचस्पति
स० मन्त्री
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, देहली।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की धर्मार्य सभा का वार्षिक निर्वाचन

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली की धर्मार्य सभा का वार्षिक निर्वाचन २६। ३। ४४ को श्रद्धानन्द बलिदान भवन, देहली में हुआ जिसमें भारत के प्राय सभी प्रान्तों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया और आगामी तीन वर्षों के लिये निम्नांकित निर्वाचन हुआ—

प्रधान—श्री महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज

मन्त्री—श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी

स० मन्त्री—श्री प० धर्मदेव जी विद्यावाचस्पति

अन्तरग सदस्य—श्री प० द्विजेन्द्र नाथ जी शास्त्री,

श्री पं० बुद्ध देव जी विद्यालंकार
श्री पं० राम दत्त जी ऐडवोकेट
श्री स्वामी वेदानन्द जी
श्री प० गगा प्रसाद जी रिटायर्ड चीफ जज
श्री पं० गगा प्रसाद जी उपाध्याय
श्री स्वामी ब्रह्मानन्द जी
श्रीमती विद्यावती जी विशारदा।

धर्म देव विद्यावाचस्पति
स० मन्त्री
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभान्तर्गत धर्मार्य सभा, देहली।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली का महत्वपूर्ण प्रस्ताव

ता० २५ । ३ । ४४ की अन्तरंग सभा द्वारा स्वीकृत

विक्रमोत्सव विषयक श्री प्रधान जी सार्वदेशिक सभा का आदेश

"आगामी १३ अप्रैल ४४ को विक्रम सम्वत् २००० समाप्त होकर सम्वत् २००१ आरम्भ होगा। सावदेशिक सभा ने अपने निश्चय स० २३ ता० ५ । ७ । ४२ द्वारा विक्रम द्विसहस्राब्दि उत्सव मनाने का निश्चय किया था। इसलिये सब आर्य समाजों को आदेश दिया जाता है कि १३ अप्रैल १९४४ बृहस्पतिवार को जो सौर पंचांग के अनुसार नव वर्ष का दिवस और विश्ववत् सक्रान्ति का पर्व भी है विशेषरूप से यथा सम्भव निम्न प्रकार मनाया जावे :—

प्रात:काल प्रभात फेरी होके आर्य समाज मन्दिरों में ईश्वर प्रार्थना और हवन किया जाये। दिन में जहाँ सम्भव हो आर्य वीर दल वा आर्य कुमारों के खेल कूद व्यायाम आदि का प्रदर्शन हो और सायंकाल आर्य मन्दिर में श्री वीर विक्रमादित्य की जीवनी और उनके समय की साहित्यिक और सांस्कृतिक उन्नति पर व्याख्यान होने चाहिये।"

इस विषय में सार्वदेशिक सभा की २५-३-४४ की अन्तरङ्ग में निम्न प्रस्ताव स्वीकृत हुआ।

"विक्रम महोत्सव मनाये जाने का विषय उपस्थित होकर निश्चय हुआ कि यह समस्त आर्य जगत् में १३-४-४४ को मनाया जाए और इसकी सूचना सब आर्यसमाजों को तुरन्त दी जाय।

यह भी निश्चय हुआ कि विक्रमादित्य की एक प्रामाणिक जीवनी तथा विक्रम सम्वत् के प्रारम्भ के विषय में आर्यसमाज की ओर से इस वर्ष के अन्त तक तैयार कराई जाए जिसमें डा० परमात्मा शरण जी M. A. Ph. D. (हिन्दू विश्वविद्यालय बनारस) आदि से विशेष सहायता ली जाए।"

इन्द्र विद्यावाचस्पति,
मन्त्री, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, देहली।

सत्यार्थप्रकाश दिवस

सार्वदेशिक सभा की अन्तरङ्ग सभा ने अपनी २५-३-४४ की अन्तरङ्ग सभा ने विचार विनिमय के पश्चात् निश्चय किया कि इस वर्ष ७ मई (रविवार) को समस्त आर्य जगत् में 'सत्यार्थप्रकाश' दिवस मनाया जाए और इस अवसर पर सत्यार्थप्रकाश निधि के लिये अपील करके धन-संग्रह भी किया जाए। इस सम्बन्ध में अखिल भारतीय आर्य सम्मेलन में सर्वसम्मति से स्वीकृत निम्नलिखित प्रस्तावों का उल्लेख कर देना उचित होगा :—

निश्चय संख्या ६

यह सम्मेलन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के इस निश्चय का समर्थन करता है कि सत्यार्थप्रकाश की हर प्रकार के आक्षेपों से रक्षा तथा प्रचार के लिये एक निधि स्थापित की जाए जिस के लिये इस समय दो लाख रुपये एकत्रित किये जाए।

निश्चय संख्या ७

यह सम्मेलन सार्वदेशिक आ० प्र० सभा से अनुरोध करता है कि एक सत्यार्थप्रकाश दिवस नियत करे जिस पर सम्पूर्ण भारत के नगरों तथा ग्रामों में सत्यार्थप्रकाश का पाठ हुआ करे।"

सत्यार्थप्रकाश निधि के लिये आर्यों वा आर्यसमाजों द्वारा कुछ उल्लेखनीय प्रतिज्ञात राशियां :—

श्री सच्चिदानन्द सरस्वती मोहनाश्रम हरद्वार	१००००) एकत्रित करके
आर्य समाज हनुमान रोड नई देहली	१०००)
आर्य समाज जोधपुर	१०००)
आर्य समाज दरयागञ्ज देहली	५००)
आर्य समाज हरियाना	५००)
मेरठ नगर की आर्य समाजें द्वारा श्री चौ० जयदेवसिंह जी	१०००)
आर्य समाज इन्दौर	५०१)
स्वामी चेतनदेव जी [illegible]	५००)
आर्य समाज आगरा नगर द्वारा बा० श्रीराम जी	१०००)

आर्य समाज शाहदरा (देहली) द्वारा	
ला० बाबूराम जी प्रधान आ० स०	२००)
आर्य समाज करौल बाग़ (देहली)	२५१)
आर्य समाज मल्हारगंज इन्दौर	१०१)
आर्य समाज सीपरी बाजार झांसी	१०१)
श्री अलखधारी जी मुरादाबाद	१०१)
आर्य समाज जयपुर	१०१)
आर्य समाज नागौर (मारवाड़)	१००)
आर्य समाज ग्वालियर नगर	१०१)
ला० रतिराम जी सदर बाजार देहली	१००)
श्री रघुनन्दन शर्मा जी आर्य समाज हरदोई	१०१)
आर्य समाज मल्हारगंज इन्दौर द्वारा	
श्री कन्हैयालाल जी मन्त्री	१०१
श्री कन्हैयालाल जी आर्य समाज नवादा (गया)	१०१)
श्री रामचन्द्र कृष्णचन्द्र जी साड़ी वाले मोतीबाजार देहली	१०१)
आर्य समाज नमयाना (जि० बुलन्दशहर)	१००)
आर्य समाज मथुरा	१००)
ठाकुर रणबन्तसिंह जी जवा (अलीगढ़) इत्यादि	१०१)

इत्यादि। इन सब आर्यों और आर्य समाजों को अपनी प्रतिज्ञात राशियां अति शीघ्र सभा कार्यालय देहली में भिजवानी चाहिये और इसकी सूचना प्रान्तीय सभाओं को भी देनी चाहिये। अधिक से अधिक १० मई तक ये राशियां सभा कार्यालय में अवश्य पहुँच जानी चाहिये ताकि आर्यों की कर्मवीरता का जगत् को परिचय मिले। अन्य आर्य समाजों और आर्यों को भी अपनी उदार सहायता इस निधि के लिये तुरन्त भिजवानी चाहिये।

मन्त्री, सार्वदेशिक आ० प्र० सभा

Vedic Varna Vyavastha and Socialism

(By Shri Pt Ganga Prasad ji M A Chief Judge President Sarvadeshik Sabha)

(Continued from Nov 1943 issue)

Socialism and Communism Defined

28 Socialism has been defined in the Encyclopaedia Brittanica as "that policy or theory which aims at securing by the action of the central democratic authority or better distribution, and in due proportion thereunto, a better production of wealth, than now prevails "The writer admits that this definition would not cover all schemes which go by that name Multitudes of persons in these days, think socialistically, without defining or determining their position Most people like it from sympathy with the suffering of the poor.

Communism

is an advanced or extreme form of socialism It has been defined as a scheme of social organisation depending on the abolition of private property and its absorption into the property of a community as such" This is however considered as more Utopian than other forms of socialism Socialists of 20th century rarely demand that all wealth be held in common, but only that land, large workshops, materials and means of production on a large scale shall be owned by the state The leading idea is to convert into general benefit what is now the gain of a few The chief grievance which is the foundation of socialistic idea is the great contrast between the depressing proverty of the poor and the inordinate wealth and luxury of the rich.

Scientific Socialism of Marx and Engels

What is called modern scientific socialism began with Karl Marx and Engels who were both contemporaries and

collaborators being Germans by birth and flourished in the latter half of the 19th century They wrote several books.

Kapital by Marx, and the Joint Manifesto by Marx and Engels are more famous

It was Marx who gave socialism the international character and tought that a class struggle or violent revolution was necessary to achieve the end in view

Russian Bolshevism

30 Marx and Engels are looked upon as great authorities for socialism so far as the theory is concerned But it was in Russia that the theory was put into practice on a large scale under Lenin after the revolution of 1917 and the establishment of U. S S R or the Union of Soviet Socialist Republics Experience, as was natural, showed several defects or weak points in the theory, and Lenin himself to some extent, but chiefly his successor or the present Dictator of Russia, Stalin, had to introduce many changes which were found useful and even necessary in actual practice. I shall speak of them later in their proper place Lenin Trotsky, Kuropatkin have written several books In fact a mass of literature has sprung up on the subject many scholars have personally visited Russia, and have given widely divergent, and even conflicting accounts of the State of Russian people, some praising it and others condemning it in the strongest terms This is not very surprising. Dr. Bhagwan Das has frequently quoted from Twelve studies in Russia by 12 specialist investigators edited by M I Cole (pub. 1933), and describes it as "a book which seems to carry marks of trustworthiness on its face" Another book from which he frequently quotes is The "Great offensive by Maurice Aindus, (pub 1933), and also his other book Humanity Uprooted".

In Hindi an excellent treatise समाज वाद by name has been written by Sri Sampurnanand who was Education Minister during the late Congress Government of the United Provinces of Agra and Oudh, and published in 1936.

Socialism in the Vedas

While quoting Dr Bhagwan Das in para 23 it was stated that several good features in socialism and Bolsheveism were quite in keeping with, and even derivable from Manu I may also quote a verse of the Rigveda

अज्येष्ठासो अकनिष्ठास एते सं भ्रातरो वावृधुः सौभगाय ।
युवा पिता स्वपा रुद्र एषां सुदुघापृश्निः सुदिना मरुद्भ्यः ॥
(ऋ० ५ । ६० । ५)

"All men are brothers, there being no elder, and no younger among them. As such let them progress together towards highest prosperity Their father is the Almighty God, the stern Lord of mighty works Their mother is the earth or nature the giver of food, milk, and bringer of good days." (Rigveda V, 60,5.

It will be difficult to find in any other religion or Literature a more unambiguous and emphatic statement of the equality and brother hood of all mankind, which alone can be the basis of genuine socialism (*To be Continued*)

सर जेम्स मैस्टन भूतपूर्व गवर्नर संयुक्त प्रान्त का गुरुकुल प्रेम

(ले०—श्री लब्भूराम जी, आनन्द आश्रम लुधियाना)

जब आप लार्ड चेल्मसफोर्ड वायसराय हिन्द के साथ गुरुकुल-कांगड़ी देखने आये थे उस समय से मेरा उनके साथ परिचय था। आप जहां पूज्य महात्मा मुंशी रामजी (स्वामी श्रद्धानन्द जी) को अत्यन्त मान की दृष्टि से देखते थे वहां गुरुकुल कांगड़ी से आपको अधिक प्रेम था और गुरुकुल की सफलता चाहते थे। यही कारण था कि आपकी प्रेरणा पर लार्ड चेल्मसफोर्ड उस समय के वायसराय आपके साथ गुरुकुल कांगड़ी का अवलोकन कर अत्यन्त प्रभावित हुये। उस समय गुरुकुल कांगड़ी में चाय का सेवन नहीं होता था पूज्य महात्मा जी ने आपको जलपान कराते समय चाय (tea) की जगह तुलसी की चाय पकौडे और मिठाई आदि से अतिथि सत्कार किया। क्योंकि सर मैस्टन ने जो पहिली बार गुरुकुल आने पर तुलसी की चाय और पकौड़ों का स्वाद ले चुके थे वायसराय से इनकी बहुत प्रशंसा की तो वायसराय पार्टी ने रुचि पूर्वक स्वदेशी चाय और पकौडे आदि का आनन्द पूर्वक सेवन कर प्रसन्नता प्रगट की। महात्मा जी से मुझे पश्चात् ज्ञात हुआ कि लार्ड सर जेम्स मैस्टन तो स्वयं तुलसी चाय प्राय सेवन करके प्रसन्न होते हैं। पूज्य महात्मा मुंशी राम जी से पहिली भेंट में ही लार्ड सर जेम्स मैस्टन गवर्नर यू० पी० कुछ ऐसे प्रभावित हुये कि उसके पश्चात् से महात्मा जी से सदैव उनका मित्रवत् स्नेह रहा। १६१४ के सालाना उत्सव पर गुरुकुल कांगड़ी के लिए म० मुंशीराम जी की अपील निकली तो लार्ड सर जेम्स मेस्टन ने स्वयम् १००) एक सौ रु० का चिक म० मुंशीराम जी गवर्नर गुरुकुल कांगड़ी की भेंट किया जिस पर महात्मा जी ने अपनी अपील गुरुकुल उत्सव में निम्न प्रकार घोषणा की —

"मैं तो कहूँगा कि हमारे देशवासियों ने अभी गुरुकुल की महिमा को इतना अनुभव नहीं किया जितना विदेशियों ने किया है ··· कई लोग समझते हैं कि

जो दर्शक गुरुकुल को देखने आते हैं वह यहा हमारे लिहाज से प्रशसा कर आते हैं लार्ड सर जैम्स मेस्टन जब पिछले वर्ष गुरुकुल आए थे तो उन्होंने गुरुकुल की बड़ी प्रशंसा की इस प्रशसा के विषय में कई लोगों का ऐसा ही विचार था परन्तु ऐसा विचार सर्वथाभ्रमात्मक है इसका मुझे अभी प्रमाण मिला है। मेरे हाथ में इस समय एक पत्र है जो सर जैम्स मेस्टन ने मुझे भेजा है इस पत्र में गुरुकुल कागड़ी की सफलता के लिये प्रार्थना की गई है और इसके साथ ही १००) एक सौ रु० गुरुकुल कागड़ी के पुस्तकालय के लिये भेजा है। यू० पी० के लार्ड सर जैम्स मेस्टन ने जो पत्र महात्मा मुंशीराम जी गवर्नर गुरुकुल कांगड़ी को लिखा उस पत्र के जिस अंश का गुरुकुल के साथ सम्बन्ध है उसे हम अनुवाद सहित नीचे लिखते हैं। My dear Mahatma

I have asked capatain Waston Smith to send you a small sum of money with a request that you will buy some books with it for your library I should have preferred to send the books with a short inscription in my own hand writing upon them, but not having the catalogue of your library, I was afraid that I might only be imposing duplicates upon you I trust that your annual meeting will be a great success and that all good things will attend you and your work.

Sd James Meston "Governor U P."

अर्थात् मेरे प्यारे महात्मा जी मैंने केप्टन वास्टन स्मिथ को १००) रु० की छोटी सी रकम आपको भेजने के लिए कहा है आप अपने पुस्तकालय के लिये पुस्तकें खरीद लेवें। मैं स्वय पुस्तकें खरीद कर और अपने हाथ से अपना नाम लिखकर भेज देता परन्तु आपके पुस्तकालय का सूचीपत्र मेरे पास नहीं है इसके बिना दोहरी प्रति पहुंच जाने का डर है। मुझे भरोसा है कि आपका उत्सव कृत-कार्य्यता से होगा और आपको तथा आपके काम को हर तरह से सफलता प्राप्त होगी। शोक है कि गुरुकुल कांगड़ी के शुभचिन्तक लार्ड सर जैम्स मेस्टन सदैव के लिए हमसे जुदा हो गए हैं परमात्मा उनकी आत्मा को शांति प्रदान करें।

साहित्य समीक्षा

[समालोचनार्थ पुस्तक की २ प्रतियाँ भेजनी चाहियें]

जीवन संग्राम—लेखक श्री प० इन्द्र जी विद्यावाचस्पति

अर्जुन प्रेस श्रद्धानन्द बाजार देहली पृ० १०८ मूल्य १)

इस पुस्तक में 'जीवन एक निरन्तर संग्राम है, जातियों के उदय और अस्त, भारतीय इतिहास पर एक दृष्टि, बाधाएं और उनका उपाय, युद्ध का उपयोग, युद्ध के निमित्त, क्या युद्ध पाप है ? 'विजय के आधार' इत्यादि शीर्षक अध्यायों में युद्ध का गुण दोष विवेचन किया गया है। पुस्तक के प्रारम्भ में दी हुई "सबला एव जीवन्ति, विलीयन्ते तु निर्बला । व्यापको नियमो दृष्टो जीवेष्वेषु सनातनः ॥ 'विलास· क्षीणता तन्द्रा, प्रमादो धम विभ्रमः। एते वैभवजा दोषा· राष्ट्र निघ्नन्ति संहता· ॥ जीवनेच्छा सघशक्ति·, चारित्र्य कायिक बलम्। सद्वोधत भावश्च पञ्चैते जय हेतव· ॥ "इत्यादि कारिकाएं पुस्तक का सार रूप हैं। कट्टर अहिंसावादी पुस्तक में प्रकाशित कई विचारों से सहमत न होंगे किन्तु उन्हें भी इसमें गम्भीर विचार के लिये बहुत अच्छी सामग्री मिलेगी इसमें सन्देह नहीं। आर्य वीर दलों की आवश्यकता इस पुस्तक के पढ़ने से विशेष रूप से पाठकों के सामने आएगी यद्यपि उसका नाम लेकर निरूपण नहीं किया गया। पुस्तक प्रत्येक विचारशील देशभक्त के लिये मननीय है। क्या युद्ध पाप है ? इस शीर्षक के दशम अध्याय में यदि गीता के श्लोक भी उद्धृत किये जाते तो हमारे विचार में अधिक अच्छा होता। अनुवाद तो दिया ही गया है।

वैदिक सिद्धान्तों पर बहिनों की बातें—संशोधित व परिवर्धित संस्करण लेखक प० सिद्धगोपाल जी साहित्य वाचस्पति, प्रकाशक—श्री गोविन्दराम हासानन्द आर्य साहित्य भवन नई सड़क देहली पृ० १७६ मूल्य १)

यह श्री पं० सिद्धगोपाल जी की सवाद रूप से रोचक शैली में लिखी उस पुस्तक का संशोधित व परिवर्धित संस्करण है जो अच्छी लोक प्रिय बन चुकी है। इसमें ईश्वर का अस्तित्व, ईश्वर साकार वा निराकार, ईश्वर का ध्यान कैसे हो। भूत प्रेत, श्राद्ध, यज्ञ, यज्ञोपवीत, नमस्ते, मांस भक्षण, वर्ण व्यवस्था जन्म से या कर्म से, अद्वैतवाद इत्यादि पर सरल और रोचक शैली में बड़ा उत्तम प्रकाश

डाला गया है। देवियों के अन्दर वैदिक धर्म का प्रचार करने के लिये यह पुस्तक विशेष रूपसे उपयोगी सिद्ध होगी इसमें सन्देह नहीं। परिवर्धित संस्करण में भूत प्रेत, यज्ञोपवीत, मास भक्षण, नमस्ते, अद्वैत वाद, मूर्ति पूजादि पर विशेष रूप से विचार किया गया है जो प्रशसनीय है। इस पुस्तक का अच्छा प्रचार होने से तर्क की दृष्टि से वैदिक सिद्धान्तों को लोग भली भाति समझ सकेंगे। शीघ्रता के कारण जो मुद्रणदोष कहीं २ रह गये हैं उन्हें आशा है अगले संस्करण में दूर कर दिया जाएगा।

सत्यार्थप्रकाश गान—लेखक—प० सत्यभूषण जी वेदालङ्कार और पं० उदयवीर जी वेदालङ्कार, भूमिका लेखक—श्री प० इन्द्रजी विद्यावाचस्पति प्रकाशक-एक्सलैन्स कम्पनी जवाहर नगर देहली मूल्य ।=)

मिलने का पता—उपर्युक्त कम्पनी तथा सार्वदेशिक सभा देहली।

इस पुस्तिका में गुरुकुल विश्वविद्यालय काङ्गड़ी के सुयोग्य स्नातक कवि युगल के सत्यार्थप्रकाश जिन्दाबाद और महर्षि स्वामी दयानन्द, लेखराम की चिता धधकती, स्वामी श्रद्धानन्द निराला अब भी खून नहीं उबला क्या? युद्ध की पुकार, आर्य वीरों का चैलेञ्ज, जागो आर्य वीर अभिमानी, चेतावनी, हो जाओ होश्यार इत्यादि शीर्षक के ओजस्वी गीतों का सग्रह है। भूमिका लेखक मान्य श्रीप०इन्द्रजी ने ठीक ही लिखा है कि 'सत्यार्थप्रकाश के विषय में आर्य युवकों का हृदय क्या सोचता है यह जानने के लिये 'सत्यार्थप्रकाश गान' को पढ़ना उपयोगी होगा। ये गीत आर्य वीरों में नव जीवन का सञ्चार करने वाले हैं। इन ओजस्वी स्फूर्ति दायक गीतों को आर्य वीर दलों, आर्य कुमार सभाओं और आर्य युवक सङ्घादि में विशेष रूप से लोकप्रिय बनाने की आवश्यकता है। आशा है आर्य जनता इन गीतों को अपनाकर उत्साही युवक कवियों को प्रोत्साहित करेगी ताकि वे ऋषि दयानन्द, शिवाजी इत्यादि विषयक अपने काव्य जनता के सामने शीघ्र ला सकें।

उषा का विशेषाङ्क—सम्पादक—श्री शकुन्तला सेठजी तथा अयोध्यानाथ वीर 'उषा कार्यालय' मोती बाजार जम्मू वार्षिक मूल्य ५) एक प्रति ।।) पृष्ठ संख्या १०६

उषा का विशेषाङ्क हमारे सन्मुख है जिसे सर्वाङ्ग सुन्दर बनाने का -यत्न किया गया है। हमारी शिक्षा की समस्या, राष्ट्र भाषा का प्रश्न,

स्त्री शिक्षा, नया मनोविज्ञान, कविता का जीवन में स्थान, अहम्, राजयक्ष्मा और उसकी हवन द्वारा चिकित्सा इत्यादि विविध विषयों पर उत्तम लेख और 'समर्पण, जागरण गीत' दो गीत, यह ग्रामवधू हत भागी, तारे 'देश हमारा' इत्यादि विषयक उत्तम कविताए इस अङ्क में प्रकाशित हुई हैं। श्री ज्ञानेन्द्र कुमारी 'सुषमा' के स्त्री शिक्षा विषयक लेख के "आज की शिक्षा ने हमें पथ भ्रष्ट बना दिया है। हम मूर्ख कव्वे के समान जो हंस की चाल सीखने चला था पर भूल गया था अपनी भी, अपने भारतीय आदर्श को भूलकर दिन प्रतिदिन पाश्चात्य स्वच्छन्दता और फ़ैशन की बातें पसन्द करने लगे हैं। हमारा दृष्टिकोण बदल जाने से हम पथ भ्रष्ट हो रही हैं" इत्यादि शब्द विशेष मननीय हैं। हम 'उषा' के ऐसे उत्तम सम्पादन के लिये सुयोग्य सम्पादिका श्री शकुन्तला देवी जी (सेठ इत्यादि जाति सूचक शब्दों के प्रयोग को हम नापसन्द करते हैं) तथा श्री अयोध्यानाथ जी 'वीर' का हार्दिक अभिनन्दन करते हैं और आशा करते हैं कि भविष्य में 'उषा' के नियमपूर्वक दर्शन होते रहेंगे। ध० दे०

Shankar and Dayananda—By D B Har Bilas Sharda B A. M R A S Secretary Paropkarini Sabha Vedic Press Ajmer. Pages 71 Price 8 As

In this small book, the learned author has given a succinct account of the life and teachings of Shankaracharya, and compared and contrasted the teachings of the two great reformers of Vedic religion describing the historic back ground fn which each made his appearance He has also shown how Dayananda condemned and brushed aside the evils of the caste, the worship of images and all those evils that flow from snch practices to which Shankar's weakness toleration and tacit approval of non—Vedic popular practices——had led ' The book shows wide study, deep thought and profound scholarship worthy of the eminent writer

Ganga Prasad M A. President
Sarvadeshik Sabha.

हरियाना प्रान्तीय आर्य वीर दल शिक्षण शिविर

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा तथा प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाओं की प्रेरणाओं से अब भारत वर्ष की हर समाज में आर्य वीर दल के संगठन के प्रति आर्य पुरुषों में उत्साह तथा प्रेम दिखाई दे रहा है। चारों ओर से आर्य वीर दल के कार्य कर्त्ताओं की माग आ रही है। इस बढ़ती हुई माग की पूर्ति तथा आर्य नवयुवकों के भावी पथ प्रदर्शन के लिये समय २ पर आर्य वीर दल के अखिल भारतीय तथा प्रान्तीय शिक्षणशिविर लगते रहे हैं। सम्प्रति हरयाणा-प्रान्त के उत्साही आर्य कार्य कर्त्ताओं की इच्छा से हरियाणा प्रान्तीय आर्य वीर दल शिक्षण शिविर ११ अप्रैल से ३० अप्रैल तक आर्य गुरुकुल मज्झर में जो रोहतक से ११ मील तथा मज्झर नगर से दक्षिण की ओर १½ मील पर स्थित है लगेगा। समस्त अध्यापकों आर्य नवयुवकों तथा आर्य समाज के स्थानिक अधिकारियों से साग्रहसानुरोध प्रार्थना है कि इस शिक्षण शिविर में स्वय तथा अपने इष्ट मित्रों में से आर्य समाज के अधिकारी आर्य समाजों में से कम से कम दो २ व्यक्ति कैम्प में भेजकर निज कर्त्तव्य का पालन करें। कैम्प फीस प्रति वीर २०) रुपया होगी —

इस कैम्प का सञ्चालन अखिल भारतीय आर्य वीर दल के स० प्रधान सेनापति श्री ओम्प्रकाश जी त्यागी करेंगे। इस अवसर पर आर्य जगत् के मान्य प्रतिष्ठित नेताओं का आगमन भी सम्भावित है अत अपने समस्त सहयोगियों से प्रार्थना है कि वे इस कैम्प में उत्साह से भाग लें तथा अन्यों को प्रेरणा करें।

भवदीय—सुखदेव आर्य, दलपति हरियाणा प्रान्त

जिला मेरठ आर्य कुमार सम्मेलन गाजियाबाद

गाजियाबाद आर्य कुमार सभा की अन्तरग सभा ने १७ अप्रैल १९४४ रात्रि को ८½ बजे से घटाघर के समीप श्री प० धर्मदेवजी विद्यावाचस्पति स० मन्त्री सार्वदेशिक सभा के सभापतित्व में जिला आर्य कुमार सम्मेलन करने का आयोजन किया है। अत. सब आर्य कुमारों से तथा आर्य कुमार हितैषियों से प्रार्थना है कि इसमें सम्मिलित हों।

रमेशचन्द्र मन्त्री, आर्य कुमार सभा, गाजियाबाद

सम्पादकीय

ख्वाजा हसननिजामी और सत्यार्थप्रकाश जब्ती आन्दोलन :—

'सार्वदेशिक' के गत मार्च मास के अङ्क में हमने 'आर्य सम्मेलन की सफलता' विषयक टिप्पणी के अन्त में लिखा था कि 'प्रसिद्ध मुस्लिम नेता ख्वाजाहसन निजामी ने इस (सत्यार्थप्रकाश की जब्ती विषयक) माग का अपने पत्र 'मुनादी' के २४-२ ४४ के अङ्क में विरोध करके बुद्धिमत्ता का ही परिचय दिया है।" स्थानाभाव से 'मुनादी' के इस विषयक सम्पूर्ण लेख को उद्धृत न किया जा सका था जो निम्नलिखित है। कोष्ठ में उर्दू शब्दों के अर्थ केवल स्पष्टीकरणार्थ दिये गये हैं। ख्वाजा साहेब ने २४-२-४४ के 'मुनादी' में जो अखिल भारतीय आर्य सम्मेलन के ठीक बाद प्रकाशित हुई लिखा था—

"राना धारा सिंह भी आये थे। सत्यार्थप्रकाश के बाज़ हिस्सों की ज़ब्ती का ज़िकर करते थे। उसकी निस्बत एक मजमून भी सुनाया। मैंने कहा मैं सत्यार्थप्रकाश के मज़कूरा (उपर्युक्त) हिस्सों को बहुत बुरा और मुल्क (देश) के इख्तलाफ़ (विरोध) का बायस समझता हूँ पर ज़ब्त कराने की तहरीक़ (आन्दोलन) का मुख़ालिफ़ (विरोधी) हूँ क्योंकि इससे मुख़ालिफ़े क़ुरान (क़ुरान विरोधियों) को मौक़ा मिलेगा कि वे भी जिहाद के आयात के ख़िलाफ़ इसी किस्म की ख्वाहिश करें और इससे मुसलमानों के जज़बात (भावनाओं) को अज़ीयत हो (ठेस लगे) मैंने कहा मैं तो हर मज़हब के उसूल (सिद्धान्तों) की इज़्ज़त करता हू। आर्य समाज से इख्तलाफ़ (विरोध) भी इस बिना पर है कि उसकी बुनियाद दूसरों को बुरा कहने पर रक्खी गई है बरना इस्लाही ख्याल (सुधार की दृष्टि) से देखा जाए तो आर्य-समाजी बहुत अच्छे मालूम होते हैं।"

("मुनादी" २४ फरवरी १९४४ से)

ख्वाजा हसन निजामी के ऊपर उद्धृत शब्दों पर विचारशील मुसलमानों को विशेष रूप से ध्यान देना चाहिये। उनका यह लिखना सर्वथा अशुद्ध है कि सत्यार्थप्रकाश देश में विरोध बढ़ाने का कारण है और आर्य समाज की बुनियाद दूसरों को बुरा कहने पर रखी गई है। आर्य समाज का उद्देश्य संसार का उपकार करना है और सार्वभौम तर्क सम्मत वैदिक धर्म का प्रचार और असत्य का खण्डन करके वह लोकोपकार ही करने का यत्न कर रहा है। शेष जो बातें इस लेख में लिखी गई हैं वे मुसलमानों के लिये स्पष्ट चेतावनी हैं। 'क़ुरान में अन्य

मतावलम्बियों के लिये कितने कठोर और उत्तेजक वाक्यों का प्रयोग किया गया है इसे जानने के लिये प्रत्येक पाठक को अरबी और कुरान के सुप्रसिद्ध विद्वान् श्री प० रामचन्द्र जी देहलवी कृत इस नाम की पुस्तक को सार्वदेशिक सभा पुस्तक भण्डार से मगवाकर अवश्य पढ़ना चाहिये। बहुत सम्भवत उसे पढ़कर ही ख्वाजा साहेब ने ऊपर उद्धृत वाक्य लिखे हों।

महाराज विक्रमादित्य की पुण्यस्मृति में :—

महाराज विक्रमादित्य की द्विसहस्राब्दी सौर संवत् के अनुसार १२ एप्रिल को समाप्त हो जाएगी। इसके उपलक्ष्य में समस्त आर्य जगत् को सार्वदेशिक सभा की ओरसे आदेश दिया गया है कि वीर विक्रमादित्य की पुण्यस्मृति में वैशाखी के दिन (१३ एप्रिल) सर्वत्र सार्वजनिक सभाए की जाए। महाराज विक्रमादित्य बड़े प्रतापी, धर्मात्मा, विद्वानों का मान करने वाले और प्रजावत्सल न्यायी सम्राट् थे जिन्होंने शकों को भगाकर भारत की स्वतन्त्रता की रक्षा की थी। उनकी सभामें धन्वन्तरि, अमरसिंह कालिदास, वराह मिहिर, वररुचि आदि सुप्रसिद्ध वैद्य, कोषकार, कवि, ज्योतिषी और वैयाकरण थे जो नवरत्न के नाम से प्रख्यात थे। महाराज विक्रमादित्य प्रजा के हितार्थ ही सारे धन का उपयोग करते थे और स्वयं बहुत ही सादगी से रहते थे। ऐसे आर्य सम्राट् का स्मरण करके क्षात्र धर्म की जागृति का विशेष प्रयत्न करना और ऐसे न्यायशील प्रजा प्रिय महाराज के प्रति श्रद्धाञ्जलि अर्पित करना प्रत्येक स्वतन्त्रता प्रिय देशभक्त का कर्तव्य है। हमें निश्चय है कि इस दिन को सभा के आदेशानुसार सर्वत्र बड़े उत्साह के साथ मनाया जाएगा और आर्य-वीर दलों के सगठन को दृढ़ करने का विशेष रूप से प्रयत्न किया जाएगा।

जातिभेद विरोधक आन्दोलन को प्रबल बनाने की आवश्यकता :—

गत अखिल भारतीय आर्य सम्मेलन में जन्ममूलक जातिभेद के सम्बन्ध में जो प्रस्ताव सर्वसम्मति से स्वीकृत हुआ था और जिसमें समस्त आर्यों तथा हिन्दू जाति को प्रेरणा की गई थी कि वे इसके मूलोच्छेद के लिये समस्त सम्भव उपायों को कार्य में लाए उसकी ओर आर्य जनता का ध्यान हम विशेष रूप से आकर्षित करना चाहते हैं। जातिभेद और अस्पृश्यता का मूलोच्छेद किये बिना शुद्धि और दलितोद्धार के आन्दोलन कभी वस्तुतः सफल नहीं हो सकते। इस बात को हम इन स्तम्भों में अनेक वार स्पष्ट कर चुके हैं। यह प्रसन्नता की बात है कि सभा के सुयोग्य प्रधान श्री प० गङ्गाप्रसाद जी एम० ए० रिटायर्ड चीफ जज के नेतृत्व में एक उपसमिति बनाई गई है (जिसमें श्री राजा ज्वालाप्रसाद जी, प्रो० धर्मेन्द्रनाथ जी शास्त्री, प्रो० महेन्द्र प्रताप जी शास्त्री, प० मदनमोहन जी विद्यासागर वेदालंकार इत्यादि सज्जन हैं) जो इस विषयक सुनिश्चित योजना बनाकर जाति भेद विरोधक आन्दोलन का प्रबल बनाने का पूर्ण प्रयत्न करेगी। इस आन्दोलन की प्रगति को बढ़ाने का प्रत्येक विचारशील नर-नारी को अवश्य ही प्रयत्न करना चाहिये।

अमानुषिक अत्याचार :—

गत ६-३-४४ को गढ़वाल के रौतेला नामक ग्राम में श्री दर्शन सिंह आर्य की बारात का हजारों उच्च जात्यभिमानी बिठ ('सवर्ण') लोगों ने जिस निर्दयता से लूटा, बारातियों को दण्डों और जूतों से पीटा, कइयों को हाथ पैर बाध कर मारा, उनके यज्ञोपवीत तोड़ डाले गये, कइयों को पकड़कर जबर्दस्ती नदी में फैंका गया इत्यादि हृदयद्रावक रोमाञ्चकारी अमानुषिक अत्याचार सूचक वर्णन पाठकों ने अनेक समाचार पत्रों में पढ़ा होगा। ये अमानुषिक अत्याचार जो पटवारी कानूनगो आदि की उपस्थिति में हुए जातिभेद जन्य संकुचित हृदयता की पराकाष्ठा के द्योतक हैं जिसके विरुद्ध अत्यन्त प्रबल आन्दोलन की आवश्यकता है। ऐसे अत्याचारों से पीड़ित और निराश होकर सैकड़ों की संख्या में उधर लोग आर्य-हिन्दू धर्म तक को तिलाञ्जलि देने को तय्यार हो गये थे जिस परिस्थिति को सुधारने का सार्वदेशिक सभा संयुक्त प्रान्तीय सभा हरिजन सेवक सङ्घ आदि के सहयोग से पूर्ण प्रयत्न कर रही है और गढवाल के डिपुटी कमिश्नर तथा युक्तप्रान्त के गवर्नर के नाम तत्काल इस अमानुषिक अत्याचार की निष्पक्षपात जाच कराने और अपराधियों को कठोर दण्ड देने विषयक तार सभा की ओर से भेजे जा चुके हैं। यह भी ज्ञात हुआ है कि बारात का जो सामान लूटा गया था और बारातियों पर जो मारपीट हुई थी उसकी जाच अब पुलिस कर रही है। पोलीस ने आततायियों के विरुद्ध ३९५ धारा के अनुसार डकैती का अभियोग लगाया है। उन जात्यभिमानी 'सवर्ण' लोगों के इस अमानुषिक अत्याचार और पटवारी कानूनगो आदि की उपेक्षाकी हम घोर निन्दा करते हैं तथा समस्त सभ्य जगत् के लिये भयङ्कर कलङ्क रूप इस मनोवृत्ति को परिवर्तित करने के लिये सगठित प्रबल आन्दोलन की आवश्यकता अनुभव करते हैं जिससे ऐसी अमानुषिक घटनाए फिर कभी न हो सकें। सरकार को तत्काल निष्पक्षपात जाच कराकर अपराधियों को कठोर दण्ड अवश्य ही दिलाना चाहिये। सभा ने आदेश दिया है कि १६ एप्रिल (रविवार) को गढ़वाल दिवस के नाम से सर्वत्र मनाकर डिपुटी कमिश्नर पौड़ी गढ़वाल और गवर्नर यू० पी० लखनऊ के नाम उपर्युक्त आशय के तार भेजे जाएं।

आर्य और आर्य भाषा—

अ० भा० आर्य सम्मेलन में जो त्रैवार्षिक कार्यक्रम विषयक प्रस्ताव सर्वसम्मति से स्वीकृत हुआ उसका एक अंश यह भी था कि 'यह सम्मेलन आर्य जनता, आर्य प्रतिनिधि सभाओं, आर्य संस्थाओं तथा आर्य विद्वानों से अनुरोध करता है कि वे अपने सब कार्यों को आर्य-भाषा (हिन्दी) में ही करें।"

यह सचमुच खेद की बात है कि आर्य समाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द के इस विषयक स्पष्ट क्रियात्मक आदर्श और "मेरी आखें उस दिन को देखने के

लिये तरस रही हैं जब काश्मीर से कन्याकुमारी तक सब भारत देशवासी एक भाषा को समझने और बोलने वाले होंगे" ऐसे महत्त्वपूर्ण शब्दों के होते हुए भी इस विषयक प्रस्ताव को आर्य सम्मेलन में रखने की आवश्यकता अनुभव हुई किन्तु सचाई से आँख मूंद लेने से काम नहीं चल सकता। अनेक आर्य संस्थाओं और विद्यालयों का अधिकतर कार्य उर्दू, अंग्रेजी आदि में होता देखा गया है। सार्वदेशिक सभा कार्यालय में कई आर्य समाजों तथा उत्साही आर्य कार्यकर्त्ताओं के भी पत्र उर्दू अथवा अंग्रेजी में आते हैं, अनेक पत्र अनभ्यास के कारण ऐसी हिन्दी भाषा में लिखे होते हैं जिनका अर्थ तक समझना कठिन हो जाता है। आर्य भाषा (हिन्दी) के प्रति ऐसे आर्यों की यह उपेक्षा वस्तुतः अत्यन्त निन्दनीय है। हम समस्त आर्यों से अनुरोध करते हैं कि वे अपने अन्य कर्तव्यों के पालन के साथ २ इस आवश्यक कर्तव्य की ओर भी विशेष ध्यान दें अन्यथा उनके पत्रों का यदि कोई उत्तर प्राप्त न हो तो वे स्वयम् इसके लिये उत्तरदाता होंगे।

अनुकरणीय दान—

रायपुर (मध्यप्रान्त) के उत्साही आर्य श्री ओंकार दत्त जी ने १५-१-४४ को अपनी मृत्यु से पूर्व वसीयत नामा करते हुए अपनी सारी सम्पत्ति (लगभग ८००) की पुस्तकें तथा कुछ सोना चांदी आदि) सार्वदेशिक सभा के नाम कर दी जिसके लिये वे धन्यवाद के पात्र हैं। स्व० ओंकार दत्त जी साधारण स्थिति के पुस्तक विक्रेता थे। उनका यह दान प्रशंसनीय और अनुकरणीय है।

भूलसुधार—

'सार्वदेशिक' के गत आर्य सम्मेलनाङ्क में पाठक निम्न भूलों को सुधार लें—

(१) सत्यार्थप्रकाश विषयक प्रस्ताव के समर्थकों में पृष्ठ ५६ और ८४ पर श्री पं० विजयशङ्कर जी प्रधान मुम्बई प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा का नाम छूट गया है। आपने भी प्रभावशाली भाषण प्रस्ताव के समर्थन में दिया था।

(२) पृष्ठ ८५ पर ऋषिबोधोत्सव के वक्ताओं में भूल से स्वामी व्रतानन्दजी आचार्य गुरुकुल चित्तौड़ का नाम छूट गया था। आपने आदर्श ब्रह्मचारी और सुधारक के रूप में ऋषि दयानन्द पर अपने विचार उत्सव में प्रकट किये थे। आर्य कुमार सम्मेलन में भी ब्रह्मचर्य पर आपका प्रभावशाली भाषण हुआ था।

(३) पृष्ठ ६० पर राष्ट्र निर्माण समिति के सदस्यों में प० मदनमोहन जी विद्यासागर वेदालङ्कार और श्री देवव्रत जी धर्मेन्दु का नाम भूल से छूट गया था।

—धर्मदेव विद्यावाचस्पति

आर्य वर की आवश्यकता

स्वाध्याय योग्य उत्तम साहित्य

श्री महात्मा नारायणस्वामी जी कृत

कतिपय ग्रन्थ

(१) मृत्यु और परलोक

शरीर, अन्तःकरण तथा जीव का स्वरूप और भेद, जीव और सृष्टि की उत्पत्ति का प्रकार, मृत्यु का स्वरूप तथा बाद की गति, मुक्ति और स्वर्ग नरक इत्यादि का स्वरूप, मुक्ति के साधनआदि आदि विषयों पर अद्भुत पुस्तक। मूल्य ॥=)

(२) उपनिषद् रहस्य

केन, कठ, प्रश्न, मुंडक माण्डूक्य, ऐतरेय, तैत्तिरीय, बृहदारण्यक उपनिषदों की बहुत सुन्दर खोजपूर्ण और वैज्ञानिक व्याख्यायें।

मूल्य क्रमशः—

।-), ≡), =)॥, =)॥, -)॥, ≡)।, ।=)॥, २)

अरबी के सुप्रसिद्ध विद्वान् शास्त्रार्थ महारथी

श्री पं० रामचन्द्र जी देहलवी कृत

(१) सत्यार्थ प्रकाश विषयक अत्युत्तम पुस्तकें:—सत्यार्थ प्रकाश के १४वें समुल्लास में उद्धृत कुरान की आयतों का देवनागरी में उल्था और उनका हिन्दी अनुवाद। मूल्य ।)

(२) कुर्आन् में अन्य मतावलम्बियों के लिये कुछ अति कठोर उत्तेजक वाक्यों का संग्रह।

हिन्दी अंग्रेजी अनुवाद सहित। प्रचारार्थ घटाया हुआ मूल्य ।=)

नोट—उपर्युक्त पुस्तकें प्रत्येक आर्य समाज के पास रहनी चाहियें।

मिलने का पताः—सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, देहली।

श्री पं० रघुनाथप्रसाद पाठक—पब्लिशर के लिये लाला सेवाराम चावला द्वारा "चन्द्र प्रिंटिङ्ग प्रेस", श्रद्धानन्द बाजार, देहली में मुद्रित।

Regd No L 2121

सार्वदेशिक सभा पुस्तक भण्डार की उत्तमोत्तम पुस्तकें

(१) वैदिक सिद्धान्त सजिल्द १)
(२) यमपितृ परिचय २)
(३) अथर्ववेदीय चिकित्सा शास्त्र २)
(४) वेद में असित् शब्द -)।
(५) ऋग् वेद में देवृकामा या देवकामा -)
(६) विदेशों में आर्य्य समाज ॥)
(७) दयानन्द सिद्धान्त भास्कर १।)
(८) आर्य्य सिद्धान्त विमर्श १॥)
(९) भजन भास्कर ॥)
समस्त आर्य्य समाजों की सूची ॥)
१ सार्वदेशिक सभा का इतिहास अ० २), स० २॥)
) बलिदान ॥)
(१३) आर्य डायरेक्टरी अ० १।), स० १॥)
(१४) वैदिक सन्ध्या रहस्य =)॥
(१५) सत्यार्थ निर्णय १॥)
(१६) संस्कृत सत्यार्थप्रकाश (अजिल्द) ॥)
(१७) इजहारे हकीकत (उर्दू में) ।॥=)
(१८) नारायण स्वामीजीकी आत्म कथा २।)
(१९) मातृत्व की ओर अ० १।), स० १॥)
(२०) आर्य्य जीवन और गृहस्थ धर्म ।=)
(२१) आर्य्यावर्त्त की वाणी =)॥
(२२) आर्य वीर दल शिक्षण शिविर =
(२३) आर्य समाज का इतिहास ॥)
(२४) भक्ति कुसुमाञ्जलि ॥)
(२५) विमान शास्त्र ।=)॥
(२६) वेद में दो बड़ी वैज्ञानिक शक्तियां १)
(२७) सत्यार्थ प्रकाश गान ।=)
(२८) बहिनों की बातें १)
(२९) Agni ... २॥)
(३०) Christ... eyes ... ।-)
(३१) Truth ... ।=)
(३२) Truth- ... ock of Aryan Culture ॥)
(३३) Vedic Teachings १।)
(३४) Voice of Arya Varta =)
(३५) Christianity in India ॥)
(३६) The Scope and Mission of AryaSamaj-Unbound =॥)
(३७) Eclesia Divina-Bound ५)
(३८) Commentary on Ishopanishad ॥)
(३९) Kenopanishat (English) ।)

(१४) श्री पुस्तकाध्यक्ष जी,
गुरुकुल कांगड़ी Gurukul Kangri
जि० सहारनपुर Distt Saharanpur

ओ३म्

कृण्वन्तोविश्वमार्यम्

सार्वदेशिक



मई १९५४ ई०
वैशाख २००१ सं०

सम्पादक
[illegible]

वार्षिक मूल्य
स्वदेश [illegible]
विदेश ७शि
[illegible]

विषय-सूची

सार्वदेशिक का यह पत्र मँगाने के लिये ।=) का टिकट भेजना जरूरी है।

॥ ओ३म् ॥

सार्वदेशिक

* सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली का मासिक मुख-पत्र *

वर्ष २० } मई, १९४४ ई०] वैशाख २००१ [दयानन्दाब्द १२१ { अङ्क ३

* वैदिक प्रार्थना *

ओं वाचस्पतिं विश्वकर्माणमूतये मनो जुवं वाजे अद्या हुवेम ।
स नो विश्वानि हवनानि जोषद् विश्वशम्भूरवसे साधुकर्मा ॥ यजुर्वेद १७। २३

शब्दार्थ—हम भक्त (अद्य) आज सदा (वाजे) ज्ञान और शक्ति प्राप्ति के अवसर पर (वाचस्पतिम्) वेद वाणी के स्वामी (विश्वकर्माणम्) सृष्टि की उत्पत्ति, स्थिति तथा प्रलयादि समस्त कर्म करने वाले (मनोजुवम्) मन की बात भी जानने वाले अथवा मन द्वारा प्राप्तव्य परमेश्वर को (ऊतये) रक्षा तथा ज्ञान के लिये (हुवेम) स्मरण करें हृदय में पुकारें (स) वह (विश्वशम्भू) सारी शान्ति का स्रोत (साधुकर्मा) सदा शुभ कर्म करने वाला मङ्गल मय भगवान् (न) हमारी (विश्वानि) सब (हवनानि) पुकारों वा प्रार्थनाओं का (जोषत्) प्रीति पूर्वक सेवन करे-स्वीकार करे।

विनय—हे समस्त जगत् के उत्पादक, धारक तथा संहारक प्रभो। आप की महिमा अनन्त है। आप सर्वशक्तिमान् सारी शान्ति के स्रोत, और मङ्गलमय हैं। आप जो कुछ करते हैं हमारी भलाई के लिये ही करते हैं। हमारे सच्चे रक्षक आप ही हैं। हम ज्ञान और रक्षा के लिये सदा आपको सच्चे हृदय से पुकारते हैं। आप कृपा करके हमारी प्रार्थनाओं को प्रेम पूर्वक स्वीकार करें और हमें ज्ञान, शक्ति, शान्ति और आनन्द से भर दें।॥

वेदोपदेश

राजा का वैदिक आदर्श

(१) ओं निषसाद धृतव्रतो वरुणः पस्त्यास्वा। साम्राज्याय सुक्रतुः॥ मृत्योः पाहि विद्योत्पाहि॥ यजु० २०। २

(२) ओं कोऽसि कतमोऽसि कस्मै त्वा काय त्वा। सुश्लोक सुमङ्गल सत्राजन्॥ यजुर्वेद २०। ४

(३) ओ३म् आत्वा हार्षमन्तरेधि ध्रुवस्तिष्ठाविचाचलिः। विशस्त्वा सर्वा वाञ्छन्तु मत्वद् राष्ट्रमधिभ्रशत्। ऋ० १०। १७३। १

(४) ओं त्वां विशो वृणतां राज्याय त्वामिमाः प्रदिशः पञ्च देवीः। वर्ष्मन् राष्ट्रस्य ककुदि श्रयस्व ततो न उग्रो विभजा वसूनि॥ अथर्व ३। ४। २

(५) ओ३म् आयद् वामीयचक्षसा मित्र वयं च सूरयः। व्यचिष्ठे बहुपाय्ये यतेमहि स्वराज्ये॥ ऋ० ५। ६६। ६

मन्त्रार्थ—(१) (धृत व्रतः) जिसने सत्यादि व्रतों को धारण किया हुआ है ऐसे (वरुण.) उत्तम स्वभाव वाले (सुक्रतु·) उत्तम कर्म और बुद्धि वाले आप (साम्राज्याय) भूगोल मे चक्रवर्तिराज्य के लिये (पस्त्यासु आनिषसाद) न्याय गृहों में सदा स्थिर हूजिये। (मृत्योः पाहि) छोटी आयु मे मृत्यु से रक्षा कीजिये तथा (विद्योत् पाहि) शत्रुओं के प्रदीप्त आग्नेयास्त्र आदि से हमारी रक्षा कीजिये।

(२) हे (सुश्लोक) उत्तम कीर्तिवाले (सुमङ्गल) उत्तम मङ्गलयुक्त लक्षणों और कर्मों वाले (सत्यराजन्) सत्य के प्रकाशक सच्चे राजन् आप (कः असि) सुख स्वरूप हैं (कतमः असि) अत्यन्त सुखस्वरूप और सज्जनों को अत्यधिक सुख देने वाले हैं (कस्मै त्वा काय त्वा) सुखस्वरूप ईश्वर की आज्ञा पालन और सुख की प्राप्ति के लिये हम आप का राज्याभिषेक करते हैं।

(३) राज्याभिषेक के समय पुरोहित का प्रजा के प्रतिनिधि रूप से वचन—

मैं (त्वा आहार्षम्) तुम्हें राज्याभिषेकार्थ यहां लाता हूँ (अन्तः एधि) तुम प्रजाओं के अन्दर निवास करो (अविचाचलिः ध्रुव· तिष्ठ) अपने कर्तव्य

मार्ग से कभी विचलित न होकर सदा उसमें स्थिर रहो। (सर्वा विश त्वा वाञ्छन्तु) सब प्रजाएं तुम्हें चाहती रहें—तुम्हारे प्रति प्रेम बनाये रक्खें जिससे (त्वद् राष्ट्रम्) तुम्हारा राज्य (मा अधिभ्रशत्) नष्ट न हो जाए—तुम्हें राज्य से च्युत न होना पड़े।

(४) (विशः) प्रजाए (राज्याय) राज्य के लिये (त्वा वृणताम्) तुम्हें चुनें (इमा पञ्चप्रदिश देवी) इन पांच दिशाओं में रहने वाली दिव्य गुण युक्त सब प्रजाए (त्वाम्) तुम्हें ही राजा स्वीकार करें (राष्ट्रस्य) राज्य के (वर्ष्मन् ककुदि) ऐश्वर्य युक्त अच्छे स्थान पर आश्रय लो (तत) तब (उग्र.) शूरवीर और दुष्टों के लिये कठोर बनते हुए (नः) हमारे लिये (वसूनि विभज) धनों का उचित विभाग करो।

स्वराज्य प्राप्ति के लिये प्रयत्न—

५) (मित्र) मित्रता की दृष्टि वाले (ईयचक्षसा) उदार दृष्टि वाले तुम सब (वय च) और हम (सूरयः) विद्वान् मिल कर (व्यचिष्ठे) विस्तृत (बहुपाय्ये) अनेकों की सहायता से जिसका रक्षण किया जा सकता है ऐसे (स्वराज्ये) स्वराज्य की प्राप्ति और उसकी उत्तम व्यवस्था में (आयतेमहि) सब प्रकार से यत्न शील रहें।

उपर्युक्त ४ वेद मन्त्रों में राजा के योग्य गुणों और उसके प्रजाओं द्वारा चुनाव का बड़ा उत्तम वर्णन है। राजाको किस प्रकार सत्यनिष्ठता कर्तव्यपरायणतादि उत्तम गुणों को धारण करना चाहिये तथा प्रजा को अत्यधिक सुख देने के लिये सदा तत्पर रहना चाहिये इन बातों का यहा सुस्पष्ट निरूपण है। यह भी स्पष्ट तया सूचित किया गया है कि यदि राजा ऐसे कार्य कर रहा हो जिससे प्रजाओं में असन्तोष हो और वे उसे न चाहें तो उसे राजगद्दी से भी उतारा जा सकता है। राजा को पूर्णतया न्यायी होना चाहिये और इस बात का भी ध्यान रखना चाहिये कि ऐश्वर्य का प्रजाओं में समुचित और न्याय युक्त विभाग हो। पञ्चम मन्त्र में स्वराज्य की प्राप्ति के लिये परस्पर मित्रता—संगठन-उदार दृष्टि और ज्ञान वृद्धि इत्यादि द्वारा प्रयत्न शील होने का उपदेश है जो अत्यन्त मननीय है और जिसको क्रियात्मक रूप देने की विशेष आवश्यकता है। आर्यों को यत्न करना चाहिये कि इस वैदिक राज्य आदेश को शीघ्र से शीघ्र क्रियात्मक रूप मिले।

अध्यात्मसुधा

"सर्वस्व ओ३म्"

[लेखक—श्री नरेन्द्र सिंह यादव, इटौली-शिकोहाबाद यू० पी०]

ओ३म् ओ३म् ओ३म् मैं उचारूँ, दुख के होते सामने।
प्राप्त हो आनन्द अनुपम, ओ३म्- जप के सामने ॥ १ ॥
बिजलियाँ चमकें अँधेरा, हो महा ओले गिरें।
भागता भय दूर मेरा, ओ३म् - रट के सामने ॥ २ ॥
पाप-पथ में पग घसीटें, आसुरी जब वृत्तियाँ।
ओ३म्-सुधा पी शीघ्र दैवी, वृत्तियाँ हों सामने ॥ ३ ॥
आत्मा में ग्लानि होवे, एक धक्का सा लगे।
दूर हों दुर्वासनायें, ओ३म् हो जब सामने ॥ ४ ॥
क्यों अटकता रे 'नरेन्द्र', कर्म तो आरम्भ कर।
फल की इच्छा त्याग दे तू, ओ३म् को रख सामने ॥ ५ ॥
ईश्वरार्पण बुद्धि करले, शान्तिमय जीवन बने।
ओ३म् दक्षिण वाम पीछे, ओ३म् ही हो सामने ॥ ६ ॥

आर्य कुमार जगत्

आर्य कुमारों के लिये स्फूर्तिदायक सन्देश

जिला मेरठ आर्य्य कुमार सम्मेलन गाजियाबाद के सभापति श्री पं० धर्मदेव जी सिद्धान्तालङ्कार, विद्यावाचस्पति, साहित्यभूषण स० मन्त्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली का १७-४-४४ को दिया अभिभाषण

ओ३म् इन्द्र क्रतुं न आभर पिता पुत्रेभ्यो यथा।
शिक्षाणो अस्मिन् पुरुहूत यामनि जीवा ज्योतिरशीमहि ।।
(ऋ० ५। ३। २१)

ओं देवो देवानामसि मित्रो अद्भुतो वसुर्वसूनामसि चारुरध्वरे।
शर्मन्त्स्याम तव सप्रथस्तमेऽग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव ।।
(ऋग्वेद १। ६। ३२)

प्रिय आर्यकुमार बन्धुओ!

मैं आपको इस प्रेम के लिये जो मेरठ जिला आर्यकुमार सम्मेलन के सभापतित्व का आसन देकर मेरे प्रति आपने प्रदर्शित किया है हार्दिक धन्यवाद देता हूँ। अखिल भारतीय आर्य सम्मेलन देहली के अवसर पर आयोजित आर्यकुमार सम्मेलन के सभापतित्व का गौरवास्पद स्थान देकर भी आप बन्धुओं ने मेरे प्रति अपने अद्भुत प्रेम को प्रदर्शित करके अनुगृहीत किया था और उसी प्रेम का परिचय आपने आज इस आर्य कुमार सम्मेलन का सभापति आसन देकर दिया है जिसके लिये मैं आपके प्रति अत्यन्त कृतज्ञ हूं। मुझे यह कहने में जरा भी सकोच नहीं कि मुझे आर्यकुमारों और युवकों के साथ विशेष प्रेम है और उनकी सर्वतोमुखी उन्नति पर ही आर्यसमाज का भविष्य निर्भर है ऐसा मेरा दृढ़ विश्वास है। इसी लिये उनके बीच उपस्थित होने में मैं एक विशेष प्रसन्नता का अनुभव करता हूँ। मुझे कभी २ ऐसा प्रतीत होता है कि आर्यसमाज ने कुमारों और

और नवयुवकों तथा नवयुवतियों के चरित्र निर्माण और उनके अन्दर वैदिक धर्म के भावों को जागृत करने के लिए जो प्रयत्न अब तक किया है वह प्रशंसनीय होते हुए भी पर्याप्त नहीं है। इस विषय में जितना अधिक ध्यान दिया जायगा, आर्य-कुमार और कुमारियों के मन में वैदिक धर्म और आर्य संस्कृति के प्रति जितना सच्चा प्रेम उत्पन्न किया जायगा आर्य समाज वस्तुतः उतना ही ऊँचा उठ सकेगा क्योंकि आर्यसमाज की यथार्थ उन्नति उसके सदस्यों की संख्या बढ़ने पर उतनी निर्भर नहीं है जितनी सच्चा आर्य जीवन व्यतीत करने वाले नर नारियों पर। इस युग के सर्वोत्तम सुधारक वैदिक धर्मोद्धारक शिरोमणि महर्षि दयानन्द जी ने अपने द्वारा स्थापित समाज का नाम 'आर्य समाज' रख कर एक उच्च आदर्श हमारे सन्मुख उपस्थित किया है। आर्य शब्द की व्याख्या आर्य कुमार सम्मेलन के गत देहली अधिवेशन में मैंने "आर्या व्रता विसृजन्तो अधिक्षमि। "(ऋग्वेद)" आर्यः— ईश्वर पुत्र, कर्तव्यमाचरन् कार्यम्, अकतव्यमनाचरन्। तिष्ठति प्रकृताचारे, सतु आर्य इति स्मृत ॥" इत्यादि शास्त्रीय प्रमाणों का उद्धृत करते हुए की थी जिस को फिर दुहराना अनावश्यक है किन्तु महर्षि दयानन्द जी ने "विजानीह्यार्यान् ये च दस्यवो बर्हिष्मते रन्धया शासदव्रतान्।" (ऋ०१।४।१०।८) तथा "असुर्या नाम ते लोका अन्धेन तमसावृता" (य० ४०।३) इत्यादि वेदमन्त्रों की व्याख्या और सत्यार्थप्रकाश के 'स्वमन्तव्यामन्तव्य' तथा आर्याभिविनय में इस विषय पर जो लिखा है उस की ओर आपका ध्यान आकर्षित करना मैं आवश्यक समझता हूँ क्योंकि इससे उस भ्रम का भी निवारण हो जायगा जो वर्तमान स्कूलों और कालेजों में पढ़ाई जाने वाली प्राचीन इतिहास विषयक प्रायः प्रत्येक पुस्तक के द्वारा फैलाया जाता है कि आर्य और दस्यु दो पृथक् २ जातियाँ थी तथा आर्यों ने दस्युओं पर अनेक प्रकार के अत्याचार किये थे। महर्षि दयानन्द जी 'आर्याभिविनय' में विजानीह्यार्यान् ये च दस्यव ' की व्याख्या में यो लिखते हैं।

"आप (आर्यान्) विद्याधर्मादि उत्कृष्ट स्वभावाचरण युक्त आर्यों को जानो (ये च दस्यवः) और जो नास्तिक डाकू चोर, विश्वासघाती, मूर्ख, विषयलम्पट, हिंसादिदोषयुक्त, उत्तम कार्य में विघ्न करने वाले, स्वार्थी, स्वार्थ साधन में तत्पर, वेद विद्या विरोधी अनार्य मनुष्य सर्वोपकारक यज्ञ के ध्वंसक हैं इन सब दुष्टों को आप मूलसहित नष्ट कर दीजिये।

(असुर्या नाम ते लोका अन्धेन तमसावृता), इस यजुर्वेद मन्त्र (४० । ३) की व्याख्या में महर्षि जी लिखते हैं कि—"त एव असुरा दैत्या राक्षसाः पिशाचा दुष्टा मनुष्या च आत्मन्यन्यद् वाच्यन्यत् कर्मण्यन्यदाचरन्ति ते न कदाचिदविद्या-सागरादुत्तीर्य आनन्दं प्राप्तु शक्नुवन्ति ये च यदात्मना तन्मनसा यन्मनसा यद्वाचा तत्कर्मणाऽनुतिष्ठन्ति ते एव देवा आर्याः सौभाग्यवन्तो ऽखिल जगत् पवित्रयन्त इहामुत्रातुलं सुखमश्नुवते ॥"

अर्थात् वेही मनुष्य असुर, दैत्य, राक्षस तथा पिशाच इत्यादि हैं जो आत्मा में और जानते, वाणी से और बोलते और करते कुछ और ही हैं वे कभी अविद्या रूप दुःख सागर से ही पार हो आनन्द को नहीं प्राप्त हो सकते। और जो आत्मा वाणी मन और कर्म से निष्कपट एक सा आचरण करते हैं वे ही देव आर्य सौभाग्यवान् सब जगत् को पवित्र करते हुए इस लोक और परलोक में अतुल सुख भोगते हैं।" सत्यार्थ प्रकाश के स्वमन्तव्यामन्तव्य में महर्षि जी ने आर्य और 'दस्यु' के विषय में लिखा कि जैसे आर्य श्रेष्ठ और दस्यु दुष्ट मनुष्यों को कहते हैं वैसे ही मैं भी मानता हूँ॥ 'आर्योद्देश्य रत्नमाला' में महर्षि जी ने 'आर्य' का लक्षण यह लिखा है कि 'जो श्रेष्ठ स्वभाव धर्मात्मा परोपकारी सत्यविद्यादि गुण युक्त हैं • उनको आर्य कहते हैं।'

मैंने महर्षि दयानन्द जी महाराज के ग्रन्थों से ये उद्धरण आपके सन्मुख इस लिये दिये हैं ताकि आर्य शब्द के स्फूर्तिदायकत्व और उसका चरित्र निर्माण के साथ कितना घनिष्ठ सम्बन्ध है इस बात को आप भली भाँति अनुभव कर सकें तथा चरित्र निर्माण को अपने जीवन का आधार समझ कर उस ओर अधिक से अधिक ध्यान दे सकें।

जीवन की उच्चता

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के स० मन्त्री के रूप में मुझे यह देखकर हार्दिक दुःख होता रहता है कि आर्य समाज के अनेक सदस्यों का जीवन उतना उच्च नहीं जितना होना चाहिए। बहुतों के अन्दर सत्यनिष्ठता, कर्तव्यपरायणता, साहस, निर्भयता आदि की कमी पाई जाती है, कइयों के सदाचार के विरुद्ध भी गम्भीर शिकायतें सुनने में आती हैं, अनाथ रक्षा, विधवा संरक्षण, गोपालन इत्यादि पवित्र नामों से धन संग्रह करके उसका दुरुपयोग करते हुए तथा सदाचार

के नियम तक का उल्लङ्घन करते हुए जब किसी आर्य नामधारी व्यक्ति वा संस्था को मैं सुनता वा पाता हूँ तो मेरा तो लज्जा के मारे सिर नीचा हो जाता है। मुझे यह कहते हुए अत्यन्त दुःख होता है कि आज सामूहिक रूप से आर्यों के जीवन का माप (Standrad) सर्व साधारण से बहुत अधिक उच्च नहीं रहा। एक समय था जब आर्यों की सत्यनिष्ठता की इतनी धाक बैठी हुई थी कि एक यूरोपियन जज् ने ११ के विरुद्ध एक आर्य की साक्षी को इस लिये प्रामाणिक माना था कि वह 'आर्य' था जिससे कभी असत्य भाषण की आशा न हो सकती थी। स्वर्गीय धर्म-वीर भक्त फूलसिंह जी के जीवन की वह घटना मुझे कभी नहीं भूल सकती कि आर्य समाज में पदार्पण करते ही उन्हों ने पहला काम यह किया कि रिश्वतखोरी आदि से जो धन कमाया था उसे वापिस किये बिना उन्होंने चैन नहीं लिया क्यों कि वे आर्य होने के नाते अपने उच्च धार्मिक कर्तव्य और उत्तरदायित्व को अनुभव करने लग गये थे।

प्रिय आर्यकुमारो ! मैं आपका ध्यान इस अपने उच्च धार्मिक कर्तव्य और उत्तरदायित्व के अनुभव की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ। आर्यकुमार परिषत् के उद्देश्यों में इसका मुख्य उद्देश्य "कुमारों तथा युवकों को ईश्वर, वैदिक धर्म और देश के सच्चे और क्रिया शील उपासक बनाना लिखा है।" उस उद्देश्य की पूर्ति उच्च चरित्र के निर्माण के बिना सर्वथा असम्भव है इस लिए आप में से प्रत्येक को अपना जीवन अधिक से अधिक पवित्र, सत्यमय, प्रेममय, सेवामय और सदाचार की सुगन्ध से परिपूर्ण बनाने का सदा प्रयत्न करना चाहिए। वह शिक्षा किसी काम की नहीं जो चरित्र को उन्नत और अत्युत्तम नहीं बनाती। 'चरित्रा स्ते शुन्धामि' इत्यादि वैदिक आदेश के अनुसार ब्रह्मचर्य पूर्वक सच्चरित्र निर्माण प्राचीनकाल में आर्यों की शिक्षा का आधार था। "Formation of character is the chief object of education"

इत्यादि शब्दों द्वारा हर्बट स्पेन्सर जैसे धुरन्धर पाश्चात्य शिक्षा वैज्ञानिकों ने भी शिक्षा के इसी आदर्श का समर्थन किया है किन्तु खेद है कि हमारे देश के अधिकांश विद्यालयों और महाविद्यालयों में इस ओर बहुत कम ध्यान दिया जाता है। आज कल के नगरों का वातावरण भी अनेक अंशों में ब्रह्मचर्य के प्रतिकूल बना हुआ है। एक ओर विद्यालयों में प्रायः धार्मिक शिक्षा का नितान्त अभाव और अध्यापको

का भी अधिकतर ब्रह्मचर्य के तत्वों से अपरिचित होना और दूसरी ओर बात २ में अनेक अध्यापकों तथा अन्य नागरिकों के मुख से मा बहिन तक की गन्दी गालियों का दिन रात श्रवण (जिसका धीरे २ अनजाने भी प्रभाव पड़ते रहना स्वाभाविक है ।), तीसरी ओर नाटकों और सिनेमाओं के ब्रह्मचर्य विरोधी, कामोत्तेजक अश्लील गीत तथा नाट्य चित्र और घरों और होटलों के चटपटे मसालेदार भोजन नगरों में रहने वाले कुमार कुमारियों के लिए ब्रह्मचर्य के नियमों के पालन को कुछ कठिन अवश्य बना देते हैं किन्तु मेरा विश्वास है कि बाह्य वातावरण विषयक कुछ कठिनाइयों के होते हुए भी किसी भी आर्य कुमार और कुमारी के लिए जिसने कम से कम क्रमश २५ और १६ वर्ष की आयु तक ब्रह्मचर्य के पालन का दृढ़ निश्चय कर लिया है ऐसा करना असम्भव नहीं । हा इसके लिये दृढ़ निश्चय, सन्ध्या, स्वाध्याय और सत्सङ्ग अनिवार्य हैं इसमे सन्देह नहीं। सन्ध्या से मेरा तात्पर्य कुछ वेद मन्त्रों के केवल शुकपाठ से नहीं है किन्तु आसन, गायत्री जप, भजन, आत्म निरीक्षण इत्यादि के द्वारा मनको वश में करने और उसे सच्चिदानन्द स्वरूप सर्व शक्तिमान भगवान के ध्यान में लगाने का है जो अभ्यास न केवल चित्त को शान्त बनाता है बल्कि मन और आत्मा की शक्ति का अत्यधिक बढ़ा देता है। स्वाध्याय से तात्पय जैसे आप सब जानते हैं वेदादि सत्य शास्त्रों अन्य उत्तम ग्रन्थों के पाठ से है । जैसे शरीर की रक्षा और पुष्टि के लिये प्राकृतिक भोजन अत्यावश्यक है ऐसे ही मन और आत्मा की शक्तियों के विकास के लिये सन्ध्या तथा स्वाध्याय अत्यावश्यक हैं अतः इनको प्रतिदिन करने का दृढ़ नियम सब आर्य कुमारों और कुमारियों को अवश्य बनाना चाहिए। आर्य कुमार परिषद् द्वारा आयोजित धार्मिक परीक्षाएं प्रत्येक व्यक्ति को स्वाध्याय के लिये अधिकाधिक योग्य बनाती हैं तथा विद्यालयों में धार्मिक शिक्षा के अभाव की पूर्ति करती हैं अतः अत्यन्त उपयुक्त हैं जिनमें आर्य कुमार कुमारियों तथा युवक युवतियों को अधिक तम संख्या में सम्मिलित होकर लाभ उठाना चाहिये। सब से मुख्य स्वाध्याय वेदों का है जिसके विषय में महर्षि दयानन्द जी ने आर्य समाज के तृतीय नियम में बताया था कि "वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ाना पढ़ना, सुनना सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।"

इस परम धर्म का पालन सब आर्य कुमार और कुमारियों को आर्याभिविनय, वेदामृत, वैदिक विनय तथा महर्षि दयानन्द जी कृत वेद भाष्यादि की सहायता से

अवश्य ही करना चाहिये। ब्रह्मचर्य के विरोधी भावों को उद्दीप्त करने वाले शृङ्गार प्रधान काव्य नाटक उपन्यासादि का सर्वथा बहिष्कार करके जीवन को उन्नत करने वाले धार्मिक ग्रन्थों का जिनमें महर्षि की सर्वोत्तम अमर कृति सत्यार्थ प्रकाश का स्थान सबसे ऊंचा कहा जा सकता है क्योंकि उसमें वेदों और शास्त्रों का निचोड़ भर दिया गया है अवश्य नियम पूर्वक प्रति दिन पाठ तथा मनन करना चाहिये। इस अमर ग्रन्थ की सब आक्रमणों से रक्षा के लिये यदि आर्य कुमारों को प्राणों की आहुति देने की भी आवश्यकता आ पड़े तो उसे देने मे संकोच न करना चाहिये। आर्य कुमारों की स्मृतिशक्ति तीव्र होती है अत यदि हजारों आर्य कुमार सत्यार्थ प्रकाश के उन समुल्लासों को कण्ठस्थ कर लें जिनकी जब्ती का अत्यन्त निन्दनीय आन्दोलन कुछ मतान्ध मुसलमानों ने कर रक्खा है तो यह एक चिरस्मरणीय घटना होगी। किसी भी अवस्था में 'सत्यार्थ प्रकाश को जब्त न होने देने और प्राणपण से भी उसकी रक्षा का निश्चय सब आर्य कुमार कर ही चुके हैं किन्तु उन्हें यह भी स्मरण रखना चाहिए कि इसकी वास्तविक रक्षा उसकी शिक्षाओं के अनुसार अपने जीवन को पूर्णतया पवित्र, निर्व्यसन और निर्मल बनाने से ही हो सकती है केवल पाठ मात्र से नहीं।

वर्तमान सिनेमा और ब्रह्मचर्य

मैं ऊपर कह चुका हूँ कि वर्तमानकाल के सिनेमाओं ने सर्वत्र ब्रह्मचर्य विरोधी वायुमण्डल उत्पन्न कर दिया है अतः ब्रह्मचर्य रक्षार्थ आर्य कुमार कुमारियों के लिये यह आवश्यक है कि वे इन सिनेमाओं और नाटकों में जाना सर्वथा बन्द करदें। इस विषय में सार्वदेशिक सभा के मन्त्री जी के नाम लाहौर की कुछ शिक्षित देवियों से प्राप्त एक पत्र के कुछ आवश्यक अंशों को यहा उद्धृत करना अप्रासङ्गिक न होगा। उन्होंने लिखा है कि "हमारे हृदय तड़प रहे हैं। हम चाहती हैं कि इस समय जो देश को अवस्था है हमारी बहिनें वीराङ्गनाएं हों, बच्चे शूरवीर हों, भाई सदाचारी हों पर आज की नई शिक्षा प्रणाली और विशेषतः सिनेमा और टाकीज ने हमारी तीनों चीजों को पूरी तरह समेट रक्खा है। आर्य समाज का कई चिर का परिश्रम इस बीमारी ने आकर मिट्टी में मिला दिया है। जिस देश की आधार शिला ब्रह्मचर्य थी आज उसकी आधार शिला विषय विलास बन रहे हैं, अच्छे २ घरों की माताएँ बच्चों को फिल्मी गीत सिखाती हैं

सुनती सुनाती हैं, बच्चे गलियों में यही राग आलाप रहे हैं, नौ जवान सारी २ रात सिनेमा देखते हैं। उनके माता पिता जब उनकी सगाई करने के लिए जाते हैं लड़की वाले कहते हैं " सारी २ रात सिनेमा के गन्दे दृश्यों के देखने वाले को हम अपनी पुत्री कैसे दे दें।' जो भी अच्छे विचार के हैं सम्बन्ध नहीं करते। परिणाम यह हो रहा है नौजवान सारी आयु व्यर्थ व्यभिचारादि में गँवा देते हैं। ये हमारी आँखों देखी बातें हैं। कई माताएं तड़प रही हैं। उनके छोटे २ बच्चों को जब सिनेमा जाने से रोका जाता है तो पैसे चुरा २ कर भी सिनेमा देखते है। जो माता पिता स्वयं देखते हैं उनके बच्चों ने तो बिगड़ना ही हुआ पर जो नहीं चाहते वे रो रहे हैं। कथा २ गिन कर सुनाए आप स्वयमेव समझ सकते हैं जो बुरी हालत हमारे घरों की हो रही है।" इत्यादि

आर्य कुमार परिषद् की ओर से जहां गाली गलौज और दहेज की हानि कारक प्रथा तथा बीड़ी सिग्रेट सेवनादि के विरुद्ध प्रशसनीय आन्दोलन किया जाता रहा है वहां इस बात की भी आवश्यकता है कि इन ब्रह्मचर्य विरोधी भाव प्रसारक सिनेमाओं का पूर्ण बहिष्कार किया जाय और आर्य कुमार सभाएँ इस विषयक प्रबल आन्दोलन करके लोगों के सदाचार और ब्रह्मचर्य की रक्षा के पवित्र कार्य में तत्पर हों।

आर्य कुमार और सामाजिक क्रान्ति

इस समाज हिन्दू समाज की अवस्था कितनी शोचनीय है और किस प्रकार बाल्यविवाह, जातिभेद, अस्पृश्यता, दहेज इत्यादि की कुप्रथाए घुण की तरह समाज के शरीर को खाये जा रही हैं इस बात को आप सब जानते हैं। इस शोचनीय अवस्था पर रोने धोने से कोई लाभ नहीं। आवश्यकता हिन्दू समाज मे ही नहीं, बल्कि आर्य समाज में भी क्रान्ति लाने की है और इस कार्य में वीर योद्धा सैनिक आप आर्य कुमार बन्धु हो सकते हैं। आर्य समाज ने इन कुप्रथाओं के विरुद्ध युद्ध की घोषणा की और उसमें उसे पर्याप्त सफलता भी प्राप्त हुई किन्तु खेद है कि इन अत्यन्त हानिकारक समाज विघातक कुप्रथाओं ने समाज का पीछा नहीं छोड़ा। विशेषतः जन्म सिद्ध जाति भेद की प्रथा को निर्मूल करने में जिसका भयङ्कर परिणाम ही अस्पृश्यता का रोग है दुःख है कि आर्य समाज को भी अभी तक सन्तोष जनक सफलता नहीं मिली। सिद्धान्तरूप में जन्म सिद्ध वर्ण व्यवस्था वा जातिभेद को न

मानते हुए और उसकी हानियों को जानते हुए भी अनेक आर्य उसकी दलदल में फँसे हुए पाये जाते हैं, विवाह सम्बन्ध निश्चय करने के अवसर पर उनमें से बहुतों के अन्दर भी कल्पित जन्म मूलक बिरादरी के भय का भूत सवार हो जाता है और उन्हें अपने सिद्धान्त के विरुद्ध काय करने तथा इस प्रकार वास्तविक आत्म-हत्या करने को विवश कर देता है। सैकड़ो ऐसे उदाहरण प्रस्तुत किये जा सकते है जिनमे प्रतिष्ठित आय घरानों की कन्याओं का सम्बन्ध कल्पित बिरादरी के भय से ऐसे अनार्यों से कर दिया गया जहाँ उनका जीवन पुष्प विकसित होने के स्थान पर सर्वथा कुम्हला गया। शुद्धि और दलितोद्धार का प्रशसनीय और अत्यावश्यक आन्दोलन आर्य समाज ने चलाया और उसमे कुछ अंश तक उसे सफलता भी मिली किन्तु इस जाति भेद की चट्टान के साथ टकराकर वह बहुत कुछ चकनाचूर हो गया। यदि अस्पृश्य वा अछूत कहलाने वाले भाइयों को शुद्ध करके वा आर्य समाज मे प्रविष्ट करके भी उन्हें 'महाशय' वा 'आर्य' का नाम देकर पृथक् जाति के रूप में रक्खा जाए तथा उनके साथ उचित सामाजिक सम्बन्ध रखने का साहस आर्यों के अन्दर न हो और शुद्धि शुदा व्यक्तियों के साथ भी इसी प्रकार का रूखा सूखा व्यवहार हो तो आप ही सोचिये कि ये आन्दोलन कैसे सफल हो सकते हैं अत प्रिय आर्य कुमार बन्धुओ। उठो, कमर कसो और इस सामाजिक क्रान्ति के अग्रसर दूत तुम्हीं बनो। शास्त्रीय वर्णव्यवस्था की आड़ में जाति भेद की जड़ो को दृढ़ करने से अब काम न चलेगा। अब तो उसका समूल नाश ही करना होगा। प्रतिज्ञा करो कि तुम जान बूझ कर जाति बन्धन तोड़ कर और केवल गुण कर्म स्वभाव का विचार करके ही विवाह करोगे, अस्पृश्यता को अपने किसी भी व्यवहार में न आने दोगे, सब के साथ समानता, प्रेम और सहानुभूति का व्यवहार करोगे। यदि कुमार हो तो २५ और कुमारी हो तो कम से कम १६ वर्ष की आयु से पूर्व भूल कर भी अपना विवाह न होने दोगे चाहे तुम्हारे माता पिता वा अन्य सम्बन्धी भी इसके लिए तुम्हें बाधित कर रहे हों। प्रेम और दृढ़ता के साथ उनकी ऐसी धर्म विरुद्ध आज्ञाओं का पालन करने तथा धर्म विरुद्ध इच्छाओं की पूर्ति करने से इन्कार कर दो। दहेज की राक्षसी प्रथा की बुराइयों को जानते हुए जिसने सैंकड़ों घर नष्ट कर दिये हैं तथ कुमारी स्नेहलता जैसी हजारों निरपराध देवियों के रक्त से जो रंजित हो चुकी है निकट और इष्टतम बन्धुओं की प्रेरणा पर भी कभी उसे स्वीकार न करो तथा इसके विरुद्ध प्रबल आन्दोलन निरन्तर जारी रक्खो

बीड़ी सीग्रेट, सिनेमा तथा सब प्रकार के व्यसनों और आर्य संस्कृति विरुद्ध विदेशी वेष भूषा फैशन, आहार व्यवहारादि से अपने को सदा दूर रक्खो। इस प्रकार समाज सुधार और सामाजिक क्रान्ति के लाने में जो कष्ट तुम्हें सहन करने पड़ें ईश्वर पर विश्वास रखते हुए सहर्ष सहन करो किन्तु गुरुजनों के प्रति उचित विनय तथा अनुशासन का परित्याग न करो। समाज और देश की अधिकतम सेवा के लिए अपने को समर्थ बनाने का दिन रात प्रयत्न करो और अधिक नहीं तो विदेशी वस्त्रों का सर्वथा परित्याग करके सदा स्वदेशी वस्त्रों के ही धारण करने का व्रत ग्रहण करके अपनी देशभक्ति का परिचय दो। आर्य वीर दलों के अन्दर सम्मिलित होकर नियमित व्यायाम द्वारा अपनी शारीरिक शक्ति का पूर्णतया विकसित करो और सेवा, तप तथा त्याग की भावना को रखते हुए अपनी शक्ति को समाज और राष्ट्र की रक्षा के पवित्र कार्य में समर्पित करदो। विघ्न बाधाओं को देख कर कभी भयभीत न हो और वेद भगवान् के इस पवित्र सन्देश को श्रवण कर हृदयाङ्कित करो कि—अश्मन्वती रीयते सरभध्वम् उत्तिष्ठत प्रतरता सखाय'। अत्रा जहीमो अशिवा येऽसन् शिवान् वयमुत्तरेमाभि वाजान्॥ (यजु० ३५। १०)

अर्थात् संसार रूप पथरीली नदी बह रही है हे मित्रो। तुम उठो, तय्यार हो हो जाओ, सगठित होकर कमर कसलो और इस विघ्न बाधा रूप पत्थरों से भरी हुई नदी के पार चले जाओ। जो दुर्गुण हैं उन सबको हम यहीं छोड़ देते है और उत्तम गुणों और शक्तियों को धारण करते हुए इस नदी के पार पहुँच जाते हैं।

इससे बढ़कर स्फूर्तिदायक उत्तम सन्देश मैं आपको क्या दे सकता हूँ? इसे सुनिये और विघ्न बाधाओं की परवाह न करते हुए तथा अपने संगठन को दृढ़ करते हुए तपस्वी, कर्मयोगी बन कर समाज के अन्दर विशुद्ध क्रान्ति लाने और देश को स्वतन्त्र करने में तत्पर हो जाइये। भारत माता कातर नयनों से आपकी ओर निहार रही है उसे निराश न करिये।

'अदीनाः स्याम शरद' शतम्' का प्रतिदिन सन्ध्या में पाठ करते हुए देश को प्रत्येक दृष्टि से स्वाधीन बनाने का यत्न कीजिये। आर्य समाज -और देश का का भविष्य आप पर निर्भर है। आप ही समाज के आशास्रोत हैं। अपने उत्तरदायित्व और कर्तव्य को पहिचानिये। आर्य समाज के ग्राम प्रचार, दलितोद्धार,

शिक्षाप्रसार, आर्य भाषा प्रचारादि उत्तम कार्यक्रम की पूर्ति में सहायता दीजिये। अपने सामने धर्म, समाज और राष्ट्र सेवा का उच्च—आदर्श रख कर उसकी ओर निरन्तर बढ़ते जाइये। भगवान् आपके सहायक होंगे। उनका तथा महर्षि दयानन्द जी, स्वामी श्रद्धानन्द जी जैसे महात्माओं का मङ्गलमय आशीर्वाद सदा आप के साथ रहेगा।

"पुरुषो वाव यज्ञः"

न त्वहं कामये राज्यं, न स्वर्गं नापवर्गकम्।
कामये दुःखतप्तानां, प्राणिनामार्तिनाशनम्॥

इत्यादि वाक्यों में वर्णित यज्ञ अर्थात् स्वार्थ त्याग, लोक सेवा दुःखियों के दुःख दूर करने की भावना आपके अन्दर सदा जागृत रहे यही मेरी हार्दिक कामना और सन्देश है।

आपके प्रेम के लिये मैं पुनः आपको धन्यवाद देता हूँ।

धर्मदेव विद्यावाचस्पति

मेरठ ज़िला आर्य कुमार सम्मेलन तथा उसके प्रस्ताव

ता० १७-४४-४ सोमवार को रात्रि के ८३ बजे से गाज़ियाबाद नगर में घण्टाघर के समीप एक पंडाल में लगभग ५ हजार जनता की उपस्थिति में ज़िला मेरठ आर्यकुमार सम्मेलन की कार्यवाही श्रीयुत पंडित धर्मदेव जी विद्या वाचस्पति स० मन्त्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की प्रधानता में हुई—

जिस में मेरठ, मवानाकलाँ, गाज़ियाबाद, विशेष निमन्त्रित दिल्ली, गुलावठी, खुरजा, व मुरादाबाद की कुमार सभाओं के प्रतिनिधि सम्मिलित हुवे।

सर्व प्रथम श्रीयुत रिपुमदनपाल जी M A LL B ने स्वागताध्यक्ष पद से अपना भाषण पढ़ा—तदनन्तर श्री पं० धर्मदेव जी विद्या वाचस्पति ने अपना भाषण पढ़ा उसके पश्चात् श्रीमती विद्यावती देवी जी (धर्म पत्नी प० धर्मदेव जी) का आर्य वीर कर्तव्य विषयक भजन हुआ। तत्पश्चात् इस सम्मेलन में निम्नलिखित प्रस्ताव पास हुवे:—

१—यह सम्मेलन आर्यकुमारों से अनुरोध करता है कि वे अपने तथा सम्बन्धियों के विवाह के अवसर पर वधू पक्ष से ठहराकर लेने की अवैदिक और हानिकारक प्रथा का बहिष्कार करें और समस्त आर्य कुमार सभाओं का कर्त्तव्य है कि वे हर प्रकार से इस निन्दनीय दहेज प्रथा के विरुद्ध प्रबल आन्दोलन में पूर्ण सहयोग दें।

२—गत शताब्दी के सर्वोत्तम समाज सुधारक महर्षि दयानन्द जी की अमर कृति 'सत्यार्थ प्रकाश' आर्य मात्र के लिये वैदिक धर्म के सच्चे स्वरूप को प्रदर्शित करने वाला पवित्र धर्म ग्रन्थ है जिसका प्रतिदिन स्वाध्याय करना, उनकी शिक्षाओं को आचरण में लाना और उसकी रक्षा के लिये सब प्रकार का त्याग और बलिदान करने के लिये उद्यत रहना प्रत्येक आर्य कुमार का कर्त्तव्य है। यह सम्मेलन इस पवित्र धर्म ग्रन्थ के कुछ भागों की ज़ब्ती विषयक मुसलिमलीग आदि के आन्दोलन को घृणा की दृष्टि से देखता है और आर्य जनता को विश्वास दिलाता है कि समस्त आर्य कुमार इस पवित्र धर्म ग्रन्थ की रक्षा के लिये बड़े से बड़े बलिदान करने में ज़रा भी संकोच न करेंगे, यदि भारत व प्रान्तीय सरकार

ने आर्यों के लिये ज्योतिस्तम्भ रूप इस ग्रन्थ रत्न के किसी भी भाग की जब्ती का अविवेक पूर्ण कार्य करने की ग़लती की।

३-यह सम्मेलन आर्य कुमारों का ध्यान अपने इस कर्तव्य की ओर आकर्षित करता है कि वे ब्रह्मचर्य के नियमों का यथा सम्भव पालन करते हुवे अपनी शारीरिक, मानसिक, और आत्मिक शक्तियों को विकसित करने का पूर्ण प्रयत्न करें तथा बीड़ी सिगरेट चाट सेवन इत्यादि व्यसनों से सर्वथा दूर रहकर पवित्र जीवन व्यतीत करें और अन्यों को वैसा करने की प्रेरणा करें।

४-(क) यह सम्मेलन आर्य कुमारों से अनुरोध करता है कि वे प्रतिदिन धार्मिक ग्रन्थों के स्वाध्याय करने की प्रतिज्ञा लें और परिषद् की परीक्षाओं में सम्मिलित होने का प्रयत्न करें।

(ख) यह सम्मेलन आर्य कुमारसभाओं से अनुरोध करता है कि निर्वाचन के समय परिषद् की परीक्षाओं में उत्तीर्ण कुमारों को विशेषता (Prefereuce) दें।

५-इस मेरठ जिला आर्य कुमार सम्मेलन को यह जानकर अत्यन्त दुःख हुवा कि गत् ६ मार्च सन् १६४४ को गढ़वाल के रौतेला नामक ग्राम के समीप श्री दर्शनसिंह जी आर्य की बारात पर लगभग २००० उच्च जात्यभिमानी लोगों ने आक्रमण करके पालकी को जला दिया, बारातियों को डंडे से और जूतों से मारा अनेकों को हाथ पैर बांधकर निर्दयता से पीट कर नदी में फैंकने की कोशिश की, उनके यज्ञोपवीत तोड़ डाले और ऐसे ही अन्य अमानुषिक अत्याचार उन पर किये। उन सवर्ण लोगों के इस प्रकार के अत्याचारों को यह सम्मेलन निन्दनीय समझता है और डिप्टी कमिश्नर गढ़वाल तथा गवर्नर संयुक्तप्रान्त से अनुरोध करता है कि वे इस गम्भीर मामले की तुरत निष्पक्ष जांच कराकर अपराधियों को घोर दण्ड दिलावें ताकि ऐसी दुर्घटनाएं फिर न हो सकें। साथ ही यह सम्मेलन गढ़वाल के सवर्ण कहलानेवालों से सानुरोध निवेदन करता है कि वे अपनी इस संकुचित और निन्दित मनोवृत्ति को बदल कर उनके साथ प्रेम, समानता और सहानुभूति पूर्ण व्यवहार करें।

६-देश तथा जाति की परिस्थितियों का ध्यान रखते हुए आर्य कुमारों का तथा कुमारियों का जिनके ऊपर देश तथा जाति की स्वतन्त्रता और उन्नति निर्भर है परम कर्तव्य है कि वे अपनी मानसिक तथा आत्मिक उन्नति के साथ २

आर्य वीर दलों में सम्मिलित होकर अपनी शारीरिक उन्नति कर पूर्ण सैनिक बनें ताकि आवश्यकता के समय देश, धर्म और जाति की रक्षा का महत्त्व पूर्ण कार्यभार अपने ऊपर लेने मे वे समर्थ हो सकें।

प्रस्तावक—श्री ओ३म् प्रकाश जी स० प्रधान सेनापति अ० भा० आर्य वीरदल

अनुमोदक—श्री ला० रामगोपाल जी दलपति आर्य वीरदल देहली

७—इस आर्य कुमार सम्मेलन की निश्चित और दृढ़ सम्मति है कि जब तक जन्म सिद्ध जाति भेद और अस्पृश्यता की हानिकारक प्रथाए समाज मे विद्यमान हैं तब तक समाज का वास्तविक उद्धार तथा शुद्धि, दलितोद्धार आदि आन्दोलनों की सफलता असम्भव है अतः यह सम्मेलन समस्त आर्य कुमार कुमारियों तथा युवक युवतियों से अनुरोध करता है कि वे जान बूझकर कल्पित जाति बन्धन तोड़कर केवल गुण-कर्मानुसार विवाह की दृढ़ प्रतिज्ञा करें और इस के कारण यदि उन्हे कुछ कष्ट उठाने पड़ें तो उन्हें कर्तव्य समझकर सहर्ष उठाएं। जाति भेद और अस्पृश्यता की कुप्रथाओं के विरुद्ध प्रबल क्रियात्मक आन्दोलन मे सब समाज-प्रेमी पूर्ण सहयोग प्रदान करें।

८—इस आर्य कुमार सम्मेलन की निश्चित धारणा है कि समस्त भारत के लिये एक राष्ट्रीय भाषा का होना अत्यावश्यक है जिसमें भिन्न २ प्रान्तों के निवासी परस्पर विचार विनिमय कर सकें ऐसी राष्ट्र भाषा संस्कृत बहुल हिन्दी भाषा ही हो सकती है विशेषतः आर्यों के लिये तो आर्य समाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द जी के आदेशानुसार इस आर्य भाषा को सीखना और इसे दैनिक व्यवहार में लाना अनिवार्य है अतः यह सम्मेलन समस्त आर्य कुमार कुमारियों तथा आर्य जनता से अनुरोध करता है कि वे धार्मिक तथा राष्ट्रीय कर्तव्य समझ कर हिन्दी भाषा को अवश्य सीखें और अपना समस्त व्यवहार इसमे किया करें।

९—इस आर्य कुमार सम्मेलन की दृढ़ और निश्चित सम्मति है कि वर्तमान काल के नाटकों और सिनेमाओं से कुमार कुमारियों और और युवक युवतियों के चरित्र पर बुरा प्रभाव पड़ता है तथा इन के कारण ब्रह्मचर्य विरोधी वायुमण्डल उत्पन्न हो जाता है—अतः यह सम्मेलन ब्रह्मचर्य और सदाचार की रक्षार्थ सब आर्य नर नारियों और विशेषतः आर्य कुमारों और कुमारियों से अनुरोध करता है कि वे नाटकों और सिनेमाओं का पूर्ण बहिष्कार करें।

जिला मेरठ आर्य कुमार परिषद् का निर्वाचन इस प्रकार हुवा—

प्रधान—श्रीयुत विश्वम्भर सहाय जी प्रेमी-मेरठ

उपप्रधान—श्रीयुत देवीदयाल जी—गाजियाबाद

मन्त्री—श्रीयुत रघुनन्दन प्रसाद जी—मेरठ

उपमंत्री—श्रीयुत रमेशचन्द्र जी गाजियाबाद तथा नवाबसिंह जी मवानाकला

कोषाध्यक्ष—श्री रमेशचन्द्र जी (उपमन्त्री ही) कार्य करेंगे

पुस्तकाध्यक्ष—श्री प्रियव्रत जी मवाना कला।

अन्तरग सदस्य—कान्तिप्रसाद जी दुबलिस मवाना कला
विश्वम्भर सहाय जी हापुड़
कृष्णकुमार जी हापुड़
रामस्वरूप जी गुलावठी
रामजीदास हितैषी मवानाकला
व्रजमोहन जी गाजियाबाद
जनार्दन जी गाजियाबाद

इस परिषद् की सदस्यता के लिये ७) वार्षिक चन्दा देना होगा। ५) भारत वर्षीय कुमार परिषद् का चन्दा तथा २) जि० कुमार परिषद् का चन्दा।

देवीदयाल उपप्रधान
मेरठ जिला आर्य कुमार परिषद्

देहली प्रान्तीय आर्य कुमार सम्मेलन

यह सम्मेलन २०-४-४४ को श्री हरिश्चन्द्र जी एम० ए० बी० टी० प्रिन्सिपल डी० ए० वी० हायर सैकन्डरी स्कूल के सभापतित्व में हुआ जिस में मेरठ जिला आर्य कुमार सम्मेलन में स्वीकृत ऊपर प्रकाशित प्रस्तावों के अतिरिक्त निम्न लिखित प्रस्ताव भी स्वीकृत हुआ 'यह सम्मेलन देहली प्रान्त में आर्य कुमारों तथा आर्य कुमारों के सगठन एव पथ प्रदर्शन के लिये दिल्ली प्रान्तीय आर्य कुमार परिषद् की स्थापना की आवश्यकता अनुभव करता है और इस कार्य की पूर्ति के लिये निम्न सज्जनों की एक अस्थायि उपसमिति बनाना स्वीकार करता है—

श्री देवव्रत जी धर्मेन्दु
श्री प० धर्मवीर जी प्रेमी एम ए.
श्री देवीदयाल जी

भारत वर्षीय आर्य कुमार परिषद् की सूचना

सम्मेलन की तारीखें

२८वा भारत वर्षीय आयकुमार सम्मेलन जा १९ २० २१ तथा २२ मई को मुरादाबाद में हो रहा था किन्हीं कारणों से अब २२-२३ २४ तथा २५ जून सन् १९४४ को होगा।

परीक्षाओं का फल

भारत वर्षीय आर्य कुमार परिषद् की धार्मिक परीक्षाओं का फल अप्रैल मास के अन्तिम सप्ताह में सब केन्द्रों में भेज दिया है जिन केन्द्रों में न पहुंचे वे कार्यालय को सूचित करें।

पाठ विधि अपरिवर्तित रही

परीक्षाओं की पाठविधि इस वर्ष परिवर्तित नहीं हुई है अत आगामी वर्ष के लिये विगत वष की पाठ विधि के अनुसार ही छात्र गण तैयारी प्रारम्भ करें और जिनको पाठ्य क्रम चाहिये वे कार्यालय से मगा लेवें। —परीक्षा मन्त्री

विहार प्रान्तीय आय कुमार परिषद्

श्रीयुत रामनारायण जी प्रधान मन्त्री, बिहार प्रान्तीय आर्य कुमार परिषद् सूचित करते हैं कि हमारे प्रान्त मे आय कुमार परिषद् का कार्य इन दिनों काफ़ी सफलता के साथ चल रहा है। सर्वत्र नई नई कुमार सभायें स्थापित हो रही हैं विगत फरवरी मास में परिषद् का नया चुनाव इस रूप में हुआ—

प्रधान—श्री प० महादेवशरण जी मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल महा विद्यालय
वैद्यनाथ धाम, सथाल परगना

उप प्रधान—श्री सरयूप्रसाद जी खगड़िया, मु गेर
श्री रामचन्द्र जी पटना सिटी

प्रधान मत्री—श्री रामनारायण जी विद्या रत्न, काव्य तीर्थ शास्त्री,

उप मन्त्री—श्री मदनमोहन जी बांकीपुर
श्री कृष्णानन्द जी कमतौल (दरभगा)

कोषाध्यक्ष—श्री आनन्द प्रकाश जी स्नातक गुरुकुल वैद्यनाथ धाम

लेखा निरीक्षक—श्री गोपालकृष्ण जी, बॉकीपुर

अन्तरंग सदस्य—श्री उमाकान्त जी, प्रो० धर्मप्रियलाल जी
श्री विश्वम्भर जी, श्री भोलाप्रसाद जी
श्री नरेन्द्रनाथ जी, श्री सत्यनारायण जी
श्री विश्वनाथ जी

सम्मानित सदस्य—रायबहादुर ब्रजनन्दन सिंह जी, श्री पं० वासुदेव शर्मा, श्री पं० सिद्धेश्वरजी, राजगुरु पं० धुरेन्द्रजी शास्त्री, स्वामी अभेदानन्दजी, प्रो० धर्मेन्द्रनाथ जी, स्वामी रामानन्द जी

आर्य कुमार सभा नई देहली के वार्षिकोत्सव पर आयोजित स्वाध्याय सम्मेलन १६-४-४४

प्रधान—पं० धर्मदेव जी विद्यावाचस्पति

सर्व सम्मति से स्वीकृत प्रस्ताव

यह सम्मेलन निश्चय करता है कि कुमारों को सरकारी शिक्षा विभाग द्वारा नियत की गई मैट्रिक आदि परीक्षाओं के अतिरिक्त अखिल भारतवर्षीय आर्य कुमार परिषद् द्वारा सचालित व सयोजित सरोज, रत्न, भास्कर और शास्त्री परीक्षाओं में भी अवश्य भाग लेना चाहिये ताकि धार्मिक शिक्षा से उनके सच्चे जीवनोपयोगी ज्ञान की वृद्धि हो सके। साथ ही यह समस्त आर्य कुमार-कुमारियों से अनुरोध करता है कि वे वेदादि धार्मिक ग्रन्थों का प्रतिदिन स्वाध्याय अवश्य किया करें जिससे उनके मन और आत्मा की शक्तियों का विकास हो सके।

प्रस्तावक—श्री प० ज्ञानेश्वर जी विद्यानिधि

अनुमोदक—श्री प० वीरेन्द्र जी विद्यालङ्कार

अनुमोदक—श्री पं० सत्यव्रत जी वानप्रस्थ

" श्री प० देवव्रत जी धर्मेन्दु

संचालक—आर्य कुमार सभा

आर्य वीर दलों के लिये बौद्धिक शिक्षा

(पाठ ८)

आर्य वीर और राष्ट्र धर्म

(लेखक—श्री इन्द्र जी विद्यावाचस्पति मन्त्री अ. भा. आर्यवीर दल समिति तथा सार्वदेशिक आ० प्र० सभा देहली)

यह किसी पूर्व लेख में बतलाया जा चुका है कि आर्य वीर का मुख्य कर्त्तव्य आर्य धर्म, आर्य जाति, और आर्य देश की सेवा और रक्षा करना है। यद्यपि सामान्य रूप से उस विवेचन में इस प्रश्न का उत्तर दे दिया है, कि आर्य वीर का राष्ट्रीयता से क्या सम्बन्ध है। तो भी प्रश्न अत्यन्त व्यावहारिक होने से कुछ जटिल है। इस कारण इस लेख में मैं उस पर विशेष रूप से विचार करूंगा।

आरम्भ में यह बात तो स्पष्ट रूप से समझ लेनी चाहिये कि राष्ट्र के प्रति जो सामान्य कर्त्तव्य है उससे तो न आर्य वीर ही मुक्त हो सकता है और न कोई अन्य व्यक्ति ही वह चाहे किसी मत या सम्प्रदाय का मानने वाला हो राष्ट्र के प्रति उसका धर्म अन्य धर्मों की भाँति अनिवार्य है। वह पण्डित हो या मौलवी, पादरी हो या ग्रन्थी भारतीय राष्ट्र का अंग होने से राष्ट्र पर संकट आने पर उसके निवारण के लिये जी जान से यत्न करना उसका कर्त्तव्य होगा।

यह तो है राष्ट्र के अन्य सदस्यों की तरह आर्य वीर का राष्ट्र के प्रति कर्त्तव्य। अब प्रश्न यह रह जाता है कि आर्य वीर होने से राष्ट्र के लिये उसका कोई विशेष कर्त्तव्य बनता है या नहीं।

आर्य वीर दल आर्य जाति की भुजा है

यदि आर्य समाज के सारे संगठन को एक शरीर से उपमा दें, तो आर्य वीर दल को उसकी एक भुजा कह सकते हैं, जो जाति में क्षत्रिय का काम है, वह आर्य समाज में आर्य वीरों का काम है। आर्य समाज आर्य जाति की सेना का वह भाग है जो सदा सेना से आगे चलता है। पुराने समय में सेना के आगे घुड़सवार चला करते थे, आज कल टैंकों के दस्ते चलते हैं। आर्य जाति की सेना में आर्य समाज घुड़सवारों या टैंकों की हैसियत रखता है। ऐसे आर्य समाज की भुजा आर्य वीरदल है। एक आर्य वीर का कर्त्तव्य कितना कठिन है इसका अनुमान ऊपर दी हुई उपमा से लगाया जा सकता है। हम कह सकते हैं कि आर्य जाति में जो पदवी आर्य-

समाज की है आर्य समाज में वही पदवी आर्य वीर दल की होनी चाहिये। यदि आर्य वीर अपने कर्त्तव्य का भली प्रकार पालन करेगा तो वह आर्य देश और आर्य जाति का सबसे प्रथम सिपाही बन सकता है।

धर्म और राजनीति

यहाँ सम्भवतः यह तर्क उठाया जाय कि जब आर्य समाज एक धार्मिक सभा है, और उसका प्रचलित राजनीति से कोई सम्बन्ध नहीं है तो आर्य वीर दल का प्रचलित राजनीति से कोई सम्बन्ध कैसे रह सकता है? यह तर्क एक प्रकार से सर्वथा उचित है। आर्य वीर दल का समूह रूप से प्रचलित राजनीति से कोई सम्बन्ध नहीं रह सकता, परन्तु आर्य वीर का अपने देश की राजनीति से गहरे से गहरा और निकट से निकट सम्बन्ध होना चाहिये। आर्य वीर दल आर्य-वीर का शिक्षणालय है और साथ ही आर्य समाज की सामूहिक सेवा का साधन भी है। आर्य वीर को यह स्मरण रखना चाहिये, कि यहाँ से उसके कर्त्तव्य का आरम्भ होता है, अन्त नहीं। आर्य वीर ने अपने धर्म, देश, और जाति की रक्षा करने की दीक्षा ली है। कर्त्तव्य की पुकार होने पर वह पीछे कदम नहीं रख सकता। हमारा देश और जाति के प्रति जो कर्त्तव्य है उसी का दूसरा नाम राष्ट्र धर्म है। जो आर्य वीर राष्ट्र की रक्षा, राष्ट्र के अधिकारों की रक्षा और राष्ट्रीय संस्कृति की रक्षा करने वाले सिपाहियों की अगली श्रेणी में नहीं रहता वह आर्य-वीर कहलाने योग्य नहीं है।

राष्ट्रीय शक्ति के बिना धर्म की रक्षा संभव नहीं

यह एक निर्विवाद सचाई है, कि राष्ट्र की राजनैतिक सत्ता के बिना धर्म संस्कृति आदि किसी भी कीमती वस्तु की रक्षा नहीं की जा सकती। सारा इतिहास इस सचाई को सिद्ध करता है। जब कभी इस सत्य को भुलाने की भूल की गई, तभी धर्म और संस्कृति पर संकट आगया। जिस ऋषि विश्वामित्र ने एक समय कहा था कि धिग् बलं क्षत्रिय बलं ब्रह्मतेजो बल बलम्" (क्षत्रिय के बल को धिक्कार है, वास्तविक बल तो ब्राह्मण का बल ही है) उसी ऋषि विश्वामित्र को यज्ञ पर संकट आने के समय राजा दशरथ के पास जाकर रक्षा की माँग पेश करनी पड़ी थी। बड़े बड़े तपस्वी, ऋषियों और हिमालय के शासक देवताओं तक को अपनी रक्षा के लिये क्षत्रियों का द्वार खटखटाना पड़ता था। संसार के उत्तम

से उत्तम पदार्थों की रक्षा राजनैतिक शक्ति द्वारा की जा सकती है। आर्य वीर ने प्रण लिया है कि वह आर्य धर्म और आर्य संस्कृति की रक्षा करेगा। राष्ट्र की नैतिक सत्ता के बिना इन दोनों वस्तुओं की रक्षा नहीं हो सकती। इस कारण अपने राष्ट्र की स्वाधीन सत्ता की स्थापना और रक्षा में तन, मन और धन से यत्नवान् होना प्रत्येक आर्य वीर का धर्म है। वेदोक्त राष्ट्र धर्म का यही सार है।

महर्षि दयानन्द व अन्य धर्म सुधारक

(३)

ईसाइयत के ईसाई आलोचक

(लेखक—श्री पं० हरिदत्त जी वेदालङ्कार गुरुकुल काङ्गड़ी)

योरोप के मध्यकाल के धर्म सुधारकों के बाद, यदि हम योरोप के आधुनिक इतिहास के ईसाई आलोचकों की ओर आयें और उन व्यक्तियों की रचनाओं का स्वाध्याय करें, जिन्होंने योरोप के बुद्धिवाद के वर्त्तमान युग का श्रीगणेश किया है तो हमें ज्ञात होगा कि उन की आलोचनायें भी स्वामी दयानन्द जी की आलोचनाओं की अपेक्षा बहुत कठोर हैं।

थामस पेन (१७३७–१८०६ ई०) एक प्रसिद्ध अंग्रेज लेखक है, जिसने १८ वीं सदी में प्रजातन्त्र एवं बुद्धि स्वातन्त्र्य के लिये प्रबल आन्दोलन किया। संयुक्त राज्य अमेरिका के स्वातन्त्र्य युद्ध में, उसने लेखक के रूप में जबरदस्त भाग लिया था। संयुक्तराज्य अमेरिकाके प्रथम राष्ट्रपति श्री वाशिङ्गटनने उसकी लिखी हुई कॉमन सेन्स Common Sense पुस्तक के बारे में यह कहा था कि इस पुस्तक ने मनुष्योंके दिलों में एक आश्चर्यजनक परिवर्तन करदिया था। सं० रा० अमेरिका के स्वतन्त्रता युद्ध की सफल समाप्ति के ११ वर्ष बाद उस ने इंगलैंड लौटकर पिट की नीति की आलोचना की तथा बर्क की फ्रेंच राज्य क्रान्ति के विरुद्ध लिखी पुस्तक 'फ्रान्स की क्रान्ति पर विचार (Reflections on the Revolution in France) का मनुष्य के अधिकार (The Right of man) नामक पुस्तक में मुंह तोड़ जवाब दिया था। इस पुस्तक में मानवीय अधिकारों का प्रबल समर्थन था। पिट प्रायः कहा करता था कि पेन कहता तो ठीक है। किन्तु मैं क्या करूं ? यदि उसे प्रोत्साहित करू तो इगलैंड में एक खूनी क्रान्ति हो जाय। मार्च १७६२ में, पेन पर राजद्रोह का मुकद्दमा चलाया गया किन्तु वह इंगलैंड से भाग कर १७८६ की प्रसिद्ध फ्रेंच क्रान्ति से आन्दोलित फ्रांस में आगया। कुछ समय, वह फ्रांस में प्रतिष्ठित पदों पर रहा। किन्तु बाद में, फ्रेंच क्रान्ति के प्रसिद्ध नेता रोबेस्पियर से मत भेद होने पर, उसे १० मास तक कारावास में, सड़ना पड़ा। इसी बन्दी जीवन में, उसने अपनी सबसे महत्व पूर्ण पुस्तक

'बुद्धि का युग' (Age of Reason) का अधिकाश भाग लिखा। इस पुस्तक को, यारप में ईसाई धम के विरुद्ध युद्ध का प्रथमतम एवं तीव्रतम शंखनाद कह सकते हैं। हम इसी ग्रन्थ से, पेन की आलोचना के कुछ उदाहरण उपस्थित करेंगे। यह नहीं भूलना चाहिये कि पेन को ईसाइयों ने बहुत अधिक बदनाम किया है। उसे गाड़ियों में बैठने के लिये जगह नहीं दी जाती थी क्योंकि धर्म प्राण ईसाइयों का विश्वास था कि उसे अपने साथ गाड़ी पर बिठाने में ईश्वरीय कोप उस गाड़ी पर बिजली के रूप में गिरेगा। इस व्यक्ति को ईसाइयों ने सब दुर्गुणों का आगार सिद्ध करने का यत्न किया है किन्तु उस के वैयक्तिक चरित्र की उच्चता की झलक इस बात से मिल जायगी कि जब उसकी पुस्तकें लाखों की संख्या में बिक रही थीं, तब भी उसने पुस्तकों की आय को उत्तम कार्यों में व्यय करना उचित समझा। एक ऐसे ही समय में वह अपने मित्र से इस बात के लिये क्षमा मांगता है कि वह उसे मित्र को जूता इस लिये नहीं भेज सका कि जूता खरीदने के लिये उसे कर्ज लेना पड़ता और जब पेन का एक ग्रन्थ प्रकाशक ने यह लिखा कि पेन के नाम पर उसके यहां हजार से अधिक पाउण्ड जमा हैं तो उसने प्रकाशक को लिखा कि वैधानिक सुधारों के आन्दोलन करने वाली एक संस्था को वह धन राशि दान कर दो। पेन की आलोचना के कुछ नमूने देखिये।

बाइबल की सामान्य आलोचना करते हुए वह लिखता है कि "जब कभी हम विषयालु दुराचारों की अश्लील कहानियां, क्रूर एवं कुटिल हत्याकाण्ड और निमम प्रतिशोध का वर्णन पढ़ते हैं; जिस से आधे से अधिक बाइबल भरी पड़ी है तो यह अधिक उपयुक्त होगा कि हम इसे ईश्वरीय वाणी के बदले शैतान की वाणी कहें। यह दुष्टता का इतिहास है। इस दुष्टता ने मानव जाति को अधः पतित करने एवं पशु बनाने का प्रयोजन पूरा किया है। अपने तईं, मैं ईमानदारी से, इससे घृणा करता हूं जैसे कि मैं प्रत्येक क्रूर वस्तु से घृणा करता हूं[१]।

१ Whenever we read the obscene stories of the voluptuous debaucheries the Cruel and tortuous executions, the unrelenting vindictiveness with which more than half the Bible is filled it would be more consistent that we called it the word of demon than the word of God It is a history of wickedness, that has served to corrupt and brutalise mankind and for my own part, I sincerely detest it, as I detest everything Cruel. (The Age of Reason P. 8)

"इस पुस्तक में, ईश्वर की स्पष्ट आज्ञा से करवाये हुए ऐसे काम हैं, वे जो मनुष्य जाति व नैतिक न्याय के प्रत्येक प्रकार के विचार को स्तब्ध करदेने वाले हैं। फ्रांस में रोबेस पियेट, कारियें, जासफलिब्रों या आधुनिक समय के किसी भी हत्यारे के कामों के तुल्य हैं"२।

"यदि बाइबल को बिना भय के पढ़ना हो तो हमें मनुष्य के हृदय की प्रत्येक, सहानुभूति पूर्ण एव हितकर भावना का परित्याग करदेना चाहिये"३।

"विश्व के किसी भी काल के मानव के नाम को कलङ्कित करने वाली जघन्य दुरात्माओं में, मूसा की अपेक्षा अधिक दुरात्मा ढूंढना असम्भव है, यदि यह वर्णन सत्य हो। यहां लड़कों को क़त्ल करने, माताओं को मारने और पुत्रियों के सतीत्व को भंग करने की आज्ञा दी गई है"४।

"यह (बाइबल) झूठों, धूर्तता और ईश्वर निन्दा की पुस्तक है। इस से बढ़कर, ईश्वर निन्दा क्या हो सकती है कि मनुष्य की दुष्टता का कारण सर्व शक्तिमान् परमात्मा की आज्ञायें बत यी जायें"५।

---

२ There are matters in that book said to be done by the express command of God, that are as shocking to humanity and to every idea we have of moral justice as anything done by Robespierre, by carrier, by joseph-he-bon in France ---- or by any other assassin in the world (Age of Reason P. 35)

३ And to read Bible without horror we must undo everything that is tender, sympathising and benevolent in the heart of man (Ibid P 36.)

४ Among the detestable villains that in any period of the world have disgraced the name of man, it is impossible to find a greater than Moses if this account be true Here is an order to butcher the boys, to massacre the mothers and debauch the daughters (Ibid P 42)

५ It is a book of lies, wickedness and blasphemy, for what can be greater blasphemy than to ascribe the wickedness of man to the orders of the Almighty (Ibid P 42.)

पुराने अहदनामे (Old sestament) की उपदेशक की पुस्तक (The (Book of Ecclesiastes) की आलोचना करता हुआ पेन लिखता है— 'उपदेशक की पुस्तक को सुलेमान द्वारा लिखा हुआ बताया जाता है। यदि इस बात मे सत्य नहीं है तो प्रचुर तर्क अवश्य है। यह पुस्तक सुलेमान जैसे क्षीण व य लम्पट के एकान्त विचार के रूप में लिखी गयी है, जो उन पुराने आनन्दों का स्मरण कर रहा है जिनका वह उपभोग नहीं कर सकता। अत एव वह चिल्लाता है कि यह सब मिथ्या एव नि सार है"६।

कैण्टिकल्स Canticles या सुलेमान के गीतों पर पेन ने यह आलोचना की है— सुलेमान के गीत काम वासना के भावों से भरे हुए और मूर्खता पूर्ण है, तथापि झुर्रियों वाला बूढा कठमुल्लापन उसे ईश्वरीय कहता है७।

बाइबल मे, बार २ यह बात दुहराई गई है कि बाइबल ईश्वर की वाणी है। पेन ने इस पर बड़ी मजेदार चुटकी ली है वह लिखता है— '(बाइबल के) प्रत्येक अध्याय का शीर्षक तथा प्रत्येक पृष्ठ के ऊपर का भाग ईसा और चर्च के नाम से चमकाया गया है ताकि असावधान पाठक पढ़ने से पहले ही इस धोखे मे पड जाय"८।

बाइबल के पढनेवाले यह जानते हैं कि नये अहदनामे New Testament को पहली चार पुस्तकों के मैथ्यू मार्क, ल्यूक और जॉन ने ईसा के चार जीवन चरित्र लिखे हैं, उनमे परस्पर बहुत मतभेद है मैथ्यू का गिरिप्रवचन बाकी तीन

6 The book of Ecclesiastes or the Preacher is also ascribed to Solomon and that with much reason if not with truth It is written as the solitary reflection of a worn out debauchee such as Solomon was who looking back on scenes he can no longer enjoy cries out, all is vanity (Ibid P 56)

7 Solomon s songs are amorous and foolish enough, but which Wrinkled fanaticism has called Divine (Ibid P 56)

8 The head of every chapter and the top of every page, are blazoned with the names of Christ and the church, that the unwary reader might suck in the error before he began to read (Ibid P 58)

में नहीं मिलता। विभिन्न चमत्कारों के वर्णन में परस्पर बहुत वैभत्य एवं वैपरीत्य पाया जाता है। पेन कहता है कि यदि ये चारों अदालत में जाकर इस प्रकार की परस्पर विरोधी साक्षी देते जैसी कि उन्होंने बाइबल में की है तो उन्हें झूठी साक्षी देने के अपराध में कान कटवाने के दण्ड का खतरा होता (पेन के समय तक पुराने जमाने के अंग भंग आदि के दण्ड दिये जाते थे) और वे इसके अधि-अधिकारी भी हैं। ये साक्षी हैं और ये पुस्तकें हैं जो ईश्वरीय प्रेरणा और ईश्वर की अपरि वर्तनशील वाणी के नाम पर दुनियाँ पर मढ़ी जाती हैं।[9]

पेन अपनी आलोचना का उपसहार करते हुए लिखते हैं[10] क्या किसी अन्य ऐसी पुस्तक में—जो एक धर्म की पद्धति देने का दावा करती है—इतने झूठ, असत्य, विरोध और बेहूदगियां मिल सकती हैं जो नये और पुराने अहदनामे के प्राय. प्रत्येक पृष्ठ पर पायी जाती हैं ऋषि दयानन्द की युक्ति युक्त आलोचना में इतनी कठोरता नहीं। (शेष फिर)

---

9. Now if the writers of these four books had gone into any court of Justice to prove an abibi and had given their evidence in the same contradictory manner as it is here given they would have been in danger of having their ears cropped for perjury and would have justly deserved it Yet this is the evidence and these are the books that have been imposed upon the world as being given by divine inspiration and as unchangeable Word of God

10 Did we find in any other book pretending to give a system of religion, the false-hoods, falsifications, contradictions and absurdities which are to be met with in almost every page of the Old and New Testament (Ibid P. 73)

देहली में एक महत्त्वपूर्ण शास्त्रार्थ

सनातन धर्म के दिग्गज महा महोपाध्याय विद्वान् महीधर कृत वेद भाष्य मानने में घबरा उठे

[यह शास्त्रार्थ १–२–५४ को संस्कृत में लेख बद्ध हुआ था जिसका केवल भाषानुवाद ही पाठकों की सेवा में लिखा जाता है]

शास्त्रार्थ का आरम्भ

धर्म नगरी के सुविशाल पण्डाल में हजारों विद्वानों के बीच श्री स्वामी हरि हरानन्द जी सरस्वती (करपात्री जी) के प्रधानत्व में सुप्रसिद्ध आर्य विद्वान् श्री प० सुरेन्द्र जी काव्य वेद तीर्थ का सनातन धर्म के स्तम्भ महा महोपाध्याय श्रीयुत पं० अनन्तकृष्ण जी शास्त्री, वेदान्त विशारद मीमांसा रत्न, सर्वतन्त्र स्वतन्त्र संस्कृत लेक्चरर कलकत्ता यूनिवर्सिटी (मदरास प्रान्तीय) के साथ रात्रि के ९ से १०½ बजे तक यह शास्त्रार्थ हुआ। इस समय सनातन धर्म के गण्य मान्य विद्वान् शास्त्री इतनी अधिक संख्या में उपस्थित थे कि इससे पूर्व शायद ही कहीं एकत्रित हुए हों। इनमें न्याय व्याकरण, साहित्य, दर्शन,वेदान्त और वेदों के भी अनेकश विद्वान् उपस्थित थे।

शास्त्रार्थ मौखिक ही आरम्भ हुआ था किन्तु १–२ बारी रखने के बाद ही पहले से लेख बद्ध शास्त्रार्थ का कोई निश्चय न होने पर भी और प्रकाश लेखन साधनादि के न होते हुए भी श्री करपात्री जी ने लेख बद्ध शास्त्रार्थ का ही आग्रह किया। किन्तु इस प्रकार के व्यर्थ झंझट से ही कहीं अवसर न बीत जाये अतः उन के इस आग्रह को भी स्वीकार कर लिया गया और—

(१) श्री प० सुरेन्द्र जी शर्मा काव्य-वेदतीर्थ ने निम्नलिखित शास्त्रार्थ आरम्भ किया। महीधरकृत वेद भाष्य अश्लील तथा असम्भवादि दोष युक्त और वेदाशय के विरुद्ध होने से अमान्य है, एवं ऐसे भाष्यकार वेदोद्धारक नहीं किन्तु वेद दूषक ही हो सकते हैं। जैसे कि—

"गणानां त्वा गणपतिꣳ हवामहे. इति. यजु० २३-१९ तथा च यजु० २३-३२ मन्त्रों के भाष्य में लिखा है कि "महिषी अश्व शिश्नमाकृष्य स्वयोनौ

स्थापयेदिति" ।। अर्थात् यजमान पत्नी–महिषी अश्व शिश्न को खींच कर अपनी योनि में रक्खे। इत्यादि अर्थ वेदाशय से विरुद्ध, अश्लील और असम्भवादि दोष युक्त है अत महीधरकृत वेद भाष्य अमान्य है और ऐसे भाष्यकार भी वेद दूषक ही कहे जासकते हैं।"

(१) इसके उत्तर में महामहोपाध्याय श्री प० अनन्तकृष्ण जी शास्त्री ने कहा कि—

महीधर ने 'गणाना त्वा" आदि इस मन्त्र के भाष्य में ऐसा अर्थ किया ही नहीं है अत आपका आक्षेप निर्मूल है।

(२) श्री प० सुरेन्द्र जी शर्मा ने इसके प्रत्युत्तर में कहा कि—"हमारा पक्ष वा प्रतिज्ञा अथवा दावा तो यह है कि—महीधरकृत वेद भाष्य ही अश्लील व असम्भवादि दोष युक्त होने से अमान्य है न कि केवल एक मन्त्र—"गणाना त्वा, का भाष्य ही अमान्य है, और इस मन्त्र के भाष्य में भी महीधर ने—"हे सुरूप अश्व मम पति स्त्व भूयाः" तथा व "महिषी अश्व समीपे शेते" आदि लिखा ही है, फिर आपका यह कहना कि—महीधर ने इस मन्त्र के भाष्य मे ऐसा अथ नहीं किया, क्यों कर सत्य हो सकता है?

(२) श्री प० अनन्तकृष्ण जी शास्त्री ने—वेद तीर्थ जी से महीधर भाष्य लेकर पढ़ा और जब उन्हें उसमें उनका कहा हुआ पाठ ज्यों का त्यों मिल गया तब अपनी रक्षार्थ झट पट महीधर कृत अर्थ को छोड़कर कहने लगे कि—"महिषस्य भार्या सा महिषी" जो महिष की स्त्री हो वह महिषी (भैंस) है, अत यहां महिषी पद से यजमान की पत्नी का ग्रहण नहीं है तथा पशु महिषी (भैंस) का पशु महिष के साथ समागम होना कोई दोष युक्त अनुचित बात भी नहीं है। इसीलिये आपका आक्षेप नहीं ठहर सकता।

(३) इस पर श्री प० सुरेन्द्र शर्मा जी ने प्रत्युत्तर मे यजु० २३ वें अध्याय के ३२, ३३, ३६ तथा २० वें मन्त्रों के भाष्य में से निम्न वाक्य उद्धृत किये—

(क) "महिषीमुत्थाप्य पुरुषादधि क्राव्णा इत्याहु" का० २०। ६। २१ महिषीं यजमानस्य प्रथमपरिणीतां पत्नीमश्व समीपे सुप्तामुत्थाप्य पुरुषा अध्वर्यु ब्रह्मोद्गातृ होतृ क्षत्तारो मन्त्र पठेयुरिति सूत्राथ —यजु० २३–३२ मे।

(ख) तथा यजु० २३ के ३६ वें मन्त्र भाष्य पृ० ४४० पर "यजमान भार्या महिष्याद्या इत्यथः"। एवम्—

(ग) पृ० ४४० पर यजु० २३ के ३३ मन्त्रार्थ में—महिष्याद्यारितञ्ञः पत्न्याः। आदि के महीधर भाष्य में विस्पष्टतया लिखा है कि महिषी यजमान की प्रथम विवाहिता पत्नी होती है। यहां अश्वमेध का प्रकरण है अतः यजमान राजा है और महिषी उसकी प्रथम राणी पत्नी है। क्योंकि पशु महिषी के साथ ब्रह्मादि का वार्तालाप हँसी मजाक आदि करना भी सब असम्भव ही है। अतः यहा पर महिषी का अर्थ यजमान पत्नी ही है और यही अर्थ महीधर ने भी किया है, इसीलिये आप ने जो पशु महिषी भैंस) अर्थ किया है वह महीधर एवं इतर पौराणिक याज्ञिकों के मत से सर्वथा विरुद्ध अर्थ है। फिर यदि आपका अर्थ मान भी लिया जावे तो महिषी (भैंस) के साथ अश्व का समागम कराना भी सृष्टि नियम विरुद्ध एव घृणितार्थ ही होगा। और जो महिषी का पशु (भैंस) आपने किया है वह तो आपका ही अर्थ है महीधर का अर्थ नहीं है। किन्तु शास्त्रार्थ का विषय महीधरकृत वेदभाष्य पर है, न कि आपके अर्थ पर।

फिर आपका बदला हुआ अर्थ भी महीधरोक्त अश्लील व असम्भवादि दोषवत् सदोष होने के कारण अमान्य ही है और हमने महीधर भाष्य पर असम्भवादि दोष युक्त होने से अमान्य है आदि जो आक्षेप किया था वह आप पर ज्यों का त्यों ही बना हुआ है।

(३) इसके उत्तर में श्री प० अनन्तकृष्ण जी शास्त्री पहिले तो बहुत कुछ हेर फेर करते रहे परन्तु जब उनके सामने महीधर भाष्य ही रख दिया और महिषी पद से महीधर ने यजमान पत्नी ही अर्थ किया है, यह विस्पष्टतया दिखा दिया तब विवश होकर अन्त में कहने लगे कि—

यदि महिषी पद का अर्थ यजमान पत्नी भी करें तो फिर हम अश्व का अर्थ यजमान कर लेंगे। और महिषी-यजमान पत्नी तथा अश्व-यजमान, दोनों का समागम होना सम्भव हो है। ऐसा होने पर फिर भला आपको क्या दोषापत्ति है?

(४) इसके प्रत्युत्तर में श्री प० सुरेन्द्र शर्मा जी ने कहा कि—यद्यपि अन्त में आपने महिषी पद से यजमान पत्नी महीधरोक्त अर्थ तो विवशतया स्वीकार कर लिया परन्तु अश्व पद से यजमान अर्थ करना महीधर भाष्य के सर्वथा विरुद्ध है। क्योंकि महीधर ने कहीं भी अश्व का अर्थ यजमान नहीं किया एवम् अश्व का यजमान अर्थ करना भी सनातन धर्म की याज्ञिक पद्धति के

विरुद्ध ही है और यदि आप महीधर कृत अशुद्ध एवं असम्भवादि दोष युक्त अर्थ को त्याग कर सुसंगत यौगिक सम्भव अर्थ महिषी पद से यजमान पत्नी और अश्व पद से बलवान् यजमान अर्थ स्वीकार करते हैं, तो इस का हम स्वागत करते हैं। आप इसे लिख कर देने की कृपा कीजिये। परन्तु यह अर्थ आपका होगा न कि महीधर का। एवम् आपके ऐसा अर्थ स्वीकार करने पर भी महीधर भाष्य पर हमारा जो आक्षेप था वह ज्यों का त्यों ही बना हुआ है। अर्थात् महीधर कृत वेदभाष्य वेदाशय से विरुद्ध, अश्लील और असम्भवादि दोष युक्त होने से अमान्य है तथा ऐसे भाष्यकार वेदोद्धारक न होकर वेद दूषक ही हैं, इस आक्षेप का आपने कोई परिहार नहीं किया। अतएव महीधर कृत वेदभाष्य अमान्य और और महीधर वेददूषक सिद्ध हो गये।

इसके बाद श्री प० गिरिधर शर्म्मा जी शास्त्री महा महोपाध्याय ने कहा है कि अब समय अधिक हो गया है अत आज का शास्त्रार्थ यहीं समाप्त हो जाना चाहिये। शास्त्रार्थ समाप्त होगा।

हमें यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता है कि महामहोपाध्याय मान्य श्री प० अनन्त-कृष्ण जी शास्त्री ने सनातन धर्म के अन्य पण्डितों के समान उतना हठ न करके शीघ्र ही सत्य अर्थ को स्वीकार कर लिया यह बात उनके प्रचुर पाण्डित्य को चार चान्द लगाने वाली ही है। वास्तव में विद्वानों का यही कर्तव्य भी है कि सत्य अर्थ का ही सदा स्वीकार करें। इसी प्रकार यदि सनातन धर्म के अन्य विद्वान् भी पक्षपात छोड़कर सत्यार्थ को ग्रहण करने लग जावें तो अत्युत्तम हो।

इस प्रकार इस अभूत पूर्व सफल शास्त्रार्थ से उपस्थित विद्वन्मण्डल को भी यह भली भांति विदित हो गया कि शिक्षा व सभ्यता के इस युग मे महर्षि दयानन्द प्रदर्शित युक्ति व तर्क द्वारा सम्भव यौगिक सत्यार्थ को स्वीकार करने में ही उनका मस्तक ऊँचा रह सकता है। एवमस्तु। (एक प्रत्यक्षदर्शी)

गुरु ग्रन्थ साहेब में खण्डनात्मक कुछ वाक्य

(लेखक—श्री 'देव' श्री विद्या रत्न दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय लाहौर)

पौराणिक मत खण्डन

१ मूर्ति पूजा खण्डन—

मूल—हिन्दू मूले भूले अखुटी जाहीं। नारद कहि आसि पूज कराई॥
अंधे गुंगे अंध अंधार। पाथर ले पूजहि मुगध गवार॥
ओहि जा आपि डुबे तुम कहा तरण हार॥ राग बिहागड़ा म० १ पृ० ५५६

टीका—गुरु नानक देव जी कहते हैं कि हिन्दू मूल से ही भूले हुए हैं दूसरे मार्ग पर जा रहे हैं। जो नारद ने कह दिया उसी की पूजा करते हैं। अंधे हैं, गंगे हैं, अंधे के पीछे चलने वाले हैं। गँवार (मूर्ख) मुग्ध होकर पत्थर की पूजा करते हैं, वह पत्थर तो स्वयं ही डूब जायेगा पुनः तुमको कैसे तारेगा।

टिप्पणी—देखिये कितना कठोर शब्द है कि "पत्थर को पूजना" यदि मूर्ति की पूजा करते हैं ऐसा ही कह देते तो भी भाव में कोई अंतर नहीं था। पत्थर के पूजने वाले अंधे हैं, गूंगे हैं, गवार हैं, ये कोई नर्म शब्द हैं? फिर अंधे और गवार कहना प्रकरण सम्मत है। किन्तु गूंगे कैसे? गूंगे कहने से साफ प्रकट होता है कि आवेश में यह शब्द कठोरता के लिये प्रयोग किया है।

मूल—बुत पूज २ हिन्दू मुये तुरक मुये सिरु नाई।
ओइ ले जारे ओइ ले गाडे तेरी गति दुहू न पाई॥
राग सोरठ कबीर पृ० ६५४

टीका—भक्त कबीर जी कहते हैं कि बुतों (मूर्तियों) को पूज २ कर हिन्दू मर गये और तुरक (यवन) सिर झुका कर अर्थात् सिज़्दा करके मर गये भाव यह कि परमात्मा को न पाया आवागमन के चक्कर ही में फंसे रहे। हिन्दुओं ने मुर्दे लेजा कर जला दिये मुसलमानों ने गाड़ दिये। बस हे परमात्मा! तेरी गति दोनों ने नहीं पाई।

टिप्पणी—इसमें साफ़ कबीर साहब ने बताया है कि बुतपरस्त और सिजदा परस्त दोनों काल के चक्कर में हैं।

मूल—घरमहि ठाकुर नदरि न आवै। गल महि पाहणु लै लटकावै।
भरमे भूला साकतु फिरता। नीरु विरोले खपि २ मरता।
जिस पाहन कउ ठाकुर कहता। ओहु पाहणु लै उस कउ डुबता।
गुनहगार लूण हरामी। पाहण नाव न पारगिरामी।
राग सूही नं० ५ पृ० ३८-३६

टीका—गुरु अर्जुन देव जी कहते हैं कि ठाकुर (ईश्वर) घर में है दृष्टि-गोचर नहीं होता है। गले में पत्थर ले कर लटकाता है। हे साकत। (दुष्ट)। भ्रम में भूला हुआ फिरता है। पानी को मथ रहा है केवल खप २ के मरने के अतिरिक्त क्या मिलेगा। जिस पत्थर को तू ठाकुर कह रहा है वह पत्थर तुझ को लेकर डूब जायेगा। ओ गुनहगार। ओ लूण (नमक) हरामी। पत्थर नाव नहीं है जो पार लगावे।

टिप्पणी—पत्थर की पूजा करनी, पानी को मथना ही कहा है जिस भांति दधि मथने ही से नवनीत हाथ आता है किन्तु पानी के मथने से नहीं इसी भांति पत्थर की पूजा है यह गुरु अर्जुनदेव जी के वचन हैं देखिये। गुनहगार, लून-हरामी, ये कठोर शब्द नहीं हैं जो कि मूर्त्ति पूजक के लिये प्रयुक्त हैं?

मूल—जो पाथर को कहते देव। ताकी वृथा होवे सेव।
जो पत्थर की पाई पाय। ताकी घाल अजाई जाय।
अंतर देव न जानै अंधु। भ्रम का मोहिआ पावै फधु।
ना पाथर बोलै ना किछु देइ। फोकट कर्म निष्फल है सेव।
जो मृतक को चन्दन चढ़ावै। उस ते कहहु कवनि फल पावै।
जो मृतक को विष्टा माहि रुलाई। ता मृतक का क्या घट जाई।
कहत कबीर हौं कहौं पुकार। समझ देख साकत गवार।
राग भैरव म० ५ तथा कबीर पृ० ११६०

टीका—गुरु अर्जुनदेव जी तथा महात्मा कबीर जी कहते हैं उनके सकल कर्म व्यर्थ हैं। जो पत्थरों के पैरों पड़ने हैं उनकी सारी कमाई निष्फल जाती है। देव सबके अन्दर है अंधा नहीं जानता है। भ्रम का मोहा हुआ फंद (आवागमन) पाता है। पत्थर न तो बोलता ही है न कुछ देता ही है यह कर्म व्यर्थ है पत्थर की

सेवा करनी निष्फल है। जो मुर्दों को चन्दन चढ़ाते हैं उन से पूछो तुम्हें कौन फल मिलेगा ? यदि मुर्दे को विष्ठा (पाखाना) में मिलाओ, तो मुर्दे का क्या घट जावेगा ? अर्थात् कुछ नहीं ! कबीर साहब पुकार कर कहते हैं कि हे साकत गवार। (दुष्ट, मूर्ख) विचार के देख।

टिप्पणी—हिन्दू मूर्तिपूजक तो यवन मुर्देपूजक हैं क्योंकि यवन कब्रों की पूजा करते हैं उपरोक्त कठोर शब्दों में दोनों का खण्डन किया गया है।

मूल—कबीर पाहन परमेसुर किया पूजै सभ संसार।
इस भरवासे जो रहे बूडे काली धार ॥ १. १३७१

टीका—कबीर जी कहते हैं पत्थर को परमेश्वर मान कर सकल संसार पूजा करता है किन्तु जो इस पत्थर के भरोसे रहे वह काली धार (नरक) में डूब गये।

मूल—इक बिनु दूसर सोन चिनार।
भजन गढ़न समर्थ सदा प्रभु जानत है कर्तार ॥
कहा भयो जो अति हित चित कर बहु बिध सिला पुजाई।
पान थके पाहन कहिं परसत कछु कर सिद्ध न आई ॥
अछत धूप दीप अरपत है पाहन कछु न खैहै।
तामै कहा सिद्ध है रे जड़ तेहि कछु बर दैहै ॥
जो जीय होत देत कछु तुहि मन बचन कर्म बिचार ॥
केवल एक शरण स्वामी बिनु यों नहिं कहहि उधार ॥ दशम ग्रंथ राग देव गधारी।

टीका—एक के बिना दूसरा न जानो। बिगाड़ने और बनाने में वही समर्थ है वह कर्त्तार प्रभु सदैव सब कुछ जानता है। क्या हुआ जो बड़े प्रेम से अनेक भांति से शिला की पूजा की। उस पत्थर को छूते २ हाथ थक गये किन्तु सिद्धि कुछ भी न हुई। रे जड़। पत्थर को अक्षत, धूप, दीप अर्पण करता है पत्थर कुछ भी नहीं खायेगा, उस पत्थर में सिद्धि कहां है जो तेरे लिये कुछ वर देगा। अपने मन, वचन, कर्म से विचार के देख जो जीव होता तो तुझको कुछ देता, गुरु गोविंद सिंह जी महाराज कहते हैं कि केवल एक स्वामी की शरण के बिना इस भांति कुछ भी कभी उद्धार नहीं होगा।

टिप्पणी—देखिये दशम गुरु जी ने तर्कपूर्ण कैसे कठोर शब्दों में मूर्तिपूजा का खण्डन किया है।

मूल—काहूं लै पाहन पूजधरयो सिर काहूं लै लिंग गरे लटकायो।
काहू लखयो हरि अवाची दिशा महि काहू पछाह को शीश निवायो।
कोऊ बुतान को पूजत है पशु कोई मृतान को पूजन धायो।
कूर क्रिया उरझयो सभही जग श्री भगवान को भेद न पायो॥

सवैये दशम ग्रंथ

टीका—किसीने पत्थर पूजकर सिर पर रख लिया है, किसी ने लिंग गले में लटका लिया है किसी ने हरि को अवाची दिशा में देखा है कोई पच्छिम को शीश झुकाता है कोई पशु (मूर्ख) बुतों को पूजता है कोई मुर्दों को पूजने के लिये दौड़ा हुआ है। श्री गुरु गोविंदसिंह जी महाराज कहते हैं कि सारा ही जगत् क्रूर क्रिया में फसा हुआ है श्री भगवान् का भेद किसी ने नहीं पाया है।

टिप्पणी—इस में साफ मूर्तिपूजा, इत्यादिक कर्मों का खण्डन किया गया है लिङ्गायत शिवलिंग को गले में लटकाते हैं, मुसलमान पच्छिम को शीश झुकाते हैं तथा मुर्दों को पूजते हैं।

मूल—पाती तोरै मालिनी पाती पाती जीउ।
जिस पाहन कउ पाती तोरै सो पाहन निरजीउ॥
पाषान गढि के मूरति कीनी देकै छाती पाउ।
जे एह मूरति साची है तउ गड़नहारे खाउ॥
भातु पहिति अरु लापसी करकरा कासारु।
भोगनहारे भोगिया इसु मुरति के मुख छारु॥

राग आशा कबीर पृ० ७७१

टीका—हे मालिनो! तू पत्तियां तोड़ती है- हरेक पत्ती में जीव है। जिस पत्थर के लिये तू पत्तियां तोड़ती है वह पत्थर निर्जीव है। पत्थर को गढ़ कर छाती पर पैर देकर मूर्ति बनाई है यदि यह मूर्ति सत्य है तो गढ़ने वाले कारीगर को क्यों नहीं खा लिया। लोग भात, लपसी, कसार इत्यादिक श्रेष्ठ २ भोग इस मूर्त्ति को लगवाते हैं, किन्तु मूर्ति कुछ नहीं खाती है भोग लगाने वाला खा लेता है और इस मूर्ति के मुख में छार भस्म ही पड़ती है।

मूल—अंतकाल जो मन्दिर सुमरै, ऐसी चिन्ता में जे मरै।
प्रेत जोनि वलि २ अउतरै। राग गूजरी त्रिलोचन पृ० ५२६

टीका—भक्त त्रिलोचन जी कहते हैं कि मरते समय जो मंदिर का स्मरण करे और ऐसी चिन्ता में ही यदि प्राण निकल जावें तो सच जानो उसको प्रेतयोनि मिलेगी।

टिप्पणी—पौराणिक लोग निज मतानुसार प्रेत योनि को बुरा समझते हैं यहां प्रेत योनि का कारण मदिर बताया है चूंकि जीवन में जो कुछ किया जाता है अंत समय वही सारे दृश्य सामने आते हैं यदि किसी ने मंदिर बनवाये हों या मदिरों में अधिक रहा हो या मदिर में आने का अधिक प्रेम हो तो उपरोक्त कथनानुसार उसको प्रेत योनि मिलेगी। यह तो हुई मदिर की बात, यदि किसी ने मदिर में स्थापित मूर्ति की पूजा की तो फिर तो उसका ठिकाना ही क्या।

मूल—हिन्दू अंधा तुरक् काणा-दुहां ते गिआनी सिआणा

हिन्दू पूजै देहुरा मुसलमाणु मसीत।

नामे सोई सेविया जहं देहुरा न मसीत॥

राग गौड नामदेव पृ० ८७५

टीका—नामदेव जी कहते हैं कि हिन्दुओं की दोनों आँखें नहीं हैं और तुरक के एक आंख नहीं है। इन दोनों से ज्ञानी चतुर है। हिन्दू मंदिरों को, मुसलमान मस्जिदों को पूजते हैं मैं उसी की सेवा करता हूँ जहां मंदिर न मस्जिद है।

मूल—दुबिधा न पड़उ हरि बिनु होर न पूजउ

मड़ै मसाणि न जाई। राग सोरठ नं० १ पृ० ५५६

टीका—गुरु नानक देव जी कहते हैं कि दुविधा को छोड़ो, हरि के बिना मढ़ी, मसानों में जाकर और किसी की पूजा न करो।

टिप्पणी—इस प्रकार मूर्त्ति पूजा का खण्डन ग्रंथ साहब में किया गया है पाठकवर्ग अनुमान करलें कि स्वामी दयानन्द जी सरस्वती कृत सत्यार्थप्रकाश में तथा ग्रंथ साहब की प्रयुक्त वाणी में किसमें अधिक कठोरता का प्रयोग है इसी प्रकार अधिक समय मिलने पर और भी प्रमाण लिखे जा सकते हैं।

(शेष फिर)

Vedic Varna Vyavastha and Socialism

(*By Pt Ganga Prasad ji M A Chief Judge President Sarvadeshik Sabha*)

(Continued from April 1944 issue)

Three Serious Defects of Bolshevism

There are however serious defects in Bolshevism or modern socialism as was stated in para 23 Dr Bhagwan Das mentioning the "Three' grave defects of Bolshevik Communism"-quotes from Mr Hindus, The Great offensive.-

"Religion, private property and business and the individualistic family-the three fundamental institutions of the human world so far-are in present day Russia the three chief villains or clowns" . The Soviets are creating a strange and formidable human being to whom all the old familiar words Religion and Freedom, Wealth, Home and Family are losing their significance, and whose body and mind have but one purpose, to serve the aim and the will of the new society"

The above three correspond to Dharma (religion), Artha (property), and Kama (marriage), which along with Moksha are the main 4 objects of human life according to Vedic religion The subject is of great importance, and I shall deal with each of the three defects mentioned above separately.

Hostility to Religion

33 Religion is as necessary for the soul of man, as food is necessary for his body Religious instinct is natural to man and cannot be uprooted By all means wage a war against the preversions of religion i e superstition, and priest craft etc. but religion itself should not be confounded with them All great religious reformers beginning with Buddha and Christ were genuine socialists, condemning the excessive accumulation of wealth Dr. Bhagwan Das has truly remarked "therefore is genuine socialism helplessly

rooted in genuine Religion. There is no socialism possible without universal brotherhood and there is no universal brotherhood possible without the universal self" (p. 29). The Mantra of Rigveda (V. 60, 5) quoted in para 32 above also shows that the true basis of universal brotherhood and the equality of all men is the recognition of the fatherhood of God

Special Reasons for Hostility in Russia

34 There were special reasons why in Bolshevik Russia there was so bitter hostility to Religion Russia before the Revolution was the most backward and reactionary state in Europe, and the people had practically no political rights The Czar who was extremely unpopular with his subjects was not only the head of the State, but was also the head of the Church which in Russia was independent of the People Thus Religion also naturally had to share the bitter unpopularity of the Czarist regime When after the success of the revolt the leaders mercilessly butchered the Czar and also his family including his young children, they also showed great hostility to the priests and churches

With growing experience and lapse of time bitterness gradually abated The Soviet does not of course recognise or support any religion nor is any religious education imparted or allowed in public or state schools But its present policy is not to interfere with any form of religion, and to leave the people to worship God in their own way This is the only proper and just course for a State which rules over people professing several religions.

35 Among 15 Republics which are included in the Soviet Union, there are 5 or 6 with predominantly Muslim population. But none of them nor any other republics professing other faiths have any grievance about interference with their religion The united and magnificent stand which Russians of all denomonations have shown and are showing in their brilliant resistance against the German hordes during the present war bears ample testimony to it

(To be Continued)

A Cloud Hovering

OVER

(The Light of Truth-Satyartha Prakash)

(*By*—Shri Dinesh Trivedi, Ex-Editor "Arya Prakash)

"Every gospel or religious book that aims to support the truth or body of opinion which it thinks absolutely fundamental and true has in some part or other contraverted and proved false or unreliable the beliefs of other sects and religions which run counter to it If the Satyarth Prakash which is the holy book of the Arya Samajists and highly revered by the Hindus in general is proscribed because it tries to controvert even emphatically some views and beliefs contained in the holy Koran to satisfy the Moslem, then in that case large parts of the Koran, the holy book of Moslems, itself will have to be proscribed."

—**V D Savarkar**

× × × ×

"Finding support in the belief that the Truth must conquer and not error and that it is the path of rectitude alone that men of learning and piety have always trodden, true teachers never get indifferent to the promotion of public good, nor give up the preaching of Truth" Sectaries are the greatest sinners because their intellect is warped by bigotry The perusal of Satyarth Prakash will help men to sift truth from error and to embrace the former and to renounce the latter. The ignorant are sure to misinterpret what I say."

—**Swami Dayanand**

× × × ×

Clouds are seen hovering over the Light of Truth for a time and efforts are being made to obscure it But the light is like that of the Sun, which is difficult of obstruction. As soon as the clouds are driven away by the sweep of the wind, the sun again appears on the horizon and begins to illuminate the world. So with the Light of the Truth.

The light of the Truth is infinite None can root it out as its origin is a fountain-everspringing. It kindles to destroy all hate, ignorance and it purifies all unholy things on the earth.

Rishis-the seers had witnessed this light in the past and even in this age of Materialism, there are sane wise men who can be called seers of the light of Truth. This light does not find reflection in the dark, impure, dogmatic, fanatic, self-interested, obstinate, and ignorant hearts. Only pure and transparent hearts and heads can see this light. The owl is afraid of the light of the sun and hence it protests against it , but the eagle enjoys it, welcomes it and looks into the very depth of far-reaching light of the sun in the sky.

This light of Truth is being seen by the great persons of all ages irrespective of Caste, Colour, creed and generation Such persons are prophets or seers They reveal the Truth, they survey with the eyes of an eagle, but the ignorant and dogmatic people of their generation have always opposed and even condemned them with the help of Imperialism, Capitalism or priesthood Jesus Christ was crucified, Galelio was persecuted , Martin Luther was oppressed and so the like. But the stream of the Light of Truth all the same is found blazing spontaneously.

During the last century India was dazzled by tho light of the Materialestic World in the West. India forgot to preserve her holy heritage of the Eastera Culture. Clouds in the form of petty sects in Hinduism and foreign sects like

Islam and Christianity already started a raid against this light of Truth-Vedic Religion-to darken it

At thfs critical juncture one seer Maharishi Dayanand sprang out from Saurashtra with a huge torch of Light of Truth to despel all such clouds and darkness It was but natural that eagles began to welcome him and his light but owls began to murmur and protest To Aurobind Ghosh, he (Dayanand) was a very soldier of Light To Mahatma Gandhi, his Character was envy and distress To Sir Sayed Ahmed Khan, he merited veneration at the hands of followers of all religions To Sir Jogendra Sing, it was he who had the courage to proclaim the Ancient Truth To Roman Rolland he was one of the most ardent prophets of reconstruction and of national organisation To Rev C F Andrew he was a passionate lover of truth To Andrew Jackson Davis, he was an Inspired son of God in India Such was the reception from the pure souls of India and abroad

(To be Continued)

वीर विक्रमादित्य

(पं० सत्यदेवजी वेदालङ्कार मन्त्री पू० अफ्रीका आर्य प्रतिनिधि सभा नैरोबी द्वारा प्राप्त)

भारत के गगनाङ्गन में, जाग उठे फिर विक्रम वीर,
आर्यजाति की जीवनज्योति, चमके सूर्य सुतों सी धीर ॥
हिमगिरिसम उन्नत मस्तक हो, जलनिधि सम हो हृदयगभीर,
दीन दुखी भू-माता के सब, हरे हृदय की पीर ॥
ऋषिवरकी वह दिव्यज्योतिहो, मानवताका पुण्यधाम हो,
विद्या कला शुचि संपदा, भूषित हुआ वह नाम हो ॥
एक स्वर से जग पुकारे धन्य जननी धन्य हो,
विक्रम-सहस्राब्दी ! जगा दे भारतोदय धन्य हो ॥

सम्पादकीय

बाल दीक्षा निषेधक बिल—

कई सम्प्रदायों में छोटी आयु के बालक बालिकाओं को संन्यास दीक्षा देने की प्रथा प्रचलित है जिसका कुपरिणाम समाज में अनाचार की वृद्धि के रूप में प्रायः दृष्टि गोचर होता है। शास्त्रीय वर्णाश्रम व्यवस्था के अनुसार साधारणतया ब्रह्मचर्य, गृहस्थ और वानप्रस्थ आश्रम में प्रवेश करने के पश्चात् ही किसी भी ब्राह्मण को संन्यास दीक्षा लेने का अधिकार है जिस की पुष्टि शतपथ ब्राह्मण के १४ वें काण्ड में आये "ब्रह्मचर्याश्रमं समाप्य गृही भवेत्, गृही भूत्वा वनी भवेत्, वनी भूत्वा प्रव्रजेत्" इत्यादि वाक्यों से होती है। मनुस्मृति अ. ६ श्लो ३७ में विषम इसको इतने प्रबल शब्दों में रक्खा है कि अनधीत्य द्विजोवेदान्, अनुत्पाद्य तथा सुतान्। अनिष्ट्वा चैव यज्ञैश्च, मोक्षमिच्छन् व्रजत्यधः॥ अर्थात् वेदों का अध्ययन, उत्तम पुत्रों का उत्पादन तथा यज्ञ किये बिना जो संन्यास द्वारा मोक्ष की इच्छा करता है वह पतित हो जाता है। इस साधारण नियम का अपवाद केवल उन अत्यन्त उन्नत, पूर्णतया शान्त विद्वानों के विषय में ही सम्भव है जिन की संख्या १ करोड़ में एक भी कठिनता से होती है। जिन को अभी तक ज्ञान की प्राप्ति नहीं हुई, जिन्हें किसी प्रकार का अनुभव नहीं, जिनकी चित्त वृत्ति शान्त नहीं हुई उन ६, १०, १५ वर्ष के बालक बालिकाओं को संन्यास की दीक्षा देना उस आश्रम की मर्यादा को गिराना, ऐसे व्यक्तियों के स्वाभाविक विकास में बाधा डालना, उनको उत्तराधिकार तथा नियमित गृहस्थ जीवन के अधिकार से वंचित रखकर उनके साथ अन्याय करना और समाज में दुराचार की वृद्धि करना है इस में किसी विचार शील व्यक्ति का मतभेद नहीं हो सकता। इस लिये श्री सेठ चम्पालाल जी बांठिया M L A. के बीकानेर की व्यवस्थापिका सभा में प्रस्तुत किये जाने वाले बाल दीक्षा निषेधक बिल' का हम सहर्ष समर्थन करते हैं तथा आशा करते हैं कि सभी

सदाचार तथा समाज के प्रेमी इसका हार्दिक अभिनन्दन करेंगे। इस में १८ वर्ष की आयु से पूर्व इस प्रकार की दीक्षा को अनुचित और अवैध करार दिया गया है किन्तु हमारे विचार में तो आज कल किसी भी अवस्था में ४० वर्ष से पूर्व किसी को संन्यास दीक्षा न देनी चाहिये अन्यथा समाज अपरिपक्व बुद्धि वाले, नाम मात्र धारी साधुओं के कुप्रभाव से दूषित हुए बिना नहीं रह सकता जैसा कि अनेक मठों में देखा जाता है। ऐसे लोकोपकारी उपयोगी बिल को बीकानेर की व्यवस्थापिका सभा में रखने के लिये हम सेठ चम्पालालजी का हार्दिक अभिनन्दन करते हैं॥

डाक तथा रेडियो विभाग की हिन्दी विरोधिनी नीति—

डाक विभाग की ओर से जिस हिन्दी विरोधिनी नीति का अनुसरण किया जा रहा है उसका निर्देश हम 'सार्वदेशिक' के पिछले एक अङ्क में कर चुके हैं। रेडियो विभाग में भी उसी नीति को वर्ता जा रहा है। मुबारिकबाद, तमाम, खिदमत, मुख्तसिर, गुजारिश, तालिबे इल्म के पैगाम, कशिश, नामुमकिन, मुखालिफ इत्यादि फ़ारसी अरबी के शब्दों की इतनी भरमार रेडियो की सूचनाओं और कार्यक्रम में रहती है कि जिसे देख कर विस्मय हुए बिना नहीं रह सकता और यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि यह कार्य जान बूझ कर विशुद्ध हिन्दी प्रेमियों को चिढ़ाने के लिये किया जाता है। जहां तक डाक विभाग का सम्बन्ध है सार्वदेशिक सभा डाक विभाग के उच्च अधिकारियों का ध्यान इस हिन्दी के साथ अन्याय की ओर निरन्तर आकर्षित कर रही है पर अभी तक लगभग ४ मास से सिवाय इसके कि 'इस विषय में जांच की जा रही है। कोई सन्तोषजनक उत्तर नहीं मिला। अन्तत यह टालमटोल कब तक चलती रहेगी? क्या हिन्दी प्रेमी जनता का यह कर्तव्य नहीं कि वह हिन्दी भाषा में पत्र और पते लिखने के अपने अधिकार का डाक विभाग के कुछ उर्दू अंग्रेजी के अन्ध भक्तों द्वारा कुचला जाता हुआ देख कर हाथ पर हाथ धरकर बैठ न जाए न कुछ असुविधाओं को देख कर निराश हो जाए बल्कि यह नियम ही बनाले कि वह अपना समस्त पत्र व्यवहार पतों सहित हिन्दी में ही करेगी। इस विषय में सरगोधा निवासी एक सज्जन से व्यवस्थापक 'सार्वदेशिक' के नाम, प्राप्त पत्र के निम्न अंशों की ओर हम पाठकों का ध्यान विशेष रूप से आकर्षित करना चाहते हैं "दैनिक 'हिन्दी मिलाप' में यह पढ़ कर बड़ी प्रसन्नता हुई कि

'सार्वदेशिक' के ग्राहकों के पते केवल मात्र हिन्दी में होते हैं। मैं एक हिन्दी प्रेमी होने के नाते से आपको हार्दिक बधाई देता हूँ कि 'सार्वदेशिक' के संचालकों ने अपने कर्तव्य का पालन करते हुए सच्चे हिन्दी प्रेम का परिचय दिया है। आपके ऐसा करने से ही डाक विभाग में हिन्दी को उचित स्थान मिल सकता है अन्यथा नहीं। यदि हिन्दी के सारे समाचार पत्र अपने अपने ग्राहकों के पते केवल हिन्दी में लिखना आरम्भ कर दें तो कोई कारण नहीं कि हिन्दी की डाक विभाग में यह अवस्था हो। आपका कार्य अनुकरणीय है। क्या ही अच्छा हो यदि आर्य समाज के प्रत्येक साप्ताहिक और मासिक आदि अपने अपने ग्राहकों का पता केवल हिन्दी में लिखें।" इत्यादि

इस पत्र के लेखक ने जो विचार प्रकट किये हैं वे वस्तुतः अत्यन्त उपयोगी हैं और हम न केवल आर्य समाज के किन्तु समस्त हिन्दी पत्रों के संचालकों तथा अन्य सब आर्य भाषा हिन्दी प्रेमियों से सानुरोध निवेदन करते हैं कि वे न केवल पत्र हिन्दी में लिखा करें किन्तु कुछ असुविधा सहकर भी (जो डाक विभाग की इस हिन्दी विरोधिनी नीति के परिणाम स्वरूप मद्रास जैसे सुदूरस्थ स्थानों के मुर्दा घरों में पत्र भेजने के कारण कई बार होती है।) पते हिन्दी में ही लिखने का दृढ़ नियम बना लें। हमें निश्चय है कि ऐसा करने से डाक विभाग को अपनी हिन्दी विरोधिनी नीति का परित्याग करने को बाधित होना पड़ेगा। रेडियो सेट् जिन के पास हैं उन्हें तथा अन्य श्रोताओं को भी उस विभाग के अधिकारियों का ध्यान निरन्तर इस अन्याय युक्त नीति के परित्याग की ओर खींचते रहना चाहिये॥

एक उत्साही आर्य सैनिक का पत्र—अ० भा० आर्य सम्मेलन का प्रभाव—

एक आर्य सैनिक के श्री मन्त्री जी सार्वदेशिक सभा के नाम भेजे पत्र के निम्न लिखित आवश्यक अंश उल्लेख करने योग्य हैं जो उसके तथा उसके साथियों के आर्य धर्म प्रेम और उत्साह के सूचक हैं—"सेवा में निवेदन है कि हम इस जगह पर कुशल पूर्वक हैं और पिता परमात्मा से आपकी कुशलता चाहते हैं। फौजों में प्रचार के लिये मुसलमानों में मौलवी सिक्खों के लिये ग्रन्थी और ईसाइयों के लिये पादरी और मूर्ति पूजक पौराणिकों के लिये पण्डित रक्खे गये हैं। इन पौराणिक पण्डितों ने हमारे देश का बिलकुल सत्यानाश कर दिया है। वे

तो सालची हैं, इन का हम क्या करें। हमारे वास्ते तो पण्डित वे चाहियें जो हमारी धार्मिक जरूरतों को पूरा करें। अभी हम २६-३-५४ को मन्दिर में प्रातः काल ८ बजे हवन करने गये। पण्डित बोलता है कि बाहर कर लो। हम ने कहा क्यों जी। हमारा भी तो मन्दिर में हिस्सा है। उसने कहा मैं मन्दिर का जवाब देह हूँ। उस समय हम ६०, ६५ आर्य समाजी थे, वह अकेला था। हमने हवन अन्दर ही शुरू कर दिया। उसने रिपोर्ट की कि ये आर्य समाजी मेरे से लड़ते हैं। हम लड़ते तो नहीं, बल्कि हम दुनियाँ में वैदिक धर्म का प्रचार करना चाहते हैं। अगर फौजों में आर्य समाजी पण्डित हो जाएँ तो एक दम हमारे यहा के सब आदमी आर्यसमाजी बन जायेंगे। हम ने यहा पर प्रधान, मन्त्री भी चुन लिये हैं और सभासदों के नाम भी हैं। लगभग यहा पर दो ढाई सौ आर्य समाजी होंगे। अभी यहा पर आर्य-समाजी ज्यादह होने पर बोलते हैं कि चार आदमी एक जगह हवन कर सकते हैं अधिक नहीं और हवन कुण्ड जमीन में नहीं बना सकते। अगर हवन होगा तो मन्दिर में होगा बारिक में नहीं होगा। कुछ एक पाबन्दियां हैं उनको आप शीघ्र ही दूर करने का प्रबन्ध करें। अभी यहा पर चार विंग (Wings) हैं दो में तो रोजाना दोनों समय अग्नि होत्र होता है और दो विंग्स में केवल इतवार को होता है। आशा है जल्दी मन में भी दैनिक हवन होने लग जाएगा। · · कृपा कर हमारे धर्म कार्य को सफल बनाए। यहां पर पहिले इतना प्रचार नहीं था मगर जो अभी फ़र्वरी मास में देहली में आर्य सम्मेलन हुआ था उसमें बहुत फौजी गये थे। इस सम्मेलन की वजह से एक दम अधिक उन्नति हो गई। इत्यादि। इस पत्र पर टीका टिप्पणी अनावश्यक है। आर्य सैनिकों को आर्य पुरोहित तथा धार्मिक स्वतन्त्रता विषयक यह माग सर्वथा युक्ति युक्त और न्याय सङ्गत है जिसे गत अ० भा० आर्य सम्मेलन में स्वीकृत इस विषयक प्रस्ताव सहित भारत सेनापति महोदय के पास भेजकर सभा की ओर से निवेदन किया गया है कि इस विषयक प्रबन्ध अतिशीघ्र किया जाना चाहिये और भारतीय सेनाओं के सब अधिकारियों को आदेश भेज देना चाहिये कि आर्य सैनिकों को अपने धार्मिक कर्तव्यों के पालनार्थ उचित सुविधाएं अवश्य दी जाए।

भारतीय सेनाओं में मुसल्मानों द्वारा मतपरिवर्तन—

जहां एक ओर सेनाओं में आर्यों को अपने धार्मिक कर्तव्य तथा क्रियाकलाप

पालन करने की पूर्णस्वतन्त्रता और सुविधा नहीं वहां दूसरी ओर विश्वस्तसूत्र द्वारा यह जान कर आश्चर्य और खेद हुआ कि भारतीय सेनाओं के मुसल्मान अधिकारियों के प्रयत्न और प्रेरणा से वहां भी हिन्दुओं के इस्लाम मत में परिवर्तन का कार्य जारी रहता है। उदाहरणार्थ २०–११–४३ के 'फौजी अखबार' में सूचना निकली कि नं० ८ इण्डियन् फ़ील्ड वैटिरिनरी हस्पताल के जयराम ने अपना नाम अब्दुल् रहमान् रख लिया है। ८–१–४४ के 'फौजी अखबार' में सूचना निकली कि नं० ७८०२१४ नायक मगलू ने अपना नाम मुहम्मद मुस्तफ़ा खां में परिवर्तित कर दिया है। एक और जगह उसी अखबार में सूचना है कि नं० ७३७८१ नायक चन्दूलाल ने अपना नाम बदल कर शेख़ अबुल्रहमान् रख लिया है। इस प्रकार सेनाओं में मुसल्मान बनाने का क्रम मुसल्मान सेनाधिकारियों के प्रयत्न, प्रलोभनादि द्वारा जारी है यह बात सर्वथा स्पष्ट है। यह कल्पना करना भी सर्वथा असङ्गत प्रतीत होता है कि युद्धादि कार्य व्यस्त हिन्दू सैनिकों ने इस्लाम का गम्भीर अध्ययन करने के पश्चात् उस मत को स्वीकार किया होगा। सार्वदेशिक सभा ने अपने ७–३–४४ के रजिस्टर्ड पत्र द्वारा भारतीय सेनापति महोदय का ध्यान इस अनुचित कार्यवाही की ओर आकर्षित करके उसे रोकने को लिखा था जिसका अभीतक कोई उत्तर प्राप्त नहीं हुआ। इस पर प्रतिबन्ध लगाना और आर्य सैनिकों को अपने धार्मिक कर्तव्य पालनार्थ उचित स्वतन्त्रता और सुविधा देना न्याय दृष्टि से अत्यावश्यक है॥

मध्यप्रान्त सरकार का पक्षपात पूर्ण अनुचित कार्य—

भारतीय सरकार की घोषित नीति धार्मिक विषयों में हस्ताक्षेप न करने और निरपेक्ष रहने की है किन्तु इसके होते हुए भी क्रियात्मक रूप से ईसाई मत के प्रचारार्थ उदार सहायता उसकी तथा प्रान्तीय सरकारों की ओर से अनेक बार आक्षेप का कारण बनाती रही है। मध्यप्रान्त की सरकार के शिक्षा विभाग ने मांडला जिले में जबलपुर के कैथोलिक आपौस्लिक मिशन् आदि को उदार सहायता देकर गोंडों को ईसाई बनाने के लिये १०० स्कूल खुलवाए हैं और अध्यापकों के शिक्षण के लिये खिम्होरा नामक स्थान में 'आदि वासियों' के लिये नार्मल स्कूल वा शिक्षणालय खुलवाकर मकानों के लिये २० हजार की सहायता देने के अतिरिक्त संस्थाएं चलाने का अर्थव्यय देना स्वीकार किया है। मध्यप्रान्त

सरकार की इस पक्षपात पूर्ण नीति का मि० अल्विन्, श्री ठाकुरबाबा, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा तथा दयानन्द मुक्ति फौज हुशियारपुर आदि ने घोर प्रतिवाद किया है किन्तु अभी तक सरकार ने उस पर कोई ध्यान नहीं दिया और न आर्य हिन्दू संस्थाओं को गोंड लोगों में जो जन्मत हिन्दू हैं कार्य करने की सुविधाएं देना स्वीकार किया है। सरकार की इस पक्ष पात पूर्ण नीति का हम घोर विरोध करते हैं और मध्य प्रान्त की तथा समस्त आर्य हिन्दू जनता का ध्यान गोंडों की शिक्षा तथा सुधार के आवश्यक कार्य की ओर आकर्षित करना चाहते हैं। इस विषयक कार्य की संगठित व्यवस्था अति शीघ्र होनी चाहिये।

शोक जनक वियोग—

गत अप्रैल मास में राष्ट्रीय महा सभा के भू० पू० प्रधान भारत के वृद्ध पितामह श्री चक्रवर्ती विजय राघवाचार्य, राष्ट्रीय महासभा के भू० पू० कोषाध्यक्ष, ज्ञानमण्डल काशी, काशी विद्यापीठ, 'आज' दैनिक आदि के प्रवर्तक उदार हृदय सुप्रसिद्ध देशभक्त श्री शिव प्रसाद जी गुप्त तथा सार्व देशिक सभा के मान्य मन्त्री श्री पं० इन्द्रजी विद्यावाचस्पति के मान्य बहनोई (सुप्रसिद्ध राष्ट्रीय कार्य कर्त्री श्रीमती वेदकुमारीजी के पति) श्री धनीरामजी के शोकजनक वियोग का समाचार जान कर हमें अत्यन्त दुःख हुआ है। हम दिवगत महानुभावों के प्रति अपनी श्रद्धाञ्जलि अर्पण करते हुए उनकी आत्माओं की सद्गति के लिये प्रार्थना करते तथा उनके परिवारों के साथ हार्दिक समवेदना प्रकट करते हैं। सार्वदेशिक सभा कार्यालय के मुख्य लेखक तथा गणक श्रीयुत रघुनाथप्रसादजी पाठक की धर्म परायणा धर्मपत्नी का भी गत २२-४-४४ को सिकन्दराबाद में देहावसान हो गया यह समाचार अत्यन्त हृदय विदारक है, क्यों कि अभी गत वर्ष ही उनके पूज्य पिताजी और माताजी का देहावसान हुआ था। हम दिवङ्गत पवित्र आत्मा की सद्गति तथा इस असह्य दुःख को सहन करने का श्री पाठकजी और उनके कुटुम्बियों को बल देने के लिये भगवान से प्रार्थना करते हैं तथा समस्त आर्य जगत् की ओर से उनके साथ पूर्ण सहानुभूति और समवेदना प्रकाशित करते हैं।

सिन्ध में 'सत्यार्थ प्रकाश' पर पुनः प्रहार और आर्यों का कर्तव्य

सत्यार्थ प्रकाश निधि की मन्दगति

पाठक इस समाचार को १३-४-४४ के 'सिन्ध ऑब्जर्वर' करांची आदि पत्रों

द्वारा जान चुके होंगे कि हैदराबाद सिन्ध के मुसल्मानों ने १०-४-४४ को एक सार्वजनिक सभा करके पीर गुलाम मजद्दीद सरहिन्दी को अधिकार दिया है कि वे सिन्धी सत्यार्थ प्रकाश के प्रकाशकों पर बहुत शीघ्र-१ सप्ताह के अन्दर-फौजदारी मुकद्दमा दायर करें। इस समाचार से आर्य जनता को घबराने की जरा भी आवश्यकता नहीं किन्तु हमें निश्चय है कि वह उसका स्वागत करेगी पर साथ ही वह सत्यार्थ प्रकाश निधि के लिये २ लाख रु० एकत्रित करने के अपने कर्तव्य का पालन करने में अब कुछ भी विलम्ब न करेगी ताकि ऐसे मुकद्दमों को निश्चिन्तता से लड़ा जा सके और सत्यार्थ प्रकाश के अंग्रेजी तथा प्रान्तीय भाषाओं में अनुवाद तथा उसके प्रचारादि की उचित व्यवस्था की जा सके। हमें यह लिखते हुए खेद होता है कि यद्यपि प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाओं तथा आर्य समाजों से इस विषय में आशा जनक पत्र आ रहे हैं तथापि अभी तक सत्यार्थ प्रकाश की निधि के संग्रह की गति अत्यन्त मन्द है जिसे अब अत्यधिक तीव्र करने की आवश्यकता है। सात मई को सर्वत्र सत्यार्थ प्रकाश दिवस को उत्साह और धूम धाम से मनाने का सभा ने आदेश दिया है यदि तब तक यह २ लाख की राशि पूर्ण न हो गई तो आर्यों के लिये यह अत्यन्त लज्जा जनक बात होगी और उनकी कर्म वीरता और सत्यनिष्ठता पर यह घोर कलङ्क होगा। हमें पूर्ण निश्चय है कि आर्य जनता अपने इस विषयक कर्तव्य का अब बड़ी तत्परता से पालन करने में लग जायगी और इस प्रकार अपनी कर्म वीरता का जगत् को परिचय देगी। आज ही सिन्ध के 'मीर पुर खास' गजट के १९ अप्रैल के मुख्य लेख की प्रति हमें प्राप्त हुई है जिससे यह जान कर अत्यन्त आश्चर्य हुआ कि कराची डिस्ट्रिक्ट जेल के पुस्तकालय से सत्यार्थ प्रकाश की प्रति जो कई वर्षों से उस में विद्यमान थी निकाल ली गई है। इस संकुचित मनोवृत्ति की जितनी भी निन्दा की जाय उतनी ही थोड़ी है। ऐसी मतान्धता और और अनुदारता सूचक कार्यवाहियों से सिन्ध के मुसल्मान और अधिकारी विचार शील सब व्यक्तियों की दृष्टि में अपने को सर्वथा पतित कर रहे हैं इस में सन्देह नहीं।

हमारी विवशता—

हमारे कई प्रेमी पाठकों को इस बात पर आश्चर्य हो रहा है कि 'सार्वदेशिक' के आकार प्रकार और कागज में एक रूपता नहीं रही और गत कई मासों में

प्राय: प्रतिमास उस में कई प्रकार के परिवर्तन होते रहे हैं । हमें स्वयम् इस बात का खेद है किन्तु कागज की दुलभता और प्राप्त कागज के अनुसार आकार प्रकाशादि में परिवर्तन करने को हमें विवश होना पड़ता है आशा है उदार पाठक महोदय हमारी विवशता को अनुभव करते हुए हमें क्षमा करेंगे और आनन्दाश्रम लुधियाना के श्री ला० लब्भूरामजी, राजस्थान प्रतिनिधि सभा के महोपदेशक श्री पं० रामसहायजी विद्या भूषण आदि महानुभावों का अनुकरण करते हुए 'सार्वदेशिक' के ग्राहकों की संख्या बढ़ाने में निरन्तर तत्पर रहेंगे, हम ऐसे सब प्रेमी महानुभावों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हुए उन्हें हार्दिक धन्यवाद देते हैं ॥

प्रप्रदत्त उत्तराधिकार तथा विवाह बिल संक्षिप्त विमर्श—

इस समय इस सम्बन्ध में जो बिल धारा सभा के सन्मुख प्रस्तुत हैं तथा जिन्हें लोकमत जानने के लिये वितरित किया गया है जिनमें स्त्रियों की स्थिति को कुछ उन्नत करने, अन्तर्जातीय विवाहों को प्रोत्साहित करने तथा बहुविवाह प्रथा को हटाने विषयक अंश समाजसुधार की दृष्टि से उत्तम और समर्थनीय हैं किन्तु पुत्रियों को पैतृक सम्पत्ति में भाग मिलने विषयक अंश इस दृष्टि से अत्यन्त आक्षेप योग्य है कि इससे भाई बहिनों में विवाद बढ़ने और वर्तमान प्रेम सम्बन्ध न्यून होने की सम्भावना बहुत अधिक है। अभ्रातृका कन्या तथा जीवनभर अविवाहिता रहने वाली कन्या को पैतृक सम्पत्ति से उत्तराधिकार मिलना उचित ही है, किन्तु अन्य विवाहित स्त्रियों को अपने पति की ही सम्पत्ति से अधिकार मिलना चाहिये पैतृक सम्पत्ति से नहीं। आर्य हिन्दू धर्म का त्याग कर ईसाई मुसल्मान आदि मत ग्रहण करने वालों को भी सम्पत्ति के अधिकार से वञ्चित कर देना चाहिये। इस विषयक कानून में परिवर्तन होना चाहिये। सगोत्र विवाहत तथा निकट सम्बन्धियों में विवाह विषयक प्रतिबन्धों को हटाना जैसा कि इन बिलों में किया गया है सर्वथा अनुचित है। शास्त्रीय तथा सन्ततिविज्ञान की दृष्टि से इस प्रकार के प्रतिबन्ध आवश्यक हैं। बहुविवाह निषेध विषयक नियम सब जातियों के लिये लागू होना चाहिये। केवल हिन्दुओं के साथ सम्बन्ध रखने वाले क़ानून पर अन्य मतावलम्बियों का सम्मत्यधिकार न हो यह मांग हमें कुछ अंशतक उचित ही प्रतीत होती है। ध० दे०

आर्यों के अन्तर्जातीय विवाह

सुयोग्य आर्य वर की आवश्यकता

एक शिक्षित, कुलीन, सुन्दर, स्वस्थ गृह कार्य में दक्ष तथा वाद्यकला में निपुण आयु १८ वर्ष स्व० रेलवे अफसर की सुपुत्री हिन्दी भूषण, मैट्रिक कन्या के लिये योग्य सुशिक्षित, स्वरूप, आर्थिक दृष्टि से अच्छी स्थिति वाले, निरामिष भोजी, आर्य वर की आवश्यकता है।

पत्रव्यवहार निम्न पते पर करें—

मन्त्री, सार्वदेशिक सभा, बलिदान भवन, देहली।

सार्वदेशिक आ० प्र० सभा

दान स्थापना दिवस

मार्च अप्रैल सन् १९४४

।।।) श्री सेठ अमरनाथ जी लजावती जी इन्दौर
२५≡) आर्य समाज दीवानहाल, देहली
५।।=) आर्य समाज लोअर पटेल बम्बई
२) आर्य समाज बहरोड़
५) आर्य समाज हिरियक
१) श्री वजीरचन्द्र जी "चेला रंग"
१६) आर्य समाज मवानाकला (मेरठ)
१५) आर्य समाज मल्लिखानदार सर्कस, कलकत्ता
१०) आर्य समाज गुजरांवाला
१०) आर्य समाज खुर्जा (बुलन्दशहर)
१०) आर्य समाज लोअर बाजार (शिमला)
७—) आर्य समाज प्रागपुर (कांगड़ा)
५) आर्य समाज गुलावठी (बुलन्दशहर)
५) आर्य समाज साहोवाला

११७।।=)

दाताओं को धन्यवाद।

अन्य आर्य समाजों को अपनी राशि शीघ्र सभा कार्यालय में भेजकर अपने कर्तव्य और सभा के आदेश का पालन करना चाहिये।

मन्त्री—सार्वदेशिक सभा

वेद प्रचारार्थ दान

१००) श्री रघुनाथचन्द्र जी आर्य जानकीदास गोपीनाथ जी अमृतसर
३) श्री ला० दीवानचन्द्र जी
५) आर्य समाज सालबन (करनाल)
३) श्रीतमचन्द्र जी शालामार होजरी लुधियाना
१०) आर्य समाज मुरार
१८—) ....
३) मदनलाल जी देहली
११) ला० मंगतराम जी अम्बाला शहर निवासी
६) श्री मंजुनाथ जी द्वारा संग्रहीत
३) श्री वि० के० सुवर्ण बार्कर S. K.
१०) श्री शान्ताराम लक्ष्मण संगम दादर बम्बई
५) श्री कृष्ण जी माहेश्वरी इन्दौर
द्वारा मन्त्री आर्य समाज तोपखाना इन्दौर

१६१=)

सार्वदेशिक सभा के श्री श्रद्धानन्द पुस्तकालयार्थ ६०) श्री ला० कन्मूराम जी आनन्दाश्रम की मित्र मण्डली द्वारा दो अल्मारियों के खरीदने के लिये प्राप्त।

सब दाताओं को हार्दिक धन्यवाद

मन्त्री, सार्वदेशिक सभा

बंगाल रिलीफ फन्ड

४८।।=) आर्य समाज, तीमारपुर देहली
५—) श्री गणपतराम जी, जयपुर सिटी
२५) आर्य समाज, बम्बई
५) आर्य समाज, हमीरपुर
६) श्री रणजीतसिंह जी, जयपुर सिटी
१५) कालूभाई माधव जी एण्ड को
२५००) आर्य प्रतिनिधि सभा संयुक्त प्रान्त
४) आर्य समाज, कार्कल
४००) आर्य प्रतिनिधि सभा, मोरीशस पो० सुईल
१३) श्री कृष्णदेव जी शर्मा सुमन— बहादुरनगर
७) श्री लक्ष्मण कुमार उपमन्यु M B. B. S. सुजनेर
७) आर्य समाज जुमलार्जुनपुर (बहराइच)
३९।।) आर्य समाज अमरावती (बरार) द्वारा संगृहीत

३०७५।≤)

दानियों को हार्दिक धन्यवाद।

॥ ओ३म् ॥

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का आर्य समाजों को आदेश

सत्यार्थप्रकाश दिवस ७ मई को

उत्साह और धूमधाम से मनाइये

सत्यार्थप्रकाश निधि के लिये २ लाख रुपया एकत्रित करने का विशेष रूप से प्रयत्न किया जाना चाहिये। सिन्ध के मुसल्मानों ने सिन्धी सत्यार्थप्रकाश के प्रकाशकों पर फ़ौजदारी मुक़द्दमा बहुत शीघ्र दायर करने का निश्चय किया है ऐसी अवस्था में उसके मुकाबले तथा विविध भाषाओं में सत्यार्थप्रकाश के अनुवाद प्रकाशन तथा प्रचारार्थ २ लाख रुपये की निधि का तत्काल एकत्रित किया जाना अत्यावश्यक है। आप अपनी समाज के सदस्यों तथा सहायकों से एकत्रित कर के इस निधि के लिये अधिक से अधिक सहायता भिजवाइये। सत्यार्थप्रकाश दिवस के अतिरिक्त जिसका समस्त आर्य जगत् में मनाना अनिवार्य है जहां २ भी सम्भव हो सत्यार्थप्रकाश की १ या २ सप्ताह तक कथा का आयोजन करना विशेष रूप से उपयोगी होगा। इस विषयक तय्यारी में अब विलम्ब न कीजिये।

आर्यसमाज स्थापना निधि

खेद है कि इस वर्ष आर्य समाज स्थापना दिवस (जो २५ माघ को अनेक स्थानों पर सभा के आदेशानुसार मनाया गया) के उपलक्ष्य में वेद प्रचारार्थ दान अभीतक बहुत कम प्राप्त हुआ है। अपने सदस्यों से कम से कम ४ आने परिवार के प्रति व्यक्ति से अथवा समाज के कोष से धन एकत्रित करके सार्वदेशिक सभा कार्यालय में तुरन्त भिजवाइये यदि इससे पूर्व वह राशि भेजकर आपकी समाज ने अपने कर्त्तव्य और शिरोमणि सभा के आदेश का पालन न किया हो।

इन्द्र विद्यावाचस्पति

मन्त्री, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

श्री पं० रघुनाथप्रसाद पाठक—पब्लिशर के लिये लाला सेवाराम चावला द्वारा 'चन्द्र प्रिंटिङ्ग प्रेस" श्रद्धानन्द बाजार देहली में मुद्रित

(१) वैदिक सिद्धान्त मार्तण्ड १)
(२) धर्मपितृ परिचय २)
(३) अथर्ववेदीय चिकित्सा शास्त्र २)
(४) वेद में असित् शब्द -)।
(५) ऋग्वेद में देवृकामा वा देवकामा -)
(६) विदेशों में आर्य समाज ॥)
(७) दयानन्द सिद्धान्त भास्कर १।)
(८) आर्य्य सिद्धान्त विमर्श १॥)
(९) भजन भास्कर ॥)
(१०) समस्त आर्य समाजों के सूची ॥)
(११ सार्वदेशिक स ... का ... त ... म
प्र० २, स० ॥
(१२) बलिदान ।)
(१३) आर्य डायरेक्टरी प्र० १), स० १।)
(१४) वैदिक सन्ध्या रहस्य =)॥
(१५) सत्यार्थ निर्णय १।)
(१६) संस्कृत सत्यार्थप्रकाश (अ ...) ॥)
(१७) हजरत इकाकत (उ म ...
(१८) नारायण स्वामीजी के आ म ... २।)
(१९) मातृत्व की ओर प्र० १।), स० १॥)
(२०) आर्य्य जीवन और गृहस्थ धर्म =)
(२१) आर्य्यावर्त्त के ... =)॥
(२२) आर्य वीर दल शिक्षण शिविर =)
(२३) आर्य समाज का इतिहास ॥।)
(२४ भक्ति कुसुमाञ्जलि ॥।)
(२५) विमान शास्त्र ।=)॥
(२६) वेद में दो बड़ी वैज्ञानिक शक्तियां १)
(२७) सत्यार्थ प्रकाश गान ।=)
(२८) बहिनों की बातें १)
(२९) Agnihotra— २॥)
(३०) Crucifixion by an eyewitness ।-)
(३१) Truth and Vedas ।=)
(३२) Truth-bed rock of Aryan Culture ॥)
(३३) Vedic Teachings १।)
(३४) Voice of Arya Varta =)
(३५) Christianity in India ॥)
(३६) The Scope and Mission of Arya Samaj-Unbound ॥)
(३७) Eclesia Divina—Bound ५)
(३८) Commentary on Ishopanishad ॥)
(३९) Kenopanishat (English) ।)





१९४४ ई०
२००१ सं०

सम्पादक—

वार्षिक मूल्य

विषय-सूची

सार्वदेशिक का यह पत्र मँगाने के लिये ।=) का टिकट भेजना जरूरी है।

॥ ओ३म् ॥

सार्वदेशिक

* सार्वदेशिक-आर्य-प्रतिनिधि सभा देहली का मासिक मुख-पत्र *

वर्ष २० } जून, १९४४ ई०] ज्येष्ठ २००१ [दयानन्दाब्द १२१ { अङ्क ४

* वैदिक प्रार्थना

ओ३म् अश्याम तं काममग्ने तवोती अश्याम रयिं रयिवः सुवीरम् ।
अश्याम वाजमभि वाजयन्तो अश्याम द्युम्नमजराजरं ते ॥

(ऋग्वेद ६ । ५ । ७)

अर्थ — (अग्ने) हे ज्ञानस्वरूप परमेश्वर । (तव ऊती) तेरे संरक्षण में (तं कामम् अश्याम) उस उत्तम धर्मयुक्त कामना को हम प्राप्त करें (रयिव) हे समस्त ऐश्वर्य के स्वामिन् । (हम सुवीर रयिम् अश्याम) उत्तम वीर सन्तान युक्त ऐश्वर्य को प्राप्त करें (वाजयन्तः) ज्ञान प्राप्त करते कराते हुए हम (वाजम्) उत्तम बल को (अभिअश्याम) अच्छी प्रकार चारों ओर से प्राप्त करें (अजर) हे अजर अमर प्रभो (ते) तेरे (अजरं द्युम्नम्) स्थिर यश को हम (अश्याम) प्राप्त करें ।

हे समस्त ऐश्वर्य के स्वामिन् प्रभो ! हम आपके सच्चे भक्त बनें । आपका संरक्षण हमें सदा प्राप्त होता रहे । आपकी कृपा स हमें उत्तम ऐश्वर्य, शक्ति और यश की प्राप्ति हो जिससे हम धर्म मार्ग से कभी विचलित न हों । आपके अनुग्रह से हमारी धर्म सम्मत शुभ कामना की पूर्ति हो ॥

वेदोपदेश

जागरूकता-कर्तव्य तत्परता

(१) ओं यो जागार तमृचः कामयन्ते यो जागार तमु सामानि यन्ति ।
यो जागार तमयं सोम आह तवाहमस्मि सख्ये न्योकाः ॥
(ऋ० ५ । ४४ । १४ सामवेद म० १८२६)

(२) ओं अग्निर्जागार तमृचः कामयन्तेऽग्निर्जागार तमु सामानि यन्ति ।
अग्निर्जागार तमयं सोम आह तवाहमस्मि सख्ये न्योकाः ॥
(सामवेद म० १८२७)

(३) ओं तद् विप्रासो विपन्यवो जागृवांसः समिन्धते ।
विष्णोर्यत् परमं पदम् ॥ (ऋग्वेद १ । २२ । १)

शब्दार्थ—(१) (यः जागार) जो जागता है—अविद्या निद्रा और आलस्य प्रमाद का त्याग करता है (तम् ऋचः कामयन्ते) उसी को ऋग्वेद की ऋचायें तथा उनके समान उत्तम प्रशंसनीय जन चाहते हैं (यो जागार) जो जागता है (तम् उ सामानि यन्ति) उसे ही सामवेद के मन्त्र तथा तदन्तर्गत उपदेश प्राप्त होते हैं (यो जागार) जो जागृत रहता है (तम्) उसको (अयं सोमः आह) यह ऐश्वर्य वा शान्ति मय भगवान् कहता है कि (अहम्) मैं (तव सख्ये न्योकाः अस्मि) निश्चिततया तेरी मित्रता में स्थित हूँ।

(२) (अग्निः) अग्नि के समान तेजस्वी विद्वान् नेता (जागार) सदा जागृत—कर्तव्य परायण रहता है (तम् ऋचः कामयन्ते) उसको ऋग्वेद की ऋचाएं तथा प्रशंसनीय विद्यार्थी वा अन्य सज्जन चाहते हैं (अग्नि जागार) अग्निवत् तेजस्वी विद्वान् जागरूक रहता है (तम् उ) उसे ही (सामानि) सामवेद में प्रतिपादित ज्ञान (यन्ति) प्राप्त होते हैं (अग्निः जागार) अग्नि के समान तेजस्वी नेता जागरूक रहता है (तम् अय सोमः आह) उसको यह ऐश्वर्य तथा विद्या आदि उत्तम ऐश्वर्य की इच्छा रखने वाला कहता है (अहम्) मैं (तव सख्ये नि ओकाः अस्मि) तुम्हारी मित्रता में निश्चय से स्थिर हूँ ॥ (सोमः—विद्यैश्वर्यमिच्छुरिति दयानन्दर्षिः)

(३) (विष्णोः) सर्वव्यापक परमात्मा का (यत् परमं पदम्) जो प्राप्तव्य उत्तम स्वरूप है (तत्) उसे (विप्रासः) ज्ञानी (विपन्यवः) स्तुति करने वाले भक्त और (जागृवांसः) कर्तव्यपालन में जागरूक रहने वाले सज्जन (सम् इन्धते) अच्छी प्रकार प्रकाशित करते हैं—साक्षात्कार करते हैं।

व्याख्या—उपर्युक्त वेद मन्त्रों में जागरूक रहने अथवा आलस्य प्रमाद का परित्याग करके ज्ञान प्राप्त करने और कर्तव्य तत्पर होने का महत्त्व प्रतिपादित किया गया है। जो आलसी है, जो अपने कर्तव्य के पालन में तत्पर नहीं होता उसे न तो वेदों का पवित्र ज्ञान प्राप्त होता है और न वह उसका कुछ भी उपयोग कर सकता है। ऐसे आलसी प्रमादी कर्तव्य विमुख को सच्चे ऐश्वर्य की प्राप्ति भी कभी नहीं हो सकती। पुरुषार्थी और कर्तव्य परायण व्यक्ति को ही सच्चा ऐश्वर्य प्राप्त होता है। ऐसा जागरूक पुरुष ही भगवान् को प्रिय होता है। महात्मा गांधी जी के प्रिय भजन में जो स्व० दादा भाई नौरोजी की एक पौत्री का बनाया हुआ है इस वैदिक सत्य को बड़े उत्तम रूप में प्रकट किया गया है :—

उठ जाग मुसाफिर भोर भई, अब रैन कहां जो सोवत है।
जो जागत है सो पावत है, जो सोवत है सो खोवत है॥
टुक नींद से अँखियाँ खोल जरा, और अपने ईश से प्रेम लगा।
यह प्रीत करन की रीति नहीं, प्रभु जागत है तू सोवत है॥

जो अग्नि के समान तेजस्वी नेता होते हैं वे सदा जागरूक रहते हैं, आलस्य प्रमाद का परित्याग करके सदा कर्तव्य पालन में तत्पर रहते हैं, इसीलिये सब प्रशंसनीय व्यक्ति उन्हें चाहते हैं और वेदों का सच्चा ज्ञान उन्हें प्राप्त होता है। संसार में आलसियों को कोई नहीं पसन्द करता। सब पुरुषार्थी कर्तव्य परायण लोगों की ही कामना करते हैं पुरुषार्थी परिश्रमी व्यक्तियों के आगे ऐश्वर्य मानो हाथ बांधकर खड़ा रहता है। विद्यार्थी भी सदा परिश्रमी कर्तव्य परायण गुरुओं की ही कामना करते और उनका आदर करते हैं। भगवान् भी सदा ऐसे पुरुषार्थी, कर्तव्य परायण भक्त ज्ञानियों के ही मित्र होते हैं। आलसी, कर्तव्य विमुख अज्ञानी न भगवान् को प्राप्त कर सकते हैं और न उसकी मित्रता तथा आशीर्वाद के पात्र बन सकते हैं। अतः प्रत्येक आर्य नर नारी को आलस्य प्रमाद का परित्याग करके सदा जागरूक अर्थात् पुरुषार्थी और कर्तव्य परायण बनना चाहिये।

धर्मदेव विद्यावाचस्पति

अध्यात्मसुधा

प्रभुचिन्तन

१ मेरे प्रभु के गुण गण को ये, गाते हैं मिल कर सब फूल
उसके अनुपम गुण गण गाकर, रहे मस्त होकर ये भूल।
सूर्य चन्द्र पर्वत तरु तारे, उसकी महिमा गाते हैं
सब मिल कर हर के गुण गाओ, यह सन्देश सुनाते हैं॥

२ इस अनुपम रचना को लख कर, जो नहिं हरि को है भजता
जो इस अद्भुत जग के अन्दर, हर के कर को नहि लखता
उससे बढ़कर मूढ़ विश्व में, कौन नहीं मैं कह सकता
वह कृतघ्न पापी अज्ञानी, नहि शाश्वत सुख गह सकता।

३ तीस अरब तारे ये सारे, जिसकी महिमा जतलाते
जिसके चरणों में ये सागर, अपनी भेंट सदा लाते।
जो ज्योतिर्मय देव सहस्रों, सूर्यों को चमकाता है
अर्पण उसको तन मन धन कर, हो नर सुख को पाता है॥

४ है जो प्रेममयी मा उसकी, तू गोदी में बैठाकर
वह मङ्गलमयि माता तेरे, सब कष्टों को लेगी हर।
पा सच्चे आनन्द शान्ति को, कर आनन्दमयी का ध्यान
रहे शरण में जो माता की, उसे न हो चिन्ता का भान॥

५ माता जब आनन्दमयी फिर, भय चिन्ता का क्या है काम?
नाम उसी का जप निशिवासर, कर उसको स्मर के सब काम॥
ज्योति शान्ति आनन्द शक्ति को, नित पाने की इच्छा कर
यही प्रार्थना करता माता, के चरणों में निज सर धर॥

६ तब माता की करुणा होगी, इसमें नहिं कुछ भी सन्देह
पूर्ण रूप से अर्पण कर दे, जननी को वाणी मन देह।
अपने कर में कला बनाकर, तब वह तुझे चलाएगी
नहि चिन्ता कर आनन्दामृत, निशिदिन तुझे पिलाएगी

"ध्रुव"

वर्तमान अशान्ति तथा हमारा कर्तव्य

आज जब कि इस क्रान्तिमय युग में युद्ध रूपी ज्वाला की लपटें समस्त संसार में भयंकरता से फैलती जारही हैं ऐसा प्रतीत होता है मानों मनुष्यों की लाखों वर्षों की कमाई सभ्यता, संस्कृति, कला तथा विज्ञान इस भयकर ज्वाला में जलकर भस्म हो जायेंगी। वह विज्ञान जिसने समाज के उत्थान में प्रमुख हाथ बँटाया है आज उल्टा उसी समाज को निगलने का साधन बन रहा है।

आखिर यह सब राक्षसी नृत्य क्यों हो रहा है ? अपने को सभ्य तथा देवता कहने वाले पश्चिमी गोरे लोग यह नीच कर्म करने पर क्यों उतारू हो गये हैं ? क्या इस युद्ध के पश्चात् शान्ति स्थापित हो सकेगी ? ये प्रश्न हैं जो आज प्रत्येक विवेकी मनुष्य के मस्तिष्क के सामने अपने उत्तर की प्रतीक्षा करते रहते हैं।

अपने राक्षसी कार्यों को शुभकार्य सिद्ध करने के हेतु तथा इनके ऊपर लिखित प्रश्नों का उत्तर देने के लिये इस महासमर के महारथी सम्मेलन पर सम्मेलन करते रहते हैं और प्रत्येक मीटिंग के पश्चात् यही सिंहनाद करते हैं कि हम संसार के समस्त राष्ट्रों की स्वतन्त्रता के हेतु लड़ रहे हैं और हम युद्ध के पश्चात् विश्व शान्ति स्थापनार्थ एक पूर्ण स्कीम बना चुके हैं।

मुझे तो पूर्ण विश्वास है कि अपनी इस खोखलाहट पर इनको स्वयं भी विश्वास नहीं है। यह तो केवल अपने साम्राज्य की प्रजा तथा युद्ध-ग्रस्त राष्ट्रों की सहानुभूति खींचने का एक प्रयत्न मात्र है। जब ये महारथी अपने आधीन उन राष्ट्रों को, जिनका कि ये सदियों से शोषण कर रहे हैं स्वाधीनता प्रदान नहीं कर सकते तो दूसरों की स्वतन्त्रता की रक्षार्थ लड़ने की डींग मारना केवल भूल भूलैया है।

वास्तव में बात यह है कि यह लड़ाई साम्राज्य की रक्षा या प्राप्ति के हेतु लड़ी जारही है। अर्थात् जर्मनी, इटली, तथा जापान साम्राज्य प्राप्ति के लिये लड़ रहे हैं और इंगलैंड तथा अमेरिका अपने साम्राज्यों की रक्षा के हेतु। रूस के ये दोनों टोलिया विरुद्ध हैं परन्तु अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिये इस बेचारे को भी इस युद्ध में घसीट लिया है।

विश्व शान्ति की डींग मारने वाले इन स्वार्थान्ध महारथियों को यह पता नहीं है कि जिस मार्ग का अवलम्बन वे कर रहे हैं उसके द्वारा इनका विनाश निश्चित है। इनको पता नहीं कि सच्ची शान्ति तथा समाज वैभव का स्रोत कहाँ है। वास्तव में ये बेचारे अपने २ राष्ट्र तथा समाज की उन्नति के लिये ही इस समर-यज्ञ में सब कुछ स्वाहा कर रहे हैं परन्तु फल उल्टा ही निकल रहा है। यदि दुर्भाग्यवश इन पश्चिमी देवताओं ने अपनी भूल को ठीक न किया तो निश्चय ही भविष्य में कम से कम दो युद्ध और होंगे।

(१) पहिला युद्ध समर के बाद रूस के साम्यवादियों तथा साम्राज्य-वादियों का होगा।

(२) दूसरा युद्ध काले तथा गोरे लोगों का होगा। संक्षेप में जब तक पश्चिमी देशों की साम्राज्य वादी मनोवृत्ति रहेगी तब तक युद्धों की समाप्ति असम्भव है।

अब विचारणीय प्रश्न यह है कि पश्चिमी राष्ट्रों की यह साम्राज्यवादी मनोवृत्ति कैसे बनी और इसके मिटाने का उपाय क्या है ? परन्तु जिन लोगों के पास इस का हल है वे असभ्य कहे जाते हैं; और उनके नेता आज जेलों की चार दीवारी में सड़ा २ कर मारे जारहे हैं। परन्तु यह निश्चित है कि अन्त में शान्ति की खोज करते २ इन स्वाभिमानी, स्वार्थी महारथियों को भारत की शरण में ही आना होगा और यहाँ आकर क ख ग का विद्यार्थी बनकर अध्यात्मवाद की शिक्षा ग्रहण करनी पड़ेगी। पाठकों को मेरी इस बात में अत्युक्ति प्रतीत होगी परन्तु इसे समय ही सच्चा सिद्ध करेगा।

वास्तव में पश्चिमी राष्ट्रों की इस स्वार्थान्धता तथा साम्राज्यवादी मनोवृत्ति का मुख्य कारण है इनकी सस्कृति तथा सभ्यता का दोष। पश्चिमी संस्कृति तथा सभ्यता की आधार शिला है "आवश्यकताओं की वृद्धि" अर्थात् प्रकृति की पूजा इसी आधार शिला के कारण पैसे ने योरुप में एक ऊचा स्थान पाया है और राष्ट्रों को इसकी होड़ ने पागल बना दिया है।

परन्तु पैसा आसानी से तो पैदा नहीं होता इसके लिये करना पड़ता है मक्कर-फरेब। इसके पीछे योरुप के स्त्री पुरुष चौबीसों घण्टे मारे २ फिरते हैं। अनेक स्त्रियां अपनी अमूल्य वस्तु "सतीत्व" तक को कौड़ियों के दाम बेच डालती हैं; और

दफ्तरों की खाक छानती रहती हैं। अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये उन्होंने विज्ञान द्वारा बड़े २ कल कारखाने उत्पन्न किये हैं। परन्तु इन कारखानों के माल की खपत के लिये चाहिये मण्डी अर्थात् साम्राज्य। अपने बच्चों की साम्राज्य-वादी मनोवृत्ति बनाने के लिये इंग्लैंड ने अपने उन पूर्वजों के चित्र जिन्होंने किन्हीं भी भले या बुरे उपायों द्वारा साम्राज्य की वृद्धि की है नगर के सार्वजनिक स्थानों पर टांग रक्खे हैं। चौराहों पर निम्न प्रकार के बोर्ड तक टाँगे जाते हैं "Make India's millions your buyers" अर्थात् भारत की करोड़ों जनता को अपना खरीदार बनाइये।

यदि पश्चिमी राष्ट्र सचमुच संसार में शान्ति चाहते हैं तो उन्हें अपनी संस्कृति तथा सभ्यता की आधार शिला बदलनी पड़ेगी और आर्य संस्कृति अपनानी पड़ेगी। आर्य संस्कृति मनुष्य को निम्न उपदेश देती है:—

(१) आर्य संस्कृति मनुष्य को आत्म-संयम तथा आवश्यकताओं की कमी का पाठ पढ़ाती है।

(२) आर्य संस्कृति मनुष्य का अन्तिम ध्येय ईश्वरीय ज्ञान की प्राप्ति बतलाती है।

(३) आर्य संस्कृति का मुख्य तत्त्व परार्थ-भाव है। यह परोपकार, दान, अतिथि सेवा तथा दूसरों के हित के लिये अपने स्वार्थों का त्याग सिखलाती है।

(४) आर्य संस्कृति निष्काम भाव से शुभ कार्य करना सिखाती है।

(५) आर्य सभ्यता स्वार्थ रहित जानबूझ कर ग़रीब जीवन व्यतीत करने वाले सौम्य तपस्वी ब्राह्मणों का आदर करना सिखलाती है।

(६) आर्य संस्कृति प्राकृतिक उन्नति की जिसके पीछे चलकर योरुपीय समाज विनाश की ओर जारहा है सर्वथा उपेक्षा करना नहीं सिखाती पर वह उसके साथ २ आध्यात्मिक उन्नति पर बल देती है। ऐसा करने से ही मनुष्य समाज विनाश तथा पतन से बच सकता है।

(७) आर्य संस्कृति सत्य, अहिंसा, तप, ब्रह्मचर्य इत्यादि नैतिक गुणों की शक्तियों में बड़ा विश्वास रखती है।

समय की अवस्था का ध्यान रखते हुये मैं अपने आर्य वीरों (भारत वासियों) को सूचित करना चाहता हूँ कि इस युद्ध में आप की उन्नति छिपी है।

परन्तु शोक कि आज आप भी पश्चिमी सभ्यता के पीछे दीवाने बने जारहे हो। आप के प्रत्येक संगठन में उसी की दुर्गन्ध आरही है। आप धर्म को राजनीति के मार्ग का रोड़ा समझने लगे हो। परन्तु बन्धुओ! यह पशुता की ओर ले जाने वाला मार्ग है। योरुप के उदाहरण से ही उपदेश लेलो। मि० चर्चिल तथा हिटलर को अपना आदर्श न मान कर मर्यादा पुरुषोत्तम राम को अपना आदर्श मानो जिसने स्वर्ण की लंका जीतने पर उसपर स्वयं अधिकार न जमा रावण के भाई विभीषण को ही वह वापिस करदी थी।

आपको मनुष्यता का युद्ध लड़ना है। अन्याय तथा अत्याचार आपके शत्रु हैं। चाहे इनके करने वाला कोई भी क्यों न हो। अपनी स्वतन्त्रता तथा अधिकार प्राप्ति के पश्चात् तुम्हें विश्व भर के राष्ट्रों की स्वतन्त्रता तथा अधिकारों की रक्षा करनी है। "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" आप का अन्तिम लक्ष्य है अर्थात् संसार को आर्य संस्कृति का पाठ पढ़ाना। इसलिये वीरो उठो और ओ३म् पताका लेकर अपनी आर्य संस्कृति तथा सभ्यता को आधार भूत बना संगठित होजाओ। वरना अन्य प्रकार के संगठनों द्वारा प्राप्त स्वतन्त्रता का भारत के लिये कोई मूल्य न होगा।

ओ३म् प्रकाश स० प्रधान सेनापति
अ० भा० आर्य वीर दल

वैदिक सिद्धान्त विमर्श

त्रैतवाद

[लेखक—श्री पं० वीरेन्द्र जी विद्यावाचस्पति एम० ए०
भू० पू० आचार्य गुरुकुल वैद्यनाथ धाम]

[१]

(दर्शनशास्त्र, त्रैतवाद का तात्पर्य, और विचार की कसौटी)

इस दृश्य संसार को अपने विभिन्न रूपों में देख कर मनुष्य के मन में स्वाभाविक रूप में प्रश्न उठता है कि इसका वास्तविक स्वरूप क्या है, इस ससार का और द्रष्टा मनुष्य का क्या सम्बन्ध है तथा सब का अन्तिम लक्ष्य क्या है। वह अपनी बुद्धि के अनुसार इसका समाधान कर लेता है अथवा परम्परा से प्राप्त विचारों द्वारा ही संतुष्टि कर लेता है। परन्तु उसका समाधान अथवा सतोष उसके जीवन को अप्रत्यक्ष रूप से चला रहा होता है। प्रत्येक मनुष्य का इस संसार के विषय में अपना कुछ न कुछ विचार अवश्य होता है, चाहे वह कितना ही अस्पष्ट और अवक्तव्य क्यों न हो, और वह उसके जीवन का सचालन करता है। एक असभ्य जगली मनुष्य के भूत प्रेतों के विचारों से लेकर सर्वेश्वरवाद तक के नाना विचार मानव जगत् का नियन्त्रण कर रहे हैं। कोई इस संसार को भूत प्रेतों का क्रीड़ास्थल समझकर उनको ही प्रसन्न करना अपना हित समझता है और उन भूत प्रेतादि व्याधिदेवों की कल्पना के अनुसार ही उनको बलि या भेंट देता है और कोई इस विश्व को ब्रह्म का प्रपञ्च समझकर माया के आवरण से निकल कर ब्रह्म बनने की धुन रखता है। हमारे छोटे से छोटे कार्य में हमारे विचार प्रभाव रखते हैं। यद्यपि वे हमारी अन्त प्रज्ञा के विषय हो सकते हैं और हमारी बाह्य प्रज्ञा मे उनका स्पष्ट आभास न हो। हमारी अन्त: प्रज्ञा के द्वारा अथवा बाह्य प्रज्ञा के द्वारा कार्य करने वाले ये विचार कभी न कभी चिन्तन के विषय अवश्य बने हैं। ऐसी अवस्था में जीवन के संचालक विचारों पर, जो कि संसार के तत्त्वनिरूपण से सम्बद्ध हैं, गम्भीरता से चिन्तन करना चाहिये ताकि मनुष्य पथभ्रष्ट न हो। इस प्रकार का चिन्तन ही दर्शनशास्त्र का विषय है। अनेक प्रकार के विज्ञान भी अपने क्षेत्र में कुछ कल्पनाओं को स्वत: सिद्ध मान कर अपना विषय निरूपण करते हैं। भौतिक विज्ञान प्रकृति को

मानकर चलते हैं और मनोविज्ञान मानसिक सत्ता को। प्रकृति और मानसिक सत्ता का स्वतः स्वरूप क्या है यह दर्शनशास्त्र का विषय है। सब विज्ञान अन्त में प्रकाश दर्शनशास्त्र से प्राप्त करते हैं। इसलिये मुण्डक उपनिषद् ने 'ब्रह्मविद्या' को 'सर्वविद्या प्रतिष्ठा' और वात्स्यायन ने 'आन्वीक्षिकी' को 'सर्वविद्या प्रदीप' कहा है। ब्रह्मविद्या और आन्वीक्षिकी दर्शनशास्त्र ही हैं। इस प्रकार हमारी जीवन यात्रा और विज्ञानों की पूर्णता के लिये दर्शनशास्त्र बहुत अपेक्षित है।

प्रारम्भ में दिये हुये प्रश्न का समाधान प्राचीन काल से दार्शनिक लोग करते रहे हैं। उनके किये हुये समाधानों और विचारों को तीन दृष्टि बिन्दुओं से विभाग किया जा सकता है। पहला विभाग सङ्ख्यात्मक है अर्थात् इस ससार के अन्तिम तत्त्व कितने हैं। दार्शनिक बुद्धि का प्रारम्भ संश्लेषण शक्ति के आने से होता है। वह अनेकता में एकता देखने का प्रयास करती है। उसके लिये संसार की असम्यता और विभिन्नता सम्बद्ध और अविभिन्न तत्त्वों को न समझना मात्रा है। मेज, कुर्सी, चौकी और रेलगाड़ी का डिब्बा सब तो लकड़ी के विकार हैं। लकड़ी, लोहा और पत्थर अन्ततः पृथिवी के ही रूपान्तर हैं। इस प्रकार बुद्धि एक सूत्र को पकड़ कर एक कारण को खोज निकालने का प्रयत्न करने लगती है। पहले वह अनेक विध पञ्चभूतादि श्रेणी बनाती है। धीरे धीरे पञ्चभूत जड़ प्रकृति में समाविष्ट हो जाते हैं और विचार करने वाला शरीरान्तर्गत एक और चेतन तत्त्व लक्षित होता है। इस तरह संसार जड़ और चेतन दो विभागों में बँट जाता है। मनुष्य बहुत्व से द्वित्व की ओर आ जाता है। यह संश्लेषण समाहार की बुद्धि अपनी विजय मे मस्त होकर जड़ और चेतन को भी एक में ही प्रविष्ट करने लगती है और अनेक आपत्तियों का ख्याल न करके संसार को एक ही तत्त्व से घटित सिद्ध कर देती है। इस तरह अपनी बुद्धि से जो संसार को बहुत से तत्त्वों में विभक्त करते हैं वे बहुत्ववादी हैं। जो दो में वे द्वित्ववादी और जो एक में वे एकत्ववादी।

यह संख्या की दृष्टि से किया हुआ विभाग अन्तिम तत्त्व के स्वभाव या गुण को विचार किये बिना नहीं हो सकता। सङ्ख्यात्मक विभाग के साथ ही यह दूसरा गुणात्मक विभाग बन जाता है। इस विभाग को हम प्रकृतिवाद, अध्यात्मवाद और उभयवाद में बाँट सकते हैं। कई संसार की अन्तिम सत्ता प्रकृतिरूप में, कई

आत्मा के रूप में और कई प्रकृति और आत्मा दोनों के रूप में देखते हैं। प्रकृतिवादी और अध्यात्मवादी संख्या की दृष्टि से बहुत्ववादी और एकत्ववादी भी हो सकता है। यदि अनन्त परमाणु और अनेक आत्मा अन्तिम तत्व हैं तो बहुत्ववाद और यदि एक अव्यक्त प्रकृति और एक ही निरपेक्ष आत्मा अन्तिम तत्व है तो एकत्ववाद।

तीसरे विभाग का दृष्टिबिन्दु संसार का रचयिता है। इस दृष्टिबिन्दु से दार्शनिक विचार निम्न भागों में विभक्त किये जा सकते हैं। (१) सर्वेश्वरवाद-अर्थात् संसार में एक ही तत्व ईश्वर है, जो कुछ दृश्य जगत् है वह ईश्वर के अतिरिक्त और कुछ नहीं। ईश्वर ही संसार का अभिन्न निमित्तोपादान कारण है। इसी वाद को भारतीय दर्शनों में अद्वैतवाद कहा जाता है अर्थात् संसार में दो तत्व नहीं अपितु एक ईश्वर ही तत्व है। संख्यात्मक एकत्ववाद प्रकृतिवादी भी हो सकता है और सर्वेश्वरवादी भी। (२) ईश्वरवाद—अर्थात् ईश्वर संसार का कर्ता और संचालक है, प्रकृति और जीव उसके आधीन अपने अपने क्षेत्र में काम करते हैं। (३) प्रेरकेश्वरवाद—अर्थात् ईश्वर संसारातीत सर्वोच्च सत्ता है जो संसार बनाने के लिये प्रथम गति देती है। संसार का आरम्भ हो चुकने पर अपनी सर्वोच्चता और बुद्धिमत्ता को अक्षुण्ण बनाये रखने के लिये फिर वह हस्तक्षेप नहीं करती। 'डीइज्म' के नाम से प्रचलित यह वाद अधिक प्रचलित न हुआ। भारतीय दर्शनों में कुछ विचारक इसे वैशेषिक के सिद्धान्त में देखते हैं। (४) अनीश्वरवाद—इसके अन्तर्गत वे सब वाद आ जाते हैं जो या तो ईश्वर का सर्वथा निषेध करते हैं, उसे मानते नहीं या उसके अस्तित्व में कोई प्रमाण नहीं देखते।

दर्शनशास्त्र की इन तीन दृष्टि विन्दुओं से विचार करने पर हम इस परिणाम पर पहुँचते हैं कि संख्या की दृष्टि से बहुत्ववाद, गुण की दृष्टि से उभयवाद रचयिता की दृष्टि से ईश्वरवाद ही ठीक है। इन तीनों दृष्टि बिन्दुओं के सम्मिलित परिणाम को ही 'त्रैतवाद' कहा जाता है। संसार के मूलतत्व प्रकृति, जीव और ईश्वर हैं 'त्रैतवाद' का यह संक्षिप्त अर्थ है। उभयवाद और द्वैतवाद से इस सिद्धान्त को बनाने में भ्रान्ति होजाने की सम्भावना है। 'त्रैतवाद' विभाग गुण की दृष्टि से विशेष रूप में समझना चाहिये न कि संख्या की दृष्टि से। उपर्युक्त अर्थ

में प्राचीन वैदिक सिद्धान्तों के अनुसार स्वामी दयानन्द जी द्वारा सत्यार्थप्रकाश में प्रतिपादित दर्शन के लिए यहा 'त्रैतवाद' शब्द रूढ़ हो चुका है।

'त्रैतवाद परिणाम' पर पहुँचने के लिये मनुष्य स्वभाव के सब मनुष्यों का संन्तोष हो जाता है। यह वाद तर्क और बुद्धि को सन्तोष देना है, नैतिकता और क्रियात्मकता की दृष्टि से कल्याणकर है, और सुन्दर भी है। विचारग्राह्य होने के लिये यह 'सत्य शिव सुन्दरम्' की कसौटी पर अच्छी तरह चढ़ता है। संक्षेप में आगे किये हुये प्रकृति, जीव और ईश्वर के विवेचन से यह स्पष्ट हो जायगा।

(शेष फिर)

"सत्यार्थप्रकाश"

[श्री ओ३म्प्रकाश गुप्त, (मुंगेर) द्वारा रचित और
सत्यार्थप्रकाश दिवस की सभा में १४-५-४४ को पठित]

दीन दुःखि के आँसू से जब, धूमिल था यह दृग्धाकाश।
गया देव हे। दयानन्द तू, देकर यह सत्यार्थप्रकाश ॥१॥
आज उसी के दमन हेतु, दन्ती ने दाँत निकाला है।
हे देव दमक है कैसी यह, यह तिनका है या भाला है ॥२॥
दीन बन्धु। दुःख टार प्रभो, दुर्दिन की घटा घिरी काली।
दो वरदान बढ़ूं निज पथ में, यद्यपि दुर्गम दुस्तर माली ॥३॥
दम्भ दमन कर दम्भी का, दुश्मन को दाव दिखा दूँ मैं।
सत्यार्थप्रकाश यह कीर्त्ति अमर किसकी है नाथ बतादूँ मै ॥४॥

गुरुग्रन्थ साहेब में खंडनात्मक वाक्य

(लेखक—श्री 'देव' जी विचारक)

[गताङ्क से आगे]

४. श्राद्ध खण्डन

मूल—जीवत पितर न माने कोऊ मूये श्राद्ध कराही।
पितर भी बपुरे कहु किउ पावहि कौआ कूकर खाई॥
माटी के करि देवी देवा तिसु आगे जीउ देही।
ऐसे पितउ तुम्हारे कहीअहि आपन कहिआ न लेही॥
सरजीव काटै निरजीउ पूजे अन्तकाल कउ भारी।
राम नाम की गति नहीं जानी भै डूबे संसारी॥
देवी देव पूजहि डोलहि पारब्रह्म न जाना।
कहत कबीर अकलु नहीं चेतिआ बिषया सिउ लिपटाना॥
(रामगौडी कबीर पृष्ठ ३२२)

टीका—भक्त कबीर जी कहते है जीवित पितरों को कोई नहीं मानता है उनके मर जाने पर श्राद्ध करते हैं। बताओ। उन पितरों को कैसे पहुँचता है। कौआ, कूकर (जिन्हें खिलाते हैं) ही खा लेते हैं। मिट्टी के देवी देवता बनाकर उनके आगे जीवों का बलिदान करते हैं। तुम्हारे ऐसे ही पितर हैं जो स्वयं कुछ न कहते हैं और न कुछ लेते ही हैं। जो सजीव को काट कर निर्जीव की पूजा करता है उसकी अन्त समय में बहुत बुरी गति होती है। संसार भेव में डूबा हुआ है राम नाम की गति नहीं जानी है, देवी देवताओं को पूजते डोलते हैं किन्तु परब्रह्म को नहीं जाना है। कबीरदास कहते हैं कि तेरी बुद्धि ठीक नहीं है जो कि विषयों में फंसी हुई है॥

टिप्पणी—इसमें श्राद्ध का खण्डन करते हुये जिन्हें श्राद्ध खिलाये जाते हैं उन्हें कौआ कूकर कहा है तथा जो लोग जीवों का बलिदान करके देवी-देवताओं पर चढ़ाते हैं उनको नरक गामी कहा है।

५. भीख मांगना—खण्डन

मूल—दर वेशी को जाणसी विरला को दरवेसु।
जे घरि २ हंडै मंगदा धृगु जीवणु धृग वेसु॥
(राग बिहागड़ा म० १ पृष्ठ ५५६)

टीका—दरवेश को कौन जानता है, कोई विरला ही दरवेश है। जो दरवेश का रूप बनाकर घर घर भिक्षा माँगता फिरता है ऐसे दरवेश के जीवन और वेष को धिक्कार है धिक्कार है।

६. जाति पाँति खण्डन

मूल—जाति का गर्व न करीअहु कोई।
ब्रह्म बिन्दे सो ब्राह्मण होई ॥
जाति का गर्व न करि मूर्ख गवारा। (राग भैरव म० ३ पृ. ११२८)

टीका—गुरु अमरदास जी कहते हैं कि भाई कोई जाति का घमण्ड न करना, ब्राह्मण वही है जो ब्रह्म की खोज करे। ओ मूर्ख, गंवार। जाति का घमण्ड म कर।

मूल—नीच जाति हरि जपत उत्तम पदवी पाइ।
पूछहु बिदुर दासी सुतै किसनु उतरि आ घरि जिसु जाय ॥
रविदास चमार असतुति करे हरि कीरति निमिष इक गाई।
पतित जाति उत्तम भइया चार वर्ण पये पग आई ॥
(राग सूही म० ४ पृष्ठ ७३३)

टीका—गुरु रामदास जी कहते हैं कि परमात्मा का नाम लेने से नीच जाति भी उत्तम पदवी प्राप्त कर लेती है। यदि न मानो तो दासी सुत बिदुर जी से पूछ देखो जिसके घर कृष्ण जा उतरा था।

रविदास चमार ने एक निमिष परमात्मा की स्तुति, कीर्तन का गान किया सो देखो पतित-जाति उत्तम हो गया उसके पैरों पर चारों वर्ण आकर गिरे।

टिप्पणी—इस भाँति जन्मसिद्ध अधिकार का प्रबल कठोर शब्दों में खण्डन किया गया है। तो क्या ऋषि दयानन्द की वाणी ही में तोप के गोले हैं? तनिक विचार करो।

७. तीर्थ खण्डन

मूल—तीरथि नहावणु जाउ तीरथ नामु है।
तीरथि शब्द बिचार अतर गिआन है ॥ (म० १ पृ० ६८०)

टीका—गुरु नानक जी कहते हैं कि तीर्थ नहाने जाते हो तीर्थ तो परमात्मा का नाम है। अध्यात्मविद्या ही तीर्थ है।

टिप्पणी—इस भांति जो लोग गंगा, यमुना इत्यादिक सभी तीर्थों मे भटकते फिरते हैं वे वास्तव में सचाई को नहीं पहुँचे हैं।

"पूजशिला तीरथ बनवासा, भरमत डोलत भये उदासा"

और न उन्हें शान्ति मिली है। इस प्रकार तीर्थ का खण्डन है।

(शेष फिर)

आर्य कुमार जगत्

भारतवर्षीय आर्य कुमार सम्मेलन स्थगित

अखिल भारतवर्षीय आर्य कुमार सम्मेलन जो ता० २२-२३-२४ तथा २५ जून १९४४ को मुरादाबाद में हो रहा था, श्री प्रधान जी के अस्वस्थ होने के कारण तथा मुरादाबाद में स्वागत समिति के प्रबन्ध सम्बन्धी कठिनाइयों को ध्यान में रखते हुए, स्थगित कर दिया गया है। स्वागत समिति ने ता० २२-२३-२४ तथा २५ सितम्बर १९४४ को दशहरे की छुट्टियों में मनाने का निश्चय किया है।

देवीदयाल उपमन्त्री
भारतवर्षीय आर्य कुमार परिषद् दिल्ली

भारतवर्षीय आर्य कुमार परिषद्

परीक्षा विभाग की सूचनायें

परीक्षाओं के आवेदन पत्र—

भारतवर्षीय आर्य कुमार परिषद् की ओर से जनवरी सन् १९४५ ई० में होने वाली सिद्धान्त सरोज, सिद्धान्त रत्न, सि० भास्कर व सिद्धान्त शास्त्री की धार्मिक परीक्षाओं की पाठविधि तथा आवेदन पत्र आदि छप चुके हैं। परीक्षा देने वाले भाई-बहिन एक कार्ड लिखकर प० देवव्रत जी धर्मेन्दु परीक्षा मन्त्री भारत वर्षीय आर्य कुमार परिषद् दीवान हाल दिल्ली के पते से मगा लेवें।

नये शहरों में केन्द्र—

जो भाई-बहिनें हमारी परीक्षाओं में सम्मिलित होना चाहते हैं और उनके नगर में अभी तक इन परीक्षाओं का केन्द्र न हो उन्हें कार्यालय से केन्द्र स्थापना फार्म मगा लेना और प्रयत्न करके अपने नगर में थोडे बहुत अपने साथो या किसी भी परीक्षा में परीक्षार्थी तैयार कर केन्द्र स्थापित करा लेना चाहिये।

परीक्षाओं का परीक्षा फल

सिद्धान्त सरोज—

१३७० परीक्षार्थियों ने प्रवेशपत्र भरे, ११०४ सम्मिलित हुवे ९० प्रथमश्रेणी में, १६४ द्वितीय श्रेणी में, ५४८ तृतीय श्रेणी में कुल ८०२ परीक्षार्थी उत्तीर्ण हुए।

सि० रत्न—

७६५ परीक्षार्थियों ने प्रवेश पत्र भरे, ६३७ सम्मिलित हुवे।

३८ प्रथम श्रेणी में, ८५ द्वितीय श्रेणी में, ३६२ तृतीय श्रेणी में कुल ४८५ परीक्षार्थी उत्तीर्ण हुवे।

सिद्धान्त भास्कर—

१९३ परीक्षार्थियों ने प्रवेश पत्र भरे, १६५ सम्मिलित हुवे ११ प्रथम श्रेणी, २८ द्वितीय श्रेणी में ११६ तृतीय श्रेणी में कुल १५५ उत्तीर्ण हुवे।

सिद्धान्त शास्त्री—

११२ परीक्षार्थियों ने प्रवेशपत्र भरे, ९३ सम्मिलित हुवे २ प्रथम श्रेणी में, ८ द्वितीय श्रेणी में ५९ तृतीय श्रेणी में कुल ६९ उत्तीर्ण हुवे।

दिल्ली प्रान्तीय आर्य कुमार परिषद्

आगामी वर्ष के लिये निम्न प्रकार चुनाव हुवा—

प्रधान—प० देवव्रत जी धर्मेन्दु

कार्य कर्त्ता प्रधान—प० धर्मवीर जी प्रेमी M A

उपप्रधान—श्रीयुत मा० ईश्वरदास जी M A B T
मा० हरिश्चन्द्र जी M A B T
प० धर्मदेव जी विद्यावाचस्पति
प० कृष्णचन्द्र जी विद्यालङ्कार
प० रूपलाल जी B .A L L B
प० चन्द्रभानु जी सि० भूषण

मन्त्री— श्री देवीदयाल जी

उपमन्त्री— श्री भानुभाई जी पटेल, श्री परमात्माशरणजी, श्री कुम्दनसिंहजी।

कोषा० श्री श्यामस्वरूप जी

इनके अतिरिक्त प्रत्येक कुमार सभा से एक २ प्रतिनिधि अन्तरंग सदस्य चुना गया।

अमर-योद्धा !!

(रचयिता—श्री फणीन्द्र मरौली बाजार)

मृत्यु गान बलिदान रागिनी, विजय माल ग्रीवा की हार।
भुज विशाल हो ओ३म् पताका, वही आज है आर्य कुमार ॥
जिसकी नस नस रोम रोम में, आर्य धर्म का हो मन्तगान।
स्वप्न नहीं, प्रत्यक्ष सत्य हो, देश धर्म पर निज बलिदान ॥
वज्र अंग पटपीत, नयन में, धर्म प्रेम की हो लाली।
'कृण्वन्तो' के काव्य लोक में, हृदय भावना मतवाली ॥
चञ्चल चपला शक्ति शूरमा, अचल हिमाचल सा अविचल।
आत्म शक्ति लख थर थर कांपे, महाकाल, जग, नभ भूतल ॥
हृदय-रक्त रण-विजय तिलक शुभ, मस्तक पर जिसके शृंगार।
वही अमर योद्धा है विजयी, आर्य अवनि का आर्य कुमार ॥
मृत्यु खेल से खेल खेल कर, समर सेज सिंहासन में ॥
हो दहाड़ वनराज सिंह सी, समरांगण के प्रांगण में ॥
जिसकी रण-हुँकार-ध्वनी सुन त्रिभुवन भी थर्रा जाये।
भ्रू-विशाल संकेत मात्र से अखिल विश्व भहरा जाये ॥
सूर्य तेज सम, तड़ित वेग से, प्रबल शत्रु दल का संहार।
वही अमर-योद्धा है अनुपम जननी का प्रिय आर्य कुमार ॥

"धारणा"

(लेखक—श्री महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज नारायणाश्रम रामगढ़)

योग के आठ अगों मे धारणा का स्थान छठा है। धारणा के दो रूप है.—एक तो साधारण रूप, जिसमे इतनी योग्यता हो जाती है कि कोई व्यक्ति किसी काम के करने मे अपना जी लगा सके। जैसे रेखागणित के किसी प्रश्न अथवा गणित क किसी सवाल को हल करने आदि में मनुष्यों का जी लग जाया करता है। यह साधारण चित्त के एकाग्र करने की योग्यता भो बडे काम की चीज़ बन जाया करती है। इससे विद्यार्थी अपना पाठ शीघ्र याद कर सकता है। कवि कविता, व्यापारी व्यापार, डाक्टर इंजीनियर, अपने अपने उद्यमों को सफलता के साथ कर सकते हैं। यह एकाग्रता हर्षप्रद भी हुआ करती है। ससार मे खाने, पीने, वस्त्रों के पहनने अथवा अन्य विषयों का उपभोग करने आदि मे, वास्तव में प्रसन्नता अथवा सुख नहीं हाता। विशेषज्ञ जानते है कि सुख केवल चित्त की एकाग्रता मे हुआ करता है। जिस विषय की ओर चित्त लग जाता है वही सुख प्रद हो जाता है, जिसमे चित्त नहीं लगता वह सुख देने वाला विषय नहीं ठहरता। एक व्यक्ति किसी रुचि कर वस्तु को खाकर प्रसन्नता लाभ करना चाहता था परन्तु रोगी पुत्र का हाल जानने से, उसका चित्त भोजन से हटकर रोगी पुत्र की ओर चला गया। इसलिये अब वह भोजन न रुचिकर रहा, न हर्षपद।

(२) दूसरा रूप धारणा का वह है जो योग के छठे अग में वर्णित है। इस धारणा का इतना महत्व है कि इसकी सिद्धि से सम्प्रज्ञात समाधि की सिद्धि हो जाती है। इस समाधि की सिद्धि से योगदर्शन में वर्णित विभूतियों को काम में लाने का वह अधिकारी बन जाता है। इस धारणा की सिद्धि के फल से, साधक एक अत्यन्त छोटे बिन्दु को इस प्रकार देखने लगता है कि उस बिन्दु से बाहर इधर उधर उसे कुछ न दिखाई दे। इसी धारणा की अल्प सिद्धि ही से एक व्यक्ति अपने से निर्बल को मूर्च्छित Hypnotised कर सकता है इस धारणा की सिद्धि से मनुष्य की स्मृति अत्यन्त तीव्र हो जाती है यह धारणा स्मृति की वृद्धि का असदिग्ध कारण है इसलिये धारणा यह शब्द स्मृति के अर्थ ही में प्रयुक्त होने लगा।

एमरीका के एक योगी आश्रम के आचार्य रामचरक ने, जो एक एमरीकन विद्वान् हैं, राजयोग नामक ग्रन्थ में, इसी धारणा की सिद्धि के एक परीक्षण का उल्लेख किया है। रामचरक जी एक ऐसे सिद्धिप्राप्त योगी को एक जनरल मरचेन्ट की एक दूकान में ले गये। वहा उसे एक से अधिक अलमारिया दिखलाई गई जिनके एक एक खाने में अनेक वस्तुए क़रीने से रक्खी हुई थीं। उस योगी से कहा गया कि वह प्रत्येक अलमारी के प्रत्येक खाने मे रक्खी हुई वस्तुओं पर एक दृष्टि डाल ले। उसने यह काम कर लिया। अब उसे आचार्य वहा से हटा ले गया और एक दूसरे व्यक्ति को कागज कलम दवात लेकर वहा बिठला दिया गया और उस योगी से कहा गया कि वह प्रत्येक अलमारी की वस्तुओं को क्रम पूर्वक लिखवा देवे। योगी ने लिखवा दिया। परीक्षकों का कहना है कि परीक्षार्थी ने प्रत्येक वस्तुका विवरण खानेवार लिखवा दिया था। यह परीक्षण स्पष्ट करता है कि धारणा की सिद्धि स्मृति का कितना उत्कृष्ट विकास हो जाता है। एक आदमी किसी रोग से पीड़ित है। पीड़ा सीमा का उल्लघन कर रही है। यदि वह रोगी धारणा का अभ्यास कर चुका है तो वह अपने चित्त को किसी दूसरी ओर लगाकर, उस पीड़ा के कष्ट से अपने को मुक्त कर सकता है। इस प्रकार के अनेक लाभ हैं जिनकी प्राप्ति इस अभ्यास की पूर्ति से हो जाती है। कोई आविष्कारक अपने किसी आविष्कार की पूर्ति, धारणा की सहायता बिना नहीं कर सकता। न कोई रिसर्च स्कोलर कोई खोज कर सकता है।

इस प्रकार से हमने देख लिया कि यह धारणा, अभ्युदय और निःश्रेयस दोनों की सिद्धि की ओर अभ्यासी को लेजाकर उसे कृतकृत्य कर दिया कर करती है॥

मधुर भाषण ही वशीकरण मन्त्र है

(लेखक —श्री लब्भूराम जी आनन्द आश्रम लुधियाना)

यदि हमारी इच्छा हो कि दूसरे मनुष्यों से हम प्रसन्न रहें अर्थात् वह हमें प्यार करें तो इस इच्छा मे हमें सफलता तब ही हो सकती है कि जब हम भी अपने कर्तव्य का पालन करें। मनुष्य को चाहिये कि अपना वर्ताव ऐसा प्रिय रक्खे कि सब मनुष्यों को प्रसन्न रक्खा जा सके और यह नियम अटल है कि जो वर्ताव हम अपने लिये चाहते हैं वैसा ही वर्ताव हम औरों से करें। और जो मनुष्य यह इच्छा रखता है कि मैं किसी को कटु शब्दों से दुःखित न करू तो बहुत ही आवश्यक है कि हम अपने भीतर अनुभवशक्ति (Feeling power) का सचार करें और जहा तक इसके बढ़ाने का यत्न करेंगे सदैव प्रसन्नचित्त रह सकेंगे और इसके साथ ही हम दूसरों को प्रसन्न रख सकेंगे। शुक्र नीति मे लिखा है कि सदैव मन को आकर्षित करने वाली वाणी से ससार को प्रसन्न करे। कड़वे वचन बोलने वाला मनुष्य यदि मन से लाभ पहुंचाने वाला भी हो तो भी वह दुःख पहुचाने वाला होता है नि सन्देह धन धान्य से मालामाल मनुष्य यदि अपने धन से दूसरों को अपने पर मोहित करना चाहे और वह उनकी दृष्टि में प्रिय हो तो उसका धन उसे कोई लाभ नहीं पहुँचा सकता। जैसा कि एक निर्धन मनुष्य का मधुर भाषण प्रिय बना सकता है। मधुर भाषी मनुष्य जहा अपने मधुर भाषण से लोगों को अपने वश में कर सकता है वहा विपरीत इसके कडे और कठोर वचन बाणों के समान मुख से निकलते हैं जिससे मनुष्य घायल होकर न केवल तड़पता ही रहता है वल्कि यह बाण उसे समीप से बहुत दूर फैंक देते हैं। ये बाण इस लिये भी दुःखदायी हैं कि सिवाय हृदय में लगने के इनके लगने का और कोई स्थान हो ही नहीं सकता। जहा लोहे के बाण लग कर शरीर से निकल सकते हैं वहा ये बाण हृदय में घुसने के कारण निकल ही नहीं सकते। शस्त्रों के घाव तो कुछ समय बाद भर भी जाते हैं, परन्तु कटु वचनों के घाव के लिये कोई मलहम है ही नहीं जो कि इन घावों को आराम दे सके। इसलिये मनुष्य को चाहिये कि वह जबान को काबू मे रक्खे। इसलिये दुर्जनों और मित्रों को अपना बनाने की इच्छा रखने वालों और सारे ससार को वश में करने वालों के लिये मधुर भाषण ही वशीकरण मन्त्र है।

काशी नागरी प्रचारिणी सभा की जयन्ती और पंचाग संशोधन

(लेखक— श्री पं० गङ्गाप्रसाद जी एम ए, प्रधान सार्वदेशिक सभा)

गत बसन्त पचमी पर अर्थात् माघ मास मे काशी नागरी प्रचारिणी सभा ने अपनी जयन्ती मनाई थी। सभा का अध शताब्दी इतिहास प्रकाशित हो चुका है। मैंने उसको बड़ी रुचि के साथ पढ़ा। उससे प्रकट होता है कि सभा ने गत पचास वर्षों में केवल देवनागरी अक्षरों के प्रचार का काम ही नहीं किया (जैसा कि उसके सीधे सादे नाम से भ्रम होना सभव है), किन्तु हिन्दी भाषा और हिन्दी साहित्य की सब प्रकार से रक्षा उन्नति और वृद्धि की है। सभा के अनेक कार्यों में एक बडा शब्द कोष और वैज्ञानिक कोष तैयार करना हिन्दी के प्राचीन हस्त लिखित ग्रन्थों की खोज करना, हिन्दी की एक शीघ्र लिपि प्रणाली बनाना विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इन सब कार्यों के लिये सभा के कार्यकर्ता और विशेषकर सभा के सस्थापकों की त्रिमूर्ति अर्थात् श्री रामनारायण मिश्र, डाक्टर श्यामसुन्दर दास और ठाकुर शिवकुमार सिह जो ईश्वर की कृपा से विद्यमान हैं (ईश्वर उनको शत आयु तक जीवित रखे), विशेष रूप से बधाई के पात्र हैं।

सभा ने अपनी जयन्ती के साथ विक्रम द्विसहस्राब्दि उत्सव मनाने का भी निश्चय किया था, और उस उत्सव के कार्यक्रम में पचाग के संशोधन का कार्य भी शामिल किया था।

हमारे सौर पचाग में एक बडी भूल है अर्थात् प्रत्येक सौर मास का दिवस जिसको सक्रान्ति कहते हैं सही दिवस से लगभग २१ दिन पीछे आता है। इस लिये मेष व वैशाख की सक्रान्ति जिसको विषुवत् सक्रान्ति भी कहते हैं २३ मार्च के स्थानमें १३अप्रैल को होती है। विषुवत् शब्द का अर्थ ही दिन और रात का समान होना (Equino) है, जो २३ मार्च को ही होता है १३ अप्रैल को नहीं। इस प्रकार मकर की सक्रान्ति १३ जनवरी को होती है जो वास्तव में २४ दिसम्बर को होनी चाहिये जिस दिन से सूर्य के दक्षिणायन (Winter Solstice) का आरम्भ हो जाता है अर्थात् उस दिन से दिनमान का बढ़ना आरम्भ हो जाता है। मैंने इस विषय पर एक प्रस्ताव उक्त सभा के पास भेजा था जो एक लेख के रूप में

"सार्वदेशिक" पत्र में छपा था। श्री सम्पूर्णानन्द जी ने, जो उस समय काशी नागरी प्रचारिणी सभा के सभापति थे, और गत कांग्रेस मन्त्रिमण्डल में शिक्षा मंत्री थे, इस कार्य के लिये ११ प्रमुख ज्योतिर्विदों की एक समिति इस अभिप्राय से बनाई थी कि वह ऊपर लिखे प्रश्न तथा पंचांग शोधन सम्बन्धी अन्य प्रश्नों पर विचार करके यह निश्चय करे कि इन प्रश्नों का निर्णय करने के लिये पूर्वोक्त उत्सव के अवसर पर किसी सम्मेलन को बुलाना ठीक होगा या नहीं।

सभा के अर्ध शताब्दी इतिहास से पाया जाता है कि उक्त समिति की एक बैठक २६ ज्येष्ठ १९९९ और दूसरी ५ मार्गशीर्ष १९९९ को हुई। बहुत से ज्योतिष के विद्वानों को पत्र लिखे गये थे। करीब ३५ विद्वानों की सम्मतिया आईं। इनमें से अधिकाश की सम्मति यह थी कि सौर पचाग वर्तमान प्रणाली के अनुसार ही बनाई जावे। बहुतों ने गणित की स्पष्ट भूल को स्वीकार करते हुए भी फलित के विचार से पचाग में सशोधन करना उचित व व्यावहारिक नहीं माना। समिति की अन्तिम बैठक ३ माघ १९९९ को हुई। उपस्थित सदस्यों में से तीन विद्वानों (अर्थात् डाक्टर गोरखप्रसाद प्रयाग विश्व विद्यालय, बा० अवधेश नारायण सिंह, गणित-विभाग लखनऊ विश्व विद्यालय और श्री चंडी प्रसाद जी चेतगंज काशी) ने यह मत प्रकट किया कि सौर पचाग का सशोधन होकर वह सर्वथा दृश्य गणना के अनुसार बनाया जाए। दूसरी ओर श्री रामदास पांडे (हिन्दू विश्व विद्यालय काशी) और श्री पद्‌माकर द्विवेदी खजुरि काशी का कहना था कि वर्तमान प्रणाली का ही अनुसरण होता रहे। श्री बलदेव मिश्र (सरस्वती भवन काशी) की यह सम्मति थी कि पचाग का आधार सूर्य सिद्धान्त ही रहे। परन्तु ग्रहों को उदयास्त आदि दृश्य गणित के अनुसार दिया जाए। इस प्रकार मतभेद होने के कारण समिति का कार्य यहीं रोक दिया गया। और पचाग सशोधन के लिये किसी सम्मेलन का बुलाना उचित नहीं समझा गया। परन्तु सभा के इतिहास के सम्पादक महोदय ने लिखा है—"परन्तु सभा ने इस काम को आगे बढ़ाने का निश्चय किया है। विद्वानों में जो विचार विनिमय हुआ है वह सन्तोषजनक है। इससे भी आशाजनक बात यह है कि जनता का ध्यान इस ओर आकृष्ट हुआ है। इस अनुकूल वातावरण में पंचाग शोध के काम को सफलता मिलनी चाहिये।"

लगभग पांच या सात वर्ष हुए इन्दौर में अखिल भारतीय ज्योतिर्विद् सम्मेलन हुआ था जिसमें सभापति का आसन श्री महामना मदन मोहन मालवीयजी ने ग्रहण किया था। उस सम्मेलन में यह प्रश्न रखा गया था और सम्मेलन होने के पूर्व श्री पूज्य महामना मालवीय जी ने मेरे पत्र के उत्तर में यह आशा दिलाई थी कि इस सुधार के लिये यत्न किया जायगा। परन्तु खेद है कि उक्त सम्मेलन में संशोधन सम्बन्धी प्रस्ताव बहुमत से गिर गया। इसका कारण यह है हमारे देश के ज्योतिषी गणित की प्रत्यक्ष भूल को देखते और विचार करते हुए भी केवल इसलिये उस भूल का सुधार करने का साहस नहीं करते कि फलित के अनुसार व्रतोपवास आदि के लिये योग वा मुहूर्त आदि बनाने में अड़चन पड़ती है।

आशा है कि काशी नागरी प्रचारिणी सभा अपनी मासिक पत्रिका द्वारा वा अन्य प्रकार से जनता को इस बात की सूचना देती रहेगी कि सभा ने जो इस काम को आगे बढ़ाने का निश्चय किया है उसके सम्बन्ध में क्या काम किया जा रहा है॥

सत्यार्थ प्रकाश का प्रकाशन

(ले०—श्री डा० सूर्यदेव शर्मा साहित्यालंकार सिद्धान्त शास्त्री
एम. ए. एल. टी., डी. लिट्, अजमेर)

जबसे मुस्लिमलीग ने सत्यार्थ प्रकाश के कुछ भागों को जब्त कराने का आन्दोलन उठाया है तब से आर्य समाज में सत्यार्थप्रकाश की रक्षा और प्रचार के लिये एक विशेष जागृति उत्पन्न हो गई है। यह एक शुभ लक्षण है। आर्य समाज ने पिछले कुछ महीनों में सत्यार्थप्रकाश के लिये जो आन्दोलन किया है वह अभूत-पूर्व है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि मुस्लिमलीग द्वारा उठाये गये सत्यार्थ-प्रकाश विरोधी आन्दोलन ने अब तक तो हमारा हित ही किया है। जिन सरकारी अफ़सरों अथवा उच्च पदस्थ मुसलमानों, ईसाइयों ने अथवा हिन्दुओं ने शायद सत्यार्थ-प्रकाश का कभी नाम भी नहीं सुना था, उनके कानों पर भी अब सत्यार्थ-प्रकाश की ध्वनि गूज रही है तथा अनेकों ने सत्यार्थ-प्रकाश को पढ़ना आरम्भ कर दिया है अथवा पढ़ने की इच्छा प्रकट की है।

आर्य समाज के उपदेशकों तथा प्रचारकों ने भी स्थान २ पर सत्यार्थ-प्रकाश की आवाज़ को पहुंचाने के लिये प्रयत्न किये हैं। आर्य समाज के प्रत्येक उत्सव के साथ "सत्यार्थ प्रकाश सम्मेलन" का होना एक आवश्यक अंग बन गया है। आर्य समाज के लेखकों और कवियों ने भी इस दिशा में अपने कर्तव्य का पूरे तौर से पालन किया है। समाचार पत्रों के सपादक महानुभावों ने भी अपने लेखों और टिप्पणियों द्वारा इस कार्य में ख़ूब ही हाथ बटाया है। सबसे अधिक प्रभाव-कारी आन्दोलन तो दिल्ली में होने वाले अखिल भारतवर्षीय आर्य-महा सम्मेलन से हुआ जो इस संबध में हमारा सबसे बड़ा और विराट् प्रदर्शन था जिसने सारे भारतवर्ष और ससार को बता दिया कि आर्य समाज सत्यार्थ-प्रकाश की रक्षा और प्रचार के लिये क्या २ करने को तैयार है।

यह सब कुछ हुआ और सत्यार्थ-प्रकाश का नाम सब लोगों तक पहुँच गया हमारे माल का विज्ञापन पूरे तौर से हो चुका। अब प्रश्न है लोगों की माँग का पूरा करना सो बड़े दुःख के साथ लिखना पड़ता है कि अब हम सत्यार्थ-प्रकाश के

लिये लोगों की मांग पूरी नहीं कर पारहे हैं । सब लोगों को आश्चर्य तो उसी समय हुआ था जब कि दिल्ली आर्य-सम्मेलन में ही सत्यार्थ प्रकाश की प्रतियों की कमी पड़ गई थी और सैकड़ों ग्राहकों को निराश लौटना पड़ा था । इतने बड़े सम्मेलन के अवसर के लिये तो लाखों की संख्या में सत्यार्थ-प्रकाश छपकर प्रस्तुत रहना चाहिए था। इससे भी अधिक दुःख की बात यह है कि सम्मेलन के इतने दिन पश्चात् भी और इतना अधिक आन्दोलन होने पर भी सत्यार्थ-प्रकाश की माँग को पूरा करने के लिये अभी कोई प्रयत्न नहीं किया जा रहा है। आर्य-साहित्य मंडल अजमेर के मैनेजर साहब से ज्ञात हुआ कि वहाँ सत्यार्थ-प्रकाश के लिये ग्राहकों के लगभग दस हजार (आर्डर) Order आये हुये पडे हैं लेकिन सत्यार्थ प्रकाश अब स्टाक में नहीं है और कागज के न मिलने से शीघ्र छपाया भी नहीं जा सकता। वैदिक यन्त्रालय अजमेर भी अपने पास आई हुई सारी माँगों को शायद पूरा नहीं कर पारहा है। यही दशा सत्यार्थ प्रकाश के अन्य प्रकाशकों की भी हो रही है। वे बेचारे करें भी क्या ? धन और कागज की कमी उन्हें ऐसा करने पर विवश कर रही है। ऐसी दशा में आर्यसमाज को संगठित रूप से कुछ करना अवश्य है।

संसार में कोई कम्पनी या फर्म ऐसी नहीं हो सकती जो अपने माल का विज्ञापन तो बड़े ज़ोर शोर से करे और अपना माल खरीदने के लिये लोगों से आग्रह पूर्वक आन्दोलन करे, लेकिन जब लोगों की माँग आये तो उनको तैयार किया हुआ माल न दे सके। यदि कोई ऐसी कम्पनी या फर्म हो तो उसका मैनेजर अवश्य अविवेकी कहा जायगा और उस कम्पनी का दिवाला और अप्रतिष्ठा भी निश्चित रूप से होगी। यही हाल इस समय आर्य समाज का है।

हमारी सम्मति में तो, जैसा कि मैं आर्य सम्मेलन के पूर्व भी एक लेख में लिख चुका था, सत्यार्थ-प्रकाश के प्रचार और प्रकाशन के लिये एक अखिल भारतीय प्रकाशन विभाग खोला जाए जिसके द्वारा सत्यार्थ-प्रकाश का एक लाख का संस्करण प्रत्येक बार निकाला जाया करे जो अधिक संख्या में छपने के कारण सस्ता भी रहेगा और लोगों की माग को भी पूरा कर सकेगा। जैसे ईसाइयों की "बाइबिल सोसायटी" बाइबिल प्रचार के लिये विश्वव्यापी आन्दोलन करती है और संसार की विभिन्न भाषाओं में बाइबिल के अनुवाद प्रकाशित करती

है, उसी प्रकार हमारे "सत्यार्थ प्रकाश प्रकाशन मंडल" से देश तथा विदेश की अनेक भाषाओं में सत्यार्थ-प्रकाश के अनुवाद प्रकाशित होने चाहिये। वह प्रकाशन मडल चाहे देहली में सार्वदेशिक सभा के अन्तर्गत खोला जाय अथवा अजमेर के आर्य साहित्य मंडल अथवा परोपकारिणी सभा के अन्तर्गत रहे; लेकिन प्रत्येक दशा में वह अखिल भारतीय माँग को पूरा करने वाला हो प्रत्येक दशा में सार्वदेशिक सभा की देखरेख में होना चाहिये।

यदि इस प्रकार हम सत्यार्थ-प्रकाश के प्रकाशन का प्रबन्ध न करके उसकी माँग को पूरा नहीं कर सकते तो हमारा केवल मौखिक प्रचार अधिक लाभदायक सिद्ध नहीं हो सकता। अत सत्यार्थ-प्रकाश के प्रकाशन का प्रचुर प्रबन्ध करना इस समय आर्य समाज का मुख्य कार्य है।

वैदिक सन्देश !

(छप्पय छन्दः)

वैदिक वारिधि बीच, बना जो बुध वोहित है।
दिक् मंडल में हुआ, "सूर्य" सम जो समुदित है॥
कमल मानसों मध्य, मनीषा रूप मुदित है।
संशय वृक्ष कुठार, बुद्धि विज्ञान विहित है॥
देवे सब को कल्याण प्रद, वैदिक बोध विशेष ही।
शतबार सुनें हम प्रेम से, वह वैदिक संदेश ही॥

—सूर्य देव शर्मा एम ए. अजमेर

[नोट—सब पंक्तियों के पहले पहले अक्षरों को मिलाकर पढ़ने से "वैदिक सन्देश" बन जाता है।]

Vedic Varna Vyavastha and Socialism

(By Pt Ganga Prasad ji, M A, Chief Judge, President, Sarvadeshik Sabha)

(Continued from May 1944 issue)

Hostility to Marriage.

The institution of the Family, and the marriage are the very basis of all civilised life Dr Bhagwan Das remarks on this subject are so beautiful that I shall quote them at length —

"Every true Home is a moral laboratory, and every child is a potent apparatus for transmitting the base metal of the self seeking animal man and animal woman into self-sacrificing father and mother, collaborating in the spirit of the best and highest socialism for the benefit of the younger generation and therefore the whole of society Woman is not to be honoured as woman and wife, man is not to be honoured as man and husband, but as mother and a father .. God the world father, nature the world mother, man the child of God's nature, these constitute the family Home of the Universe in the terms nearest and nearest to the heart of man.

.... The family is the unit of society The Family Home is the first and the best school of true socialism Without the best experience which the family provides, it is not possible to realise why and how one can and should sacrifice his own ease, health, even life itself, if and as necessary, for any one else The Joint family potently embodies and acts upon the essential principles of socialism "To all according to their needs, from all according to their capacities", each for all, all for each To abolish or weaken the family is to abolish or weaken the human society and socialism" (pp 58-60)

In respect of marriage also the Russian Bolshevists have learnt much by experience It is said that Lenin himself was disgusted at the orgus of lust exhibited by young Bolshevists soon after the Revolution, and had to impose some restraints on the rules about divorce. Shri Sampurnanand on pp 248 and 249 of his treatise refers to this subject and says that endeavours are still being made in Russia to make the ties of family relations stronger, and to reduce the number of divorces He further adds that the real objects of socialism are the emancipation of the woman from man's bondage, and the entrusting of the education of children to the State, instead of leaving it to their parents. Both these objects are thoroughly in keeping with tho Varna Ashram Dharma taught in Manu and the Vedas

Private Property

It has been shown in the last para that marriage and family are essential for civilised life and genuine socialism. Private property in reasonable measure is essential for family life. What is really very undesirable in the present state of society is the immense difference between the state of the poor and the rich, and it is this which leads the ultra radical socialist to make the unreasonable and very impossible demand for a total abolition of private property and for absolute equality among all men in the distribution of all necessary things as well as of work. As Religion should not be condemned on account of its perversions, so private property should not be banned on account of the evils arising from its unequal distribution. The remedy is to bring about as equitable (not quite equal which is impossible) a distribution of wealth as possible taking into consideration the needs of each individual, and the nature and quality of work which he has to do. Even non-socialist democratic states, are realising the need for this and are taking steps in the right direction. For example death duties and succession

duties have been imposed in many countries so as to transfer a good portion of the surplus money of a dying rich man to public treasury while leaving a substantial *portion for his* sons or successors.

The acute difference between the poor and the rich at present is too patent to need an elaborate discussion. A few salient facts about India may however be mentioned The average income of an Indian (including the poorest and the richest) is said to be at present 7 or 8 pies per day i e, about Rs. 4/- per month The income of the poorer people would therefore be still less. It is well-known that millions of people in India do not get even one full meal a day, are clad in rags, and own no houses to live in. On the contrary there are persons who draw fat salaries ranging from Rs one to five thousand per month Lawyers, medical practitioners, having equally large incomes, and business men whose income amounts to lakhs of rupees Such atrociously inequitable distribution of wealth certainly calls for radical reforms

Perfect equality impossible.

If perfect equality of wealth and work for all men is demanded by any socialists it would be totally unjust and unnatural highly inexpedient, and even impossible

It would be unjust and unnatural, for nature has not made all of them alike When men are born, their souls are not created afresh They bring with them tendencies, capacities, talents etc, which widely differ, and which are the consequences, or antecedents (i. e, Sanskars) of their previous lives, or Karmas A man who is born a dullard may and can improve to some extent by industry and perseverance, but can never equal a man who is by nature a genius or of brilliant intelligence Habits are alse responsible for differences in the quality of men and their work. Some are lazy, other-industrious, some are prodigal, others

thrifty. To ignore these differences, and to treat all men alike by supplying them with the necessaries of life, luxuries and comforts in absolutely equal measure would be most unjust

It would also be inexpedient, for if all men, good, bad and indifferent are thus levelled down, there would be no stimulus left for individuals for aspiring to produce work of better or higher quality or in larger quantity, and this would seriously retard the progress of society.

It would be impossible as the Russian Bolshevists have found by actual experience They first attempted to enforce such equality, but found it impossible to do so Mr Hindus on p. 280 of the Great Offensive says —

The Russian Revolution emphasises now, not equality but inequality of income, which means inequality in standard of living" The U S S R periodically raises huge internal loans, (one of three and half milliard rubbels was reported by the papers for April 1934) Apparently private citizens subscribe out of their private savings and receive interest (70-72-90-91, from the State Referring to Twelve studies in Russia 231-271) Dr Bhagwan Das says —

"Bolshevist too despite all its professions of adherence to the cult of economic equailty is said to permit differences in salaries and income ranging from 45 to 1500 rubbels per month in the ranks of Communists and Prolitarian", (p 12-13) This is much the same as the scale of pay suggested by Dr Bhagwan Das, (vide para 26)

Private property

Is now allowed in Russia within certain limits Shri Sampurnanand in Chapter 13 of his book (Samajwad) discusses this question and cites the following articles as private property allowed to be retained by individuals —Food, clothing, books for study, musical instruments, bedstead, bedding, chair, table, lamp etc and also bicycle, motor and pony About house he says there is some differe ce of opinion. Regarding cash it is allowed so far as it is required for purchasing articles of necessity, but it is not permitted to invest it as capital.

(To be Continued)

ISLAM AND CRITICISM

ISLAM DOES CRITICISE OTHERS BUT MUSLIMS CANNOT BEAR CRITICISM !

An eye-opener and appeal to all right-loving Muslims.

[By—Shri Ganpatrao B. Gore, AUNDH (Satara)]

At Karachi sessions of the Muslim League, while speaking on the resolution for proscription of part of the Satyarth Prakash a learned Muslim Professor is said to have remarked "*Islam never criticised other religions*"

In my humble opinion it is simply a misrepresentation of and a gross injustice to the tenets of the Quran ! I hold that in conformity to the previous scriptures from the Veda down to the Bible, the Quran too indulges in the criticism, and the hundreds of big big Maulvies sitting in the Muslim League session at that time raised no protest against the above assertion simply because the resolution against the Satyarth Prakash had to be passed by hook or by crook ! ! But the truth, wherever it be, shall not go unvindicated, and we proceed to prove our point as follows —

1 *Quran criticises sun-worshippers*

[Says the bird Hudhud to Solomon] Surely I found a woman [SHEBA] ruling over them (27 23) I found her and her people adoring the sun, instead of Allah, and the devil has made their deeds fair seeming to them and thus turned them from the way, they do not go aright (27 24.)

2. *Quran criticises Idol-Worshippers*

In the Quran 16 75 the idol-worshipper is compared to a slave ! Commenting on this Maulvie Muhammad Ali writes in his commentary to the Quran, Vide Foot note no. 1384 of 1920 Edition—

"By slave is meant the idol worshipper, who in stead of being master of idols, stones and such like objects, as Allah had created him to be, choose to become a slave to them, bows before them, and consider them more powerful than himself "

Reader ! Is that no criticism of other's religion ?

3 & 4 *Quran criticises the Jews and the Christians.*

A. [Allah says to Jews] you took the calf (for a god) after him [Moses] and you were unjust (2 51) Here Allah Himself indulges in criticism !

B And they say. None shall enter the garden (of Paradise) except he who is a jew or the Christian. These are their vain desires. Say, Bring your proof if you are truthful (2 111)

Allah challenges the Jews and Christians for a debate !

C And they say Allah has taken to Himself a Son Glory be to Him, rather whatever is in the heavens and the earth is His, All are obedient to Him (2 116)

Is this not a plain criticism of the Christian faith ?

5. *Quran criticises Kafirs or Athiests*

A Those who disbelieved from among the children of Israel, were cursed by the tongue of David and Jesus son of Mary , (2 78)

B. In Quran 2 171 the disbelievers are called "Deaf, dumb and blind."

C those who disbelieve make a false contention that they may render null thereby the truth (18 56)

D They rejoice in this world's life, and this world's life is nothing compared with the hereafter (13 26.)

6 *Quran denounces the false prophets.*

It is a revelation from the Lord of the worlds. And if he had fabricated against us some of the sayings, we would certainly have seized him by the right hand Then We would certainly have cut off his aorta* (69 44-47)

This proves that the revelation FROM the LORD GOD never changes, and that the fabricators would be punished with death The Aryans believe in the truth of this statement and claim the revelation of vedas in the beginning of the world, just-like the creation of the sun, the moon, the air, the sky, the fire, the water and the earth is true to this day and shall remain true to the end of this world.

7 *Quran refutes the doctrine of Abrogation of Revelation*

A and there is none to change the words of Allah (6 34)

B And the words of your Lord have been accomplished truly and justly, and there is none who can change His words (6 116)

C there is no changing of the words of Allah, that is the mighty achievement (10 54)

D And recite what has been revealed to you of the Book of your Lord. There is none who can alter his words and you shall not find any refuge beside Him (18 27)

Now here the Quran is said to be revealed out of the Book of Allah or God! which is that Book of God please? Is it not the Vedas, revealed in the beginning of the world?

Secondly, where is the objection if the Aryans recited the Book of God or the Veda itself which is admittedly the original revelation of this world and which according to Quran itself stands unaltered or unabrogated this day? But perhaps the Muslims would not like this idea!

(To be continued).

---

*ADRTA—Great artery or trunk of the arterial system issuing from left-ventricle of heart

The concise Oxford Dictionary,

साहित्य समीक्षा

(समालोचनार्थ पुस्तक की २ प्रतियाँ आनी चाहियें)

सत्यार्थप्रकाश का विरोध क्यों—सम्पादक श्रीकृष्णदत्त जी बी० ए० प्रकाशक—श्री नरेन्द्र जी मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हैदराबाद स्टेट सुल्तान बाजार हैदराबाद (दक्षिण) पृ० ३२ मूल्य ।=)

इस छोटी सी पुस्तिका में सत्यार्थप्रकाश के लिखने का उद्देश्य महर्षि दयानन्द जी के अपने शब्दों में अनेक उद्धरणों द्वारा दिखाकर उसके विरोधी आन्दोलन के सम्बन्ध में आर्य नेताओं और विद्वानों की सम्मतियों के अतिरिक्त वीर सावरकर जी, प० जगन्नाथ दत्त जी महोपदेशक सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब, प० चिरंजीलाल जी मन्त्री युक्तप्रान्त सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा श्री शिवराम सेवक सम्पादक 'वीर भारत' हिन्द' 'विश्वमित्र' 'सरस्वती आदि तथा मौ० इफ्तखलील देवबन्दी आदि के वक्तव्यों का संग्रह किया गया है जो इस आन्दोलन की असफलता पर बहुत अच्छा प्रकाश डालता है। पुस्तिका अच्छे कागज पर और अच्छे टाइप में छापी गई है और सबके लिये संग्रहणीय है।

वीर बच्चों की कहानियाँ—लेखक स्वर्गीय प० नन्दकुमार देव शर्मा सम्पादक व प्रकाशक श्री गोविन्दराम हासानन्द आर्य साहित्य भवन नई सड़क देहली, २य संस्करण, पृ० ८२, मूल्य ॥=) सजिल्द ।॥)

इस पुस्तक में ज्ञानवीर अष्टावक्र, श्री शुकदेव जी, तपस्वी ध्रुव, भक्त प्रह्लाद, वीर बालक लवकुश और वीर अभिमन्यु की कथाएं रोचक शैली में दी हैं। 'वीर किसे कहते हैं' इस शीर्षक के प्रथम अध्याय में ज्ञानवीर सत्यवीर कर्मवीर, बलवीर, धर्मवीर आदि वीरों के अनेक भेद दिये हैं। पुस्तक बालकों के लिये विशेष उपयोगी है। संस्कृत श्लोकों की छपाई में कई भूलें रह गई हैं उन्हें अगले संस्करण में ठीक कर देना चाहिये। धर्मदेव

Swami Dayananda Saraswati and Satyartha Prakash— Vedic Press, Ajmer-Price As 4

As a part of their unholy campaign against the Satyartha Prakash some Mohammedans have raised the question that the 14th Chapter containing a criticism of the Quran was not written by Swami Dayananda Saraswati himself because it did not appear in the first edition of the Satyartha Prakash The ulterior object of this move was probably to give an indirect support to the demand of the Muslim League for proscription of the Chap. XIV. D B Harbilas Sarda, Secretary of the Paropkarini Sabha has just brought out a small booklet entitled "Swami Dayanand Saraswati and Satyartha Prakash" (priced at As 4 only) in which he has completely demolished the proposition referred to above by irrefutable arguments based on the correspondence of Shri Swami Dayanand Saraswati and extracts from Chap X of the 1st edition of Satyarth Prakash It is hoped that the Arya Samajists will make proper use of the booklet in meeting the above mentioned campaign.

Ganga Prasad M A President,
Sarvadeshik Sabha

सामाजिक जगत्

हर्ष समाचार

श्री प्रधान जी के पौत्र का मङ्गलोत्सव

अनुकरणीय उदार दान

श्री पं० गङ्गाप्रसाद जी एम ए (प्रधान सार्वदेशिक सभा) के पौत्र श्री बाबू ज्योतिस्वरूप डिप्टी कलेक्टर इलाहबाद के पुत्र श्री हरिश्चन्द्र का विवाह ४-५-४४ को बम्बई के सुप्रसिद्ध और सम्पन्न श्री वशीधर गोपालदास के परिवार में स्व० रामनारायण जी की पुत्री कुमारी विद्यादेवी के साथ वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ। विवाह में ५०१) श्री बा० ज्योतिस्वरूप ने और ५०१) कन्या पक्ष की ओर से धर्मार्थ दान दिये गये। कन्या पक्ष के सम्बन्धियों व मित्रों ने अपनी रीति के अनुसार श्री पं० गङ्गाप्रसाद जी को "मिलाई" रूप से जो भेंट दी वह राशि लगभग ३२५) हुई। श्री पं० गङ्गाप्रसाद जी ने उसमें १७५) अपनी ओर से शामिल करके ५००) रु० धर्मार्थ दान किया। इस प्रकार इस विवाह में कुल १५००) धर्मार्थ दान विविध सस्थाओं को दिया गया।

१५००) में से लगभग १०००) निम्न प्रकार आर्य संस्थाओं को दिया गया—

(१) आ० स० बम्बई और उसके आधीन कतिपय सस्थाओं को	२५२)
(३) आर्य कन्या पाठशाला इलाहाबाद	१५१)
(२) इलाहाबाद की ४ आर्य समाज को	४०)
(४) डी. ए. वी हाईस्कूल, इलाहाबाद	२५)
(५) अनाथालय, इलाहाबाद	२५)
(६) आर्य समाज, मेरठ	२१)
(७) आर्य कन्या पाठशाला, मेरठ	२१)
(८) हरिजन कुमार आश्रम, मेरठ	२१)
(९) सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा	१०१)
(१०) नारायण स्वामी स्कूल, रामगढ़ (नैनीताल)	५१)
(११) डी. ए. वी. कालिज, बनारस	४१)
(१२) डी. ए. वी. स्कूल, बाँदा	२१)

(१३) डी. ए वी अनाथालय, बाँदा	११)
(१४) कन्या पाठशाला, बाँदा	२१)
(१५) कन्या गुरुकुल, हाथरस	२५)
(१६) कन्या महाविद्यालय, जालंधर	५१)
(१७) पार्वती आर्य कन्या पाठशाला, बदायूं	५१)
(१८) युक्त प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा	२५)
(१९) आर्य समाज जबलपुर	१०)
(२०) अनाथालय जबलपुर	२५)

आर्य कन्या विद्यालय मद्रास में एक उत्सव

मद्रास आर्य कन्या विद्यालय का संरक्षक दिवस १५-५-४४ को ५½ बजे बड़ी धूमधाम से आर्य समाज मन्दिर आदि पय्या नायक स्ट्रीट मद्रास में श्रीमती अम्मु स्वामी नाथन की अध्यक्षता में मनाया गया। प्रार्थना के पश्चात् विद्यालय के व्यवस्थापक श्रीयुत बसन्तलाल जी बी. ए बी एल ने हिन्दू कन्याओं के लिये महर्षि दयानन्द जी द्वारा प्रतिपादित धार्मिक शिक्षा की आवश्यकता पर अपने भाषण में बल दिया। श्री जेठालाल माणिक जी उपप्रधान आर्यसमाज मद्रास ने विद्यालय की उपयोगिता बताते हुए मद्रास की जनता से उदार सहयोग की प्रार्थना की। श्रीमती अम्मु स्वामी नाथन ने अपने अध्यक्ष भाषण में आर्य समाज के स्त्री शिक्षादि विषयक कार्य की प्रशंसा करते हुए यह आशा प्रकट की कि यह संस्था शीघ्र ही एक उत्तम आर्य कन्या महाविद्यालय का रूप धारण करेगी। श्री सुब्रह्मण्यम् ऐयर और श्रीमती सुशीलादेवी जी के भी भाषण हुए। विद्यालय की कन्याओं के हिन्दी, तिलगू, तामिल में सम्भाषणादि हुए जिनसे प्रभावित होकर दो देवियों ने कन्याओं को दो पदक देने की घोषणा की। प्रसाद वितरण धन्यवाद समर्थनादि के पश्चात् यह मनोरञ्जक कार्यवाही समाप्त हुई।

कृष्णराव, मन्त्री आर्य समाज, मद्रास

प्रतापगढ़—आर्य समाज का शिला रोपण

आर्य समाज प्रतापगढ़ (राजपूताना) के मकान का शिला रोपण संस्कार वैशाख पूर्णिमा सं० २००१ को माननीय आर्यनरेश श्री शाहपुरा धीश राजा धिराज श्री उम्मेद सिंह जी महाराज ने किया। प्रतापगढ़ राज्य के महाराजा सर श्री रामसिंहजी बहादुर K C S I तथा श्री मन्त महाराजा झालावाड़ नरेश व सीतामऊ शाहपुरा आदि के महाराज कुमार भी इस उत्सव में पधारे थे। पंडाल आदि की

व्यवस्था सरकारी इन्तजाम से हुई। आर्यध्वज बंधन तथा शिला रोपण के बाद श्री शाहपुरा धीश के सम्मान में अभिनन्दन पत्र भेंट किया गया। इत्र पान होने के बाद श्री शाहपुरा धीश ने पडाल से बाहर आकर उत्सुक जनता के बीच में खडे होकर आर्य संस्कृति और आर्यसमाज की महत्ता बडे सरल शब्दों में समझाई। इस समय राजा और प्रजा की बैठक दर्शनीय थी। खंडहर के धूलि मय स्थान में बिना भेद भाव सब साथ २ बैठे हुए थे। तत्पश्चात् जय घोष के साथ कार्य समाप्त हुआ।

इसी दिन प्रतापगढ़ दरबार की राज कन्या सौ० देवेन्द्र कुमारीजी तथा जमाई श्री महाराजा चम्बा नरेश को मन्दसौर और प्रतापगढ आर्य समाज की ओर से आशीर्वाद पत्र भेंट किया गया। अनेक कष्टों के मोर्चे पर प्रतापगढ में आर्य समाज का जन्म देने वाले-तपस्वी साधू श्री रामप्रसाद जी वानप्रस्थी शास्त्राचार्य इस वक्त पीपाड सिटी से पधारे थे। उनकी सेवाओं का मूर्तिमान रूप इस समय सबने चकित भाव से देखा और वमनिया भील विद्यापीठ के सञ्चालक श्रीमान् प० बालेश्वरदयालुजी ने पधार कर अपने अथक परिश्रम से उत्सव की शोभा बढ़ाई। दूसरे दिन रात्रि का वार्षिक चुनाव हुआ पदाधिकारियों के नाम इस प्रकार हैं। प्रधान-श्री छगनलालजी, उपप्रधान श्री कालूलालजी, प्रधान मन्त्री श्री गौतमलालजी, कार्यालय मन्त्री श्री भवानी शकरजी, उप मन्त्री श्री प० रूप चन्दजी और श्री भवानी प्रसाद जी कोषाध्यक्ष, श्री ज्ञान मल्लजी समाज मन्दिर निर्माण समिति (अन्तर्गत) कोषाध्यक्ष श्री पन्नालालजी, प्रबन्ध मत्री सेठ मागी लालजी, श्री गुलाब चदजी, श्री बल्देवजी, श्री मागी लालजी शर्मा।

इसके अतिरिक्त एक अतरंग समिति का भी चुनाव हुआ।

प्रधान मन्त्री-गौतम लाल डेन्टिस्ट

आर्य समाज इटारसी का वार्षिकोत्सव

स्थानीय आर्य समाज का छठवाँ वार्षिकअधिवेशन बड़ी ही धूमधाम से ता० १५।५ से १८-५-४४ तक मनाया गया, जिसमें श्रीमान् प० चन्द्रगोपाल मिश्र प्रधान श्रीमती आर्य प्रतिनिधि सभा सी० पी० और बरार श्री प० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय एम० ए० प्रधान श्रीमती आर्य प्रतिनिधि सभा यू० पी०, पं० रामचन्द्रजी शर्मा (विद्यारत्न) आचार्य गुरुकुल होशंगाबाद, पं० क्षोवेन्द्रदेव शास्त्री यू० पी० और भजनोपदेशक महा० मुकुन्दराम शर्मा यू० पी० और महा० कुँवरपालसिंह जी सी० पी० के बड़े ही प्रभावशाली भाषण, वेद प्रचार, वैदिक साहित्य और सत्यार्थ प्रकाश के विषय में हुए। जनता की उपस्थिति सराहनीय थी।

सी० बी० शर्मा
मन्त्री



विश्व की दिव्य विभूति की बन्ध विमुक्ति और सरकार का कर्तव्य—

विश्व की दिव्य विभूति, भारतीयों के हृदय सम्राट्, महात्मा गाधी जी को गत ६ अप्रेल को चिन्ताजनक अस्वस्थता के कारण नजर बन्दी से विमुक्त कर दिया गया यह समाचार पाकर किसे न प्रसन्नता हुई होगी? महात्मा गान्धीजी की इस बन्ध विमुक्ति के लिये लार्ड वेवल अथवा अन्य जो जो शासक उत्तरदायी थे वे सब धन्यवाद के पात्र हैं। इस बुद्धिमत्ता और सहानुभूति पूर्ण कार्य को करके उन्होंने भारतीय हृदयों मे कुछ स्थान अवश्य पाया है किन्तु यदि केवल इतने से वे सन्तुष्ट हो गये तो भारतीय तथा स्वतन्त्रताप्रिय अन्य देशों की विचारशील जनता उनका कोई मान न करेगी, न उनके प्रति किसी प्रकार की कृतज्ञता प्रकट करेगी। वर्तमान संसार के सर्वोत्तम महापुरुष की चिन्ता जनक अस्वस्थता में उन्हें बन्धन विमुक्त कर देना तो एक मानवीय कर्तव्य था जिसका पालन करके सरकार ने अच्छा ही किया है किन्तु आवश्यकता इस बात की है कि पूज्यपाद महात्मा गान्धीजी के स्वास्थ्य लाभ करते ही (जिसके लिये हम सब मङ्गलमय भगवान से प्रतिदिन प्रार्थना करते हैं और महात्माजी के छूटते ही सार्वदेशिक सभा की ओर से "Happy youi Release pray Almighty health long life" इत्यादि शब्दो में तार द्वारा सूचित कर चुके हैं) उनकी सहायता से वर्तमान शोचनीय गत्यवरोध को दूर करने का सरकार की ओर से पूर्ण प्रयत्न किया जाय। इसके लिये श्री प० जवाहरलाल नेहरू, सरदार वल्लभ भाई पटेल, बा० राजेन्द्रप्रसाद जी, मौलाना अब्दुल कलाम आजाद आदि सब राजनैतिक नेताओं की रिहाई अत्यावश्यक है। यह खेद की बात है कि ब्रिटिश पार्लियामेण्ट के मजदूर दली १३ सदस्यों ने भारत मन्त्री श्री एमरी को पत्र लिखते हुए यह जो आशा प्रकट की थी कि 'हम विश्वास करते हैं कि महात्मा गान्धी की रिहाई समस्त

भारतीय राजनैतिक बन्दियों की आम रिहाई के लिये श्री गणेश सिद्ध होगी और आप सब कांग्रेसी नेताओं की रिहाई के प्रश्न पर विचार करेंगे' उसे अपने स्वभावानुसार ठुकराकर अपनी अनुदार सकुचित मनोवृत्ति का परिचय दिया है और आशावादी भारतीयों तथा मैन्चेस्टर गार्डियन आदि पत्रकारों की आशाओं पर तुषार पात किया है तथापि यह सम्भव है कि इस विषयक प्रबल लोकमत के आगे श्री एमरी और उनके अनुरूप भाई श्री चर्चिल आदि को झुकना ही पड़े । यह ब्रिटिश राजनीतिज्ञों की परीक्षा का स्वर्णीय अवसर है और यदि उसे उन्होंने अपनी अनुदारता हठधर्मिता अथवा अभिमान के कारण खो दिया तो उन्हें अवश्य पश्चाताप करना पड़ेगा। महात्मा गान्धीजी जैसे शान्ति प्रिय सर्व मान्य नेता की बन्धनमुक्ति से लाभ उठा कर लार्ड वेवल यदि चाहें तो राजनैतिक गत्यवरोध दूर करने में सफलता प्राप्त कर सकते हैं। क्या वे इस स्वर्णीय अवसर को यों ही हाथों से जाने देने की भूल करेंगे ?

श्री रामचन्द्र शर्मा 'वीर' का ७१ दिन का अनशन—

श्री पं० रामचन्द्र शर्मा 'वीर' अपनी तपस्या तथा बलिदान भावना के कारण—जो अनेक बार लम्बे उपवासों का रूप ग्रहण करती रही है, पर्याप्त ख्याति प्राप्त कर चुके हैं। गतवर्ष जनवरी मास में जयपुर राज्य में उन्होंने निम्नलिखित तीन मांगों की पूर्ति के लिये आमरणान्त अनशन का व्रत लिया था कि—

१—जयपुर राज्य में जहां हिन्दुओं की सख्या ९३ प्रतिशतक के लगभग है राज्य तथा अदालत की भाषा हिन्दी (देवनागरी लिपि) होनी चाहिये न कि उर्दू ।

२—गोचर भूमि का कर न लिया जाय।

३—हिन्दुओं के मन्दिर न तोड़े जाएं ।

इन तीनों न्याय संगत मांगों का सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभाओं तथा अन्य सब आर्य हिन्दू संस्थाओं ने समर्थन किया था और जयपुर राज्य के प्रधान मंत्री सर मिर्जा इस्माइल से इन मांगों की पूर्ति करके श्री रामचन्द्रजी 'वीर' के प्राण बचाने की अपील की थी । दानवीर श्री जुगल किशोरजी बिरला और प० चन्द्रगुप्तजी वेदालंकार ने जयपुर के अधिकारियों से मिल कर उन से इन उपर्युक्त तीनों मांगों की स्वीकृति का आश्वासन दिलवाया और तब श्री वीर जी ने ६-२-४३ को अपने उपवास को हजारों की उपस्थिति में समाप्त किया। श्री रामचन्द्रजी का

कथन है कि सर मिर्ज़ा इस्माइल ने न केवल उपर्युक्त तीनों माँगों की अब तक पूर्ति नहीं की बल्कि गत वर्ष अनशन की समाप्ति के कुछ समय पश्चात् उन्हें (श्री वीर जी को) जयपुर राज्य से जो उनकी अपनी जन्मभूमि है निर्वासित कर दिया। राजस्थान प्रान्त के एक मात्र दैनिक हिन्दी पत्र 'जयपुर समाचार' को बन्दकर दिया और उसके सुयोग्य प्रतिष्ठित सम्पादक श्री श्यामलालजी वर्मा को जयपुर जेल में सी क्लास में नजरबन्द कर दिया, अनेक मन्दिरों को जिन में विशाल नृसिंह मन्दिर भी हैं विध्वंस कर दिया गया तथा जयपुर के राज्यचिन्हों में से श्री कृष्ण, गौमाता तथा सूर्य के चित्र को निकाल दिया गया इसलिये एक वर्ष तक प्रतीक्षा करने के अन्य कोई उपाय न देखकर उन्हें जयपुर राज्य के वर्तमान प्रधान मन्त्री सर मिर्ज़ा इस्माइल की इस हिन्दी, हिन्दूधर्म तथा संस्कृति विरोधिनी नीति के प्रतिवाद स्वरूप अपने प्राणों की बाजी लगाने को (७१ दिन के उपवास रूप में जो १७ मई से प्रारम्भ हुआ है) निश्चय करने को वाधित होना पड़ा। इस बीच में यदि सर मिर्ज़ा इस्माइल निम्न ६ शर्तों को पूरा करेंगे तो श्री वीरजी अपने अनशन को समाप्त कर देंगे।

१—जयपुर की राज्य भाषा हिन्दी ही रहे।

२—गोचर भूमि का कर नहीं लिया जाए।

३—ध्वस्त कराये गये मन्दिरों को फिर बनवाया जाय।

४—जयपुर के राज्य चिन्ह में श्री कृष्ण, गोमाता और सूर्य तथा पचरंगे झंडे (जो सहस्रों वर्षों से चले आ रहे हैं) फिर से सुशोभित किये जाए।

५—'जयपुर समाचार' पत्र को पुनः प्रकाशित करने की आज्ञा दी जाए।

६—वीरजी की जयपुर राज्य से निर्वासन की अनुचित आज्ञा को तुरन्त वापिस लिया जाए।

श्री रामचन्द्रजी 'वीर' से २४-५-४४ को निर्मम बोध घाट निर्भय धाम देहली में लगभग १½ घण्टे तक खुले वार्तालाप के पश्चात् हम इस परिणाम पर पहुंचे हैं कि उनकी ये मांगें सर्वथा युक्तियुक्त हैं। जयपुर राज्य के अधिकारियों का कर्तव्य है कि वे उनको शीघ्र से शीघ्र पूर्ण करें और इस प्रकार धर्म प्राण वीरजी के बहुमूल्य जीवन की रक्षा करें। सभी आर्य हिन्दू संस्थाओं, समाजों, सभाओं और पत्रों को भी श्री वीरजी की इन न्याय सगत माँगों का समर्थन कर सर मिर्ज़ा

इस्माइल तथा महाराज जयपुर को गत वर्ष दिये अपने आश्वासनों की पूर्ति के लिये प्रबल प्रेरणा करनी चाहिये। यद्यपि अपने धार्मिक, सामाजिक व राजनैतिक अधिकारों की प्राप्ति के लिये दीर्घ वा आमरणान्त उपवास के अवलम्बन को साधारणतया हम उचित नहीं समझते तथापि श्री वीरजी से वार्तालाप करने पर हमें निश्चय हो गया है कि अपनी साधना, तपस्या तथा बलिदान भावना से ही प्रेरित होकर निराश अवस्था में उन्होंने यह अन्तिम साधन स्वीकृत किया है अत इस विषय में अब तर्क वितर्क न करते हुए इस तपस्वी धर्म प्राण वीर की जीवन रक्षा का प्रयत्न प्रत्येक आर्य धर्म तथा संस्कृति प्रेमी व्यक्ति और संस्था को अवश्य करना चाहिये। भगवान तपस्वी वीरजी को इस अग्नि परीक्षा में उत्तीर्ण होने का सामर्थ्य प्रदान करें और उनके शुभ मनोरथों को पूर्ण करें, यही हमारी हार्दिक प्रार्थना है।

इन्दौर में कुछ अधिकारियों का अन्धेर—

यह सचमुच खेद और आश्चर्य की बात है कि अनेक रियासतों में आर्य (हिन्दू) धर्म और संस्कृति के प्रचार में रोड़ा अटकाने वाली नीति को बर्ता जा रहा है। इन्दौर एक प्रगतिशील हिन्दू रियासत समझी जाती है उसमें आर्य समाज के कार्य में रोड़ा अटकाने का जो निन्दनीय प्रयत्न कई अधिकारियों की ओर से किया जाता है, विश्वस्तसूत्र से उसके जो उदाहरण प्राप्त हुए हैं, उनमें से ३, ४ का निर्देश करना पर्याप्त होगा। (१) सार्वदेशिक सभा के आदेशानुसार २३ दिसम्बर १९४३ को सर्वत्र श्री श्रद्धानन्द बलिदान दिवस मनाया जाना था। सयोगितागंज इन्दौर आर्य समाज के मन्त्री ने २३ दिसम्बर को प्रातः जलूस निकालने के लिये लाइसेंस विषयक प्रार्थनापत्र १२ दिसम्बर को भेजा जिसकी स्वीकृति २३ दिसम्बर की शाम को ६½ बजे मिली। इतने असमय पर मिलने से उस दिन जलूस आदि न निकाला जा सका। (२) २०, २१, २२ फरवरी १९४४ को देहली में होने वाले आर्य महासम्मेलन के प्रचारार्थ १२ फरवरी को प्रभात फेरी निकालने के लिये लाइसेन्स विषयक प्रार्थनापत्र फरवरी के प्रारम्भ में आर्य समाज संयोगिता गंज की ओर से भेजा गया। १२ फरवरी की सायंकाल उसकी स्वीकृति मिली, इस कारण प्रभात फेरी न निकाली जा सकी। (३) सार्वदेशिक सभा के आदेशानुसार सर्वत्र २५ मार्च को आर्य समाज स्थापना दिवस मनाया जाना था। कई दिन पूर्व २५ मार्च के प्रातःकाल इस सम्बन्ध में सार्वजनिक सभा करने विषयक प्रार्थना पत्र आर्य समाज संयोगिता गंज (इन्दौर) की ओर से भेज दिया गया था। २४ मार्च की रात को

८½ बजे मन्त्री जी को अपने कार्यालय में सूचना दी गई कि वे इसके लिये लाइसेन्स लेकर शहर से लगभग ३ मील दूरस्थ एक स्थान पर सभा कर सकते हैं। यह लिखने की आवश्यकता नहीं कि कि इतने अधिक विलम्ब में स्वीकृति मिलने के कारण वह सभा न की जा सकी। (४) जबकि मुसलमान खुली सड़कों और आम बाजारों में पाकिस्तान जिन्दाबाद के नारे लगाते फिरते हैं और उन पर कोई प्रतिबन्ध नहीं लगाया जाता, आर्यों को सत्यार्थप्रकाश जिन्दाबाद' के नारे लगाने से यह कह कर रोका जाता है कि यह राजनैतिक है अतएव आक्षेपयोग्य नारा है।

उपर्युक्त उदाहरण जो विश्वस्तसूत्र से सभा कार्यालय में प्राप्त हुए हैं इन्दौर के कुछ अधिकारियों के अन्धेर के सूचक हैं। इन्दौर राज्य के प्रधान मन्त्री महोदय का ध्यान इन विषयों की ओर आकर्षित करके जाच कराने और सत्य प्रमाणित होने पर इस अन्धेर के लिये उत्तरदायी अधिकारियों को उचित दण्ड देने के लिये लिखा गया है आशा है कि इसका यथेष्ट परिणाम निकलेगा और आर्यों को अपने धार्मिक तथा सामाजिक आन्दोलन का उचित रूप से चलाने की स्वतन्त्रता प्राप्त होगी। इन्कार न करते हुए इस प्रकार अत्यधिक विलम्ब से तथाकथित स्वीकृति देना तो स्पष्टतया एक शरारत का प्रकट करता है।

परोपकार विरोधी एक विचित्र पन्थ—

हमारे देश में धर्म के नाम से जो सहस्त्रों सम्प्रदाय मत वा पन्थ प्रचलित हैं उनमें से कई इतने अधिक विचित्र तथा उपहासास्पद हैं कि एक बुद्धिमान आदमी उनके अस्तित्व तक को स्वीकार करने में सन्देह किये बिना नहीं रह सकता। ऐसे ही पन्थों में से एक 'जैन श्वेताम्बर तेरा पन्थ' है इसके आद्य प्रवर्तक श्री भिक्षु जी स्वामी ने जो मूल सिद्धात बताये हैं उनमें से कुछ निम्न हैं:—

(१) गौओं से भरे हुए बाडे में आग लग जाए और कोई दयावान् पुरुष बाड़े के किवाड़ को खोल कर गौओं के प्राण बचा लेवे तो तेरापन्थी उसे एकान्त (अत्यन्त) पापी कहते हैं।

(२) किसी ऊँचे मकान से एक बालक गिर रहा है। कोई दयालु बीच में झेलकर उसके प्राण बचा लेता है तो वह एकान्त पापी है।

(३) उस तपस्वी सच्चे साधु के गले में फांसी डालकर कोई दुष्ट उसे मार डालना चाहता है, कोई दयालु पुरुष उसकी फांसी खोल देता है तो वह बड़ा पाप करता है।

(४) कसाई बकरे को मार रहा है। उस समय बकरे की रक्षा के लिए कसाई को उसे न मारने का उपदेश देना एकान्त पाप है।

(५) तेरापन्थी साधुओं के सिवाय किसी को दान देना, मांस खाना, मदिरा पीना तथा वेश्यागमन करना इन सब मे बराबर पाप है।

(६) पुत्र अपने माता पिता की तथा स्त्री अपने पति की सेवा करे तो उसमे एकान्त पाप है। माता पिता को भोजन देना भी एकान्त पाप है।

(७) किसी के घर मे आग लग जाए, किवाड़ बाहर से बन्द होने के कारण घर के प्राणी बाहर न निकल सकते हों, आग में जलते हुए स्त्री, बालक तथा दूसरे मनुष्य आर्त्तनाद कर रहे हों, उस समय घर का दरवाजा खोल कर रक्षा करने वाला एकान्त पापी है।

सम्भवत हमारे पाठक विश्वास न करेंगे कि कोई मत वा पन्थ परोपकार का इतना विरोधी तथा मनुष्यता का इतना शत्रु भी हो सकता है पर इस सम्प्रदाय (तेरापन्थ) के सिद्धान्त जो 'अनुकम्पा ढाल' (भिक्षु स्वामी जी कृत) जीतमलजी या जयाचार्य जी कृत 'भ्रम विध्वसन' आदि मे प्रतिपादित हैं वे ऊपर दिये गये है। स्थानाभाव से उन ग्रन्थों के उद्धरण यहा नहीं दिये जा सके जिन्हें पाठकों के कुतूहल निवारणार्थ हम फिर कभी देंगे। इस सम्प्रदाय के मानने वाले अनेक सेठ साहूकार राजस्थान प्रान्त में विद्यमान हैं जिन्होंने बगाल आदि के अकालपीडितों की सहायतार्थ कुछ भी अन्न, धन, वस्त्र आदि देने से सर्वथा इन्कार कर दिया था। पाठकों को यहा यह भी सूचित कर देना अनुचित न होगा कि बालदीक्षा अथवा छोटी आयु में बालक बालिकाओं को सन्यास दीक्षा देने की पद्धति अधिकतर इस सम्प्रदाय के अनुयायियों में पाई जाती है। ऐसे परोपकार विरोधी, मनुष्यता के शत्रु सम्प्रदायों और मतों का जितना शीघ्र नाश हो उतना ही समाज और जगत् के लिये कल्याणकारक होगा।

शिक्षितों में बहु विवाह का संक्रामक रोग—

शिक्षित नर-नारियों में बहु विवाह का संक्रामक रोग फैलता जा रहा है यह देख कर हमें अत्यन्त आश्चर्य और दुःख होता है। जो आज कल की शिक्षित

स्त्रिया अपने महिला सम्मेलनों में एक विवाह समथक और बहु विवाह निषेधक बिल पास कराने के प्रस्ताव स्वीकृत करातो हैं उन में से अनेकों को पुरुषों की पूर्व पत्नी (कई अवस्थाओं में पत्निया) और बच्चे होते हुए सपत्नी वा सौत बनने में कुछ संकोच नहीं होता यह कितने आश्चर्य की बात है। हाल में ऐसे कितने ही उदाहरण जनता के सामने आये हैं। महाराज गायकवाड के अपनी रानी और बच्चे होते हुए भी द्वितीय विवाह की चर्चा और निन्दा हम इन स्तम्भों में कर चुके हैं। सुप्रसिद्ध मारवाड़ी सेठ राम कृष्ण डालमिया के श्रीमती सरस्वती देवी एम ए शास्त्रिणी के साथ तृतीय विवाह की चर्चा समाचार पत्रों में बहुत देर तक चलती रही। बम्बई के एक प्रमुख व्यापारी ने अपनी पत्नी के रहते हुए दूसरी स्त्री से गत अप्रेल मास में शादी की थी। अभी भूलेश्वर के एक विधानशास्त्री और महासभा वादी कार्यकर्ता श्री के के शाह की पहली स्त्री और चार बच्चों के रहते हुए भी एक राष्ट्रीय शाला की प्रिन्सिपल कुमारी मधुबाला से विवाह की चर्चा अनेक पत्रों में प्रकाशित हुई है। ऐसे सक्रामक रोग का तुरन्त प्रतीकार होना आवश्यक है। इस विषयक कानून बनाने के अतिरिक्त हमें यह उचित प्रतीत होता है कि ऐसे नर नारियों का चाहे वे कितने भी सुशिक्षित और प्रतिष्ठित क्यों न हो सामाजिक बहिष्कार किया जाए ताकि अन्यों को उनके अनुकरण करने का साहस न हो। वृद्ध विवाह और दहेज ठहरा कर विवाह करने वालों का भी ऐसा ही सामाजिक बहिष्कार करना चाहिये।

रूस में सहशिक्षा का अन्त—

मास्को से २६ अप्रेल की खबर है कि रूस ने लड़कों और लड़कियों की सह शिक्षा का परित्याग कर दिया है। रूसी शिक्षा विशेषज्ञ प्रो० सुममेर ने इस सम्बन्ध में एक वक्तव्य देते हुए बताया है कि पुरुष जाति तथा स्त्रीजाति में कुछ ऐसी विशेषताएं हैं जो सहशिक्षा की दशा मे सामाजिक जीवन पर अच्छा प्रभाव नहीं डालतीं। क्या रूस को अपना मार्ग दर्शक गुरु मानने वाले कम्युनिष्ट तथा अन्य शिक्षित भारतीय इस से शिक्षा ग्रहण करेंगे? वस्तुतः यह लड़के लड़कियों की सहशिक्षा अनेक दृष्टियों से, जिन में ब्रह्मचर्य की रक्षा भी सम्मिलित है, हानिकारक है। युरोप और अमेरिका में इस के कारण नैतिक पतन के हजारों प्रबल प्रमाण हैं अतः इस का सर्वथा परित्याग ही उत्तम है।

हिन्दी का वास्तविक प्रचार और उसकी रक्षा—

'सार्वदेशिक' के गत कई अङ्कों में हम पाठकों का ध्यान आर्य भाषा अथवा राष्ट्र भाषा हिन्दी की रक्षा की ओर आकर्षित कर चुके हैं। समस्त आर्य नर नारियों को ऋषि दयानन्द के आदेशानुसार आर्य भाषा के रूप में और सभी भारत देश निवासियों को राष्ट्र भाषा के रूप में इस भाषा को अपनाना चाहिये और इस में परस्पर पत्र व्यवहारादि करना चाहिये। डाक विभाग की हिन्दी विरोधिनी नीति को परिवर्तित करने में जरा भी देर न लगे और उन्हें हिन्दी पते वाले पत्रों को मृतपत्र कार्यालय (D L O) में भेजने का कभी साहस न हो यदि 'सार्वदेशिक' का अनुसरण करके अन्य सब हिन्दी समाचार पत्र भी अपने ग्राहकों के पते हिन्दी में ही लिखवा अथवा छपवा कर भेजें तथा समस्त आर्य मात्र हिन्दी में ही पत्र तथा पते लिखें चाहे ऐसा करने में उन्हें कुछ असुविधा भी हो। हमारे अनुरोध पर अब डाक विभाग हिन्दी पतों के कारण मुर्दा घरों में पत्र भेजे जाने विषयक जाच को गम्भीरता से कर रहा है और हमारा विश्वास है कि यदि हिन्दी पत्र सम्पादकों और जनता ने हमारा साथ दिया जिसके लिये उन से निवेदन किया गया है तो हमें हिन्दी के अधिकार की रक्षा करने में अवश्य सफलता होगी वकील और मुख्त्यार लोग भी इस पवित्र कार्य में बडे सहायक हो सकते हैं यदि वे गाजीपुर के अपने वकील और मुख्त्यार भाइयों की तरह यह निश्चय करलें कि वे समस्त अदालती कागजात हिन्दी में ही लिखेंगे। इस उत्तम निश्चय के लिये गाजीपुर के वकील और मुख्त्यार भाइयों का अभिनन्दन करते हुए हम अन्य सब भाइयों से भी उनका अनुसरण करने का अनुरोध करते हैं।

रौंतेला काण्ड की गूंज—

'सार्वदेशिक' के अप्रेल अङ्क में गढ़वाल के रौंतेला नामक ग्राम में वहाँ के उच्च जात्यभिमानी बिठ लोगों ने श्री दर्शन सिंह आर्य की बरात पर जो अमानुषिक अत्याचार किये उनका सङ्क्षिप्त वृत्तान्त देते हुए हमने उसके प्रतिवाद स्वरूप १६ अप्रेल को सर्वत्र 'गढ़वाल दिवस' मनाकर गढ़वाल के डिपुटी कमिश्नर और संयुक्त प्रान्त के गवर्नर महोदय को इस मामले की निष्पक्ष जाच करवाने तथा अपराधियों को कठोर दण्ड दिलवाने विषयक तार देने के लिये लिखा था। वह 'गढ़वाल दिवस' देश के अनेक विभागों में उत्साहपूर्वक मनाया गया जिसका

परिणाम भी यथेष्ट हुआ। गढ़वाल के डिपुटी कमिश्नर महोदय ने सार्वदेशिक सभा के इस विषयक तारों का उत्तर देते हुए सूचना दी कि अधिकारियों द्वारा इस मामले की जाच अप्रेल के अन्तिम सप्ताह में कराई गई और अब २३ मई से अभियुक्तों पर अदालत में मुकद्दमा चल रहा है। मेरठ के उत्साही आर्य श्री हरबशलाल जी बी ए एल् एल् बी वकील ने संयुक्त प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा तथा सार्वदेशिक सभा की प्रेरणा पर मारी परिस्थिति का निरीक्षण किया और मुकद्दमे में उचित सहायता देकर पीड़ित आर्य भाइयों को धैर्य बँधाया जिसके लिये वे प्रशंसा और धन्यवाद के पात्र हैं। हमें आशा करनी चाहिये कि इस मुकद्दमे में पूरे न्याय से काम लिया जाएगा तथा अपराधियों को कठोर दण्ड दिया जाएगा ताकि ऐसी हिन्दू समाज के लिये भयङ्कर कलङ्क रूप घटनाएं फिर कभी न होसकें। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा और अखिल भारतीय श्रद्धानन्द स्मारक ट्रस्ट की ओर से श्री प्रीतमचन्द्र जी गढ़वाल भेजे गए हैं। वे अनेक कठिनाइयों और आपत्तियों को सहन करते हुए भी बड़ा प्रशंसनीय कार्य कर रहे हैं।

मतान्धों की कमीनी शरारत तथा सत्यार्थप्रकाश रक्षार्थ एक आहुति—

'सार्वदेशिक' के गत अङ्क में हमने कराची के डिस्ट्रिक्ट जेल की लाइब्रेरी से सत्यार्थप्रकाश की प्रतियें हटा दिये जाने पर टिप्पणी करते हुए उसे एक निन्दनीय शरारत बताया था। इस विषय में सभा ने सिन्ध के गवर्नर महोदय को भी सुपरिन्टेन्डेन्ट डिस्ट्रिक्ट जेल के नाम भेजे पत्र की प्रतिलिपि सूचनार्थ भेजी थी। उनके मन्त्री का पत्र आया है कि सभा का पत्र सिन्ध सरकार के गृह सचिव (Home Member) के पास जाच और उचित कार्यवाही के लिये भेज दिया गया है। इनका उत्तर आने पर ज्ञात होगा कि किसकी आज्ञा से सिन्धी सत्यार्थ-प्रकाश का कराची के जिला जेल पुस्तकालय से हटाये जाने की शरारत की गई थी। अभी इस शरारत के विषय में जाच चल ही रही थी कि लाहौर से एक अत्यन्त निन्दनीय शरारत की सूचना मिली है जिससे मालूम होता है कि मतान्ध मुसलमान अब कैसी वाहियात और कमीनी शरारतों पर उतारू हो रहे हैं। २५ मई की रात को १२ बजे के लगभग कुछ मतान्ध मुसलमानों ने उर्दू सत्यार्थप्रकाश के फार्मों के बण्डल को (जो जिल्द चढ़ाने के लिये एक हिन्दू दफ्तरी को दिये गये थे पर जिसने किसी आवश्यक कार्य वश उस कार्य को स्वयं न करके एक साथी मुसलमान दफ्तरी को सौंप दिया था—अन्य मुसलमानों के मना करने पर वह

उन फार्मों को लौटाने जा रहा था कि यह घटना हुई) मोती चौक में आग लगा दी। जब उस आग को बुझाने के लिये श्री परमानन्द जी ने जो उस हिन्दू दफ्तरी के भाई थे यत्न किया और मुसलमानों को आग लगाकर नुक्सान करने से रोका तो किसी ने उन्हें छुरा भोंक दिया, जिससे उन्हें इतने घाव लगे कि मेयो हस्पताल में ले जाने के कुछ घण्टे बाद उनका देहान्त हो गया। सत्यार्थप्रकाश की रक्षार्थ अपने प्राणों की बलि दे देने वाले इस वीर युवक की आयु २३ वर्ष की थी और कुछ ही दिनों में उसका विवाह होने वाला था। उस वीर युवक की मृत्यु का समाचार सुनते ही शहर में हड़ताल कर दी गई। सरकार ने ५० से अधिक व्यक्तियों को अरथी के साथ जाने से इन्कार कर दिया तथा धारा १४४ का प्रयोग करके सार्वजनिक सभाएं भी बन्द कर दीं। उपर्युक्त शरारत एक संगठित षड्यन्त्र का परिणाम प्रतीत होती है जिसकी जाँच करवाकर अपराधियों को घोर दण्ड दिलवाना चाहिये अन्यथा इस बीमारी के अन्य प्रान्तों और शहरों में भी फैलने की सम्भावना है।

आर्यों को इन कमीनी काली करतूतों से भयभीत वा विचलित न होकर सत्यार्थप्रकाश के अधिकतम प्रचार और सत्यार्थप्रकाश निधि के लिये अधिक से अधिक उदार सहायता देने दिलाने के कार्य में तत्पर रहना चाहिये।

घ० दे०

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

दान आर्य समाज स्थापना दिवस मास मई १९४४

१५) आर्य समाज डगलसपुरा लायलपुर
५) आर्य समाज मोर सराय, देहली
९) ,, ,, लुधियाना रोड, फीरोजपुर छावनी
५।) ,, ,, गंगोह (सहारनपुर)
६) ,, ,, मेरठ शहर
३०॥) ,, ,, मंडी मुरादाबाद
५) ,, ,, गंज मुरादाबाद
८) ,, ,, देहली शाहदरा
५) ,, ,, फतेहपुर बिशनाई (मुरादाबाद)
९॥।) ,, ,, सूरत
१०) ,, ,, पुष्कर (अजमेर)
३॥) ,, , मिठाटिवाना (पंजाब)
५) ,, ,, धौलड़ी (मेरठ)
५) ,, ,, मानिकपुर कलकत्ता
६) ,, ,, कामाठीपुरा, बम्बई
२५) श्री प्रधान जी आर्य समाज फरमाना (रोहतक)
५) श्री देवीदयाल जी प्रधान आर्यसमाज कोट नक्का (गुजरावाला)
॥।) श्री सुमेरचन्द जी भारत बैंक, सदर बाजार, देहली

१५८॥।)
११७॥=) पिछला योग

२७६।=)

दाताओं को धन्यवाद।

अन्य आर्य समाजों को अपनी राशि शीघ्र सभा कार्यालय में भेजकर अपने कर्त्तव्य और सभा के आदेश का पालन करना चाहिए। मन्त्री—सार्वदेशिक सभा

वेद प्रचारार्थ दान

१०१) श्री पं० गंगाप्रसाद जी एम० ए० रिटा० चीफजज प्रधान सार्वदेशिक सभा
३०१) दान शतांश श्री केप्टेन ऐन० बी० गड़रे
५) श्री पं० लक्ष्मणराव जी ओघले मादुंगा (बम्बई)
२) श्री पं० बाबूराम जी शर्मा देहली शाहदरा

४०९)
१६२=) पिछला योग

५७१=)

दाताओं को हार्दिक धन्यवाद मन्त्री—सार्वदेशिक सभा

आर्य मुसाफिर—अनुवाद 'आर्य पथिक ग्रन्थावली' क्या आपने नहीं देखा ? जिसने बेगम को शान्तिदेवी बनाया, मतमतान्तरों के पहलवानों को पछाड़ने की शक्ति इसको पढकर आजाती है, किरानी, कुरानी, पुरानी और जैनी सब इससे दहलाते हैं, शास्त्रार्थ के शूर महारथी बनना हो तो 'कुलियात' पढिये मूल्य ४।।)

अपौरुषेयवेद ≡)।।, शुद्धि की शखध्वनि।), अछूतों का आर्तनाद।), गप्पाष्टक मुहम्मदी =)

विदुरनीति—प्रत्येक आर्य बच्चे और स्त्री पुरुष को पढ़ने का ऋषि दयानन्द ने आदेश दिया है। मूल्य ।।।)

'स्नान चिकित्सा''—पढ़कर इस के द्वारा सब रोगों का इलाज वैद्य डाक्टरों को बिना कुछ ठगाये आप ही कर लीजिये। रोग को दूर भगा, स्वास्थ्य सुधारिये। मूल्य ।।)

हिन्दी क़ुरान—आयत मय अर्थों के हैं, इसे ही पढ़कर मुसलमानों के छक्के छुड़ा सकते हो और कुरान के कठमुल्लों को भगा सकते हो, प्राप्य खण्डों का मूल्य ।।।), ।।।) और १।) है। अफ्रीका यात्रा ४।।) गान्धी दर्शन १।।) अमेरिका यात्रा २) आर्यसमाज कांग्रेस ।।) आर्य मुसाफिर भजनावली ।।)

सनातन धर्म रहस्य पुराणों में सनातन धर्म की कसी मिट्टी पलीत की है। कालूराम, अखिलानन्द माधवाचार्य का मुँह बन्द करने वाली पुस्तक ।।।)

महिला मंगलाचार—विवाह, पुत्रजन्म, नामकरण, मुण्डन आदि अवसरों पर स्त्रियों के गाने के लिये भजन, प्रार्थना, प्रभाती, आदि अति उत्तम मंगलाचार हैं मूल्य ।)

द्रौपदी सत्यभामा—स्त्री अपने पति को कैसे वश में कर सके इसका इस पुस्तक में सजीव वर्णन है। आर्य कन्यापाठशालाओं में दर्जा ३-४ में पढ़ाई जाती है। मूल्य ।-)

स्त्री शिक्षा—इसमें स्त्री शिक्षा का ढंग, विदुषी देवियों के जीवन चरित्र, पुत्र पालन तथा अन्य स्त्रियोचित और गर्भ सम्बन्धी ज्ञातव्य विषय, बालकों के स्नान, दाँत निकलने आदि चेचक की बीमारी, गृह कार्य और प्रबन्ध का प्रकरण, और स्त्रियों की उपासना विधि आदि का वर्णन है। मूल्य ।।)

सञ्जीवनी बटी—ब्रह्मचर्य का उपदेश आल्हा में दिखाया गया है, प्रत्येक को पढना चाहिये. मूल्य ।=) कुरान का कच्चा चिट्ठा =)

स्वर्ग में सब्जेक्ट कमेटी—पौराणिक देवताओं का खाका पं० रुद्रदत्त सम्पादकाचार्य ने खींचा है ≡) Religious Intolerance इस्लाम और ईसाइयत का बल पूर्वक प्रचार मूल्य ।)

नित्यकर्म पद्धति—सन्ध्या में मन नहीं लगता, दिनचर्या, स्वास्थ्य रक्षा, आसन प्राणायाम के नियम और गुण तथा सन्ध्या आदि पंचयज्ञ इस पुस्तक के सहारे करिये मूल्य ≡) ध्यान की रीति -)।।

उपनिषद्प्रकाश—ईश्वर कहाँ है, कैसे मिल सकता है हम कौन हैं कहाँ फिर कूँच करेंगे, संसार क्या है कैसे उत्पन्न हुआ ? आदि व जीव और प्रकृति का विशद् वर्णन पढ़ना हो तो संसार को चकित करने वाली, अपूर्व अध्यात्म ज्ञान तथा वेदों के सदुपदेश देने वाली उपनिषदें पढ़िये। प्रस्तुत पुस्तक में ऐसे गूढ़ विषय को समझाया है कि नेत्र खुल जाते हैं। इसीने जर्मन विद्वान् सौपनहार को मृत्यु शय्या पर सन्तोष दिलाया। यही विश्वशान्ति की साधक है मूल्य २।।)

ब्रह्मचर्य्य साधन—गुरुकुलों के अभाव तथा ब्रह्मचर्यव्रत पालन की उपेक्षा के कारण आज सरकारी स्कूलों के बच्चों में एक महाप्रलयकारी कुप्रथा चल गई है। 'ब्रह्मचर्य साधन' स्कूलों में घुसने से पहले अवश्य अपने हृदय के टुकड़ों के हाथ में रख दीजिये मूल्य १)

स्वाध्याय योग्य उत्तम साहित्य

श्री महात्मा नारायणस्वामी जी कृत

कतिपय ग्रन्थ

(१) मृत्यु और परलोक

• शरीर, अन्तःकरण तथा जीव का स्वरूप और भेद, जीव और सृष्टि की उत्पत्ति का प्रकार, मृत्यु का स्वरूप तथा बाद की गति, मुक्ति और स्वर्ग नरक इत्यादि का स्वरूप, मुक्ति के साधन आदि आदि विषयों पर अद्भुत पुस्तक। मूल्य ।।=)

(२) उपनिषद् रहस्य

केन, कठ, मुंडक माण्डूक्य, ऐतरेय,
बृहदारण्यक उपनिषदों की बहुत सुन्दर खोजपूर्ण
और वैज्ञानिक व्याख्यायें।

मूल्य क्रमशः—

।-), ≡), =)।।, -)।, ≡)।, २)

अरबी के सुप्रसिद्ध विद्वान् शास्त्रार्थ महारथी

श्री पं० रामचन्द्र जी देहलवी कृत

सत्यार्थ प्रकाश विषयक अत्युत्तम पुस्तकें—

(१) सत्यार्थप्रकाश के १४वें समुल्लास में उद्धृत कुरान की आयतों का देवनागरी में उल्था और उनका हिन्दी अनुवाद। मूल्य ।।)

(२) कुर्आन् में अन्य मतावलम्बियों के लिये कुछ अति कठोर उत्तेजक वाक्यों का संग्रह

हिन्दी अंग्रेजी अनुवाद सहित। प्रचारार्थ घटाया हुआ मूल्य ।=)

नोट—उपर्युक्त पुस्तकें प्रत्येक आर्य के पास रहनी चाहियें।

मिलने का पताः—सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, देहली।

श्री पं० रघुनाथप्रसाद पाठक—पब्लिशर के लिये लाला सेवाराम चावला द्वारा "चन्द्र प्रिंटिङ्ग प्रेस", श्रद्धानन्द बाजार, देहली में मुद्रित।

Regd No L 2121

सार्वदेशिक सभा पुस्तक भण्डार की उत्तमोत्तम पुस्तकें



जुलाई १९४४ ई०
आषाढ़ २००१ वि०

वार्षिक विवरणाङ्क

सम्पादक—
श्री पं० धर्मदेव जी सिद्धान्तालङ्कार विद्यावाचस्पति
साहित्य भूषण

वार्षिक मूल्य
स्वदेश ३)
विदेश ५शि.
१ प्रति का ।=)

विषय-सूची

——:o——

॥ ओ३म् ॥

सार्वदेशिक

* सार्वदेशिक-आर्य-प्रतिनिधि सभा देहली का मासिक मुख-पत्र *

वर्ष २० } जुलाई १९४४ ई०] आषाढ़, २००१ [दयानन्दाब्द १२१ { अङ्क ५

* वैदिक प्रार्थना *

ओं तामग्ने अस्मे इषमेरयस्व वैश्वानर द्युमतीं जातवेदः ।
यया राधः पिन्वसि विश्ववार पृथुश्रवो दाशुषे मर्त्याय ॥ ऋ० ७।५।८

अर्थ—हे (जातवेद) सर्वव्यापक और सर्वज्ञ (वैश्वानर अग्ने) सब मनुष्यों के हित कारक परमात्मन्। (अस्मे) हमें (ताम्) उस (द्युमतीम्) प्रकाश युक्त (इषम्) आध्यात्मिक ज्ञान तथा भक्तिमय अन्न को (एरयस्व) प्रदान करो (यया) जिससे हे (विश्ववार) सबके लिये वरणीय स्वीकरणीय तथा अज्ञान निवारक प्रभो। तुम दाशुषे मर्त्याय) अपने को तुम्हारे प्रति पूर्णतया समर्पित करने वाले भक्त के लिये (राध) सब कार्यों को सिद्ध करने वाला ज्ञानादि ऐश्वर्य तथा (पृथुश्रव.) विस्तृत यश अथवा ईश्वरीय दिव्य सन्देश को श्रवण करने की शक्ति देकर (पिन्वसि) उसे तृप्त करते हो ॥

विनय—हे सर्वज्ञ सर्वव्यापक प्रभो ! हम सब तुम्हारे भक्त अपने जीवनों को सम्पूर्णतया तुम्हारे प्रति समर्पित करते हुए यह प्रार्थना करते हैं कि तुम हमें ज्ञानभक्ति रूप आध्यात्मिक अन्न, उत्तम ऐश्वर्य, विस्तृत यश तथा अपने दिव्य सन्देश को सुनने का सामर्थ्य प्रदान कर हमें अनुगृहीत और तृप्त करो। तुम ही हमारे सच्चे नेता स्वामी और पिता हो, इसलिए हम तुमसे ही इन सब दिव्य गुणों तथा शक्तियों की भिक्षा मागते हैं। सच्चे भक्तों की शुभकामनाओं को पूर्ण करके उसे दिव्यशक्ति और शान्ति के प्रदान करने वाले तुम्हीं हो॥

वेदोपदेश

चित्त की नित्य प्रसन्नता

(३) ओ३म् विश्वदानीं सुमनसः स्याम पश्येम नु सूर्यं मुच्चरन्तम् ।
तथा करद् वसुपतिर्वसूनां देवां ओहान्ते अवसागमिष्ठः ॥ ऋ० ६।५२।५

(२) ओं विश्वाहा त्वा सुमनसः सुचक्षसः प्रजावन्तो अनमीवा अनागसः ।
उद्यन्त त्वा मित्रमहो दिवे दिवे ज्योग जीवाः प्रतिपश्येम सूर्य ॥
ऋ० १०।३७।७

(३) ओं यत्रानन्दाश्च मोदाश्च मुदः प्रमुद आसते । कामस्य यत्राप्ताः
कामास्तत्र "माममृतं कृधीन्द्रायेन्दो परिस्रव ॥ ऋ० ९।११३।११

शब्दार्थः—(१) हे परमात्मन् हम (विश्वदानीम्) सदा (सुमनस' स्याम) उत्तम मन से युक्त और प्रसन्न रहें (नु) साथ ही (सूर्यम् उच्चरन्तं पश्येम) आध्यात्मिक ज्ञान सूर्य को सदा अपने अन्दर उदय होते हुए देखते रहें (वसूनां वसुपति) पृथिव्यादि ८ वसुओं और सारे ऐश्वर्य का स्वामी परमात्मा। (तथा करद्) वैसी कृपा करें (देवान् ओहानः) दिव्य गुणों को हमें धारण कराते हुए हे प्रभो ! तुम (अवसा) अपनी रक्षाशक्ति, ज्ञान और प्रेम के साथ (आगमिष्ठः) हमारे अन्दर आवो—ज्ञान ज्योति से हमें प्रकाशित करो।

(२) हे (मित्र महः सूर्य) मित्रों से पूजनीय अज्ञानान्धकार नाशक ज्योतिर्मय प्रभो ! (जीवाः) हम जीव (विश्वाहा) सदा (सुमनसः) उत्तम मन से

युक्त तथा प्रसन्न (सुचक्षसः) उत्तम दृष्टि तथा अन्य इन्द्रियों की शक्ति से सम्पन्न (प्रजावन्तः) गृहस्थाश्रम में उत्तम वीर धार्मिक सन्तान युक्त (अनमीवा) रोगरहित स्वस्थ (अनागस) सर्व पाप रहित होकर (दिवे दिवे) प्रतिदिन (उद्यन्तंत्वा ज्योक प्रति पश्येम) हृदय में उदय होते हुए तुझ ज्ञान सूर्य को दीर्घकाल तक भली भाँति देखते रहें ॥

(३) हे (इन्दो) चन्द्रके समान सबको आनन्दित करनेवाले प्रभो (यत्र) जहा (आनन्दाः च मोदाः च प्रमुद आसते) आनन्द, मोद, प्रमोद-प्रसन्नता का सदा राज्य रहता है। (यत्र) जिस अवस्था में (कामस्य) कामना करने वाले आत्मा की (कामाः आप्ताः) सब शुभकामनायें पूर्ण हो जाती हैं (तत्र माम् अमृतं कृधि) उस उत्तम अवस्था में मुझे अमृत करदो (इन्द्राय परिस्रव) मुझ आत्मा के लिये क्षरित होवो—भक्तिरस से मुझे सींच दो।

व्याख्या—वेद के इन मन्त्रों में चित्त को नित्य प्रसन्न रखने का उपदेश है तथा उसके साधन बताये गये हैं। चित्त को नित्य प्रसन्न रखना, भयङ्कर से भयङ्कर कष्ट आने पर भी न घबराना यह मनुष्य का परम कर्तव्य है किन्तु ऐसी श्रेष्ठ अवस्था को प्राप्त करना सुगम नहीं है, उसके लिये बड़ी साधना और अभ्यास की आवश्यकता है। कई बार यह देखा जाता है कि जो बिल्कुल मूर्ख हैं, जिनमें किसी प्रकार का विवेक नहीं है वे भी प्रसन्न रहते हैं क्योंकि पाप पुण्य, कर्तव्य अकर्तव्य का कोई विचार न रहने के कारण वे कम दुःख मानते हैं पर वेदभगवान ऐसी मूर्खता व अज्ञानपूर्ण प्रसन्नता का उपदेश नहीं करते। उनका उपदेश यह है कि मन में सदा शुभ विचार रखते हुए और ज्ञान सूर्य के सदा दर्शन करते हुए भगवान् का चिन्तन तथा ध्यान द्वारा ज्ञान ज्योति को अपने अन्दर जगाते हुए ही हमें अपने चित्त को सदा प्रसन्न रखना चाहिये। ईश्वर की सच्ची भक्ति और ज्ञान ही मनुष्य को इस उच्च आदर्श अवस्था तक पहुंचा सकते हैं, इसी लिये योगिराज श्रीकृष्ण महाराज ने भक्तके लक्षणोंमें 'सन्तुष्ट सततं योगी' "सन्तुष्टो येन केन चित्" आदि शब्दों का गीता के १२वें अध्याय में प्रयोग किया है। आनन्दमय भगवान् का सदा ध्यान करने और सर्वत्र उसकी सत्ता का अनुभव करने से मनुष्य उस आनन्दमयी अवस्था को प्राप्त कर सकता है जिसका वर्णन 'यत्रानन्दाश्च मोदाश्च' इस ऊपर उद्धृत तृतीय मन्त्र में किया गया है। मन को सदा प्रसन्न रखना

(मन' प्रसाद') यह बड़ा मानसिक तप है जिसका गीता में 'मन प्रसादः सौम्यत्वम्। . तपो मानसमुच्यते।" (गीता अ० १७।) इत्यादि में उपदेश किया गया है। वेदों का उपदेश है कि मनुष्य को अपने शरीर को नीरोग और स्वस्थ बनाकर सब पापों से अपने को दूर रख कर, गृहस्थाश्रम में वीर धार्मिक सन्तान पा कर, सब शक्तियों का विकास करते, ज्ञान प्राप्त करते और मन के अन्दर सदा शुभ भावनाओं को धारण करते हुए अपने चित्त को सदा प्रसन्न रखना चाहिये। योग दर्शन के "मैत्री करुणा मुदितोपेक्षाणा सुख दुःख पुण्यापुण्य विषयाणा भावना तश्चित्त प्रसादनम्॥ १।३३ इस सूत्र का भी यहा स्मरण करना चाहिए जहाँ चित्त की प्रसन्नता के लिए सुखियों के साथ मित्रता, दु खितों पर दया, पुण्य कार्य करने वालों के प्रति हर्ष और अपुण्य करने वालों के प्रति उपेक्षा का उपदेश किया गया है॥

धर्मदेव विद्यावाचस्पती

❋ अध्यात्मसुधा ❋

(सन्ध्या के प्रारम्भ में ईश्वर प्रार्थना)

हे परमेश्वर मुझे शक्ति दो, पूर्ण सयमी बन जाऊं।
इन्द्रिय मन को चित्त बुद्धि को अपने वश में मैं लाऊं॥१॥

ध्यान भजन में जब मैं बैठूं, चित नित ऐसा शान्त रहे।
कोई अन्य विचार न आवे, केवल तुमको ही ध्याऊँ॥२॥

तेरा ध्यान परम सुखदायक, शश्वत शान्ति विधायक है।
मन को निश्चल शान्त बना कर मग्न तुम्हीं में हो जाऊँ॥३॥

मेरा आत्मा स्वामी होवे, चित्त बुद्धि मन इन्द्रिय का।
यह स्वराज्य सम्पादन कर सुख परम शान्ति को मैं पाऊँ॥४॥

तुमको पूर्ण समर्पण ही है, मार्ग शान्ति का परमोत्तम।
चलते फिरते सब कुछ करते, मन में तुमको ही ध्याऊँ॥५॥

मन के प्रति

ऐ मेरे मन तुझको मेरे ही वश में अब रहना होगा ।
आवें जो भी क्लेश खुशी से उन सबको सहना होगा ॥१॥
बैठा हूँ मैं ध्यान देव का करने चचल नहीं होना ।
मेरा आज्ञाकारी होकर शान्त तुझे बनना होगा ॥२॥
आया हू मैं भक्ति नदी में करने को सुखदायक स्नान ।
तुझको भी विषयों से हटकर शीतल जल में बहना होगा॥३॥
मैं हूँ तेरा स्वामी इसको कभी नहीं तू जाना भूल ।
मेरा सेवक बन कर ही बस मानस तुझको रहना होगा ॥४॥
शाश्वत सुख आनन्द शान्ति को पाना मेरा लक्ष्य बना ।
शान्ति मूल के चिन्तन में मन मग्न तुझे बनना होगा ॥

"ध्रुव"

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का छत्तीसवां वार्षिक वृतान्त

१ आर्य वीर दल संगठन

इस वर्ष मुख्यतया बंगाल के अकाल-पीड़ितों के सहायता कार्य्य में ही आर्य्यवीर दल की प्रगतियाँ केन्द्रित रहीं। श्री० ओमप्रकाशजी सहायक मुख्य सेना पति का अधिकाश समय बंगाल के अकाल-पीड़ित क्षेत्रों में सहायता कार्य्य में व्यतीत हुआ और श्री ब्र० सुखदेवजी ने लगभग ५ मास तक संयुक्त-प्रान्तीय सभा के आधीन उस प्रान्त में दल के संगठन का कार्य्य किया।

आर्य्य वीरों के शिक्षण के लिए, गुरुकुल कांगड़ी, अजमेर, देहली और बरेली में ४ शिक्षण शिविर खोले गए और संयुक्तप्रान्त, पंजाब, सिंध और राजस्थान के १५४ शिक्षार्थियों को शिक्षा दी गई।

सभा ने आर्य्य जगत् के लिए जो ३ वर्ष का रचनात्मक कार्यक्रम बनाया हुआ है उसके अनुसार ३ वर्षों में ३ लाख आर्य वीरों और वीरांगनाओं की भरती और संगठन का कार्य्यक्रम निश्चित हुआ है। इस दिशा में आर्य जनता और समाजें अपेक्षित उत्साह भी दिखला रही हैं परन्तु आर्य समाजों और आर्यवीर दलों के पारस्परिक सम्बन्धों का प्रश्न पुनः उपस्थित हो गया है। इस सम्बन्ध के निश्चयार्थ अखिल भारतीय आर्य्य वीर दल समिति ने अपनी २१-११-४३ की बैठक में एक सुनिश्चित योजना बनाने के लिए एक उपसमिति बनाई है। यह योजना शीघ्र ही बनकर तय्यार होगी।

२ बंगाल में सहायता कार्य

बंगाल के मेदिनीपुर जिले में आए हुए तूफान और बाढ़ के उपद्रवों से वहाँ की पीड़ित जनता को अभी मुक्ति भी नहीं मिली थी कि अकाल के रूप में समूचे बंगाल प्रान्त पर एक और भयङ्कर आपत्ति आई जिसके उपद्रवों की कल्पना मात्र से रोंगटे खड़े हो जाते हैं। सरकारी रिपोर्ट के अनुसार लगभग ३५ लाख व्यक्ति इस आपत्ति के कारण मरे। आर्य्य समाज का सहायता-कार्य अभी बन्द भी नहीं होने पाया था कि इस कार्य को और अधिक बढ़ाना पड़ गया। आर्य्य जगत् ने सभा

की अपील का उत्साह वर्द्धक उत्तर दिया। सभा को इस कार्य के लिए १७६५८॥≡)॥ प्राप्त हुए और १६५५४।≡) व्यय हुआ। इसमें से ७५००) आर्य्य प्रतिनिधि-सभा बंगाल के द्वारा व्यय हुआ है।

आर्य प्रादेशिक सभा लाहौर, इस सभा तथा प्रान्तीय सभाओं और आर्य्य नरनारियों द्वारा भेजा हुआ ६५००००) केन्द्रीय रिलीफ सोसाइटी कलकत्ता को नकद प्राप्त हुआ जिसमें से ३७००००) व्यय हुआ।

कार्य्य का विवरण इस प्रकार है —

मुफ्त भोजनालय

नगर	कितने व्यक्तियों को भोजन दिया गया
११, कार्नवालिस स्ट्रीट कलकत्ता	११०
२०, पाईपका रोड कलकत्ता	५५०
मिदनापुर	
१ चोरचीता	४००
२ महापाल	६००
३ पाथरा	६००
४ पातौना	६००
५ खोरीका	६००

नोटः—

सार्वदेशिक सभा ने अकाल पीड़ितों की सहायता विषयक कार्य्य को सुसगठित करने के लिए १ सितम्बर को आर्य्यवीरदल के स० प्रधान सेनापति श्री ओमप्रकाशजी को कार्य-कर्त्ताओं के एक दल सहित भेजा। यद्यपि श्री ओंप्रकाशजी को केवल ३ सप्ताह के लिए भेजा गया था तथापि उनकी और उनके सहयोगियों की कार्य-प्रणाली तथा तत्परता से आर्य समाज रिलीफ सोसाइटी के सचालक इतने अधिक प्रभावित हुए कि उन्होंने सभा से प्रार्थना करके जनवरी तक उनकी बहु-मूल्य सेवाओं से लाभ उठाया। श्री डा० सुखदेवजी, श्री वीरेन्द्रजी सिद्धान्तभूषण, श्री सत्यपाल वैद्य इत्यादि ने भी बंगाल अकाल पीड़ितों की जो सेवा की वह अत्यधिक प्रशंसनीय है।

नगर	कितने व्यक्तियों को मुफ्त भोजन दिया
(६) सिजुआ	४००
(७) दुही जुड़ी	३००
(८) गोपालचक	१५००
(९) मेदूनिया	१५००
(१०) मिट्टीटिकरी	३००
(११) मधुपुर	५००
(१२) बारधा	२१५०
(१३) विष्णु दत्त चक	११५०
(१४) महीखदा	४००
(१५) तामलुक	१२००
(१६) नरी केलया	२५०
(१७) दीनबन्धुपुर	६००
(१८) विष्णुबत्	२००
(१९) भयापली	४५०
	१४३७५
(१) चांदपुर शहर	१०००
(२) ब्राह्मण बारिया	१०००
	२०००)

(३) दडाकेर	५००
(४) चिलकन्दी	५००
(५) दानसर	५००
(६) लुनसिंह	५००
(७) नरिया	५००
(८) पंडितसर	५००
(९) महीसर	५००
(१०) पंचपल्ली	५००
(११) कार्तिकपुर	५००
(१२) च ई गाम	५००
(१३) उपाशी	५००
(१४) गोसाईं हाट	११००
(१५) नथुरिया	४००
(१६) नागरपारा	५००
(१७) कोनेश्वर	४००
(१८) धनकटी	४००
(१९) कुलकरी	४००
	८५००

नोआखाली

(१) लक्ष्मीपुर	५००
(२) चौमहोनी	५००
(३) चन्दरी गाव	५००
(४) प्रतापपुर	५००
	२०००

फरीदपुर

(१) पालंग	५००
(२) तुलासार	५००

सस्ते भोजनालय

मिदनापुर

(१) चोरचीता	२००
(२) महापाल	३००
(३) पथुरी	३००
(४) पाचीना	३००
(५) खरीका	३००
(६) सिजुआ	२००
अन्य स्थानों पर	२७७५
	४३७५

निराश्रितों के रक्षा गृह		मिदनापुर अनाथालय	
(१) २५ पद्मपुकर रोड	६०		
मिदनापुर			
१ सेन्टर में	२००	१ केन्द्र में	८०

रिलीफ समिति ने २००० कम्बल, ५०० धोतियां, १५०० साड़ियों, फ्राक, कमीजें आदि भी बाँटी हैं। समिति ने कपड़ों के वितरण के लिए ४००००) स्वीकार किया है।

पंजाब से आयुर्वेद के विद्यार्थियों का एक दल दवाइयों के साथ पीड़ित क्षेत्रों में गया था। वे लोग औषधि वितरण के लिए विविध केन्द्रों में भेजे गए थे।

३ सभा पुस्तकालय

इस वर्ष इस पुस्तकालय में सभा द्वारा ५००) की पुस्तकें क्रय की गई। लुधियाने के प्रसिद्ध आर्य कार्यकर्त्ता श्री० लब्भूरामजी नैयर और उनकी मित्र-मण्डली ने ६०) तथा श्री ला० श्यामलालजी लोहिया देहली निवासी ने ३०) पुस्तकालय की अलमारियों के लिए सभा को प्रदान किए। सभा इन महानुभावों की आभारी है। आलमारियां क्रय करके पुस्तकालय में रख दी गई हैं। इस समय पुस्तकालय में उपनिषद्, वेद-वेदाङ्ग, पूर्वीय और पाश्चात्य दर्शन, इतिहास जीवन-चरित्र, समाज शास्त्र साहित्य, ब्राह्मण, वैदिक सिद्धान्त, स्मृति, ईसाई मत, मुहम्मदी मत, जैनमत, पारसी व सिक्ख मत आदि विविध विषयों और संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी, जर्मन, उर्दू, गुजराती, मराठी, बंगाली, तामील, तिलगू, कर्नाटक उड़िया आदि भाषाओं की लगभग १२०० पुस्तकें हैं। स्व० श्री क्षेमकरणदास जी त्रिवेदी के सुपुत्र श्री विष्णुदयालजी ने लगभग ६०) के मूल्य की (सम्पूर्ण अथर्ववेद भाष्य, गोपथ ब्राह्मण-भाष्य तथा अन्य पुस्तकें अपने स्व० पिताजी की पुण्य स्मृति में सभा को दान कीं। सभा के उपप्रधान श्री पं० गङ्गाप्रसादजी उपाध्याय एम० ए० ने स्वरचित पुस्तकों तथा कला प्रेस के प्रकाशनों की एक एक प्रति भी पुस्तकालय को प्रदान की। श्री बाबू ज्योतिस्वरूपजी रईस इटावा आजीवन सदस्य सार्वदेशिक सभा ने Sale कृत कुरान का अंग्रेजी अनुवाद, कुरान का सम्पूर्ण हिन्दी अनुवाद (श्री रघुनाथप्रसाद मिश्र कृत) कुरान की अर्बीभाषा की १ मूल प्रति पुस्तकालयार्थ प्रदान की। श्री बाबूजी ने और भी कई ग्रन्थ पुस्तकालय को

भेंट करने का वचन दिया हुआ है। श्री पं० ठाकुरदत्तशर्म्मा धर्मार्थ ट्रस्ट ने भी १००) सभा को इस पुस्तकालय के लिए दानरूप में दिए थे, जिनसे वेद ब्राह्मण भाष्यादि पुस्तकें क्रय कर ली गई हैं। सभा इन महानुभावों और संस्थाओं को हार्दिक धन्यवाद देती है। सभा के मान्य प्रधान श्री ला० गङ्गाप्रसादजी, ने २७) के मूल्य की पुस्तकें अपने पास से पुस्तकालय को क्रय कराई हैं, श्री पं० दामोदर सातवलेकरजी अध्यक्ष स्वाध्याय मण्डल औंध ने लगभग ५०) के मूल्य के अपने प्रकाशन पुस्तकालय को फ्री प्रदान किए हैं।

४ आर्य समाज क्या है और उसने क्या किया ?

अन्तरङ्ग सभा के निश्चयानुसार गत वर्ष इस ग्रन्थ का प्रकाशन स्वीकृत हुआ था और निश्चय किया गया था कि चुने हुए विषयों पर आर्य्य विद्वानों के लेख लिखवा ये जायँ। तदनुसार अब तक निम्न प्रकार लेख प्राप्त हो गए हैं। काँठ (मुरादाबाद) के उत्साही आर्य-बन्धु श्री ला० तोतारामजी रईस ने इस ग्रन्थ के प्रकाशन विषयक सभा के निश्चय से प्रभावित होकर प्रकाशन कार्य की सहायतार्थ १००) सभा को देने का वचन दिया है। आशा है अन्य धनी मानी आर्य्य सज्जन भी श्री लाला तोतारामजी का अनुकरण करेंगे।

विषय	लेखक
[१] आर्य्य समाज के इतिहास पर एक दृष्टि	श्री पूज्य नारायण स्वामीजी
[२] वर्ण व्यवस्था तथा साम्यवाद	,, पं० गङ्गाप्रसाद जी एम० ए० रि० चीफ जज
[३] आर्य समाज के धार्मिक तथा दार्शनिक सिद्धान्त	,, पं० गङ्गाप्रसाद जी उपाध्याय एम ए.
[४] वैदिक धर्म का व्यापकरूप	,, पं० धर्मदेव जी विद्यावाचस्पति
[५] गुरुकुल शिक्षा प्रणाली	,, पं० देवराज जी विद्यावाचस्पति
[६] आर्य समाज और राष्ट्र भाषा हिन्दी प्रचार	,, प रामनारायण जी मिश्र
[७] त्रैतवाद	,, धीरेन्द्र जी विद्यावाचस्पति एम० ए०

[८] आर्य समाज के आलोचक ,, डा० सत्यप्रकाश जी डी. एस सी.
[६] आर्यसमाज में बलिदान की भावना ,, पं० प्रियव्रत जी
[१०] देशदेशान्तर में वैदिक धर्म प्रचार ,, स्वामी भवानी दयाल जी
,, ,, ,, ,, ,, स्वतन्त्रानन्द जी
[११] वेदभाष्य तथा आर्यसमाज का वेद विषयक अन्य साहित्य ,, पं० जयदेव जी विद्यालंकार
[१२] आर्य समाज और संस्कृत प्रचार ,, पं धुरेन्द्र जी शास्त्री
[१३] आर्य समाज का सेवा कार्य ,, प० भीमसेन जी विद्यालंकार
[१४] आर्य समाज और अन्य धार्मिक समाज ,, प० हरिदत्त जी वेदालंकार
[१५] शुद्धि ,, डा० ज्ञानचन्द्र जी आर्य्य
,, ,, देवप्रकाश जी शास्त्री
[१६] आर्य समाज के नियमोपनियम ,, पं० गङ्गाप्रसाद जी उपाध्याय एम. ए.

५ सत्यार्थप्रकाश विरोधी आन्दोलन

सत्यार्थप्रकाश की जब्ती के कुछ निन्दनीय और असफल आन्दोलन कई वर्ष पूर्व होचुके थे परन्तु विरोधियों को इनमें जैसी आशा थी कोई सफलता न हुई थी। गत वर्ष जून मास में सिन्ध प्रान्त में आन्दोलन का पुनः सूत्रपात हुआ। समाचार पत्रों में सिन्ध सरकार की २४ जून की इस आशय की घोषणा के छपते ही कि उसके कुछ मन्त्रियों के पास मुसलमानों के आवेदन-पत्र पहुँचे हैं कि सत्यार्थप्रकाश के *कतिपय भाग जब्त कर लिए जावें और सिंध सरकार* उन पर विचार कर रही है आर्य्य जगत् में विक्षोभ की लहर दौड़ गई। सभा के आदेशानुसार सभी आर्य्य प्रतिनिधि सभाओं और आर्य्य समाजों ने बहु सख्या में प्रस्ताव पास करके, और सिंध सरकार को भेजकर चेतावनी दी कि यदि इस ग्रन्थ के विरुद्ध कोई कार्यवाही की गई तो इसके परिणाम अच्छे न होंगे। इन प्रस्तावों की प्रति लिपि भारत सरकार और समाचार-पत्रों को भी भेजी गई और इस सभा के कार्यालय में भी प्राप्त हुई। सभा की ओर से २६ जून को सिंध सरकार के पास विशेष तार भेजकर निवेदन किया गया कि वह इस आन्दोलन से ऊपर रहकर सत्यार्थप्रकाश के विरुद्ध कोई कार्यवाही न करे अन्यथा

आर्य लोग अपनी धार्मिक स्वतन्त्रता की रक्षा के लिये सब प्रकार का त्याग और बलिदान करने को उद्यत होंगे। आर्य समाज के इस सामूहिक प्रतिवाद का आवश्यक फल होना ही था तदनुसार ८-७-४३ को सिंध सरकार ने एक वक्तव्य प्रकाशित कराया कि सिंध सरकार का इस ग्रन्थ के विरुद्ध कार्यवाही करने का कोई इरादा नहीं है। सिंध सरकार के इस बुद्धिमत्तापूर्ण कार्य का आर्य जगत् में स्वागत हुआ। इस सभा की ओर से १२-७-४३ को तार द्वारा सिंध सरकार को धन्यवाद दिया गया।

इस कार्यवाही के पश्चात् यह विषय यहीं समाप्त समझ लिया गया। परन्तु आन्दोलनकारी मतान्ध मुसलमान और उनके पत्र अपने कार्य में संलग्न रहे और इस ग्रन्थ के कुछ भागों कीजब्ती के आन्दोलन को उग्र बनाते रहे। लाहौर के एक समाचार-पत्र ने तो समस्त प्रान्तीय सरकारों को इस ग्रन्थ की जब्ती कोप्रेरणा कर डाली और सिंध के एक मौलवी ने सिंध सरकार को चेतावनीदे डाली कि यदि वह इस ग्रन्थ को जब्त करने में चूक गई तो फिर भारत के समस्त मुसलमान इस सम्बन्ध में सत्याग्रह करेंगे। समाचार-पत्रों में यह भी प्रकाशित हुआ था कि १३-८-४३ को लाहौर में पंजाब मुस्लिम लीग के तत्वावधान में एक सार्वजनिक सभा हुई थी। उसमें इस आशय का प्रस्ताव प्रस्तुत हुआ था कि भारत सरकार और मुस्लिम प्रधान प्रान्तों की सरकारों से प्रार्थना की जाय कि वे सत्यार्थप्रकाश के १४ वें समुल्लास को जब्त कर लेवें। इसी सभा में सिंध सरकार के गृह-मन्त्री श्री गुज़्दर महोदय ने कहा था कि सिंध सरकार ने अपने कानूनी परामर्श दाताओं से परामर्श करके यह विषय भारत सरकार के पास भेज दिया है क्यों कि यह अखिलभारतीय प्रश्न है। उन्होंने यह सम्मति भी प्रकट की कि यत सत्यार्थप्रकाश धर्मग्रन्थ नहीं हैं अतः वह जब्त हो सकता है।

इस आन्दोलन के फलस्वरूप जन-साधारण में सत्यार्थप्रकाश के स्वाध्याय की प्रवृत्ति बड़ी उग्र हुई फलत: सभा ने १९ से २५ भाद्रपद तक अर्थात ४ से १० सितम्बर तक सत्यार्थप्रकाश सप्ताह मनाने को आर्य जगत् को आदेश दिया और २२-८-४३ की अन्तरंग के निश्चयानुसार ५-९-४३ को विशेष सत्यार्थप्रकाश दिवस मनाने की प्रेरणा की। वह सप्ताह और दिवस सर्वत्र बड़े समारोह और उत्साह से मनाए गए। इस दिवस पर प्रस्ताव पास करके सहस्त्रों की संख्या में भारत सरकार को भेजे गए।

इसी बीच में श्री शिवचन्द्रजी सभा की ओर से सिंध के दौरे पर भेजे गए। वहां वे सिंध सरकार के हिन्दू मन्त्रियों से भी मिले जिनसे विदित हुआ कि उन्होंने कभी भी यह मामला भारत सरकार के पास भेजने की सलाह नहीं दी और उनकी सम्मति है चूंकि सत्यार्थप्रकाश एक धर्म ग्रंथ है अतः यह जब्त नहीं हो सकता।

इसी बीच में मजलिसे इत्तिहाद मिल्लत हिन्द ने १७-१०-४३ को एक प्रस्ताव पास किया जिसकी प्रति मौलाना जफरअलीखाँ M L A. (Central) ने सभा में भेजी। इस प्रस्ताव में आर्य समाज को प्रेरणा की गई थी कि वह स्वय सत्यार्थप्रकाश के कुछ समुल्लासों को निकाल देवे।

सभा अभी इस प्रस्ताव पर विचार भी न कर पाई थी कि इतने में ही मोलाना जफरअलीखाँ द्वारा समर्थित आल इण्डिया मुस्लिम लीग कौंसिल में १४ नवम्बर १९४३ को इस आशय का प्रस्ताव स्वीकृत हुआ कि भारत सरकार को प्रेरणा की जाय कि वह सत्यार्थप्रकाश के उन अध्यायों को जब्त करे जिन में अन्य धर्म संस्थापकों मुख्यतया इस्लाम के संस्थापक के विरुद्ध आपत्ति और अपमानजनक बातें लिखी गई हैं।

अन्तरंग सभा की २१-११-४३ की आवश्यक बैठक में सत्यार्थप्रकाश विरोधी आन्दोलन पर पुनः विचार हुआ और सभाने निम्न निश्चय किया —

सत्यार्थप्रकाश की रक्षा लिये आर्य तथा हिन्दू जगत् की ओर से प्रत्येक प्रकार का बलिदान किया जायेगा।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा (इन्टर नेशनल आर्यन लीग) देहली की अन्तरंग सभा को आश्चर्य है कि मुस्लिम लीग ने जिसमें मुसलमानों का केवल एक भाग सम्मिलित है और जो एक राजनीतिक संस्था होने का दावा करती है अपने कार्य क्षेत्र से बाहर जाकर अपनी अन्तरंग सभा में जो देहली में ता० १४-११-४३ को हुई थी यह प्रस्ताव पास करना उचित समझा कि भारत सरकार सत्यार्थप्रकाश के कुछ भागों को जब्त कर देवे क्योंकि उनमें अन्य धर्म संस्थापकों विशेषतः इस्लाम के संस्थापक के विरुद्ध आक्षेपयोग्य और अपमानजनक बातें लिखी हुई हैं।

सत्यार्थप्रकाश लाखों आर्यों की धर्म पुस्तक है और इसने करोड़ों हिन्दुओं के लिये ही नहीं वरन् भारत तथा विदेशों के निवासियों के लिये भी प्रकाश स्रोत का कार्य किया है। लगभग ६० वर्ष से सत्यार्थप्रकाश संसार के सामने है और भारत की समस्त भाषाओं और योरोप की कई मुख्य २ भाषाओं में इसका अनुवाद हो चुका है और कहीं से भी कभी इसके किसी भाग की जब्ती का प्रश्न गम्भीरता पूर्वक उपस्थित नहीं किया गया।

जिन आर्यों और अन्य व्यक्तियों ने सत्यार्थप्रकाशसे प्रकाश ग्रहण किया है वे सब मतान्ध मुसलमानों द्वारा उत्तेजित होने पर भी इस लम्बे समय में अहिंसात्मक रहे हैं। इससे स्पष्ट है कि इस ग्रन्थ के मान्य लेखक जिस उदार भावना से प्रेरित थे और जो उनके अनुयायियों को प्रेरित करती रहती है वह यह है कि संसार में शान्ति पूर्वक धार्मिक और सामाजिक सुधार का कार्य किया जाये।

सत्यार्थप्रकाश के मान्य लेखक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने ग्रन्थ की भूमिका में और अन्य मतों की आलोचना विषयक समुल्लासों की अनुभूमिकाओं में स्पष्ट रूप से लिख दिया है कि उनका उद्देश्य न उन मतों के संस्थापकों का अपमान करना है और न उनके अनुयायियों की भावनाओं को ठेस पहुँचाना अपितु उनका उद्देश्य सत्य की खोज करना कराना है जो मानव जीवन का उच्चतम उद्देश्य है।

सभा का यह भी विश्वास है कि इस्लाम और अन्य मतों के सम्बन्ध में सत्यार्थप्रकाश में प्रकट की हुई सम्मति उचित आलोचना की सीमा का अतिक्रमण नहीं करती। इसके विपरीत कुरान और हदीसों में कई ऐसे वाक्य हैं जो काफिरों अथवा ग़ैरमुस्लिमों के विरुद्ध हिंसा का स्पष्ट रूप से प्रचार करते हैं जिसके परिणामस्वरूप, आर्य समाज के कई व्यक्ति मुसलमानों की मतान्धता की बलि चढ़ चुके हैं। इस पर भी आर्य समाज ने कुरान और हदीसों के ऊपर वर्णित वाक्यों के निकाले जाने की माँग करने का कभी विचार तक नहीं किया।

सभा का पूर्ण विश्वास है कि मुस्लिम लीग कौंसिल के प्रस्ताव में जिस अनुचित और सर्वथा अनावश्यक कार्यवाही का निर्देश किया गया है भारत सरकार उस कार्यवाही के करने की भूल नहीं करेगी।

अन्त में यह सभा अपनी पूर्व घोषणा को बलपूर्वक पुनः दुहराना चाहती है कि यदि दुर्भाग्यवश भारत सरकार ने सत्यार्थप्रकाश के विरुद्ध कोई निश्चय

किया तो आर्य और करोड़ों हिन्दू जिनमें सेना की सेवा में लगे हुए जाट और अन्य सम्मिलित हैं अपने इस पवित्र धर्म ग्रन्थ के प्रत्येक शब्द की रक्षा के लिये सब प्रकार के त्याग और बलिदान पूर्वक उसका विरोध करने में विवश होंगे।

श्री मौलाना अफ़ज़लअली ख़ाँ ने यत. मुस्लिम लीग में सत्यार्थ प्रकाश की ज़ब्ती विषयक प्रस्ताव का समर्थन किया था, अतः इस सभा को उनके उपर्युक्त पत्र पर विचार करने की आवश्यकता नहीं रह गई।

इसी अन्तरंग सभा में सभा ने देहली में जनवरी मास में सार्वदेशिक आर्य महा-सम्मेलन का अधिवेशन करने का निश्चय किया जिससे समस्त आर्य्य-जगत को इस निन्दनीय आन्दोलन के प्रति कार में साथ लिया जा सके। इस अखिल भारतीय आर्य-सम्मेलन को पूर्णतया सफल बनाने के लिए जितनी तय्यारी की आवश्यकता थी उसके लिये १ जनवरी तक का समय पर्याप्त नहीं समझा गया। इसलिए आर्य जनता के अनुरोध पर श्री प्रधानजी सार्वदेशिक सभा की अनुमति से २०, २१, २२ फरवरी की तारीखें इस सम्मेलन के लिए निश्चित की गई। देहली में २१ दिसम्बर १६४३ को इस कार्यार्थ स्वागत समिति का संगठन किया गया। जिसके निम्न अधिकारी चुने गए।

स्वागत समिति के सभापति—श्री ला० नारायणदत्तजी

" " उपप्रधान—श्री प० इन्द्रजी विद्यावाचस्पति

" " प्रधान मंत्री—प्रो० सुधाकरजी एम० ए०

सत्यार्थ प्रकाश आन्दोलन विषयक विज्ञप्ति तथा साहित्य

सत्यार्थ प्रकाश विरोधी आन्दोलन के सम्बन्ध में सभा के मान्य प्रधान श्री प० गङ्गाप्रसादजी एम० ए० ने अंग्रेज़ी में एक वक्तव्य 'Satyarthaprakash and Moslem Agitation for its Proscription" शीर्षक से तय्यार किया जिसे भारत सरकार सब प्रान्तीय सरकारों, वायसराय की कार्यकारिणी के सदस्यों और केन्द्रीय धारा सभा (Legislative Assembly) के प्रमुख सदस्यों के पास भेजा गया।

सत्यार्थ प्रकाश के १४ वें समुल्लास में जिन कुरान की अरबी आयतों का उल्लेख हुआ है उन सबका देवनागरी में उल्था और प्रामाणिक अनुवाद उत्तम भूमिका सहित अरबी के सुप्रसिद्ध विद्वान शास्त्रार्थ महारथी प० रामचन्द्रजी देहलवी ने करके दिया जिसकी ३००० प्रतियां सभा द्वारा प्रकाशित करायी गयी। यह पुस्तक बड़ी उपयोगी सिद्ध हुई है और उसकी समाजों से निरन्तर माँग आ रही है।

जिन्द अवस्था, बाइबल, कुरान, ग्रन्थ साहेब आदि मतमतान्तरों से खण्डनात्मक वाक्यों का संग्रह भी सभा द्वारा करवाया जा रहा है। इस विषय में भी श्री पं० रामचन्द्रजी से सभा को बड़ी सहायता मिली है। उन्होंने कुरान के अन्य मतावलम्बियों के लिए कुछ अति कठोर उत्तेजक अरबी वाक्यों का प्रामाणिक उर्दू (देवनागरी लिपि) अंग्रेजी अनुवाद सहित संग्रह करके दिया जो 'सार्वदेशिक' में प्रकाशित होता रहा और जिसे जनता के लाभार्थ पुस्तकरूप में प्रकाशित करा दिया गया है। अन्य धर्मग्रन्थों से संग्रहकार्य जारी है। सभा मान्य पण्डित रामचन्द्रजी देहलवी को हार्दिक धन्यवाद देती है कि उन्होंने सभा की प्रार्थना पर अपना अमूल्य समय देकर अपनी इस्लाम विषयक अद्भुत विद्वत्ता से जनता को लाभ पहुँचाया है और आशा करती है कि आगे भी सभा के कार्यों में उनका पूर्ण सहयोग बना रहेगा।

६ विक्रम महोत्सव

विक्रम महोत्सव मनाने का कार्य ग्वालियर नरेश ने अपने जिम्मे ले लिया था, अतः सभा ने स्वयं इस महोत्सव का प्रबन्ध करने का विचार छोड़ दिया। २२-८-४३ की अन्तरंग में इसी आशय का एक निश्चय कर दिया गया। सभा ने आवश्यकतानुसार इस कार्य में ग्वालियर की प्रबन्ध समिति को सहयोग देने का भी निश्चय किया।

७ जोधपुर समाज की रजिस्ट्री

देशी राज्यों में राज्यों द्वारा निर्मित फौजदारी कानून के अन्तर्गत रजिस्टर्ड कराए जाने के कई विषय इस सभा के सम्मुख पिछले २ वर्ष में आए हैं। सभा की इस विषय में यह नीति रही है कि समाजों की इस प्रकार की रजिस्ट्री कदापि न कराई जाय। इस वर्ष जोधपुर सिटी समाज की रजिस्ट्री का विषय बहुत ही

चिन्ता और संघर्ष का विषय रहा। जोधपुर सरकार ने इस बात पर बल दिया कि जोधपुर का उपर्युक्त समाज अपने को १९४० के जोधपुर पब्लिक सोसाइटीज एक्ट के अनुसार रजिस्टर्ड कराए। जोधपुर सरकार ने रजिस्ट्रेशन की अन्तिम तिथि ५-१०-४३ देकर समाज को लिखा कि यदि इस तिथि तक रजिस्ट्रेशन न कराया गया तो समाज के सब कार्य बन्द कर दिए जाएँगे। जोधपुर समाज आर्य प्रतिनिधि-सभा राजस्थान और इस सभा के परामर्श से कार्य्य करता रहा। इस सभा का पक्का मत था कि जिस प्रकार मन्दिर, मस्जिद, गिरजाघर धर्म-मन्दिर हैं और वे रजिस्ट्रेशन से मुक्त हैं, इसी प्रकार आर्य समाज भी धर्म-मन्दिर है अत वह भी रजिस्ट्री से मुक्त ही रहना चाहिए।

३ नवम्बर ४३ को जोधपुर के चीफ मिनिस्टर साहब के सहायक पोलीटिकल मन्त्री पं० जयनाथ कुजरू ने समाज के अधिकारियों को भेंट के लिए बुलाया। इस भेंट में श्री प०कन्हैयालालजी मिश्र आर्योपदेशक भी सम्मिलित थे। इस भेंट में आर्यसमाज का उपर्युक्त पक्ष रक्खा गया और बतलाया गया कि आर्यसमाज को रजिस्टर्ड कराने की आवश्यकता नहीं है। प्रसन्नता है कि जोधपुर दरबार ने आर्य-समाजके पक्ष के औचित्य को अनुभव करते हुए आर्य समाज जोधपुर सिटी को रजिस्ट्रेशन से मुक्त कर दिया। हमें यह लिखते हुए प्रसन्नता होती है कि जोधपुर समाज ने अपने उत्साही मन्त्री श्री सदानन्दजी अवस्थी के द्वारा इस विषय पर बड़ी तत्परता, बुद्धिमता और गम्भीरता से कार्यवाही की है। यह सभा जोधपुर नरेश और उनकी सरकार को इस बुद्धिमत्तापूर्ण कार्यवाही पर धन्यवाद देती है।

उपसमिति

इस वर्ष सभा ने निम्न उपसमितियां नियत की थीं।

दक्षिण प्रचार

(१) श्री पं० गंगाप्रसादजी उपाध्याय

(२) मन्त्री सभा

(३) ,, पं० विनायकराव जी विद्यालंकार

(४) ,, ,, विजयशंकर जी

इस समिति की दो बैठकें हुईं।

आर्यवीर दल उपसमिति

(१) प्रधान सार्व० सभा
(२) मंत्री " "
(३) कोषाध्यक्ष " "
(४) पं० देशबन्धुजी विद्यालकार मुख्य सेनापति
(५) श्री प्रो० महेन्द्रप्रतापजी शास्त्री
(६) " पं० ज्ञानचन्द्रजी आर्य सेवक
(७) " कुवर चाँदकिरणजी शारदा
(८) " प० मिहिरचन्द्रजी धीमान
(९) " प्रो० ताराचन्दजी गाजरा
(१०) श्री प० विजयशंकरजी
(११) " चौ० देशराजजी
(१२) " सिंहेश्वरजी

इस समिति की दो बैठकें हुई।

गाजियावाद भूमि

(१) श्री पं०इन्द्रजी (२) श्री ला० नारायणदत्तजी
(३) " ला० हरशरणदासजी रईस गाजियाबाद
(३) " रायसाहब अमृतरायजी (५) श्री ला० ज्ञानचंद्रजी आर्य देहली

इस उपसमिति की १ बैठक हुई। गाजियावाद की सभा की भूमि में इस वष खेती कराने का यत्न किया गया। परन्तु पानी की कमी के कारण यत्न सफल न हुआ। सभा ने कुए के लिए २०००) लगाने की स्वीकृति दी हुई है। वहा कुआ बनाने का यत्न जारी है।

राजार्य सभा

(१) श्री प० गगाप्रसादजी रिटायर्ड चीफ़ जज
(२) " " गगाप्रसादजी उपाध्याय
(३) " " ज्ञानचद्रजी आर्य सेवक

राजार्य सभा विषयक प्रश्नावली तैयार हो गई थी। उसके पश्चात् गत आर्य सम्मेलन में इस विषय पर निम्न प्रस्ताव पास हुआ जिसको इस सभा की अन्तरग सभा ने स्वीकार कर लिया है।

राष्ट्र निर्माण

यह सम्मेलन निश्चय करता है कि वर्तमान राजनीति और महायुद्ध के बाद राष्ट्र और विश्व के नव निर्माण के लिये बनाई जाने वाली योजनाओं को वैदिक आदर्शों के अनुकूल क्रियात्मक रूप में परिणत करने के लिये आर्य राजनैतिक कार्यकर्ताओं तथा विचारकों का एक सगठन बनाना आवश्यक है जो राजार्य सभा का रूप ग्रहण करे और उस सगठन निर्माण के लिये निम्न लिखित समिति नियुक्त करता है।

यह सभा किसी दशा में भी आर्य समाज की शिरोमणि सभा सार्वदेशिक सभा के निर्देशों के विरुद्ध कार्य न करेगी।

उपसमिति,

१. श्री प० इन्द्रजी विद्यावाचस्पति (संयोजक)
२. ,, ,, बुद्धदेवजी विद्यालकार
३ ,, ,, सत्यदेवजी विद्यालकार
४ ,, ,, ज्ञानचन्द्रजी बी० ए०
५. ,, बा उमाशकरजी
६ ,, प्रो० धर्मेन्द्रनाथजी शास्त्री
७ ,, पं० विजयशाकर जी
८ ,, ,, विनायकरावजी विद्यालकार
९ ,, ,, मिहिरचन्द्रजी धीमान
१० श्री प्रो० रामसिह जी एम० ए०
११ ,, चौ० देवराज जी
१२ ,, शिवचन्द्र जी
१३. ,, कु वर चॉदकरण जी शारदा
१४. ,, बा० ज्योतिस्वरूप जी
१५. ,, श्री प० धर्मदेव जी विद्यावाचस्पति
१६ श्री पं० मदन मोहन जी विद्यासागर
१७. श्री पं० देवव्रत जी धर्मेन्दु

धन विनियोग

(१) श्री ला० नारायणदत्तजी (सँयोजक)
(२) श्री प० इन्द्रजी विद्यावाचस्पति (३) श्री ला० देशबन्धुजी
(४) श्री ला० ज्ञानचन्दजी (५) श्री प० ज्ञानचन्द्रजी
(६) „ पं० गंगाप्रसादजी प्रधान सभा

रचा

(१) श्री पं० गगाप्रसादजी रिटायर्ड चीफ जज (२) श्री प्रो० इन्द्रजी विद्या-वाचस्पति (३) श्री० ला० देशबन्धुजी (४)पं० मिहिरचन्द्रजी धीमान
(५) श्री चौ० देशराजजी (६) श्री प० ज्ञानचन्द्रजी आर्य सेवक
(७) श्री राजा नारायणलालजी पित्ती (८) श्री ला० नारायणदत्तजी
(९) श्री पं० विनायकरावजी (१०) श्री पं० गोपदेवजी
(११) श्री ताराचन्द्रजी गाजरा।

८ सार्वदेशिक तथा बलिदान भवन

सभा के पास देहली में २ भवन सार्वदेशिक भवन और बलिदान भवन हैं। सार्वदेशिक भवन इस वर्ष भी ११०) मासिक किराये पर रहा। बलिदान भवन श्रद्धानन्द बाजार में सभा का कार्यालय स्थित है। भवन के नीचे की दो दुकानें ३५)-३५) मासिक किराये पर चढ़ी हैं। ५०) मासिक किराया सभा कार्यालय से लिया जाता है। सार्वदेशिक भवन के किराए से १३२०) की और बलिदान भवन के किराये से १४४०) की आय हुई। बलिदान भवन के म्युनि० टैक्स इत्यादि पर ५३८॥≡) व्यय हुआ तथा सार्वदेशिक भवन पर ४२॥≡) व्यय हुआ।

९ गाजियाबाद भूमि

गाजियाबाद में देहली से मेरठ और गाजियाबाद से मेरठ जाने वाली सड़कों के बीच में सभा की यह भूमि स्थित है। यह भूमि ४३ बीघे १८ बि० है। इस के क्रय करने में १०००) व्यय हुआ था।

१० श्रद्धानन्द नगरी भवन

श्रद्धानन्द नगरी देहली में इस सभान्तर्गत श्री दलितोद्धार सभा द्वारा निर्मित २ भवन हैं। (१) आर्य्य समाज मन्दिर (२) पाठशाला भवन। इन दोनों की लागत ६६६३) है यही बैलेंश शीट में अङ्कित है।

११ समयपुर पाठशाला

देहली के निकट ग्राम समयपुर में उपर्युक्त दलितोद्धार सभा के आधीन गत कई वर्षों से एक दलितोद्धार पाठशाला चल रही है। पाठशाला का व्यय डिस्ट्रिक्ट बोर्ड की २०) मासिक सहायता तथा पाठशाला की अपनी जमीन की आय से चलता है। पाठशाला के नाम ३० बीघे कच्ची जमीन तथा १३७०) की लागत के अपने भवन हैं। एक कुआ पाठशाला में और एक भूमि में बना हुआ है।

'सार्वदेशिक-पत्र'

'सार्वदेशिक' पत्र का सम्पादन सभा के स० मन्त्री प. धर्मदेव जी विद्यावाचस्पति करते रहे। विवरणान्तर्गत वर्ष में 'सार्वदेशिक' के निम्नलिखित ५ विशेषाङ्क प्रकाशित किए गए और पत्र को सब दृष्टियों से जनता के लिये उपयोगी और उच्च कोटि का मासिक बनाने का यत्न किया गया।

आर्य समाजाङ्क	(एप्रिल १९४३ में)	पृष्ठ सख्या	५०
सत्यार्थ-प्रकाशाङ्क (१)	सितम्बर १९४३ में	पृष्ठ संख्या	७४
,, (२)	अक्तूबर १९४३ में	पृष्ठ सख्या	४०
,, (३)	फर्वरी १९४४ में	,,	७२
श्री श्रद्धानन्द बलिदानाङ्क	(दिसम्बर १९४३ में)	,,	६२

यह प्रसन्नता की बात है कि आर्य जनता में 'सार्वदेशिक' के प्रति प्रेम बढ़ता जा रहा है जिसके परिणाम स्वरूप इसकी ग्राहक सख्या में वृद्धि होती आ रही है।

सभा का प्रचार कार्य

इस वर्ष निम्न प्रकार उपदेशक कार्य करते रहे हैं।

दक्षिण भारत	७
हैदराबाद	१४
उड़ीसा	२
संथाल परगना	३

दक्षिण भारत में निम्नलिखित उपदेशक कार्य करते रहे हैं—

(१) श्री पं० मदनमोहन जी विद्यासागर वेदालंकार — आन्ध्रप्रान्त

(२) श्री शिवचन्द्र जी (कुछ समय बाद उत्तर भारत में बुला लिए गए हैं) — तामिल नाड

(३) श्री आदि केशवालु जी ,,
(४) श्री डी० सुन्दर राज जी मैसूर कर्नाटक
(५) श्री आर० मजुनाथ जी दक्षिण
(६) श्री प० लक्ष्मण राव जी ओघले बम्बई महाराष्ट्र कनारा
(७) श्री साधु शिवप्रसाद जी मालाबार

आँध-प्रांत

इस वर्ष इस प्रचार का केन्द्र तेनाली (जिला गुन्टूर) रहा और पं० मदन-मोहन जी विद्यासागर वेदालंकार इसके अध्यक्ष रहे । प्रचार के अतिरिक्त आपने अनेक सम्मेलन करवाए और आपके प्रयत्न से सभा के नाम गनवरम के श्री बोले टी कृष्णम् नाम के एक वृद्ध सज्जन ने १५ हजार रुपये की लागत वाला २६ कमरों वाला एक बड़ा मकान २० हजार की कीमत की २० एकड़ भूमि वैदिक पाठशाला संचालनार्थ रजिस्टर्ड कराई गई। आपका प्रचार कार्य प्रशसनीय रहा ?

तामिलनाड प्रचार

इस वर्ष तामिल नाड में श्री प० शिवचन्द्र जी, (जिनका प्रचार क्षेत्र मदुरा था परन्तु उनको सभा ने उत्तर भारत में ही अन्य कार्यार्थ रोक लिया था,) और श्री आदि केशवालु जी तामिलनाड में कार्य करते रहे हैं। प्रमुख कार्य श्री आदि केशवालु जी द्वारा हुआ है ।

मद्रास बाढ़ के समय सेवा कार्य

आर्य समाज के दैनिक कार्यों के साथ २ मद्रास में अक्टूबर मास में अचानक जो बाढ़ आई उसमें श्री आदि केशवालु जी द्वारा आर्य समाज की ओर से सेवा कार्य किया गया। सैकड़ों लोगों की नावों द्वारा रक्षा की गई तथा लगभग ५००० व्यक्तियों को भोजन वितरण किया गया।

चेमूर प्रचार

अक्टूबर १९५४ से चेमूर ग्राम में विशेष रूप से प्रचार कार्य चल रहा है यहा एक प्राइमरी स्कूल और सन्ध्या क्लास चल रही है। बच्चों को पुस्तकें आदि मुफ्त दी जाती हैं।

यहां भी बाढ़ के समय झोपड़ियाँ डाल कर तथा भोजन द्वारा बाढ़ पीड़ितों की सहायता की गई।

शुद्धि कार्य

चेमूर के ३ ईसाई परिवारों की शुद्धि की गई जिनमें १५ व्यक्ति शुद्ध हुए।

दलितोद्धार कार्य

प्रचार कार्य के साथ २ दलितवर्ग में प्रचार का पूरा प्रबन्ध किया गया है क्योंकि ईसाई लोग हरिजनों में ही अपना प्रचार क्षेत्र बनाते हैं। यहाँ हरिजनों के लिये एक स्कूल खोलने का भी विचार हो रहा है।

साहित्य वितरण

जिन लोगों ने सन्ध्या क्लास समाप्त कर ली थी उन्हें सत्यार्थप्रकाश दिया गया साथ ही आर्य समाज के परिचयात्मक ट्रैक्ट बांटे गये।

महाराष्ट्र प्रचार

गत वर्षों की भांति महाराष्ट्र क्षेत्र में श्री लक्ष्मण राव जी ओघले कार्य कर रहे हैं। इनका प्रचार केन्द्र स्थान मादुगा है जहा से वे महाराष्ट्र और निजाम राज्य की मराठावाड़ी में प्रचार करते रहे हैं।

आर्य समाजें

इस क्षेत्र में इस वर्ष १५ आर्य समाजें हैं।

(१) पूना, (२) बम्बई, (३) खड़की, (४) कोल्हापुर, (५) सोलापुर, (६) येवला (७) नासिक, (८) भगूर, (९) करघण, (१०) अहमद नगर, (११) संगम नेर (१२) देवलाली, (१३) पार्ले, (१४) घाट कोपट।

शुद्धि कार्य

सभा के उपदेशक श्री प० लक्ष्मण राव जी ने १ मुसलमान और २ ईसाइयों की शुद्धि की। बम्बई प्रान्तीय शुद्धि सघ के सहयोग से भी शुद्धि कार्य हो रहा है जिसमें १९० शुद्धिया हुई हैं। शुद्धि संस्कार श्री प० लक्ष्मण राव जी द्वारा हुआ।

दलितोद्धार

प्रचार के समय महाराष्ट्र के दलित वर्ग में सभा के उपदेशक पं० लक्ष्मण राव जी ने कई विवाह संस्कार कराये।

साहित्य प्रकाशन

इस वर्ष कोई पुस्तक मंहगाई के कारण प्रकाशित नहीं हो सकी। किन्तु ४ ट्रैक्ट लिखे गये हैं।

धन संग्रह

वेद प्रचारार्थ १४७) एकत्र किया गया।

वैदिक संस्कार

४५ विवाह संस्कार, ३ नामकरण, २ मुंडन, ४ उपनयन संस्कार कराये कुल संस्कार सं० ५४ है।

साहित्य वितरण

इस वर्ष २०० सत्यार्थप्रकाश, १५० ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका तथा, मराठी ट्रेक्ट्स की ४००० प्रतिया वितरण की गईं।

कर्णाटक प्रचार

कर्नाटक प्रान्त में निम्नांकित २ प्रचारक कार्य करते रहे हैं।

(१) बी. डी सुन्दरराजजी (२) श्री आर० मजुनाथजी।

इस क्षेत्र में १६ समाजें स्थापित हो चुकी हैं, जिन्हें दृढ़ बनाने का प्रयत्न किया जा रहा है।

(१) श्री रामपुरम्, बंगलौर (२) बंगलौर छावनी (३) विश्वेश्वरपुरम् (४) नागरथ पेट बंगलौर (५) मैसूर (६) चन्न पटण (७) शिमोगा (८) तीर्थ हल्ली (९) चुंचन कुटे (१०) कार्कल (११) उडुपी (१२) हिरियडक (१३) मगलौर (१४) पुत्तूर (१५) हुबली (१६) कासरगोडि

इस क्षेत्र में पुरानी समाजों को दृढ़ करने के साथ साथ नई समाजें बनाने का यत्न जारी है। क्लोजपेट (मैसूर राज्य) में आर्य समाज की स्थापना की गई और उसकी ओर से धर्मार्थ औषधालय खोला गया जिससे सैंकड़ों गरीब लोगों ने लाभ उठाया।

शुद्धि-कार्य

इस वर्ष तोन्सेकेम्मंगु गाँव में ६ शुद्धिया हुईं तथा सैंकड़ों व्यक्तियों को ईसाई होने से बचाया गया।

दलितोद्धार कार्य

हर स्थान पर प्रचार करते हुए उपदेशकों द्वारा मौखिक और क्रियात्मकरूप से अस्पृश्यता निवारण पर बल दिया गया।

सार्वदेशिक पत्र के ग्राहक

श्री पं० आर० मंजुनाथजी के प्रयत्न से इस वर्ष १५ सार्वदेशिक के ग्राहक बनाये गये।

वेद-प्रचार फंड

आर्य समाज स्थापना दिवस फंड तथा संस्कारों के अवसर पर कुल १२५) श्री आर० मजुनाथजी द्वारा संग्रह किया गया।

वैदिक संस्कार

मजुनाथजी द्वारा १२ विविध संस्कार कराये गये।

नये सभासद

इस वर्ष लगभग २५ नये सभासद बनाए गए।

साहित्य-वितरण

२५० विविध भाषाओं के सत्यार्थ प्रकाश वितरण किए गए तथा अन्य पुस्तकें लगभग ४००० से अधिक दी गईं।

औषधि-वितरण

लगभग ५०० से ऊपर रोगियों को औषधि वितरण की गई। इस ओर श्री. डी सुन्दरराजजी की सेवायें सराहनीय हैं जिन्होंने प्लेग आदि के समय जनता की अच्छी सेवा की तथा अन्य सैकड़ों रोगियों को लाभ पहुँचाया।

द० भा० आर्य-प्रतिनिधि सभा से समाजों का संबंध

इस वर्ष कार्कल, मंगलौर तथा हिरीयडक समाजों का सम्बन्ध दक्षिण भारत आर्य-प्रतिनिधि सभा से कराया गया। अन्य समाजों का भी सम्बन्ध कराने का यत्न हो रहा है।

विविध

इस क्षेत्र में आर्य समाजों की अवस्था सुदृढ़ होती जा रही है और प्रचार की प्रगति सन्तोषजनक है।

उत्तर मालावार प्रचार

इस क्षेत्र में सभा के उपदेशक साधु शिवप्रसादजी कन्नानोर में केन्द्र बना कर कार्य कर रहे हैं। अब उन्होंने कालीकट में अपना केन्द्र बनाया है। यहीं एक

नई समाज बनाई हैं। साधुजी ने उत्तर और दक्षिण मालाबार, कोचीन और ट्रावनकोर रियासतों में वैदिक धर्म का प्रचार किया। थिया लोगों में इस वर्ष विशेष रूप से प्रचार किया गया।

श्रद्धानन्द अनाथालय

मालाबार में अकाल पीड़ितों की सहायता तथा अनाथ और असहायों की की रक्षा का कार्य महत्व पा रहा है। यहां श्रद्धानन्द हिन्दू अनाथालय की स्थापना की गई है।

गढ़वाल-प्रचार

सभा ने इस वर्ष गढ़वाल प्रचार कार्य यू पी आर्य प्रतिनिधि सभा के अधीन कर दिया है और उस कार्यार्थ आधा व्यय सभा सहायता रूप में देती है।

उड़ीसा-प्रचार

इस क्षेत्र में श्री स्वामी धर्म्मानन्दजी तथा प. रुद्रदेवजी शास्त्री प्रचार कार्य करते रहे हैं। इस वर्ष पटना स्टेट, सम्बलपुर जिला, नरसिंहपुर स्टेट तथा बरम्बा स्टेट में प्रचार किया गया।

आर्यसमाजें

सम्प्रति बालांगिर, पाटना तथा केनमुंडी, पारित मोरा तथा तेलिया में ५ समाजें स्थापित हो चुकी हैं। टिटिलागढ़ में भी प्रचार कार्य आरम्भ है।

शुद्धि-कार्य

यहाँ शुद्धि का कार्य धार्मिक परिस्थितियों पर निर्भर है। फिर भी इस दिशा में हमारे प्रचारक दृढ़ता से कार्य ले रहे हैं और प्रयत्न जारी है।

दलितोद्धार

प्रचार कार्य करते समय दलितों में भी प्रचार किया गया और मद्य मांस और अन्ततः मृत पशु मांस त्यागने पर बल दिया गया। बालानगिर में एक विद्यालय भी स्थापित किया गया है।

वेद-प्रचार-फंड

श्रावणी उपाकर्म के समय ५) एकत्रित हुए।

वैदिक-संस्कार

इस वर्ष ११ उपनयन, १ नामकरण, १ गृह-प्रतिष्ठा तथा १ विवाह-संस्कार वैदिक रीति से कराया गया।

सभासद बनाये

इस वर्ष आर्यसमाज के ६० नये सभासद् बनाये।

सार्वदेशिक के ग्राहक

१ ग्राहक बनाया।

साहित्य वितरण

सत्यार्थप्रकाश, संस्कार विधि, कर्तव्य दर्पण, उपनिषद् वैदिक सन्ध्या, वैदिक सत्संग, आदि छोटी-बड़ी पुस्तकें मिलाकर प्राय १५०-२०० तक वितरण हुई।

विधवा विवाह

पटना स्टेट में सर्व प्रथम १ विधवा का विवाह ब्राह्मण विधुर से कराया गया।

शास्त्रार्थ

साकार या निराकार ईश्वर और मृतक श्राद्ध विषय में शास्त्रार्थ किया गया।

मन्दिर निर्माणार्थ धन संग्रह

केनमुखी का आर्य समाज मन्दिर कच्चा बन गया है तथा बालागिर समाज मन्दिर के लिये ३०००) एकत्रित होचुका है।

केन्द्रीय आर्य धर्म रक्षा प्रचार

इस वर्ष में भी यू० पी में केन्द्रीय धर्म रक्षा समिति का कार्य चालू रहा इस कार्यार्थ श्री पं० धर्मदत्तजी, रघुवीरदत्तजी तथा चौ० गिरधारीलालजी प्रचार कार्य करते रहे।

प्रचार स्थान

इस वर्ष मेरठ, सहारनपुर, मुजफ्फरनगर, अलीगढ़, आगरा, एटा, पीली-भीत, नैनीताल, खेरी, लखीमपुर, मुरादाबाद बिजनौर आदि जिलों के लगभग २०० विविध स्थानों पर प्रचार कार्य होता रहा।

७६० सवर्ण १४०० हरिजनों के जनेऊ तथा चोटी की रक्षा की गई। ८८ सवर्ण तथा १८ हरिजनों को चोटी और जनेऊ पुनः धारण कराया गया।

संथाल प्रचार

गत वर्षों की भाँति संथाल प्रचार कार्य आर्य प्रतिनिधि सभा बिहार के निरीक्षण में होता रहा जिसे सभा इस कार्यार्थ व्यय का आधा भाग देती है। इस कार्य पर श्रीकृष्ण शर्मा, श्री पृथ्वीसिंह, सुदामा टोलकिया, नन्दलालजी, देवानन्द जी साहित्याचार्य, रामदेव, सुखदेवजी, आदि प्रचारक कार्य करते रहे हैं और वर्ष के अन्त में ३ उपदेशक कार्य कर रहे हैं।

प्रचार

प्रचार क्षेत्र जंगली जातियों में कथा तथा भजनों द्वारा हुआ।

हैदराबाद दक्षिण प्रचार

हैदराबाद सभा स्वतन्त्र रूप से अपना प्रचार कर रही है और यह सभा इस कार्यार्थ ३००) मासिक सहायता देती है।

हैदराबाद सभा के अधीन १४ उपदेशक विविध क्षेत्रों में कार्य कर रहे हैं।

इन उपदेशकों के प्रचार के फलस्वरूप लगभग १०० से ऊपर विविध वैदिक संस्कार गये और १२५ के लगभग नये आर्य सभासद बनाये गये।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, देहली।

आय व्यय चित्र

ता० १२।२।४३ से १२।२।४४ तक

आय

विविध दान ७८२।)॥
दान स्थापनादिवस १५३६।।=)
२३१८॥।=)॥ २३१८॥।=)॥

पंचमांश २४६८।)॥
दशांश २०३।=)
२६७१।।=)॥ २६७१।।=)॥

सूद व मकानों का किराया ४६२७=)४
सूद रक्षा निधि १०००)
दान आर्य वीर दल संगठन ७८६।।-)
दान केन्द्रीय आर्यधर्म रक्षा निधि
८३५।।)।
योग १२२४३)७

व्यय

सार्वदेशिक पत्र
कागज, छपाई तथा पोस्टेज
इत्यादि ३८८३।।)।
आय चंदा, विज्ञापन २६६९।।।)।
१२१३।।।) १२१३।।।)

वेतन उपमन्त्री सभा १५६३।।।)

कार्यालय
कार्यालय व्यय २४०६।।≡)।
घिसाई टाइपराइटर ४५)
२४५१।।≡)। २४५१।।≡)

प्रोवीडेंट फंड ३१८।-)।।।

जायदादके म्यूनिसिपल टैक्स,मरम्मतादि
बलिदान भवन ५३८॥≡)७
सार्वदेशिक भवन ४२।।≡)
५८१।=)७ ५८१।=)७

मार्ग व्यय अन्तरंग सदस्य २३०।।।-)॥

प्रचार व्यय
पुस्तक वितरण ७१)॥
केन्द्रीय आर्यधर्म रक्षा
निधि १०२३)।।।
लोहारू निधि ६।।≡)
प्रचार विस्तार १५४२।।=)।।।
२६४३।।≡) २६४३।।≡।)

संगठन व्यय
आर्य वीर दल २३५२)॥
वर्ष की बचत ८५७।।)।
योग १२२४३)७

योग १२२४३)७

(ह०) रघुनाथप्रसाद (ह०) इन्द्र विद्यावाचस्पति (ह०) गंगाप्रसाद एम ए. रिटा० चीफजज
एकाउन्टेंट मन्त्री प्रधान

चांदनी चौक, देहली
२१।३।४४

जगदीश प्रसाद एण्ड कम्पनी के लिये,
ह० जगदीशप्रसाद बी०ए०,बी०कॉम० (बम्बई)
जी० डी० ए० आर० ए०, आडीटर्स।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, देहली ।

शेष पत्र (बैलेंस शीट)

१२ । २ । १९५४ तक

आय—

स्थिर निधियाँ

देशदेशान्तर प्रचार ५०००० रु०
वेद प्रचार ५०००० रु०
स्टेट फंड ५०००० रु०
रक्षा २५००० रु०
सार्वदेशिक भवन २४५०० रु०
चन्द्रभानु वेदमित्र ५००० रु०
स्मारक निधि
गंगाप्रसाद गढ़वाल २००० रु०
प्रचार ट्रस्ट
२०६५०० रु०

विविध वेद प्रचार

शिवलाल वेद प्रचार ६५०)
ढोढाराम चूरामणि ५०१)
छोमामहतो सुन्दरदेवी १००)
१२५१)
२०७७५१) २०७७५१)

विशेष निधियाँ

दलितोद्धार ३००० रु०
सूद दलितोद्धार ३७५।≡)॥।
३३७५।≡)॥।
श्रद्धानन्द नगरी फंड ६६६३ रु०
१००३८।≡)॥।
दयानन्द आश्रम २२५० रु०
सूद दयानन्द आश्रम १७४॥।–)१
२४२४॥।–)१
१२४६३)१० १२४६३)१०

व्यय—

भूमि और इमारतें

सार्वदेशिक भवन, २४५०० रु०
बलिदान भवन २६२०० रु०
गाजियाबाद भूमि १०७३।–)
इमारत आर्य समाज
मन्दिर श्रद्धानन्द नगरी ३९१६ रु०
श्रद्धानंदनगरी पाठशाला २७४७)
भूमि सोलापुर मन्दिर ८९२२॥=)
६७३५८॥।≡) ६७३५८॥।≡)

टाइपराइटर तथा फर्नीचर

गत बैलेंसशीट के
अनुसार ४४५ रु०
घिसाई ४५ रु०
४०० रु०
फर्नीचर २९१७।≡)
३३१७।≡) ३३१७।≡)

स्थिर पुस्तकालय

८७४।=)

स्टेशनरी

१०)

विविध पेशगियाँ

देहली बिजली कं० ४८)
सेठ दीपचन्द्र कृष्णलाल
जी पोद्दार ३६६६॥=)॥
विविध ५५६४=)२
प्रान्तीय सभायें ६०५१)॥
१५३२९॥।–)२ १५३२९॥।–)२

किराया प्राप्तव्य ९९०)

रिलीफ निधियाँ

जनरल रिलीफ फण्ड ७५०० रु०
सूद „ रिलीफ फण्ड ६२९॥।≡)
८१२९॥।≡)
बंगाल रिलीफ फण्ड ८००४॥)॥
१६१३४।≡)॥ १६१३४।≡)॥

दक्षिण प्रचार निधियाँ

केशवार्य हाईस्कूल २५०००)
हैदराबाद मन्दिर ४९८३)
हैदराबाद शहीद फण्ड ३०१)
सोलापुर मन्दिर १५०००)
हैदराबाद अभियुक्त सहायता ४२७=)
विविध प्रचार फण्ड २८०३।।।)१
४८५१५=)१ ४८५१५=)१

विदेश प्रचार निधियाँ

सूद देशदेशान्तर
स्थिर प्रचार निधि ४९०२॥=)
अमेरिका प्रचार ४००९।=)११
सूद अमे० प्रचार ४१९॥-)११
(श्री कृष्ण पोद्दार)
४४८९ रु०
विविध १२७२ रु०
बिरला विदेश प्रचार निधि १३००० रु०
२३६०३॥=) २३६०३॥=)

पीपल बैंक ४९७७॥-)२
आर्य साहित्य मँडल अजमेर १० रु०
४९८७॥-)२ ४९८७॥-)२

ऋण सुरक्षित

पाटौदी हाउस ट्रस्ट ३४७७५ रु०
विविध ५०४०० रु०

चलत

आर्य अनाथालय, देहली २६५९।-)।
केशवार्य हाईस्कूल २५०००)
११२८३४।-)। ११२८३४।-)।

बिक्री की पुस्तकें

पुरानी पुस्तकें १४१९२।)॥
चन्द्रभानु वेदमित्र स्मारक निधि प्रकाशन ७०४९।≡)।।।
श्री नारायण स्वामी प्रकाशन निधि २०२७ रु०
२३२६८।।।)॥ २३२६८।।।)॥

ओरियेंटल जीवन बीमा कम्पनी १४२५-)

नकद तथा बैंकों में

पंजाब नेशनल बैंक ८०७९९≡)११
सेंट्रल बैंक देहली ३०९१२॥-)।
सेंट्रल बैंक सोलापुर ९९२≡)७
होम सेविंग पंजाब नेशनल बैंक ३२५।≡)७
११६०२९।।।)
श्री कोषाध्यक्ष जी के पास ५०९॥≡)
११६५३९।≡) ११६५३९।≡)

धार्मिक पुस्तक प्रचार निधि

पुस्तक प्रचार फंड १६६२४)

बचत श्री नारायणस्वामी पुस्तक प्रकाशन निधि २६।=)।।

मालखाता श्री नारायणस्वामी पुस्तक प्रकाशन निधि २०२७)

मालखाता श्री चन्द्रभानु वेद मित्र स्मारक निधि ६६२४)

आर्य साहित्य प्रकाशन निधि १०५२)

२६३५३।=)।। २६३५३।=)।।

उचन्त ४८४।।।)

विविध निधियाँ

दयानन्द समैपुर पाठशाला १८=)

शहीदी प्लेट ७०।–)।।।

टकारा निधि ३५३–)

गृहविहीन जाति रक्षा मडल ६१।)।

सार्वदेशिक आर्य सम्मेलन २८८१।–)

सत्यार्थप्रकाश निधि ६६।।=)

जनरल फंड २११७।≡)

६४६४≡)

इम्प्रेस्ट

सभा कार्यालय ८५०।।–)

श्री पं० रामनारायणजी मिश्र २००)

श्री चौ० जयदेवसिंह जी ३)

१०५३।।–) १०५३।।–)

आय व्यय खाता

गतवर्ष तक का अधिक २५०७।।≡)५

इस वर्ष का शेष ८५७।।)३

१६५०≡)२ १६५०≡)२

अमानतें

अमानत परोपकारिणी सभा मौरीशस	२९४)
अमानत आर्य प्रतिनिधि सभा ईस्ट अफ्रीका	१००)
अमानत आर्य प्रति० सभा हैदराबाद राज्य	४१५॥≡)॥
आर्य समाज टिहरी (सूद गंगाप्रसाद ट्रस्ट)	६०)
अमानत गुरुकुल काँगड़ी	१०)
चन्द्र प्रिन्टिंग प्रेस	३८२)।
विविध अमानतें	१०७७।≡)
अमानतें विविध व्यक्तियोंकी	११५१।।−)।।।
सभा के कर्मचारी	१००६।−)७
	४४९७≈)१
	१०९६१।−)१ १०९६१।−)१
स्टाफ प्रोवीडेंट फंड	३३७३)।
सर्व योग	३४९६३९।।।)।

सर्व योग ३४९६३९।।।)।

(ह०) गंगाप्रसाद एम० ए० चीफ जज रि०
प्रधान

(ह०) रघुनाथप्रसाद पाठक
एकाउन्टेन्ट

(ह०) इन्द्र विद्यावाचस्पति
मन्त्री

(ह०) नारायणदत्त
कोषाध्यक्ष

हमने सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के हिसाब की जाँच की और हम प्रमाणित करते हैं कि उपर्युक्त बैलेंस शीट और सयोजित आय और व्यय का ब्यौरा हिसाब के रजिस्टरों और अन्य कागजों के अनुसार जो हमको दिखलाये गये हैं, ठीक हैं। हमारी आज की लिखी रिपोर्ट पृथक् है।

जगदीश प्रसाद एन्ड कम्पनी के लिये,
ह० जगदीशप्रसाद, बी० ए०, बी० कौम० (बम्बई)
जी० डी० ए० आर० ए०
रजिस्टर्ड अकाउन्टेन्ट्स एण्ड आडीटर्स

चाँदनी चौक, देहली
२१ । ३ । ४४

कृतज्ञता प्रकाशन

मेरी धर्मपत्नी के निधन पर जिन मित्रों, परिचितों कृपालु महानुभावों और आर्य समाजों ने समवेदना सूचक विविध सन्देश भेजकर अपनी सहानुभूति और समवेदना का प्रकाश किया है, उन सबका मैं हृदय से आभारी हूँ। अपने जिज्ञासु सज्जनों की सूचना के लिए आगे की कुछ पंक्तियाँ लिखना आवश्यक समझता हूँ।

देवीजी लगभग ७ ८ मास तक रोग-शय्या पर रहीं। निधन से १ मास पूर्व ही हम उन्हें परमात्मा की इच्छा पर छोड़ चुके थे क्यों कि उसीकी इच्छा विजयी होनी थी और अन्त में वही विजयी हुई। हमें सन्तोष इतना ही है कि उनकी सेवा-परिचर्या और चिकित्सा में यथासभव कोई त्रुटि नहीं आने दी गई और उनका अन्त बड़ा शांतिपूर्ण रहा।

श्री परमानन्द जी का वध और आर्य जगत का कर्तव्य

अभी हाल ही में लाहौर नगर में सत्यार्थप्रकाश की रक्षार्थ श्री परमानन्द जी के बलिदान के विषय में कई समाजों ने सभा का निर्देश चाहा है। उन समाजों तथा अन्य समस्त समाजों और आर्य नरनारियों की सूचनार्थ निवेदन है कि सत्यार्थ-प्रकाशके सम्बन्ध में आर्य जगत् की नीति और वक्तव्य का निश्चय आर्य सम्मेलनमें हो चुका है। उसे पूर्ण करना हमारा परम धर्म है। ऐसी फुटकर घटनाए हमारे निश्चय को दृढ़ करने वाली होती हैं। प्रत्येक घटना से हमारी नीति में कोई उलट फेर आवश्यक नहीं है। श्री परमानन्दजी के बलिदान का यही उत्तर है कि:—

१. हम सत्यार्थप्रकाश की रक्षा के प्रण को और भी दृढ़ता से हृदय में धारण करें।
२ सत्यार्थप्रकाश का अधिकाधिक प्रचार करें।
३ सत्यार्थप्रकाश निधि को शीघ्र से शीघ्र पूर्ण करें।
४. सत्यार्थप्रकाश के स्वाध्याय को अपनी दिनचर्या का अग बनाए।

इन्द्र विद्यावाचस्पति
मन्त्री, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली।

उनकी बीमारी के कारण मुझे लगभग ३ मास तक सभा के कार्य्य से अनुपस्थित रहना पड़ा। इस अर्से में तथा इससे पूर्व भी सभाके मान्य अधिकारियों और मेरे सहकर्मियों का भाव बड़ा महानुभूतिपूर्ण रहा। मुझे प्रसन्नता है कि इस विषय में मुझे अवकाश इत्यादि किसी प्रकार की असुविधा नहीं हुई और मैं बड़ा निश्चिन्त रहा।

उनके निधन से मुझ पर एक बहुत बड़ी पारिवारिक उत्तरदायिता आगई है। परन्तु मैं इसे एक दैविक व्यवस्था मानता और सहष इसके सामने सिर झुकाता हू।

—रघुनाथप्रसाद पाठक

डाक्टर वेरियर एलविन् ने यह प्रेस वक्तव्य प्रकाशित किया है:—

छिडौरी तहसील के मूलनिवासियों के पास से जिला मन्डला के डिप्टी कमिश्नर के दफ्तर में सैकड़ों अर्जियाँ आ रहीं हैं, जिनमें यह लिखा रहता है कि मूलनिवासी लोग अपने हिन्दू धर्म से पूर्ववत् प्रेम करते हैं, और यह प्रार्थना रहती है कि ईसाई मिशनरियों को उनके गाँवों में स्कूल आदि न खोलने दिये जावें। क्योंकि सैकड़ों मूलनिवासियों को चकमा देकर, धमकी देकर, या रुपया से खरीदकर ईसाई बना डाला गया है और सीधे सादे भोले भाले गोंड़ लोग ठीक ही डरते हैं कि उनकी समूची समाज बिलकुल बुझ जाने के खतरे में है।

साधारण जन समाज का यह ख्याल मालूम होता है कि सिम्मौरा ट्रेनिंग स्कूल को ग्राट का कुछ अश बन्द कर दिये जाने पर मण्डला जिला में अब कोई विपत्ति बाकी नहीं रह गई। यह गलत फहमी है। रोमन कैथोलिक धर्म सस्था ससार की सबसे अधिक धनवान धर्म सस्था है और सरकारी दान की मोहताज नहीं है। तीस-तीस सुन्दर भवनों की शान से सिम्मौरा स्कूल चमक ही रहा है और बहुतों को धर्म च्युत करके ईसाई धर्म में दीक्षित कर ही रहा है। मिशनरियों के करीब एकसौ स्कूल हैं, जिनमें से कई को सरकार ने मान्यता दी है और सरकार ग्राट भी देती है और मिशनरी लोग सैकड़ों और स्कूल खोलने की तैयारी कर रहे हैं, अपोस्टोलिक प्रीफेक्चर मिशन के फ़ादर (धर्मगुरु) लोग, जो हालैंड के हैं, उस उत्साह और शक्ति से आबादी स्थापित कर रहे हैं, जो हर जगह डच साम्राज्य वादिता की वृद्धि की विशेषता है। मैं करीबन रोज यह सुनता हूँ कि मिशनरियों का नया केन्द्र खुला और नये-नये लोग धर्मभ्रष्ट किये गये। दस ही वष के अन्दर मण्डला जिला वास्तविक रूप से डच लोगों का उपनिवेश (कालोनी) हो जायगा। जी हा। वही मण्डला जिला जहा प्राचीन काल में ऋषि लोग रहते थे। जहा गोंड़ों की राजधानी का प्रतापसूर्य चमकता था, जिस जिला में पुण्य सलिला नर्मदा का उद्गमस्थान है वही मंडला जिला। और यह भी होगा कि लाखों मूलनिवासी कैथोलिक धर्म में दीक्षित होकर धर्म भ्रष्ट हो चुकेंगे।

सीधे-सादे और भोले देहातियों को अपनी शक्ति के अन्दर लाने के लिये मिशनरियों के तरीके बहुत सीधे और जोरदार हैं। पहिले तो मिशनरी लोग

कसम खाते हैं कि उनका इरादा धर्म भ्रष्ट करने का नहीं है, पर कुछ ही माह में देहाती लोग ' सीताराम" "जैरामजी" के अभिवादन के बदले "जय यीशु" का अभिवादन करने लगते हैं और जो आदमी -'जय यीशु" नहीं कहता उससे बात भी नहीं करते। अब तो बहुत से हिन्दू शिक्षकों को भी नौकरी में लगाने लगे हैं। तनख्वाह के लिये सदैव केवल शनिवार को ही बुलाते हैं जिससे दूसरे दिन रविवार को गिरजाघर में हाजिरी हो ही जावे। एक शिक्षक ने मुझसे बयान किया कि जब वह हिन्दू, कैथोलिक मिशन के केन्द्र में पहुंचा तो उसको लाचार किया गया कि वह घुटना टेके अपना क्रूस बनावे, और "यीशु" का उच्चारण करे। मिशनरी लोग भोले भाले गोंडों के अगूठे के निशान ले लिया करते हैं और बाद में धमकाया करते कि ईसाईयों के धर्म का समर्थन न करने पर उन पर फौजदारी मुकदमा चलाया जायगा। गोंडों में आम तौर से वास्तविक में ऐसा आतंक छाया हुआ है कि मिशनरी लोग अवश्य पीटेंगे। एक मिशनरी प्रचारक ने मेरे एक कार्यकर्ता से इतना तक कह डाला कि यदि उस अभागे ने ईसाइयों के किंचित मात्र विरोध का साहस भी किया तो फादर खुद अपनी बन्दूक लाकर इसको खतम कर डालेंगे।

बीस वर्ष हुए सैकड़ों हजारों ग्रामीण ईसाई हो चुके थे। बाद में हिन्दू होकर, बहुत खर्च सहकर अपनी जाति में वापिस आये। अब इन अभागों का हाका किया जारहा है और उनको धमका कर मजबूर किया जारहा है कि वे फिर ईसाई हो जावें। एक ने तो फूट फूट कर रोते हुए मुझ से कहा कि बेर-बेर ईसाई होंना मेरे सामर्थ्य से बाहर है।

यह कितना घृणास्पद है !! कि ऐसे जमाने में जब कि धारा सभाओं के द्वारा जनता अपनी आवाज सुना सकने से लाचार है और वह भी पार्शली एक्सक्लुडेड एरिया में सीधे सादे भोले भाले मूलनिवासी के प्रति—जिसने अपने जन्म भर अपनी रक्षा के लिये माईबाप सरकार बहादुर का मुंह ताका है, उसको अब, इस प्रकार से अपनी आत्मा के उथल-पुथल में तथा आर्थिक उपद्रवों में पड़ना पड़े।

आखिर पार्शली एक्सक्लुडेड एरिया हैं किस मर्ज की दवा ? क्या इनका सृजन इसीलिये हुआ कि भारतीयों की राजनैतिक योग्यता का अपमान किया

जाय ? क्या इसीलिये कि लोगों को सदा के लिये फिसड्डी ही रखा जाय ? मैं अपने तईं ऐसा नहीं सोचता, मेरा अपना विश्वास है कि पार्लियामेंट ने मूलनिवासी के धर्म और संस्कृति की रक्षा के लिये पार्शली एक्सक्लुडड एरिया कायम किया और मेरा यह भी विश्वास है कि सभी प्रांतीय सरकारों का यह पवित्र धर्म है कि पार्लियामेंट की इस धरोहर को सुरक्षित रखें। उस धरोहर का यह बिलकुल मतलब नहीं कि मंडला जिला को डच उपनिवेश बना दिया जाय और वहां के गोंडों और बैगों को धर्म भ्रष्ट करने के लिये ही वशीभूत किया जाय। मैं मध्यप्रांत की सरकार से जोर देकर कहता हूँ कि सन् १९३५ के गवर्नमेंट आफ इन्डिया एक्ट के पास होने के बाद, जिस मंडला जिला को पार्शली एक्सक्लुडड एरिया कायम किया, जितने भी मिशनरी द्वारा खोले गये स्कूल हैं वे सब स्कूल सरकारी कब्जे में ले लिये जावें और साथ ही सिम्फौरा ट्रेनिंग स्कूल को सरकार खरीद ले, सरकार ही चलावे और धर्म भ्रष्ट करने वाली किसी भी ईसाई संस्था को मंडला जिला में या किसी भी पार्शली एक्सक्लुडड एरिया में न घुसने दिया जाय।

मंडला की दशा के बारे में शीघ्र ही हाउस आफ कामन्स में प्रश्न पूछे जाने वाले हैं, और तब तक यह जरूरी है कि प्रत्येक भारतीय नेता इस प्रश्न पर हर जगह अपनी आवाज बुलन्द करें। मंडला का प्रश्न समूचे भारत का प्रश्न होना चाहिये। यहां की समस्या से प्रत्येक प्रांतीय सरकार के दिमाग में यह बात ठोंक दी जानी चाहिये कि पार्शली एक्सक्लुडड एरियाओं के प्रति उन प्रान्तीय सरकारों की कोई जिम्मेदारी है, और सबसे पहिली जिम्मेदारी यह है कि इन पार्शली एक्सक्लुडड एरिया में इन धर्म भ्रष्ट करने वालों को कदम ही न रखने दिया जावे। जब तक मिशनरी लोग वापिस नहीं चले जाते तब तक जनता को दम नहीं लेना चाहिये। बहादुर मित्रराष्ट्र हालैंड के शौर्य का अभिनन्दन करते हुए भी इस बात पर खूब जोर दिया जाना चाहिये कि हालैंड के कैथोलिक उपनिवेशकों का कोई भी सम्भाविक नैतिक कानूनी अथवा राजनैतिक अधिकार नहीं है कि मंडला जिला पर अपना अस्तित्व लादें और इसका तो सवाल पैदा नहीं होता कि वे यहां के निवासियों के धर्म और चाल ढाल के बीच में कूदें अथवा देश के शासन में सिर घुसेड़ने का दावा करें।

नोटः—सार्वदेशिक सभा, आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य प्रदेश के परामर्श से इस विषय में अपने कर्तव्य का निश्चय कर रही है। —सम्पादक

आर्य कुमार जगत्

विज्ञप्ति

श्रीमान् महोदय !

आजकल भारत में प्रचलित शिक्षा-प्रणाली के विषय में यह एक साधारण शिकायत और अनुभव है ही कि इसमें धर्म-प्रचार और सदाचार को कोई स्थान नहीं है। परन्तु जब हम यह देखते है कि आर्य और हिन्दू-शिक्षण-संस्थाओं से पढ़कर निकले हुए छात्र भी अपने भारतीय साहित्य और धार्मिक-ग्रन्थों के विषय में सर्वथा नाममात्र का ही ज्ञान रखते हैं और पूर्णतया पश्चिमी रंग में रंगे हुए हैं, तो निःसन्देह प्रत्येक जाति-प्रेमी के हृदय को गहरा दुःख होता है। भारतवर्षीय आर्यकुमार-परिषद् ने इस ओर एक महत्वपूर्ण क़दम उठाया है, जिसका परिचय आप इन पृष्ठों में पायेंगे। एक आर्य के नाते हम आपसे प्रार्थना करते हैं कि इसको सफल बनाने में योग दीजिये।

परीक्षाओं का विस्तार

भारतवर्षीय आर्य कुमार-परिषद् की ओर से प्रतिवर्ष देश के अनेक केन्द्रों में धार्मिक परीक्षाओं का संगठन किया जाता है ? जिनका एकमात्र उद्देश्य विशेषत: आर्य कुमार व कुमारियों को उस साधारण शिक्षण के साथ-साथ जो वह स्कूल आदि में ले रहे हैं वैदिक साहित्य व आर्ष ग्रन्थों से परिचय तथा ज्ञान कराना और साधारणतया सभी परीक्षा देने वाले आबाल वृद्ध स्त्री-पुरुषों को स्वाध्याय के मंगल-पथ का पथिक बनाना और उन्हें आर्य समाज की ओर आकर्षित करना है।

ये परीक्षायें पिछले २८-२९ वर्षों से प्रचलित हैं और सहस्रों आर्यजनों ने इनसे लाभ उठाया है। उत्तर तथा दक्षिण भारत के प्रायः सभी प्रमुख स्थानों में इनके केन्द्र स्थापित हो चुके हैं। आवश्यकता इस बात की है कि प्रत्येक छोटे-बड़े स्थान में जहां इन परीक्षाओं के केन्द्र नहीं हैं शीघ्र से शीघ्र केन्द्र स्थापित हो जाय। यदि शिक्षण-संस्थाओं के संचालक, आर्य समाजें, कुमार-सभायें और अन्य हिन्दू संस्थायें इधर ध्यान दें और इन परीक्षाओं को लोकप्रिय बनाने की कृपा करें तो बिना किसी स्वतन्त्र प्रबन्ध और अतिरिक्त व्यय के अपने बालकों को वैदिक संस्कृति और साहित्य का परिचय कराने के उद्देश्य को पूरा कर सकते हैं।

इससे लाभ ?

हमसे यह प्रायः पूछा जा रहा है कि इन परीक्षाओं के उत्तीर्ण करने का लाभ क्या है ? इस सम्बन्ध में हम यही बता देना चाहते हैं कि आर्य सामाजिक क्षेत्र में यदि कहीं कार्य करने का अवसर आता है तो परिषद् की इन परीक्षाओं को उत्तीर्ण करने वालों को उसमें विशेषता दी जाती है। कुछ आर्य-कन्या-पाठशालाये तथा विद्यालय इन परीक्षाओं को अपनी पाठविधि का आवश्यक अङ्ग बना चुके हैं। मध्य-प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, सिन्ध-सभा तथा कुछ अन्य प्रतिनिधि-सभाओं ने हमारी इन परीक्षाओं को अपने सारे प्रान्त के लिए स्वीकृत कर लिया है। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने भी इनको स्वीकृत तथा प्रचलित करने का आश्वासन दिया है।

वर्तमान कार्यक्रम

इस समय परिषद् की ओर से सिद्धान्त-सरोज, सिद्धान्त-रत्न, सिद्धान्त भास्कर तथा सिद्धान्त शास्त्री परीक्षाये चल रहीं है। इनमें से पहली परीक्षा विशेषतया छोटे बालक-बालिकाओं के लिए हैं, जिसको उत्तीर्ण करने के बाद वे अपने वैदिक साहित्य के पठन-पाठन में रुचि लेने लगते है। शेष तीन परीक्षाये अपेक्षाकृत योग्य विद्यार्थियों के लिए हैं। इन परीक्षाओं को उत्तीर्ण करने वाले व्यक्तियों को परिषद् की ओर से उपाधिपत्र और प्रथम द्वितीय तथा तृतीय आने वाले छात्रों को पुरस्कार आदि दिये जाते हैं। एक विशेष पुरस्कार प्रत्येक परीक्षा में लड़कियों में प्रथम आने वाली विद्यार्थिनी को भी दिया जाता है। यदि कुछ आर्य-सज्जन तथा समाजें अपने अपने केन्द्रों के छात्रों के लिए उपयुक्त पुरस्कार का प्रबन्ध करें तो परीक्षाओं की ओर आकर्षण बढ़ेगा।

आपका कर्तव्य

आप अपने क्षेत्र के प्रतिनिधि बनकर इस आर्य-सम्मेलन में आर्य जाति के जीवन-मरण के प्रश्न की गुत्थियां सुलझाने आये हैं। हमें यह बताने की आवश्यकता नहीं कि किसी भी जाति के बच्चे उसकी सबसे बड़ी सम्पत्ति हैं और राष्ट्रनिर्माण में उनके निर्माण का प्रश्न सबसे महत्वपूर्ण है। आप अपनी जाति के बच्चों के सदाचार निर्माण और आर्य-साहित्य के इस प्रचार-यज्ञ में अपना सहयोग दीजिये। यदि आपके यहां अभी तक इन परीक्षाओं का केन्द्र स्थापित नहीं

हुआ है तो आप कम-से कम दस छात्र तैयार करा कर शीघ्र से शीघ्र केन्द्र खुलवाये। यदि आपके यहा पहले से ही केन्द्र खुला हुआ है तो उसे अधिक-से-अधिक लोक-प्रिय बनाने का यत्न करें।

आशा है, आप हमारे इस निवेदन पर ध्यान देंगे और शीघ्र ही अपने यहा से अधिक-से-अधिक परीक्षार्थी इन परीक्षाओं में सम्मिलित करायेंगे।

नोट—परीक्षा-सम्बन्धी विस्तृत जानकारी निम्न पते से मिल सकती है।

निवेदक—

देवव्रत धर्मेन्दु, परीक्षामन्त्री

भारतवर्षीय आर्य कुमार परिषद्, दीवानहाल, देहली

दिल्ली प्रान्तीय आर्य-कुमार परिषद् का शानदार कार्य

देहली में ५ नवीन आर्यकुमार सभाओं को स्थापना

देहली प्रान्तीय आर्यकुमार परिषद् की सरक्षकता में ४ जून से ११ जून तक दिल्ली में आर्यकुमारों को सगठित करने और आर्यकुमार सभाओं की ओर आकर्षित करने के लिए 'आर्यकुमार सप्ताह' बड़ी शान से सफलता-पूर्वक मनाया गया। इस सिलसिले में तीमारपुर, पाटौदी हाऊस, दरियागज, मोर सराय, आर्य नगर, नयाबास, दीवानहाल, शाहदरा, सब्जीमडी, दिल्ली क्लाथ मिल और बाजार सीताराम में सभाये हुई जिनमें पूज्य प० रामचन्द्रजी देहलवी, श्री स्वामी ब्रह्मानद जी सरस्वती, श्री प० देवव्रतजी धर्मेन्दु, श्री प० धर्मवीरजी प्रेमी एम० ए०, श्री पं० कृष्णचन्द्रजी विद्यालंकार, प्रिंसिपल ईश्वरदासजी, लाला० रामगोपालजी, श्री विशम्भरदयालजी, श्री भगवतीप्रसादजी, मुन्शी फाज़िल, प० लक्ष्मीदत्तजी बी०ए० श्री पं० रामचन्द्रजी पुरोहित, श्री प्रेमसुखजी तथा स्वा० धर्मानन्दजी के भजन व भाषण हुए। आर्यकुमार सप्ताह सफलतापूर्वक समाप्त हुआ।

बिजनौर जिला आर्यकुमार परिषद्

विगत ८—९ जून को आर्यकुमार सभा नगीना के द्वितीय वार्षिकोत्सव के अवसर पर जिला आर्यकुमार परिषद् की स्थापना हो गई है। आगामी वर्ष के लिए निम्न अधिकारियों का चुनाव हुआ।

(१) श्री राजेन्द्रनाथ विद्यालकार—प्रधान
(२) ,, ईश्वरदयालजी आर्य—उपप्रधान
(३) ,, वीरेन्द्रकुमार आर्य (लाहोटी) मन्त्री
(४) ,, ज्ञानप्रकाश—उपमत्री
(५) ,, राजेन्द्रप्रकाश—कोषाध्यक्ष
(६) ,, मा० आनन्दीप्रकाश—निरीक्षक।

कार्यालय—नगीना में होगा।

दिल्ली प्रान्तीय आर्यकुमार परिषद् की कार्यकारिणी समिति की बैठक ता० ११-६-४४ को बाजार सीताराम में सायङ्काल ८ बजे से श्री पं० देवव्रतजी धर्मेन्दु की प्रधानता में हुई। जिसमें निम्न मुख्य २ निश्चय हुये —

१—परिषद् की आर्थिक दशा सुधारने के लिए, मन्त्री, कोषाध्यक्ष तथा श्री परमात्माशरणजी की एक धन-संग्रह समिति बनाई गई।

२—आगामी अगस्त मास पिक निक का कार्यक्रम ओखले में मनाने का निश्चय हुआ, जिसमें दिल्ली प्रान्त के आर्य कुमार सम्मिलित होंगे। श्री धर्मवीर जी प्रेमी एम० ए० संयोजक निश्चित हुए।

३—यह भी निश्चय हुआ कि श्री प्रेमीजी एक पुस्तक तैयार करें जिसमें कुमार उपयोगी लेख, वाद विवाद, बौद्धिक इत्यादि Out Lines हों।

४—आर्य कुमार नामक बैज छपवाये जाये।

४—दिल्ली प्रान्त मे हिन्दी भाषा का प्रचार करने के लिए श्री प० रामचन्द्र जी भारती के संयोजकत्व मे प्रचार समिति बनाई गई।

देवीदयाल मन्त्री

दिल्ली प्रान्तीय आर्य कुमार परिषद्

पाठविधि तथा आवेदन-पत्र मंगवाइये

भारतवर्षीय आर्य कुमार परिषद् की धार्मिक परीक्षाओं की पाठविधि तथा आवेदन-पत्र जिन सज्जनों को चाहिये वे शीघ्र ही कार्यालय को लिखे। कृपया पाठ विधि तथा आवेदनपत्र आवश्यकतानुसार ही मगाये क्योंकि कागज बहुत मंहगा तथा कठिनाई से प्राप्त हो रहा है। पत्र लिखते समय अपना पता साफ़ २ पढ़ने योग्य लिखना चाहिये। बहुत से सज्जन केवल इतना ही लिख देते हैं कि आवेदन पत्र भेज दीजिये। कृपया साथ यह भी लिखने का कष्ट करे कि किस २ परीक्षा के कितने २ आवेदन पत्र भेजे जावें।

दानी सज्जन ध्यान दें

भारतवर्षीय आर्य कुमार परिषद् की सिद्धान्त सरोज, सिद्धान्त रत्न, सिद्धान्त भास्कर तथा सिद्धान्त शास्त्री की धार्मिक परीक्षा में विगत २७ वर्षों से प्रचलित हैं। इन परीक्षाओं का एकमात्र उद्देश्य भारत के स्त्री-पुरुषों और नवयुवकों को अपना २ साधारण शिक्षण प्राप्त करते हुए, अपने प्राचीन वैदिक साहित्य से परिचित कराना और साधारणतया सभी परीक्षा देने वाले आबाल,

वृद्ध स्त्री पुरुषों को स्वाध्याय के पथ का पथिक बनाना है तथा उन्हें आर्य समाज की ओर आकर्षित करना है। परीक्षाओं के लगभग २०० केन्द्र भारत के प्रायः सभी मुख्य २ स्थानों में स्थापित हो चुके हैं। जिनसे प्रतिवर्ष ३-४ हजार परीक्षार्थी सम्मिलित होते हैं। कुछ आर्य कन्या पाठशालायें और विद्यालय इन परीक्षाओं को अपनी पाठ-विधि का आवश्यक अंग बना चुके हैं। युक्त प्रान्त और मध्यप्रान्त आर्य प्रतिनिधि सभा ने इन परीक्षाओं को सारे प्रान्त के लिए स्वीकार कर लिया है। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने भी इनको स्वीकृत और प्रचलित करने का आश्वासन दिया है। इन परीक्षाओं का शुल्क बहुत कम है जिससे केवल पत्र व्यवहार तथा प्रचारादि का ही कार्य होता है। हम परीक्षार्थियों मे एक नवीन उत्साह का सञ्चार करना चाहते हैं जिससे वे भी भविष्य में इनका प्रचार करें एक मात्र साधन उनको छात्रवृत्ति देना है। परीक्षाओं को इतनी आय नहीं जिससे यह हरिषद् इस कार्य कोकरे और परीक्षार्थियों को उपरोक्त साधन से परीक्षाओं की ओर आकर्षित कर सके अतः धर्म प्रेमी दानी सज्जनों से प्रार्थना है कि इन धार्मिक परीक्षाओं के अत्यधिक प्रचार के लिए कुछ न कुछ दान अथवा छात्रवृत्ति देने की कृपा करें। आशा है दानी सज्जन धर्म प्रेम से प्राप्ति होकर धम ग्रन्थों के स्वाध्याय के प्रचार के इस पवित्र यज्ञ में अवश्य हमारी सहायता करेंगे जिसके लिए हम उनके अत्यन्त आभारी होंगे। धन निम्न पते पर भेजें

देवव्रत धर्मेन्दु परीक्षामन्त्री
भारतीय आर्यकुमार परिषद् दिल्ली

भारतवर्षीय आर्यकुमार परिषद् की परीक्षायें

आर्य सार्वदेशिक सभा के प्रधान, हैदराबाद-सत्याग्रह के प्रधान नायक, आर्य-जगत् के प्रसिद्ध सन्यासी श्री महात्मा नारायणस्वामीजी महाराज लिखते हैं—

ये परीक्षायें कई वर्षों से सफलता के साथ चल रही हैं। जब से इस कार्य को श्री पं० देवव्रतजी धर्मेन्दु ने अपने हाथ में लिया हैं, तब से इन परीक्षाओं का स्वरूप और भी उन्नत होगया है। पाठविधि नये सिरे से बनाई गई है। उसमें उपयोगी ग्रन्थों के समावेश से इसकी उपयोगिता और भी बढ़ गई है। उनके नाम भी अच्छे रख दिए गए हैं। आशा है कि इनसे लोग अधिक-से-अधिक लाभ उठावेंगे।

—नारायणस्वामी

साहित्य समीक्षा

प्रार्थना-सुमन—लेखक और प्रकाशक श्री विश्वनाथजी एम० ए० सुपुत्र धर्मवीर म० राजपालजी सचालक आर्य पुस्तकालय अनारकली लाहौर मूल्य ॥)

इस पुस्तक में १४ वेदमन्त्रों को उद्धृत करके उनके आधार पर भक्ति भावना पूर्ण उत्तम प्रार्थनाए तथा हृदय के सरल उद्गार दिये गये हैं। प्रत्येक प्रार्थना के पश्चात् उसी भाव के सूचक उत्तम भजन भी दिये गये हैं। भूमिका में प्रार्थना के स्वरूप और आवश्यकता पर प्रकाश डाला गया है। सभी ईश्वर भक्तों के लिये यह पुस्तक विशेष उपयोगी सिद्ध होगी। इसके द्वारा आर्य समाज के भक्ति साहित्य में प्रशसनीय वृद्धि हुई है जिसकी बड़ी आवश्यकता है। पुस्तक में जो भजन दिये गये हैं वे जहा तक हमें ज्ञात है प्रायः अन्य कवियों के हैं उनके नामों का वा जिन ग्रन्थों मेंसे उद्धृत किये गये हैं उनका उल्लेख कर देना उचित था यदि वे लेखक की अपनी रचना नहीं। कागज छपाई आदि की दृष्टि से भी पुस्तक आकर्षक है।

शिवाजी—लेखक प. भीमसेनजी विद्यालकार प्रकाशक—राजपाल एन्ड सन्स अनारकली लाहौर मूल्य १॥)

प० भीमसेनजी विद्यालकार गुरुकुल कागड़ीके हिन्दीके सुयोग्य स्नातक हैं और अत्युत्तमलेखकहैं। आपने बड़ी रोचक शैली और ओजस्विनी भाषा में शिवाजी का जीवनचरित्र १४ अध्यायोंमें जनताके सम्मुख उपस्थित किया है इसमें केवल शिवाजी के जीवन की मुख्य २ घटनाओं का ही उल्लेख नहीं किया गया किन्तु साथ २ वीर भाव वर्धक जीवनोपयागिनी शिक्षाए भी बड़े प्रभावोत्पादक रूप में दी गई हैं। प्रत्येक देश और इतिहास प्रेमी के लिये यह पुस्तक पठन और मनन करने योग्य है।

"सत्यार्थ प्रकाश" विषयक २ उपयोगी ट्रैक्ट

सत्यार्थ प्रकाश पर विचार मूल्य ≈)
सत्यार्थ प्रकाश विषयक भ्रम ,,)॥

लेखक—प्रो० महेशप्रसादजी मौलवी आलिम फाजिल

मिलने का पता —

मैनेजर आलिम फाजिल बुक डिपो

११५ मुहतशिम गंज, इलाहाबाद

ये दोनों बडे उपयोगी ट्रैक्ट हैं जिनमें सुयोग्य लेखक ने सत्यार्थ प्रकाश क्यों बनाया गया ? क्या यह धर्म शास्त्र है वा नहीं ? क्या १३ वा और १४ वा समुल्लास ऋषि दयानन्द ने स्वय लिखा था वा नहीं इत्यादि बातों पर सप्रमाण विचार करते हुए महत्वपूर्ण निर्देश दिये हैं। इन दोनों ट्रैक्टों का आर्य समाजों को प्रचार करना चाहिये जिससे सत्यार्थप्रकाश विषयक कुछ भ्रम दूर हो सके।

—धर्मदेव विद्यावाचस्पति

वैदिक धर्म आर्यसमाज प्रश्नोत्तरी (तृतीय संस्करण)—

लेखक प०धर्मदेवजी सिद्धान्तालकार,विद्यावाचस्पति स०मं०सार्व० सभा दिल्ली मूल्य॥

प्रकाशक—म० राजपाल एन्ड सन्स सचालक आर्य पुस्तकालय अनारकली लाहौर।

इस छोटी सी पुस्तक में विद्वान् लेखक ने सरल, सुबोध और संक्षिप्त रीति से आर्य सिद्धान्तों का दिग्दर्शन कराया है, आर्य समाज के मुख्य मुख्य काम बतलाए हैं और आर्य वीरों की कीर्ति का सचित्र बखान किया है, पुस्तक लिखी गई है बच्चों के लिए परन्तु इसे प्रत्येक आर्य को अपने घर में रखना चाहिए। ईश्वर, वेद, वैदिक साहित्य, वर्ण-धर्म, आश्रम-धर्म, पच महायज्ञ और संस्कार—) इन सब ज्ञातव्य विषयों को इस पुस्तक में सप्रमाण भली भांति समझाया है पुस्तक सर्व प्रिय है क्योंकि इसके तीन सस्करण हो चुके हैं आशा है कि भविष्य में भी वह धर्म प्रचार में सहायक होगी और उसके द्वारा हमारे नवयुवक लोगों में स्वाध्याय और देश सेवा के भाव जागृत होंगे। रामनारायण मिश्र, काशी

आर्य-जगत

बलांगीर (उड़ीसा) आर्य-समाज मन्दिर की आधारशिला स्थापना

कल बलांगीर आर्य-समाज मन्दिर की आधार शिला रखी गई। पटना राज्य के प्रधान सचिव श्री गोपालचन्द्र जी ने सभापति का आसन अलंकृत किया था। प्रारम्भिक संगीत के बाद स्थानीय आर्यसमाज के उपसभापति राज्यरत्न श्री बलभद्र जी बहिदार ने, द्वापर युग के अन्तिम भाग में वैदिक धर्म के अन्दर कुसंस्कार किस प्रकार और क्यों प्रविष्ट हुए स्वामी दयानन्द जी ने आर्य समाज का प्रचार कब आरम्भ किया, इसका प्रचार उड़ीसा प्रान्त में क्यों आवश्यक है और गत २॥ साल में बलांगीर आर्यसमाज द्वारा (पटना राज्य) तथा संबलपुर जिले में कितने आर्यसमाज स्थापित हुए इत्यादि विषयों पर संक्षिप्त भाषण किया। तत्पश्चात मन्त्री श्री हरस्वरूप जी गुप्त ने दाताओं के नाम तथा दान परिमाण का ब्योरा उपस्थित सज्जनों के सम्मुख उपस्थित कर उदार दाताओं को धन्यवाद अर्पण किया था। तदनन्तर सभापति जी ने ऋषि दयानन्द की जीवनी, पञ्जाब आदि प्रान्तों में आर्य-समाज की उन्नति एवं अस्पृश्यता निवारणादि विषय पर सुचिन्तित अभिभाषण कर आर्य समाज के प्रधान, पटना राज्य के मुख्य न्यायाधीश, रा० साहब श्री मदन मोहन सेठ जी से आधारशिला स्थापन के लिये अनुरोध किया था। श्री मान्यवर सेठ जी ने वैदिक धर्म के पुनरुद्धार तथा अस्पृश्यता वर्जन द्वारा किस प्रकार हमारी उन्नति हो सकती है इस विषय का स्पष्ट वर्णन कर, मूल्य और राजस्व बिना मन्दिर के लिये भूमि प्रदान करने के कारण पटनाधीश के प्रति कृतज्ञता प्रकट की थी। तत्पश्चात सम्मिलित मन्त्रोच्चारण के साथ मन्दिर की आधारशिला रखी गई। शान्ति पाठ के बाद सभा भग्न हुई।

रुद्रदेव शास्त्री,
सिद्धान्त भूषण।

आर्य प्रतिनिधि सभा सिन्ध के कार्य सम्बन्धी नोट

सिन्धी सत्यार्थ प्रकाश—की छपवाई का कार्य शुरू होगया है। सिन्धी सत्यार्थ प्रकाश के लिये सभा की ओर से २० हजार की अपील की थी जिसमें

से लगभग ७ हजार दान प्राप्त हुआ है। आर्य जनता से अपील है कि वे शेष राशि भी शीघ्र पूरी करने की कृपा करें।

प्रचार कार्य

सक्खर समाज का जलसा बड़ी धूम धाम से मनाया गया। डा० सूर्य देव जी, पं० सुरेन्द्र शर्मा, पं० चन्द्रभानु, कर्मवीर जियालाल, प० रामचन्द्रजी के व्याख्यान और रेडियो सिंगर सेठी, प्रो० जगदीश भूषण आदि के मधुर भजन हुए।

सक्खर पुराणे में भी प्रचार किया गया प्रो० ताराचन्द, पं० चन्द्रभानु, प० जीवनराम, प्रो० भूषण आदि ने भाग लिया।

(३) गिरधारि आबाद में भी प्रचार किया गया। म० अमरसिंह, म० हंसराज, म० कृष्ण आदि ने प्रचार किया।

(४) नवाबशाह में प० सुरेन्द्र शर्मा, प्रो० ताराचन्द और म० हीरानन्द ने प्रचार किया।

(५) टंडो महमद खान में स्वामी ज्ञानानन्द महाराज की १½ महीने लगातार कथा और उपदेश हुवे।

(६) कराची में डा० सूर्य देव, कर्मवीर जियालाल जी आदि के व्याख्यान हुवे।

(७) खैरपुर नाथनशाह—प० सोमाहुति और प्रो० भूषण ने प्रचार कार्य किया। राधन में पं० सोमाहुति ने कन्या पाठशाला के खोलने का मुहूर्त किया।

प० अमरसिंह अभी देहरादून, देहली, मेरठ, मुजफ्फरनगर आदि से धन सचय करके आये हैं। उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश और सभा के वेद प्रचार फंड के लिये धन समह किया। वह फिर धन समह के लिये निकलने वाले हैं। जनता से प्रार्थना है कि उनकी पूरी सहायता करें।

बीकानेर राज्य में छोटी आयु के साधु न बनने के बारे में जो बिल पेश हुआ है उसके समथन के लिये भिन्न २ आर्य समाजों यथा गरीबाबाद, कराची, टंडो अल्हयार, खैरपुर नाथनशाह आदि ने प्रस्ताव पास किये।

जयपुर राज्य में धार्मिक सुधार के लिये पं० रामचन्द्र वीर ने जो उपवास किया है उसके बारे में सभा ने राजा साहब को तार किया है और आर्य समाज सक्खर, कराची आदि ने भी इस बारे में प्रस्ताव पास करके भेजे हैं।

सभा के मन्त्रीजी ने हिन्दू महासभा को कई पत्र लिखे हैं जिनमें सिन्ध में आर्य समाज को किन किन तकलीफों और असुविधाओं का सामना करना पड़ रहा है उनका वर्णन किया है और सभा से अपील की है कि वह धार्मिक स्वतन्त्रता की रक्षा के लिये सिन्ध सरकार को प्रेरणा करे। इसके अतिरिक्त आर्य सभ्यता की उन्नति के लिये कुछ विचार और प्रस्ताव भी सभा के सामने रखे गये।

सम्मेलन—सिन्ध प्रान्तीय आर्य सम्मेलन ३ अगस्त से ७ अगस्त तक मनाया जावेगा। प्रो० इन्द्र विद्यावाचस्पति ने सभापति बनना स्वीकार किया है।

सिन्ध—गुरुकुल मलीर—यह गुरुकुल जो मलीर में खुला था पर बीच में आर्थिक कारणों से बन्द हो गया था अब फिर उसको पुनर्जीवित करने का प्रयत्न किया जा रहा है। राजगुरु धुरेन्द्र शास्त्री जी इस सम्बन्ध में सिन्ध आए हुए हैं।

मन्त्री सभा

आर्य्य जनता से निवेदन

आर्य विद्वानों के अन्य धर्मावलम्बी सज्जनों से जितने भी शास्त्रार्थ हुए हैं वह सब छपे या लिखे जिन बन्धुओं के पास हों वह या तो उनकी एक १ प्रति या सूचना सेठ रामप्रताप जी मन्त्री आर्यसमाज साभर झील के पास भेजने की कृपा करें। इस सामग्री की अत्यन्त आवश्यकता है।

आवश्यकता

आर्य समाज सरदार पुरा जोधपुर को दो वानप्रस्थी महानुभावों की आवश्यकता है जो आर्य कन्या पाठशाला में शिक्षा तथा वैदिक धर्म का प्रचार कर सकें। उनके ठहरने तथा भोजन इत्यादि की व्यवस्था समाज की ओर से की जायगी आशा है कि वयोवृद्ध आर्यसज्जन इस पवित्र कार्य में सहयोग प्रदान करेंगे।

मन्त्री आर्य समाज सरदारपुरा
जोधपुर

आर्य सम्वत् आजकल याने वि० स० २००० जो बीत गया उस समय तक १९७२९४९०४४ लिखना मेरे जानते गलत है क्योंकि ऋगवेदादि भाष्य भूमिका के वेदोत्पत्ति विषय में श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज ने आर्य सवत् जो लिखा हैं उस में वि० स० २००० तक का हिसाब जोड़ देने से आर्य सवत् १९६०८५३०४४ ही होता है। स्वामी जी ने युग मन्वन्तरादि का हिसाब जो लिखा हैं उस हिसाब को फिर से जोड़ा जाता है तो उनका हिसाब एकदम ठीक है। स्वामी जी ने सत्यधर्म विचार पुस्तक में भी यही लिखा है जो ऋगवेदादि भाष्य भूमिका में लिखा है। इससे आर्य सवत् १९७२९४९०४४ लिखना जब तक स्वामी जी का लिखना अप्रमाणित नहीं हो जाता है तब तक ठीक नहीं है।

बसत शर्मा, मु० शिवनार
पो० मोकामा (पटना)

सम्पादकीय

मन्तव्य और आचरण में निन्दनीय विरोध—

अमृतसर के उत्साही आर्य श्री रघुनाथचन्द्रजी ने 'सम्पादक सार्वदेशिक' के नाम एक विस्तृत पत्र भेजा है जिसमें से निम्नलिखित वाक्यों की ओर हम पाठकों का ध्यान आकर्षित करना चाहते हैं। वे लिखते हैं—"आपकी सेवा में मैं पहले भी कई बार लिख चुका हूं कि मेरी मॉग हमारे उद्देश्य व लक्ष्य के सन्मुख अत्यन्त साधारण है। फिर यह माग व प्रार्थना मेरी नहीं आपका कर्त्तव्य है इसी के लिए आचार्य दयानन्द ने आर्यसमाज की स्थापना की थी। दूसरे मई के 'सार्वदेशिक' पत्र में आपका आर्यकुमार सम्मेलन गाजियाबाद के सभापति पद से भाषण पढ़ा। उसमें भी आपने आर्य की पहचान मन वाणी और कर्म से जो एक हो वह आर्य है और जो मन में कुछ वाणी में कुछ और कर्म में कुछ करता है उसको दस्यु बतलाया है और यह भी उस पत्र में उपदेश था कि विरोधी भी हमारा विश्वास करता था, ११ के मुकाबिले में एक आर्य के वचनों को आदर देना और उन वचनों पर बिना सकोच के श्रद्धा सहित फैसला देना उस युग में आर्यसमाज की विजय का साक्षात् प्रमाण था परन्तु आज क्या अवस्था है? हमने उन्नति की है या अवनति? आज ऋषि दयानन्द व हमारे प्रारम्भिक युग के त्यागी आर्यों की कृपा से हमारा क्षेत्र कितना विस्तृत हो चुका है और आज प्रचार व प्रसार के हमारे पास कितने विशाल साधन हैं परन्तु हमारी मनोवृत्ति के कारण अवस्था विपरीत है। . जिस युग में ऋषि ने प्रचार किया उस समय एक प्रतिशत देवियां भी हिन्दी नहीं जानती थीं, पुरुषों में भी आर्य-भाषा का प्रचार बहुत न्यून था। ऐसे समय में आचार्य ने अपने ग्रन्थ केवल आर्य भाषा में छपवा कर 'निन्दन्तु नीति निपुणाः' का श्लोक लिखकर हमारे सामने एक आदर्श उपस्थित किया और उस आदर्श पर चल कर मुट्ठी भर आर्यों ने हमारे लिए कण्टकाकीर्ण

मार्ग को किस प्रकार सुन्दर बनाकर निराशावादियों में आशावाद व जीवन का सचार किया और असम्भव को सम्भव करके दिखलाया परन्तु आज वही आर्य तथा आर्यसमाजें क्या हमारी शिरोमणि सार्वदेशिक सभा की साधारण आज्ञा को नहीं मान सकते ? यदि इस साधारण सुगम से कार्य को भी हमारी संस्थाएँ कार्य रूप में परिणित नहीं कर सकती तो उनसे यह आशा करना कि लेख व वाणी द्वारा आर्यावर्त में प्रचार करेंगे दुराशामात्र है" इत्यादि । उद्धरण कुछ लम्बा होगया है किन्तु उसे इसलिए दिया गया है ताकि पाठक महोदय उत्साही लेखक की आन्तरिक वेदना को अनुभव कर सकें। जिन मांगों का लेखक ने पत्रों में निर्देश किया है उनमें से मुख्य आर्य-भाषा (हिन्दी) में परस्पर पत्र-व्यवहार करना और पते लिखना, आर्य भाषा का अधिक से अधिक प्रचार, वैदिक आदर्शों के अनुसार अपने जीवन को बनाना, आर्य विद्यालयों तथा कन्या-पाठशालाओं में आर्यधर्म और संस्कृति तथा प्राचीन इतिहास विषयक भ्रमजनक ग्रन्थों को न पढ़ा कर धार्मिक शिक्षा देना, गोरक्षा आदि हैं जिनका गत वर्ष एक सम्पादकीय टिप्पणी में हम उल्लेख और समर्थन कर चुके हैं। हमारा सारी आर्य जनता से अनुरोध है कि वह अपने मन्तव्यों और आचरण के इस निन्दनीय विरोध को दूर करने का प्रयत्न करे जो आर्यसमाज की सच्ची उन्नति में सबसे अधिक बाधक है। जब तक आर्य अपने जीवनों को पूर्णतया सत्य और प्रेममय बनाकर मूर्ति पूजा, बाल-विवाह, जातिभेद, अस्पृश्यता, दहेज आदि की अवैदिक कुप्रथाओं से अपने को सर्वथा दूर नहीं करते तब तक केवल मौखिक व लिखित प्रचार का यथेष्ट प्रभाव नहीं पड़ सकता। अत. अपने वैयक्तिक, पारिवारिक और सामाजिक जीवन को वैदिक आदर्शों के अधिक से अधिक अनुकूल बनाने का यत्न करना प्रत्येक आर्य का कर्तव्य है। यही वास्तविक प्रचार का सच्चा साधन है।

हिन्दुओं द्वारा हिन्दी की शोचनीय उपेक्षा—

हिन्दी के प्रति सरकार के डाक-विभाग आदि की उपेक्षा की घोर निन्दा हम इन स्तम्भों में कई बार कर चुके हैं और इस विषयक आन्दोलन हम जारी रक्खेंगे जब तक हिन्दी के साथ पूरा न्याय पूर्ण व्यवहार न होगा किन्तु इसके साथ ही स्वयम् आर्य हिन्दु जनता की ओर से अनेक स्थानों पर जो उपेक्षापूर्ण व्यवहार आर्य भाषा तथा राष्ट्र भाषा हिन्दी के प्रति दिखाया जाता है उसे देख

कर हमारा चित्त अत्यन्त खिन्न होता है और ऐसी मनोवृत्ति का भी प्रबल विरोध करना हम अपना कर्तव्य समझते हैं। हाल ही में जम्मू की 'उषा' नामक पत्रिका में प्रकाशित एक लेख से हमें यह जानकर अत्यन्त आश्चर्य और दुःख हुआ है कि काश्मीर के हिन्दू प्राय अपना सारा कारोबार उर्दू में करते हैं, सरकार ने कचहरी में हिन्दी के समन जारी होने की आज्ञा दे रखी है और इस बात की पूर्ण स्वतन्त्रता है कि लोग चाहें तो अपने मुकद्दमे भी पेश कर सकते हैं परन्तु इसका प्रयोग एकाध बार छोड़ कर कभी नहीं किया गया। सन् १९४१ की जन गणना के अनुसार काश्मीर रियासत में ४४ पत्र पत्रिकाएं प्रकाशित होती हैं जिनमें से देवनागरी हिन्दी में छपने वाले पत्र केवल ३ हैं। शेष उर्दू में निकलने वाले ८० प्रतिशत तक पत्र हिन्दुओं द्वारा सम्पादित होते हैं। हिन्दी का कोई अच्छा प्रेस तक नहीं है।

अन्य भी अनेक स्थानों में स्वयं हिन्दुओं द्वारा हिन्दी की ऐसी निन्दनीय उपेक्षा के उदाहरण मिलते हैं। इस विषयक सरकार की नीति की निन्दा करने से कोई लाभ नहीं हो सकता जबतक हिन्दू स्वयम् अपनी मनोवृत्ति को परिवर्तित कर के आर्य धर्म और संस्कृति की रक्षा के लिये आर्य भाषा (हिन्दी) को अपनाना-अपना कर्तव्य न समझे। आर्य समाजों तथा सब आर्य संस्थाओं को इस विषय में आदर्श स्थापित करते हुए उत्साह पूर्ण कार्य करना चाहिये।

वर्तमान शास्त्रार्थ प्रणाली—

सत्य के ज्ञान और प्रसार के लिये शास्त्रार्थ का साधन रूप में प्रयोग चिरकाल से चला आ रहा है और यदि केवल सत्य जिज्ञासा और सत्य ग्रहण के भाव से प्रेरित होकर शास्त्रार्थ किये जाएं तो उनकी उपयोगिता से भी इन्कार नहीं किया जा सकता। स्वामी शङ्कराचार्य, श्री रामानुजाचार्य, श्री मध्वाचार्य आदि मध्यकाल के सभी आचार्यों और ऋषि दयानन्द आदि वर्तमान युग के धर्म सुधारकों ने शास्त्रार्थों द्वारा अपने मन्तव्य जनता के सामने रखकर बहुत कुछ सफलता प्राप्त की थी। आर्य समाज के धर्म प्रचार में भी शास्त्रार्थों का विशेष स्थान रहा है तथा अब भी ऐसे शास्त्रार्थ ईसाई मुसलमान आदि विधर्मियों और पौराणिक जैनी आदि भाइयों के साथ होते रहते हैं। जहां तक ईसाई मुसल्मान आदि आर्य-धर्म और संस्कृति के विरोधियों से शास्त्रार्थ का प्रश्न है आर्य धर्म और संस्कृति की रक्षा के

लिये उनकी अब भी बड़ी उपयोगिता है तथा शास्त्रार्थ महारथी माननीय श्री प० रामचन्द्र जी देहलवी के समान प्रेम तथा संयम पूर्वक ऐसे शास्त्रार्थ करने में हमें कोई आक्षेप की बात प्रतीत नहीं होती परन्तु पौराणिक तथा अन्य आर्य जाति के अन्तर्गत भाइयों को ललकार २ कर शास्त्रार्थ करना हमें वर्तमान परिस्थिति में जब कि आर्य सस्कृति पर चारों ओर से अनेक आघात किये जा रहे है विशेष लाभप्रद नहीं प्रतीत होता। इसका यह अर्थ नहीं कि हम पौराणिक वा जैनी आदि भाइयों की किसी भी बुद्धि विरुद्ध अवैदिक बात का समर्थन करें अथवा उसकी सर्वथा उपेक्षा करें किन्तु सयत भाषा मे ऐसी बातों की युक्तियुक्त समालोचना और शङ्का समाधानादि द्वारा जिज्ञासुओं के प्रश्नों का उत्तर देना चैलेञ्ज देकर किये गये शास्त्रार्थों की अपेक्षा अधिक अच्छा है। प्राय' देखने मे आता है कि अनेक पौराणिक पण्डित शास्त्रार्थों के अवसर पर अनुचित शब्दों का यहा तक कि गाली गलौच तक का प्रयोग करने में सकोच नहीं करते ऐसी अवस्था में सामान्य जनता की ऐसी विचित्र मनोवृत्ति बन जाती है कि वह दूसरे पक्ष से भी वैसे ही गाली गलौच की आशा करती है तथा ऐसा न करने पर उसका पूर्ण विजय नहीं मानती चाहे प्रमाणों और युक्तियों से उसने अपने पक्ष को कितनी ही अच्छी तरह पुष्ट क्यों न किया हो। ऐसी मनोवृत्ति को प्रोत्साहित करने तथा इस प्रकार गालीगलौच देने वालों के साथ शास्त्रार्थ करवा कर सुयोग्य आर्य विद्वानों का समय और शक्ति नष्ट करवाने में हमें कोई लाभ नहीं प्रतीत होता प्रत्युत इनसे हानिया अनेक हैं अत' ऐसों की उपेक्षा करना ही उचित है। अत्यन्त विशेष अवस्थाओं में विशेष परिस्थिति को ध्यान में रखकर यथोचित निश्चय किया जा सकता है। किसी भी अवस्था में गाली गलौच तथा परस्पर मनोमालिन्य बढ़ाने वाले शब्दों का प्रयोग शास्त्रार्थों में न करना चाहिये।

महात्मा गान्धी का महत्वपूर्ण पत्र-व्यवहार—

हाल ही में भारत सरकार ने ('Correspondence with Mr. Gandhi' August 1942 to April 1944) इस नाम से जगद् वन्द्य महात्मा गान्धी का अगस्त १९४२ से अप्रैल १९४४ तक का पत्र व्यवहार प्रकाशित करके जनता की दृष्टि से बड़ा उपयोगी कार्य किया है, चाहे उसका इसके प्रकाशित करने का उद्देश्य कुछ भी रहा हो। इस १२५ पृष्ठ की पुस्तक को ध्यानपूर्वक आद्योपान्त पढ़ने के पश्चात् हम इस परिणाम पर पहुंचे हैं कि भारत सरकार द्वारा गत वर्ष प्रकाशित

'Congress Responsibility for 1942 Disturbances' नामक पुस्तक में महात्मा गान्धी तथा कांग्रेस नेताओं को उनकी ८ अगस्त १९४२ की नज़रबन्दी के पश्चात् हुए उपद्रवों के लिये उत्तरदायी ठहराने का यत्न तथा अन्य आरोप सर्वथा अनुचित थे। महात्मा गान्धी जी का भारत सरकार के गृह विभाग के मन्त्री के नाम १५ जुलाई १९४३ को लिखा हुआ अतिविस्तृत पत्र जो परिशिष्टों सहित उक्त पुस्तक के ७८ पृष्ठों में प्रकाशित हुआ है और जिसमें उन्होंने अपना तथा कांग्रेस की कार्यकारिणी के अन्य सदस्यों का अहिंसा में पूर्ण विश्वास तथा जापानी आक्रमण की अवस्था में पूर्ण असहयोग का दृढ़ निश्चय प्रकट किया था अत्यधिक महत्वपूर्ण है। इसके "Violence was never contemplated by me or any Congress Leaders I had declared that if Congress-men indulged in an orgy of Violence, they might not find me alive in their midst" (P 69) को अर्थात् मैंने या अन्य कांग्रेस नेताओं ने कभी हिंसा का विचार न किया था। मैंने घोषणा की थी कि यदि कांग्रेस वादियों ने हिंसा प्रदर्शन किया तो वे मुझे जीवित न पाएंगे।

इत्यादि भाव पूर्ण शब्द अत्यन्त स्पष्ट हैं। महात्मा गान्धी जी ने इस पत्र में यहां तक लिखा था कि यदि सरकार कांग्रेस को उन उपद्रवों के लिये दोषी ठहराती है तो यह मामला निष्पक्षपात न्यायाधीशों (Tribunal) के सामने रखा जाए। महात्मा गान्धी का कथन यथार्थ प्रतीत होता है कि यदि सरकार उन्हें तथा अन्य कांग्रेस नेताओं को क़ैद न करती तो लोगों में उत्तेजना के परिणाम स्वरूप जो उपद्रव हुए वे भी न होते अत वे सरकार को उनके लिये उत्तर दायी ठहराते हैं। हमारे विचार में अब भी सरकार का कर्तव्य है कि सब कांग्रेस नेताओं को बन्धन मुक्त करके उन्हें परस्पर परामर्श करने और वर्तमान शोचनीय गत्यवरोध (Dead lock) दूर करने का अवसर दे। इस प्रकार अनिश्चित काल के लिये राष्ट्रीय नेताओं का कैद वा नजरबन्द रखना सर्वथा न्यायविरुद्ध प्रतीत होता है, विशेषत. जब सरकार किसी निष्पक्ष अदालत के सामने उन्हें दोषी प्रमाणित करने का बार २ कहने पर भी साहस नहीं कर सकी। २८ मार्च १९४४ के अपने पत्र में लार्ड वेवल ने महात्मा गांधी से सहयोग की अपील की थी जिसका ९ एप्रिल को उत्तर देते हुए महात्मा गाँधी ने ठीक ही लिखा था कि

'आपने अपने पत्र में वर्तमान शासन में कांग्रेस से सहयोग की अपील की है। मेरी सम्मति में इसके लिये दोनों पक्षों में समानता और पारस्परिक विश्वास होना आवश्यक है किन्तु समानता का अभाव है और सरकार का कांग्रेस के प्रति अविश्वास प्रत्येक बात में देखा जा सकता है।"

इस असमानता और अविश्वास की भावना को दूर करके (जो सरकार के म० गांधीजी के साथ पत्रव्यवहार में भी स्पष्ट दृष्टिगोचर होती है) यदि सरकार राष्ट्रीय नेताओं से सच्चे सहयोग की भावना दिखाए तो अब भी राजनैतिक परिस्थिति बहुत कुछ सुधर सकती है किन्तु खेद है कि अभी तक इस दिशा में कोई क़दम नहीं उठाया गया।

स्व० आचार्य प्रफुल्लचन्द्र राय का देहावसानः—

सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक शिरोमणि और देशभक्त श्री प्रफुल्ल चन्द्र राय का ८३ वर्ष की आयु में गत १६ जून को देहावसान हो गया यह जान कर हमें अत्यन्त दुःख हुआ। स्व० आचार्य राय आजन्म ब्रह्मचारी रहे। वैज्ञानिक जगत् में उन्होंने बड़ा उच्च स्थान पाया। The History of Ancient Indian Chemistry अथवा प्राचीन भारतीय रसायन शास्त्र का इतिहास लिखकर उन्होंने पाश्चात्य विद्वानों के इस विषयक भ्रम को दूर किया तथा बंगाल केमिकल वर्क्स की स्थापना करके देश की आर्थिक अवस्था को उन्नत किया। आचार्य राय निस्स्वार्थ सेवा सादगी और उच्च विचार के मूर्त स्वरूप थे तथा अपने शिष्यों के सन्मुख सदा यही उच्च आदर्श रखा करते थे। ऐसे सच्चे तपस्वी त्यागी वैज्ञानिक देश भक्त के देहावसान से भारतमाता को जो हानि पहुंची है उसकी शीघ्र पूर्ति होना कठिन है। दिवंगत पवित्र आत्मा के प्रति श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हैं और समस्त विद्यार्थियों और युवकों से उनके उच्च आदर्श का यथासम्भव अनुसरण करने का अनुरोध करते हैं।

आदर्श आर्य स्व० केदारनाथ जीः—

खेद की बात है कि पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा के भू० पू० मन्त्री, अत्यन्त उत्साही और कर्म वीर आर्य श्री केदार नाथ जी का गत मास ८१ वर्ष की आयु में लाहौर में देहान्त हो गया है। आपने आर्य समाज की बड़ी सेवा की थी। गुरुकुल चित्तौड़ के संस्थापक और आचार्य स्वामी व्रतानन्द जी आप के

ही सुपुत्र हैं। हम चाहते हैं कि आर्य समाज में स्व० केदारनाथ जी के समान उत्साही, कर्मवीर स्वाध्यायशील दृढ़ आर्यों की संख्या दिनदूनी रात चौगुनी होती रहे। स्व० केदारनाथ जी के समस्त परिवार के साथ हम हार्दिक समवेदना प्रकट करते हैं।

सत्यार्थ प्रकाश निधि और आर्यसमाज स्थापना निधिः—

सत्यार्थ प्रकाश निधि के लिये २ लाख रु० की जो अपील अखिल भारतीय आर्य सम्मेलन के अवसर पर की गई थी उसकी पूर्ति के लिये समस्त प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाए उत्साह पूर्वक प्रयत्न कर रही हैं। समस्त आर्य समाजों को इस विषयक पूर्ण सहयोग प्रदान करना चाहिये ताकि शीघ्र इस निधि के लिये उद्घोषित २ लाख रु० की पूर्ति होकर वह राशि सार्वदेशिक सभा कार्यालय में पहुच जाए और उसके द्वारा सत्यार्थ प्रकाश विषयक उत्तम साहित्य का भिन्न २ भाषाओं में प्रकाशन, उसका अधिकतम प्रचार तथा विविध आक्रमणों से (मुकद्दमों आदि के द्वारा) उसकी रक्षा का कार्य निश्चिन्तता से किया जा सके। हमारा विश्वास है कि सभी आर्य समाजें अपने इस विषयक कर्तव्य की पूर्ति में तत्परता दिखाएगी जिससे इस राशि की पूर्ति में विलम्ब न हो। साथ ही आर्य समाज स्थापना निधि का रु० जिन आर्य समाजों ने अब तक सार्वदेशिक सभा कार्यालय में नहीं भेजा उन्हें अतिशीघ्र यह रु० अब भी एकत्रित करके अथवा आर्य समाज के कोष से भेज देना चाहिये। आर्य समाज की अनुशासन प्रियता की परीक्षा ऐसी ही बातों से होती है इस लिये शिरोमणि सभा के आदेश और अपनी प्रतिज्ञा का बड़ी तत्परता से सब आर्य समाजों को पालन करना चाहिये। श्रावण पूर्णिमा इस वर्ष ४ अगस्त को पड़ेगी जब श्रावणी उपाकर्म के साथ सत्याग्रह स्मारक दिवस को उत्साह पूर्वक मनाकर इन दोनों निधियों की पूर्ति का प्रत्येक आर्य समाज को दृढ़ निश्चय करके उसे क्रियात्मक रूप देना चाहिये।

धर्मदेव विद्यावाचस्पति

दान सूची सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली

आर्य समाज स्थापना दिवस

५) आर्य स० रामनगर
८) आ० स० पूरनपुर पीलीभीत
५०) आ० स० हरदोई
१॥) श्री रामचरण लाल श्यामसुन्दर जी आर्य मोहम्मदी (खीरी ,
५) आर्य स० काठ (मुरादाबाद)
५) ,, ,, लश्कर ग्वालियर
१५।) ,, ,, हसनपुर (मुरादाबाद)
७५) आर्य प्रतिनिधि सभा बिहार द्वारा
२) ,, ,, ,, कटरा प्रयाग
१) श्री रामस्वरूप जी आर्य मोहम्मदी (खीरी)यू० पी०

१६७॥)
२७६।=) गत योग

४४४=)

जिन आर्य समाजों का भाग अप्राप्त है उन्हें वह शीघ्र से शीघ्र सभा कार्यालय में भेजकर अपने कर्तव्य और सभा के आदेश का पालन करना चाहिए । यद्यपि ऐसी समाजों को हम स्मरण पत्र भिजवा रहे हैं तथापि उनसे यह निवेदन कर देना आवश्यक समझते है कि इस दिवस का भाग प्रत्येक आर्य समाज से प्राप्त करने का निश्चय है अत उन्हें सभा की प्रेरणा वा स्मरण पत्रों का अवसर दिए बिना ही अपना भाग भिजवा देना चाहिए।

हम जानते हैं इन दिनों सत्यार्थप्रकाश निधि आदि के लिए समाजें धन संग्रह कर रही हैं फिर भी इस राशि के लिए कुछ न करना उचित नहीं है। सभा की एक मात्र स्थिर आय का यही एक साधन है। इसकी उपेक्षा करने से सभा के स्थिर कार्यों पर प्रभाव पड़ता है जो सभा और समाजों दोनों के लिए अवाञ्छनीय है। इस वर्ष हमें इस निधि में २०००) एकत्र करना है तब सभा के बजट की पूर्ति होगी। जिन समाजों ने इस दिवस के अवसर पर धन संग्रह न किया तो उन्हें अब प्रत्येक आर्य सदस्य और उसके परिवारके प्रत्येक सदस्यसे ।) प्रति सदस्यके हिसाब से संग्रह करके अथवा अपने कोष से भिजवाना चाहिए।

मंत्री
सार्वदेशिक सभा देहली।

दान सूची सत्यार्थप्रकाश निधि

मई ४४ के अन्त तक

पंजाब

१०) श्री गंगाराम जी आर्य समाज भदौड़ (पटियाला)
५) ला० गोपालदास जी आर्य समाज शुजाबाद मुल्तान
५) प्रधान आर्य समाज आशियाँ पेशावर
५) स्वामी बदल रामजी थाना निकामपुर
२५)

बिहार

५) मूलचन्द्र जी वर्मा पटना
१०) प्रेमसुख जी मोहनगंज (मैमनसिंह)
५००) आर्य प्रतिनिधि सभा बिहार द्वारा
५१५)

विविध

४०००।≈) आर्य सम्मेलन के अवसर पर
२) मामराज सिघानी
२) श्री जगदीश प्रसाद जी
४००४।≈)

४०००।≈)का विवरण इस प्रकार है—
२१) आनन्द प्रादर्श
२१) श्री मनोहरलालजी गाजियाबाद
११) ,, गोपालचन्द, नयाबास
११) बा० मनोहरलाल पिलखवा, मेरठ
५) डा० विद्याव्रत पिलखवा, मेरठ
१०) ला० अमीचन्दजी
१०) श्री कृष्णदत्त अत्री
२१) श्रीपूरणमल, मेरठ
१००) बृजमोहनलाल बजाज, रायपुर
५) श्री जगदीश
५) ऋषिराम, सूरजनगर जि०मुरादाबाद
१०) श्री गंगाराम वैद्य
१०) नत्थूसिंह
२) श्री छोटेलाल धीमान
५) ला० प्रसादीलाल आर्य, कल्यानपुर पो० अतरौली जि० अलीगढ़
१०) मिट्ठीलाल आर्य, काशियाबाद अलीगढ़
५) श्री भरतरामजी
५) गुप्तदान
५) आर्य समाज, मुबाली
१) श्री कन्हैयाजी
५) श्री रामकुमारजी
१०) श्री राजाराम
५) श्री मनोहरलालजी
२५) आर्य समाज, मंडावर
१०) मुसद्दीलाल,तुगलकाबाद
२५) बाबू ही० लछमनदास, पानीपत
१००) श्री मिट्ठनलालजी भार्गव अजमेर
१०१) आर्य समाज बनवाल, सरगोधा
२१) श्री रामशरण आर्य, आर्य समाज घघड़, जिला—गुजरावाला

५) श्री ओमप्रकाश
५) श्री किशनलाल मेरठ
२) श्री हीरालाल
८) आर्य समाज तेलीवाड़ा
१०) श्री राजाराम घासीराम
५) मन्दिर, पहाड़ी धीरज
१०) श्री रमारूप धर्मसैन
१००) भारत पेंट हाऊस चाँदनी चौक
५०) मास्टर वेदप्रकाश कमर्शल स्कूलदेहली
१०) माँगेराम
१०१) कृष्णकुमार S/o B.Baldeo
Harichandi Bldg Kolhapur
४४॥-)। कुमारी सोमलता
१०) सिद्धेशकुमारी
५०) आर्य समाज वरंगल (निजाम स्टेट)
१०१) ब्रह्मदेव शर्मा, लक्ष्मीनारायण शर्मा सत्यदेव शर्मा
१००) हनुमत राव
१०१) आर्य समाज आसनसोल
१०) मंगलसिंह
५१) जड़ामल यादराम लकड़ी वाले दिल्ली
१०१) दौलतराम ग्वालियर
१०१) देवीदयाल ब्रजलाल, मालिक कारखाना शर्बत फौलाद टोहाना
१५) ब्रह्मदेव शर्मा
१०१) स्त्री समाज, मेरठ
१०१) (Agra)
१००) कविराज हरनामदास लाहौर
२५)
१५) गुप्त
८) ,,
६) ,,
५) ,,
६) ,,
६) ,,
१) ,,
१) ,,
१) ,,
१७) ,,
१३) ,,
१२७) भील लोग
१००) रामनिवासजी भारती
१७१) ला० देवराज
१६३०।=)॥। बालटियों में से

४०००।=)

बालटियों के धन में १०) श्री मंगलसिंह ग्राम चिरोड़ी, डा० दौराला जि० मेरठ यू० पी० के भी थे।

देहली—

१०१) रामचन्द्र कृष्णचद्र साड़ी वाले परामदे की गली
२) खुशीरामजी, देहली
१००) ला० कैलाशचंद्रजी, काश्मीरी गेट
२) देवीदयालजी द्वारा
१) सूरजमल तेलीवाड़ा, देहली
५०) श्यामलालजी आर्य देहली
२५) ला कालिज के विद्यार्थी
१) सेंटस्टीफिंस कालेज के विद्यार्थी
५) सुमेरचद्रजी
१) कश्मीरीलालजी
५) छज्जूरामजी
५०) रामचंद्रजी
१००) आर्यसमाज देहली शाहदरा

४५१)

संयुक्तप्रान्त—

२५) मुशीराम आय अमरोहा(मुरादाबाद)
१०) ला० मुरारीलालजी स्वालेनगर जोहरा (पटियाला)
१) ला० नंदरामजी आर्य स्वालेनगर जोहरा (पटियाला)
५) कबूलसिंहजी नसीरपुर डा० मगलौर (सहारनपुर)
२) रामरूपसिंह अटल भानपुर
६) मत्री आ० स० काल्पी (जालौन)
५००) श्री शिवचद्र जी रईस सरायतरीन (मुरादाबाद)
१०१) मत्री आ० स० ग्वालियर
४६।=) मंत्राणी आ० स० नई बस्ती मुरादाबाद
२०॥=) कन्हैयालाल मोहनलाल पंसारी अनूपशहर
४) श्री कृपारामजी देहली शाहदरा
१) रामदेवी गुप्ता C/o वीरेन्द्र भारती ज्योति (मैनपुरी)
१०) विश्वनाथजी ईशापुर जौनपुर
५०) आ० स० हरदोई
२५) मत्री आ० स० अमरोहा
१०) मंत्री आ० स० ज्वालापुर

८२०)

हैदराबाद (दक्षिण)

५) धर्मपालजी आ० स० हिंगोली
२०) मंत्री आ० स० कलम्ब
५०) आर्यसमाज वारंगल (निज़ाम स्टेट)

७५)

मध्य प्रदेश

२) B R काशीलाल नागपुर
१०) आ० स० रेलवे स्टेशन बिलासपुर

१२)

बम्बई

१०) काकूबाई मानवाद
१०) गोर्धनदास मानवाद
५) गोविन्दजी मानवाद
१००) सेठ बिहारीलालजी कोषाध्यक्ष आ० भा० शोलापुर

१२५)

राजस्थान

११) आ० स० तोपखाना इन्दौर
१००) श्रीस्वामी चेतन्यदेव जी इंदौरसिटी
३०) आर्य मित्र सभा भोपाल

१४१)

मद्रास

५१) ला० जगन्नाथप्रसाद जी गुप्त मद्रास
५०) श्री इन्द्रसैन जी मद्रास

१०१)

बंगाल

५) रामसेवक शर्मा बिलासपुर (२४ परगना) सिंधी स०

५)

कुल योग ६२७४।=)

दान दाताओं को धन्यवाद

आर्य जनता जिस गति से आर्य सम्मेलन पर हुई सत्यार्थप्रकाश निधि की दो लाख की अपील का उत्तर दे रही है वह उत्साहवर्धक नहीं कही जा सकती। हमें आशा है कि जनता शीघ्र से शीघ्र इस दो लाख की धनराशि को पूरा कर देगी और यह राशि इस सभा के कोष में आजायगी। मंत्री सार्वदेशिक सभा

स्वाध्याय योग्य उत्तम साहित्य

श्री महात्मा नारायणस्वामी जी कृत

कतिपय ग्रन्थ

(१) मृत्यु और परलोक

शरीर, अन्तःकरण तथा जीव का स्वरूप और भेद, जीव और सृष्टि की उत्पत्ति का प्रकार, मृत्यु का स्वरूप तथा बाद की गति, मुक्ति और स्वर्ग नरक इत्यादि का स्वरूप, मुक्ति के साधन आदि आदि विषयों पर अद्भुत पुस्तक। मूल्य ।।=)

(२) उपनिषद् रहस्य

ईश, केन, कठ, मुंडक माण्डूक्य, ऐतरेय, बृहदारण्यक उपनिषदों की बहुत सुन्दर खोजपूर्ण और वैज्ञानिक व्याख्यायें।

मूल्य क्रमशः—

।=), ।-), =), =)।।, -)।, =)।, २)

अरबी के सुप्रसिद्ध विद्वान् शास्त्रार्थ महारथी

श्री प० रामचन्द्र जी देहलवी कृत

सत्यार्थ प्रकाश विषयक अत्युत्तम पुस्तकें—

(१) सत्यार्थप्रकाश के १४वें समुल्लास में उद्धृत कुरान की आयतों का देवनागरी में उल्था और उनका हिन्दी अनुवाद। मूल्य ।।)

(२) कुर्आन् में अन्य मतावलम्बियों के लिये कुछ अति कठोर उत्तेजक वाक्यों का संग्रह

हिन्दी अंग्रेजी अनुवाद सहित। प्रचारार्थ घटाया हुआ मूल्य ।=)

नोट,—उपर्युक्त पुस्तकें प्रत्येक आर्य के पास रहनी चाहियें।

मिलने का पताः—सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, देहली।

श्री पं० रघुनाथप्रसाद पाठक—पब्लिशर के लिये लाला सेवाराम चावला द्वारा "चन्द्र प्रिंटिङ्ग प्रेस", श्रद्धानन्द बाजार, देहली मे मुद्रित।

Regd No L 2121

सार्वदेशिक सभा पुस्तक भण्डार की उत्तमोत्तम पुस्तकें

(१) वैदिक सिद्धान्त सजिल्द १)
(२) यमपितृ परिचय २)
(३) अथर्ववेदीय चिकित्सा शास्त्र २)
(४) वेद में असित् शब्द -)॥
(५) ऋग् वेद में देवृकामा या देवकामा -)
(६) विदेशों में आर्य्य समाज ॥)
(७) दयानन्द सिद्धान्त भास्कर १।)
(८) आर्य्य सिद्धान्त विमर्श १॥)
(९) भजन भास्कर ॥)
(१०) समस्त आर्य्य समाजों की सूची ॥)
(११) सार्वदेशिक सभा का इतिहास अ० २), स० [illegible]
(१२) बलिदान ॥)
(१३) आर्य डायरेक्टरी अ० १।), स० १॥)
(१४) वैदिक सन्ध्या रहस्य =)॥
(१५) सत्यार्थ निर्णय १॥)
(१६) संस्कृत सत्यार्थप्रकाश (अजिल्द) ।)
(१७) इज़हारे हक़ीक़त (उर्दू में) [illegible]
(१८) नारायण स्वामीजी की आत्मकथा २)
(१९) मातृत्व की ओर अ० १।), स० १॥)
(२०) आर्य्य जीवन और गृहस्थ धर्म ।=)
(२१) आर्य वीर दल शिक्षण शिविर =)
(२२) आर्य समाज का इतिहास ॥
(२३) भक्ति कुसुमाञ्जलि ।॥)
(२४) विमान शास्त्र ।=)
(२५) वेद में दो बड़ी वैज्ञानिक शक्तियां १)
(२६) सत्यार्थ प्रकाश गान ।=)
(२७) बहिनों की बातें ।)
(२८) Agnihotra— २॥)
(२९) Crucifixion by an eyewitness ।-)
(३०) Truth and Vedas ।=)
(३१) Truth and rock of Aryan [illegible]ure ॥)
(३२) [illegible] Teachings १॥
(३३) [illegible] Arya Varta =)
(३४) [illegible]ity in India ।)
(३५) The Scope and Mission [illegible] Arya Samaj-Bound
(३६) Eclesia Divina-Bound ५)
(३७) Commentary on Ishopanishad ॥)
(३८) Kenopanishat (English) ।)
(३९) Daily paper of an [illegible]



१९४४ ई०
२००१ सं०

विषय-सूची

—:o:—

सार्वदेशिक का यह पत्र मँगाने के लिये ।=) का टिकट भेजना जरूरी है।

॥ ओ३म् ॥

सार्वदेशिक

* सार्वदेशिक-आर्य-प्रतिनिधि सभा देहली का मासिक मुख-पत्र *

वर्ष २० } अगस्त १९४४ ई०] श्रावन, २००१ [दयानन्दाब्द १२१ { अङ्क ६

* वैदिक प्रार्थना

ओ३म् वावृधानस्य ते वयं विश्वाधनानि जिग्युषः ।
ऊतिमिन्द्रावृणीमहे ॥ ऋ० ८। १४। ६

शब्दार्थ—हे (इन्द्र) परमैश्वर्य युक्त प्रभो। हम (वावृधानस्य) सब तरह से हमें उन्नत करने वाले (विश्वा धनानि जिग्युषः) सब प्रकार के प्राकृतिक और दिव्य धनों को प्राप्त कराने वाले (ते) तेरे (ऊतिम्) संरक्षण, प्रेम और ज्ञान को (आवृणीमहे) सब ओर से वरण करते हैं—चाहते हैं।

विनय—हे समस्त संसार के स्वामिन् परमेश्वर। हम सब आपके भक्त आप की शरण में आते हैं। आप की कृपा से ही हमारी शारीरिक मानसिक और आत्मिक उन्नति हो सकती है अत हमें वस्तुत सब प्रकार से उन्नत करनेवाले आप ही हैं। प्राकृतिक धन के अतिरिक्त विद्या तथा निर्भयता चित्त शुद्धि, ज्ञान और योग का समन्वय, दान, दम, दया, यज्ञ, स्वाध्याय, अहिंसा, सत्य, अक्रोध, सरलता अक्षोभ, प्रेम, निरभिमानिता आदि दिव्य सम्पत्ति को प्राप्त कराने वाले आप ही हैं इसलिये हम आपकी रक्षा, प्रेम और ज्ञान की सदा चारों ओर से कामना करते हैं। आप अपना प्रेम और ज्ञान प्रदान कर हमें अनुगृहीत कीजिये ॥

वैदिक सुभाषितामृत

['सार्वदेशिक' के सर्व साधारण पाठकों विशेषतः कुमार कुमारियों के लाभार्थ हम यथा समय इस स्तम्भ के नीचे कुछ ऐसे वैदिक सुभाषितों को देते रहेंगे जिनको बड़ी सुगमता से स्मरण किया जा सके और जिन पर मनन और आचरण विशेष रूप से लाभप्रद हो—सम्पादक सा० दे०]

(१) त्वम् अग्ने प्रमतिस्त्वं पितासि नः ॥ ऋ० १ । ३१ । १०

हे (अग्ने) प्रकाशस्वरूप परमेश्वर (त्वं प्रमतिः) तू सर्वज्ञ है (त्वम्) तू (नः) हमारा (पिता असि) पिता है।

(२) सखायस्ते शिवतमाः स्याम ॥ ऋ० १ । ५३ । ११

हे परमात्मन् हम (ते) तेरे (शिवतमाः) सब का अत्यन्त कल्याण करने वाले (सखाय स्याम) मित्र हों।

(३) इन्द्रं तम् अह्वे स्वपस्यया धिया ॥ ऋ० १ । ५२ । ३

मैं भक्त (स्वपस्यया धिया) उत्तम कर्म युक्त बुद्धि से (तम् इन्द्रम्) उस परमैश्वर्य सम्पन्न भगवान् को (अह्वे) पुकारता हूं—मन मन्दिर में उसका आह्वान करता हूं।

(४) नमस्या दैव्यं जनम् ॥ ऋ० १ । ४४ । ६

हे मनुष्य तू (दैव्यं जनम्) दिव्य गुण युक्त सत्यनिष्ठ विद्वान् मनुष्य को (नमस्य) सदा नमस्कार कर सत्य निष्ठ विद्वानों का सदा आदर कर।

(५) एको दाधार भुवनानि विश्वा ॥ ऋ० १ । १५४ । ४

वह (एक) एक परमेश्वर (विश्वा भुवनानि) सब लोकलोकान्तरों को (दाधार) धारण करता है।

(६) सं नः सृज सुमत्या वाजवत्या ॥ ऋ० १ । ३१ । १८

हे प्रभो (न) हमें (वाजवत्या) ज्ञान युक्त (सुमत्या) उत्तम बुद्धि से (सं सृज) संयुक्त करो।

(७) कृधी न ऊर्ध्वाञ्चरथाय जीवसे ॥ ऋ० १ । ३६ । १४

हे परमात्मन् ! (नः) हमें (चरथाय) संसार में सुखपूर्वक विचरने और (जीवसे) उत्तम जीवन व्यतीत करने के लिये (ऊर्ध्वान् कृधि) उन्नत करो।

(८) महस्ते विष्णो सुमतिं भजामहे ॥ ऋ० १ । १५६ । ३

हे (विष्णो) सर्वव्यापक परमात्मन् (महः ते) अत्यन्त महान् तेरी (सुमतिम्) उत्तम बुद्धि वा ज्ञान को हम (भजामहे) सदा सेवन करते हैं।

(९) विश्वाप भूतु दुर्मतिः ॥ ऋ० १ । ३१ । ७

(विश्वा) सारी (दुर्मति) दुष्ट बुद्धि (अपभूतु) हम से दूर हो जाए। किसी प्रकार का दुष्ट विचार हमारे अन्दर न रहे।

(१०) भद्रं भद्रं क्रतुमस्मासु धेहि ॥ १ । १२। ३ १३

हे प्रभो (अस्मासु) हमारे में (भद्र भद्र क्रतुम्) सुख और कल्याणमय उत्तम संकल्प, ज्ञान और कर्म को (धेहि) धारण कराओ ॥ ध० दे०

❋ अध्यात्मसुधा ❋

प्रणव गीत

१ हर्ष से उभारता, हर एक मेरा रोम रोम।
प्राण से बढ़ करके प्यारा, है मेरा यह ओ३म् ओ३म् ॥
२ मस्त हो दिन रात मा के, गीत गाता जाऊंगा।
प्रेम भवि मङ्गलमयी है, मातु मेरी ओ३म् ओ३म् ॥
३ सोम है आनन्द देता, ज्यों निशा में लोक को।
शाश्वतानन्दप्रदाता
सोम का भी सोम ओ३म् ॥
४ शोक सङ्कट को मिटावे. शान्ति सुख आनन्द दे।
पत्थरों को भी करे यह, मोम मेरा ओ३म् ओ३म् ॥ "ध्रुव"

आर्य वीर दलों का वर्त्तमान कार्यक्रम

लेखक—[श्री प० इन्द्र जी विद्यावाचस्पति मन्त्री अ० भा० आर्य वीरदल समिति]

इससे पूर्व के लेखों में मैं आर्य वीरों के जानने योग्य बहुत सी आवश्यक बातें लिख चुका हू। जिन मूल सिद्धान्तों पर आर्य वीर दल की स्थापना हुई है, उन पर काफ़ी प्रकाश डाला जा चुका है। अन्य अनेक स्वयं सेवक दलों के रहते हुए आर्य वीर दल की आवश्यकता क्यों हुई। इस प्रश्न का उत्तर भी मैं पूर्व लेखों में दे चुका हू। इस लेख में उपसहार के तौर पर मैं आर्य वीर दलों के वर्तमान कार्यक्रम का निर्देश करना चाहता हूँ।

पूर्व लेखों में यह बात स्पष्ट की जा चुकी है कि आर्य वीर दल एक कर्मण्य संस्था है। उसका उद्देश्य कार्य द्वारा शिक्षण है, केवल शिक्षण नहीं। उसे हम एक कारीगरी के स्कूल से उपमा दे सकते हैं। उसमें प्रत्येक प्रकार की शिक्षा व्यावहारिक होनी चाहिये। ऐसी अनेक सस्थायें विद्यमान हैं, जो स्वय सेवक तैयार करने तक अपने कर्तव्य की इतिश्री समझती हैं। उनकी तैयार की हुई स्वय सेवक सेना उस तलवार की तरह है, जिसे बनाकर और माँज कर बैठक में लटका दिया जाता है। हो सकता है वह लम्बी और चमकदार हो, परन्तु प्रतिदिन काम में न न आने से यह भी संभव है कि आवश्यकता पड़ने पर वह कमजोर या खुंडी साबित हो। आर्य वीर दल को ऐसी तलवार बनाना अभीष्ट है, जो चाहे आकार में छोटी हो, परन्तु रात दिन व्यवहार में आने के कारण सदा कार्य के लिये तैयार रहे, और परीक्षा में उत्तीर्ण हो चुकी हो।

आर्य वीर दल का कार्य दो भागों में बाटा गया है, एक सेवा और दूसरी रक्षा। कुछ लोग सेवा और रक्षा के भावों को परस्पर विरोधी समझते हैं। आर्य वीर दल के कुछेक कार्यकर्ता तक यह आपत्ति उठाते सुने गये हैं कि आर्य वीर क्षत्रिय हैं, इस कारण सेवा करना उसका कार्य नहीं। प्रतीत होता है कि ऐसे सज्जन सेवा और रक्षा इन दोनों शब्दों के ठोक अर्थों को नहीं समझते। क्षत्रिय का मुख्य कार्य रक्षा करना है परन्तु यदि वह रक्षा के कार्य को सेवा भाव से न करके उद्धतभाव से करता है, तो वह क्षत्रियपन का अधिकारी नहीं रहता। उसे दस्यु अथवा आततायी कहना पडेगा। इसी प्रकार स्वयं सेवक का कार्य सेवा करना है, परन्तु ऐसी सेवा दासता का रूपान्तर बन जाती है जिसमें रक्षा की भावना विद्यमान न हो। जो सेवाभाव से प्रेरित होकर मनुष्यों की रक्षा के लिये क्रियात्मक प्रयत्न कर सके, वही सच्चा क्षत्रिय कहलाता है। उसी को हम आर्य वीर कहते हैं।

प्रत्येक आर्य वीर दल को सबसे प्रथम आर्य वीरों के शिक्षण का प्रबन्ध करना चाहिये। शिक्षक ऐसा होना चाहिये जो आर्य वीर दल के एक अथवा एक से अधिक शिक्षण शिविरों में शिक्षा प्राप्त कर चुका हो। अच्छे शिक्षकों के अभाव

की पूर्ति करना प्रान्तिक आर्य प्रतिनिधि सभाओं का कार्य है। उन्हें चाहिये कि प्रान्त में स्थान स्थान पर शिक्षण शिविरों की योजना करें, जिससे आर्य वीर दलों को अच्छे शिक्षक मिल सकें। प्रान्तीय शिक्षक तैयार करने के लिये प्रतिवर्ष सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से केन्द्रीय शिविर लगाया ही जाता है। प्रान्तिक सभाओं को उससे लाभ उठाना चाहिये।

आर्य वीर दल का कार्य दो हिस्सों में बँटा रहना चाहिये। आर्य वीरों को दोनों प्रकार के कार्यों में व्यावहारिक शिक्षण मिलना चाहिये। जाति की सेवा का कोई अवसर व्यर्थ नहीं जाने देना चाहिये। उत्सवों, मेलों तथा अन्य ऐसे अवसरों पर आर्य वीर दलों को सेवा काय करने में अन्य किसी सस्था से पीछे नहीं रहना चाहिये। दुर्भिक्ष, बाढ़ आदि विशेष अवसरों पर सेवा कार्य करना तो आर्य वीर दलों का विशेष ध्येय होना चाहिये। इस प्रसग में यह सुझा देना भी आवश्यक है कि यदि बडे बडे आर्य वीर दलों के साथ एक प्रारम्भिक चिकित्सा विभाग जोड़ा जा सके तो बहुत उत्तम हो।

रक्षा कार्य जितना महत्त्वपूर्ण है, उतना ही कठिन भी है। उस कार्य के लिये ऐसे गुणों की आवश्यकता है, जो सामान्य दृष्टि से परस्पर विरोधी प्रतीत होते हैं। जो आर्य वीर सफलता पूवक रक्षा का कार्य करना चाहे, उसे जहा एक ओर अत्यन्त निडर होना चाहिये, वहां दूसरी ओर अत्यन्त धीर और विनय शील होना चाहिये। उसमें जितनी सावधानता और चौकन्नेपन की जरूरत है, वहां उतनी ही इस विवेक की भी आवश्यकता है कि जहा उसका काम नहीं, वहां वह टाग न अड़ाये। अवसर को पहचानना क्रोध या घबराहट से ऊपर उठे रहना, और निर्भय होकर अपना कर्त्तव्य पालन करना जिस आर्य वीर के लिये सभव हो वही रक्षा के कार्य में हाथ डालने का अधिकारी है। ऐसे कार्य के योग्य बनने के लिये मनुष्य को मानसिक सयम और गहरे शिक्षण की आवश्यकता है।

आर्य वीर दलों का संगठन आर्य समाज के जीवन के लिये बहुत आवश्यक है। जिस दुनियाँ में आर्य समाज को कार्य करना है, वह निर्भय सत्य कहने वालों और विश्वास के अनुसार निर्भय कार्य करने वालों को पसन्द नहीं करती। ऐसे व्यक्ति साधारण दुनियाँ को बहुत अखरते हैं। दुनियाँ उनसे कहती है कि या तो अपने कार्य को बन्द कर दो अथवा मिटा दिये जाओगे। यदि ऐसा समाज मिटना नहीं चाहता तो उसे जीवित रहने के योग्य शक्ति प्राप्त करनी चाहिये। आर्य समाज के लिये वह शक्ति आर्य वीर दल है। इसी कारण सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने और अखिल भारतीय आर्य-सम्मेलन ने आर्य समाज के त्रैवार्षिक कार्यक्रम में आर्य वीर दलों के सगठन को प्रमुख स्थान दिया है। वह कार्य बिना किसी विलम्ब के कर डालने का है। यदि आर्य जगत् ने इसके पूर्ण करने में देर की तो सम्भव है यह अवसर हाथ से निकल जाये और हम घोर प्रयत्न करने पर भी वर्तमान अवसर को वापिस न ला सकें॥

स्वाध्याय का महत्त्व

सत्यार्थप्रकाश का विशेष स्थान

[लेखक—श्री प० गङ्गाप्रसाद जी उपाध्याय एम. ए. प्रधान संयुक्तप्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा]

आर्य कुमारों के लिये स्वाध्याय का महत्त्व जानना अत्यन्त आवश्यक है। स्वाध्याय प्रत्येक मनुष्य के लिये आवश्यक है परन्तु कुमारों के लिये तो इसकी विशेष आवश्यकता है।

स्वाध्याय का अर्थ है स्वयं अध्ययन करना या अपना अध्ययन करना। दोनों ही अर्थों में इसकी उपयोगिता सिद्ध है।

अध्ययन दो प्रकार से होता है। एक ऊपर से और दूसरा भीतर से। जब एक अध्यापक लकड़ी के जोर से किसी पाठ को विद्यार्थी के गले में उतारता है। तो यह स्वाध्याय नहीं। स्वाध्याय वही है जिसमें विद्यार्थी विद्या की इच्छा रखता है। और उस इच्छा से प्रेरित होकर वह अध्यापक के पास जाता है। जो वस्तु भूख में खाई जाती है वही पुष्टिदायक होती है। उसी में स्वाद भी अधिक आता है। इसी प्रकार जिसके हृदय में ज्ञान की भूख उठ खड़ी होती है वह बड़े चाव से अध्ययन करता है और उसका ज्ञान भी अधिक विशद होता है।

ज्ञान दो प्रकार से प्राप्त होता है। अपनी अनुभूति से और दूसरों की अनुभूति से मनुष्य की दृष्टि तथा आयु दोनों अल्प हैं। अतएव वह अपनी अनुभूति के आधार पर ही अधिक ज्ञान प्राप्त नहीं कर सकता। परम्परा से हमारे पूर्वज अपनी अनुभूतियों के कोष को हमारे लिये एकत्रित करके रख गये हैं, इन्हीं का नाम पुस्तकें हैं। इन से हम उस कोष को प्राप्त करके अपनी अनुभूति द्वारा उस कोष का सवर्धन कर सकते हैं। यदि ऐसा न होता तो आज हमारे ज्ञान की राशि भी बहुत ही अल्प होती।

आप जंगलों के मार्गों के चिन्ह देखते हैं। ये चिन्ह क्या हैं? उसी अनुभूति के कोष हमसे पहले जो उधर होकर निकले वे अपनी अनुभूति को अपने पैरों से चिन्हित करते गये। हम कहते हैं "अमुक मार्ग अमुक स्थान को जाता है"। इसका यही तो अर्थ है कि हम अपने पूर्वजों की अनुभूति का आश्रय ले रहे हैं। जितनी सड़कें हैं वे एक प्रकार की पुस्तकें ही हैं जिनमें पूर्वजों के अनुभव अभिगुप्त हैं।

स्वाध्याय का दूसरा अर्थ अपना अध्ययन भी है। हमने जगत् की वस्तुओं का निरीक्षण तो किया परन्तु स्वयं अपना नहीं। हम नदी नाले, पर्वत, सूर्य, चन्द्र आदि के विषय में तो सोचते रहे परन्तु अपने विषय में कभी न सोचा कि हम क्या हैं। तो यह स्वाध्याय अधूरा है। पूर्ण स्वाध्याय और इसलिये सबसे उपयोगी स्वाध्याय यही है कि हम अपने को भी जानें और संसार की इतर वस्तुओं को भी जानें और अपना और उनका सम्बन्ध भी जानें।

इसी लक्ष्य से शास्त्रों में स्वाध्याय की यह महिमा गाई गई है:—

ऋतं च स्वाध्याय प्रवचने च। सत्यं च स्वाध्याय प्रवचने च।
तपश्च स्वाध्याय प्रवचने च। दमश्च स्वाध्याय प्रवचने च।
शमश्च स्वाध्याय प्रवचने च। अग्नयश्च स्वाध्याय प्रवचने च।
अग्नि होत्र च स्वाध्याय प्रवचने च। अतिथयश्च स्वाध्याय प्रवचने च।
मानुष च स्वाध्याय प्रवचने च। प्रजा च स्वाध्याय प्रवचने च।
प्रजनश्च स्वाध्याय प्रवचने च। प्रजातिश्च स्वाध्याय प्रवचने च॥

यह तैत्तिरीयोपनिषद् का वचन है। ये पढ़ने पढ़ाने वालों के नियम हैं। (ऋतं०) यथार्थ आचरण से पढ़ें और पढ़ावें। (तप) तपस्वी अर्थात् धर्मानुष्ठान करते हुये वेदादि शास्त्रों को पढ़ें और पढ़ावें। (दमः) बाह्य इन्द्रियों को बुरे आचरणों से रोक के पढ़ें और पढ़ाते जाय। (शमः) मन की वृत्ति को सब प्रकार के दोषों से हटाके पढ़ते पढ़ाते जाय (अग्नय) आहवनीयादि अग्नि और विद्युत् आदि को जान के पढ़ते पढ़ाते जाय और (अग्नि होत्र) अग्नि होत्र करते हुए पठन और पाठन करें करावें। (अतिथयः०) अतिथियों की सेवा करते हुए पढ़ें और पढ़ावें। (मानुष०) मनुष्य सम्बन्धी व्यवहारों को यथायोग्य करते हुए पढ़ते पढ़ाते रहें। (प्रजा०) सन्तान और राज्य का पालन करते हुए पढ़ते पढ़ाते जाय (प्रजन०) वीर्य की रक्षा और वृद्धि करते हुए पढ़ते पढ़ाते जाय। (प्रजाति०) अपने सन्तान और शिष्य का पालन करते हुए पढ़ते पढ़ाते जायें।"

हमने यहां तैत्तिरीय उपनिषद् (प्रपा० ७) अनु० ६ के वचन को महर्षि दयानन्द के सत्यार्थप्रकाश से इसलिये उद्धृत कर दिया है कि कुमार लोग ऋषि के शब्दों पर विचार कर सकें और स्वाध्याय का तत्त्व समझकर उससे लाभ उठा सकें। ऋषि ने स्वाध्याय के लिये जो नियम दिये हैं उनमें स्वाध्याय के दोनों अर्थ आ जाते हैं अर्थात् बाह्य वस्तुओं का ज्ञान और अपने आत्मा का परिज्ञान। जो स्वाध्याय इन दोनों पक्षों को लक्ष्य में रखकर नहीं किया जाता वह न केवल अधूरा ही है किन्तु घातक भी।

Little knowledge is a dangerous thing

अधूरा ज्ञान घातक है। ज्ञान का अधूरा पन यह ही है कि हम अपने आपे की उपेक्षा करके पढ़ें। आजकल पुस्तकों की बहुतायत है। लोग पढ़ते भी बहुत हैं। परन्तु जो कुछ अध्ययन हो रहा है उसमें अपने आपे की उपेक्षा की जा रही है। हमको सब वस्तुओं के अस्तित्व पर विश्वास है परन्तु अपने पर नहीं। लोगों को (विशेष कर कई विद्वानों को) यह कहते हुए सुनते हैं कि हम तो जीवात्मा को नहीं मानते अर्थात् हमको अपने अस्तित्व के विषय में सन्देह है। जो अध्ययन भवन इस आधार पर निर्मित किया जायगा उसके सुदृढ़ होने की क्या आशा? युरोप के प्रसिद्ध दार्शनिक डी कोर्ट ने कहा था कि—

कोजीटो अर्गोसम्।

अर्थात् मैं सोचता हूँ। इसलिये मुझे विश्वास रखना चाहिये कि मैं अवश्य हूँ। जब हमारा ज्ञान अपने से आरम्भ होता है तो आगे जाकर अपने ज्ञान से लाभ भी उठा सकते हैं। इसका आरम्भ बिंदु हम ही हैं और जब यह ज्ञान का वृत्त बढ़ते बढ़ते समाप्त होगा तब भी हमीं तक समाप्त होगा इसलिये स्वाध्याय में आत्म-विद्या का बड़ा भाग होना चाहिये।

ये तो हुए मौलिक नियम। अब कुछ विशेष बातें भी जाननी चाहियें जो दैनिक उपयोगिता से सम्बन्ध रखती हैं। आर्य्य कुमारों का मुख्य कर्त्तव्य है वैदिक संस्कृति को पुनर्जीवित करना। इस युग में ज्ञान की जो संवृद्धि हो रही है उसमें वैदिक-संस्कृति की सर्वथा उपेक्षा की जा रही है। इससे एक महती हानि यह होगी कि युग युगान्तर की ऋषि मुनियों की अनुभूति का जो परम कोष है वह लुप्त हो जायगा और बहुत कुछ होगया। आर्य्य कुमारों का परम कर्तव्य है कि उस कोष को लुप्त होने से बचालें। यह कैसे हो सकता है? सुनिए।

आर्य्य कुमारों में कई श्रेणियों के लोग हैं। कुछ अंगरेजी पढ़ते हैं कुछ साधारण हिन्दी ही पढ़े हैं। और उच्च शिक्षा न प्राप्त थी, न प्राप्त करने की सम्भावना है। कुछ संस्कृत पढ़ते हैं या पढ़ सकते हैं। ये सभी कुमार वैदिक-संस्कृति के प्रचार में साधक हो सकते हैं। प्रचार का यह अर्थ नहीं कि हम व्याख्यान द्वारा दूसरों को ही पढ़ावें। जब मैं अपने घर के कोने में बैठा हुआ चुपचाप किसी आर्ष ग्रन्थ का स्वाध्याय करता हूँ तो मुझे अनुभव होता है कि मैं वैदिक संस्कृत के उद्धार में अपना हाथ बढ़ा रहा हू यही प्रत्येक कुमार को समझना चाहिये। जब तक एक कुमार भी आर्ष ग्रन्थ पढ़ रहा है वह ग्रन्थ लुप्त नहीं हो सकता।

कुमारों के पढ़ने के लिए सब से आवश्यक पुस्तकें

सत्यार्थ प्रकाश और संस्कार विधि हैं। इनको सब श्रेणियों के कुमार पढ़ सकते हैं। इनको मैं इसलिये आवश्यक कहता हू कि इनके पढ़ने से वैदिक संस्कृति से प्रेम और वैदिकग्रन्थों के पढ़ने के लिए उत्कंठा उत्पन्न हो जाती है। यह उत्कंठा बड़ी चीज है। इससे कुमारों का दृष्टि कोण बदल जाता है, आर्य्य कुमारों और अन्य कुमारों में यह बड़ा भारी भेद है। यदि आप के हृदय में आर्षग्रन्थों के लिए उत्कंठा उत्पन्न हो गई तो आप अवश्य ही किसी न किसी दिन, किसी न किसी सीमा तक उनको पढ़ने में सफल हो जायेंगे।

सत्यार्थप्रकाश और संस्कार विधि में एक बात और है। साधारण रीति से जीवन को सफल बनाने की जो कुछ सामग्री है वह सभी इन पुस्तकों में दी हुई है। आप इनको पढ़ के शारीरिक दुर्व्यसनों, सामाजिक कुरीतियों, आत्मिक भ्रमों और धार्मिक भूल भुलइयों से बच सकते हैं। इनको पढ़कर चाहे आप जो

कुछ पढ़ें और जिस किसी परिस्थिति में रहें अवश्य ही वैदिक संस्कृति के प्रभाव को अपने साथ रख सकेंगे ।

इन से एक लाभ और है । वह यह कि बिना सत्यार्थप्रकाश की सहायता के आर्ष ग्रन्थों के पढ़ने में बहुत सी बाधायें हो सकती हैं । आजकल आर्ष ग्रन्थ उसी प्रकार शुद्ध नहीं मिलते जैसे कलकत्ते में गङ्गा का जल शुद्ध नहीं मिल सकता । सहस्रों वर्षों की अविद्या के कारण धर्म ग्रन्थों के चारों ओर मैल जम गया है । सत्यार्थप्रकाश हमारे दृष्टि कोण को इस प्रकार बदल देता है कि हम दोषों को छोड़ कर गुण को ग्रहण कर सकते हैं ।

सत्यार्थप्रकाश और संस्कारविधि से आरम्भ करने के पश्चात् जो कुमार अधिक पढ़ सकते हैं उनको संस्कृत को अवश्य आरम्भ करना चाहिये । आपका मस्तिष्क जितना बोझ सहार सके और आप जितना समय निकाल सकें संस्कृत अध्ययन को दीजिये । इससे आप मनुस्मृति आदि सरल ग्रन्थ तथा दर्शन आदि आदि क्लिष्ट ग्रन्थों का कुछ कुछ स्वाद ले सकेंगे । यदि किसी बुद्धिमान् पाठक की सहायता मिल जाय तो एक घंटा प्रतिदिन देने से छ मास में इतनी संस्कृत आ सकती है कि कि धर्मग्रन्थों के पढ़ने में स्वाद आ सके । प्रत्येक कुमार को इस ओर कुछ न कुछ परिश्रम अवश्य करना चाहिये । यह मैं नहीं कहता कि आप अष्टाध्यायी ही आरम्भ कर दें । यदि आप दो चार वर्ष निरन्तर दे सकें तो अष्टाध्यायी ही आरम्भ करें परन्तु आपको विशेष सुविधायें नहीं हैं तो नये ढंग की सस्कृत की सरल पुस्तकों से आरम्भ कीजिये । और पीछे से वेदाग प्रकाश से लाभ उठाइये ।

यदि आपको व्याकरण में विशेष रुचि न हो तो इस कारण सर्वथा संस्कृत का परित्याग करना उचित नहीं । न होने से कुछ होना अच्छा है । अल्प ज्ञान से भी दैनिक व्यवहार चल सकता है । जब एक बार कुछ संस्कृत आगई तो आगे व्याकरण में भी रुचि उत्पन्न हो सकती है ।

आर्य्य कुमारों के दैनिक कार्यों के लिये मनुस्मृति का अध्ययन अत्यावश्यक है । यह सरल भी है । मनुस्मृति का बहुत सा भागतो सत्यार्थप्रकाश में आगया है, फिर भी इस ग्रन्थ का मौलिक अध्ययन विशेषत' हितकर हो सकता है ।

मनुस्मृति के बाद वेद का नम्बर है । वेद अध्ययन सबसे मुख्य है । वेद सूर्य्य हैं और सब ग्रन्थ चांद या तारे या दीपक । वैदिक संकृति का मूलाधार वेद ही है सत्यार्थप्रकाश भी वेद में रुचि उत्पन्न करने के लिये ही हैं । परन्तु विशेष विद्वान् हुये बिना वेद में प्रवेश कठिन है । अत आर्य कुमारों को आर्य्याभिविनय से आरम्भ करना चाहिये और आर्य्य विद्वानों के वेदों के सग्रह तथा व्याख्यायें अवश्य पढ़नी चाहियें ।

प्रत्येक आर्य कुमार को चाहिये कि अपने समय का कुछ न कुछ भाग अवश्य ही स्वाध्याय के लिये निकाले और ऊपर दिये हुए संकेतों से लाभ उठावे ॥

भारतवर्षीय आर्य कुमार परिषद् देहली

परीक्षा विभाग की सूचनाएं

पाठविधि शीघ्र मंगाइये—

भारत वर्षीय आर्य कुमार परिषद् की वार्षिक परीक्षाएं जनवरी सन् १९४५ में होंगी। इस वर्ष पाठ विधि में कोई परिवर्तन नहीं किया गया है। अतः जिन भाइयों के पास पाठ विधि मौजूद हो, उसी के अनुसार तैयारी आरम्भ करदें तथा जो भाई बहिन पाठ विधि मंगाना चाहें वे शीघ्र कार्यालय को लिखकर मंगालें।

प्रमाण पत्र तैयार हैं—

भारत वर्षीय आर्य कुमार परिषद् की ओर से जनवरी सन् १९४४ में जो परीक्षाए हुई थीं उनका परीक्षाफल सब केन्द्रों को भेज दिया है। जिन केन्द्रों का परीक्षाफल विचाराधीन था वह भी अब पूरा हो गया है प्रमाण पत्रों के साथ ही भेजा जावेगा। प्रमाण पत्र तैयार हो गये हैं जो सब केन्द्रों को भेजे जा रहे है, अगस्त मास के प्रथम सप्ताह तक सब केन्द्रों में पहुँच जावेंगे।

२८ वां भारतवर्षीय आर्य कुमार सम्मेलन

म० खुशहालचन्द जी आनन्द ने सभापति बनना स्वीकार कर लिया

भारत वर्षीय आर्य कुमार परिषद् का २८ वॉ वार्षिक सम्मेलन ता० २२ सितम्बर से २४ सितम्बर तक संयुक्त प्रांत के प्रमुख नगर मुरादाबाद में श्री म० खुशहालचन्द जी आनन्द के सभापतित्व में मनाया जायगा। श्रीयुत विश्वम्भर सहाय जी प्रेमी (मेरठ) उपप्रधान भारत वर्षीय आर्य कुमार परिषद् तथा श्री विश्वम्भरदयाल जी मन्त्री भारत वर्षीय आर्य कुमार परिषद् का डेपुटेशन ता० १९-७-४४ को मुरादाबाद में स्वागत समिति के अधिकारियों से मिलने गया उनका बयान है कि स्वागत समिति सम्मेलन को सफल बनाने की पूरी २ कोशिश कर रही है। सम्मेलन में आर्य कुमार सभाओं को अधिक से अधिक प्रतिनिधि नियमानुसार भेजने चाहियें तथा शीघ्र ही अपना २ वार्षिक शुल्क भी परिषद् कार्यालय को भेज देना चाहिये—जो कुमार सभाएं अभी तक परिषद् से सम्मिलित नहीं—शीघ्र उन्हें सम्मिलित हो जाना चाहिये।

दिल्ली प्रान्तीय आर्य कुमार परिषद्—

ता० २७ अगस्त को दिल्ली प्रान्त के आर्य कुमारों की एक टोली ओखले जावेगी जहां पर आर्य कुमारों में समताभाव पैदा करने सम्बन्धी विचार होगा।

देवीदयाल उपमन्त्री
भारत वर्षीय आर्य कुमार परिषद् दिल्ली।

भारतवर्षीयआर्य कुमार परिषद् की धार्मिक परीक्षाओं की पुस्तकों में कई एक पुस्तकें नही मिलती हैं। इसलिये निम्न लिखित परामर्श दिया जाता है कि जो पुस्तकें अप्राप्य हैं उनके स्थान पर जो पुस्तकें लिखी हैं वह मगाकर पढ़ें।

१ पच यज्ञ प्रकाश या सन्ध्या सुमन गुरुकुल कागड़ी। २ ऋषि दयानन्द का जीवन चरित्र (श्री देवेन्द्रनाथ कृत या अन्य किसी विद्वान् का लिखा हुआ।

३—उपनिषदें ८ महात्मा नारायण स्वामी जी कृत या अन्य किसी आर्य विद्वान् की व्याख्या।

देवव्रत धर्मेन्दु परीक्षा मन्त्री

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती और श्रीकृष्ण !

[लेखक—श्री प० बालमुकुन्द मिश्र साहित्यालङ्कार, दिल्ली]

आर्य समाज के प्रवर्तक श्री स्वामी दयानन्द जी सरस्वती का युग, दीन-हीन, नाजुक, वैदिक संस्कृति से एकदम विमुख दशा की ओर बहने वाला था। बर्बरों द्वारा सदियों से आर्य सभ्यता को झिंझोड़े जाने के कारण आर्यावर्त की मूल अन्तश्चेतना हीन सी हो चुकी थी। भारतवर्ष उन्नति की अपेक्षा अवनति को अब दिनों-दिन बटोरता आ रहा था, ऐसे ही समय में उस शुद्ध आत्मा, स्वदेश हितैषी, तपस्वी-साधु श्री दयानन्द ने पुन भारतीयों में वैदिक संस्कृति आत्मा की जीवन ज्योति, प्रदीप्त कर भारतोदय का पुण्य प्रभात प्रकाशित किया।

वह क्रान्ति का पुञ्ज, वैदिक सभ्यता का स्फुलिंग, स्वदेश का शुभैषी था। उसने योगेश्वर श्री कृष्ण को क्रान्ति की विभूति के रूप में पाया। श्री कृष्ण को, उसके अन्ध-अनुरागियों ने सदियों पूर्व से अर्चना का विषय और मुक्ति का द्वार मात्र बना, केवल श्रद्धा की एक निधि बना रक्खा था। भक्तों की कल्पनाओं ने कर्मयोगी कृष्ण को चामत्कारिक श्री कृष्ण के रूप में ढाल छोड़ा था। कल्पनाओं पर आसक्त श्रद्धालुओं ने शोचनीय कल्पनाओं की सृष्टि सम्प्रदाय और भक्ति-धारा के बहाव में भारत को बहा दिया। सम्प्रदायों और भक्ति के विभिन्न मार्गों के दौर-दौरों ने अपने चक्रों से एक दफे तो सत्य को भारत से लुप्त कर ही दिया।

सम्प्रदायों का एक दफे चक्र घूमना था, फिर क्या था—भक्तों के दयनीय मस्तिष्कों की उपज ने श्री कृष्ण के वास्तविक स्वरूप पर, तमोमय ऐसा अवगुंठन डाला जो आजतक उठाने की लाख चेष्टाए करते हुए भी वस्तुत उठ न सका। फलतः—उनका इतिवृत्त इस प्रकार किरकिरा हो गया जिस प्रकार बूरे में मिट्टी का सम्मिश्रण। अन्ध भक्तों के, ऐतिहासिक दृष्टि के अमानुषिक कारनामों में, उनके इतिवृत्त को मटमैला ही नहीं अपितु विनष्ट ही कर दिया, अर्थात् कृष्ण-चरित्र और उनके मन्तव्य उपदेश आदि के यथार्थ स्वरूप को विस्मृत या ध्वस करके उस पर शृङ्गारिक, नृत्यकार, टेढ़ा-मेढ़ा, माखन या चीर-चोर जार आदि के रङ्गीन रंग में रंग दिया जिसका परिणाम हुआ—

इस युग तक योगेश्वर श्रीकृष्ण का रूप कर्मयोगी के रूप में न रह कर 'राधा के कृष्ण' स्वरूप में शेष रह गया। कुरुक्षेत्र की रण भूमि के योद्धा रणकुशल श्रीकृष्ण वृन्दावन की कुञ्जों में बालाओं के साथ रङ्गीला हास्य करनेवाले 'खुश-मिजाज श्रीकृष्ण' बन गए। महान् साधनाओं के साधक योगिराज अब—अनेकों रानी-पटरानियों के यहां रात को दैनिक परिरम्भन करने वाले 'भोगिराज' श्रीकृष्ण मात्र हो गये।

युग विचारकों ने उस महिमा महान् श्रीकृष्ण के सम्बन्ध में, रंगीन श्रीकृष्ण भक्तों द्वारा रचित साहित्य को पढ़कर क्या यह ठीक नहीं कहा ?—इसके पश्चात्

The stories related of Krishna's life do more than any thing else to destroy the moral and corrupt the imagination of Hindu youths

[Bishop Caldwell in
"The Religious and moral Teaching of the Bhagawad Gita examined" P 12]

अर्थात्—श्री कृष्ण जीवन के विषय में, जो कथाएं (पुराणों वा भक्तों द्वारा रचित साहित्य में) बताई जाती हैं, उनका हिन्दू युवकों के चरित्र का नाश करने और उनकी कल्पनाओं को भ्रष्ट करने में सबसे बड़ा भाग है।

ये हैं एक विचारक के विचार। उक्त वाक्यों में सत्य का अंश कितना है, यह बात आज भी कृष्ण-भक्तों उपासकों वा उनके पूजक भक्तों के चरित्रों द्वारा ही जानी जा सकती है।

एक और विद्वान् के विचार भी विचारने योग्य हैं —

"The histories of 'Brahma' Indra Krishna and other Gods especially as—given in the Puranas are disgusting to a pure and honourable Mind I dare not pollute my page with the recital of their flagitious deed Were such things, as are ascribed to the Gods to be committed by humanbeings every one of us would be struck with horror"

[Rev V Murray mitchell M A LL D in
' Letters to Indian youths"]

अर्थात्—ब्रह्मा, इन्द्र, कृष्ण इत्यादि देवों के जो इतिहास विशेषत पुराणों में वर्णित हैं, वे शुद्ध-पवित्र, मंजुल, सरल-हृदय, परिष्कृत मन के व्यक्ति के लिये घृणाजनक हैं। मैं उनके निन्दनीय कार्यों के वर्णन से अपने पृष्ठों को कलंकित करने का साहस नहीं कर सकता। यदि ऐसे कार्य जो इन देवों के द्वारा किये गये माने जाते हैं, मनुष्यों ने किये होते तो हम में से प्रत्येक भय और लज्जा के मारे स्तब्ध हुए बिना न रहता।

नवयुग निर्माता, महान् क्रान्तिकारी श्री स्वामी दयानन्द जी सरस्वती अपने वैदिक देवताओं और पूर्वजों की शान में आने वाले असत्य आक्षेप को किस प्रकार सहन कर सकते थे ? उन्हें, अति सम्माननीय श्रीकृष्ण जी का

ऐसा स्वरूप (?) असह्य था—जिससे उनके धर्म या स्वदेश का अपमान या पतन की सम्भावना थी। उनकी दृष्टि में था कृष्ण का अपमान—उनका रंगीन स्वरूप। श्री दयानन्द जी ने श्रीकृष्ण के सच्चे रूप में दर्शन करने की साधना की और उन्होंने पाया श्रीकृष्ण को——"एक आप्त पुरुष के रूप में" श्री स्वामी दयानन्द जी सरस्वती की पवित्र दृष्टि में "श्रीकृष्ण थे—

श्रेष्ठ महान् पुरुष।

उनकी वासनाएं और इच्छा शक्ति साधारण नहीं अपितु महत्वाकांक्षाएं परिपूर्ण और दृढ़-प्रबल थीं।

उनकी दृष्टि, युग की सीमाओं को पार कर चुकी थी। अर्थात्—उनके विचार भूत वर्तमान भविष्य काल के तथ्यों का सूक्ष्म अवलोकन करने में सदैव स्वस्थ रहते थे।

ऐतिहासिक दृष्टिकोण से वे नवयुग के आवाहक थे।

वे संसार के सामने एक महान् शक्ति संकल्प प्रदाता के रूप में आए।

वे ऋषियों का-सा जीवन नहीं अपितु एक सच्चे-साधु-गृहस्थी का सा जीवन व्यतीत करते थे।

उनकी मेधा शक्ति नूतन विचारों और भावनाओं के लिये उर्वरा भूमि थी। वे संसार की माया पर आसक्त या लिप्त नहीं थे।

यह था, उस मनमोहक श्रद्धेय श्रीकृष्ण का मनोहर रूप। यह है, मानव उज्ज्वल चरित्र की एक अनुपम-मानव भेंट, जो संसार को स्वामी दयानन्द ने प्रदान की। श्री कृष्ण के मंजुल स्वरूप को दयानन्द सरस्वती ने इस युग में सर्व प्रथम ठीक २ समझने का प्रयत्न किया और अपने अनुसन्धान को जगत् के सम्मुख रखा इन शब्दों में—

"श्री कृष्ण जी का इतिहास महाभारत में अत्युत्तम है। उसका गुण, कर्म, स्वभाव और चरित्र आप्त पुरुषों के सदृश है। जिसमें कोई अधर्म का आचरण श्री कृष्ण जी ने जन्म से मरण पर्यन्त बुरा काम कुछ भी किया हो, ऐसा नहीं लिखा और इस भागवत (पुराण) वाले ने अनुचित मन-माने दोष लगाये हैं। दूध, दही, मक्खन आदि की चोरी और कुब्जा दासी के समागम, पर स्त्रियों से रास मण्डल, क्रीड़ा आदि मिथ्या दोष श्री कृष्ण जी में लगाये गये हैं। इनको पढ़ पढ़ा सुन-सुना के अन्य मतवाले श्री कृष्ण जी की बहुत-सी निन्दा करते हैं। जो यह भागवत न होती तो श्री कृष्ण जी के सदृश महात्माओं की झूंठी निन्दा क्यों कर होती। [सत्यार्थप्रकाश, समुल्लास एकादश]

योगिराज श्री कृष्ण के उत्तम गुणों और शिक्षाओं का श्री कृष्ण जन्माष्टमी (जो इस वर्ष ११ अगस्त को पड़ती है) इत्यादि अवसरों पर विशेष रूप से स्मरण तथा मनन करना चाहिये।

सत्यार्थप्रकाश अमर रहेगा

[लेखक—राजस्थान केसरी देशभक्त श्री कुंवर चादकरण जी मन्त्री राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा अजमेर]

महर्षि दयानन्द जी की अमर कृति सत्यार्थप्रकाश मनुष्य जीवन को सत् पथ की ओर अग्रसर करने वाला एक सच्चा निर्देशक है। समय की गति विधि के अनुसार क्रम से किस प्रकार पतित देश एवं जाति प्रबोधित की जाती है यह सत्यार्थप्रकाश के १४ समुल्लास आद्योपान्त पढ़ लेने से विदित होता है। हजारों मत मतान्तरों के गढ्ढों में चक्कर खाने वाले, सम्प्रदाय वाद की दल दल में फसे हुए भारतीयों को एकता के सूत्रमें आबद्ध करने के लिये वेदोद्धारक महर्षि दयानन्द सत्यार्थप्रकाश के प्रथम समुल्लास में ईश्वर के १०० नामों की व्याख्या करके भारत में फिर से प्रेम का पारावार बहाना चाहते थे। उन्होंने देश, समाज एव जाति के उत्थान तत्वों को क्रमश दस समुल्लासों में सुचारु रूप से लिखकर अन्त के ४ समुल्लासों में सत्य के अर्थ को सबके सामने रखकर अपने हृदय की विशालता का परिचय दिया है। स्वामी जी ने इन समुल्लासों की रचना आवेश एव द्वेष वश नहीं की। उन्होंने ११ वें समुल्लास की अनुभूमिका में लिखा है "इन सब मतवादियों, इनके चेलों, और अन्य सबको परस्पर सत्यासत्य के विचार करने में अधिक परिश्रम न हो इसलिये यह ग्रन्थ बनाया है। १३ वें समुल्लास में ऋषि ने लिखा है 'यह लेख केवल सत्य की वृद्धि और असत्य के ह्रास होने के लिये लिखा है, न कि किसी को दुःख देने वा हानि करने अथवा मिथ्या दोष लगाने के अर्थ। चौदहवें समुल्लास में इसलाम की आलोचना की गई है। जिसे साम्प्रदायिकता के रंग में रंगे हुए कट्टर मुल्ले हव्वा समझे हुए हैं। ऋषि लिखते हैं "न किसी अन्यमत पर न इस मत पर झूठ मूठ बुराई वा भलाई लगाने का प्रयोजन है, किन्तु जो जो भलाई है वही भलाई और जो बुराई है वही बुराई सबको विदित होवे। न कोई किसी पर झूठ चला सके और न सत्य को रोक सके और सत्यासत्य विषय प्रकाशित किये पर भी जिसकी इच्छा हो वह माने वा न माने किसी पर बलात्कार नहीं किया जाता। यह लेख दुराग्रह ईर्षा, द्वेष, वाद-विवाद और विरोध हटाने के लिए किया गया है न कि इनको बढ़ाने के अर्थ। क्योंकि एक दूसरे की हानि करने से पृथक् रह परस्पर को लाभ पहुंचाना हमारा मुख्य कर्म है।" इन उद्धरणों से स्वामी जी की निष्पक्षता साफ २ प्रकट हो जाती है। सत्यार्थप्रकाश के अन्तिम ४ समुल्लासों को कुछ सम्प्रदायवादी लोग शंका की दृष्टि से देखते हैं और सत्यार्थ-प्रकाश रूपी रज्जु को सर्प समझकर वृथा का वितंडावाद खड़ा करना चाहते हैं। अखिल भारत वर्षीय मुस्लिम लीग आज सत्यार्थप्रकाश के १४ वें समुल्लास को

जब्त कराने पर अपनी सारी राजनीति कुर्बान करना चाहती है। पाकिस्तान की असभ्यता पूर्ण मांग में असफलता मिलने पर इस प्रकार की भेद परक बातें पैदा करके चंद मुस्लिम लीगी भारत का वातावरण क्षुब्ध करना चाहते हैं। लाहौर में अभी २ सत्यार्थप्रकाश के गुण्डों द्वारा जलाये हुए फार्मों की रक्षा करते हुए लाला परमानन्द जी बलिदान हो गये। इस प्रकार की घटना क्यों होती है। इसका सीधा सा उत्तर है कि धर्म के नाम पर कुछ तथाकथित नेता गुण्डों को भड़का कर हिन्दू मुस्लिम एकता की जड़ को खोखला कर रहे हैं।

लाहौर के प्रो० अब्दुल मजीद खान ने सत्यार्थप्रकाश दाह कांड की निन्दा करते हुए अपने वक्तव्य में कहा है "विचारवान् पुरुषों का यह अनिवार्य कर्तव्य है कि वे उस घटना की निन्दा करें जो लाला परमानन्द को जख्मी कर और अन्तत: मौत के घाट उतारने के सम्बन्ध में घटित हुई है। इस प्रकार के पैशाचिक काण्डों की जितनी निन्दा की जाय कम है। मूर्ख लोग स्वभावत. उन लोगों के भाषणों से विचलित हो जाते हैं जो १६४४ में रहते हुए भी मध्य कालीन प्रवृत्तियों के मालिक हैं, वे सकुचित हृदय जनूनी लोग यह कभी नहीं समझ सकते कि घृणा और द्वेष की भावनाओं को फैलाने से वे अपने उद्देश्य को असीम ठेस पहुँचाते हैं। गुण्डों को जो सोसाइटी में प्लेग के समान हैं, कोई स्थान नहीं दिया जाना चाहिये। मजहब के नाम पर आज कैसी धींगा मस्ती मच रही है। इसकी जीवित मिसाल हमारे सामने है जिस काम को बड़े २ मुसलमान बादशाह जिनके हाथ में कभी भारत की सारी बागडोर थी, नहीं कर सके, उसे दीवानी संस्था मुस्लिम लीग करना चाहती है। औरंगजेब जैसे कट्टर मुसलमान जिसने धर्म के नाम पर काफी मार धाड़ की और लाखों हिन्दुओं को मुसलमान बनाया किन्तु हिन्दुओं की किसी धार्मिक पुस्तक को उसने कभी जब्त करने का स्वप्न में भी ध्यान नहीं किया। इतिहास इस बात का साक्षी है।

सभ्यता के इस युग में ऐसे असभ्यता पूर्ण एवं निःसार आन्दोलन समुद्र की तरंगों की भांति लीन हो जाते हैं। सत्यार्थ का प्रकाश तो फैलता ही है। अन्धेरा प्रकाश के होते ही दुम दबा कर भाग जाता है। सत्यार्थप्रकाश उस तपस्वी की अमर कृति है जिसने सत्य के लिये जहर का प्याला पीकर अमर पद पाया है।

आर्य समाज अपने जन्म से ही एक से एक बढ़कर बलिदान करता आया है। वह सत्यार्थप्रकाश के लिये एक परमानन्द नहीं हजारों परमानन्द बलिदान कर देगा। परन्तु मुसलमान सत्यार्थप्रकाश को ऐसे कायरता पूर्ण हमलों से जब्त नहीं करा सकेंगे। बलिदान आर्य समाज का मुख्य मन्त्र है और इसी यज्ञ में वह अपनी सत्यमेव जयते नानृतम्‌की आहुति डालता रहेगा।

Is Quran Above Criticism ?

MAHATMA GANDHI'S VIEWS

(*By Thakur S P. Singh, M A*)

The thoughtless agitation set up by Moslem Leaguers against the SatyarthaPrakash has raised many issues directly affecting thefundamental principle of democracy, viz, Freedom of thought and speech, or honest expression of opinion. No thoughtful student of human affairs can afford to be indifferent to the fundamental question thus raised. During the last 6 months the writer of these lines has had the opportunity of discussing the importance of the subject with various groups of intelligent people and invariably learnt that generally the thoughtful of them are fully alive to the far-reaching consequences of the matter, but the younger elements of our countrymen, particularly the students, inspired with the vision of a united Indian nation, sometimes partly through ignorance and partly through excessive zeal for Intercommunal harmony, begin to argue in a manner which simply deserves pity as well as sympathy. They argue somewhat in the following wise —

> "Yes, discusion or criticism is permissible in the case of political doctrines and ideals of an individual or a Nation, but no religious dogma or theological doctrines of a man or religious community should be criticized "

They further amplify their strange argument by citing the example of Gandhiji, particularly his reverential attitude towards quran and Islam and end by emphasizing that Gandhiji does not feel himself qualified to pass any criticism whatsoever on the cherished principles of Islam, even if he knows that they run counter to his own principles. Since these young-friends attribute, though unconsciously, want of reasonableness in Gandhiji, I take this opportunity of citing

from his writings that he recognizes the right of criticism in all matters, including even the scriptural truths of various religions

In order to facilitate proper understanding, I would request the reader to carry back his mind to the year 1925 Early in January of that year two members of Ahamdiya Sect were awarded the punishment of death by stoning for being renegades by the court of Qazis at Kabul The awful penalty aroused horror among all sensible men, but it was defended by almost all Moslem divines scholars and jurists on the ground that it was in accordance with the injunctions of the Quran

Commenting on the tragedy Gandhiji wrote in Young India dated 16 2 1925 thus —

"As a human being living in the fear of God I should question the morality of the method under any circumstances whatsoever Whatever may have been necessary or permissible during Prophet s life time and in that age, this particuler form of penalty cannot be defended on the mere ground of its mention in Quran. Every formula of every religion has in this age of reason, to submit to the acid test of reason and universal assent Error can claim no exemption even if it can be supported by the scriptures of the world.

At this a storm of protests was raised by the Moslems from various parts of India M Zafar Ali, the then president of Punjab Khilafat Committee inter alia wrote thus —

"I would be failing in my duty as a Moslem if I refrained from pointing out to you that by challenging the right of the Holy Quran to regulate the life of its followers in its own way, you have shaken the belief of millions of your Moslem admirers in your capacity

to lead them. You are at perfect liberty to express your opinion, but to hold that even if the Quran supported such form of penalty, it should be condemned outright as an error, is a form of reasoning which cannot appeal to the Moslems "

Error after all is a relative term and Moslems have their own way of interpreting it To them Quran is an unalterable law which transcends the everchanging policies and expediencies of puny humanity "

Replying to their protests Gandhiji defended his stand and wrote in Young India 5–3–25 —

"I abide by my word I would like to say that even the teachings themselves of the Quran can not be exempt from criticism After all we have no other guide but our reason to tell us what may be regarded as revealed and what may not be."

"The Maulana has betrayed intolerance of criticism by non-Moslems of anything relating to Islam I suggest to him that intolerance of criticism even of what one may prize as dear as life, is not conducive to the growth of public corporate life Surely Islam has nothing to fear from criticism even if it be unreasonable "

Reverting to the subject Gandhiji again wrote in Young India dated 26–3–25 thus —

"What I would like my Moslem friends to do is unhesitatingly to condemn, irrespective of its source, what the world's reasoned opinion rejects as contrary to humanity. It would not be a day's purchase if my prestige among Moslems could be reduced to nullity on account of honest expression of my opinion about practices defended in the name of Islam."

"The Maulana Saheb's suggestion that I should not criticize any act in Islam or say anything of the Quran because I am the President of the Congress and friend of Moslems is, I am afraid, unacceptable to me."

The words are quite clear and explicit and need no comment from me. Rishi Dayanand's position cannot be better defended than in these words of Gandhiji.

सम्पादकीय

कागज नियन्त्रण आज्ञा का वज्र प्रहार—

गत १२ जून को भारत सरकार की ओर से जो कागज पर नियन्त्रण विषयक आज्ञा प्रकाशित हुई है और जिसके अनुसार पत्र-पत्रिकाएं गत ६ मासों में लगाई पृष्ठ संख्या की मध्यमा का केवल ३० प्रतिशतक अब लगा सकती हैं उसने प्रायः सभी उत्तम पत्रों विशेषतः 'सार्वदेशिक' जैसे मासिक पत्रों पर वज्रप्रहार कर दिया है। हमारे प्रेमी पाठक जानते हैं कि हम किस प्रकार गत २ वर्षों से निरन्तर इस पत्र के अनेक उपयोगी विशेषाङ्क (२ सत्यार्थप्रकाशाङ्क, बलिदानाङ्क आर्य सम्मेलनाङ्कादि) निकाल कर तथा साधारण अङ्कों की पृष्ठसंख्या बढ़ाकर इसे अधिक से अधिक उपयोगी तथा ठोस सामग्री से भर पूर करने का यत्न करते रहे हैं। किन्तु अब गत ६ मासों की पृष्ठ संख्या की मध्यमा का ३० प्रतिशतक निकालने की सरकारी आज्ञा ने हमारी अभिलाषा पर कुछ समय के लिये तुषारपात कर दिया है। हम यत्न कर रहे हैं कि यह अवस्था अति शीघ्र दूर हो और हम पूर्ववत् अपने यत्न को जारी रख सकें तब तक हमारी सब प्रेमी ग्राहकों, लेखकों तथा अन्य सहायकों से प्रार्थना है कि सरकारी आज्ञा के कारण हमारी विवशता को ध्यान में रखते हुए वे इस पत्र पर अपनी प्रेम दृष्टि पूर्ववत् बनाये रखें तथा इसके प्रेमी परिवार को बढ़ाने के लिये भी उत्साह पूवक प्रयत्नशील रहें। इस उपर्युक्त आज्ञा के कारण धार्मिक साहित्य प्रकाशनादि में भी बड़ी भारी बाधा उपस्थित हो गई है। सार्वदेशिक सभा की ओर से सरकार को लिखा गया है कि कम से कम सत्याथ प्रकाश जैसे धार्मिक ग्रन्थों के प्रकाशन के विषय में इस आज्ञा को लागू न किया जाए। इसके अन्य प्रतिबन्ध भी अत्यन्त हानिकारक हैं जिनको शीघ्र से शीघ्र हटा देना चाहिये।

श्री राजगोपालाचार्य का प्रस्ताव—

गत जुलाई मास में श्री राजगोपालाचार्य भू० पू० प्रधान सचिव मद्रास सरकार ने अपना वह प्रस्ताव समाचार-पत्रों में प्रकाशित कराया है जो उन्होंने मुस्लिमलीग के प्रधान मि० जिन्ना के सम्मुख रक्खा था और जिस पर महात्मा गान्धी जी की अनुमति भी प्राप्त कर ली थी। इस प्रस्ताव के मुख्य अंश निम्न-लिखित हैं (१) मुसलिम लीग की मांग तथा आत्म निर्णय (Self-determination)] के सिद्धान्तानुसार मुसलमानों को भारतीय राष्ट्र से पृथक् होने का

अधिकार देना स्वीकार किया जाए (२) मुस्लिम लीग इसके बदले में राष्ट्रीय महासभा की राष्ट्रीय सरकार तथा पूर्ण स्वाधीनता की माग का समर्थन करे (३) युद्ध के बाद एक कमीशन नियत किया जाए और उसके द्वारा मुस्लिम बहुसंख्या वाले, एक दूसरे के साथ लगते प्रान्तों की जन-सख्या के बहुमत के आधार पर मुसल्मानों को पृथक् राष्ट्र बनाने का अधिकार दिया जाए। इत्यादि

श्री राजगोपालचार्य की जो स्थिति गत २ वर्षों से रही है उसे दृष्टि में रखते हुए कोई विचारशील राष्ट्रीयता वादी सम्भवत इन प्रस्तावों पर जरा भी ध्यान न देता किन्तु दुर्भाग्यवश महात्मा गान्धी जी की छाप इन पर लग चुकी है। हमें यह लिखने में जरा भी संकोच नहीं कि ये प्रस्ताव जिनमें पाकिस्तान की अराष्ट्रीय मुस्लिम लीगी मांग को स्वीकार कर लिया गया है सर्वथा साम्प्रदायिकता को उत्तेजना देने वाले और राष्ट्रहित घातक हैं जिनका विरोध करना प्रत्येक सच्चे राष्ट्रीयतावादी का जो भारत देश की अखण्डता में विश्वास करता है कर्तव्य है। जो महात्मा गान्धी जी इस प्रकार भारत के भङ्ग भङ्ग वा (Vivisection) को घोर पाप कह कर यहा तक घोषणा कर चुके थे कि वे प्राणों की बलि देकर भी इस पाप का विरोध करेंगे उन्हीं का समर्थन श्री राजगोपालाचार्य के उपर्युक्त प्रस्ताव को प्राप्त होना जैसे कि सार्वदेशिक सभा की ओर से महात्मा गान्धी जी के नाम भेजे तार में प्रकट किया गया था सचमुच आघात पहुँचाने वाला और अत्यन्त हानिकारक है। यद्यपि कांग्रेस की नीति प्राय. सदा मुसल्मानों की मागों को अधिक से अधिक स्वीकार करने की रही है तथापि २ मई १९४२ को अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी ने इलाहाबाद के अधिवेशन में निम्न प्रस्ताव स्वीकृत किया था कि "हिन्दुस्तान के भङ्ग भङ्ग के किसी भी प्रस्ताव को यह कमेटी विभिन्न प्रान्तों, राज्यों व स्वय समस्त भारत की प्रजा के हित के लिये हानिकारक समझती है।"

कांग्रेस कमेटी का इस विषयक यह अन्तिम निर्णय था जिसके सिद्धान्त विरुद्ध राजाजी के प्रस्ताव पर महात्मा गान्धीजी ने किस प्रकार अपनी अनुमति दे दी तथा अपनी कार्यकारिणी के सहयोगियों तकका अभिप्राय जानना आवश्यक नहीं समझा यह सचमुच आश्चर्य की बात है। स्वय मि० जिन्ना ने मुस्लिम लीग कौन्सिल के लाहौर के अधिवेशन में जो राजाजी के प्रस्ताव की धज्जिया उड़ाई हैं और इस प्रकार के शब्द कहे हैं कि 'गान्धीजी खोखली छाया अथवा छिलका और दीमकों से खाया हुआ पाकिस्तान हो पेश कर रहे हैं और इस प्रकार मुसलमानों की माग और हमारी पाकिस्तान योजना को नजर-अन्दाज कर रहे हैं।' उनसे हमें तो जरा भी आशा नहीं कि वे महात्मा जी द्वारा अनुमोदित राजा जी के प्रस्ताव को स्वीकार कर लेंगे अबतक महात्मा गान्धी अक्षरशः मुस्लिम लीग की पाकिस्तान विषयक माग को स्पष्टतया और पूर्णतया १०० प्रतिशतक मानने को तय्यार न हों जिसका परिणाम राष्ट्रीयता के लिये सर्वथा घातक होगा।

अनुशासन की शोचनीय कमीः—

किसी भी समाज की वास्तविक उन्नति के लिए अनुशासन (Discipline) अत्यन्त आवश्यक है। आर्य समाज में अन्य समाजों की अपेक्षा अनुशासन की भावना अधिक है जिसका वह हैदराबाद सत्याग्रह जैसे अनेक महत्त्वपूर्ण अवसरों पर प्रदर्शन करता रहा है किन्तु कई बार ऐसा प्रतीत होता है कि इस अनुशासन की मात्रा जितनी होनी चाहिये उतनी नहीं है उदाहरणार्थ आर्यों की शिरोमणि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से प्रतिवर्ष आर्य पर्वों की सूची भेज कर उन्हें उत्साहपूर्वक मनाने का आदेश दिया जाता है आर्य समाज स्थापना दिवस और सत्याग्रह स्मारक दिवस पर सब समाजों को सार्वदेशिक सभा की वेद प्रचार निधि के लिये सदस्यों और सहायकों से धन संग्रह करके भेजने को लिखा जाता है किन्तु जैसे कि इसी अङ्क में प्रकाशित आर्य समाज स्थापना दिवस दान सूची से ज्ञात होता है बहुत सी समाजें इस विषयक अपने कर्तव्य और अनुशासन का पालन नहीं करतीं जो अत्यन्त निन्दनीय बात है। कई समाजों में तो आर्य समाज स्थापना दिवस मनाया ही नहीं जाता और कइयों में उस दिन सभा के आदेशानुसार धन संग्रह करने का कोई यत्न नहीं किया जाता यद्यपि उसकी न्यूनतम मात्रा परिवार के प्रत्येक सदस्य पर केवल ।) के हिसाब से नियत की हुई है। इसी प्रकार आर्य वीर दल के प्रत्येक आर्य समाज द्वारा सङ्गठन विषयक सार्वदेशिक सभा का स्पष्ट आदेश है किन्तु कई समाजें इस ओर ध्यान नहीं देतीं, कइयों के अधिकारी भी राष्ट्रीय स्वयं सेवक सङ्घादि में विशेष क्रियात्मक भाग लेते हैं अत वे आर्य वीर दल को अनावश्यक समझकर इसके मार्ग में रोड़े तक अटकाने में संकोच नहीं करते यद्यपि सभा का स्पष्ट आदेश है कि आर्य समाज मन्दिरों में आर्य वीर दलों को ही सब प्रकार का प्रोत्साहन मिलना चाहिये। ये बातें यद्यपि देखने में छोटी प्रतीत होती हैं पर उपेक्षणीय नहीं हैं। इनका समाज की उन्नति पर प्रभाव अवश्य पड़ता है अतः समस्त आर्यों को दृढ़ अनुशासन में रह कर शिरोमणि सभा के समस्त आदेशों का तत्परता से पालन करना चाहिये और आर्य वीर दलों का दृढ़ संगठन बनाना चाहिये। २८ अगस्त से २७ सितम्बर तक जो अखिल भारतीय आर्य वीर शिक्षण शिविर देहली समीपस्थ गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ में लगाया जा रहा है उससे आर्य समाजों को विशेष लाभ उठाना चाहिये।

—धर्मदेव विद्यावाचस्पति

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

दान सूची सत्यार्थप्रकाश निधि मास जून व जुलाई ४४.

बिहार प्रान्त

२५) श्री चमर भगत जी खूटी

१२५) श्री मन्त्री जी आर्य प्रति० सभा बिहार

८००) श्री मन्त्री जी आर्य प्रति० सभा बिहार

४००) श्री मन्त्री जी आर्य प्रति० सभा बिहार

६००) श्री मन्त्री जी आर्य प्रति० सभा बिहार

राजस्थान

२५) श्री आर्य कन्या पाठशाला सरदारपुरा

५ श्री मन्त्री जी आ० स० लश्कर

४६५) श्री मन्त्री जी आ० स० मल्हार गंज इन्दौर

१५) आ० स० भगवन्तपुर सवाई माधोपुर

मद्रास

१०) श्री सेठ टी० बोरा मदुरा

१५) श्री शिवचन्द्र जी द्वारा

१०) श्री N S विश्वनाथ ऐयर ऐडवोकेट मदुरा

५) श्री मदुरा ड्रेस मेन्यूफेक्चरिंग क० मदुरा

१०) श्री पी. एच. श्री निवास मदुरा

देहली प्रान्त

५१) श्री रामदयाल मगल चन्द्र देहली

११) श्री प० गुरुदत्त जी गौतम आ० स० बिरला लाइन्स

बम्बई प्रान्त

५) श्री मीना भाई, देवाभाई जी फिरलपुर, जलालपुर (सूरत)

मध्य प्रदेश

१०) श्री मंत्री जी आर्य समाज रेलवे स्टेशन बिलासपुर

५) श्री मन्त्री आ० स० बुरहानपुर

संयुक्त प्रान्त

५१) श्री मंत्री जी आ० स० हरदोई

५०) श्री प्रधान जी आ० स० भगवानपुर

४॥) श्री सीताराम जी भदुआ कानपुर

५) श्री ठा० रामसूर्यसिंह जी पटल कानपुर

५) श्री बाबूराम बैजनाथ जी फीलफ कानपुर

४) नानालाल जगजीवनसिंह कानपुर

४) श्री देवीप्रसाद जी बाजपेयी कानपुर

३) श्री ठा० बद्रीनाथसिंह जी कानपुर

११६) श्री मंत्री जी वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर

५) श्री जगन्नाथ मनीलाल चौबेपुर कानपुर

५) श्री प० रामकुमार जी शुक्ल पो० ओ० (उन्नाव)

५) श्री लक्ष्मीनारायण जी कलक्टर गंज कानपुर

५) श्री वीरेन्द्रसिंह जी कानपुर

१०००) श्री मन्त्री जी आर्य प्रतिनिधि सभा लखनऊ

३०००) श्री मन्त्री जी आर्य प्रतिनिधि सभा लखनऊ

१००) श्री मन्त्री जी आ० स० टटीहरी (मेरठ)

२५) श्री भगवती प्रसाद जी प्रधान आ० स० नई मण्डी मुजफ्फरनगर

७७७८॥) योग

६२७४।=) गत मास तक का योग।

१४०५२॥।=)

सब दानियों को सभा की ओर से धन्यवाद

अन्य आर्य प्रतिनिधि सभाओं, आर्य समाजों और आय सज्जनों को अपनी प्रतिज्ञात राशियाँ शीघ्र सभा कार्यालय में भेजकर पुण्यभागी बनना चाहिये।

धर्मदेव विद्यावाचस्पति स० मन्त्री सार्वदेशिक सभा

आर्य समाज स्थापना दिवस का धन

मास जुलाई सन् १६४४

५) आ० स० आबू रोड — १३।।।) आ० स० जौनपुर

१२।) आ० स० कटरा प्रयाग — १७) आ० स० स्यालकोट

४८ योग

४४२=) गत मास तक का योग

४६०=)

अन्य आर्य समाजों को भी अपना २ भाग भेजकर शिरोमणि सभा के आदेश और और अनुशासन का पालन करना चाहिये।

धर्मदेव स० मन्त्री सार्वदेशिक सभा

विविध

५) श्री परशराम राव, तेजपाल बिल्डिंग दादर

५) श्री सेठ पीताम्बर हरिदास फोर्ट बम्बई

१०)

Regd No L 2141

सार्वदेशिक सभा पुस्तक भण्डार की उत्तमोत्तम पुस्तकें

(१) वैदिक सिद्धान्त सजिल्द १)
(२) यमपितृ परिचय २)
(३) अथर्ववेदीय चिकित्सा शास्त्र २)
(४) वेद मे असित् शब्द -)
(५) ऋग्वेद में देवृकामा या देवकाम -)
(६) विदेशों में आर्य समाज ॥)
(७) दयानन्द सिद्धान्त भास्कर ०॥
(८) आर्य्य सिद्धान्त विमर्श १॥
(९) भजन भास्कर ॥
(१०) समस्त आर्य्य समाजों की सूची
(११) सार्वदेशिक सभा का इतिहास
अ० २, स०
(१२) बलिदान
(१३) आर्य डायरेक्टरी अ० १) स० १॥)
(१४) वैदिक सन्ध्या रहस्य =)॥
(१५) सत्यार्थ निर्णय १॥)
(१६) संस्कृत सत्यार्थप्रकाश (अजिल्द) ॥)
(१७) इजहारे हकीकत (उर्दू म) ॥=)
(१८) म० नारायण स्वामीजी की आत्म कथा २)
(१९) मातृत्व की ओर अ० १), स० १॥)
(२०) आर्य्य जीवन और गृहस्थ धर्म ।=)
(२१) आर्य वीर दल शिक्षण शिविर =)
(२२) आर्य समाज का इतिहास ॥)
(२३) भक्ति कुसुमाञ्जलि ॥)
(२४) विमान शास्त्र ।=)॥
(२५) वेद में दो बड़ी वैज्ञानिक शक्तियां १)
(२६) सत्यार्थ प्रकाश गान ।=)
(२७) बहिनों की बातें १)
(२८) Agnihotra— २॥)
(२९) Crucifixion by an eyewitness ।-)
(३०) Truth and Vedas ।=)
(३१) Truth-bed-rock of Aryan Culture ॥)
(३२) Vedic Teachings १।)
(३३) Voice of Arya Varta =)
(३४) Christianity in India ॥)
(३५) The Scope and Mission of Arya Samaj-Bound १)
(३६) Eclesia Divina—Bound ५)
(३७) Commentary on Ishopanishad ॥)
(३८) Kenopanishat (English) ।)
(३९) Daily prayer of an Arya ॥)





सितम्बर
१९४४ ई०
भाद्रपद
२००१ सं०

सम्पादक—
श्री पं० धर्मदेव जी सिद्धान्तालङ्कार विद्यावाचस्पति
साहित्य भूषण

वार्षिक मूल्य
स्वदेश ३)
विदेश ७शि.
१ प्रति का ।–)

विषय-सूची

सार्वदेशिक का यह पत्र मंगाने के लिये ।=) का टिकट भेजना जरूरी है।

॥ ओ३म् ॥

सार्वदेशिक

* सार्वदेशिक-आर्य-प्रतिनिधि सभा देहली का मासिक मुख पत्र *

वर्ष २० } सितम्बर १९४४ ई०] भाद्रपद, २००१ [दयानन्दाब्द १२१ { अङ्क ७

* वैदिक प्रार्थना

ओ३म् समत्स्वग्निमवसे वाजयन्तो हवामहे।
वाजेषु चित्रराधसम् ॥ ऋग्वेद ८।११।९

शब्दार्थ —हम सब (वाजयन्तः) ज्ञान और शक्ति की कामना करते और और उन्हें बढ़ाते हुए (समत्सु) आन्तरिक और बाह्य युद्धों और (वाजेषु) ज्ञान प्राप्ति के अवसरों पर (चित्रराधसम्) अद्भुत ऐश्वर्य वाले वा आश्चर्यजनक रूप से कार्यों में सिद्धि वा सफलता प्रदान करने वाले (अग्निम्) ज्ञान-स्वरूप सर्व-प्रकाशक परमेश्वर को (अवसे) रक्षा के लिए (हवामहे) पुकारते हैं—स्मरण करते हैं।

विनय—हे सर्व शक्तिमान् जगदीश्वर। आप शक्ति के और ज्ञान के भण्डार हैं। हम सब ज्ञान और शक्ति को प्राप्त करना चाहते हैं और इसलिए हम आपकी शरण में आते हैं। हमारे अन्दर दैवी और आसुरी भावनाओं का युद्ध वा संघर्ष चल रहा होता है ऐसे अवसरों पर तथा देशद्रोही समाज-घातक दुष्टों के साथ जब

हमें युद्ध करना पड़ता है ऐसे सब अवसरों पर हम सर्वशक्तिमान् आप भगवान् को ही सदा सच्चे हृदय से रक्षा के लिए पुकारते हैं। आप सर्वज्ञ हैं इसलिये ज्ञान की प्राप्ति के लिये भी हम सदा आपका शुद्ध हृदय से ध्यान करते हैं। आप हमें सच्चे ज्ञान तथा बल से सम्पन्न कीजिये जिससे आन्तरिक और बाह्य युद्धों में हम सदा विजयी हों। आपके सच्चे भक्तों को आपकी कृपा से अद्भुत दिव्य शक्ति और सब शुभ कार्यों में सफलता प्राप्त होती है, यह हमारा दृढ़ विश्वास है।

वैदिक सुभाषितामृत

['सार्वदेशिक' के सर्वसाधारण पाठक-पाठिकाओं तथा कुमार-कुमारियों के लाभार्थ हम वैदिक सुभाषितों को इस स्तम्भ में गत मास से दे रहे हैं। प्रत्येक आर्य नर-नारी को इनके अर्थ सहित स्मरण कर लेने से बड़ा लाभ होगा।—सम्पादक]

(गतांक से आगे)

(११) मानो दुःशंसो अभिदिप्सुरीशत् प्रसुशंसा मतिभिस्तारिषीमहि ॥

ऋ० २।२३।१०

(दुःशंस) दुष्ट विचार और भाषण करने वाला (अभिदिप्सुः) दम्भी, मक्कार (नः मा ईशत) हमारे ऊपर कभी शासन न करे। हम (सुशंसाः) उत्तम भावयुक्त भक्त (मतिभिः) श्रेष्ठ बुद्धि के साथ (प्रतारिषीमहि) संसार सागर को पार करें।

(१२) प्रिया देवस्य सवितुः स्याम ॥ ऋ० २।३८।१०

हम (सवितुः देवस्य) सारे जगत् को उत्पन्न करने वाले, सुख-शान्ति और आनन्ददाता भगवान् के (प्रिया स्याम) प्यारे बनें।

(१३) सुमङ्गलो भद्रवादी वदेह ॥ ऋ० २।४२।२

हे मनुष्य तू (सुमङ्गलः) उत्तम मङ्गल कारक लक्षणों और गुणों से युक्त तथा (भद्रवादी) सुख और कल्याण कारक वचनों का बोलने वाला हो कर (इह) इस जगत् में (वद) भाषण किया कर।

(१४) बृहद्वदेम विदथे सुवीराः ॥ ऋ० २।४०।६

हम (सुवीराः) उत्तम वीरता सम्पन्न होकर (विदथे) यज्ञों तथा सभाओं में (बृहद् वदेम) महत्त्वपूर्ण भाषण करें।

(१५) देवा देवानामनु हि व्रताग्मुः ॥ ऋ० ३।७।७

(देवाः) विद्वान् लोग (हि) निश्चय से (देवानाम् व्रता) सत्यनिष्ठ ज्ञानियों के सत्य भाषण, अहिंसा, परोपकारादि व्रतों का (अनु गुः) अनुसरण करते हैं।

(१६) सजोषसो यज्ञमवन्तु देवा ऊर्ध्वं कृण्वन्त्वध्वरस्य केतुम् ॥
ऋ० ३। ८। ८

(देवा) सत्यनिष्ठ विद्वान् लोग (सजोषस) परस्पर प्रीति-युक्त होकर (यज्ञम् अवन्तु) समस्त शुभकर्मों की रक्षा करें तथा (अध्वरस्य) अहिंसात्मक उत्तम कर्म की (केतुम्) ध्वजा को (ऊर्ध्वं कृण्वन्तु) ऊपर उठाएँ अर्थात् शुभ कार्यों में सहयोग देकर उन्हें बढ़ाते चलें।

(१७) मा ते सखायः मदमिद् रिषाम ॥ ऋ० ४।१२।५

हे परमात्मन् हम (ते सखायः) तेरे मित्र बनकर (सदमिद् मारिषाम) कभी भी हिंसित वा दुःखित न हों।

(१८) आरे स्याम दुरितादभीके ॥ ऋ० ३।३६।७

हम (दुरितात्) दुराचार से (आरे) दूर और सदाचार के (अभीके) समीप—उसमें स्थित सदा (स्याम) रहे ॥

(१९) त्वया वयमर्य आजि जयेम ॥ ऋ० ४।२०।३

(अर्य) हे सबके स्वामिन् (त्वया) तेरी सहायता से (वयम्) हम (आजि जयेम) आन्तरिक और बाह्य युद्ध मे विजय प्राप्त करें।

(२९) ऋतस्य धीतिर्वृजिनानि हन्ति ॥

(ऋतस्य) सत्य का (धीति) ध्यान और आचरण सब (वृजिनानि) पापों को (हन्ति) मार देता है—नष्ट कर देता है।

(२१) इन्द्रं नरो वाजयन्तो हवन्ते ॥ ऋ० ४।२५।८

(वाजयन्त. नरा) ज्ञान और बल की कामना करके उन्हें बढ़ाते हुए मनुष्य (इन्द्रम्) परमेश्वर को (हवन्ते) पुकारते हैं—सदा स्मरण करते हैं।

(२२) वयं देवेषु सुकृतः स्याम ॥ ऋ० ५।४८

(वयम्) हम (देवेषु) सत्य निष्ठ विद्वानों के अन्दर रह कर—उनका सत्सङ्ग करते हुए। (सुकृत स्याम) सदा उत्तम कम करने वाले बनें।

(२३) जातवेदो यशो अस्मासु धेहि ॥ ऋ० ५।४।१०

हे (जातवेदः) सर्वव्यापक और सर्वज्ञ परमात्मन्। (अस्मासु) हमारे में यशः धेहि) यश को धारण कराओ—तेरी कृपा और शुभ कर्मों के आचरण से हम यशस्वी बनें।

(२४) त्वंहि सत्यो अद्भुतः ॥ ऋ० ५।२३।२

हे परमेश्वर (त्वम्) तू (हि) निश्चय से (सत्य) सत्यस्वरूप और (अद्भुतः) आश्चर्यकारक गुण कर्म स्वभाव वाला है।

(२५) अग्निं धीभिः सपर्यत ॥ ऋ० ५।२५।५

हे मनुष्यो । तुम [अग्निम्] ज्ञानस्वरूप परमात्मा की (धीभि) उत्तम बुद्धियों और कर्मों के द्वारा (सपर्यत) पूजा करो।

—धर्मदेव विद्यावाचस्पति

वेद में विज्ञान

(लेखक—श्री दीनदयालुजी सोनी M Sc)

ऋग्वेद म० १ अ० १ सूक्त ६ मंत्र १

युंजन्ति ब्रध्नम् अरुषं चरन्तं परितस्थुषः ।
रोचन्ते रोचना दिवि ॥

अर्थ १—(ब्रध्नम्)[१] बहुत बडे (अरुष)[२] गति करने वाले और गति देने वाले चक्र को एव (तस्थुष परि) स्थिर धुरियों के चारों ओर (परिचरन्तं) गति करते हुए वा घूमते हुए पहियों को (युञ्जन्ति) संयमित करते हैं अर्थात् उनकी गति को स्थान विशेष में मर्यादा के अन्दर बाधते हैं।

(तस्थुष परि) स्थिर धुरी के चारों ओर (चरन्त)[३] चक्राकार गति करते हुए (ब्रध्नम्) महान् चक्र Fly-Wheel को (अरुष)[४] और अग्नि तथा (चरन्त)[४] वाष्प-वायु Steam or gas को परस्पर संयमित रूप से नियुक्त करते हैं। (चरन्त) चक्र को (अरुष) प्रेरित करने वाली अग्नि युत (ब्रध्न फैलती हुई वाष्प (दिवि)[६] को, तप्त करके गति देने वाले स्थान बौयलर Boiler में (रोचना) कोयला ईधन आदि अथवा ईजन मे पेट्रोल तेल आदि (रोचन्ते)[७] जलते हैं।

उपर्युक्त अर्थों के ग्रहण में प्रमाण—

(१) ब्ध्नाति इति ब्रध्नः (ब्रधि) फैलने वा बढ़ने वाली परन्तु संयमित (महान्) उणादि कोष (३-५)।

(२) ऋच्छति गच्छति इति अरुष (सूर्यो वा) उ० को० (४-७३) सूर्य अर्वे वा सुवेत वा, रवोर्वे ते वा—अर्थात् गति कर्म करने वाला और गति कर्म में प्रेरक। Flywheel स्वय वाष्प इंजन Steam Engine द्वारा प्रेरित तथा अन्य मशीनों के चक्रों को गति देने वाला होने से प्रेरित वा प्रेरक अरुष है महान् चक्र होने से ब्रध्न है।

(३) चरन्तं—गति अर्थक चर धातु से

(४) चरन्त—गति और भक्षण अर्थक चर धातु से अग्नि द्वारा जलकणों का भक्षण होकर एव तज्जनित वाष्प का गति होना इस हेतु चरन्तं का अर्थ वेगवान् वायु अर्थात् Steam वाष्प या गैस (तेल की वाष्प हुआ।

वायुः वै चरन् (तै० ३-६-४१)

(५) अरुष—अग्नि वा अरुष (तै० ३-६-४-१) सूर्य नाम अग्नि श० ६-४-२-२५।

(६) दिवि—दीव्यते यस्मिन्—(जिसमें प्रदीप्त-प्रकृष्ट रूपेण जलाया जावे वह स्थान) उ० को० १-१५६।

(७) रोचते ज्वलति निघं० १-१६। रुच्—प्रकाश प्रीति (धातुपाठे)।

विशेष—उपर्युक्त मन्त्र में ब्रध्न शब्द आया है जो निघट्ट (१ १४) और (३-३) में अश्व और महान् का पर्यायवाचक लिखा है।

तैत्तिरीय ब्राह्मण में ब्रध्न-आदित्य-सूर्य को कहा है यथा-असौ आदित्यः ब्रध्न' (तै० ३-९-४-१।२)। अतः ब्रध्नः सूर्य, अश्व और महत् वाचक है।

निरुक्त ४-४-२६-६२ में 'अस्य' शब्द के सूर्य परक व्याख्यान में यास्क मुनि निम्न वेद मन्त्र उद्धृत करते हैं। ऋ० १-१६४-२।

सप्त युञ्जन्ति रथम् एक चक्रं, एको अश्व' वहति सप्तनामा। इस मन्त्र की तुलना प्रस्तुत सूक्त के इस पहिले और दूसरे मन्त्रों से कीजिये हम इन मंत्रों को तथा अन्य २ मंत्रों को तुलनात्मक दृष्टि से साथ २ लिखते हैं।

ऋ० १-१६४-२	ऋ० १-६-२	ऋ० १-६-२
सप्त युञ्जन्ति	युञ्जन्ति	युंजन्ति
रथम् एक चक्रं	चरन्तं परितस्थुष	विपक्षसा रथे शोणा- नृवा हसा
एको अश्वः	ब्रध्नम्	हरी (हरी-अश्वौ)।
ऋ० २-३-१८-३		ऋ० १-५ ६
तस्य न अक्षः तप्यते	अरुष-चरन्त परि	अचित ऊति (निरन्तर गति चक्राकर)
भूरिभार	तस्थुषः	सनेत् इमं वाज (अश्व)

उपर्युक्त मन्त्रों से स्पष्ट है कि चक्र अथवा अश्व अथवा रथ यह तीनों शब्द एक ही अर्थ के वाचक हैं जिनके सयमित प्रयोग का उल्लेख ऋ० १-१६४-२ में आया है। इन चक्र, अश्व वा रथ की एक धुरी का होना ऋ० २-३-१९-३ से स्पष्ट है। धुरी के चारों ओर गति का चक्राकार होना प्रस्तुत मन्त्र में ब्रध्न शब्द के साथ कहा है जो स्वय भी अश्व वाचक निघंटु में कहा है। अतः स्पष्ट रूप से ब्रध्न शब्द प्रत्येक चक्र वा अश्व को कहेंगे जिस प्रकार सूर्य स्वय (षु प्रेरणे) स्वय पृथ्वी आदि को (सुवति) प्रेरित गति गति देता है एव (स्वीयते) त्रिलवायु द्वारा स्वय प्रेरित होता है एवमेव अन्य मशीनों के पहियों को गति देने वाला और स्वय (अग्नि जलवायु) मिश्रित वाष्प या गैस द्वारा धकेला जाना वाला महान् चक्र (Flywheel) ही ब्रध्न है।

भावार्थ —एक दृढ धुरी में (अरुष चरन्त) अविरल गति करता हुआ (Smooth Continued motion) महान् चक्र Flywheel को सयमित गति दो जो अग्नि जलवायु वा अग्नि, तेल, वायु द्वारा वाष्प वा गैस है वह तप्त स्थान में जहाँ कोयला वा ईधन आदि जलते हैं अर्थात् बोयलर वा ईजन में उत्पन्न हो-वह गैस वा वाष्प उस महान् चक्र को प्रेरित करे अर्थात् घुमावे और वह चक्र Flywheel अन्य मशीनों के कलपुरजों को चलावे। यह दूसरी गति Flywheel किस प्रकार अन्य मशीनों को दे इस विषय का दर्शन करते दूसरे मन्त्र मे दिया जायगा।

इस मंत्र के अन्य अर्थ—

२ अर्थ —(परितस्थुष) यह लोक लोकान्तरग्रह उपग्रह आदि तथा (चरन्तं) विद्यु त-चुम्बक-प्रकाश मय तेजोमय वायु (Electromagnetice waves of Light) तथा (अरुष) अग्नि गुण विशिष्ट रूप प्रकाशक तथा ताप उत्पादक किरणें एवं ब्रध्नम् महान् सूर्य (जो निज अरव (अशूङ्=व्याप्तौ) गुण से अथवा आकर्षण शक्ति की व्याप्ति द्वारा) परस्पर (युञ्जन्ति) नियम में बंधे हुए युक्त प्रतीत होते हैं। (रोचना दिवि) नक्षत्र एवं चन्द्रमा (सूर्य प्रकाश के अभाव में) (रात्रि में) प्रकाश करते हैं और अत्यन्त मनोहर प्रतीत होते हैं। अथवा नक्षत्र और चन्द्रमा का प्रकाश सूर्य के समान वा सूर्य के साथ सम्बद्ध है अर्थात् विशेष नियमित गति से संभव होता है। प्रमाण –इमे वै लोका परितस्थुषः,वायुः वै चरन्, अग्नि वा अरुषः नक्षत्राणि वै रोचनादिवि, आदित्यः ब्रध्नः। तै०३-९-४-१ चन्द्रमा-सोमस्यदिवि श० ७-३-१-४६।

भावार्थ—पृथ्वी आदि ग्रह सूर्य चन्द्र और नक्षत्र यह सब परस्पर आकर्षण द्वारा सयमित चक्राकार गति करते हैं।

अर्थ ३— ऋ० म० १ सूक्त ५ के अन्तिम ७-८-९-१० वें मन्त्रों में बतलाये हुए डाइनेमों के द्वारा विद्युत् उत्पत्ति कथन करके अब इस सूक्त ६ वें में डायनेमो की निर्माणकला का स्पष्टीकरण करते हैं।

(नोट—ऋ० म० १—सूक्त ५ का सम्पूर्ण विज्ञान परक अर्थ "दयानन्द सन्देश के दिसम्बर सन् १९४१ एव जनवरी, फरवरी सन् १९४२ के अङ्कों में निकल चुके हैं।)

पदार्थ ३—ब्रध्नम् (अरव)—व्याप्ति और संघात के गुणों से युक्त महान् अर्थात् प्रवृद्ध (अरुषं) रूप प्रकाशक अग्निमय तेज एव (चरन्तं) भक्षण और गति भाव में प्रवाहित विद्युत् तेज को Electrie Current को (तस्थुष परि) चारों ओर स्थित खुम्भियों के चारों ओर सयमित करें।

इस क्रिया से विद्युत् तेज के प्रवाह से केन्द्रित चहुँ ओर स्थित लौह खुम्भियाँ चुम्बक Electro Magnet बन जायेंगी। अब (तस्थुष परिचरन्तं अरुष) विद्युत् प्रवाह द्वारा उत्पन्न चुम्बक तेज को घूमते हुए प्रेरित अधितोति नामक आर्मेचर (विद्युत् उत्पादक यन्त्र) से सम्बन्ध करने पर महत्तर-प्रवृद्ध विद्यु त् प्रवाह उत्पन्न होता है।

* अध्यात्म सुधा *

तुम हमारे हम तुम्हारे

(लेखक—प० सिद्धगोपालजी 'काव्यरत्न', साहित्य वाचस्पति देहली)

तुम हमारे हम तुम्हारे।
जो सहारे आपके हारे हुए जीते, न हारे॥
हारना कैसा हृदय से जब हृदय का हार सौंपा।
मान जीवन आपको सानन्द जीवन भार सौंपा।
आज अन्तर की सु-वीणा का तुम्हें ही तार सौंपा।
कर लिया एकत्र सारे विश्व भर का प्यार सौंपा।
प्यार क्या करता मिले जब आप जैसे प्राण प्यारे।
तुम हमारे हम तुम्हारे॥१॥

आत्मा की आत्मा ही आत्मा में रह रह है।
सुन सके नहि आत्मा क्या आत्मा में कह रही है।
जल रहे उसमें अहा जल की सु-धारा बह रही है।
जा पड़ी सुखसिंधु में दुख ज्वाल से फिर दह रही है।
रा रहे फिर भी स्वयं ही लग रहे जब सब किनारे।
तुम हमारे हम तुम्हारे॥२॥

जो नहीं माने तुम्हे फिर विश्व मे वह मानता क्या?
ज्ञान को जाने नहीं फिर जान कर भी जानता क्या?
रूप को ही जानता वह रूप को पहिचानता क्या?
रूप में क्या रूप है मन मूढ़ मन मे ठानता क्या?
सत्य है बिन रूप ही यह कुछ नहीं है रूप सारे।
तुम हमार हम तुम्हारे॥३॥

देखलो ससार मे क्या रह सके आकार वाले?
नाम रूपों के भवन पर मौत के हैं बज्र ताले?
रत्न सब उसमें समाये रत्न थे जिससे निकाले।
कुछ समय सब है यहाँ पर फिर यहा गोरे न काले।
कुछ यहाँ बिगड़े बने कुछ, पर यहाँ से सब सिधारे।
तुम हमारे हम तुम्हारे॥४॥

अश्व हाथी ऊँट गर्दभ विश्व में सब पेट भरते।
सिर्फ भरना पेट ही था जन्म मानव का न धरते।
पीर बन जाते यहाँ पर जो यहां पर पीर हरते।
तारते संसार को संसार से "गोपाल" तरते।
तर गये इतने सु-जन आकाश में जितने न तारे।
तुम हमारे हम तुम्हारे॥५॥

प्रिय सत्यार्थप्रकाश हमारा

रचयिता—श्री ब्रह्मदेव गुप्ता (तिलहर वाले)

प्रिय सत्यार्थप्रकाश हमारा।

धार्मिक भाव जगाने वाला, सत्यमार्ग बतलाने वाला।
दुष्टों को दहलाने वाला, आर्य जाति का अटल सहारा।
प्रिय सत्यार्थ प्रकाश हमारा ॥ १ ॥

दृष्टि जभी इस पर पड़ जाती, दुश्मन की छाती फट जाती।
मन में आर्य जाति हर्षाती, मिट जाता है संकट सारा।
प्रिय सत्यार्थ प्रकाश हमारा ॥ २ ॥

जीवन का है सार इसी में, भारत का है मान इसी में।
उन्नति का सम्मान इसी में, धर्म प्राण भारत का प्यारा।
प्रिय सत्यार्थ प्रकाश हमारा ॥ ३ ॥

घर घर में इसको पहुंचाओ, भारत से अन्धकार मिटाओ।
आर्य जाति का मान बढ़ाओ, यही तुम्हारा तन, धन प्यारा।
प्रिय सत्यार्थ प्रकाश हमारा ॥ ४ ॥

वीरो इसकी शान न जावे, चाहे प्राण भले ही जावे।
विजय विश्व करके दिखलावे, तभी मनोरथ पूर्ण हमारा।

"नव वर्ष"

[श्री रमाकान्त शास्त्री "किरण" M A. M. S आयुर्वेदाचार्य, विशारद]

आज विश्व के क्रान्ति मार्ग में, युवको होना है तैयार।
तनिक न घबड़ाना बाधा से, मत खाना संकट में हार।
मचेगी उथल-पुथल त्रिभुवन में, दहलेगा सारा संसार।
माँ के चरणों पर निज सर रख,बोलेंगे सब जय जयकार।
नया जोश होगा युवकों में, नई उमगों का उत्कर्ष।
नया राज हो 'नवयुग' होगा, नया मनायेंगे 'नव वर्ष ।।

आर्य वीर दलों को सन्देश

[लेखक—श्री ओ३म्प्रकाश जी स० प्रधान सेनापति अ० भा० आर्य वीर दल देहली]

आय वीरो। आज आपने उस परम पिता परमात्मा तथा महर्षि दयानन्द की कृपा से क्षात्र धर्म की दीक्षा ली है, और तदनुसार आर्यवर्त देश, आर्य-संस्कृति आर्य-सभ्यता तथा आर्य-धर्म की रक्षा का भार अपने ऊपर लिया है, यह मार्ग कायरों के लिए विपत्ति-युक्त हो सकता है, परन्तु वीरों के लिए यह सदैव आनन्द-दायक रहा है। छत्रपति वीर शिरोमणि शिवाजी, महाराणा प्रताप, गुरुगोबिन्द-सिंह, बन्दा वीर वैरागी तथा अनेक फाँसी के तख्ते पर लटकने वाले आर्य वीरों की आनन्दमय घटनाये आपके सामने हैं।

परन्तु वीरो। इस व्रत को बड़ी सावधानी से निभाने का प्रयत्न करना। कहीं ऐसा न हो कि 'मियाँ गये नमाज छुड़ाने को, परन्तु रोजे गले पड़ गये" इस सग्राम में जिसमे कि आपने पदार्पण किया है, आप अकले विजय प्राप्त नहीं कर सकते। आपको एक साथ दो लड़ाइयों लड़नी होंगी अर्थात् संग्रामिक तथा सामाजिक। सग्रामिक विजय आप प्राप्त कर सकते हैं, परन्तु सामाजिक विजय प्राप्त करना आपकी सामथ्य से बाहर है, क्योंकि सामाजिक विजय प्राप्त करना ब्राह्मणों का कर्त्तव्य है, क्षत्रियों का नहीं। पूर्ण विजय के लिये इन दानों योद्धाओं को कन्धे से कन्धा भिड़ाकर लड़ना होता है। अन्यथा इनमें से एक प्रकार की विजय क्षणिक होती है। प्राचीन काल में आर्यों ने इस रहस्य को भली-भाँति समझा था जिसका फल यह हुआ कि आज उनके शत्रु उनकी चरण धूलि लेने में अपना गौरव समझते हैं।

संग्रामिक विजय अस्त्र-शस्त्र द्वारा की जाती है परन्तु सामाजिक विजय कभी तलवार से प्राप्त नहीं हो सकती। सामाजिक विजय की प्राप्ति के लिए त्यागी, तपस्वी, तथा विद्वान् पण्डितों की आवश्यकता हाती है, जो अपनी मधुर वाणियों द्वारा अच्छे उपदेश सुनाकर शत्रु के हृदय पर अपनी संस्कृति तथा सभ्यता की छाप लगादें और उसके हृदय में उसकी संस्कृति सभ्यता, साहित्य तथा इतिहास के प्रति घृणा तथा अविश्वास उत्पन्न करदें।

मुसलमान विजेताओं ने यही भयकर भूल की थी कि उन्होंने सामाजिक विजय भी तलवार द्वारा ही प्राप्त करनी चाही थो। परन्तु फल उल्टा निकला। औरंगजेब बादशाह के समय में ही इनका सारा राज्य छिन्न-भिन्न होगया था। अंग्रेज लोगों ने भी आरम्भ में यही नीति बर्तनी चाही, परन्तु सन् १८५७ ई० की क्रान्ति ने इनकी आखें खोलदीं। चतुर होने के नाते इन्होंने शीघ्र ही अपनी भूल को समझ लिया; और तत्पश्चात् लार्ड मैकाले ने स्कूल तथा कालेजों द्वारा सामाजिक विजय-प्राप्ति के लिए लड़ाई छेड़ दी। इङ्गलैंड के बड़े-बड़े विद्वान् इसी कार्य

में लग गये। कोई वेदों को निरर्थक पुस्तक सिद्ध करने लगा, कोई रामायण महाभारत को गल्प पुस्तक (नाविल) बतलाने लगा। सारांश, कि भारतीयों को असंस्कृतिक, असभ्य तथा कायर सिद्ध करने का पश्चिमी लोगों का अब तक प्रयत्न चालू है। ईसाई मजहब का प्रचार करने के लिए इन्होंने पादरियों को असंख्य धन देकर भेजा है जो नित्य प्रति हमारे हरिजन भाइयों में प्रचार करते हैं। मैं इस अपने लेख में अंग्रेजों की नीति की आलोचना करने नहीं बैठा हूँ, परन्तु वीरों को सामाजिक लड़ाई का ढङ्ग समझा रहा हू।

महर्षि दयानन्द ने विधर्मियों ईसाई तथा मुसलमानों के इन गुप्त मोर्चों को भली-भाँति समझ लिया था इसलिए उन्होंने खण्डनात्मक नीति को अपनाया। अपनी इस अन्याय के विरुद्ध लड़ाई को पूर्ण विजय-प्राप्ति तक चालू रखने के लिए स्वामीजी ने आर्यसमाज की रचना की। परन्तु समय के अभाव तथा परिस्थिति के कारण वह केवल ब्राह्मण धर्म का ही प्रचार कर सके। परन्तु लड़ाई का सब प्रोग्राम अपने ग्रन्थों में लिख गये। दुर्भाग्यवश आर्यसमाज ने उस नीति को नहीं अपनाया।

सौभाग्य से आज आर्य समाज ने उस नीति को अपनाया है और आर्य-शिरोमणि सार्वदेशिक आर्य-प्रतिनिधि सभा ने आर्य-संस्कृति सभ्यता तथा धर्म के रक्षार्थ क्षात्रधर्म का प्रचार करने के लिए आर्य-वीर दल का निर्माण किया है। आर्य समाज के सदस्यों का सैनिक अनुशासन से पूर्ण परिचय न होने के कारण इस कार्य में कुछ बाधा भी आती प्रतीत होगी, है परन्तु यह क्षणिक है और स्वाभाविक है।

याद रहे आपका क्षत्रिय दल है, और आर्य समाज के अन्य अनेक सदस्यों का ब्राह्मण दल। आप दोनों में से अकेला कोई विजय प्राप्त नहीं कर सकता। इसलिये आप पूर्णरूप से समाज के अधिकारियों का सहयोग लेकर कार्य करना। उनके वर्तमान व्यवहार को अपने प्रेम तथा कर्तव्यों से बदलने का प्रयत्न करना। कहीं ऐसा न होजाय कि आप अपनी भूल से आर्य समाज में दो पार्टी उत्पन्न करदें और आर्य-समाज की बची खुची शक्ति को भी क्षीण करदें। आप सैनिक विभाग (मिलिट्री डिपार्टमेंट) हैं और समाज सिविल। इसलिए एक दूसरे के साथ इसी तरह व्यवहार करने का प्रयत्न करना। इस कार्य की जिम्मेवारी आपके ऊपर अधिक है। मैं स्वीकार करता हूँ कि आर्य समाज के कई सदस्य आपको सेवक (शूद्र) समझते हैं और इसी प्रकार का आपसे कार्य लेने की आशा रखते हैं। परन्तु वीरो। उनका यह विचार क्षणिक है। आपके कार्य को देख कर उनका यह विचार स्वप्न समान होजावेगा। वे आपको क्षत्रिय समझने लगेंगे। इसलिए मुझे पूर्ण आशा है कि मेरे प्यारे सहयोगी आर्य वीर इस विषम परिस्थिति में सम्हल कर चलने

का प्रयत्न करेंगे। आज समस्त आर्य जाति की दृष्टि आपकी ओर है, उसे निराश मत करना और अपने पथ पर दृढ़ता-पूर्वक विघ्न-बाधाओं का सामना करते हुए बढ़े चलना।

आर्य वीर दलों को आदेश

अखिल भारतीय आर्य-वीर दल प्रधान केन्द्र, दिल्ली से समस्त आर्य-वीर दलों को आदेश दिया जाता है कि वे विजय दशमी के अवसर पर अपने यहाँ ता० २७-९-४४ तक पूरा सप्ताह निम्न प्रकार मनावें —

(१) प्रत्येक स्थान के दलपति को चाहिये कि वे अपने यहाँ की समस्त आर्य-वीर दल शाखाओं का आपस में निम्न विषयों पर प्रतियोगिता (Competition) करावें। यदि किसी स्थान पर अधिक शाखाएँ न हों तो समस्त वीरों को छोटी २ टोलियों में विभक्त कर देना चाहिये।

❀ विषय ❀

शारीरिकः—(१) लाठी (२) दौड़ (३) कबड्डी (४) रस्सा (५) अनुशासन अर्थात् प्रत्येक शाखाध्यक्ष अथवा टोली नायक अपनी शाखा को निश्चित कार्य क्रम करावेगा और दलपति उनके कार्य तथा अनुशासन पर नम्बर देगा।

बौद्धिक—आर्य-वीर दल ही क्यों ? विषय पर वीरों के भाषण हों।

प्रतियोगिता में विजयी शाखा अथवा टोली को किसी प्रकार का पारितोषिक दिया जाना चाहिए।

(२) सप्ताह में किसी एक रात्रि को समस्त वीरों को एक स्थान पर एकत्रित होना चाहिये और सब अपना २ भोजन साथ लेकर जाय। सबका प्रीति भोज एक साथ होना चाहिए अर्थात् सबका भोजन एक जगह मिला देना चाहिए और उसमें से सबको एक साथ भोजन करना चाहिए। मनोरंजनार्थ वीरों को छोटे २ वीरतापूर्ण अभिनय खेलने चाहिये और वीरता तथा देशभक्ति से पूर्ण कवितायें पढ़नी चाहिएँ। सम्मिलित गान भी करना चाहिये।

विजयदशमी वाले दिन (२७ सित.) प्रातः प्रत्येक स्थान की समस्त शाखाओं को दल सहायतार्थ धन-राशि एकत्रित करनी चाहिये। इसमें प्रत्येक वीर को श्रद्धापूर्वक सहायता देनी चाहिये। शहर के अन्य प्रतिष्ठित व्यक्तियों से भी सम्मान-पूर्वक सहायता लेनी चाहिये। समस्त दलपतियों को इसकी अभी से तैयारी करनी चाहिये। उन्हें विजय दशमी वाले सप्ताह तक ज्ञात होजाना चाहिये कि कौन शाखा कितना धन देगी। दशहरा वाले दिन शहर के सभी प्रतिष्ठित व्यक्ति आमन्त्रित किये जाने चाहिये। दशहरे वाले दिन का निम्न प्रोग्राम होगा :—

प्रातः ७ बजे—	ध्वजा-रोहण
„ ७ से ८ बजे तक	व्याख्यान
„ ८ से ९ „	दल सहायतार्थ धन इकट्ठा करना।
„ ९ से १० „ तक	व्यायाम तथा लाठी प्रदर्शन

इस अवसर पर स्थानीय समाज के प्रधान तथा मन्त्री अवश्य उपस्थित होने चाहियें, और उनके हस्ताक्षर सहित प्रधान केन्द्र, देहली को सूचित करना चाहिए कि कितना धन एकत्रित हुआ। इस धन का तीन चौथाई भाग प्रान्तीय कोष में भेज देना चाहिए। प्रधान केन्द्र प्रान्तीय केन्द्रों से इस प्रकार एकत्रित धन का कितना भाग लेगा यह बाद को निश्चित किया जावेगा।

नोट—दशहरे वाले दिन के प्रोग्राम को छोड़ सप्ताह के समस्त प्रोग्राम का क्रम, तिथि तथा समय प्रत्येक स्थान का दलपति निश्चित करेगा।

भवदीय—

ओ३म्प्रकाश

अखिल भारतीय आर्य वीर दल म० प्रधान सेनापति देहली।

आर्य समाज और दलितोद्धार

(लेखक—श्री पं० जगत् कुमार जी शास्त्री आर्योपदेशक

अखिल भारतीय स्वामी श्रद्धानन्द स्मारक ट्रस्ट देहली की ओर से सन् १६३४ में बिहार प्रदेशान्तर्गत छोटा नागपुर में उरांव मुंडा आदि जातियों की सेवा शिक्षा, उन्हें ईसाई होने से बचाने और ईसाई हो चुके लोगों को पुनः हिन्दू धर्म में लौटाने का पुण्य कार्य आरम्भ हुआ, जो कि इस समय भी जारी है। ट्रस्ट के तब से अब तक के कार्य का यह परिणाम हुआ है कि ईसाइयों के अनेक प्रमुख अड्डे उखड़ चुके हैं। हजारों हिन्दू जो ईसाई होगए थे, पुन हिन्दू धर्म में आ मिले हैं। ईसाइयों के माया जाल और पाखण्ड प्रसार की पोल खूब खुल चुकी है। लोगों के ईसाई होने की मात्रा बहुत घट गई है और पादरी जो कि गोरी सरकार और विदेशी धन के बल पर हिन्दुओं के धर्म दुर्ग पर आक्रमण कर रहे हैं अन्यत्र अपने काम का क्षेत्र बनाने पर विवश हो रहे हैं।

अब उन्होंने मध्यप्रान्त के छत्तीस गढ़ डिवीज़न और उसमें भी विशेषकर गोंडवाने अर्थात् मडला, बालाघाट, भडारा, छिन्दवाड़ा और बैतूल आदि जिलों को चुना है। पिछले डेढ़ दो वर्ष से गोंडवाने में ईसाइयों की हलचलें बहुत बढ़ गई हैं और बड़ी तेजी से मध्यप्रान्त के गवर्नरी राज का पूरा-पूरा फायदा उठा रही हैं। परन्तु प्रभु की कृपा से पाखण्ड का भांडा फूट गया है और षड्यन्त्र पकड़ लिया गया है। हिन्दू धर्म हितैषिणी संस्थाओं ने परिस्थिति को सम्भालने का यत्न शुरू कर दिया है जिसमें सफलता भी निश्चित है। मैं ईसाइयों की गति विधि जानने और भावी कार्य की रूप-रेखा तैयार करने के लिये १।७।४४ से मध्य प्रांत का दौरा कर रहा हूं। होशंगाबाद, इटारसी, बैतूल, चिचोली, नागपुर, कामठी, वर्धा, हींगनघाट चान्दा, नैनपुर, आदि होकर मैं ता० २३-७-४४ को जबलपुर पहुचा। ता० २५-७-४४ को एक विशेष घटना घटी जोकि संक्षेप से इस प्रकार है:—

मैं आर्य समाज में बैठा था। वर्षा जो कि पिछले पन्द्रह दिन से हो रही थी, जारी थी। तीन चार आर्य सज्जन और दो अन्य उपदेशक जिनके नाम लिखने उचित नहीं प्रतीत होते, भी उपस्थित थे। बाहिर आर्य समाज मन्दिर के बराम्दे में एक चार पाच मास का बच्चा रो और बिलबिला रहा था। जाकर मालूम हुआ कि वह मेहतरानी का बच्चा है। मेहतरानी उसे बराम्दे में सुलाकर लोगों के पाखाने साफ करने गई है। न जाने कितनी देर हुई और किधर गई मैंने धीरे से बच्चे को उठा कर गोद में ले लिया और थपथपा कर तथा कुछ बात बना कर उसे चुप करने और बहलाने का यत्न करने लगा। उपस्थित आर्य सज्जनों और उपदेशकों ने मुझे ऐसा करने से खूब रोका। बोले—यह 'देहली और पंजाब नहीं' जबलपुर है। आप की इस बात का जबलपुर समाज को भारी मोल चुकाना

पड़ेगा। आदि। आदि ॥ मैं हंसता रहा। फिर बोले—अब तुम्हें कपड़ों समेत नहाना होगा। इस पर मैंने कह दिया—कपड़े अच्छे कि बच्चा ? मेरा विरोध हो रहा है। देखें ऊँट किस करवट बैठता है।

यहाँ एक दूसरी घटना का उल्लेख भी करता हूं। सन् १९३७ की बात है। मैं ग्राम प्रचार के सिलसिले में मेंडू जि० अलीगढ़ गया था। उस दिन रात को भोजन की व्यवस्था प० रामप्रसाद जी प्रधान आर्य समाज व उपप्रधान आर्योप-प्रतिनिधि सभा अलीगढ़ के घर हुई। मुझे गली में मेज बिछा कर भोजन करने को बैठाया गया। मेरे एतराज करने पर एक छोटी सी कोठरी खोल दी गई जिस में ऊपर जाले तने थे। बन्द हवा की दुर्गन्धि बड़ी तीव्र थी और नीचे बिछी चान्दनी पर रेत की मोटी तह जमी हुई थी। मैंने इसे भी पसन्द नहीं किया। प० रामप्रसाद जी झुंझला कर बोले 'साफ़ क्यों नहीं कहते कि चौके में खाऊंगा। ठहरो प्रबन्ध करता हूँ।' फिर मुझे चौके में ले जाकर भोजन करने बैठाया गया। जो कुछ परोसा गया उसके अतिरिक्त चूल्हे के पास तवे पर दो रोटियाँ और रखी थीं। शेष बर्तन भांडा सामान वहाँ से हटा लिया गया था। तैसे कैसे मैं एक रोटी खाकर उठ आया और अगले दिन पास ही होने वाले आर्य समाज मुरसान के उत्सव में जा पहुँचा। आर्य समाज मुरसान के कार्यकर्ता बहुत उत्साही और मेरे पूर्व परिचित भी थे। पहिले दो दिन में मैंने चार भाषण दिये। खान पान की व्यवस्था पर एतराज का मौका दिया ही नहीं गया था। तीसरे दिन प० रामप्रसाद जी मेंडू वाले भी आ पधारे। उस दिन होने वाले मेरे भाषण रोके गये। हालाँकि मेरे पहिले चारों भाषण जनता ने पसन्द किये थे और समाज के कार्यकर्ता मेरे प्रति विशेष अनुराग दिखा रहे थे। खाने के समय भोजन पहिले दो दिनों के विरुद्ध थाली की बजाये पत्तल पर मुझे दिया गया। दूसरों के लिये थालियाँ ही रहीं। कार्यकर्ताओं का विशेष अनुराग जाता रहा। मुझे कहा गया—"पंडित जी उपदेशक बहुत हो गये हैं। प्रोग्राम में तो था पर आज आपका भाषण न हो सकेगा।"

शाम को मैं दुःखी-मन प० बिहारीलाल जी शास्त्री काव्यतीर्थ और प० सत्यव्रत जी शास्त्री के साथ भ्रमण को गया। मेरी किसी बात पर पं० सत्यव्रत जी सहसा बोले—"तब तो आप गौड़ ब्राह्मण हुए" मैंने कहा—"जन्म के आधार पर तो ऐसा ही समझिये" इस पर वे दोनों खूब हंसे पीछे पता लगा कि पं० रामप्रसाद जी शास्त्री ने आकर मुझे चमार प्रसिद्ध कर दिया था। अब भाषण रोकने और पत्तल में खाने आदि के कारण प्रकट थे।

आर्य समाज ने दलितोद्धार के लिये बड़ा ठोस काम किया है तथा अब भी कर रहा है। जबकि जमा खर्च तो खूब है ही। आर्य समाज के कार्य की उपेक्षा करना या उसे न सराहना, कृतघ्नता होगी। फिर भी ऊपर लिखे समान घटनायें आर्यों में भी कभी २ तो हो ही जाती हैं। जो कि आर्यसमाज के गौरव के अनुरूप नहीं हैं। क्रियात्मकता की जरूरत है। इति।

सत्यार्थप्रकाश माहात्म्य

(फरवरी अङ्क से आगे)

महर्षि ने—विश्व के सच्चे और अनुपम सेवक उस महर्षि दयानन्द ने—जैसा कि उसके ग्रन्थों, पत्रों और विज्ञापनों के अवलोकन से पता चलता है, इस ग्रन्थ का कोई भी भाग किसी का भी दिल दुखाने के लिये नहीं, अपितु विद्वज्जनों द्वारा निष्पक्ष हो पढ़ा व समझा जाकर सत्यासत्य का विवेक करके असत्य का त्याग व नाश एवं सत्य का ग्रहण प्रचार करने और इस प्रकार से संसार से दुःख और अन्याय का नाश कर सुख, शान्ति और न्याय का विस्तार करने के लिये परम सद् भावना से लिखा था। न इसमें काफिरों को तलवार के घाट उतारने का आदेश या निर्देश है और न इसमें किसी महापुरुष या धर्माचार्य का अपमान करने का आभास मात्र ही है। इसको न समझकर जो दुराग्रही पक्षपाती इसका विरोध कर इसे या इसके किसी भाग को जब्त या पृथक् कराने का स्वप्न देख रहे हैं, वे प्रतापी सूर्य का मेघाच्छन्न बना चिर अन्धकार फैलाने या विमल चन्द्र पर थूक कर उसे मलिन करने के प्रयास के समान विफल प्रयास करने का दुस्साहस कर अपनी नितान्त बुद्धिहीनता और अदूर दर्शिता का परिचय दे रहे हैं। पर ऐसा करते हुए वे इस बात को भूल जाते हैं कि निर्बल अबोध पक्षियों का चोरों और लुटेरों की भांति निर्दय विनाश करने वाले उल्लू और सदा अन्धकार में मुंह छुपाये पड़ा रहने के स्वभाव वाले चिमगादड़ तो तेजस्वी और प्रतापी सूर्य की ओर आंख उठाकर भी नहीं देख सकते और गरजते हुए काले मेघ भी शीघ्र ही छिन्न भिन्न हो जाते या पतन को प्राप्त हो भूमिसात् हो जाते हैं, एवं सर्वोप कारक, शांतिप्रदायक विमल शशी पर थूकने वाले का थूक भी स्वयं उसी पर पड़कर उसी के मुख को मलिन और दीन हीन बना देता है। ऐसे लोगों को सदा यह बात ध्यान में रखनी चाहिये कि आर्य कोई हलुवा नहीं जिन्हें कोई निगल जाये, ये कोई मिट्टी के ढेले या बताशे नहीं जिन्हें कोई सरलता से फोड़ डाले या चबा जाये; अपितु ये वे लोहे के चने हैं जिन्हें चबाने से पूर्व दांत भी वज्र बनाने पड़ेंगे (जोकि असम्भव है) या यदि ऐसे लोगों में कुछ भी सैद्धान्तिक दम है तो उन्हें चाहिये कि मैदान में आयें और अपने सिद्धान्तों को, जिनकी रक्षा की वे दुहाई दे रहे हैं, आर्य समाज के सत्यार्थप्रकाशादि ग्रन्थस्थ वैदिक सिद्धान्तों के

मुकाबिले पर न्याय व सत्य की कसौटी पर कस कर देखें। जिसका खरा सोना होगा, संसार उसे स्वयं अपनायेगा, जिसमें मिलावट, दोष और गंदगी होगी उसे छोड़ देगा। इस प्रकार मैदान से भाग कर अदालत का द्वार खटखटाने में कोई वीरता नहीं। अन्यथा याद रखें कि ये आर्य वीर उस के प्रिय शिष्य हैं जिसने पत्थरों और तलवारों को फूल और हलाहल विष-प्रहारों को ईश्वरेच्छा समझ प्रसन्नतापूर्वक सह लिया, पर सत्य को न छोड़ा। वे ही शक्तिसम्पन्न वीर हैं जिनकी संगठित शक्ति का लोहा बड़े सत्ताधारी शासक भी मानते रहे हैं। ये इन गीदड़भभकियों में आने वाले नहीं। यदि सत्यार्थप्रकाश पर जरा भी आंच आई तो ये अपनी जानें लड़ा देंगे पर अपने इस प्यारे अमर ग्रन्थ का बाल भी बांका न होने देंगे।

साथ ही मेरा आर्य भाई बहनों से भी यह विनम्र और सानुरोध निवेदन है कि उन्हें भी असावधान न रहना चाहिये और प्रशंसा से फूल कर निरुद्यम न पड़े रहना चाहिये अपितु अपना यत्किञ्चित् पारस्परिक मनोमालिन्य सर्वथा भुला कर और आलस्य, निस्तेजता एवम् अकर्मण्यता को दूर भगा कर अनुशासन, नियन्त्रण, उद्यम और आत्म संयम को धारण करने और सात्विक प्रेम प्रसार के द्वारा आने वाली भावी विपत्तियों का वीरता पूर्वक सामना करने के लिये तय्यार करने के लिये बद्धपरिकर हो जाना चाहिये। तदर्थ अविलम्ब अनथक प्रयत्न करना ही श्रेयस्कर होगा। ओ३म्शम्।

कुं० रणजीतसिंह सिद्धान्त शास्त्री
आर्यसमाज, जयपुर।

SPIRIT OF TOLERATION IN ISLAM

By Doctor Surya Deva Sharma, M A L T D Litt S Shastri Sahityalankar A J M E R)

In the last annual session of the All India Muslim League at Karachi held on the 25th Dec 1943 Prof Malik Inaitullah of Lahore while proposing the resolution to be adopted for the proscription of the 14th chapter of the Satyarth Prakash was reported to have stated that from its very inception Islam has never been harsh in criticising other religions, and that a spirit of toleration pervades all the tenets and injunctions of the holy Quran In supporting the resolution Maulana Abdul Hamid said that Satyarth Prakash vindicates spirit of intolerance and that the Quran is free from all such biting criticism and religious bigotry.

Now, let us consider how far these statements hold good and how far they can stand in the light of History

Leaving aside the question of Satyarth Prakash at present, let us see how far the tenets of the Quran and the injuctions and actions of the founder and followers of Islam are in conformity with the above statement of the Muslim League Leaders Has Islam been thoroughly tolerant to other religions ?

(I) Let us first of all see what the Holy Quran itself says about the treatment to be meted out to the non-Muslims or other religionists —

(a) "Kill the idolator wherever ye shallfind them and take them prisoners, besiege them and lay wait for them in, every convenient place "(Quran 9/I/5, Sal'es Translations.)

(b) Fight against those who believe not in God " (Quran 9/4/29)

(c) O true belivers (Muslims) wage war against such infidels as are near you and let them find severity in you " Quran 9/16/123)

Many more such verses can be quoted from the Holy Quran, a compilation of which has been made by Pt. Ram-Chandra ji Dehlvi in a separate booklet. Is this the spirit of Toleration which the Holy Quran breathes and commands for the followers of othe faiths. ?

(2) The commandments are forced not only on paper, but they have been faithfully executed too The illustrations are too many to be quoted, they are abundantly met with in History of Islam as well as of India, beginning with the murder in cold blood of Asma, Kab Ashraf and Abu Afah who wrote something against the prophet and underwent the immediate penalty of death, the dire deeds of the murderers having been highly appreciated and extolled by the prophet himself Was this the spirit of Toleration ?

(3) A similar treatment was meted out to those famous scholars of Yaman who put 4 questions to Caliph Ali on Islamic principles, but who got the reply on the point of sword instead of words of the Quran to remove their doubts Was this the spirit of toleration ?

(4) The big library of Alexandria containing some ten lacs of rare books and manuscripts was put to fire by the orders of caliph Umar in 640 A D on the false plea that the books were either against the Quran or in favour of it. In neither case they were worth preserving, because in the former case they deserved condemnation and in the latter they were unncessary, hence, they were all put to ashes Thus the most precious treasure of learning and knowledge

was lost to all the future generations for good. Was this the spirit of toleration to the books of other religions and learning ?

(5) Hence, Arthur Gilman M A wrote in his "History of Arabia' —If we look into the Quran, we find many tokens of this uncompromising spirit e g

"When you meet those who misbelieve, then stripe off their heads

(6) When prophet Mohammed took possession of Macca, he issued the following instructions to his followers - ' Fight, Fight, Fight ! let no idolator perform the pilgrimage. Keep no faith with them Kill them by fair means beguile them by stratagem disregard all ties of blood, friendship and humanity sweep the unbelievers from the face of the earth in the name of Allah and the prophet History of Arabia by Arthur Gilman M A) Is this the spirit of Toleration ?

(7) Similar opinions have been expressed by several other historians and eminent writers on Toleration in Islam A few quotations from them will, I think, suffice :—

Dr Thomas Hunter B D Professor of Arabic in the University of Glasgow (Scotland) writing on mohammadenism in "Encyclopedia of religions and Ethics"Vol viii page 877 says" On the question of religious toleration the Quran contains a series of utterances belonging to different periods and varying from large minded tolerance to extreme fanaticism At times no form of controversy is permitted Elsewhere the muslims are told to fight with other com munities relentlessly until they accept Islam Freindship with members of other communities is forbidden, the most intolerant utterances are the latest ones "

(8) Washington I rving writes in his book "Life of Mohammed" :—"When Mohammed reached Median, he issued the following proclamation for the muslims .—Let

those who promulgate my faith enter into no argument or discussion but slay all who refuse obedience to the law The sword is the key of Heaven and Hell To convince stubborn unbelievers there is no argument like the sword " Is this the spirit of toleration ?

(9) Colonel G. Melson writes in his Decisive battles of India " Bigotry rules the Mohammadan world ' and so it is evident from the muslim period of India History

(To be continued)

आर्य कुमार जगत्

आर्य कुमारों से निवेदन—

प्रिय आर्य कुमारो,

यह जान कर तुम्हें अति हर्ष होगा कि इस वर्ष दशहरे की छुट्टियों में ता० २२, २३, २४, व २५ सितम्बर १९४४ को संयुक्त प्रांत के प्रसिद्ध नगर मुरादाबाद में अखिल भारत वर्षीय आर्य कुमार परिषद् का २८ वॉं सम्मेलन श्री पूज्य खुशहाल चन्द जी आनन्द के सभापतित्व में बड़े समारोह से मनाया जावेगा।

इस सम्मेलन के अवसर पर आर्य जगत् के प्रसिद्ध नेताओं व विद्वानों ने सम्मिलित होने की स्वीकृति दे दी है और इस सुनहरी अवसर पर आर्य युवकों को अपने कर्त्तव्य की ओर ध्यान देते हुए अधिक से अधिक संख्या में सम्मिलित होकर अपने जीवन का परिचय देना चाहिये। यह बात किसी से छुपी हुई नहीं है कि इस समय जब कि समस्त संसार भिन्न २ आपत्तियों में गुज़र रहा है, वहां आर्य जाति के संकट भी अन्तिम पराकाष्ठा को पहुंच चुके हैं। आज आर्यों के धर्म पुस्तक पर भी मुसलिम लीगियों व खाकसारों के आक्रमण बल पूर्वक हो रहे हैं। इसलिये रामकृष्ण की सन्तान, महर्षि दयानन्द के अनुयायियो। क्या अब भी सोते रहोगे? और इस संकट के समय शेरों की तरह दुश्मनों को ललकारने का साहस न करोगे? इस समय समस्त आर्य जगत् का ध्यान अपने नवयुवकों की ओर लगा है। क्योंकि जाति का बनाना युवकों पर ही निर्भर है।

मुझको आशा है, कि मेरे इस निवेदन का उत्तर समस्त आर्य जाति के नवयुवक क्रियात्मक रूप में देंगे।

निवेदक—

विश्वम्भर दयाल मन्त्री

भारत वर्षीय आर्य कुमार परिषद्, देहली।

अन्तरङ्ग सभा का अधिवेशन

अखिल भारत वर्षीय आर्य कुमार परिषद् की एक विशेष बैठक ता० २३ सितम्बर १९४४ ई० शनिवार को मुरादाबाद में होगी जिसमें अनेक आवश्यक विषयों पर विचार होगा।

वार्षिक साधारण सभा

निवेदन है कि भारत वर्षीय आर्य कुमार परिषद् का वार्षिक अधिवेशन २४ सितम्बर १९४४ को मुरादाबाद में सम्मेलन के अवसर पर होगा। जिसका कार्यक्रम निम्नलिखित है;—

सार्वदेशिक सभा के कुछ महत्वपूर्ण निश्चय

निश्चय सं० १७

विज्ञापन का विषय सं० १८ सत्यार्थप्रकाश निधि की वर्तमान स्थिति तथा उसके उपयोग का विषय प्रस्तुत होकर सभा कार्यालय में अब तक प्राप्त हुई राशि की सूचना दी गई। निश्चय हुआ कि इस २ लाख की अपील की राशि में से प्रथम प्राप्त हुए ५००००) रु० सत्यार्थप्रकाश रक्षा कार्य के लिए सुरक्षित रखे जायं और बाद की राशि को सत्यार्थप्रकाश प्रचार तथा भिन्न २ भाषाओं के अनुवादों के तथा इस विषयक अन्य उपयोगी साहित्य के प्रकाशनादि में व्यय किया जावे।

निश्चय सं० २०

बिहार आर्य प्रतिनिधि सभा की सहायता कार्य के लिए बिहार भूकम्प के शेष ६००० रु० दिए जाने का विषय प्रस्तुत होकर आर्य प्रतिनिधि सभा बिहार का १७ तथा २२ अगस्त के पत्र पढ़े गये। निश्चय हुआ कि इस कार्य के लिए बिहार भूकम्प का उपर्युक्त ६०००) रु० तक क्रमशः बिहार की सभा को दिया जाये और पहली किस्त के तौर पर इस समय २०००) रु० दिए जाय। इस कार्य के लिये इस सभा की ओर से एक अपील भी प्रकाशित की जाये।

निश्चय सं० १६

श्री राजगोपालाचार्य की पाकिस्तान विषयक नई योजना के विषय में आर्य-समाज के अभिप्राय के स्पष्टीकरण का विषय प्रस्तुत होकर श्री मान्य घनश्यामसिंह जी गुप्त का पत्र तथा प्रस्ताव और श्री प० इन्द्रजी विद्यावाचस्पति मन्त्री सभा का महात्मा गान्धीजी को भेजा हुआ पत्र पढ़ा गया। निश्चय हुआ कि :-

इस सभा की यह निश्चित सम्मति है कि पंचम अखिल भारतीय आर्य महासम्मेलन देहली ने निम्न प्रस्ताव द्वारा न केवल समस्त आर्यों बल्कि अन्य हिन्दुओं के भी आन्तरिक भावों का प्रकाश किया था।

"अखण्ड भारत के टुकड़े करना हर दृष्टि से हानिकारक है और उसका हिन्दुस्तान और पाकिस्तान में विभाजन करने की योजना का यह सम्मेलन तीव्र विरोध करता है और अखण्ड शक्ति-सम्पन्न केन्द्रीय सरकार का ही होना परमावश्यक समझता है।"

सार्वदेशिक सभा की अन्तरंग सभा इस अवसर पर यह घोषणा कर देना आवश्यक समझती है कि:—

(१) आर्य समाज अखण्ड भारत के सिद्धान्त को मानता है तथा सदा से मानता रहा है।

(२) मुस्लिम लीग का पाकिस्तान के लिए दावा मुस्लिमेतर जातियों विशेषत हिन्दुओं के लिए सर्वथा अन्यायपूर्ण है और इसका विरोध तथा प्रतिरोध करना सबका कर्तव्य है।

श्री पं० इन्द्रजी विद्यावाचस्पति [मन्त्री सार्वदेशिक सभा] का

महात्मा गांधीजी को महत्वपूर्ण-पत्र

देहली
१-५-२००१
२५-८-१९४४

पूज्य महात्माजी, सादर प्रणाम।

इस पत्र द्वारा मैं आपकी सेवा मे जो निवेदन करने लगा हूँ वह मेरी ओरसे नहीं है वह सम्पूर्ण आर्य समाज की ओर से है। इस वर्ष फरवरी मास में दिल्ली में जो अखिल भारतीय आर्य सम्मेलन हुआ था, उसमें यह प्रस्ताव स्वीकार किया गया था 'इस सम्मेलन की सम्मति में अखण्ड भारत के टुकडे करना हर दृष्टि से हानिकारक है, अत उसका हिन्दुस्तान तथा पाकिस्तान मे विभाजन करने की योजना का यह सम्मेलन तीव्र विरोध करता है और अखण्ड शक्ति वाली केन्द्रीय सरकार का होना भारत के हित में आवश्यक समझता है।"

इस प्रस्ताव को आपकी सेवा में भेजते हुए मैं आर्य समाज की यह अभिलाषा आप तक पहुँचाना चाहता हू कि आप भारत के अनेक्य की समस्या को हल करने में सफल हों परन्तु यह ध्यान रखें कि ऐसा कोई भी हल स्थायी नहीं हो सकता, और न देशवासियों के अधिक मत को पसन्द होगा जिसस भारत के टुकडे हो जायें। कुछेक लोगों को छोड़ कर जिनकी सख्या शायद सौ में एक से भी कम हो शेष सब राष्ट्रीय भावना रखने वाले भारतवासी जिन्ना राजा योजना के घोर विरोधी हैं। यह योजना यदि नेताओं द्वारा स्वीकृत भी हो जाये तो जनता उसे स्वीकार नहीं करेगी, जिसका परिणाम गृहयुद्ध होगा। इस दृष्टि से इस योजना को किसी रूप में भी स्वीकार करना देश के लिए लाभदायक न होगा। हिन्दू समाज में सिक्ख और आर्य समाज ये दो सस्थाये भिन्न-भिन्न दृष्टिकोण की प्रतिनिधि मानी जा सकती हैं। यह दोनों विभाजन के विरोध मे सवथा एकमत हैं। इससे आप अनुमान लगा सकते हैं कि लोकमत का प्रवाह किधर बह रहा है।

राष्ट्रीय आन्दोलन का भविष्य आपके निश्चय पर अवलम्बित है। ऐसा प्रतीत होता है कि यदि किसी रूप में भी आप द्वारा पाकिस्तान की योजना का समर्थन होगया तो भारत का राजनीतिक भविष्य साम्प्रदायिकता की बाढ़ में बह जावेगा।

भवदीय विनीत
इन्द्र
मन्त्री, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, देहली

सम्पादकीय

सत्यार्थप्रकाश से इतनी चिढ़ क्यों ?

ऋषि दयानन्द और अन्य समालोचक

पाठक महोदयों ने इस समाचार को पत्रों में पढ़ा होगा कि लाहौर में कुछ मुसलमानों ने सत्यार्थप्रकाश के उर्दू अनुवाद के सम्पादक श्री स्वामी वेदानन्द जी पर लाहौर के सीनियर सब जज की अदालत में मुकद्दमा दायर किया है जिसमें कहा गया है कि सत्यार्थप्रकाश के १४ वें समुल्लास में इस्लाम पर दिल दुखाने वाली आलोचना की गई है और हजरत मुहम्मद साहेब पर नापाक हमले (अपवित्र आक्रमण) किये गये हैं जिन्हें मुसलमान बर्दाश्त (सहन) नहीं कर सकते। इसलिये १४ वें समुल्लास की बिक्री को बन्द कराने और भविष्य में इसे न छपवाने का हुकम स्वामी वेदानन्द को दिया जाए इत्यादि।

इस समाचार को पढ़कर हमें आश्चर्य नहीं हुआ क्योंकि गत लगभग २ वर्षों से इस प्रकार के निन्दनीय प्रयत्न सत्यार्थप्रकाश की ज़ब्ती के सम्बन्ध में कई स्थानों पर किये जा रहे हैं। सत्यार्थप्रकाश का १४ वां समुल्लास पृथक् छपा हुआ ग्रन्थ नहीं है वह सम्पूर्ण पुस्तक का एक भाग मात्र है जिसे शेष ग्रन्थ से अलग नहीं किया जा सकता ऐसी अवस्था में इस एक समुल्लास की ज़ब्ती के आन्दोलन का अर्थ सारे ग्रन्थ की ही ज़ब्ती का है। सत्यार्थ प्रकाश में जो अन्य मतों के समान इस्लाम की आलोचना है वह अत्यन्त पवित्र भाव से की गई है जो इसके अमर कीर्त्ति लेखक महर्षि दयानन्दजी के शब्दों में यह है कि 'यह लेख केवल मनुष्यों की उन्नति और सत्यासत्य के निर्णय के लिए सब मतों के विषयों का थोड़ा-थोड़ा ज्ञान होवे इससे मनुष्यों को परस्पर विचार करने का समय मिले और एक दूसरे के दोषों का खण्डन कर गुणों का ग्रहण करें न किसी अन्य मत पर न इस मत पर झूठ मूठ बुराई वा भलाई लगाने का प्रयोजन है किन्तु जो भलाई है वही भलाई और जो बुराई है वही बुराई। सबको विदित होवे न कोई किसी पर झूठ चला सके और न सत्य को रोक सके और सत्यासत्य विषय प्रकाशित किए जाने पर भी जिसकी इच्छा हो वह न माने वा माने किसी पर बलात्कार नहीं किया जाता यह लेख हठ दुराग्रह, ईर्ष्या, द्वेष वाद विवाद और विरोध घटाने के लिए किया गया है न कि इनको बढ़ाने के अर्थ। क्योंकि एक दूसरे की हानि करने से पृथक् रह कर परस्पर को लाभ पहुँचाना हमारा मुख्य काम है। अब यह चौदहवें समुल्लास में मुसलमानों का मत विषय सब सज्जनों के सामने निवेदन करता हूँ विचार कर इष्ट का ग्रहण अनिष्ट का परित्याग कीजिये।" (सत्यार्थ प्रकाश १४ वें समुल्लासकी अनुभूमिका) इसपर भी यदि मुसलमान भाई इस शुद्ध भाव से की आलोचना में चिढ़ते हैं तो यह उनकी अपनी निर्बलता और मतान्धता है। उनके अपने मान्य ग्रन्थ कुरान शरीफ़में अन्य मतावलम्बियों के लिये बहुतही कठोर और उत्तेजक वाक्यों और शब्दों का प्रयोग किया गया है जैसा कि अरबी

और कुरान के सुप्रसिद्ध विद्वान् श्री पं० रामचन्द्रजी देहलवी ने अपनी इस विषयक संग्रहात्मक पुस्तक में सप्रमाण दिखाया है और जिससे मुसलमान बन्धु इन्कार नहीं कर सकते। उदाहरणार्थ पैगम्बर होने के दावेदार मिर्जा गुलाम अहमद साहेब कादियानी ने अपनी पुस्तक 'अजाला अवहाम' के पृष्ठ १०० पर लिखा है कि "तो फिर इकरार करना पड़ेगा कि कुरान शरीफ गालियों से पुर है क्योंकि जो कुछ बुतों की जिल्लत और बुतपरस्तों की हरकत (मूर्तिपूजक निन्दा) और उनके बारेमें अलफाज इस्तेमाल किए गए हैं वे हरगिज ऐसे नहीं हैं जिनके सुनने से बुतपरस्तों के दिल खुश हुए हैं। "कुरान शरीफ जिस आवाज बुलन्दसे सख्त जबानीके तरीके को इस्तेमाल कर रहा है एक सख्त दर्जे का नादान भी इससे बेखबर नहीं रह सकता।" (पृ० १०४) ऐसी अवस्था में यदि अन्य मतावलम्बी कुरान की जब्ती का आन्दोलन करें तो क्या मुसलमान भाई इसे उचित समझेंगे? क्या विद्वान् मुसलमानों से यह बात छिपी हुई है कि युरुप अमेरिका के अनेक सुप्रसिद्ध विचारकों ने इस्लाम और उसके प्रवतक की कैसी कठोर आलोचना अपने ग्रन्थों में की है जिनमें "Robber chief" "Unbiidled libertine (See Dr. Thomas Huuter's article on Mohammdenism in the Ency- clopedia of Religion & Ethics Vol 8 P 878) 'Lustful (कामी) Vain (अभिमानी) egotistical (अहंकारी) Tyrannous (अत्याचारी) and Selfdeceiver (आत्मवञ्चक) 'Treacherous and Ruthless" (विश्वासघाती और निर्दय) (H G Wells in Out line of History New York Edition P 608-609) 'Licentious ness grew upon Mohammed in the latter part of his life and upto its very close" (Griggs in farishta History of the Mohammedan Power in India P 29) ' Give the world to Islam and man's highest vision in gone for ever" (Lunt in the Story of Islam P 192)

The later books of the Karan teem with passages which counsel strong mesures to be taken with infidels. it is written "When ye meet the infidels, strike off their heads until ye have made a great slaughter among them" (Studies in Mohammedanism by John Pool P. 371) इत्यादि भयङ्कर शब्दों का प्रयोग किया गया है। सर विलियम मूर ने जो संयुक्त प्रान्त के लेफ्टिनेन्ट गवर्नर रह चुके थे Life of Mohammet में यहाँ तक लिखा कि—The Sword of Mahomet and the Koran are the most stubborn enemies of civilisation, liberty and Truth which the world

has yet known " (Life of Mahommet by Sir William Mun P 506) अर्थात् मुहम्मद की तलवार और कुरान ये संसार में सभ्यता, स्वतन्त्रता और सत्य के सबसे कट्टर शत्रु हैं। इत्यादि

इस्लाम की महर्षि दयानन्द जी द्वारा सत्यार्थप्रकाश में की गई युक्ति-युक्त आलोचना ऊपर निर्दिष्ट सुप्रसिद्ध पाश्चात्य विद्वानों की आलोचना के आगे बिल्कुल नर्म है, यह लिखने में हमें जरा भी सकोच नहीं। ऊपर प्रयुक्त कठोर शब्दों का अनुवाद तक देना हमें अप्रिय और अरुचिकर प्रतीत होता है। क्या हमारे मुसलमान भाई ऐसे सब प्रसिद्ध ग्रन्थों को जब्त कराने और उनके सुप्रसिद्ध लेखकों पर जिनमे से जगद्विख्यात लेखक श्री हेच्, जी वेल्स, श्रीबर्नार्डशा आदि जीवित हैं मुकद्दमा चलाने का यत्न करेंगे? यदि नहीं तो सत्यार्थ प्रकाश से ही उनको इतनी चिढ़ क्यों है यह समझ मे नहीं आता। हमारे मुसलमान बन्धु यदि सत्यार्थप्रकाश की युक्ति-युक्त सद्भावना से लिखित आलोचना से लाभ उठाकर युक्ति-विरुद्ध बातों और असहिष्णुता का परित्याग करदें, तभी उनका कल्याण होगा। आर्यों को मुकदमे से भयभीत और चिन्तित होने की कोई आवश्यकता नहीं। उन्हें उत्साह पूर्वक इस पवित्र धर्मग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के अधिक से अधिक प्रचार और रक्षा के कार्य में तत्पर रहना चाहिए और दो लाख रु० की सत्यार्थ प्रकाश निधि की पूर्ति मे अब जरा भी विलम्ब न करना चाहिए।

सेनाओं में धार्मिक अत्याचार—

भारतीय सेनाओं में आर्यों को पूर्ण धार्मिक स्वतन्त्रता तथा सुविधायें प्राप्त नहीं हैं, इस विषयक टिप्पणी हम 'सार्वदेशिक' के सम्पादकीय स्तम्भों मे पहले दे चुके हैं, किन्तु जब पिछले दिनों हमें भिवानीके उत्साही आर्य श्री फूलचन्द्रजी शर्मा (जो आजकल वहाँ आर्यसमाज के मन्त्री हैं और पहले प्रधान भी रह चुके है) के सुपुत्र श्री एम० पी त्रिवेदी की फाइल देखने का अवसर प्राप्त हुआ तो हम स्तब्ध रह गये। श्री फूलचन्द्रजीके सुपुत्र की आयु लगभग२० वर्ष की थी। वह सेनामें भरती होगया था। २६ जुलाई को उसकी एक फौजी हस्पताल में मृत्यु हुई। जिसके कारण के विषय में फाइल में उसका अपना वक्तव्य यह है कि हवलदार अता मुहम्मद ने मुझे सब तरह का मांस पकाने और परोसने का हुक्म दिया और साथ ही कहा कि यदि तुम ऐसा नहीं करोगे मैं तुम्हें नजरबन्द करवा दूँगा, और जो कुछ मैं करूँगा, कर्नल साहब भी उसे न बदलेंगे। मैंने अनुभव किया कि 'What was the use of life if were compelled to lose my religion' ऐसे जीवन का क्या लाभ है यदि मुझे अपना धर्म छोड़ने के लिए बाधित किया जाए इसलिए मैंने अपने कपड़ों पर मट्टी का तैल छिड़क कर आग लगा दी।" इस दुर्घटना के एक दो घंटे बाद उस युवक का देहान्त होगया। इस प्रकार के अन्य उदाहरण भी सम्भव हैं कहीं हों।

श्री फूलचन्द्र जी को इस युवक के बीमार होने की सूचना २७ जुलाई का तार द्वारा दी गई जबकि २६ जुलाई को ही उसका उपर्युक्त दुर्घटना से देहान्त हो चुका था। यह भी बड़े आश्चर्य की बात है। श्री फूलचन्द जी के साथ इस दुःख में हमारी पूर्ण सहानुभूति है हम सेनाधिकारियों तथा वायसराय महोदय का ध्यान सेनाओं में होने वाले इन धार्मिक अत्याचारों की ओर आकर्षित करते हुए अनुरोध करते हैं कि इस प्रकार के अत्याचार के लिये उत्तरदाता व्यक्तियों को उचित दण्ड दिया जाए और भविष्य में ऐसे धार्मिक स्वतन्त्रता घातक कार्य न हों इस प्रकार की व्यवस्था की जाए अन्यथा सर्वत्र घोर असन्तोष फैल जायगा।

हिन्दी रक्षा तथा जनता का कर्तव्य

केन्द्रीय हिन्दी रक्षा समिति देहली सार्वदेशिक सभा तथा अन्य संस्थाओं के सहयोग से हिन्दी भाषा की रक्षार्थ जो अभिनन्दनीय प्रयत्न कर रही है उस का विवरण हमें प्राप्त हुआ है। उससे यह स्पष्ट है कि डाक-विभाग के अधिकारी अब अपनी भूल को सुधारने का प्रयत्न कर रहे हैं और उन्होंने इस बात का आश्वासन दिया है कि भविष्य में हिन्दी पतों के कारण पत्रों को मृत पत्र कार्यालयों (D L O) में न भेजा जाएगा पर इसमें हम समस्त आर्य हिन्दू जनता और विशेषतः हिन्दी पत्र सम्पादकों और व्यवस्थापकों का सहयोग चाहते हैं। वे यदि इस कार्य में पूर्ण सहयोग दें और कुछ असुविधाओं की पर्वाह न करें तो हमें निश्चय है कि इस पुण्य कार्य में हमें शीघ्र ही पूर्ण सफलता प्राप्त होगी।

धर्मदेव विद्यावाचस्पति

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

दान सूची

आर्य समाज स्थापना दिवस मास अगस्त ४४

२५) श्री मन्त्री जी आर्य समाज आगरा
५) श्री मन्त्री जी आर्य समाज बादल (रोहतक)
४) श्री मन्त्री जी आर्य समाज हैदराबाद (सिन्ध)
५) श्री मन्त्री जी आर्य समाज भटपुरा पो० असमोली (मुरादाबाद)
२) श्री मन्त्री जी आ० स० खिजराबाद तह० जगाधरी जि० अम्बाला
६।।।=) श्री मन्त्री जी आ० स० नगीना
८।।) श्री मन्त्री जी आ० स० बनौरा (मुरादाबाद)
२।।=) श्री मन्त्री जी आ०स० होशंगाबाद
१३।।।=) श्री मन्त्री जी आ०स० अमरोहा
१०) श्री मन्त्री जी आ० स० रानी का तालाब फीरोजपुर
७।) श्री मन्त्री जी आ० स० मझ शहर (पंजाब)
५) श्री मन्त्री जी आ० स० सुरीर (मथुरा)
७) श्री मन्त्री जी आ० स० जौनपुर
१०) श्री मन्त्री जी आ० स० जबलपुर
८ श्री मन्त्री जी आ० स० बुरहानपुर
७) श्री मन्त्री जी आ० स० कैथल (करनाल)

१२३=) योग
५१२=) गत योग

६१५।)

दान सूची सत्यार्थ प्रकाश निधि मास अगस्त ४४

पंजाब प्रान्त

१५) श्री लखमीदास जी चकवाल
१३।।) श्री मन्त्री जी आ० स० मुक्तसर
२०) आ० स० छोबी (हिसार)

राजस्थान प्रान्त

५) श्री गयादीन प्रसाद जी पाटोली लश्कर
१०१) श्री मन्त्री जी आ० स० जयपुर
८००) श्री मन्त्री जी आ० प्रति० सभा राजस्थान
१००) श्री मन्त्री जी आ० स० अलवर

संयुक्त प्रान्त

४) श्री मन्त्रिणी आ० स० बिहारीपुर बरेली
१०१) श्री डा० बाबूराम जी आढ़ती फतेहपुर
२५) श्री मन्त्री जी आ० स० सहारनपुर
१४) श्री रणजीतसिंह छोटेसिंह जी C/o शीशराम जी खेड़ी पो० लावड़ (मेरठ)
१०) श्री मन्त्री जी आ० स० बघरा जि० मुजफ्फर नगर
७) श्री मन्त्री जी आ० स० सुरीर जि० मथुरा

बम्बई प्रान्त

१००) श्री ठा० दिलीपसिंह जी बारपुर काठियावाड़ द्वारा प० कन्हैयालाल जी मिश्र आर्योपदेशक
१०१) श्री मन्त्री जी आ० स० कांकरिया रोड अहमदाबाद
१०) श्री मन्त्री जी आ० स० भरुच

बिहार प्रान्त

२।।) श्री मन्त्री जी आ०स० नामदारा जि० गया

मद्रास प्रान्त

५०) श्री मन्त्री जी आ० स० कार्केल

बंगाल प्रान्त

१००) श्री मंत्री जी आ०स० बेलियाघाटा कलकत्ता

मध्यप्रदेश

२) श्री बी० आर कम्बल नागपुर

१५८१)

१३५१८॥=) गत मास का योग

१५०६६॥=)

दान मास अगस्त सन् १९४४

वेद प्रचार निधि

१) श्री एम० एम०घट कोदर बम्बई

५) श्री मन्त्री आर्य समाज लोअर पटेल बम्बई

२१) श्री बा० प्यारेलाल जी काशीपुर पुत्र के विवाहोपलक्ष्य में

५) श्री बा० हरस्वरूप जी देहली पुत्री के विवाहोपलक्ष्य में

५) श्री मन्त्री जी आ० स० लातुर (निजाम)

५) श्री मन्त्री जी आ० स० दनकौर (सत्याग्रह दिवस)

१०) श्री० मन्त्री जी आ० स० आसन सोल (सत्या० दिवस)

११।) श्री मन्त्री जी आ० स० आकोट (अकोला) (स० दिवस)

१३) श्री मन्त्री जी आ० स० अमरोहा (स० दिवस)

५) श्री मन्त्री जी आ० स० कारंजा (स० दिवस)

५) श्री मन्त्री जी आ० स० सुरीर (मथुरा)

८) श्री मन्त्री जी आ० स० जौनपुर (स० दिवस)

१०॥) श्री मन्त्री जी आ० स० ज्वालापुर (स० दिवस)

५) श्री मन्त्री जी आ० स० जयनगर दरभंगा (स० दिवस)

३) श्री मन्त्री जी आ स० सिहोर (स० दिवस)

५०) आर्य समाज दीवान हाल देहली (सत्याग्रह दिवस)

५) श्री छोटेलाल जी वर्म्मा ताल ग्राम फर्रुखाबाद (बंगाल सहायतार्थ)

१०) श्री एम० के० उपमन्यु स्टेट सर्जन नरसिंहगढ़ स्टेट (बंगाल सहायतार्थ)

२) श्री गुरुदत्त जी गौतम देहली (द० प्रचार)

७) श्री रामसेवक जी शर्म्मा बिड़लाजूट मिल्स बिड़लापुर २४ परगना (दक्षिण प्रचार सहायता)

२००) श्री स्व० पं० ओंकारदत्त जी के घरेलू सामान की बिक्री के द्वारा मंत्री आ० स० रायपुर (सी०पी०) श्री० पं० जी की वसीयत के अनुसार

३८७)

सब दानियों को सभा की ओर से धन्यवाद

मंत्री सभा

१—गत वर्ष का विवरण २—गत वर्ष का हिसाब

३—आगामी वर्ष के लिये अधिकारियों व अन्तरंग सभा के सदस्यों का चुनाव

४—आगामी बजट ५—अन्य आवश्यक विषय

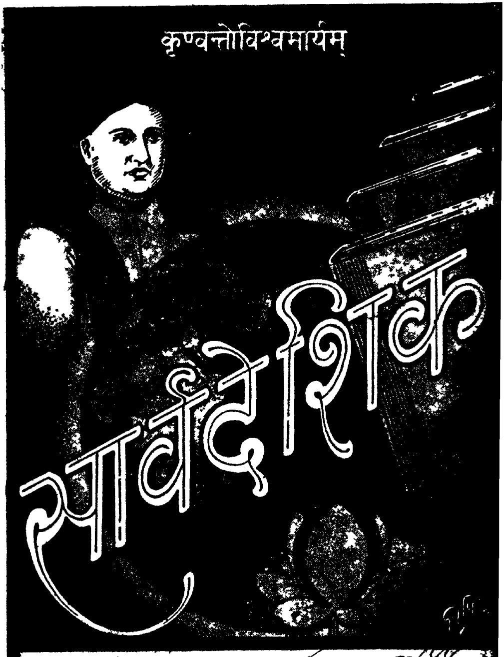
देवीदयाल उपमन्त्री भारत वर्षीय आर्य कुमार परिषद्, दिल्ली।

श्री पं० रघुनाथप्रसाद पाठक—पब्लिशर के लिये लाला सेवाराम चावला द्वारा "चन्द्र प्रिंटिङ्ग प्रेस", श्रद्धानन्द बाज़ार, देहली में मुद्रित।

Regd. No. L. 2121

सार्वदेशिक सभा पुस्तक भण्डार की उत्तमोत्तम पुस्तकें

(१) वैदिक सिद्धान्त सचित्र १)
(२) समर्पित ...चय २)
(३) सार्वदेशिक ... चिकित्सा शास्त्र १)
(४) ... अचित यज्ञ -)॥
(५) ऋग्वेद में देवृकामा या देवकामा -)
(६) विदेशों में आर्य समाज ॥)
(७) दयानन्द सिद्धान्त भास्कर १।)
(८) आर्य्य सिद्धान्त विमर्श १॥)
(९) भजन भास्कर ॥)
(१०) समस्त आर्य्य समाजों की सूची ॥)
(११) सार्वदेशिक सभा का इतिहास अ० १), स० २॥)
२) धर्मदान ॥)
३) आर्य डायरेक्टरी अ० १।), स० १॥)
(१४) वैदिक सन्ध्या रहस्य =)॥
(१५) सत्यार्थ निर्णय १॥)
(१६) संस्कृत सत्यार्थप्रकाश (अजिल्द) ।।)
(१७) इज्हारें हकीकत (उर्दू में) ॥।=)
(१८) म०नारायण स्वामीजी की आत्म-कथा २।)
(१९) मातृत्व की ओर अ० १।), स० १॥)
(२०) आर्य्य जीवन और गृहस्थ धर्म ।=)
(२१) आर्य वीर दल शिक्षण शिविर =)
(२२) आर्य समाज का इतिहास ॥।)
(२३) भक्ति कुसुमाञ्जलि ॥।)
(२४) विमान शास्त्र
(२५) वेद में दो बड़ी वैज्ञानिक शक्तियां १)
(२६) सत्यार्थ प्रकाश गान ।=)
(२७) बहिनों की बातें १)
(२८) Agnihotra— २॥)
(२९) Crucifixion by an eyewitness ।-)
(३०) Truth and Vedas ।=)
(३१) Truth-bed-rock of Aryan Culture ॥)
(३२) Vedic Teachings १।)
(३३) Voice of Arya Varta =)
(३४) Christianity in India ॥)
(३५) The Scope and Mission of Arya Samaj-Bound १)
(३६) Ecclesia Divina-Bound ५)
(३७) Commentary on Ishopanishad ॥)
(३८) Kenopanishat (English) ।)
(३९) Daily prayer of an Arya ।।)



अक्टूबर
[illegible] ई०
आश्विन
२००१ सं०

सम्पादक—
श्री प० धर्मदेव जी सिद्धा[illegible]र विद्यावाचस्पति
साहित्य भूषण

वार्षिक मूल्य
स्वदेश ३)
विदेश [illegible]
१ प्रति का [illegible]

विषय-सूची

सार्वदेशिक का यह पत्र मँगाने के लिये ।=) का टिकट भेजना जरूरी है ।

पुस्तक लय
कुल पं०

॥ ओ३म् ॥

सार्वदेशिक

* सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली का मासिक मुख पत्र *

वर्ष २० | अक्टूबर १९४४ ई० | आश्विन २००१ | दयानन्दाब्द १२१ | अङ्क ८

* वैदिक प्रार्थना *

ओं ते नः सन्तु युजः सदा वरुणो मित्रो अर्यमा । वृधासश्च प्रचेतसः ॥ ऋ० ८ । ८३ । २

शब्दार्थ—(ते) वे (वरुण) सर्वोत्तम तथा अज्ञानान्धकार निवारक विद्वान् (मित्र) सबको मित्र की दृष्टि से देखने वाला और (अर्यमा) न्यायकारी सज्जन ये (प्रचेतस) उत्तम ज्ञानी (न') हमारे (सदा) नित्य (युज) साथी (वृधास च) और हमें सदा बढ़ाने वाले (सन्तु) होवें ।

विनय—हे परमेश्वर । आप सबसे श्रेष्ठ और अज्ञानान्धकार के निवारण करने वाले, सब के मित्र और न्यायकारी हैं । आपकी कृपा से हमें ऐसे सज्जनों और विद्वानों की सङ्गति तथा सहयोग प्राप्त हो जो सर्वोत्तम, सब को मित्र की दृष्टि से देखने वाले और न्यायकारी हों ताकि उन ज्ञानियों के उत्तम उपदेशों के अनुसार आचरण करते हुए हम अपनी शारीरिक, मानसिक और आत्मिक शक्तियों को सदा विकसित कर सकें । महर्षि दयानन्द जी जैसे महानुभावों के चरण चिन्हों पर चलते हुए और उनके उत्तम ग्रन्थों से लाभ उठाते हुए हम सच्चे आर्य बनें यही हमारी आप से प्रार्थना है ॥

वैदिक सुभाषितामृत

(गतांक से आगे)

(२६) आरे द्वेषांसि सनुतर्दधाम ॥ ऋ० ५।४५।५

हम (द्वेषांसि) द्वेष भावों को (सनुतः) सदा (आरेदधाम) दूर रक्खें।

(२७) इमामू नु कवितमस्य मायां महीं देवस्य न किरादधर्ष ॥ ऋ० ५।८५।६

(कवितमस्य) ज्ञानियों में सर्वोत्तम—सर्वज्ञ (देवस्य) सर्व प्रकाशक परमेश्वर की (इमां महीं मायाम् ऊ) इस बड़ी बुद्धि वा ज्ञान शक्ति को (न किः नु आ दधर्ष) कोई भी दबा नहीं सकता—उसका मुकाबला नहीं कर सकता।

(२८) आ ते भद्रायां सुमतौ यतेम ॥ ऋ० ६।१।१०

हे परमेश्वर वा विद्वान् ! (ते) तेरी (भद्रायां सुमतौ) कल्याणकारिणी उत्तम बुद्धि के आश्रय में हम (तरेम) संसार सागर से तर जाएं।

(२९) द्विषो अंहांसि दुरिता तरेम ता तरेम तवावसा तरेम ॥ ऋ० ६।२।११

हे प्रभो ! हम (द्विषः) द्वेष भावना (अंहांसि) पाप और (दुरिता) दुःखों से (तरेम) तर जाएं—पार हो जाएं (ता तरेम) इन सब के पार चले जाएं (तव अवसा तरेम) तेरी रक्षा वा ज्ञान से इन द्वेष भावों पापों और दुःखों से पार हो जाए।

(३०) न त्वावां अन्यो अमृत त्वदस्ति ॥ ऋ० ६।२१।१०

हे (अमृत) अविनाशि स्वरूप—अमर परमेश्वर (त्वत् अन्यः) तेरे से अन्य कोई (त्वावान् न अस्ति) तेरे जैसा नहीं है—तू अनुपम है।

(३१) इन्द्रो रायो विश्ववारस्य दाता ॥ ऋ० ६।२३।१०

(इन्द्रः) परमेश्वर (विश्ववारस्य) सब का कल्याण करने वाले तथा विद्वानों द्वारा स्वीकरणीय (रायः) ज्ञानादि ऐश्वर्य का (दाता) देने वाला है।

(३२) त्वयाजेष्म हितं धनम् ॥ ऋ० ६।४५।१२

हे परमेश्वर ! हम (त्वया) तेरी कृपा व सहायता से (हितं धनम्) सब के हित कारक धन को (जेष्म) जीतें—प्राप्त करें।

(३३) स्यामहं ते सदमिद् रातौ तव स्यामग्नेऽवसा सुवीरः ॥ ऋ० ६।५०।६

हे परमात्मन् ! (अहम्) मैं भक्त (सदमित्) सर्वदा (तव रातौ) तेरे उत्तम दान में (स्याम्) रहूँ—तेरी कृपा का पात्र बनूं (अग्ने) हे ज्ञान स्वरूप प्रभो (तव अवसा) तेरी रक्षण शक्ति और ज्ञान से मैं (सुवीरः स्याम) अच्छा वीर बनूं।

(३४) विश्वाहा वयं सुमनस्यमानाः ॥ ऋ० ६।७५।८

(वयम्) हम विश्वाहा) सदा (सुमनस्यमानाः) उत्तम मन से युक्त और प्रसन्न रहें।

(३५) अग्नेर्व्रतानि पूर्व्या महानि ॥ ऋ० ७।६।२

(अग्नेः) ज्ञान स्वरूप परमेश्वर के (व्रतानि) कर्म (पूर्व्या-महानि) सनातन और अत्यन्त अद्भुत हैं॥

पाठक महोदय इन सुभाषितों को इस मास अर्थ सहित स्मरण करलें। इस प्रकार प्रति मास करते रहने से उन की वेद मन्त्रों को समझने की योग्यता बढ़ती जाएगी—

सम्पादक

अध्यात्म सुधा

प्रणव गीत

[ले०—श्रीमती विद्यावती देवी जी धर्मपत्नी पं० धर्म देव जी विद्यावाचस्पति देहली]

१ ओ३म् नाम पीये जा
पीये जा पिलाये जा।
अपने मन की मैल को
धोये जा धुल जा॥

२ पीले इस के भर भर प्याले
खुल जाएं बन्धनों के ताले।
देख के इस के खेल निराले
औरों को दिखलाए जा॥

३ ओ३म् नाम करुणा का सागर
मिला दे इस में अपनी गागर।
गुण इसके तू गा गा गा कर
औरों को गवाए जा॥

वेद में विज्ञान

[लेखक—श्री दीनदयालु जी सोनी M. Sc. नई देहली]

(गतांक से आगे

चहुं ओर स्थित चुम्बकों को तेज देने वाला यह गति करने वाला आर्मेचर था, उस निज उत्पन्न तेज द्वारा इस गति करने वाले आर्मेचर (चक्र) को अधिकतर गति प्राप्त हुई। इस प्रकार प्रेरक स्वय प्रेरित बना और आर्मेचर को प्रवृद्ध गति से प्रवृद्ध विद्युत् उत्पादन हुआ एतदर्थ यह प्रश्न महान् विद्युत् उत्पादक यन्त्र डाइनेमो है जिसके केन्द्र में अनेक विद्युत तारों की लपेटों से बना हुआ Armature Coil गति करता है। चारों ओर अनेक चुम्बक (परितस्थुषः) Electromagnets स्थित हैं जिनके चारों ओर विद्युत्-प्रवाह से चुम्बक उत्पन्न होता है। चुम्बक क्षेत्र में आर्मेचर घुमानेपर प्रवृद्ध विद्युत् धारा उत्पन्न होती है। यह चुम्बकों Eletromagnets का पूरा विवरण व सिद्धान्त अगले मंत्र २ में आवेगा। (इसी मंत्र में यदि त्रित वायु (तेज) द्वारा Three Phase Current विद्युत् तेज संयमित रूप से

युक्त किया जावे तो यह यत्र मोटर का काम करेगा। जैसे Flywheel अन्य मशीनों को गति देता है इसी भांति इस मोटर से अन्य मशीनों को अगले मन्त्र २ के अनुसार चलाया जा सकेगा। उपर्युक्त प्रक्रिया द्वारा (अघ्नम्) प्रवृद्ध विद्युत् वेग व बल (High Voltage) उत्पन्न करने में भी प्रयुक्त किया जाय। इसकी विशेष व्याख्या भी अगले मंत्र २ की व्याख्या के साथ करेंगे।

अतएव प्रवृद्ध विद्युत् धारा से (दिवि) प्रकाश जहां उत्पन्न हो ऐसे बिजली के लैम्पों में (रोचना) प्रकाश उत्पादक Bulb बल्ब लैम्प (रोचन्ते) प्रकाश उत्पन्न करते हैं अथवा मोटर की गति में (Commutator के पास) बिजली की (रोचना.) Sparks चिनगारियां (रोचन्ते) प्रकाशित होती भली प्रतीत होती हैं।

प्रमाणः—रोचन लोक यत्र एतत् तपति। जहां कोई वस्तु (तार आदि) तप्त होकर प्रकाश करे वह वल्ब। श० १-१-१-२४।

अघ्नम्—अश्व-नि० १-१४, सूर्य नि० दै०
१२-२-१७-१०

वह्निः अपि अश्वनाम—वहति इति वह्नि
उ० को० ४-५१।

दिवि—दीव्यते यत्र स दिवि-द्युति, गति, कान्ति
अर्थेषु।

तस्थुषः—तिष्ठन्ति इति तान् सर्वान्-द० भाष्य।

अघ्नम्—शिल्पविद्याविद्भिः अग्नि प्रायं वा-अघ्न इति महन्नाम। द० भाष्ये।

अरव—अशूङ—व्याप्ती सघाते च-धातुपाठे।
सूये —स्वीर्यते॰सुवते प्रेरितः-त्रित वायु द्वारा प्रेरित-प्रेरक नि० १२-२-१४ (चन्द्रमणि जी कृत भाष्य पृ० ७२४)।

भावार्थ—विद्युत् का व्याप्ति गुण चुम्बक क्षेत्र की चहुं ओर स्थित (परितस्थुष) लौह कुम्भियों में उत्पत्ति करे और यह चुम्बक क्षेत्र (अरव) व्याप्ति द्वारा तारगुच्छक Armature को अधिक वेग से चालित होने पर प्रवृद्ध विद्युत् तेज उत्पन्न करे जैसे डाइनेमों में अथवा मोटर में ऊंचे वेग से गिरने वाला प्रवृद्ध विद्युत् तेज अधिकतर गति देवे। प्रवाहित विद्युत् धारा का प्रयोग संयमित रूप से अर्थात् विद्युत् को सुरक्षित रखते हुए (Gnsulation) द्वारा एवं बटन (Switch Control) द्वारा नियमित ढंग से-लैम्पों के प्रकाश उत्पादन में हो। अथवा विद्युत् द्वारा मोटर जैसे यत्र को चालित करे अन्य मशीनें चलाई जावें।

इन मोटर या डाइनेमों में केन्द्र स्थलों के चारों ओर प्रवाहित विद्युत् धारा चुम्बक क्षेत्र उत्पन्न करती है और उस चुम्बक क्षेत्र में-यदि तार गुच्छक गति करेगा तो विद्युत् धारा उत्पन्न होगी तथा यदि विद्युत् प्रवाह तार गुच्छक Armature में होगा तो तारगुच्छक वतौर मोटर घूमने लगेगा॥

युंजन्ति अस्य काम्या हरी विपक्षसा रथे।
शोणा धृष्णू नृवाहसा॥ ऋ० १-१-६-२।

शब्दार्थ :—

(काम्या) इच्छानुकूल (पंखा, मोटर, मशीन आदि संचालन आदि) कार्यों के हेतु (अस्य) इस अघ्न नामक प्रेरित एवं प्रेरक विद्युत् उत्पादक यंत्र के (विपक्षसा हरी) विरुद्ध उभयरूप विद्युत् तेज को ले जाने वाले दो तारों को (रथे युंजन्ति) गति करने वाले (बिजली के

मोटर, यान, अक्षों) यन्त्रों में संयमित करते हुए प्रयोग करें। अथवा जल धारा जल प्रपात सञ्चालित विविध पाखड़ी युत (विपक्षसा) चक्रों में लगे दो (शोणी) गतिशील (धृष्णू) दृढ़ एवं (नृवाहसौ) गति को आगे ले चलने वाले Belts पट्टों को (अस्य) इस अश्न नामक Flywheel महान् चक्र में वा (ऋ० १-१-५-६) अक्षितोति नामक विद्युत् उत्पादक डाइनेमो के (रथे) गति शील चक्र में युक्त करें। अथवा अक्षितोति यन्त्र में जिसमें (ऋ० १-१-५-६) विद्युत् का प्रयोग किया जाता है (अर्थात् जा बिजली के मोटर की भांति प्रयोग में आवे) उस मोटर में चहुँ ओर स्थिर चुम्बक के आकर्षण एवं तार गुच्छ Armature के चक्राकार वेग इन दो (विपक्षसा हरी) विरुद्ध रूप प्रभावों के उत्पादन हेतु प्रयोग में आने वाले विद्युत् प्रवाह को विद्युत् वाहक (प्रापक) दो Commutator Brushes ब्रुशों से युक्त करें।

(विपक्षसा) विरुद्ध रूपा विद्युत् प्रवाह वा विरुद्ध दिशाओं में चलने वाले दो पट्टे Belts (शोणा) गति शील (धृष्णू) दो तार वा दृढ़ Belting पट्टे अथवा (नृवाहसौ) विद्युत् प्रवाह को ले चलने वाले जो दो तार हैं Flywheel महान् चक्र से गति को स्थानान्तर में पहुंचाने वाले जो दो पट्टे Belting हैं, उन्हें (रथे युञ्जन्ति) गति शील यन्त्रों में प्रयोग करें। (अस्य काम्या) उपरोक्त विद्युत् यन्त्र वा इञ्जिन चक्र (Flywheel) के तेज वा गति को यथा काम (हरी) ले जाने वाले (विपक्षसा) उभय रूपा विद्युत् तेज के वाहक तार वा विरुद्ध दिशाओं में दोनों ओर गतिवाहक पट्टे Belting (रथे युञ्जन्ति) विविध यानों वा शब्द करने वाले यन्त्रों में वा वज्र में प्रयोग करें।

प्रमाण:—अश्न पद अश्नवाची। नि० नै० ४-४-२६-६१। हरी-हरण शीलौ वेग आकर्षक गुणौ। दया० भाष्य ॥ विपक्षसा-विविध यन्त्र कला जल चक्र भ्रमण युक्तानि पक्षासि पार्श्वे स्थितानि ययो तौ। इति दया० भाष्य। शोणा-वर्ण और गति भाव में, धातु पाठ। धृष्णू-जिधृषा प्रागल्भ्ये दृढ़ होना। नृ-नये-ले चलना, वह-प्रापणे पहुंचाना धातुपाठ। नृवाहसा-नृवाहसौ। वेग गुण को लेकर Flywheel महान् चक्र से अन्य मशीनों के चक्रों तक पहुँचाने वाले-विपक्षसौ-विरुद्ध दिशाओं में गति को ले जाने वाले दो (धृष्णू) दृढ़ (शोणा) गति शील पट्टे Belting जो चक्राकार गति के वाहक हैं।

रथे—रमण साधने भूजल आकाश गमनार्थे याने द० भाष्य। रथ रहते, गतिकर्मण:—स्थिर से विपरीत, रममाण-गतिवान्। या० नि०। वज्र: वै रथ तै० १-६ ६-१,श० ५-१-४-३॥

मन्त्र के अन्य अर्थ —

Electrolysis विद्युत् प्रवाह द्वारा पदार्थ व्यजन। (काम्या) यथाभिमत पदार्थों की प्राप्ति करानेवाली (अस्य) इस विद्युत् यन्त्र के (हरी) विद्युत् को ले जाने वाले और—नामक Positive or Negative पोजिटिव और नैगेटिव दोनों तारों को (विपक्षसौ) दो पार्श्वों में स्थित करके (रथे) किसी व्यजनीय रस से भरे पात्र में (युजति) संयमित करें, तो (शोणा)वर्ण वा रूप प्रकाशक अर्थात् (वृणोति इति वर्ण) विद्युत् आच्छादित दो (धृष्णू) अति दृढ़-न टूटने वाले (परमाणु) उस रस में घुले (क्षार) में उत्पन्न होंगे जो घुले क्षार के भागांशों को प्रकट करेंगे, यह परमाणु Gons (शोणा) गतिशील हैं और (नृवाहसा) दोनों प्रकार के पोजिटिव और नैगिटिव-और-विद्युत्भारों को (नृ) लिये हुये पूर्ण दो

सुमन-सञ्चय

(१)

यह रूस और जापान के १९०५ के युद्ध की घटना है। इस युद्ध में जापान की विजय इतिहास का एक चमत्कार समझी जाती है क्योंकि रूस की तुलना में जापानएक बौने के समान था। एक ओर थी रूस की विशाल सुसज्जित ज़ारशाही सेना और दूसरी ओर था मुट्ठी भर व्यक्तियों का समूह। फिर रूस की दशा उस व्यक्ति के समान थी जो बाह्याकार से स्वस्थ जान पड़ता हो परन्तु भीतर से निर्बल और सत्य हीन हो गया हो।

रूस के राष्ट्रीय शरीर में विकार उत्पन्न हो गया था और उसकी आत्मा अस्वस्थ और निष्प्रभ हो गई थी। जापान एक उठते हुए नवयुवक के सदृश था जिसमें नया उत्साह, नई स्फूर्ति, नया जातीय जीवन और अनूठा आत्मोत्सर्ग हिल्लोरें मार रहा था। यही जापानियों की विजय का मूल-मन्त्र था।

रूसी सेना ने एक नदी के पुल को नष्ट करके बढ़ती हुई जापानी सेना का मार्ग अवरुद्ध कर दिया था। पुल के पुनर्निर्माण की प्रतीक्षा

विद्युत् दर्शों तक जोस पात्र में स्थित हैं पहुँच कर-रस में घुले क्षार के भागांशों को (वाहसा) प्राप्त करावेंगे इसका विस्तृत विवरण अगले मन्त्रों में यथा स्थान प्रकट होगा।

प्रमाण—रथं-र्व वा एतरसं सन्तं रथ इति आचक्षते। गो० पू० २ २१। वर्णः वृणोति इति वर्णः उ० को० ३ २८। जो आच्छादन करे। Ions वे परमाणु जो विद्युत् भार से युत हैं।

अन्य अर्थ —सूर्य परक।

(अस्य काम्या हरी) इस सूर्य की कमनीय शुक्ल एवं कृष्ण दो प्रकार की किरणें हैं जो क्रमशः (शोणाऐं वा रूप प्रकाशक (सात रंगा) व वाली Spectral) द्रुत गति करने वाली शुक्ल एवं (घृणा) अत्यन्त दृढ़ पार भेदक गुण से युक्त Ultra Violet कृष्ण किरणें हैं। (विपक्षसौ) सूर्य के किरण मंडल में पार्श्ववर्त्ती यह किरणें (रथे युंजन्ति) सूर्य से सम्बन्धित है। अथवा (हरी) केन्द्रीय आकर्षण Gravita ttion एवं वेग तथा किरणों का ताप प्रसार Rediation Pressure यह दो (हरी विपक्षसौ) परस्पर विरुद्ध उभय रूप शक्तियें अथवा द्युलोक एवं पृथ्वी लोक वा शुक्ल एवं कृष्ण पक्ष सूर्य युक्त हो उसी से व्यवस्थित होते हैं। और (नृवाहसौ) मनुष्यों को जीवन देती हैं अथवा दिन और रात्रि की उत्पत्ति करती हैं।

प्रमाण — असौ वा आदित्य एषरथः। श० ९-४-१-१५। ऋक् सामेवा इन्द्रस्य हरी—ऋक् सामे वै हरी। ऐ० २-२४, श० ४-४-३-६। देखो सूर्य का शुक्ल एवं कृष्ण किरणों का ऋक् साम परक आख्यान। छान्दोग्य उप०। पूर्व पक्ष अपर पक्षौ वा (शुक्ल और कृष्ण पक्ष) इन्द्रस्य हरी, ताभ्यां हि इदं सर्वं हरति ष० १-१। इमे (द्यावा पृथिव्यौ इति सायण) वै हरी विपक्षसा। तै० ३-९-४-२। नृवाहसौ-नृन् (मनुष्यों को) वहतः तौ हरी—हरणशीलौ, वेग आकर्षण गुणौ। दया० भाष्य।

सूक्तस्थ शेष मंत्रार्थ आगामी अंकों में।

करना घातक समझ कर जापानी सेनापति ने १२०० सैनिकों को नदी में डाल कर उनकी मृत देह से पुल बनाने का निश्चय किया और १२०० नाम प्रस्तुत करने की सैनिकों से मांग की। इधर यह प्रेरणा हुई और उधर लगभग १२००० प्रार्थना पत्र सेनापति के पास पहुंच गए। प्रत्येक प्रार्थी यही चाहता था कि उसका नाम अवश्य स्वीकृत हो। दो दिन के पश्चात् सेनापति के कार्यालय के बाहर १२०० स्वीकृत नामों की तालिका देख पड़ी। तालिका में जिसका नाम नहीं देख पड़ता था, वही परीक्षा में अनुत्तीर्ण विद्यार्थी की तरह निराश हो जाता था।

एक नवयुवक को बड़ी आशा थी कि उसका नाम स्वीकृत हो जायगा परन्तु जब उसने देखा कि उसका नाम स्वीकृत सूची में नहीं है तो वह सीधा सेनापति के पास पहुंचा और अपने प्रार्थना पत्र की अस्वीकृति का कारण ज्ञात किया। सेनापति ने कहा। 'सैनिक', तुम्हारी माता के भरण-पोषण का भार तुम पर है, अतः तुम्हारा नाम अस्वीकार कर दिया गया है।"

इस उत्तर से नवयुवक को बड़ी निराशा हुई और वह चुपचाप अपने घर को चल दिया।

घर पहुँचने पर माता ने इस प्रकार अकस्मात् आने का कारण पुत्र से पूछा। पुत्र ने रोकर माता को समस्त घटना कह सुनाई। माता ने पुत्र को सान्त्वना देते हुए कहा। वत्स। निराश न हो, तुम्हारी प्रार्थना अवश्य स्वीकृत होगी। पुत्र ने पूछा 'माँ, यह कैसे ?

माता ने कहा 'इसका उत्तर एक घण्टे पश्चात् दूंगी। तुम थके हुए आए हो। खाना खाओ और कुछ आराम करो।" नवयुवक ने पूछा 'माँ, क्या आप मेरे साथ सिफारिश के लिए शिविर को चलेंगी ?" इस प्रश्न पर माता मौन हो गई।

इधर पुत्र खाना खाने लगा और उधर माता ने जहर का एक प्याला तय्यार किया और उसे पीकर चारपाई पर लेट गई। कुछ क्षण के उपरान्त पुत्र को अपने पास बुलाकर कहा 'वत्स, मैंने जहर पी लिया है। तुम जाकर सेनापति से कहना कि मेरी माता मर गई है अब मेरी प्रार्थना स्वीकार की जाय।"

माता के इस कृत्य से पुत्र हक्का बक्का रह गया और अनेक उपचार करने पर भी माता को न बचा सका। माता के देहान्त के पश्चात् वह अपनी सेना में गया और सेनापति को समस्त घटना सुनाई।

इस घटना से सेनापति बहुत प्रभावित हुआ। जातीय गौरव से उसका मस्तक चमक उठा। उसने जापान की उस माता के अज्ञात् चरणों में सिर झुकाते हुए नवयुवक की प्रार्थना स्वीकृत करदी।

—रघुनाथ प्रसाद पाठक

भारत के लाल किस ओर

[लेखक—पं० ब्रह्मप्रकाश जी विद्यावाचस्पति सूर सागर जोधपुर]

प्रिय भारतीय युवको ? हम नवयुवक हैं, ऐसी विचार धारा कभी २ तो आपके यौवन काल में अवश्य ही उठती होगी, इसमें संदेह नहीं। परन्तु अपने रंग रूप और स्वरूप का दर्शन और मनन न करके मदोन्मत्त हाथी और कामातुर मृग की भाँति वास्तविकता से दूर भाग कर व्यर्थ ही इस अमूल्य यौवन वेला के बहुमूल्य समय को खो रहे हो। आपका रंग रूप और स्वरूप विशुद्ध भारतीय

संस्कृति है, यह सब कुछ आप सदैव पढ़ते और सुनते रहते हो, परन्तु आपको एक ऐसी मद-कारी औषध पिलायी जा चुकी और अब भी बराबर पिलाई जा रही है कि जिसका मद उतरना इतना कठिन है कि आर्य संस्कृति के रक्षक और चिकित्सक अनेक उपचार करने पर कभी २ उदासीन से हो जाते हैं कि कहीं यह रोग असाध्य तो नहीं हो गया है। परन्तु यह बहुत भारी भूल है। क्योंकि किसी भी देश और जाति का उत्थान और पतन करने में नवयुवक ही महान् कारण बनते हैं। ससार का इतिहास इसमें साक्षी है। अतएव उदासीनता महा पाप है।

आओ अपने भूत पर एक दृष्टि तो डालो कि "हम क्या थे, क्या हो गये, और क्या होंगे अभी" आप क्या थे इसका उत्तर तो सृष्टि के आदि से महाभारत पर्यन्त आर्य्यों का चक्रवर्ती राज्य और वैदिक सभ्यता का प्रचार और प्रसार बतला रहा है। आपका ब्रह्मबल इतना बढ़ा चढ़ा था कि सारे संसार के लोग आपके ही ब्राह्मणों ऋषि मुनियों के दर्शन करने आया करते और उनसे शिक्षा ग्रहण कर अपना सुधार और उद्धार करके अपने देश और जाति का सुधार करने में डट जाते थे। जिसके नाम पर यूरोपादि देशों में प्रकाश फैलने लगा था और शीघ्र ही ससार में अधर्म, अन्याय और अत्याचार मचने लगा है, वह प्रसिद्ध महात्मा ईसा भी भारत वर्ष का ही शिष्य था। जिस समय योरोप एवम् अमेरिका आदि देशों में रहने वाली सभ्य जातियों के पूर्वज अर्द्ध नग्न-अवस्था में जगलों में वन्य पशुओं की भाँति रहते थे, उस समय यह देश सभ्यता के उच्चतम शिखर पर आरूढ़ था। उसके चिन्ह अब भी अमेरिका आदि देशों में मिलते हैं। हवन कुड तथा भारतीय देवताओं तक की मूर्तियाँ अब भी वहाँ मिल रही हैं। हमारी अन्तिम बौद्ध कालीन संस्कृति के चिह्न तो प्रचुर मात्रा में अफ़गानिस्तान आदि देशों, भारत के समीपवर्ती द्वीपों में पाये जाते तथा चीन जापानादि राष्ट्रों में तो स्पष्ट ही दृष्टि गोचर हो रहे हैं।

परन्तु "संसार में किसका समय है एक सा रहता सदा" इसी सिद्धान्त के अनुसार जिस भारतीय सस्कृति की भारतेतर देशों पर भी गहरी छाप पड़ी थी, वही सस्कृति आज समय के फेर से या हमारे आलस्य और प्रमाद से पाश्चात्य सस्कृति के प्रभाव में आकर अपना स्वरूप खो देना चाहती है। इस पर चारों ओर से विजातियाँ संस्कृतियों के आक्रमण हो रहे हैं। आश्चर्य तो यह है, कि जो संस्कृतियाँ मिट चुकी थीं वे भी हमारी आखों के ही सम्मुख हमारी मा के खण्ड खण्ड कर अपने ही पाकिस्तानी रंग में पकाकर हड़पना चाहते हैं। परन्तु न मालूम भारतीय युवक ही पाश्चात्य सस्कृति के इतने क्यों कायल हैं। इस युग में जब कि हम भारत वासी सदियों से दासता की बेड़ियों से जकड़े हुए हैं। तथापि हमारी सभ्यता ससार के लिये आदर का विषय बनी हुई है। इस युग में बड़े २ दार्शनिक और विचारक हमारी सभ्यता से प्रभावित हैं। और उसकी भूरी २ प्रशसा करते हैं। यही नहीं इस घोर अशान्ति के युग में जब कि सर्वत्र हा-हाकार मचा हुआ है शान्ति चाहने वाले यूरोप निवासी भारत की ओर ही आँख उठाए टकटकी लगाये देख रहे और आशा कर रहे हैं, कि उन्हें यहीं से विश्व शान्ति और विश्व प्रेम का सदेश प्राप्त होगा। यहां के प्राचीन तथा अर्वाचीन साहित्य को वे लोग बड़ी ही उत्सुकता से पढ़ते हैं और यहां के प्रमुख व्यक्तियों का बड़ा ही सम्मान करते हैं।

प्यारे युवक युवतियों! आपको पता चला कि आपकी संस्कृति और उनकी संस्कृति में क्या अन्तर है, और किस लिये वह आपको तरफ टकटकी लगाये देख रहे हैं कि हम भी उसी अमृत रस को पान करके अमर हो जावें कि जिसे पीकर भारतीय ऋषि मुनि और वीर योद्धा हुआ करते थे। साधारण सी बात है और केवल इतना ही अन्तर है कि प्राचीन ऋषि मुनियों-द्वारा संपादित आर्य सभ्यता की आधार शिला आत्म विद्या (अध्यात्मवाद) है जो कि सांसारिक भोगों को भोगते हुए भी उनमें फँसने और पतन से बचाती है। बस इसी के बिल्कुल विपरीत केवल भोगवाद का पाठ पढ़ाने वाली पाश्चात्य सभ्यता है, जिसकी आधार शिला केवल भौतिक वाद में ही उन्नति करना है आज सारा संसार भौतिक वाद की ओर दौड़ा जा रहा है व जिसका परिणाम आज प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर हो रहा है। भारत के कुमार-कुमारियों! भोगवाद का प्रचारक और आविष्कर्ता योरोप स्वयं इतना भोग विलासों में नहीं फसा है जितना कि उसमें आप तल्लीन हुए हो। मजा तो यही है कि करे कोई भरे कोई। बड़े दुःख का विषय है कि आपकी शिक्षा-दीक्षा बहुत ही विलासिता पूर्ण वातावरण में हो रही है। आज के अनेक युवक-युवतियों के मुख मण्डल तेज और प्रतिभा हीन हो चले हैं।

जागो। भारत के वीर वीरो आओ जागो। अपनी वेषभूषा, भाषा, आचार-व्यवहार, रहन सहन आदि को अपनाकर विशुद्ध भारतीय बन कर स्वाभिमानी बनो। यहयुग जागने और सचेत रहने का युग है। आपके ही कधों पर भारत माँ के उद्धार का भार है। आप आज से ही व्रत लीजिए कि हम मांस अंडे शराबआदि से रहित भोजन करेंगे, बीड़ी सिगरेट आदि शरीर व मस्तिष्क का ह्रास करने वाली नशीली चीजों से घृणा करेंगे, तथा ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए व्यायाम द्वारा अपने शरीर को हृष्ट पुष्ट बनायेंगे और भारतीय वेष-भूषा को पूर्ण रूपेण अपनाकर भारतीय होने का गौरव प्राप्त करके विशेष आवश्यक कार्यों के अतिरिक्त प्रिय मातृ भाषा में ही बोलें चालें और व्यवहार करेंगे। यही सब आप के प्रथम उत्थान के सोपान (सीढ़ी) का मूल मन्त्र है। तभी आप भारत के लाल कहला सकोगे।

सत्यार्थ-प्रकाश गान !

[रच० :-शान्ति वीर आर्य "वीर" सम्भल]

चन्द्र दिवाकर सा चमकेगा, यह 'सत्यार्थ' हमारा है।
आलोकित इसकी आभा से, हो भू-मण्डल सारा है।
जिसने खोली पोल मतों की, खण्ड खण्ड पाखण्ड किया।
जिसने मुक्ति मार्ग बतलाया, भारत को आनन्द किया।
जननी के सिर से दुःखों का, भारी-भार उतारा है॥ आ०॥

कब्र-वृक्ष की पूजा छूटी, देश को सच्चा ज्ञान हुआ।
'सत्य-अर्थ-प्रकाश' से जग में, आर्य जाति का मान हुआ।

वेद-धर्म का यह भारत में, प्रगटा दिव्य-सितारा है ॥ आ० ॥
कैसा निर्मल वहा विश्व में, वैदिक-झरना प्यारा है।
आर्य-जनों के अन्तस्तल को, पावन करने हारा है।
भारत को उज्ज्वल करने का, सत्य-धर्म उजियारा है ॥ आ० ॥
धन्य-धन्य ऋषि-दयानन्द हो, भारत का उद्धार किया।
भारत के कोने-कोने में 'सत्य-अर्थ-प्रकाश' किया।
अमर रहेगा अब वह जग में, कभी न मिटने हारा है ॥ आ० ॥
आर्य-वीर अपना रण कौशल, तुमको अब दिखलाना है।
रङ्ग-भूमि को छोड़ चलो अब, रण-भूमि को जाना है।
सत्य-धर्म के युद्ध-क्षेत्र में, चमका आज दुधारा है ॥ आ० ॥
प्रलय काल तक अविचल यह, 'सत्यार्थ-प्रकाश' रहे जग में।
पृथ्वी जब तक है स्थिर और, तारा-मण्डल है नभ में।
हो 'सत्यार्थ' अमर अब अपना, यह ही कौमी नारा है ॥ आ ॥
इसकी रक्षा-हेतु अनेकों, 'परमानन्द' से बलि होंगे।
धर्म-ग्रन्थ के पुण्य-यज्ञ में, सब अपनी आहुति दगे।
प्रिय 'सत्यार्थ-प्रकाश' हमें अब, प्राणों से भी प्यारा है ॥ आ० ॥
एक शब्द पर भी इसके, प्रतिबन्ध नहीं होने देंगे।
हम निश्चय मिट जाएं किन्तु, 'सत्यार्थ' नहीं मिटने देंगे।
आज 'वीर" हम सब ने यह ही, एक स्वर से ललकारा है ॥ आ० ॥
चन्द्र-दिवाकर सा चमकेगा, यह 'सत्यार्थ' हमारा है ॥
आलोकित इसकी आभा से, हो भू-मण्डल सारा है ॥

——'इति'——

श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती जी की इच्छा

(लेखक-श्री पं० सातवलेकर जी अध्यक्ष स्वध्याय मण्डल औंध)

नरेश मंडल में सुधार

आर्य समाज के सुप्रसिद्ध आचार्य श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती जी का देहावसान भारतीय नरेशों में उचित सुधार करके उनको स्वराज्यस्थापना में लगाने के शुभ और महनीय प्रयत्नों के चलाने के कारण दिवाली के समय ही हुआ। यह बात सभी जानते हैं।

श्री स्वामी जी महाराज का कार्य केवल आर्य समाज के धार्मिक क्षेत्र की चहारदीवारी के अन्दर ही सीमित नहीं था। भारतीय राष्ट्र का पुनरुद्धार धार्मिक सुधार द्वारा करना और इस साधन से आर्यों का वैदिक धर्मानुशासन से चलाया जाने वाला आ-समुद्रक्षिती का सार्वभौम साम्राज्य अति शीघ्र स्थापित करना ही एकमात्र प्रशसनीय उद्देश श्री स्वामी जी

महाराज का था। सूर्य चन्द्र वंशीय भारतीय राजा-महाराजाओं का सुधार करके उनको धार्मिक शासन तत्पर बनाने से शीघ्र ही भारत का आधा भाग सुधर सकता है, ऐसा विचार करके, सबसे प्रथम राजपूताना के उदयपुरादि नरेशों के सुधार करने के प्रयत्नों में वे लगे थे। इस प्रयत्न में उनको फलता भी बहुत कुछ हो चुकी थी, इस कारण जिनकी आर्थिक हानि हुई, उनके द्वारा भयानक विष प्रयोग होने से श्री स्वामी जी का दिवाली के समय ही देहावसान हुआ इस कार्य कारण भाव का विचार करने से भी उन्होंने थोड़े से दिनों में राजपूताना के राजाओं में कितना प्रचण्ड सुधार का कार्य किया था, इसकी कल्पना हरएक को हो सकती है।

विष प्रयोग का कारण

विषप्रयोग करने के बिना उस स्थान के कुमार्गियों को दूसरा कोई मार्ग रहा ही न था। इस लिए स्वार्थी,कुमार्गियों ने यह अन्तिम उपाय किया और एक महापुरुष का कार्य दिवाली के के दीप प्रकाश के नीचे रहने वाले गाढ़ अन्धकार में अदृश्य सा हुआ। इससे भारतीय राष्ट्र की अपरिमित हानि हो चुकी है, इसलिये इस प्रसंग से इसका स्मरण करने की इच्छा है। इसका स्मरण करने से फिर किसी के मन में उनके भारतीय पुनरुत्थान के विचार स्फुरित हो जायँगे और पुनः उनके कार्य का नये उत्साह से प्रारम्भ भी हो जायगा।

श्री स्वामी जी का राजकीय ध्येय

हमारे मन के अन्दर जो महत्त्व का स्थान श्री स्वामी जी महाराज को मिला है, वह उनकी धार्मिक शिक्षापूर्वक राष्ट्रीय पुनरुत्थान की प्रचण्ड और सर्वाङ्गपूर्ण आयोजना के लिये ही है। यद्यपि आज वह आयोजना रही नहीं और चली भी नहीं है, परन्तु चलाना या न चलाना यह सर्वथा अनुयायियों की शक्ति पर अवलम्बित रहने वाली बात है। अतः हम सबसे पहिले भारतराष्ट्र के पुनरुत्थान की अपूर्व आयोजना का निर्माण करने के लिये ही श्री स्वामी जी को 'ऋषि' कहते आये हैं। ऋषि वही होता है कि जो अन्य सारी जनता के पूर्व ही नया और उत्तम मार्ग ठीक ठीक रीति से देखता है और उस मार्ग को उद्घोषित भी करता है जिसे अन्य लोग नहीं देख सकते, यही उनको दीखता है और जिसे अन्य लोग डरके मारे उद्घोषित नहीं कर सकते, उसे जो ऋषि होता है, वह मार्ग जनता के लिये बड़े वेग के साथ उद्घोषित भी करता है। ऋषि दयानन्द जी के पूर्व इनके समान किसी भी नेता ने भारत के पुनरुत्थान की इस प्रकार की निश्चित आयोजना नहीं की थी। यही उनकी श्रेष्ठ दूरदर्शिता का सुस्पष्ट चिन्ह है।

ईश प्रार्थना में चक्रवर्ती राज्य

किसी मनुष्य का ध्येय, इष्ट अथवा हार्दिक काम्य क्या है, यह निःसन्देह देखना हो, 'तो उनकी ईश्वर के पास प्रार्थना' क्या होती है, सो देखना चाहिये। अन्य सभी व्यवहार मनुष्यों के साथ सम्बन्धित होते हैं, इसलिये उनमें अनन्त मर्यादाएं बीच में खड़ी हो जाती हैं, परन्तु ईशप्रार्थना के समय मनुष्य के साथ दूसरा कोई नहीं रहता। माता के पास पुत्र जैसे प्रेम के साथ निर्भय होकर जाता है, वैसे ही भक्त परमेश्वर के पास जाता है और प्रेम से जो अपने हृदय का अभीष्ट है, वह माँगता है। इस समय उसकी प्रार्थना के लिये कोई प्रतिबन्ध नहीं हो सकता क्योंकि भक्त और भगवान् के मध्य प्रतिबन्ध करने वाली दूसरी कोई वस्तु नहीं होती, अतः प्रार्थना में ही हर एक का हार्दिक अभीष्ट व्यक्त होता है। इसी नियम के अनुसार श्री स्वामी जी का ध्येय

उनकी प्रार्थना पुस्तक "आर्याभिविनय" में प्रकट हो गया है। देखिये उनकी प्रार्थनाएं किस भाँति की थीं—

(१). विद्या, शौर्य, धैर्य, चातुर्य, बल पराक्रम और दृढाग, धर्मात्मा न्याययुक्त अत्यन्त वीर पुरुष हमें प्राप्त हों, वैसे सुवर्ण रत्नादि तथा चक्रवर्ती राज्य और विज्ञानरूप धन को भी प्राप्त होऊं . ॥३॥

(पृ० २५–२६)

(२) आप हमको सरल चक्रवर्ती राजाओं की नीति को प्राप्त करो,. हमको वरराज्य, वरनीति देओ, .हमको सत्य विद्या से युक्त सुनीति देके साम्राज्याधिकारी सद्य कीजिये। हम पर सहायता करो कि जिससे सुनीति युक्त होके हमारा स्वराज्य अत्यन्त बढ़े।

॥ १८ ॥ (पृ० ६५–६७)

(३)...आओ सब मिलके अपने सब दुखों का विनाश और अपने विजय के लिये ईश्वर को प्रसन्न करें, जो अपने को वह ईश्वर आशीर्वाद देवे, जिससे अपने शत्रु कभी न बढ़ें।

॥२२॥ (पृ० ७७)

(४)...हमारे शत्रुओं को जीतने वाले हो, इस कारण से हमारा पराजय कभी नहीं हो सकता ॥२६॥ (पृ० ८६)

(५) पिता के समान हमारा पालन करो, हे भगवन् । आपकी उत्तम न्यायनीति में प्रवृत्त होके वीरों के चक्रवर्ती राज्य को आप के अनुग्रह से हम प्राप्त हों ॥४५॥

(पृ०१३२-१३३)

(६)...पुरुषार्थ को कभी मत छोड़ें, धर्मयुद्ध से शूरवीर होके...बड़ा अखण्ड साम्राज्य प्राप्त करके सब मनुष्यों का हित करें, सुनें और परमानन्द भोगें ॥ ५२ ॥

(पृ० १५५–५६)

(७) हम लोगों का पठन-पाठन विद्या बढ़ाने वाला हो तथा...हम सब संसार में सबसे अधिक प्रकाशित हों, अन्योन्य प्रीति से परमवीर्य पराक्रम से निष्कण्टक चक्रवर्ती राज्य भोगें, हममें सब पुरुष नीतिवान् और सज्जन हों, अच्छी प्रजा पुत्रादि, हस्त्यश्वगवादि, सर्वोत्कृष्ट विद्या, और चक्रवर्ती राज्यादि परमैश्वर्य को शीघ्र प्राप्त कर...॥ १ ॥

(पृ० १६१–१६५)

(८) हम लोग शत वर्ष तक देखें, जीवें, सुनें, कहैं, कभी पराधीन न हों. .सौ वर्ष के उपरान्त भी स्वाधीन ही रहें ॥ ३७ ॥

(पृ० २७१)

आर्यों का अखण्ड चक्रवर्ती राज्य

श्री स्वामी जी की बनायीं प्रार्थनाएं ऐसी हैं। यहा उनका हार्दिक ध्येय उत्तम रीति से प्रकट हो रहा है। हम आर्यों में बल, बुद्धि, चातुर्य, शौर्य, वीर्य, पुरुषार्थ बढ़े और आर्यों का अखण्ड चक्रवर्ती राज्य अति शीघ्र इस भूमण्डल पर हो। जिस विकट राजकीय परिस्थिति में श्री स्वामी जी महाराज का जन्म हुआ था, जिस देश की विलक्षण शोचनीय परिस्थिति में श्री स्वामी जी के जन्मस्थान के—काठियावाड़ गुजरात के— लोग विदेश के साथ होने वाले व्यापार व्यवहार द्वारा कमीशन प्राप्त करके धनाढ्य बनने की ही केवल एकमात्र इच्छा कर रहे थे, उस समय वह अकेला लंगोट बद्ध ब्रह्मचारी तेजस्वी स्वामी घरबार छोड़कर पूर्ण असग होकर आर्यों के अखंड चक्रवर्ती राज्य की शीघ्र स्थापना करने का उपाय ढूंढ रहा था। निःसन्देह यह उनकी ऋषिदृष्टि की सिद्धता करने वाला पर्याप्त प्रमाण है।

उस समय के राजकीय नेतागण विदेशी सरकार की प्रार्थना और याचना करने में, अर्जियां करने और उनकी कृपा से कुछ नौकरियां प्राप्त करने में ही

अपना जीवनोद्देश्य सफल समझ रहे थे, स्वतन्त्र स्वराज्य स्थापन करने की कल्पना भी उद्भूत नहीं हुई थी। आज से ७०-८० वर्ष पूर्व का राजनैतिक क्षितिज पाठक देखेंगे, तो उनको स्वतन्त्र स्वराज्य कहीं भी नहीं दीखेगा। हाथ जोड़कर अँग्रेजों से प्रार्थना करने का वायुमण्डल ही उस समय के राजकीय नेताओं के मन में था। ऐसे घोर समय में यह लँगोटधारी सन्यासी आर्यों का अखण्ड चक्रवर्ती राज्य स्थापित करके विचारों में मग्न होकर एकान्त सेवन कर रहा था !!!

जिस समय लोग विदेशी राज्य में रहना और उनकी नौकरियां करना ही अपना ध्येय मानते थे, उस समय जिसने आर्यों के अखण्ड चक्रवर्ती राज्य का मार्ग देखा, उसे भारतीय पुनरुत्थान का ऋषि न समझें तो दूसरे किसको यह मान दिया जाय ?

चक्रवर्ती राज्य का मार्ग

श्री स्वामी दयानन्द महाराज ने केवल ईश्वर की प्रार्थना करके ही आर्योंका अखण्ड चक्रवर्ती राज्य इस भूमण्डल पर होने की सम्भावना कभी नहीं मानी थी, कोई वेदका वेत्ता ऐसा मान ही नहीं सकता। कोई सच्चा वेदवेत्ता विदेशी राज्य के भीतर क्षण भर भी नहीं रह सकता। वेदज्ञान और पारतंत्र्य स्वीकार इनका सदा विरोध ही है। इसीलिये स्वामीजी आर्यों का स्वतंत्र और अखण्ड चक्रवर्ती राज्य अति शीघ्र इस भूमण्डल पर स्थापित करनेके इच्छुक थे।

सब आर्य सायं प्रातः पवित्र होकर यही प्रार्थना करें इसीलिए यह आर्याभिविनय नामक तेजस्वी ग्रन्थ स्वामीजी ने निर्माण किया था। लोग यदि आतुरता से ऐसी प्रार्थनायें करेंगे, तो वैसे ही स्वराज्य शीघ्र प्राप्त करने का वायुमण्डल देशभर में बनेगा और जैसा वायुमण्डल बनेगा, वैसा सामुदायिक प्रयत्न भी होगा। आर्योंके चक्रवर्ती राज्यकी स्थापना का प्रारम्भ इसी तरह ईशप्रार्थना में हो सकता है।

ईश्वर-उपासना

यहां पाठक कल्पना करें कि प्रत्येक घर में प्रातः सायं पारिवारिक प्रार्थना में घर के सब स्त्री-पुरुष सम्मिलित होते हैं, और वहां अति शीघ्र चक्रवर्ती राज्य स्थापना करने का बल ईश्वर से मांगा जाता है। नगर के समाज-भवन में सब नागरिक एक मत से अपने स्वतन्त्र स्वराज्य की स्थापनाके विघ्न दूर करनेकी प्रार्थना करते हैं। इसी तरह प्रांतों और राष्ट्रके वार्षिक महोत्सव में लाखों भारतवासी सम्मिलित होते हैं और अपने चक्रवर्ती राज्य की शीघ्र स्थापना करने की प्रार्थना ईश्वर से करते हैं तो उस राष्ट्र की मानसिक भूमिकामें राजकीय स्वतन्त्राका वायुमण्डल कितना बन सकता है। पाठक स्वामीजीको मानसिक तैयारी करनेकी इस आयोजना का महत्व सोचें इस भांति राष्ट्रीय मन तैयार हुआ तो उस मनके द्वारा हरएक दिशासे स्वतन्त्रता प्राप्त करनेके प्रयत्न होंगे और देश शीघ्र ही स्वतन्त्र होगा इसमें कोई सदेह ही नहीं है।

राष्ट्र का संगठन

केवल मनके विचारोंमें उक्त प्रकार स्वातंत्र्य प्रेम उत्पन्न होनेसे ही स्वराज्य स्थापना नहीं हो सकती यह तो स्वामीजी जानते ही थे। इस लिये उन्होंने भारतीयोंके सगठन का कार्यक्रम भी तैयार किया था।

नगर नगर में आर्यसमाज स्थापना करना और वह धर्मार्यसभा, विद्यार्यसभा, न्यायार्यसभा तथा राजार्य सभा आदि संस्थाएँ स्थापन करके अपने ग्राम का सारा कार्यव्यवहार स्वयं चलाना। वेद मन्त्रों द्वारा इन सभाओंके स्थापन करने का उपदेश श्री स्वामीजी ने अपने सत्यार्थ प्रकाशादि ग्रंथोंमें पर्याप्त परिश्रम पूर्वक दिया है, जो हरएक इस समय भी देख सकता

, इस लिये उनके इस विषय के वचन यहां उद्धृत
रनेकी कोई आवश्यकता नहीं है। जिसने सत्यार्थ-
काश, वेदभाष्यादि देखा है, उनको इन सभाओंकी
ापना करनेके उपदेशका ज्ञान है। अत अब हम
खते हैं, कि आर्यसमाजकी इन सभाओं का कार्य
या है—

१ धर्मार्यसभा—वेदमें कथित मानवधर्मका विचार
ह संस्था करे और प्रत्येक सदस्य अपनी धर्ममर्यादा
सुस्थिर रहता है या नहीं यह देखे और समझाकर
ब लोगों को धर्ममें रखे और धर्ममें लाने का यत्न
रे। वेदका अर्थ करना, वेदप्रचार करना आदि कार्य
स सभा के हैं।

जनताको अधर्मसे बचाना, संस्कारोंसे सबको
संघटित करना सत्यधर्मका प्रचार करके वेदके
भ उपदेशोंसे सब लोग उन्नत करना आदि कार्य
र धर्मसभा का है।

(२) विद्यार्यसभा—इस विद्यासभा द्वारा अपने
लक-बालिकाओंके विद्याध्ययन का सुयोग्य प्रबंध
ता है। प्राथमिक शिक्षा से प्रारंभ होकर अन्तिम
च शिक्षातक का सारा प्रबन्ध इस विद्या सभाका
र्य है। ज्ञान-विज्ञान, उद्योग, कलाकौशल्य आदि
व आवश्यक १४ विद्याओं और ६४ कलाओंकी
क्षा अपने युवकोंको देना इस विद्यासभाका कार्य
। कोई आर्य बालक या बालिका विदेशी राजप्रबंध
रा मिलनेवाली, परतन्त्र मन बनानेवाली, शिक्षा
लेवे और आर्य विद्वानों द्वारा निश्चित की हुई,
ार्य विद्वानों द्वारा चलाये जानेवाले गुरुकुलोंमें प्राप्त
नेवाली, आर्योंके चक्रवर्ती राज्यकी जिससे अति
घ्र स्थापना हो सकती है, ऐसी सुशिक्षा आर्योंके
ालोंको प्राप्त हो, यह उद्देश्य इसमें श्री स्वामीजीका
। जर्मनीमें आर्य युवकोंको भेजकर वहाँकी विज्ञा-
विद्या प्राप्त करना भी स्वामीजी का उद्देश्य था।

(३) न्यायार्यसभा—आर्यों के अपने झगडे
आपसके आर्योंके झगड़े विदेशी राजा की अदालतोंमें
नहीं जाने चाहिये। आर्यों के झगड़े आर्यों के द्वारा
ही निपटाये जायँ आर्यों के झगड़े निपटानेवाले
म्लेच्छ नहीं हो सकते। यह शुद्ध और सरल आर्यत्व
की दिशा है। इसलिये श्री स्वामीजी महाराजने
'न्यायार्यसभा' स्थापन करके इस सभाद्वारा आर्यों
के आपस के झगड़ों का निपटारा स्वयं आर्यों द्वारा
कराने की प्रथा शुरू करने की आज्ञा दी थी और
यह आज्ञा वेदानुकूल ही थी।

(४) जो कार्य 'धर्मसभा, विद्यासभा, और
न्याय सभा के कार्यक्षेत्र में नहीं आते, उन सब शेष
कार्यों के लिये 'राजार्यसभा है।' आर्योंके राजकीय
क्षेत्र में जो स्वाभाविक न्यायानुकूल और नागरिक-
त्वादि अधिकार और हक हैं, उनका संरक्षण करना
इस सभाका कार्य है।

(५) गोरक्षासे ही भारतीय किसानों की तथा
भारतीय कृषिकी उन्नति हो सकती है, यह जानकर
श्री स्वामीजी महाराजने 'गोकरुणानिधि' नामक ग्रंथ
निर्माण किया और आर्योंको गोरक्षाके लिये पर्याप्त
प्रयत्न करना चाहिये, ऐसा शुभादेश दिया। गोरक्षा
में केवल गौ की ही रक्षा आती है, ऐसा नहीं अपितु
वेदानुकूल कामदुघा और घटोध्नी गौ निर्माण करना
भी इस समाजका हेतु निःसंदेह है। गोदुग्ध भूमिके
ऊपरका श्रेष्ठ अमृत है, इससे भारतीय जनता वंचित
कभी न रहे, यह श्री स्वामीजीका गो आदिकी रक्षा
करनेमें विशाल हेतु था। आर्य गोदुग्ध पान करके
नीरोग और बलवान् बनें और स्वराज्यस्थापनाका
कार्य जोर से करें, यह उद्देश्य यहां स्पष्ट है।

(६) भारतवर्षमें क्या और संपूर्ण पृथ्वीपर
क्या, प्रजानुकूल राज्यशासनही जनताका सच्चा हित
करनेमें समर्थ होगा, यह जानकर आर्यसमाजकी

घटना और नियमोपनियमावली श्री स्वामीजीने ऐसी बनायी कि जिससे प्रजानियंत्रित, प्रजासंमत, प्रजा की संमतिसे चलनेवाली, प्रजाके प्रतिनिधियोंकी बहु संमतिसे संचलित होनेवाली कार्यप्रणाली आर्यों की बने और ऐसी संस्थामें कार्य करनेवाले आर्य भारतीय शासन संस्था के लिये सुयोग्य सदस्य बनें। आर्य समाज के सब कार्य इसी नियमानुसार होने योग्य कार्य प्रणाली स्वामी जी ने बनायी थी, यह उनकी दूरदर्शिता ही है।

स्वावलम्बन

आर्य समाज नामक मुख्य संस्था के आधीन धर्मसभा, न्यायसभा और विद्यासभा कार्य करने लग जाती और जैसा कि स्वामी जी महाराज ने सोचा था, वैसा ये सारी संस्थाए कार्य करने में समर्थ होतीं तो आज आर्यों के अधीन कितना अधिकार आ जाता, यह भी इस स्थान पर जानने योग्य है।

न्यायार्य सभा कार्य करने वाली हो गयी, तो सरकारी अदालतों पर पूर्ण बहिष्कार न कहते हुए और न बोलते हुए हो सकता है। विद्यासभा कार्य-क्षम हो गयी, तो सरकारी विद्यालयों पर बहिष्कार आप ही आप हो सकता है। विद्यासभा द्वारा १४ विद्या और ६४ कलाओं की शिक्षा शुरु होने पर अपने सब हुनर शुरू होने के कारण विदेशी वस्तुओं पर स्वय बहिष्कार हो जाता है। जो अपने पुत्रों को अपने स्वतन्त्र गुरुकुल विद्यालयों में पढ़ाते, अपने हुनर से बने वस्त्रादि निर्माण करके उनको ही पहनाते, अपनी न्यायसभा द्वारा अपने झगड़े निपटाते ऐसे पूर्ण स्वतन्त्रता प्रिय आर्य सरकारी नौकरी से अपना जीवन कभी अपवित्र नहीं करेंगे और विदेशी सरकार की पदवियां धारण करके भी अपने आपको कभी कलंकित नहीं करेंगे। क्योंकि वैदिक धर्मी का विदेशी सरकार के आधीन रहना ही असंभव है। इस दिशा से कार्य हुआ होता तो दिन प्रतिदिन आर्य सच्चे आर्य ही बनते जाते।

श्री स्वामीजी द्वारा सभात्रयनिर्मित स्वयंशासन आर्य समाज की संस्थापना से यह कार्य उक्त प्रकार आप ही आप होनेवाला था। स्वामीजी का यही उद्देश था, यह बात उनके ग्रन्थों में सर्वत्र स्पष्ट दीखती है यदि यह श्री स्वामीजी का उद्देश्य इस समय सफल होता, तो श्री महात्मा गाधीजीको अपने पच बहिष्कार पुकारने का अवसर ही न मिलता, क्योंकि आर्यसमाज द्वारा वही बहिष्कार महात्मा गाधीजी के भारतभूमि में अवतीर्ण होने के पूर्व ही सिद्ध होकर रहते और महात्मा गांधीजी को दूसरा कार्यक्रम सोचना पड़ता। परन्तु वैसा नहीं हुआ।।।

१ धर्मसभा द्वारा विदेशी धर्मप्रचारका प्रतिबंध

२ न्यायसभा द्वारा अपने झगड़े स्वयं मिटाने के कारण विदेशी सरकार की अदालतों प बहिष्कार,

३ विद्यासभा द्वारा अपने गुरुकुलों के संचाल द्वारा अपने आर्य युवकों की शिक्षा होने कारण विदेशी सरकार के शिक्षणालयों प बहिष्कार,

४ उक्त विद्यालयों में ६४ कलाओं की शिक्ष होने के कारण अपने लिये आवश्यक वस्तु के निर्माण होने से विदेशी वस्त्रादिकों प बहिष्कार,

५ आर्यों में अपने स्वतंत्र चक्रवर्ती राज्य की शीघ्र स्थापना करने की तीव्र इच्छा प्रक होने के कारण, विदेशी सरकार को अप शक्ति प्रदान न करनेकी ओर जनता भावना होनेके कारण विदेशी सरकारी नौक रियों पर बहिष्कार,

६. इसी उक्त कारण उनकी पदवियोंपर बहिष्का

ये सब बहिष्कार जो महात्मा गांधीजी ने सन १९२१ में पुकारे थे, वे ही बहिष्कार श्री स्वामी दया-नन्दजी महाराजने न पुकार करते हुए कार्यव्यवहार में लाने की आयोजना सत्तर वर्ष पूर्व ही शुरू की थी। जिस समय कांग्रेस का जन्म भी नहीं हुआ था, उस समय श्री स्वामीजी महाराज इस आयोजना को प्रचार करके आर्यसमाज द्वारा प्रचलित करने के विचारमें लगे हुए थे। यही उनके ऋषित्वका चिह्न है।

आर्यों का स्वयं शासन

नगर और ग्राममें उस नगर का आर्यसमाज, प्रान्त के नियन्त्रण के लिये प्रांतिक आर्यप्रतिनिधि सभा और अखिल भारतका नियंत्रण करने के लिये अखिल भारतीय सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा, इस तरह ग्रामसे प्रारम्भ होकर अखिल भारतवर्ष का नियन्त्रण पूर्वोक्त धर्म-विद्या-न्याय आदि सभाओं द्वारा स्वामीजी के आदेशानुसार होता, तो पाठक यह जान सकते हैं, कि यह एक आर्यों का 'स्वय-शासन' इस आर्यभूमि में आपही आप शुरू हो जाता। इस भरतखण्ड में विदेशी सरकार का राज-कीय क्षेत्र में शासन होते हुए भी, धर्म-विद्या-न्याय-उद्योग आदि क्षेत्रोंमें आर्यों का स्वयंशासन शुरू हो जाता और यह एक आर्यों का समान बराबरी का राज्यशासन (Parallel Government) न डंका बजाते हुए और न बोलते हुए शुरू हो जाता। और आज जो राष्ट्रीय महासभा (कांग्रेस) के अध्यक्ष अथवा सर्वाधिकारी श्री महात्मा गांधी जी एक ओर और दूसरी ओर ब्रिटिश सरकार के प्रतिनिधि श्री वायसराय होते हैं, और बराबरी के नाते से राज्य-शासन के विषय में निर्णय कर रहे हैं, वैसी ही अवस्था, अर्थात् एक ओर सार्वदेशिकार्य प्र० सभा अध्यक्ष और दूसरी ओर वायसराय रह कर भारतवर्ष के शासन का विचार बराबरी के नाते से करते। श्रीस्वामी जी महाराज ने जिस समय अपने आर्य-समाज की घटना लिखी थी, उस समय उनके सामने यह दृश्य था।

"सार्वदेशिक" के ग्राहकों से आवश्यक निवेदन

हमें अपने बहुत से ग्राहकों से यह शिकायत प्रति मास मिलती रही है कि उन्हें अंक या तो मिलता ही नहीं और यदि मिलता है तो कहीं न कहीं के मृतपत्र कार्यालय डी० एल० ओ० जाकर बहुत देर में मिलता है। यहां से "सार्वदेशिक" पत्र प्रति मास ६ तारीख से ८ तारीख तक अवश्य भेज दिया जाता है। यदि ग्राहकों को कोई अंक नहीं मिलता या विलम्ब से पहुंचता है तो इसका कारण यही हो सकता है कि "सार्वदेशिक" पर पते केवल हिन्दी में होते हैं और जो दुर्व्यवहार आजकल डाकघरों में हिन्दी के पत्रों के साथ हो रहा है उससे सब भली भांति परिचित हैं। अतः हमारा अपने प्रेमी ग्राहकों से निवेदन है कि वे उन अंकों के मुख पत्रों (टाइटिल पेजों) को अंक से पृथक् करके हमें भेज दें। जो उन्हें विलम्ब से मिले या डी० एल० ओ० जाकर पहुंचे ताकि उनके सम्बन्ध में डाक खाने से लिखा-पढ़ी की जा सके।

यदि किसी सज्जन को कोई अङ्क न मिले तो इसकी सूचना भी हमें अवश्य दें।

व्यवस्थापक,
सार्वदेशिक, देहली।

महिला जगत् !

फिर गा ऐसा गीत पुजारिन । फिर गा ऐसा गीत ॥

वेद ऋचाएं जिसकी लय हो ।
ऋषि वाणी ध्वनि अमृत मय हो ॥
आर्य अवनि जय मङ्गल मय हो ।
जो बोले सो सदा अभय हो ॥

गा ऋषि का संगीत पुजारिन । फिर गा ऐसा गीत ॥

वेदामृत का जग अंचल में ।
पान करा दे जल भूतल में ॥
त्रिभुवन के क्रीड़ा स्थल में ।
सप्तम स्वर से रवि मण्डल में ॥

गूँजे यह संगीत पुजारिन । फिर गा ऐसा गीत ॥

ओ३म् ध्वनि की योगिनि होकर ।
कोमल अंग भभूत रमा कर ॥
जगमग जगमग ज्योति जगत पर ।
वेद मन्त्र से आलोकित कर ॥

भर जग शक्ति पुनीत पुजारिन । फिर गा ऐसा गीत ॥

विश्व भर की अनुपम गरिमा ।
जग जननी की मंजुल प्रतिमा ॥
प्रमुदित होवे सब तुम को मां ।
वीणा विनंदित स्वर से आत्मा ॥

हर्षित हो सुन गीत पुजारिन । फिर गा ऐसा गीत ॥

(फणिन्द्र)

साहित्य समीक्षा

Religious Intolerance लेखक—धर्मवीर श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज प्रकाशक—
प्रेम पुस्तकालय आगरा मूल्य।)

यह अमर धर्मवीर स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज द्वारा सम्पादित History of Assasins नामक पुस्तक के भूमिका भाग का पुन प्रकाशन है जिसमें ईसाई मत और मुसलमानी मत में पाई जाने वाली धार्मिक असहिष्णुता का प्रबल प्रमाणों से दिग्दर्शन कराया गया है। पुस्तक अत्यधिक उपयोगी और उपादेय है।

घरगृहस्थी–लेखक श्री चरणदास
मित्तल B. A. L. T.

मिलने का पता —श्री गोविन्दराम हासानन्द आर्य साहित्य भवन नई सड़क देहली।

पृष्ट संख्या ४६० सजिल्द मूल्य २॥)

इस पुस्तक में रोचक शैली मे कथा रूप से गृहस्थ नारियों के जानने योग्य सब आवश्यक विषयों का बड़ी उत्तमता से निरूपण किया गया है। पुस्तक गृहस्थ आश्रम में प्रवेश करने वाली कन्याओं और सब नारियों के लिए अत्यन्त उपयोगी हैं।

श्री प्रो० महेशप्रसाद जी मौलवी आलिम फाजिल रचित नवीन पुस्तिकाए —

(१) श्री सर सैय्यद अहमद खाँ बहादुर और स्वामी दयानन्द सरस्वती जी। मूल्य ~)

इस पुस्तक में सरसैय्यद अहमद खा के स्वामी दयानन्द जी की मृत्यु पर लिखे लेख को मूल उर्दू तथा हिन्दी और अंग्रेजी अनुवाद सहित दिया गया है जिससे प्रकट होता है कि सुप्रसिद्ध मुस्लिम नेता सर सैय्यद अहमद खा महर्षि दयानन्द जी के बड़े भक्त थे। उन्होंने ६ नवम्बर १८८३ को अपने अलीगढ़ इन्स्टीटयूट् नामक पत्र में उर्दू में लिखा था उसके कई वाक्यों का हिन्दी अनुवाद यह है कि "स्वामी दयानन्द जी विद्वत्ता और उदारता के अतिरिक्त बहुत ही नेक और अच्छे स्वभाव के थे। उनके अनुयायी उनको देवता मानते थे। हम सदैव उनका बहुत सम्मान करते थे क्योंकि वे ऐसे विद्वान और अच्छे व्यक्ति थे कि प्रत्येक धर्म वाले को उनका सम्मान करना आवश्यक था। वे ऐसे व्यक्ति थे जिनके समान इस समय भारत में कोई नहीं है और प्रत्येक व्यक्ति को उनकी मृत्यु पर शोक करना आवश्यक है कि ऐसा अद्वितीय व्यक्ति उनके बीच से जाता रहा।"

प्रो० महेशप्रसाद जी ने इस छोटी सी पुस्तिका को इस समय प्रकाशित करके जबकि कट्टर मतान्ध मुसलमान स्वामी दयानन्द जी के नाम और अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश से इतनी चिढ़ रखते हैं बड़ा उपकार किया है।

(२) महर्षि जीवन दर्शक ॥)

(३) महर्षि का अपूर्व भ्रमण।)

(४) दयानन्द काल में रेल मार्ग ~)

इनका विषय नामों से ही स्पष्ट है। महर्षि दयानन्द के जीवन तथा यात्रा की अनेक घटनाओं पर इन पुस्तकाओं में प्रकाश डाला गया है तथा कई अशुद्धियों का भी निराकरण किया गया है। ये सब पुस्तिकाए बड़े परिश्रम और खोज का परिणाम हैं तथा संग्रह करने के योग्य है।

मिलने का पता —मैनेजर आलिम फाजिल बुकडिपो ११५, मुहतशिम गज इलाहाबाद

भजन कीर्त्तन—चतुर्थावृत्ति सग्रहकर्त्ता श्री छेदालाल शुक्ल सुधांशु—पृष्ठ १२८ मूल्य ~)॥
प्रकाशक आर्य समाज ब्यावर

इसमें प्राथना मंत्र, सन्ध्या मत्र (अर्थ सहित) हवन स्वस्ति वाचन शान्ति प्रकरण, सामान्य प्रकरणादि के मन्त्र तथा ईश्वर भक्ति, समाज सुधारादि विष-

यह ५३ भजनों का समग्रह है जिन में से अधिकतर बहुत उत्तम हैं किसीमें २ थोडे सशोधन की आवश्यकता है। प्रचार की दृष्टि से १२८ पृष्ठों की पुस्तक का मूल्य केवल ढ़ाई आना रक्खा गया है। पुस्तक उपयोगी और प्रचार करने योग्य है।

विश्वकर्मा दिग्दर्शन—लेखक व प्रकाशक श्री मूलचन्द्र जी शर्मा देहली—शिल्पशास्त्र प्रकाशन भण्डार हवेली हैदरकुली देहली मू० २)

इस पुस्तक में शिल्प विद्या और विज्ञान के प्राचीन आचार्य श्री विश्वकर्मा के जीवन और प्राचीन विज्ञान और शिल्प पर अनुसन्धान पूर्ण प्रकाश डाला गया है। लेखक का परिश्रम विशेष प्रशसनीय है पुस्तक उपादेय है धo देo

अखिल भारतीय आर्य वीर शिक्षण शिविर

आर्य भाइयों को यह जानकार हर्ष होगा कि, अखिल भारतीय आर्य-वीर दल शिविर, जो ता० २८।८।५४ से देहली के पास बदरपुर में लग रहा था सफलता पूर्वक ता० २७।६।५४ विजय दशमी के दिन समाप्त होगया। शिविर में सिन्ध, पंजाब, सयुक्त प्रान्त, बिहार, बगाल, तथा निजाम हैदराबाद से वीर शिक्षण लेने के लिये आये थे। शिविर में सैनिक शिक्षा, लाठी, शारीरिक व्यायाम भाला, तलवार छुरा, लेजिम तथा मुष्टिका (बौक्सिग)का शिक्षण दियागया। बौद्धिक शिक्षण केलिये पं० धर्मदेव जी विद्यावाचस्पति, स० मन्त्री सार्वदेशिक सभा, श्री पं० धर्मवीर जी वेदालङ्कर मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ देहली, श्री पं० हरिशरणजी सिद्धान्तालकार, श्री डा०सुखदेवजी, तथाश्री पं०भीमसेनजी अधिष्ठाता आर्य वीर दल पजाब पान्त के भिन्न २ विषयों पर ओजस्वी व्याख्यान हुए। अन्त में श्री पं० धर्म वीर जी द्वारा परीक्षा में उत्तीर्ण वीरों को प्रमाणपत्र दिये गये।

ओंप्रकाश
स० प्रधान सेनापति, आर्य वीर दल

विशेष सूचनाएं

श्री विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध संस्थान लाहौर

६०-६० रु० मासिक की प्रौढ़-छात्र-वृत्तियां

विश्वेश्वरानन्द वैदिक सस्थान लाहौर की ओर से दो वर्ष पर्यन्त चलने वाली ६०-६० रु० मासिक की चार छात्र-वृत्तियों का विशेष रूप से आयोजन किया गया है। इनके द्वारा २३ से २८ वर्ष तक की आयु के वेद, व्याकरण, साहित्य, दर्शन आदि विषयों में से दो तीन के अन्दर आचार्य परीक्षोत्तीर्ण या उतनी योग्यता वाले युवकों को क्रियात्मक रूप से शोध प्रक्रिया का अभ्यास तथा तत्संबन्धी अध्ययन कराकर उन्हें अपने यहां या अन्यत्र अवसर के अनुसार शोध कार्य के लिये नियुक्त कर करा लिया जावेगा। उनका अगृहस्थ होना तथा अंग्रेजी को जानना भी उपयोगी वैशिष्ट्य समझा जावेगा। वेदादि शास्त्रों के अनुसंधान कार्य में परम रुचि रखने वाले तथा कडे परिश्रम से न घबराने वाले व्यक्ति ही २० सितम्बर तक निम्न पतेसे आवेदन पत्र भेजें।

सचालक—विश्वबन्धु शास्त्री
विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोधसस्थान
नाभा हौस, देवसमाज रोड, लाहौर

पौरोहित्य परीक्षा

१ उद्देश्यः—कर्मकांड के विशेषज्ञ, सस्कार आदि कराने में निपुण, विद्वान् व्याख्याता और सुदृढ आर्य पुरोहितों को तैयार करना।

२ विधान—इस परीक्षा का संचालन करने के लिये एक पौरोहित्य परीक्षा पटल होगा जिस का निर्वाचन श्री सार्वदेशिक सभा की अन्तरंग

सभा द्वारा हुआ करेगा। इस पटल के नियम पटल स्वयं बनावेगा। परन्तु अन्तरंग की स्वीकृति आवश्यक होगी।

३ परीक्षार्थी की योग्यताः—जो सज्जन संस्कृत की मध्यमा, गुरुकुल कांगड़ी और वृन्दावन की अधिकारी परीक्षा, मैट्रिक संस्कृत के साथ तथा उसकी समकक्ष परीक्षा में पास होंगे वे इस परीक्षा में सम्मिलित हो सकेंगे। परन्तु परीक्षार्थी को पौरोहित्योचित सदाचार का प्रमाण विशेष आर्य सज्जनों द्वारा देना होगा।

४ पाठ्य क्रम —

१. प्रश्न पत्रः—वैदिक कर्मकांड

(क) पंचमहायज्ञ विधि (ख) संस्कार विधि (ग) संस्कार चन्द्रिका (घ) आर्य पर्व पद्धति।

संध्या, अग्निहोत्र सामान्य प्रकरण, स्वस्तिवाचन शान्तिप्रकरण के समस्त मन्त्र तथा उपनयन, वेदारंभ और विवाह संस्कार के मुख्य मंत्र शुद्धता पूर्वक कठस्थ होने चाहिये और उनका अर्थज्ञान होना चाहिये। संस्कारों की प्रत्येक विधि के अनुष्ठान तथा प्रयोजन का पूर्णज्ञान होना चाहिये।

कर्म कांड में एक लिखित परीक्षा होगी जिसके पूर्णांक १०० होंगे और दूसरी क्रियात्मक मौखिक परीक्षा होगी जिसमें मन्त्रों के शुद्ध उच्चारण और विधि के अनुष्ठान आदि पर विशेष ध्यान दिया जायेगा। क्रियात्मक परीक्षा के पूर्णांङ्क १०० होंगे।

द्वितीय पत्र-पूर्णाङ्क १००

आर्योद्देश्यरत्नमाला, व्यवहारभानु, गोकरुणानिधि, आर्य समाज का इतिहास, स्वामी दयानन्द सरस्वती का जीवन चरित्र।

तृतीय पत्र-पूर्णाङ्क १००

(क) सत्यार्थप्रकाश सम्पूर्ण। (ख) स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश (ग) ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका।

(पाठ्यक्रम अगले अङ्क में)

चतुर्थ पत्र-पूर्णाङ्क १००

स्वामी दयानन्द और उनका घातक !

[लेखकः—अध्यापक बहूर बख्श जी 'हिन्दी कोविद']

स्वामी दयानन्द जी का जन्म गुजरात-प्रदेश के टङ्कारा नाम के स्थान में हुआ था। उनका बचपन का नाम था—मूलशङ्कर। बालक मूलशङ्कर बड़ा ही चतुर और बुद्धिमान् था। वह जिस बात पर विचार करता था, खूब अच्छी तरह करता। उसे विद्या से बड़ा प्रेम था। उसका मन छुटपन ही से ईश्वर के भजन में ज्यादा लग जाता।

जब मूलशङ्कर की उमर कुछ अधिक हुई, तब वह विद्या पढ़ने के लिये एक दिन चुपचाप घर से निकल पड़ा और यहां-वहां भटकता हुआ अन्त में मथुरा पहुँचा। उन दिनों मथुरा में स्वामी विरजानन्द नाम के एक सन्यासी रहते थे। उनकी दोनों आँखें जाती रही थीं, पर वे बड़े विद्वान्। दूर दूर तक उनका नाम फैल रहा था। मूलशङ्कर ने भी उनकी तारीफ सुन रक्खी थी। वह उनके पास जा पहुँचा और विरजानन्द जी ने उनका नाम रक्खा—दयानन्द स्वामी विरजानन्द जी दयानन्द को बड़े प्रेम से विद्या पढ़ाते थे और दयानन्द जी भी खूब मन लगाकर अपना सबक़ याद करते थे। वे बड़े प्रेम से गुरु जी की सेवा करते थे, जिससे गुरु जी भी उन्हें बहुत चाहते थे। अन्त में दयानन्द जी पूरे विद्वान् बन गये।

दयानन्द जी का स्वभाव बचपन ही से बड़ा दयालु था। वे अपने दुश्मनों पर भी दया करते और उनका क़सूर माफ कर देते थे। हम

तुम्हें उनकी इसी तरह की एक अच्छी कहानी सुनाते हैं—

एक बार स्वामी दयानन्द जी घूमते फिरते जोधपुर जा पहुँचे। उनके साथ उनके कई शिष्य और विद्यार्थी भी थे। जोधपुर के राजा ने स्वामी जी का बड़ा आदर सत्कार किया और उन्हें बड़े प्रेम से ठहराया। उसी समय एक आदमी, किसी कारण से, स्वामी जी पर नाराज़ हो गया। उस दुष्ट ने स्वामी जी से बदला लेने के लिये बड़ा ही बुरा काम किया। उसने किया क्या कि स्वामी जी के रसोइए को कुछ देकर मिलाया और फिर उससे स्वामी जी को दूध में काँच पिसवा कर पिलवा दिया।

काँच पी जाने से स्वामी जी को बड़ी ही तकलीफ हुई। उनका तमाम शरीर फूट निकला—सारे शरीर में छाले पड़ गए। वे उठने-बैठने के लिए भी लाचार हो गए। अन्त में उन्हें मालूम हो गया कि रसोइए ने धन के लोभ में आकर मुझे काँच पिला दिया है।

स्वामी जी ने रसोइए को अपने सामने बुलवाया। रसोइया आया, वह हाथ जोड़कर खड़ा हुआ और मारे डर के थरथर कापने लगा स्वामी जी के कई शिष्यों ने उनसे कहा—महाराज यह बड़ा ही बेईमान और दुष्ट है अब इसे फौरन् पुलिस के हवाले कर देना ठीक है।

स्वामी जी ने उन लोगों को जवाब दिया ओह! क्या कहते हो। जब यह पापी है, तब तो इस पर दया ही करनी चाहिए—इसका कसूर माफ़ कर देना ही ठीक है।

फिर स्वामी जी ने एक शिष्य को थैली उठाने की आज्ञा दी। उसने फौरन् थैली उनके सामने रख दी। उन्होंने थैली रसोइए के हाथ दे दी और उससे कहा—जिस धन के लिए तूने मुझे कांच दिया है, वही धन मैं तुझे तेरे प्राण बचाने के लिए देता हूँ। जा, फ़ौरन् भाग जा! नहीं तो लोग तुझे बहुत दुःख देंगे। रसोइया उन्हें प्रणाम कर चला गया।

स्वामी जी अच्छे नहीं हुए। उस कांच ने उनके प्राण लेकर ही छोड़ा। स्वामी जी ने कष्ट से प्राण दे दिए, पर उस रसोइए से कुछ भी न कहा। उन्होंने उसका कसूर ही माफ़ नहीं किया—उस पर दया भी की। बड़े लोग अपने दुश्मन पर भी क्रोध नहीं करते, बल्कि उसके क़सूर भी माफ़ करते हैं। तुम्हें भी अपने दुश्मनों के साथ ऐसा ही व्यवहार करना चाहिए

स्वामी जी ने हिन्दू-धर्म की बुरी रीतियों को दूर करने के लिए कई अच्छी-अच्छी किताबें भी लिखी थीं। वे लोगों को बुरी रीतियां दूर करने के लिए उपदेश भी देते थे। आज दिन हिन्दुस्तान के लाखों आदमी स्वामी जी का उपदेश मानते हैं, और वे लोग 'आर्य' कहलाते हैं।

DIVINE SAGE !

(By Doctor Surya Dev Sharma M A., L T,
D Litt S Shastri, AJMER)

(1)

Blessed soul, O Sage divine !
ı Vedic seers' luminous line,
'ho is to sing peerless praise thine ?
ıat on the earth as "Sun" does shine

(2)

ır Nation doomed to darkness deep,
umb damned in thraldom as the sheep
ɔr ages in misery to weep,
'hen heavenly thy ray did peep

(3)

ıen flashed a blazing Vedic light
ıe "Light of Truth" did end the night
th falsehood-founded faiths tough fight
brought the bright success in sight

(4)

ıou wert mercy-incarnation,
ıou wert life and soul of Nation,
ıou wert bedrock for formation
' the future new generation

(5)

ıou brought the Vedic tenets back
ıat Aryan nation long did lack,
ɔ more converted John or Jack,
ɔ foreign faith shall us now sack.

(6)

ıe "Light of Truth", thy heritage,
l Hindus' Bible of the age,
all ever shine with brighter rays
ıy name be immortal, O sage !

"Sun"

The Sprit of Toleration in Islam

(Continued from the September issue)

(10) The great Historian Elphinsa writes in his " History of India,": "Such was the nation that gave birth to the false prophet ... *the sprit of intolerance* in which it (his religion) was preached and the bigotry and bloodshed which it engendered and perpetuated must place its author among the worst enemies of man kind "

(11) Andre Servier writes "such is the man who conceived Islam and who by the strength of his arm and the sharpness of his sword carved out of the world this Muslim Empire '

(12) Marcus Dad writes, "Unquestionably the grand cause of the success of Islam was its use of the sword . Here *converts are made on the field of battle with the sword at their throats* "

(13) What to say of the European writers, even the fair minded Muslim writers like Mr Saiyad Mohammad Latif acknowledge the fact, when, like others, he writes in his book "History of the Punjab", Mohammad propagated his religion by the sword 'The sword' said he is the way of paradise and hell, A drop of blood shed in the cause of God and a night spent in arms is of more avail to the faithful than two months of fasting and prayer. . "

Is there any greater evidence required now in favour of Intoleration and the use of sword in Islam ?

(14) And yet the last, but not the least, the strongest evidence of the vehement criticism of others and the spirit of Intolerance found in the Hиjoy Quran comes from the so called last prophet of Islam, Mirza Gulam Ahmed Qadiyani, the founder of the Ahmadiya sect of Islam, who writes in his famous book "Ajala Awahami" (P 900) to the following effect —

"We shall have then to admit that the Quran is full of abuses condemnation and curses to the non-believers, which do not become it in such an enlightened age . "

What more proofs are required to show that the spirit of Intoloeration is pervading the tenets and history of Islam Will our friends, the Muslim Leaguers look into their own Holy Quran and other literature on Islam befoie they come forward to lay their hands on the "Satyarth Prakash" which, in the words of Mr. Ranga Aiyer, the famous author of 'Father India' is the Bible of all the Hindus in India and abroad ?

Surya Deva Sharma

सम्पादकीय

म० गांधी जिन्ना वार्ता भङ्गः—

महात्मा गान्धी और मि० मोहम्मदअली जिन्ना के मध्य जो बात चीत ६ सितम्वर से हिन्दू मुस्लिम समस्या-पाकिस्तान योजनादि विषयक चल रही थी और जिसकी सफलता की अनेक उत्कट आशावादी बड़ी २ आशाएं कर रहे थे वह अन्तत: २६ सितम्वर सायं भग्न हो गई यह जान कर हमें जरा भी आश्चर्य नहीं हुआ। हमारा प्रारम्भ से ही यह निश्चित विचार था कि महात्मा गान्धी का किसी भी रूप में पाकिस्तान योजना को स्वीकार करना और उसके आधार पर केवल वैयक्तिक रूप में जैसे कि उन्होंने स्वयं ही स्पष्ट कर दिया था मि० जिन्ना जैसे अहङ्कारी और हठधर्मी मुस्लिम नेता से मिलना न केवल निरर्थक और निष्फल होगा बल्कि देश के लिये हानिकारक भी होगा। महात्मा गांधी और मि० जिन्ना के मध्य जो पत्र व्यवहार हुआ है उसे आद्योपांत पढ़ने पर किसी भी निष्पक्ष पात पाठक पर स्पष्टतया यह प्रभाव पड़ता है कि मि० जिन्ना वस्तुतः [illegible] न उन्हें देश की स्वतन्त्रता की कोई चिन्ता थी वे तो इसी बात पर तुले हुए थे कि म० गान्धी जी को अपने विचारों से जिस किसी तरह परिवर्तित कर दें अथवा उनसे पूर्ण आत्म समर्पण करादें। यह चर्चा भङ्ग होने पर भी मि० जिन्ना ने यही लिखा कि—I rengret to say that I have failed in my task of converting Mr Gandhi

अर्थात् मुझे खेद है कि मैं गांधी जी के मत परिवर्तन कराने के कार्य में असफल रहा हूँ। राजा जी के प्रस्ताव तथा म० गान्धी जी के प्रस्ताव को स्वीकार करने और महात्मा जी को मुस्लिम लीग के अधिवेशन में अपने प्रस्ताव को रखने की अनुमति देने से भी मि० जिन्ना ने सर्वथा इन्कार कर दिया। यह प्रसन्नता की बात है कि म० गान्धी जी ने इसबार कुछ दृढ़ता दिखाई और पूर्ववत् मुस्लिम लीग तथा उसके अहम्मन्य प्रधान को कोरा चैक देने से उन्होंने इन्कार कर दिया पर हमें अब भी भय है कि महात्मा गान्धी जी पाकिस्तान की योजना को किसी रूप में स्वीकार कर के फिर मि० जिन्ना से पत्र व्यवहार वा बातचीत करें अत: सब सच्चे देश प्रेमियों और भारत की अखण्डता में विश्वास रखने वालों का कर्तव्य है कि वे भारत के खण्ड २ करने की समर्थक सब योजनाओं का घोर विरोध प्रबल और सगठित रूप में करें ताकि महात्मा गांधी जी तथा उनके अनुयायियों को पुनः इस प्रकार की निष्फल और हानिकारक चर्चा चलाने का साहस न हो। इस दृष्टि से हम ७-८ अक्टूबर को देहली में होने वाले अखण्ड भारत सम्मेलन का अभिनन्दन करते हैं और आशा करते हैं कि इस अखण्ड भारत आन्दोलन को पूर्णतया सगठित और देश व्यापी बनाने में कोई कसर न छोड़ी जाएगी।

सत्यार्थप्रकाश सम्मेलन और स० प्र०निधिः—

यह प्रसन्नता की बात है कि आर्य समाजों और आर्य कुमार सभाओं के वार्षिकोत्सवों के अवसरों पर सत्यार्थप्रकाश सम्मेलन की आयोजना एक नियमित सा रूप धारण कर चुकी है। अभी गत मास २२ से २४ ता० तक भारतवर्षीय आर्यकुमार परिषद् का जो वार्षिक अधिवेशन मुरादाबाद में हुआ था उसमें भी सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के सुयोग्य प्रधान श्री पं० गङ्गाप्रसाद जी एम. ए. के प्रधानत्व में सत्यार्थप्रकाश सम्मेलन किया गया। गत १ अक्टू० को देहली समीपस्थ नजफगढ़

आर्य समाज के वार्षिकोत्सव के अवसर पर स्वा० ब्रह्मानन्द जी सरस्वती के सभापतित्व में सत्यार्थप्रकाश सम्मेलन ग्रामवासी नरनारियों की बड़ी अच्छी उपस्थिति में उत्साहपूर्वक मनाया गया आगामी ८ अक्तूबर को आर्य समाज चाह बोहर वाला मुलतान के वार्षिकोत्सव के अवसर पर सत्यार्थप्रकाश सम्मेलन मेरी अध्यक्षता में किया जाने वाला है ऐसे ही अन्यत्र भी सब जगह सत्यार्थप्रकाश सम्मेलनों की धूम होने लगी है जो प्रचार की दृष्टि से अत्यन्त उपयोगी और अभिनन्दनीय है। किन्तु इस विषय में इतना लिख देना हमें आवश्यक प्रतीत होता है कि इन सत्यार्थप्रकाश सम्मेलनों की समाप्ति यदि जनता मे सत्यार्थ प्रकाश विषयक प्रेम उत्पन्न करने तक ही रह गई और इनका उपयोग सत्यार्थ प्रकाश निधि के लिए निश्चित २ लाख रु० की राशि की पूर्ति में न किया गया जैसा कि अनेक स्थानों पर देखने में आया है तो यह उचित न होगा। सत्यार्थ प्रकाश के साथ प्रेम रखने वाले सब नरनारियों का यह भी परम कर्तव्य हो जाता है कि वे अपने लिये ज्योतिःस्तम्भ का कार्य देने वाले इस पवित्र धर्म ग्रन्थ की सब आक्रमणों से रक्षा और इसके प्रचार के लिये अधिकतम उदार आर्थिक सहायता अवश्य प्रदान करें अन्यथा जो मौखिक प्रेम प्रदर्शित किया जाएगा वह नाम मात्र ही होगा। सत्यार्थ प्रकाश सम्मेलन के आयोजक महानुभावों का ध्यान हम इस विषय की ओर आकर्षित करना अपना कर्तव्य समझते हैं और हमें निश्चय है कि अब जब कि सत्यार्थ प्रकाश के सम्बन्ध में लाहौर में मुकदमा वस्तुतः दायर कर दिया गया है तथा अन्य प्रान्तों में भी उसके चलाये जाने की सम्भावना है इस २ लाख रु० की सत्यार्थ प्रकाश निधि की पूर्ति में जरा भी विलम्ब न किया जाएगा। इस समय तक सार्वदेशिक सभा कार्यालय में प्राप्त राशि जो इसी अङ्क में अन्यत्र प्रकाशित की गई है सर्वथा असन्तोष जनक तथा आर्य जनता के लिये कलङ्क रूप है। यदि राष्ट्र माता स्व० कस्तूरबा गान्धी जी के पवित्र नाम पर स्थापित राष्ट्रीय निधि में ७ महीनों में लगभग १ करोड़ की राशि एकत्रित हो सकती है तो क्या वैदिक धर्मोद्धार कशिरोमणि आचार्य वर महर्षि दयानन्द जी की अमर कृति सत्यार्थ प्रकाश जैसे पवित्र धर्म ग्रन्थ की रक्षा और प्रचार के लिये आर्य जनता में इतना प्रेम और उत्साह नहीं कि २ लाख की राशि ७-८ मासों में एकत्रित हो सके? हम इस बात को मानने को तैयार नहीं कि आर्य जनता में अपने धर्म ग्रन्थ के लिये इतना प्रेम और उत्साह नहीं है। बहुत सम्भवतः इस असन्तोष जनक गति का कारण यह हो कि अभी तक सत्यार्थप्रकाश विषयक मुकद्दमा केवल सम्भावना का विषय था अत उस विषयक अत्यधिक प्रयत्न की आवश्यकता जनता ने प्रबल रूप से अनुभव न की हो पर अब जबकि यह वास्तविक घटना के रूप में परिणत हो चुकी है इस विषयक २ लाख रु० की पूर्ति में जरा भी विलम्ब आर्य जनता की उदासीनता और उत्साह हीनता का ही परिचायक होगा। इस कलङ्क से अपने को बचाना आर्य जनता के अपने हाथ में है। हमें पूर्ण विश्वास है कि समस्त आर्य जनता अब लग कर इस सत्यार्थप्रकाश निध्यर्थ निश्चित २ लाख रु० की पूर्ति में तत्पर हो जाएगी और समस्त धन सार्वदेशिक सभा कार्यालय में तुरन्त पहुँचा देगी। महर्षि दयानन्द जी के अमर बलिदान दिवस दीपमालोत्सव तक (जो इस वर्ष १६ अक्तू० को पड़ता है) २ लाख रु० की राशि पूर्ति कर देना अमर कीर्ति महर्षि के प्रति क्रियात्मक श्रद्धाञ्जलि अर्पित करना होगा।

न्ध सरकार का असन्तोष जनक उत्तर—

'सार्वदेशिक' के जून मास के अङ्क में सम्पाद-
ा टिप्पणी में हमने लिखा था कि सिन्ध गवनरके
मन्त्री महोदय का पत्र आया है कि उन्होंने
ची के डिस्ट्रिक्ट जेल पुस्तकालय से सत्यार्थ-
ाश की प्रति हटा देने विषयक सभा का पत्र सिंध
कार के गृह सचिव (Home Member) के
। उत्तरार्थ भेज दिया है इनका उत्तर आने पर
ा होगा कि किसकी आज्ञा से सिन्धी सत्यार्थ-
ाश को कराची के जिला जेल पुस्तकालय से
ाये जाने की शरारत की गई थी।" सिन्ध सरकार
ग० मन्त्री का इस विषय में जो उत्तर १-६-४४
सभा कार्यालय में प्राप्त हुआ वह यह था कि
'ith refrence to you letter dated the
th. July 1944 I am directed to state
at Government do not consider it
sirable to allow prisoners te be supp-
d with the book in question the
ATYARTH PRAKASH" अर्थात् आपके
जुलाई १६४४ के पत्र के उत्तर में मुझे यह
लने को आज्ञा हुई है कि सरकार कैदियों को
ाने के लिये सत्यार्थप्रकाश देना वाञ्छनीय नहीं
मझती।

सिन्ध सरकार का उपर्युक्त उत्तर सर्वथा असं-
ोषजनक है। इसके उत्तर में सभा की ओर से
न्ध सरकार के मन्त्री से पूछा गया है कि वे कौन
कारण हैं जिनके आधार पर सिन्ध सरकार
त्यार्थप्रकाश का कैदियों को अध्ययनार्थ देना
ञ्छनीय नहीं समझती जब कि वह आर्यों को
तना ही प्रिय तथा पवित्र है जितना कि ईसाइयों
लिये बाइबिल और मुसल्मानों के लिये कुरान
रीफ। क्या कुरान के अध्ययन विषयक इस
कार की कोई प्रतिबन्ध है यदि नहीं तो सत्यार्थ
काश के विषय में ही यह प्रतिबन्ध क्यों लगाया
गया है? क्या सत्यार्थप्रकाश के कारण आज तक
कोई भी लड़ाई फसाद व शान्ति भङ्ग कहीं हुआ
है? यदि नहीं (जैसे कि वास्तविक घटना है)
तो क्यों आर्यों तथा अन्य हिन्दुओं को ऐसे उत्तम
और उपयोगी ग्रन्थ के अध्ययन के लाभ से केवल
इसलिए वञ्चित किया जाए कि कई मतान्ध मुस-
ल्मान इसे नहीं पसन्द करते? सभा इस बात
को स्पष्ट करना चाहती है कि यह समस्त आर्य
जनता के लिये अत्यावश्यक विषय है यदि
सिन्ध सरकार ने अपने इस विषयक निश्चय को
न बदला तो आर्य जनता इसे अपनी धार्मिक स्वत-
न्त्रता में हस्तक्षेप समझेगी तथा इससे समस्त
आर्य जगत् में बड़ा विक्षोभ उत्पन्न हो जाएगा।
हम आशा करते हैं कि सिन्ध सरकार जिसने गत
जून मास में आर्य जनता के आन्दोलन के परि-
णाम स्वरूप यह बुद्धिमत्ता पूर्ण घोषणा की थी
कि वह सत्यार्थप्रकाश के विरुद्ध कोई कार्रवाही
करने का विचार नहीं रखती अपने उपर्युक्त
निश्चय को बदल कर आर्य जनता के असन्तोष
को दूर कर देगी।

'हमदर्द' का विषवमनः—

'मीरपुर खास' (सिन्ध) के एक साप्ताहिक
पत्र 'हमदर्द' ने २४ अगस्त के अङ्क में 'सत्यार्थ-
प्रकाश' के सिन्धी अनुवाद के २ य प्रकाशन पर
विषवमन करते हुए सिन्ध सरकार तथा हिन्दू
जनता को बुरी तरह से भड़काने का निन्दनीय
प्रयत्न किया है। उसने जो लेख इस सम्बन्ध में
लिखा है उस में आर्यों को नीच, शान्ति भङ्ग
करने वाले आदि बुरे शब्दों से याद किया गया
है और सिन्ध सरकार के मुस्लिम मन्त्रियों को
उकसाते हुए कहा गया है कि "क्या उनके अन्दर
अपने धर्म के लिये प्रेम और उत्साह नहीं है कि वे
इस्लाम, कुरान शरीफ, खुदा के पैगम्बर और खुदा
पर गालियां दी जाती हुई देख और सुनकर भी
चुप हैं? क्या सिन्ध सरकार चाहती है कि सिन्ध
की भूमि में खून की नदी बहने लगे? क्या वह
मुसलमानों के अपने धर्म पर विश्वास को परीक्षा
करना चाहती है? यदि नहीं तो क्यों कुछ पागल

लोगों को (यह आर्यों की ओर निर्देश है) धर्म और विश्वास के नाम पर पागलपन के काम करने दिया जाता है ? क्यों कुछ अत्याचारियों को जो करोड़ों मुसलमानों की धार्मिक भावनाओं पर ठेस पहुँचाते हैं खुला छोड़ा जाता है जिससे वे मुसलमानों पर अत्याचार कर सकें। इस संक्षिप्त अपील में हम सिन्ध मन्त्रिमण्डल को चेतावनी देते हैं कि वह मुसलमानों की भावनाओं के प्रति आदर दिखावे और इस शरारती पुस्तक (सत्यार्थप्रकाश) के प्रकाशन को रोक दे अन्यथा हमें निश्चय है कि यह पुस्तक बड़ी शरारत और खराबी पैदा करेगी जिस को रोकना सिन्ध सरकार की शक्ति में न होगा और उसके लिये सिन्ध सरकार ही जिम्मेवार होगी। इस लिये ऐसी चेष्टा को जो शान्तिके भंग का कारण बने उसे तत्काल रोक देना चाहिए। हम हिन्दू मित्रों से भी अपील करते हैं कि वे अपने सम्मिलित प्रयत्नों से इस अनुचित और अत्यन्त पाप जनक कार्य को रोकने का प्रयत्न करें। अन्यथा वे इसके परिणाम से न बचेंगे। हमें आशा है कि सिंधसरकार बुद्धिमता पूर्ण कदम उठाएगी और तत्काल इस पुस्तक (सत्याथप्रकाश) की छपवाई को बन्द कर देगी और छपे हुए फार्मों को जब्त कराकर अपने शान्ति के प्रेम और शक्ति का परिचय देगा तथा मुसलमानों को उत्तेजन में आकर सीमा के उल्लङ्घन करने को बाधित न करेगी। इत्यादि—

हमें सचमुच आश्चर्य है कि सिंधसरकार किसी भी पत्र सम्पादक के इस प्रकार के विषवमन को जिसका परिणाम सचमुच बड़ा भयकर हो सकता सकता है। कैसे सहन कर रही है। जैसे कि—

Studies in Mohammednism के लेखक मि० जॉनपूल ने लिखा है —"Mohammadans have earned for themselves through out the world the title of fanatics as a cousequence of their wild word and actions in connection with the faith once delivered to them by Mohammed t Prophet The old feeling of intole nce and fanaticism among Musli is probably every where almost strong as ever it was (Studies Mohammedanism by John Pool P. 3

अर्थात् मुसलमानों ने अपने लिये सारे सं में अपने कठोरता पूर्ण शब्दों और कार्यों के परिण स्वरूप (Fanatics) मतान्ध की पदवी ग्रहण ली है। प्राय मुसलमानोंके अन्दर असहिष् और मतान्धता का भावअब भी उतना ही प्र है। जितना कि पहले विद्यमान था।

सरकार का यह कर्त्तव्य नहीं है कि ऐसी मतान्धता और असहिष्णुता को प्रोत्साहित करे। ऊपर के लेख में एक तरह से खुले तौर पर आर्यों को वध करने की धमकी दी गई है। जिसका भयंकर परिणाम सम्भव है यदि इस प्रकार क अनर्गल प्रलाप करने वाले तथा अशिक्षित मतान्ध मुसलमान जनता को भड़काने वाले लोगों को उचित दण्ड न दिया जाए। सत्यार्थ प्रकाश में मतमतान्तरों की युक्ति युक्त आलोचन के अतिरिक्त कोई मार काट करने तथा परस्प विद्वेष वा वैर विरोध बढ़ाने वाली बात नह है। अत उसकी छपवाई बन्द करने तथा छ हुए फार्मों को जब्त कराने की प्रेरणा करन सर्वथा अनुचित है। हमें आशा है कि ऐसे अनुत्तरदायित्व पूर्ण व्यक्तियों के भड़काने सिन्ध सरकार सत्यार्थ प्रकाश की जब्ती जैस अविवेक पूर्ण कार्य न कर बैठेगी, अन्यथ इस पवित्र धर्म ग्रन्थ की रक्षा आर्य हिन्दू लो सब प्रकार का बलिदान देकर भी अवश्य करेंगे।

दो अत्यन्त शोक जनक वियोगः—

गत मास की १६ और २८ तारीख को आ जनता को दो महानुभावों के देहावसान दुःख सहन करना पड़ा जो अपनी योग्यता और शक्ति के अनुसार आर्य समाज की बड़ी सेवा कर

। थे, एक तो राजा ज्वालाप्रसाद जी रि० चीफ
नीयर तथा रि० प्रोवाइस चान्सलर हिंदू
व विद्यालय (काशी) थे जो सन् १९०१ में
याला रियासत में आर्यों पर मुकद्दमे के
य वहाँ की आर्य समाज के प्रधान थे।
ोंने जाति भेद के विरुद्ध प्रबल आन्दोलन
ने का अब निश्चय किया हुआ था और
र्वदेशिक सभा की इस विषयक उपसमिति
सदस्यता उन्होंने सहर्ष स्वीकार की थी।
तु खेद है कि आर्य जनता उनकी अमूल्य सेवाओं
वञ्चित हो गई। दूसरे महानुभाव श्री मा०
लक्ष्मण जी आर्योपदेशक थे जिन्होंने वैदिक
धर्म, आर्य समाज, ऋषिजीवन, राधास्वामीमत,
आदि विषयक अत्यन्त उत्तम पुस्तकें लिखी थीं।
त इस्लाम उनकी वैदिक धर्म के प्रति निष्ठा अत्यन्त
प्रशंसनीय और अनुकरणीय थी हम इन दोनों
महानुभावों के प्रति अपनी श्रद्धांजलि आर्य जनता
की ओर से अर्पित करते हुए उनके पवित्र
आत्माओं को सद्गति और उनके सब सम्बन्धियों
को शान्ति व धैर्य प्रदान करने के लिए भगवान्
से प्रार्थना करते हैं।

धर्मदेव विद्यावाचस्पति।

सार्वदेशिक आर्य प्रति निधि सभा

दान सूची वेद प्रचार निधि

मास सितम्बर सन् १९४४

ी ठा० रामप्रसाद जी देहली शाहदरा पुत्र के नाम करण के अवसर पर

श्री डा० लक्ष्मण कृष्ण प्रसाद जी उपमन्यु (नरसिंह गढ़ C. I)

श्री मूलराज जी पुरी Executive Engineer श्री गंगानगर (बीकानेर) पुत्री पुष्पादेवी के विवाहोपलक्ष्य में द्वारा श्री पं० धर्मदेव जी विद्यावाचस्पति स० मन्त्री सार्वदेशिक सभा।

दानसूची आर्यसमाज स्थापना दिवस

) आर्य प्रति० सभा हैदराबाद स्टेट द्वारा
) श्री मन्त्री जी आर्य समाज नैरोबी (ईस्ट अफ्रीका)
" " " " भितकर (जौनपुर)
" " " " खड़गपुर (बंगाल)
" " " " नजीबाबाद- (बिजनौर)
" " " " फर्रुखाबाद
" " " " ऊधमपुर- (काश्मीर)

।=) योग
।) गतयोग
।।=) सर्वयोग

सब दानियों को धन्यवाद। खेद है कि बहुत सी आर्य समाजों ने अपना अंश इसनिधि के लिए अभी तक नहीं भेजा और इस विषयक बजट की पूर्ति में अभी लगभग १२००) की कमी है ऐसी सब आर्य-समाजों को अब भी धन संग्रह करके और यदि यह सम्भव न हो तो अपने कोष से अच्छी राशि भेजकर अपने कर्तव्य और सभा के आदेश का पालन करना चाहिये। मन्त्री सभा

दान सूची सत्यार्थप्रकाश निधि

संयुक्तप्रान्त

१८) श्री डा० आनन्द प्रकाश जी आगरा
द्वारा श्री ईश्वरदास जी

विदेश

२५०) श्री मन्त्री जी आर्य समाज पो० ७७
दारेसलम ब्रि० ईस्ट अफ्रीका

हैदराबाद रियासत

२५) श्री मन्त्री जी आर्य समाज निजामाबाद द्वारा
श्री मन्त्री जी आर्य प्रति० सभा हैदराबाद स्टेट

मद्रास प्रान्त

१५) श्री मंजुनाथ जी उपदेशक द्वारा संगृहीत

३२८) योग

१५०६६।।।≈) गत मास तक का योग

१५४०७।।।≈) सर्वयोग

इनके अतिरिक्त आर्य-कुमार सभा बड़ौदा द्वारा ४०००) के लगभग राशि एकत्रित होने की सूचना प्राप्त हुई है अन्य भी स्थानों से ऐसी कुछ सूचनाएं हैं पर अभी कार्यालय में रु० प्राप्त नहीं हुआ अत उसका उल्लेख नहीं किया गया। जहां जो भी धन इस सत्यार्थप्रकाश निधि में प्राप्त हुआ हो उसे अब तुरन्त सार्वदेशिक सभा कार्यालय देहली में भिजवा देना चाहिए। इसमें जरा भी विलम्ब न करना चाहिये। इस निधि के २ लाख रु० की राशि की पूर्ति अब सब आर्य प्रतिनिधि-सभाओं और आर्य समाजों को मिलकर तुरन्त कर देनी चाहिये। वर्तमान गति सन्तोषजनक और आर्यों के गौरव के अनुरूप नहीं है। धर्मदेव विद्यावाचस्पति

स० मन्त्री सार्वदेशिक आ० प्र० सभा

भूल सुधार

—पृ० २५३ पर छपे भजन की चौथी पंक्ति में छपाई की त्रुटि से 'धुलाये जा' की जगह 'धुल जा' छप गया है पाठक उसे ठीक करके पढ़ें। ५ वीं पंक्ति में 'पी ले' के स्थान पर पीले छप गया है उसे भी ठीक करलें। सम्पादक

भूल संशोधन

सितम्बर मास के सार्वदेशिक में प्रकाशित दान सूची सत्यार्थ प्र० निधि में '१०० रु० श्री ठाकुर दुर्लीपसिंह जी साहब बीरपुर नरेश द्वारा श्री प० कन्हैया लाल जी" छपा है। यह राशि बीरपुर नरेश ने श्री प० जी को भेंट की थी जो उन्होंने सभा को सत्याथप्रकाश निधि में दान करदी थी। पाठक कृपया इस प्रकार सुधार कर पढ़ें।

धर्मदेव वि वा०

स० मन्त्री, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

इस समाज का आठवां वार्षिकोत्सव ता० ३०-९-४४ से २-१०-४४ तक हुआ उसमें १—सत्यार्थप्रकाश सम्मेलन २—अखण्ड भारत सम्मेलन, ३—गोरक्षा सम्मेलन हुये जिसमें प्रधान क्रमश श्री स्वामी ब्रह्मानन्द जी सरस्वती श्री बाबू मनोहर सिंह जी वकील महंत मनोहरदास जी वैद्यकुल भूषण रहे तथा पं० धर्मदेव जी विद्यावाचस्पति स० मंत्री सा० दे० सभा पं० रामचन्द्र जी जिज्ञासु उ० प्र० आ० स० दीवानहाल पं० अमरसिंह जी मा० केदारनाथ जी बी० ए० मन्त्री दीवानहाल प० रामचन्द्र जी देहलवी प० दुर्गाप्रसाद जी शास्त्री प० व्यासदेव जी शास्त्री पं० सेवाराम जी उपदेशक दीवानहाल, आदि के व्याख्यान हुये तथा म० ईश्वरदयाल जी रामसेवक जी लहरी कु० वीरेन्द्र जी धनुर्धरके भजन हुए प्रो० सत्यदेव जी व्यायामाचार्यके व्यायाम सम्बन्धी खेलों का प्रदर्शन हुआ।

सेवाराम उपदेशक

आर्य समाज दीवानहाल देहली

स्वाध्याय योग्य उत्तम साहित्य

श्री महात्मा नारायणस्वामी जी कृत

कतिपय ग्रन्थ

(१) मृत्यु और परलोक

शरीर, अन्तःकरण तथा जीव का स्वरूप और भेद, जीव और सृष्टि की उत्पत्ति का प्रकार, मृत्यु का स्वरूप तथा बाद की गति, मुक्ति और स्वर्ग नरक इत्यादि का स्वरूप, मुक्ति के साधन आदि आदि विषयों पर अद्भुत पुस्तक। मूल्य ।|=)

(२) उपनिषद् रहस्य

ईश, केन, कठ, मुंडक माण्डूक्य, बृहदारण्यक उपनिषदों की बहुत सुन्दर खोजपूर्ण और वैज्ञानिक व्याख्यायें।

मूल्य क्रमशः—

।≡), ।-), ≡), =)॥, -)॥, २)

अरबी के सुप्रसिद्ध विद्वान् शास्त्रार्थ महारथी

श्री प० रामचन्द्र जी देहलवी कृत

सत्यार्थ प्रकाश विषयक अत्युत्तम पुस्तकें—

(१) सत्यार्थप्रकाश के १४ वें समुल्लास में उद्धृत कुरान की आयतों का देवनागरी में उल्था और उनका हिन्दी अनुवाद। मूल्य ॥)

(२) कुर्आन् में अन्य मतावलम्बियों के लिये कुछ अति कठोर उत्तेजक वाक्यों का संग्रह

हिन्दी अंग्रेजी अनुवाद सहित। प्रचारार्थ घटाया हुआ मूल्य ।=)

नोट—उपर्युक्त पुस्तकें प्रत्येक आर्य के पास रहनी चाहियें।

मिलने का पताः—सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, देहली।

श्री प० रघुनाथप्रसाद पाठक—पब्लिशर के लिये लाला सेवाराम चावला द्वारा "चन्द्र प्रिंटिंग प्रेस", श्रद्धानन्द बाजार, देहली में मुद्रित।

Regd. No. L. 2121

सार्वदेशिक सभा पुस्तक भण्डार की उत्तमोत्तम पुस्तकें

(१) वैदिक सिद्धान्त मञ्जिल्द ॥
(२) यमपितृ परिचय ॥)
(३) अथर्ववेदीय चिकित्सा शास्त्र २
(४) वैदिक सूर्य विज्ञान ‌-)
(५) वेद में असित् शब्द -)॥
(६) ऋग्वेद में देवकामा शब्द ...)
(७) विदेशों में आर्य समाज ॥)
(८) दयानन्द सिद्धान्त भास्कर
(९) आर्य्य सिद्धान्त प्रकाश १)
(१०) भजन भास्कर ॥)
(११) समस्त आर्यसमाजों की सूची ।)
(१२) सार्वदेशिक सभा का इतिहास
अ० स० ४॥)
(१३) बलिदान १)
(१४) आर्य डायरेक्टरी ... १॥)
(१५) वैदिक सन्ध्या रहस्य =)॥
(१६) सत्यार्थ निर्णय १)
(१७) संस्कृत सत्यार्थप्रकाश (प्र...) ॥)
(१८) ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका ... साइज १॥)
(१९) आर्याभिविनय ।-)
(२०) इजहारे हकीकत (उर्दू)
(२१) म० नारायण स्वामीजी की आत्म क...
(२२) मातृत्व की ओर ... १॥...
(२३) आर्य्य जीवन और गृहस्थ धर्म
(२४) आर्य वर्त ... शिक्षा ...
(२५) आर्य और दल यौद्धिक शिक्षा ।-)
(२६) आर्य समाज का इतिहास ।
(२७) भक्ति कुसुमाञ्जलि ॥)
(२८) विमान शास्त्र
(२९) वेद में दो बड़ी वैज्ञानिक शक्तियां १)

(३०) सत्यार्थ प्रकाश गान ।=)
(३१) वहिना की बातें १)
(३२) भारतवर्ष में जाति भेद ।)
(३३) A... h tra— २॥)
(३४) ... by an eyewitness ।-)
(३५) Truth and Vedas ।=)
(३६) Truth ... Book of Aryan Culture ॥)
(३७) Vedic Teachings १।)
(३८) Voice of Arya Varta =)
(३९) ... Christianity in India ॥)
(४०) The Se... and Mission ... Bound १)
(४१) ... Dayananda ... Bound ५)
(४२) ... Ishopanisad ॥)
(४३) Kenopanishat (English) ।)
(४४) Daily p... ... Arya)



१९५४ ई०
कार्तिक २०११ सं०

सम्पादक—
[illegible]

वार्षिक मूल्य
विदेश ७शि०

॥ ओ३म् ॥

सार्वदेशिक

* सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली का मासिक मुख पत्र *

वर्ष २० } नवम्बर १९४४ ई०] कार्तिक २००१ दयानन्दाब्द १२१ { अङ्क ८

* वैदिक प्रार्थना

ओं सनादेव तव रायो गभस्तौ न क्षीयन्ते नोपदस्यन्ति दस्म। द्युमाँ असि क्रतुमाँ इन्द्र धीरः शिक्षा शचीवस्तव नः शचीभिः ॥ ऋ० १।६२।१२

शब्दार्थ—हे (दस्म) दुःखनाशक (इन्द्र) परमेश्वर (सनात् एव) सनातन वा अनादि काल से ही (राय) ज्ञानादि ऐश्वर्य (तव गभस्तौ) तेरे अधिकार में हैं जो (न क्षीयन्ते) न तो घटते हैं और (न उपदस्यन्ति) न नष्ट होते हैं हे (इन्द्र) परमैश्वर्य युक्त प्रभो। तू (द्युमान्) प्रकाशवान् ज्ञानवान् (क्रतुमान्) क्रियावान् और (धीर) धीर है हे (शचीव) बुद्धि प्रदाता। तू (न) हमें (तव) अपनी (शचीभि) बुद्धियों से वा शक्तियों से (शिक्ष) शिक्षा दे, सिखा।

विनय—हे सब दुःखों के दूर करने वाले प्रभो आप का ज्ञानादि रूप ऐश्वर्य अनन्त और अविनाशी है। आप सर्वज्ञ और जगत् की उत्पत्ति स्थिति प्रलयादि अद्भुत कार्यों के कर्ता हैं। आप की बुद्धि और शक्ति का कहीं अन्त नहीं है अत हम आप से प्रार्थना करते हैं कि

अपनी अनन्त बुद्धि और शक्ति से हमारे सारे अज्ञानान्धकार को दूर करके हमें ज्ञान ज्योति देकर अनुगृहीत करें जिससे हमारा यह अमूल्य मनुष्य जीवन सफल हो और हम व्यर्थ इधर उधर न भटकते फिरें। स्वयम् आप की कृपा से ज्ञान प्राप्त करके हम औरों को भी सच्चा ज्ञान देने में समर्थ हो सकें यही हमारी प्रार्थना है॥

वैदिक सुभाषितामृत

(गताङ्क से आगे)

(३६) रक्षा माकिर्नो अघशंस ईशत ॥

ऋ० ६।७५।१०

हे परमेश्वर। तुम हमारी (रक्ष) रक्षा करो (अघशंसः) पाप में लोगों को प्रवृत्त करने वाला और स्वयं पापी वा चोर (नः) हमारे ऊपर (माकिः ईशत) कभी शासन न करे। दुष्टों के शासन में हम कभी न रहें ऐसी भावना सबको सदा रखनी चाहिये और तदर्थ प्रयत्न करना चाहिये।

(३७) अग्निर्मन्द्रो मधुवचा ऋतावा ॥

ऋ० ७।७।४

(अग्नि.) नेता (मन्द्रः) सबको आनन्दित करने वाला (मधुवचाः) मधुर वचन बोलने वाला तथा (ऋतावा) सत्य बोलने वाला, ज्ञानी और यज्ञभावना रखने वाला अर्थात् त्यागी और परोपकारी होना चाहिये। ऋत के मुख्यतया सत्य, ज्ञान और यज्ञ ये तीन अर्थ होते हैं।

(३८) अग्निं विश ईळते अध्वरेषु ॥

ऋ० ७।१०।५

(विशः) सब प्रजाएं (अध्वरेषु) हिंसा रहित सभी शुभकार्यों में (अग्निम् ईळते) सर्वप्रकाशक ज्ञानमय परमात्मा और ज्ञानी नेता की पूजा व सत्कार करती हैं।

(३९) त्वंहि रत्नधा असि ॥ ऋ० ७।१६।६

हे प्रभो (त्वम्) तू (हि) निश्चय से (रत्नधा असि) ज्ञानादि रत्नों का धारण करने वाला है। ज्ञान और ऐश्वर्य का भण्डार वा मूल स्रोत भगवान् है।

(४०) स्यामते सुमताविन्द्र शर्मन् ॥

ऋ० ७।१८।२

हे (इन्द्र) परम ऐश्वर्य सम्पन्न प्रभो हम (ते सुमतौ) तेरी उत्तम बुद्धि और (शर्मन्) सुख वा आश्रय में (स्याम) सदा रहें।

(४१) तव प्रियासः सूरिषु स्याम ॥

ऋ० ७।१९।७

हे परमेश्वर हम (सूरिषु) विद्वानों के बीच में (तव) तेरे (प्रियासः स्याम) प्रेम पात्र बनें। तेरी आज्ञाओं का पालन करते और सदा शुभ कार्य करते हुए तेरे प्रिय बने रहें।

(४२) प्रियास इत्ते मघवन्नभिष्टौ नरो मदेम शरणे सखायः ॥ ऋ० ७ १९।८

हे (मघवन्) परमेश्वर। हम (नरः) मनुष्य (ते) तेरे (अभिष्टौ इत्) इष्ट कार्य में ही तत्पर और इसलिये तेरे (प्रियासः) प्रिय बन कर तेरे (शरणे) शरण में वा आश्रय में (सखायः) मित्र रूप होकर सदा (मदेम) आनन्दित रहें। परमात्मा की

आज्ञाओं का पालन करने अर्थात् उत्तम कार्यों में सदा तत्पर रहने से ही हम परमेश्वर के प्रिय मित्र बनकर दिव्य आनन्द प्राप्त कर सकते हैं।

(४३) मा शिश्नदेवा अपि गुर्ऋतं नः ॥

ऋ० ७।२१।५

(शिश्नदेवाः) व्यभिचारी और भोग परायण लोग (नः) हमारे (ऋतम् अपि) यज्ञ में भी (मा गुः) न आवें। व्यभिचारियों की सङ्गति में किसी को न रहना चाहिये ताकि वे अन्यों को न बिगाड़ सकें।

(४४) सखायस्त इन्द्र विश्वह स्याम ॥

ऋ० ७।२१।९

हे (इन्द्र) परमेश्वर हम (विश्वह) सदा (ते) तेरे (सखायः) समान पवित्र गुण कर्म स्वभाव वाले मित्र (स्याम) होवें।

(४५) अस्मे ते सन्तु सख्या शिवानि ॥

हे प्रभो (ते) तेरी (सख्या) मित्रताएं (अस्मे) हमारे लिये (शिवानि) कल्याण कारक (सन्तु) होवें। परमेश्वर को अपना मित्र बनाने से—उसके समान अपने गुण कर्म स्वभाव को पवित्र बनाने से मनुष्य का सदा कल्याण होता है।

(४६) प्र ते महीं सुमतिं वेविदाम ॥

ऋ० ७।२४।६

हे परमात्मन्। हम (ते) तेरी (महीम्) विशाल—उदार (सुमतिम्) उत्तम बुद्धि वा ज्ञान को (प्रवेविदाम) उत्तमता से प्राप्त करें।

(४७) त्वे अपि क्रतुर्मम ॥ ऋ० ७।३१।५

हे प्रभो। (मम) मेरा (क्रतु) संकल्प वा कर्म (त्वे अपि) तुझ में ही समर्पित है।

(४८) तस्य व्रतानि न मिनन्ति धीराः ॥

ऋ० ७।३१।११

(धीराः) ज्ञानी ध्यानी बुद्धिमान् लोग (तस्य) उस परमेश्वर के (व्रतानि) शुभ संकल्प वा आदेशों का (न मिनन्ति) कभी उल्लङ्घन नहीं करते। बुद्धिमान् लोग ईश्वर की आज्ञाओं और उसके बनाये नियमों का सदा पालन करते हैं।

(४९) नत्वावां अन्यो दिव्योन पार्थिवो न जातो न जनिष्यते ॥ ऋ० ७।३२।२३

हे परमात्मन् (त्वावान्) तेरे जैसा (अन्यः दिव्यः न) कोई और दिव्य प्राणी वा पदार्थ नहीं (न पार्थिवः) न कोई भौतिक मनुष्य तेरे समान है। तेरे समान कोई भी (न जातः) न हुआ है और (न जनिष्यते) न कभी होगा। परमेश्वर अनुपम है तथा सदा अनुपम ही रहेगा।

(५०) आर्या ज्योतिरग्राः ॥ ऋ० ७।३३।७

(आर्या) आर्य अर्थात् श्रेष्ठ सदाचारी लोग (ज्योतिरग्राः) ज्योति को आगे रखने वाले ज्ञान ज्योति को जगा कर काम करने वाले होते हैं॥ पाठक महोदय इस मास इन वैदिक सुभाषितों को अर्थ सहित भली भांति स्मरण कर लें और अपने परिवार के सब लोगों तथा बालक बालिकाओं को भी वैसा करने की प्रेरणा करें। ऐसा करने से सब को लाभ होगा।

—सम्पादक

अध्यात्म सुधा

गुण सागर

गुण सागर मैं आया पास
तेरे मुझ में गुणगण भर दे ॥ ध्रुव

१ तू अनुपम बल का भण्डार
कोई न पावे तेरा पार।
सभी गये गा गा कर हार
मेरा पाप ताप सब हर दे ॥

२ तू ज्योतिर्मय जग का कर्ता
इन विशाल लोकों का भर्ता।
तू ही पतितों का उद्धर्ता
ईश्वर मुझ पर करुणा कर दे ॥

३ मुझ को शाश्वत सुख की चाह
कर मेरे दुर्गुण गण दाह।
प्रभु सुन मुझ गरीब की आह
मुझ को अचल भक्ति का वर दे ॥

४ मैं अनन्त तव करता ध्यान
शान्ति मूल तू ही भगवान्।
दिव्य रत्न दे मुझे महान्
मेरे सब छिद्रों को भर दे ॥

५ बहे शान्ति सागर हिय अन्दर
ज्योति शक्ति भर जाए भीतर।
तव चरणों में हो मेरा सर
मुझ पर मङ्गलकर कर धर दे ॥ ध्रु"व"

हमारा ध्येय

(भुजङ्ग-प्रयात छन्द)

(ले०—श्री नरेन्द्रसिंह यादव, इटौली-फिरोज़ाबाद)

सदिच्छा यही हो कि कल्याण ही हो।
जपो ओ३म् ही ओ३म् आनन्द ही हो ॥१॥
भरो भावना भव्य है पापहारी।
विधाता हमारा सदा दुःखहारी ॥२॥
कटें कष्ट ही क्या मिटें, कामनाएं।
रहें सर्वदा दूर दुर्वासनाएं ॥३॥
करो कर्म जानो कि कर्त्ता वही है।
सकामी कभी, मुक्ति-गामी नहीं है ॥४॥
डरो सर्वदा सर्वद्रष्टा विभू से
पगो प्रेम में लौ लगी हो प्रभू से ॥५॥
नहीं बन्ध बाधा, सताती कभी है।
बने ध्येय ही सर्वव्यापी जभी है ॥६॥

आर्यसमाज के चमकते सितारे

स्व० राजा ज्वालाप्रसाद जी

लेखक—श्री प० गङ्गाप्रसाद जी एम० ए० प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा।

श्री राजा ज्वाला प्रसाद जी रिटायर्ड चीफ इंजिनियर युक्त प्रान्त जिनका १६ सितम्बर १६५४ को दिल की धड़कन बंद होने से अचानक स्वर्गवास होगया वे आर्य समाज के एक पुराने और मान्य नेता थे। वे पहिले भारतीय सज्जन थे जिन्होंने P W.D में उच्चपद को प्राप्त किया। सरकारी कार्य से अवकाश प्राप्त करने पर वे कई वर्ष तक हिन्दू यूनीवर्सिटी बनारस के प्रो० वाइस चांसलर रहे, साथ ही और कुछ वर्ष पहिले से यूनीवर्सिटी के चीफ इन्जिनियर भी रहे। लगभग १ करोड़ रुपये लागत के यूनीवर्सिटी में जो विशाल और विस्तृत भवन बने हुए हैं, वे सदा राजा ज्वाला प्रसाद के अपूर्व उद्योग और कार्य कौशल के स्मारक रहेंगे।

सन् १६०६ में जब पटियाला दरबार क ओर से पटियाला आर्य समाज पर फौजदारी का मुकदमा चलाया गया, उस समय श्री ज्वाला-प्रसाद जी आर्य समाज पटियाला के प्रधान थे, और मुकद्दमे में प्रमुख अभियुक्त थे, उस मुकद्दमे से आर्य जगत् में बड़ी हलचल हुई और उसका विस्तृत वृत्तान्त एक बड़ी पुस्तक के रूप में छपा जिसको महात्मा मुन्शीरामजी और प्रो. रामदेवजी ने लिखा था। और जिसका नाम Aryasamaj Ardicts deetroctors है। उस मुकदमे के दौरान में श्री ज्वालाप्रसाद जी ने जो अपूर्व साहस, निर्भयता और सत्य प्रेम दिखलाया उससे सब उनके चरित्र बल और आर्यत्व पर मुग्ध हो गए, परिणाम यह हुआ कि पटियाला सर्कार

को मुकदमा वापस लेना पड़ा और सरकारने उन्हें राजा खिताब भी प्रदान किया।

अब राजा ज्वालाप्रसाद जी का विचार आर्य समाज के सहयोग द्वारा सँगठित और सुव्यवस्थित रूप से जन्म परक जाति भेद को दूर करने में उद्योग करने का था। इस विषय पर एक प्रस्ताव भी गत आर्य सम्मेलन में (जो फ़र्वरी १६४४ में देहली में हुआ,) रक्खा गया था। सार्वदेशिक आर्य प्रति निधि सभा ने उसको स्वीकार करके, इस महत्व पूर्ण कार्य के लिए मेरी अध्यक्षता में एक उप समिति बनाई जिसके एक प्रमुख सदस्य श्री राजा साहब भी थे। अन्य सदस्यों में प्रो० धर्मेन्द्र नाथ शास्त्री M A. और प्रिंसिपल महेन्द्र प्रताप शास्त्री M A. हैं। मुझ को इस कार्य में राजा ज्वालाप्रसाद जी से बहुत सहायता की आशा थी, परन्तु उनके अकस्मात् दुःख प्रद देहावसान से वह आशा निर्मूल होगई।

राजा ज्वालाप्रसाद जी के विचार बहुत उच्च और उदार थे, उनका चरित्र अनुकरणीय था। उनकी आयु इस समय ७२ वर्ष थी, परन्तु वे बड़े उद्योगशील और परिश्रमी थे। सदा प्रसन्न चित्त और हँस मुख रहते थे, जो कोई भी उनके पास किसी कार्य में सहायता या परामर्श लेने को आता था, वह कभी विमुख नहीं लौटता था, इस प्रकार वे एक आदर्श आर्य व्यक्ति, थे। उनके स्वर्ग वास होने से यद्यपि साधारण जनता को भी भारी हानि पहुँची है, परन्तु आर्य समाज के लिए उनका वियोग विशेष हानि प्रद है ईश्वर उनकी आत्मा को सद्गति प्रदान करें॥

देश और हमारा कर्तव्य (१)

ले०—प० विद्यानन्द जी वेदालंकार

जिस प्रकार ईंटों का ढेर दीवार नहीं कहा जा सकता। किन्तु उनका जब मकान के लिये संगठन किया जाता है तभी वह ईंटें दीवार और मकान कहलाने लगती हैं। उसी प्रकार केवल शरीर से इकट्ठा रहने वाले बाजार, मेलों या जनसमूह को राष्ट्र या देश नहीं कहा जा सकता। एक विचार से आचरण करने वाले एक ही परम्परा, भाषा, साहित्य और संस्कृति के सूत्र में बंधे लोग हों-तो-वे देश या राष्ट्र कहला सकते हैं।

वही समाज जिसके प्रत्येक व्यक्ति के दिल में समाज (राष्ट्र व देश) जीवन के भाव कूट २ कर भरे गये हों संसार के जीवन संग्राम में अपनी हस्ती शान के साथ कायम रख सकता है। इतिहास के इस प्राचीन सत्य को कभी नहीं भूलना चाहिये।

हमारे देश में प्रायः हरेक आदमी केवल अपना ही स्वार्थ सोचता है। उसमें यह भावना प्रबल होती है, कि मैं अकेला हूँ। हमारी दुर्दशा का मूल कारण यही है। जब हरेक आर्य व भारतीय के दिल में यह श्रद्धा पक्की हो जायेगी कि मैं विशाल देश (जाति-समाज व राष्ट्र) का हिस्सा हूँ; और समाज का ऋण चुकाना मेरा परम कर्तव्य है। तब हमारे लिये कोई बात भी असम्भव न होगी।

हमारा देश सदियों से सो रहा है। हमारे देश के लोगों ने कभी जाग कर अपने साथियों की हालत को देखा ही नहीं। धीमे २ हमारा समाज इस प्रकार करता चला गया कि जैसे हमने क्लोरोफार्म सूंघा हो। इस हमारे समाज (देश या राष्ट्र) की हालत एक बेहोश आदमी की तरह है।

आज हमारी हालत उस तोते की तरह है- जो सोने के पिंजरे में कैद हो और बहुत दिनों से रहने के कारण संकटों से स्वतन्त्र होना न चाहे और सन्तुष्ट हो। इस प्रकार हमारा समाज सन्तुष्ट और मृत प्राय है। उसकी हालत अब बदलनी होगी। उसे होश में लाना होगा। उसे हरकत करने के लिये अपनी हालत से असन्तुष्ट और बेचैन कर देना होगा। इसलिये हमारा काम समाज के व्यक्ति २ को जगाना है। इस हालत से उसमें घृणा उत्पन्न करनी है। इस प्रकार हरेक देश वासी या समाज के हिस्से को सुस्त, गैर जिम्मेवार और सन्तुष्ट दशा से बदल कर, कर्तव्य शील (आर्य), जिम्मेवार और असन्तुष्ट बना कर समाज का काम करने वाला, पक्का और जीवित, जागृत हिस्सा बना देना है। हमारा काम तभी बढ़ेगा जब समाज की इस दशा से असन्तुष्ट हो कर अधिक से अधिक स्वयं सेवक या कार्य कर्ता तैयार हो जाय। इस प्रकार जब तक सारे का सारा समाज या राष्ट्र जागृत नहीं होता तब तक हमारा काम वेग से जारी रहना चाहिये। यह काम हमारा है और हमने समाज को शक्ति शाली बनाना है, ऐसी आग लगानी है, कि जिससे हरेक व्यक्ति समझे कि मेरी हालत अच्छी नहीं।—

इस प्रकार समाज या देश की हालत को सुधारने के लिये खुद तैयार असंतुष्ट स्वयं सेवकों के रूप में सब को एक जगह लाना है। यही आर्य समाज का देश के प्रति कार्य है। न कि हमारा समाज व देश कुछ थोड़े से लीडरों व उपदेशकों पर अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिये पराधीन मनो वृत्ति रख कर विश्वास करके रहने की आदत सीख ले। हरेक कार्य को करने के लिये हमारे पास पर्याप्त स्वयं सेवक या शक्ति हो। समाज में स्वयं अपने कर्तव्य को पूरा करने की क्षमता हो। हम नेता और उपदेशक की जगह की पूर्ति कर सकते हों। इतनी कर्तव्य भावना और योग्यता हममें अधिक से अधिक लोगों में हो जाय। हमें यह बात ज्ञात हो, कि स्वतन्त्रता का मूलमन्त्र अंग्रेज नहीं, गांधी जी नहीं, किन्तु कर्तव्य भावना है, स्वयं सेवक पन है। (स्व = अपने कर्तव्य की भावना-तन्त्र = राज्य)। यदि हमारे समाज में सभी अपने कर्तव्य को पूरा करने के लिये त्याग-तप और बलिदान कर सकते हों-तब किस वस्तु का मोह, बन्धन या चिन्ता हमें स्वतन्त्रता के लिये प्रयत्न करने से रोक सकती है। तब हमारा समाज पराधीन कैसे रह सकता है?

नेता कार्य को करने के लिये, सुव्यवस्था एवं नियम को कायम- रखने के लिये हो; न कि अपना गुलाम बनाने वाला। हमारे समाज के लिये काम करने वाले कुछ थोड़े से नेता व उपदेशक हों और बाकी तमाशबीन (श्रोता दर्शक मात्र) जनता हो, तो, यह एक धोखा है। यह तमाश बीन जनता नेताओं के हटने पर चुप. होकर बैठ रहेगी। यह अपने कर्तव्य को खुद सम्भालने के लिये तैयार न होगी। क्योंकि वह कर्तव्य भावना वाले स्वयं सेवकों (आर्यों) की टोली नहीं; किन्तु अपना कर्तव्य न जानने वाले और करने की आदत न रखने वाले तमाशबीन लोगों की टोली है। अकबर से तंग आकर देशी

ही तमाशा बीन प्रजा के कारण, साथियों की कमी देख कर महाराणा प्रताप अरावली उपत्यका निराश होकर छोड़े जा रहे थे। आज यही हमारे कई नेताओं की हालत है। इसी के कारण जाति के अनेकों काम चीख पुकार के साथ समाप्त हो जाते हैं। दीन दुःखी की पुकार को सुन कर कर्तव्य का उपदेश देने वाला प्रभु हमारे देश में ठुकरा दिया जाता है। कर्तव्य भावना वाले (आर्य) लोगों का जन्म दाता प्रभु हमने पहचाना ही नहीं। आय = ईश्वर पुत्र" यह बात लोगों ने प्रत्यक्ष देखी ही नहीं। निराकार किन्तु दिल में शोर करते हुए भगवान् का साक्षात्कार हमने न किया है, न कराया है। इस सर्वकल्याणकारी को देख लेने के बाद "एकान्त मुक्ति और मूर्तिपूजा" कैसे पनप सकेंगे। क्या, तब-कृण्वन्तो विश्वमार्यम् !" को वेद से पढ़कर सुनाना पड़ेगा? क्या, वह प्रभु का मन्त्र (सलाह-उपदेश) है-यह युक्तियों से समझाने की जरूरत होगी? आर्य समाज में और देश में कर्तव्य भावना वाले-दृढ़,वीर,साहसी पुरुषों की विशाल सेना तैयार करना आर्य वीर दल का उद्देश्य है।

शेष फिर

ऋषि दयानन्द और सत्यार्थ प्रकाश

(लेखक—पूज्य पाद महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज)

ऋषि दयानन्द के लिये, कुछेक अदूरदर्शी मुसलमान यह आक्षेप करते हैं कि उन्होंने अन्य मतों और विशेष कर मुसलमानी मत की आलोचना क्यों की परन्तु ऐसे आक्षेपक यह नहीं जानते कि इस आलोचना का प्रारम्भ स्वयं मुसलमानों और ईसाइयों की ओर से हुआ है।

इस सम्बन्ध में सबसे पहिली किताब हिन्दू धर्म के विरुद्ध एक मुसलमान ने १८५६ ई० में लिखी थी जिस ग्रन्थ के आधार ही से इस आलोचना और प्रत्यालोचना का प्रारम्भ हुआ। इस सम्बन्ध में हिन्दुओं की ओर से जितने भी ग्रन्थ लिखे गये चाहे वे मु० इन्द्रमणि मुरादाबादी द्वारा अथवा आर्य मुसाफिर प० लेखराम आदि द्वारा उनका रूप प्रत्यालोचना का ही रहा था। मुसलमान जब इसलाम को मिशनरी मजहब कहकर हिन्दुओं को इसलाम की दावत देते हैं तब प्रत्येक हिन्दु का अधिकार होजाता है कि इसलाम के सिद्धान्तों और उसके बानी के चरित्र की जांच पड़ताल करे। फिर जब वे ऐसा करते हैं, तो मुसलमानों के लिये इस पर तिल-मिलाने की बात कौन सी है? कुछ दिन हुए जब एक मुसलमान भाई ने मुझ से एक प्रश्न किया कि मुसलमानों के सिद्धान्त की कोई आलोचना करे परन्तु इसलाम के बानी के चरित्र की क्यों आलोचना की जाती है? मैंने उत्तर दिया इसलिए कि इस्लाम के ग्रहण करने के लिये उस के बानी पर ईमान लाना इस्लाम में आवश्यक ठहराया गया है, यदि मुसलमान इस्लाम ग्रहण करने के लिये उसके बानी पर ईमान लाना अनावश्यक ठहरा देवें तब कोई भी मुहम्मद साहिब के चरित्र की आलोचना न करेगा। जब मुसलमान कहते हैं कि उसके बानी पर ईमान

लाओ तब कोई कैसे आँख बन्द करके बिना जांच पड़ताल किये ईमान ला सकता है? अरब में इसलाम ग्रहण करने के लिए उसके बानी पर ईमान लाने की शर्त लगा कर स्वयं मुसलमानों ने दुनिया को दावत दी थी कि उसके बानी के चरित्र की जांच पड़ताल करे। वास्तव में इसलाम के लिए वह बहुत बुरा दिन था जब उसके ग्रहण करने के लिए उसके बानी पर ईमान लाने की, शर्त लगाई गई, अन्यथा इतनी छीछी लेदर, जो इस शर्त लगाने के बाद हुई, कभी न होती। अब भी इसलाम के भविष्य के लिये अच्छा होगा कि इसलाम से, उस के बानी पर ईमान लाने की शर्त दूर कर दें, अन्यथा कृत आलोचनाओं का उत्तर दें यदि उत्तर नहीं दे सकें तो उन्हें फिर सहन करने के लिये तय्यार होना चाहिये।

(२) सत्यार्थ प्रकाश को मैं एक धार्मिक इन्साइक्लोपीडिया (विश्वकोष) समझता हूं उसका पूर्वार्ध वैदिक साहित्य का विश्व कोश है। और उत्तरार्ध मज़हबों का कोश है। दोनों के पढ़ने से और साथ ही समझ कर हृदयांकित कर लेने से, पढ़ने वाले में वह भावना आजाती है जिसे आय भावना कहते हैं। इसी भावना के आजाने से प्रत्येक आर्य या आर्य समाजी, संसार में बड़े से बड़े कामों के करने के योग्य हो जाता है। ज़रूरत है कि वर्त्तमान संघर्ष के मुक़ाबिले के लिये भी प्रत्येक आर्य में, आर्य भावना हो—

वेद में विज्ञान

(लेखकः—श्री दीनदयालु जी M. Sc.)

Detailed Scientific discourses in Vedic Suktas.

केतुं कृण्वन् अकेतवे पेशो मर्या अपेशसे। समुषद्‌भिरजायथाः॥ ऋ० १-६-३।

Electromagnet मैत्रावरुणी यन्त्र (बिजली से बना चुम्बक)

अर्थ—जिस प्रकार (मर्याः) सूर्य की किरणें (अपेशसे पेशः) पदार्थों के रूप को प्रकाशित करतीं हुईं (अकेतवे केतुं कृण्वन्) अज्ञान अन्धकार का विनाश कर ज्ञान सम्पादन करती हैं एवं च ये (मर्याः) किरणें मानो (उषद्‌भिः सम्) उषा कालीन बिखरे प्रकाश को एकीकृत घनीभूत करते हुए अधिक ज्योति वाली होकर प्रकट होती हैं—उसी प्रकार (पेशः) लोहे के अणुओं के बिखरे हुए और अलग अलग होने से (मर्याः) उन अणुओं की आकर्षण शक्तियाँ आपस में विनष्ट होती हुईं (अकेतु) सम्पूर्ण लोह को चुम्बक प्रभाव हीन बनाये रखती हैं। यदि इस लोहे के चहुँ ओर, प्रस्तुत सूक्त के मन्त्र १ के अनुसार (अरुषं चरन्त परितस्थुषः) विद्युत् तेज को प्रवाहित करें तो वह लोहा, जो (अकेतु) चुम्बक प्रभाव हीन था (केतुंकृण्वन्) चुम्बक साम्य के नष्ट होने पर (केतु) चुम्बक बन जावेगा। कारण यह कि (अपेशसे पेशः) लोहे के अणुओं में अलग अलग (पेशः-अरूपम्-अग्निः) आकर्षण केन्द्र पहिले (मर्याः) परस्पर

एक दूसरे के प्रभाव को (Neutralise) क्षीण करते हुए (अपेशस्) अप्रकट रूप में थे, वे अब (उषद्भिःसम्) विद्युत् प्रभाव के साथ साथ (सम्) एकीकृत घनीभूत होकर, (पेशः-अवयवे) अपने दोनों सिरों पर अलग अलग दो चुम्बकीय ध्रुवशक्तियों (Polarity) को प्रकट करेंगे; और चुम्बक प्रभाव हीन लोहे के अणुओं को (सम्) एक ही दिशा में मोड़ कर एक शक्ति शाली (केतुं) चुम्बक का निर्माण करेंगे।

चुम्बक में दो ध्रुव Poles होते हैं जिन्हें उत्तर वा दक्षिणी ध्रुव North & south Poles कहते हैं सम ध्रुव परस्पर Repelधकेले जाते हैं और असम ध्रुव परस्पर आकर्षित होते हैं। (मैत्र. दक्षिण वारुणः सव्यः। तै १-७-१०-१) प्रक्षेपणRepulsion और आकर्षण Attraction ही क्रमश. मैत्र और वारुणी शक्तियां हैं।

Alternating Current. असम विद्युत् प्रवाह

उपरोक्त चुम्बक से असम विद्युत्प्रवाह Alternating Current की उत्पत्ति होती है। 'अचितोति सनेत् इमं" तथा "चरन्त परितःथुष " (सूक्त ५ मन्त्र ६ और सूक्त ६ मन्त्र १) की व्याख्या में, चुम्बक क्षेत्र में चक्राकार तारों Coils के घुमाने का वर्णन पूर्व अंकों में किया जा चुका है। उस प्रक्रिया से (मर्याः अजायथाः) जल्दी जल्दी बदलते हुए Magnetic field चुम्बक प्रभावों में से, यह घूमते हुए तार गति करेंगे जिसके फलस्वरूप (केतुं कृण्वन् अकेतवे) भिन्न २ तारों में घटते-बढते विद्युत् तेज उत्पन्न होते जावेंगे, और यह विद्युत् तेज प्रत्येक तार के एक २ चक्कर में, चुम्बक प्रभाव के (केतु अकेतवे कृण्वन्) उलटने-पलटने के कारण (पेश) अलग २ दो उलटी दिशाओं में प्रवाहित होंगे। यह (पेश) तेज प्रभाव को (अपेशसे पेश) शून्य से अधिकतम Zero to Maximum बलको प्राप्त होते रहते हैं (मर्याः) कहाते हैं और शीघ्र २ बदलती Alternating दिशाओं में प्रवाहित हो (पेशः) प्रकाश, ताप, आदि उत्पन्न करने में प्रयुक्त होते हैं।

Direct Electric Current. सम विद्युत् प्रवाह

यदि (मर्या.) विभाग सीमा से (अर्थात्) जहां पहिला तेज प्रवाह समाप्त होकर दूसरा तेज प्रवाह उलटी दिशा में चलने लगता है ऐसे निर्दिष्ट स्थान से) अथवा (पेशः) ताँबे की पत्तियों से बने विभाजक चक्र Commutator से पृथक् पृथक् दो तारों में इन उपरोक्त (मर्याः) असम विद्युत प्रवाहों को ब्रुशों Brushes द्वारा (मर्यं आदी यते-मर्या.) ले जाया जाए तो यह अनेक (मर्याः) छोटे २ नश्वर विद्युत् प्रवाह (सम उषद्भिः) एक ही दिशा में Unidirectional Current बृहत्तर विद्युत् प्रवाह के रूप में चल पड़ेंगे।

बिजली के पर्णभार Potential को ऊंचा नीचा करने वाले यन्त्र

Induction Coil and Step up and Step down Transformers.

(अपेशसे) एक सार प्रवाहित Direct-Current सम विद्युत् प्रवाह को (पेशः) खण्ड खण्ड करके अर्थात् रुक रुक कर प्रवाहित करने से (पेश.) लोहा (केतुं) चुम्बक शक्ति को प्राप्त कर (अकेतवे कृण्वन्) बार बार चुम्बकत्व रहित होगा अर्थात् (सम् उषद्भिः) बिजली के प्रवाह के साथ लोहा चुम्बक बनेगा तुरन्त ही दूसरे क्षण (अगले मन्त्र ४ के अनुसार) बिजली (आत्-अह) रुकने पर (केतुं अकेतवे कृण्वन्) लोह चुम्बक हीन हो जायगा। इस शीघ्र बदलते (मर्याः) चुम्बक क्षेत्र के चारों ओर—एक दूसरा

तार, अधिकतर या कम संख्या के चक्रों वाला Secondary Coil लपेटा हुआ हो, तो उस तार में (मर्या.) क्षणिक बिजली के प्रवाह चल पड़ेंगे जो तारों की लपेट संख्या के अनुपात में अधिक वा कम Voltage पर्श भार से युक्त होंगे यह क्षणिक प्रवाह Spark चिनगारी उत्पन्न कर नष्ट हो जाते हैं अथवा (सम्) संचित किये जा सकते हैं। (किरण और Wireless waves में इन ही का महत्व है। तथा अधिक दूरी पर बिजली के प्रवाह को पहुचाने में इनका प्रयोग होता है।)

Electrolysis बिजली द्वारा पदार्थों का अवयवी करण।

[पूर्व मन्त्र २. में 'रये' अर्थात् रस में बिजली के दो धुरों वा दण्डों Electrodes को डालकर बिजली प्रवाहित करने का वर्णन किया है। उस प्रकरण को आगे खोलते हुए पदार्थों के खण्ड २ करके निरवयव पदार्थों की उत्पत्ति कथन करते हैं। मिश्रित पदार्थों अर्थात् क्षार, जल एलुमिना आदि पदार्थों में (केतु) अन्न और प्राण रूप से घन (+) और ऋण (–) आत्मक दो तेजोंश Electric Ions मिले हुए रहते हैं, जिनके विद्युत् भार positive and negative charges परस्पर उलटे होते हैं। उलटे opposite charges विद्युत् भार परस्पर आकर्षण करके संयुक्त रहते हैं और बिजली के प्रभाव को परस्पर नष्ट करके (अकेतु) विद्युत् सम Electrically neutral प्रतीत होते हैं]

इस विद्युत् साम्य को नष्ट करके (केतु कृण्वन्) अग्न और प्राण रूप परस्पर विरुद्ध तेजों को धारण करने वाले विद्युत् त्रसरेणु Electric Ions उत्पन्न (कृवि-हिंसाकरणयो:) किये जावें। और (अपेशसे) रासायनिक रूप से निरवयव पदार्थ को प्राप्त करने के हेतु मिश्रित पदार्थों के (पेश') अवयव अलग अलग कर दिए जावें, तो (मर्या) छोटे छोटे परस्पर विद्युत्-साम्य उत्पन्न करते हुए, परन्तु विरुद्ध विद्युत् भार मय (Anions) and (Cations) त्रसरेणु जो (अपेशस्) अप्रकट अवस्था में थे। अब क्षार आदि के (पेश:) अवयव रूप से पृथक् २ (अजायथा:) प्रकट होंगे यह (केतु) अन्नमय त्रसरेणु एव (पेश) तेज मय अग्नि वा प्राण रूप त्रसरेणु उत्पन्न होकर (उषद्भि: सम्) विद्युत् प्रवाह के लाने वाले क्षार आदि के रस में स्थित दो Electrodes बिजली के दंडों द्वारा आकर्षित होकर अलग २ दण्डों पर इकट्ठे होंगे, ताकि उन त्रसरेणुओं के अपने अपने विद्युत् भार Positive and negative charges (अकेतवे अपेशसे) Neutralise नष्ट हो जावें, और (मर्या:) इन (नष्ट होने वाले बिजली के भार से युत त्रसरेणु ओं से, मिश्रित पदार्थ के (पेश:) अवयवों की (अपेशसे) निर् अवयव रूप से उत्पत्ति हो। यह 'केतु-पेश:' रूप (मर्या) विद्युत् त्रसरेणु (समुषद्भि) विद्युत् प्रवाह के साथ साथ गति करते हुए विद्युत् दंडों पर पहुँच कर, विद्युत् साम्य (अकेतु-अपेशस्) प्राप्त करके क्षार में से सोडियम और क्लोरीन तथा जलमें से उद्रजन और प्राणवायु Hydrogen & Oxygen दो गैसें तथा एलुमिना आदि खनिज पदार्थों में से एलुमिनियम आदि धातुए उत्पन्न करेंगे। यह सोडियम, एलुमिनियम आदि प्रासव्य पदार्थ ही पेश हिरण्य (सुवर्ण) वा केतु-ताम्रलोह आदि हैं।

उषाकालीन सूर्य रश्मियों का वर्णन !

(उषद्भि:) उषाकालीन बिखरे हुए सूक्ष्म

प्रकाश द्वारा वायुमण्डलस्थ Carbondioxide अपानवायु के (पेशः कृण्वन्) Ionization अवयव करके कोयला (केतुं-अन्न) एवं प्राणवायु oxygen (पेशः-अरुष-अग्निं-अग्नि उत्पादक) उत्पन्न हो जिससे कि (अकेतवे-अपेशसे) अन्न की प्राप्ति वृक्ष आदि के हेतु एव तेज अग्नि की प्राप्ति प्राप्ति वर्ग के हेतु सम्भवहो । उषाकालीन प्रकाश द्वारा उत्पन्न oxygen प्राणवायु की (सम्) संगति वा सेवन हेतु (मर्याः) मनुष्य (अजायथाः) निद्रावस्था त्याग कर जाग्रत अवस्था को प्राप्त हों । (उषुषद्भिः) रश्मियों के Interference संघात द्वारा अंधकार Nodes का उत्पन्न होना, अथवा अधिकतर प्रकाश (पेशः) Loops का उत्पन्न होना भी इस मन्त्र से स्पष्ट होता है—

उपर्युक्त अर्थों के लेने में कुछेक प्रमाणः—

मर्त्ताः-मर्याः—इति मनुष्य नाम निघ० २-३ । म्रियते असौ मर्त्तः । उ० को० ३ ८६ । म्रियते असौ मरीचिः । उ० को० ४-७० । अतः मर्त्तः मरोचिः । मरीचिः रश्मिनाम । निघं० १-५ । मर्याः मरण शीला द० भा० । मर्याः हरयः । निघ० २-३ । हरिम् ईम् ऋ० १०-१०१-१० । हरिः सोम नि० नै० ४-३-११-४४ । ईम्, जल, अन्न, ओज,तेज निघं० १-१२, (प्रवाहित विद्युत्ते ज) मर्या मर्यै आद्दीयते, । मर्य एक का आदि दूसरे का अन्त विभाग सीमा । विभाग सीमा से जिसको प्राप्त किया जावे । नि० नै० ४, १, २, १, ।

सम्-एकीभावम्, निरुक्त १-३ । कृण्वन् कृवि-हिंसा करणयो' च, विनाश और उत्पत्ति करना । अजायथा जनी-अवस्थान्तर को प्राप्त होना । लोट् अर्थे लङ् । प्रथमा अर्थे मध्यमविधानम् । प्रकटो भव । दया० भा० ॥ उषा विद्युत् । नि० दै० ११, ४, ४३, ४४, । उषा वष्टेः वश कान्ति अर्थे । प्रभात वेला । उषा—उच्छी धातु से—विवासे—समाप्ति अर्थ में नि० दै० ०२-१-६-२ । अन्धकार को नाश करने वाली । उषा—ओषति—दहति सा-(अग्निः-विद्युत्-तेजो वा) कर्ण छिद्र पर्वत भेदो वा (पर्वत भेद-पर्व भार में भेद Potential difference) ऊ० को० ४-२३४ । निरु० ६-१-७-४ ॥ अरुषी- उषा निघ० १-८ । अरुषं अग्निः । तै० ६-१-४१ ॥

केतुं—केतं-प्रज्ञानाम । निघं० ३-६ । केतं अन्न श० ६-३-१-१६ । वरुणः अन्न पति' । श० १२-७-२-२० । वरुणः वै चुम्बकः Magnet । यजु० २५-६ । श० १३-९-६-५ ॥ अत' केतु-अन्न वरुण चुम्बक द्वारा पालित और रक्षित होता है । केत-रश्मि' । नि० दै० १२-१५-६ । अन्नं रश्मि' श० ८-५-३-३ ॥ वारुणः वा अश्वः (व्याप्ति सघात यन्त्र) अश्न, अश्व नाम- अरुष' निघ० १-१४ । अश्न को Dynamo या motor पूर्व अंकों में कह चुके हैं वह वारुणः चुम्बक को प्रयोग में लाने वाला विद्युत् यन्त्र हुआ ।

चायः की । केतुः । उ० को० १-७४ । चायृ-पूजा (सत्कार) निशामन अर्थों में धातु पाठे । सत्कृत करना—उत्पन्न कराना नि-अलग अलग करके, शामन (शम-लक्ष-आलोचने) परीक्षा करना वा जानना अर्थात् निशामन-विश्लेषणात्मक ज्ञान Analytical Knowledge प्रज्ञा । निघ० ३-६ ।

पेशः —शिल्पम् Industry- अरुषं (तेज)- ताम्रम् Copper, रूपनामानि निघ० ३-७ । पेशः- लोहम् Iron हिरण्य Gold नामानि । हिरण्य सुवर्ण (लोहा) आदि धनं श्रेष्ठ रूपं वा दयानभाष्य ।

पिश् अवयवे-नाशने (धातुपाठे)-पेशः- मिश्रित पदार्थ के नाश होने पर प्राप्तव्य अवयव

अपेशस्-निर् अवयव Elements, atoms.

अकेतवे-अज्ञान अंधकार विनाशाय। वयाः मा० केतु रहित-चुम्बक प्रभाव रहित-प्रकाश रहित॥

Summary rendering of the mantra in English

(केतुं कृण्वन्) Produce a magnetic field by (कृषि)destroying (in an otherwise neutral Iron core) the magnetic (मर्याः) neutrality of (पेश) Iron molecules, so as ultimately again to render them(अकेतवे) demagnetised. The result will be that by this generation of a varying magnetic field (पेश'-केतु-मर्याः) Positive and negative electric charges - which were so far neutralising each other —will be separated (in a rotating armature coil). (सम् उषद्भिः) These charges will each, flow in the form of a current (मर्याः अजायथाः) such that the current will rise to a maximum and fall to Zero, and again will be reversed and come back to Zero, thus giving rise to what we call (मर्याः) Cycles of alternating current

Direct current

To generate a direct current place leads of wire at (मर्याः)the dividing lines, where (during each rotation of the coil in the magnetic field), the current starts in a direction opposite to the direction of the current in the previous half of each rotation The leads are called the Brushes rubbing against the commutator (मर्याः)strips made of (पेशः) Copper. These otherwise neuturally opposite currents, which are generated as above are (सम्) thus joined together and run into a (समुषद्भिः अजायथाः) unified direct current

Induction coil and Transformers

अकेतवे केतुं कृण्वन्)Start an intermittent magnetic field, (अपशसे पेशः)by breaking up a (सषुद्भिः) direct current circuit so that, by the variation of the electric current, falling from maximum intensity to Zero, as a result of this breach, the central (पेशः) Iron core (as mentioned in previous mantra I of this Chapter) becomes subject to sudden variations of magnetic field. The result will be that at the two ends of a second coil, woven round this magnetic core (मर्याः अजायथाः)alternating positive and negative voltages will be generated (उषद्भिः) which will produce (पेशः) sparks, and thus (मर्याः) will neutralise each other

Electrolysis

(समुषद्भिः) With the flow of an electric current (मर्याः अजायथाः) are generated (otherwise mutually neutralising) positive and negative Ions the (रये prev. mantra २) electrolyte. (केतुं-पेश) The positive and the negative Ions are the result of (कृण्वन्) the destruction of the electrically neutral molecules. (पेशः) Gold, silver, aluminium, Sodium, Chlorine, etc are obtained as a result of this (पेशः कृण्वन्) process of electrolysis These ions initially bear positive and negative charges, and (समुषद्भिः) moving with the current,

become (अकेतवे-अपेशसे) neutralised at the opposite electrodes The products of electrolysis, then become free at the electrodes, and can be collected as such, or in combination with the substance of the electrolyte

Morning Twilight

(समुषद्भिः मर्या अजायथाः) Let men rise with the appearance of the morning Twilight The (CO_2) Carbon dioxide is (पेशः कृण्वन्) broken up into its (पेशः) constituents Carbon (केतुं-अन्नं) and Oxygen (पेशः-तेजः) (केतु) Carbon is taken up by (मर्याः) the plants and is there-in (सम्) collected as (केतुं-अन्न) food, while (पेशः) Oxygen as generator of heat in the lungs, is taken up by (मर्याः) human beings and other animals.

Generation of newton's rings with alternate dark and bright rings as a result of interference of rays (सम् उषद्भिः) of light is also mentioned in this mantra

---

महिला जगत्

बहन की विदाई

स्त्री धर्म

[लेखक श्रीयुत खुशीराम शर्मा वाशिष्ठ, कविरत्न, साहित्यभूषण]

राज ! लख यह शुभ अवसर आज, हृदय में छाया हर्ष महान् ।
हँस रहा है कर मोद प्रकाश, आज का पावन स्वर्ण-विहान ॥
ईश की अनुकम्पा से पूर्ण, हुआ यह पाणि-ग्रहण-संस्कार ।
आज मिलकर दो हृदय अजान, हुए हैं बिलकुल एकाकार ॥
लग्न की शुभ बेला में बहिन, मिल रहे हैं तुमको उपहार ।
समर्पण करते हैं सब भेंट, शक्ति औ श्रद्धा के अनुसार ॥
आज भैया के नाते मुझे, तुम्हें देना है कुछ उपहार ।
अगर हो देने की सामर्थ्य, सौंप दूं धनपति का भण्डार ॥
रहा हूँ मैं तो अब तक किन्तु, शारदा के चरणों का दास ।
भला हो सकता कैसे प्राप्त, मुझे फिर लक्ष्मी का सहवास ॥
अतः हूँ देने में असमर्थ, कीमती वस्त्र, जड़ाऊ हार ।
तुम्हारी अंगुली का भी हाय, मैं नहीं कर सकता शृंगार ॥
किन्तु दूं तुम्हें न कुछ भी आज, नहीं यह भी मुझको स्वीकार ।
समर्पण करता हूँ इस हेतु, सरल हृत्तल के कुछ उद्गार ॥
चुने हैं मैंने मोती स्वच्छ, हंस बन निज मानस का आज ।
बना कर माला उन्हीं की एक, समर्पित है पहनो को राज ।

विवाह है बन्धन एक पुनीत, भरा जिसमें नारी का त्याग।
समर्पण करने पर सर्वस्व, मिला करता है यहां सुहाग ॥
आज से पति सेवा ही मुख्य, बना है तव जीवन का ध्येय।
यही है भक्ति, यही है शक्ति, इसी में निहित तुम्हारा श्रेय ॥
विघ्न औ बाधाओं से युद्ध, मनुज को करना है अविराम।
नहीं है कुछ फूलों की सेज, विकट यह जीवन है संग्राम ॥
कभी यदि होकर विफल-प्रयत्न, तुम्हारे "ये" हो जाँय हताश।
तुम्हें तब भरनी होगी 'राज', हृदय में इनके नूतन आस ॥
आज जिस पावन आश्रम-बीच, कर रही हो तुम पुण्य प्रवेश।
पूर्वजों ने भी महिमा गान, अलापे हैं उसके सविशेष ॥
सर्वथा इस आश्रम के योग्य, मिला है तुम्हें उच्चतम ज्ञान।
मुझे आशा है तुम निज गेह, बना दोगी शुचिस्वर्ग समान ॥
राज ! होता है सुखद गृहस्थ, एक अति सुन्दर सुरभित फूल।
न उसमें करने पायें प्रवेश, कलह औ वैमनस्य के शूल ॥
आज से श्वशुर तुम्हारे पिता, आज से सास तुम्हारी मात।
देवरानी औ देवर हुए, आज से सच्चे भगिनी भ्रात ॥
न तजना कभी विनय औ शील, जो चाहो घर में सुख के साज।
और सब आभूषण हैं व्यर्थ, अगना का भूषण है लाज ॥
बड़ों के कटु वचनों पर रोष, हृदय में कभी न लाना भूल।
बुरी है प्रत्युत्तर की टेव, कि बस है यही कलह की मूल ॥
राज, भूले भटकों को नित्य, दिखाती चलना सीधी राह।
अमृत सा मृदु वाणी में घोल, मिटाना सन्तप्तों का दाह ॥
व्यर्थ है उस मानव का जन्म, किया जिसने न कभी उपकार।
पसीजा कभी न जो पाषाण, दुखित की सुन कर हाहा कार ॥
दीन दलितों की दशा विलोक, मिटाता है जो उनका त्रास।
स्वयं आते हैं दीनानाथ, एक दिन निश्चय उसके पास ॥
कभी यदि हो पथ श्रम से श्रान्त, अतिथि कोई आजाये द्वार।
उचित है करना तुम्हें सहर्ष, राज ! विधिवत् उसका सत्कार ॥
देश को भूल न जाना राज, बनी है जिसकी रज से देह।
तुम्हारा मातृभूमि के साथ, नित्य प्रति बढ़ता जाये नेह ॥
राज ! रखना जीवन-पर्य्यन्त, मातृभाषा हिन्दी का ध्यान।
गुँजा देना घर घर के बीच, तुम उत्तम कवियों के गान ॥

'शिवाजी' औ 'प्रताप' के तुल्य, बनाना तुम अपनी सन्तान।
करे जो देश जाति के हेतु, "खुश" से अपना शीश प्रदान॥
हमारा है यह आशीर्वाद, तुम्हारा होवे अटल सुहाग।
प्राप्त हो तुम्हें विभव के साथ, तुम्हारे भर्ता का अनुराग॥
तुम्हारी 'रति' सी हो पति-भक्ति, तुम्हारी 'दमयन्ती' सी कान्ति।
'सती' सा हो तुममें विश्वास, और माँ 'गान्धारी' सी शान्ति॥

कुरान की नवीन व्याख्या

[ले०—डाक्टर सूर्य देव जी शर्मा साहित्यालंकार, सिद्धान्त शास्त्री, एम० ए० (संस्कृत, इतिहास, हिन्दी), एल० टी०, डी० लिट्, अजमेर]

आज सत्य-अर्थ प्रकाश करने वाले हमारे "सत्यार्थ प्रकाश" के विरुद्ध मुसलिम लीग प्रस्ताव पास करके उसे जब्त कराने की चेष्टा कर रही है, लेकिन उसे यह पता नहीं कि सत्य का प्रकाश संसार में कभी दबाया नहीं जा सकता, वह तो किसी न किसी रूप में अवश्य प्रकट हो ही जाता है। असत्य मत, ढोंग ढकोसलों और पाखण्डों का गढ़ सत्य के सम्मुख कभी ठहर नहीं सकता। यही बात आज इस्लामी सिद्धान्तों के लिये हो रही है। कुरान शरीफ की जिन बातों पर मुसलमान अब तक बड़े कट्टरपन से चिपके हुये थे और जिनका खंडन करने पर स्वामी दयानन्द और आर्य समाज के उपदेशकों और विद्वानों का बुरा भला कह कर वे नाक भौं सिकोड़ते थे। आज इन्हीं बातों का खंडन उनके विद्वान् स्वयं ही कर रहे हैं। ठीक है जादू तो वह जो सिर पर चढ़ कर बोले"। ऋषि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश के चौदहवें समुल्लास में अथवा आर्य विद्वानों ने यदा कदा कुरान के सिद्धान्तों पर जो शंकायें की थीं, वे केवल उनको तर्क की कसौटी पर कसने और वैज्ञानिक आधार पर समझने के लिये थीं, किसी द्वेष भावना से नहीं, और आज हर्ष की बात है कि मुसलिम विद्वान् स्वयं उन असंभव बातों को मानने से इन्कार कर रहे हैं और उनके नवीन वैज्ञानिक युक्ति युक्त अर्थ लगाने में लगे हुये हैं।

जिस प्रकार "The Story of Christ" के लेखक Giovanni Papini ने बाइबिल के "Fig tree" के अर्थ "यहूदी धर्म", चार रोटियों का अर्थ 'Spiritual Bread" "Our father in heaven" का अर्थ 'मनुष्य की आत्मा में विद्यमान परमात्मा' लगाकर बाइबिल को तर्क संगत बनाने की चेष्टा की है, उसी प्रकार मौलाना मुहम्मद अली एम० ए० एल० एल० बी० ने जो "अहमदिया अन्जुमने इशाअते इस्लाम" लाहौर के प्रधान हैं, कुरान शरीफ का अंग्रेजी में एक भाष्य किया है, जिसमें से कुछ उदाहरण पाठकों के मनोरंजनार्थ तथा ज्ञानवर्द्धनार्थ नीचे

दिये जाते हैं, जिनसे सिद्ध होगा कि कुरान के सिद्धान्तों की नवीन व्याख्या करके उसे अब किस प्रकार युक्ति संगत बनाने की चेष्टा की जारही है:—

उस Translation of the Holy Quran की भूमिका में मौलाना साहब ने अनेक बातों पर प्रकाश डाला है—जैसे—

(१) अबतक मुसलमान भाई खुदा को आसमान (अर्श) पर मनुष्यवत् विराजमान मानते थे जिसका खंडन ऋषिदयानन्द ने चौदहवें समुल्लास में ८८ न० की समालोचना में किया है। लेकिन अब मौलाना साहब अपनी कुरान की भूमिका के पृष्ठ ४८ पर लिखते हैं—"The use of these words is by no means an indication of an anthropomorphic conception of God". (कि "परमात्मा का मनुष्यवत् आचरण करना इन शब्दों से कदापि सिद्ध नहीं होता, वह प्राकृतिक (भौतिक) शरीर से परे है)। ठीक है, यही तो आर्य समाज कहता है।

(२) स्वर्ग और नरक मृत्यु के बाद ही हों सो बात नहीं, बल्कि पृष्ठ ५५ पर आप लिखते हैं, Heaven and Hell are not places of enjoyment and torture to be met with only after death. They are realities even here". (स्वर्ग और नरक सुख और दुःख के स्थान मृत्यु के बाद ही मिलें, ऐसा नहीं, वे तो इस ससार में भी वस्तुतः मौजूद हैं)। आगे पृष्ठ ६१ पर लिखते हैं, "This shows clearly that paradise and hell are more like two conditions than two places". (इससे स्पष्ट सिद्ध है कि स्वर्ग और नरक (आत्मा की) दो अवस्थाओं का नाम है, दो स्थानों का नहीं)। बस उड़ गयी बहिश्त और दोजख की बात इस्लाम से। अब कहाँ हैं बहिश्त में वे शराब और दूध की नदियाँ और वे खूबसूरत हूर और मोती के से वर्ण वाले गिल्मा (लड़के) जिनका खंडन ऋषि दयानन्द ने चौदहवें समुल्लास में १५० नं० की समालोचना में किया था? कहाँ है बहिश्त का अब वह नक्शा जिसके खंडन करने से ऋषि दयानन्द को बुरा कहा जाता है?

(३) इसी प्रकार पृष्ठ ५६ पर "कयामत" (resurrection) के अर्थ दिये हैं "The death of the individual" (एक व्यक्ति की मृत्यु)। ठीक है, अब कहाँ गया वह कयामत का दिन जब सब मुर्दे कब्रों से उठेंगे? आगे पृष्ठ ५७ पर और लिखा है, "The rising of the dead is sometime this spiritual resurrection which was to be brought about by the preaching of the prophet" (कभी २ मुर्दों का कब्रों में से उठने का अर्थ उनका आत्मिक उत्थान है जो कि पैग़म्बर के उपदेशों से हुआ करता था)। ठीक है।

(४) आगे पृष्ठ ५८ और ६१ पर लिखा है कि मनुष्य के अहमाल नामों की किताब जिसमें कि फरिश्ते मनुष्य के अच्छे बुरे कर्म लिखते है, वह मनुष्य का हृदय ही है जिस पर कि अच्छे बुरे कर्मों का संस्कार (Impression) पड़ता है।

(५) पृष्ठ ६२ और ६३ पर बहिश्त में मिलने वाले भोजन को आत्मिक भोजन बतलाया है और

फलों के लिये लिखा है "Nor are the fruits of paradise like the fruits of this life. because these are the fruits of the deeds alone (बहिश्त में मिलने वाले फल इस दुनियां में मिलने वाले फलों के जैसे नहीं है, उन फलों से मतलब कर्मों के फलों से है)। यही वैदिक धर्म का कर्म-फल-सिद्धान्त है जिसको मौलाना साहब इस प्रकार मान रहे हैं। कहाँ हैं अब वे बहिश्त में मिलने वाले अंगूरों के गुच्छे ? अब वे अंगूर खट्टे होगये क्या ?

(६) इसी प्रकार पृष्ठ ६६ पर दोजख की आग का अर्थ केवल "बुरे कर्मों का फल" किया गया है। ठीक है जब दोजख ही नहीं रही तो उसकी आग कहाँ रह सकती थी ?

(७) अब तक मुसलमान और ईसाई आदम को दुनियाँ का आदि पुरुष मानते थे और आदम से लेकर हजरत नूह तक ११ पीढ़ी और उसके बाद इब्राहीम तक ११ पीढ़ी और इब्राहीम से अब तक जो समय बीता वह सब मिलाकर आदम की उत्पत्ति का समय अब से लगभग ७००० वर्ष पूर्व का ठहरता है जो कि विज्ञान के अनुसन्धानों द्वारा बिलकुल ग़लत सिद्ध हो चुका है। अब मौलाना साहब सृष्टि उत्पत्ति काल को और पीछे खींचने के लिये मुहम्मद बिन अली अल बक़ीर इमाम साहब के प्रमाण से लिखते हैं, "Millions of Adams passed away before our father Adam" (हमारे पिता आदम से पहले लाखों करोड़ों आदम और गुज़र चुके हैं)। ठीक है यही तो वैदिक सिद्धांत की विजय है। अब सृष्टि उत्पत्ति का समय अब से ७००० वर्ष पूर्व तो नहीं ?

(८) इसी प्रकार पृष्ठ ७६ पर अदन के बाग़, जहां आदम की उत्पत्ति हुई, के विषय में आप लिखते हैं "All this clearly shows that the garden is not an earthly garden, but stands for a state of contentment and rest in which where is no struggle" (इससे स्पष्ट सिद्ध होता है कि (अदन का) बाग़ कोई सांसारिक बाग़ नहीं किन्तु वह तो उस सन्तोष और आराम की अवस्था को बतलाता है जिसमें कोई झगड़ा और संघर्ष नहीं करना पड़ता)। ठीक है उड़ गया अदन का बाग़ भी क़ुरान शरीफ़ के पृष्ठों से।

मौलाना साहब के क़ुरान के अनुवाद तथा भूमिका में से ऐसे और भी अनेक उदाहरण दिये जा सकते हैं जिनमें उन्होंने क़ुरान की तर्क रहित, विज्ञान विरुद्ध, असंगत और असम्भव बातों की नई व्याख्या करके उनको तर्क संगत बनाने की चेष्टा की है। यही तो ऋषि दयानन्द भी चाहते थे कि लोग सत्य बातों को मानें और असत्य को त्याग दें। यह है ऋषि दयानन्द की जय।

Swami Dayananda Saraswati day in Madras

Tributes to founder of Arya Samaj—Dr. Ambedkar's views on Scriptures—Mr Justice N. Chandrashekhara Iyer's Criticism.

RISHI DAYANANDA DAY

MADRAS, 16th Oct '44—To celebrate the Swami Dayananda Saraswati Day a largely attended public meeting was held on 16-10-44 at the Arya Samaj (Central) Madras Mr Justice Chandrasekhara Aiyar presided. Mr A. L Pandya, M A, B.L, welcomed the gathering.

Mr Justice Chandrashekhara Aiyar said that Swami Dayananda was a great soul, who had proclaimed to the world the undying greatness of Hindu religion If the Hindu religion had been vitalised, if it was a living force today and if it had been galvanised into activity, it was in a large measure due to what Swami Dayanand had done In fact, the history of the Arya Samaj movement in India was a living tribute to the greatness of the Swamiji What was wanted was mutual understanding between all sections of the Hindu community Referring to Dr Ambedkar's declarations that the Vedas and the Gita were "nonsense and tom-foolery" Mr. Justice Chandrashekhara Iyer said that both the Gita and the Vedas had received unstinted admiration all over the world as the summit of world's philosophy, as the surest means of attaining one's own realisation If the glory of those priceless treasures was not understood by 'one among us' was it the fault of the book or was it the fault of the man ? asked the speaker. "We shall take that utterance as the utterance of an ignorant child who ought not to be placed in such high position in the State," he concluded

Rao Bahadur D. S Sharma said that Dayananda was a typical Indian Sanyasin who dedicated his life to the regeneration of Hinduism. He added that it was absurd to say that Hinduism was not a proselytising religion. They would do well to follow in the footsteps of the Arya Samajists to take those who wanted to embrace Hinduism The Shuddhi movement should be energised and supported by the entire Hindu fold. He stressed the urgent need for improving the lot of the Harijans In his view, the Harijans should study Sanskrit.

Pandit Satya Bhushan Vidyalankar then read the message of Shri Swami Yogi Shuddananda Bharati of Sri Aurobindo Ashram, Pondicherry, specially sent for the occasion.

Srimathi Sushila Devi Indra Sen and Sri M Radhakrishna Pillai, B.A., B.L. spoke on the movement of the Arya Samaj and paid tribute to Swami Dayananda.

M. KRISHNA RAO,
Secretary, Arya Samaj.

RISHI DAYANANDA

THE FATHER OF MODERN INDIA

By

(Swami Shuddhananda Bharati Shri Aravindashrama, Pondicherry)

I. THE SUPERMAN.

There is no historical parallel to the splendid achievements of ancient India, whose social and political structure was based upon the immortal Truth of the Vedic Spirit And there is no historical parallet to the miserable decline of her vitality after Harsha's days. Local disharmony and alien impacts shattered the dynamic stronghold of her spiritual civilisation The unique Realify of the one-in-all, was miserably lost into the dark labyrinth of cock-and-bull stories spun around personalities Ludicruous superstitions, mystic falsehoods, pontific arrogance, fear of inanimate stars, stones and a million other draw backs, kept back the progress of the nation. Vedic India was hood-winked by Tantric orgies and Puranic tales. India was choked with the dust of ages. A Hercules came to clean the Agean stable.

He was Rishi Dayananda. He, the Superman of the last century, came like a Colosses, to play a bold game in the vast stage of our national life, solving momentous issues against thundering oppositions. Reformers preceded, but most of them played a game of bankrupt diplomacy and quixotic generosity neglecting the great Vedic lore which is the heritage of India. They could not wipe out the germs of disease that ate still into the vitals of the society and the nation. Dayananda's Satyartha Prakash came like a penicellin to restore vitality to the nation Swamiji was a perfect model of Truth and Sacrifice and let us see him how he combined both fn his individual life

II RENUNCIATION.

Dayananda was five years old when Ram Mohan Roy, the harbinger of New India, started his Brahmo Samaj and preached his evangelised unitarianism. His father Amba Shankar Karshanji Tiwari was a Gujerati Brahman of Morvi State,

orthodox to the back-bone. Born in 1824, the boyhood and the formative period of Dayananda's life was an image of his father's traditions One Shivarathri Day he observed vigil along with his father before the image of Shiva in the local temple sleep gently waved her magic wand over the vigilance, when, a sudden rush of rats made a heavy inroad upon the stone Shiva and his offerings This scene shattered the faith of the boy in idolatory and made him an unyielding inconoclast He became a rebel child. His father gave him a sound Sanskrit education and that opened the youth's eyes wider still Death stalked the family and drove the boy to renunciation. The fond father prepared the yoke of wedlock for his dear Moolshanker But where was he ?

The youth of nineteen made a determined escape from home and wandered an ascetic with ascetics, seeking practical knowledge of the Inner Truth expounded by the Vedas The anxious father traced out the young bravedo in a choultry, tore off his orange robe and mounted guard over him. The invulnerable rebel shot out an escape, hid at the top of a temple tower and came down only after seeing the disappointed father far off the place

III. WANDERINGS

Dayananda wandered thoughout the country for fourteen long years, living on what chance brought him, satisfying the inner hunger by acquiring knowledge and attaining Yoga siddhi under masters here and there. He was a personal witness to the Indian War of Independence waged in 1857 He saw the political, social, and religious conditions of his Fatherland personally

He was disgusted at the practices of hypocricy and superstition, caste and creed disabilities, funny idolatries that degraded the dignity of this spiritual nation Overwhelmed with deep compassion, he earnestly sought remedies to save the shattering health of the nation from utter decadence. He heard the slogans of "Swadharma and Swarajya" charged from the big-guns of the hour. This infused into him a warrior spirit for his intellectual war of Spiritual independence He sought masters for guidance but most of them were mis-guided idolators. Only a blind lean figure could satisfy him.

IV. THE MASTER SWAMI VIRAJANANDA

Virajanandji, a Punjabi Sanyasi, had a true insight into the heart of Vedas For two and half years he drilled into the ears of his disciple, Dayananda, the profound significance of the orignal Vedas and the spurious puranic falsehoods that crept into it later on. "My child" said the master, "Throw off the

superstitious rubbish heaped in later commentaries, by mere pandits without intuition The Vedas speak of the unique Impersonal God. The Vedic Dharma, does not advocate idolatry, caste distinction by birth and several other ills of the present society It allows no ceremony for the dead, no avatar-hood of God and a lot of ignorant customs that follow it The soul can reach God without the tyranny of personalities Go, my child, hold high the banner of the Vedic Truth-light. Truth shall gain you victory." The blind saint sculptured the Superman

V. BOLD FIGHTER

The compassionate spiritual hero, Dayananda, entered the arena of public reform, reform, bold enough to tilt debates with a thousand tongues . With a passion of a resolute hero, he upheld the pure Vedic Truth as the unique religion of the Aryan humanity. He gave frontal stroke to hypocricy and superstitious pretence and idolatry He was the first prophet to discover the unity of God and to explain the many names as signifying that unique one. He broke the iron locks of orthodoxy, and threw open the Vedic treasures to the whole of humanity, What was false and narrow he openly exposed ; what was kept in selfish secrecy he brought to the open light.

VI FOREMOST REFORMER

For the past sixty years, the Congress and other institutions in India are carrying on reforms after reforms. All these reforms and many more were achieved by that single Superman, Dayananda. He held before him the ideal of a free Vedic India bright in spirit and strong in matter He condemned the otherworldly tendency and do-nothing asceticism. He stimulated all, saints and family men, to national service Only a little bit of his vast aspiration has been fulfilled by the present reformers

VII. THE VOICE OF VEDA

"Veda is the universal scripture of man. It includes and exceeds the limitations of other scriptures The perfect straight forward man of the Veda is called the Arya Off with idolatory and avatarism , off with the blind superstitious fears of Bhairavas and Hanumans ; off with the puranic falsehoods , off with caste differences ; All are equal in birth ; Off with untouchability ; Purify others and take them into the Aryan fold Be one solid nation, strong in spirit and virile in body. Observe Brahmacharya Brahmcharya--Culture is the foundation of the nations' life Off with child marriages ; wipe the tears of young widows , let them have progeny Be a master of yourself and annihilate slavementality. No barrier of personality go direct to the omnipresent God who is the Lord of the Self in you No ceremony ; No image ; The self-existent impersonal God must be reached through the heart disciplined in yoga and meditation. Be virile ; be perfect ; serve home ; serve country, serve humanity ; hold high the banner of the Vedic Truth."

(To be concluded in next issue)

सुमन-संचय

एक दिन ईश्वरचन्द्र विद्यासागर अपने घर मेदिनीपुर के लिए रेल में यात्रा कर रहे थे। संयोग से कालेज का एक विद्यार्थी भी उसी ट्रेन में कलकत्ता से अपने घर मेदिनीपुर जा रहा था। विद्यार्थी अपनी शान में अकड़ रहा था और अपने को न मालूम क्या समझता था। वह पण्डित ईश्वरचन्द्र जी से न बोला जो गाड़ी के डब्बे में एक कोने में उसके पास सिकुड़े हुए बैठे थे।

जब वे मेदिनीपुर पहुंचे तो वह विद्यार्थी कुली के लिए चिल्लाने लगा। उसके पास एक छोटा सा बंडल था परन्तु कोई कुली न आया क्योंकि वे अन्य यात्रियों का सामान उठाने में व्यस्त थे। पण्डित ईश्वरचन्द्र ने विद्यार्थी की कठिनाई को अनुभव करके स्वयं उसका बंडल ले चलने की प्रेरणा की।

विद्यार्थी शान के साथ आगे २ चल दिया और महान् पण्डित बंडल लेकर नम्रता पूर्वक उसके पीछे पीछे चल दिये। विद्यार्थी का घर रेल्वे स्टेशन के पास ही था। जब वे दोनों उसके घर पहुँचे तो विद्यार्थी ने अपना बंडल लेकर चार पैसे पण्डित जी को दिए। पण्डित जी ने विनम्रता से पैसे लौटा दिए और अपना रास्ता लिया।

दूसरे दिन पण्डित ईश्वरचन्द्र विद्यासागर के सम्मान में दिए हुए एक भोज का निमन्त्रण पाकर वह विद्यार्थी अत्यन्त प्रसन्न हुआ मानों उसे कोई निधि मिल गई हो। यह साधारण सम्मान न था। इस सम्मान ने उसके अभिमान् को और भी जागृत कर दिया। वह समझता था कि इतने बड़े व्यक्ति के सम्मान में दिए हुए भोज में सम्मिलित होने का अवसर प्राप्त होना बड़े गौरव की वस्तु है और यह सम्मान जिस किसी को प्राप्त नहीं होता। उसने बड़े उत्साह के साथ भोज में सम्मिलित होने की तैयारी की। जब वह भोज में सम्मिलित होने के लिए जाने लगा तब मानों उसका दिमाग़ आकाश से बातें कर रहा था। यदि कोई विद्यार्थी उससे पूछता 'कहाँ जा रहे हो' तो वह उसकी ओर घृणा से देखकर केवल मुस्करा देता था।

जब वह भोज-स्थल पर पहुँचा तो क्या देखता है कि वह सम्मनित व्यक्ति वही कुली था जो एक दिन पूर्व कलकत्ता से मेदिनीपुर तक गाड़ी के एक कोने में सिकुड़ा हुआ उसके साथ साथ आया था और जो उसका बंडल सिर पर रखकर उसके घर ले गया था।

इस दृश्य को देखकर उसे बड़ी लज्जा आई। भय और लज्जा से उसका अभिमान चूर हो गया। विनम्र भाव से उसने पण्डित जी से क्षमा याचना की और कहा "इस घटना से मैंने एक महान पाठ पढ़ा है"। पण्डित ईश्वरचन्द्र ने उसे एक अच्छे स्थान पर स्वयं ले जाकर बिठा दिया।

हम भी इस घटना से यह शिक्षा ले सकते हैं कि छोटे से छोटे अच्छे कार्य के करने में हमें लज्जा नहीं अनुभव करनी चाहिए।

—रघुनाथप्रसाद पाठक

मौलवी आ. फा. महेशप्रसाद जी द्वारा निर्मित

महर्षि विषयक अपूर्व नक्शा

इस में दिखाया गया है कि भारतवर्ष का कौन सा स्थान ऋषिदयानन्द जी द्वारा कितनी बार गौरवान्वित हुआ।

जिन स्थानों के नाम महर्षि के जीवन चरित्रों में अशुद्ध या किसी अन्य रूप में हैं उन्हें ऐसे ढग पर दिया गया है कि उन्हें जानने में सुगमता हो।

महर्षि के किसी जीवन चरित्र के पढ़ने में यह नक्शा बड़ा उपयोगी है।

एक नक्शा केवल कागज पर डाक व्यय पैकिंग सहित बारह आना। ऐसे नक्शे को इच्छानुसार ठीक कराकर घर की शोभा बढ़ाइए।

कपड़ा और लकड़ी वाला नक्शा डाक व्यय पैकिंग सहित एक रुपये दो आना। ऐसे नक्शा को केवल घर में लटकाने की देरी रहेगी।

जो लोग उक्त हिसाब से टिकट या मनीआर्डर द्वारा दाम भेजेगें। उनके पास रजिस्ट्री होकर नक्शा सुरक्षित पहुंचेगा।

नक्शा क्या है? महर्षि विषयक सर्वथा अनोखी और अमूल्य वस्तु है। महर्षि के प्रत्येक प्रेमी के घर में रहे अत एक से अधिक सख्या में मगाने पर दाम और डाक व्यय आदि में यथा सभव सुगमता व कमी होगी—पता

मैनेजर आलिम फाज़िल बुक डिपो

११५ मुट्ठीगंज—इलाहाबाद

आर्य कुमार जगत्

भारतवर्षीय आर्य कुमार परिषद् की सूचनाएँ

२८ वां मुरादाबाद आर्य कुमार सम्मेलन

२८ वा अखिल भारत वर्षीय आर्य कुमार सम्मेलन ता० २२-२३-तथा २४ सितम्बर सन् १६४४ ई० को मुरादाबाद में श्रद्धेय ला० खुशहालचन्द्र जी आनन्द के सभापतित्व में बड़ी सफलता पूर्वक मनाया गया। जिसमे प्रधान जी का जलूस, तथा स्वागताध्यक्ष ब्रह्मचारी जी तथा प्रधान जी के भाषण के अतिरिक्त श्री पण्डित गङ्गाप्रसाद जी प्रधान सार्वदेशिक सभा के प्रधानत्व में सत्यार्थ प्रकाश सम्मेलन, श्री पण्डित रामचन्द्र जी देहलवी के सभापतित्व में सर्वधर्म सम्मेलन, श्री पंडित रामनारायण मिश्र जी के सभापतित्व में राष्ट्रभाषा सम्मेलन हुये। इस सम्मेलन में आर्य कुमारों के पथ प्रदर्शन के लिये निम्न मुख्य प्रस्ताव स्वीकृत हुये।

प्रस्ताव स० २—यह सम्मेलन श्री वीर परमानन्द जी के बलिदान पर जो सत्यार्थप्रकाश की रक्षा करते हुये लाहौर में हुआ है उनकी प्रशंसा करता है और समस्त आर्य कुमारों से आशा करता है कि वे सत्यार्थ प्रकाश की रक्षा के लिये वीर गति प्राप्त करने के लिये उद्यत रहें-जिन आततायियों ने वीर वर परमानन्द पर कायरतापूर्ण आक्रमण किया है उनकी निन्दा करता है।

प्रस्ताव सं० ३—इस आर्य कुमार सम्मेलन का भारत की अखण्डता में पूर्ण विश्वास है।

हम किसी भी वर्ग द्वारा भारत के खण्ड खण्ड किये जाने की योजना को कदापि स्वीकार नहीं करेंगे। यह सम्मेलन आर्य कुमारों से अनुरोध करता है कि वे भारत को अखण्डता बनाये रखने के लिये अपना संगठन दृढ़ करें।

प्रस्ताव सं० ४—यह सम्मेलन गत कई वर्षों से दहेज के विरुद्ध किये गये आन्दोलन पर सन्तोष प्रकट करता है, तथा इन आंदोलनों पर को जारी रखने के लिये प्रदर्शन और आवश्यकता अनुसार सत्याग्रहादि द्वारा क्रियात्मक रूप से कार्य करने का कुमार सभाओं को आदेश देता है। यह सम्मेलन आर्य प्रतिनिधि सभाओं वा आर्य समाजों से प्रार्थना करता है कि वे भी इन कुप्रथाओं के विरुद्ध प्रस्ताव पास करें और इनको क्रियात्मक रूप देने के लिये निम्नलिखित प्रतिज्ञा पत्र भरवायें। "मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि अपने पुत्र व पुत्री की ओर जो मेरे आधीन हैं और जिनके निर्वाह का उत्तर दायित्व मुझ पर हैं, उनके विवाह के अवसर पर किसी प्रकार की ठहरावनी हरगिज़ न करूंगा।

और यह सम्मेलन कुमारों को आदेश देता है कि वे निम्नलिखित प्रतिज्ञा पत्र पर अधिक से अधिक हस्ताक्षर करायें।

"मैं प्रतिज्ञा करता हूं कि मैं अपने विवाह के अवसर पर किसी प्रकार की ठहरावनी की कुप्रथा का सर्वथा बहिष्कार करूंगा। अर्थात् दहेज लेने की आशा न करूंगा।

प्रस्ताव सं० ५—यह सम्मेलन आर्य कुमारों को सदाचार, सेवा भाव, और संगठन की प्रवृत्ति और उनको नियम पूर्वक शिक्षित करने के लिये आदेश देता है कि वे अपने अपने स्थानों पर आर्य वीर दल स्थापित करें और जहां स्थापित हो वहां अनिवार्य रूप से सहयोग दें।

प्रस्ताव सं० ६—यह सम्मेलन आर्य कुमार सभाओं से अनुरोध करता है कि वे निरक्षरता को मिटाने के लिये प्रयत्न करें। इसके लिये सम्मेलन निश्चय करता है कि सब कुमार सभायें अपने आधीन रात्रि पाठशालायें स्थापित करें।

प्रस्ताव सं० ७—इस आर्य कुमार सम्मेलन का विश्वास है कि वर्तमान सिनेमा नवयुवकों के शरीर, आचार व्यवहार आदि के लिये अत्यन्त हानिकारक हैं इस लिये यह सम्मेलन आर्य कुमारों से अनुरोध करता है कि तुरन्त इन गन्दे फिल्मों का बहिष्कार करें और अपनी इस मांग को अधिक से अधिक बल दें कि सिनेमा कम्पनियां उपयोगी शिक्षा प्रद फ़िल्म बनावें।

प्रस्ताव सं० ८—इस सम्मेलन की सम्मति में वर्तमान वर्धा शिक्षा योजना सम्बन्धी कुछ साहित्य आर्य हिन्दू बालकों व कुमारों के लिये अत्यन्त अहितकर है। उसमें आर्य संस्कृति की अत्यधिक उपेक्षा की गई है। अतः माता कस्तूरी बाई स्मारक ट्रस्ट के अधिकारियों से अनुरोध है कि वे उनकी पुण्य स्मृति में वर्धा शिक्षा योजना को उस समय तक प्रोत्साहन न दें जब तक कि उसमें यह साहित्य पृथक् न कर दिया जावे जो कि आर्य संस्कृति के लिये घातक है।

प्रस्ताव सं० ९—यह सम्मेलन इस बात का अनुभव करता है कि स्थान स्थान पर आर्य कुमार छात्रावास खोले जावें और उन छात्रावासों को कुमार आन्दोलन को प्रगति देने का केन्द्र बनाया जावे।

प्रस्ताव सं० १०—इस सम्मेलन की सम्मति में जो हिन्दू क़ानून केंद्रीय धारा सभा में संगृहीत किया जा रहा है—उस पर राय देने का अधिकार केवल हिन्दू सदस्यों को ही है।

(व) धारा सभाओं से स्वीकृत होने पर

श्री बाबसराव महोदय इस पर तब तक हस्ताक्षर न करें, ऐसी उनसे प्रार्थना है जब तक हिन्दू शास्त्रों के पंडितों द्वारा वह क़ानून समर्थित न हो जाय।

देवीदयाल कार्यालय मन्त्री

भारत वर्षीय आर्य कुमार परिषद् देहली।

आगामी वर्ष के पदाधिकारी

प्रधान—महात्मा खुशहाल चन्द जी आनन्द लाहौर।

उप प्रधान—प्रो सुधाकर जी, डा० युद्धवीर सिंह जी, साहू रमेश कुमार जी,

डा० ब्रह्मचारीजी व रामनारायणजी

प्रधान मन्त्री—श्री विश्वम्भर सहाय जी प्रेमी

कार्यालय मन्त्री—श्री देवीदयाल जी

उपमन्त्री—श्री गोविन्द जी, श्री हरिश्चन्द्र जी, व श्री देवेन्द्र जी गुप्त

कोषा०—श्री नन्द किशोर जी खन्ना

इनके अतिरिक्त १५ अन्तरग सदस्य निर्वाचित हुये।

परीक्षा-विभाग की सूचनायें

भारत वर्षीय आर्य कुमार परिषद् की सिद्धान्त सरोज, रत्न, भास्कर और शास्त्री आदि धार्मिक परीक्षाओं की पाठविधि की कुछ पुस्तकें बाजार में अप्राप्य हैं ऐसी सूचना कार्यालय में कई स्थानों से मिलने पर परिषद् की परीक्षा समिति ने अपने जुलाई ५४ के अधिवेशन में परीक्षाओं की अप्राप्य पुस्तकों के स्थान पर कुछ विकल्प स्वीकार किये हैं जो निम्नरूप से हैं।

सिद्धान्त भास्कर परीक्षा

१—द्वितीय प्रश्न पत्र,पंच महायज्ञ प्रकाश लेखक-प० बुद्धदेव जी विद्यालङ्कार या सन्ध्या सुमन (गुरु कुल कांगड़ी द्वारा प्रकाशित)

२—तृतीय प्रश्न-वैदिक "सिद्धान्त या स्वामी दयानन्द के सिद्धान्त (प० राम जी लाल शर्मा)

३— चतुर्थ प्रश्न पत्र ऋषि दयानन्द जीवन चरित्र-श्री देवेन्द्रनाथ कृत अथवा अन्य किसी आर्य विद्वान् द्वारा लिखित।

सिद्धान्त शास्त्री परीक्षा

४— तृतीय प्रश्न पत्र, उपनिषदें आठ (महात्मा नारायण स्वामी जी द्वारा भाष्य) या किसी अन्य आर्य विद्वान् द्वारा भाष्य की हुई।

देवव्रत धर्मेन्दु

परीक्षा मन्त्री

आर्य कुमार सभा नई देहली

का

७ वां वार्षिकोत्सव

आर्य कुमार सभा नई देहली डी० ए० वी०, हायर सैकण्डरी स्कूल नई देहली का ७ वा वार्षिक उत्सव ९, १० और ११ नवम्बर १९४४ को बडे समारोह से मनाया जाएगा। उत्सव पर बडे २ सन्यासी, महात्मा, उपदेशक तथा भजनीक पधार रहे हैं। कुमारों का वादविवाद, भाषण प्रतियोगिता संगीत सम्मेलन, कवि सम्मेलन, आर्यकुमार सम्मेलन, तथा सत्यार्थ प्रकाश सम्मेलन आदि बहुत से मनोरजक कार्यक्रम रखे गये हैं। कुमारों का पारितोषक वितरणोत्सव भी इसके साथ ही साथ होगा।

देवव्रतः धर्मेन्दु

सचालक आर्यकुमार सभा

छपते छपते

सिन्ध सरकार का सत्यार्थप्रकाश पर प्रतिबन्ध

सार्वदेशिक सभा के तार

आज ४ नवम्बर के "हिन्दुस्तान टाइम्स" आदि पत्रों में एसोशियेटेड् प्रेस द्वारा प्रसारित यह समाचार पढ़ कर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा को अत्यन्त आश्चर्य हुआ कि सिन्ध सरकार ने सत्यार्थप्रकाश के १४ वें समुल्लास के विषय में भारत रक्षा कानून के अनुसार यह आज्ञा प्रकाशित की है कि 'सत्यार्थप्रकाश की कोई प्रति न छापी जाये जब तक इस चौदहवें सम्मुल्लास को उसमें से न हटा दिया गया हो।'

इस समाचार को पढ़ते ही सभा ने सिन्ध के प्रधान मन्त्री के नाम तार दिया जिसमें इस समाचार की सत्यता के विषय में तार द्वारा सूचित करने को कहा गया और साथ ही उन्हें लिखा गया कि यदि यह सत्य है तो यह आर्यों की धार्मिक स्वतन्त्रता पर प्रतिबन्ध और उनको खुला चैलेंज है। कृपया इस प्रकार की आज्ञा यदि निकाल गई हो तो उसे वापिस लेलें ताकि समस्त आर्यों द्वारा घोर संघर्ष से आप की सरकार बच जाये।

एक तार गवर्नर सिन्ध और वाइसराय के नाम भी सभा की ओर से भेजा गया जिसमें उनसे निवेदन किया गया कि यह मामला बड़ा गम्भीर है और इसमें तुरन्त हस्तक्षेप करके वे स्थिति को सभाल लें अन्यथा सिन्ध सरकार आर्यों द्वारा अपनी धार्मिक स्वतन्त्रतार्थ किये गये भयंकर आन्दोलन के लिये जैसे कि हैदराबाद रियासत में उन्होंने किया था उत्तरदायी होगी।

अभी यह नहीं ज्ञात हुआ कि यह प्रतिबन्ध केवल सिन्धी सत्यार्थप्रकाश के १४ वें समुल्लास के प्रकाशन विषय में है अथवा सब संस्करणों पर लागू है। इस विषय में सिन्ध आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री प्रो० ताराचन्द जी को सब विस्तृत समाचार देने विषयक तार भी आज दे दिया गया है। किसी भी अवस्था में आर्य जनता को सब प्रकार के त्याग और बलिदान के लिये तैयार रहना चाहिये और सार्वदेशिक सभा के आदेश की प्रतीक्षा करनी चाहिये। सिन्ध सरकार की इस आज्ञा के विरुद्ध सब समाजों का तार व पत्र सिन्ध के प्रधान मंत्री, गवर्नर सिन्ध कराची और वायसराय नई देहली के नाम भेजकर उसकी प्रतिलिपि सार्वदेशिक सभा को भेजनी चाहिये। १२ नव० का सर्वत्र सार्वजनिक सभाएं करनी चाहिए॥

मन्त्री, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, देहली।
४—११—४४

साहित्यसमीक्षा

वैदिक सूक्ति सुधा—मिलने का पता—आर्य कुमार परिषत् कार्यालय दीवानहाल देहली मू० ≈)

मैंने श्री प० देवव्रत धर्मेन्दु लिखित 'वैदिक सूक्ति सुधा" को देखा इस में छोटे २ वेद मन्त्रों और सरल वैदिक सूक्तियों का अच्छा संग्रह है जो आर्य कुमारों और नवयुवकों के लिये विशेष तया उपयोगी होगा। यदि वे उनको कण्ठस्थ कर लेवें उनसे आध्यात्मिक, मानसिक, और शारीरिक सभी विषयों पर उत्तम शिक्षा मिल सकती है, आशा है आर्य जनता पुस्तक से लाभ उठावेगी।

गंगाप्रसाद एम. ए.
(प्रधान सार्वदेशिक सभा)

सम्पादकीय

डा० अम्बेदकर का वेद विषयक अनर्गलभाषण

डा० बी० आर०, अम्बेदकर M.A.Ph D. जो वाइसराय की काय कारिणी के सदस्य हैं महात्मा गांधी जी, कांग्रेस, देशी राज्य तथा अन्य विषयों पर अपने अनर्गल भाषणों के कारण पर्याप्त अपख्याति प्राप्त कर चुके हैं। २४ अगस्त को आपने मद्रास की Rational Society की ओर से एक भाषण देते हुए वेदों के सम्बन्ध में जो शब्द कहे उनका २५-६-४४ के मद्रास से निकलने वाले दैनिक 'हिन्दू' (Hindu) पत्र में निम्न शब्दों में उल्लेख है :—

'He (the speaker) had read the Vedas and he was surprised that so clever a Community as the Brahmans should have insisted on fastening authority on a set of books which contained nothing else than tomfoolery. The Atharvana Veda contained nothing else but magic formulas '

(The "Hindu ' Madras-25-9-44)

अर्थात् मैंने वेदों को पढ़ा है और मुझे आश्चर्य है कि ब्राह्मणों जैसी चतुर जाति ने वेदों की प्रामाणिकता पर, जिनमें सिवाय मूर्खता की बातों के कुछ नहीं है, क्यों बल दिया। अथर्व वेद में जादू टोने की बातों के सिवाय और कुछ नहीं है। इत्यादि।

हमें डा० अम्बेदकर के इन वाक्यों को पढ़ते हुए निरुक्त में उद्धृत संस्कृत की इस प्रसिद्ध लोकोक्ति का स्मरण आया कि 'नैष स्थाणोरपराधो यदेनमन्धोन पश्यति। अर्थात् यदि किसी खूंटे को अन्धा नहीं देख सकता, तो यह खूंटे का दोष नहीं, वह अन्धे का अपना ही दोष है। यदि डा० अम्बेदकर उन वेदों के महत्व को नहीं समझ सकते, जिन्हें प्राचीन सब ऋषि मुनियों और महात्माओं तथा दार्शनिकों ने धर्म का आदिस्रोत तथा सम्पूर्ण ज्ञान का भण्डार माना है, तो इसका कारण उनका अपना अज्ञान है, इसमें वेदों का कोई दोष नहीं। प्राचीन ऋषि मुनियों तथा सब आस्तिक विद्वानों की बातों को जाने भी दें, तो वर्तमान काल के सुप्रसिद्ध अनेक पाश्चात्य विद्वानों ने वेदों की जो मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की है, यदि डा० अम्बेदकर उसको भी पढ़ने का कष्ट उठाते तो ऐसे समस्त आर्य (हिंदू) जनता के हृदय को आघात पहुंचाने वाले असङ्गत वाक्य अपने भाषण में कहने का वे कभी साहस न करते, यदि उनके भाषण की रिपोर्ट यथार्थ है। उदाहरणार्थ डा० अल्फेड्रसल वैलेस नामक सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक ने जो चार्ल्स डार्विन के समान ही भौतिक विकासवाद के प्रवर्तक थे, अपने ग्रन्थ 'Social Enviroment and Moral Progress' में वेदों के विषय में लिखा है, कि—

'The wonderful collection of hymns known as the Vedas is a vast system of religious teachings as pure and lofty as those of the finest portions

of the Hebrew Scriptures' 'In it we find many of the essential teachings of the most advanced religious thinkers' (CP.11)

अर्थात् आश्चर्यमय वेद संहिता में बाइबिल के सर्वोत्तम भागों के समान पवित्र और उच्च शिक्षाएं विद्यमान हैं। हमें वेदों में बहुत ही उच्च कोटि के धार्मिक विचारों की मुख्य शिक्षाओं में से अनेक उपलब्ध होती हैं।

डा० वैलेस ने मुख्यतया वेदों के एकेश्वर वाद आदि को देख कर ही नैतिक जगत् मे विकासवाद मानने से इन्कार किया पर आश्चर्य है कि डा० अम्बेदकर को सिवाय मूर्खता वा पागलपन की बातों के वेदों में कुछ दिखाई नहीं दिया।

बिशप हैरन ने ईसाई पादरी होते हुए भी वेदों के विषय में लिखा है, कि 'The Vedas alone stand serving as beacon of Divine Light for the onward march of humanity'

अर्थात् केवल वेद ही हैं जो मनुष्य मात्र की उन्नति के लिये दिव्य ज्योति स्तम्भ का काम देते हैं। (Hindu Superiority)

रेवरेन्ड मौरिस फ़िलिप ने अपने सुप्रसिद्ध ग्रंथ The teachings of the Vedas मे वेदों की शिक्षाओं से प्रभावित होकर यहाँ तक लिखा कि 'We are justified therefore in concluding that the higher and purer conceptions of the Vedic Aryans were the results of a primitive Divine Revelation

अर्थात् हमारा ऐसा मानना न्याय सङ्गत है कि वैदिक आर्यों के उच्च और पवित्र विचार प्रारम्भिक ईश्वरीय ज्ञान का परिणाम स्वरूप थे। कहां तो रेवरेण्ड फिलिप जैसे ईसाई प्रचारक के वेदों के विषय में ऐसे उच्च विचार कि वे उन्हें ईश्वरीय ज्ञान तक मानने को न्यायसंगत कहें और कहां डा० अम्बेडकर के असङ्गत आक्षेप।

मैटर्लिंक नामक सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक और दार्शनिक ने जो अपनी प्रतिभा और योग्यता के कारण १ लाख २० हजार रु० का नोबल् प्राइज पा चुके हैं, वेदों के विषय में The Great Secret में लिखा कि

'Only the glare of the clairvoyant, directed upon the mysteries of the past may reveal unrivalled wisdom which lies hidden behind these writings (the Vedas)

जिसका भावार्थ यह है कि सूक्ष्म आन्तरिक दिव्यदृष्टि से ही उस अनुपम बुद्धिमत्तापूर्ण ज्ञान का प्रकाश प्राप्त किया जा सकता है, जो वेदों में छिपा हुआ है। क्या यह आश्चर्य की बात नहीं कि जहां मैटर्लिंक जैसे जगद्विख्यात दार्शनिक और विचारक वेदों में अनुपम बुद्धिमत्ता पूर्ण ज्ञान पाते हैं जिसे आध्यात्मिक दिव्यदृष्टि से प्राप्त किया जा सकता है, वहां डा० अम्बेडकर जैसे विद्याभिमानी उनमें केवल पागलपन की बातें पाते हैं। इसमें दोष किसका माना जाए, यह विचारशील पाठक स्वयं निर्णय करें।

थोरियो नामक अमेरिका के जगद्विख्यात विचारक और महात्मा ने वेदों के बारे में लिखा कि

'What extracts from the Vedas I have read, fall on me like the light of a higher and purer luminary which describes a loftier course through a purer stratum, free from particulars, simple, universal, the Vedas contain a sensible account of God.'

अर्थात् वेदों से जो उद्धरण मैंने पढ़े हैं वे मुझ पर दिव्य प्रकाश पुञ्ज की ज्योति के समान गिरते हैं, जो सरल और सार्वभौम हैं। उनमें ईश्वर विषयक विचार युक्ति युक्त हैं।

म० ब्राऊन (W D Brown) नामक अंग्रेज सज्जन ने (The Superiority of the Vedic Religion) नामक पुस्तक मे वैदिक धर्म के विषय में लिखा कि 'It '(Vedic Religion) recognises but one God It is a thoroughly scientific religion where religion and science meet hand in hand Here theology is based upon science and Philosophy

"अर्थात् वैदिक धर्म एक ही ईश्वर को स्वीकार करता है। यह शुद्ध वैज्ञानिक धर्म है, जहा धर्म और विज्ञान हाथ मे हाथ मिलाकर चलते हैं। इसके सिद्धान्त विज्ञान और तत्त्वज्ञान पर आश्रित हैं।

अन्य भी सैंकड़ों पाश्चात्य विद्वानों के वेद विषयक अत्युत्तम विचार दिये जा सकते हैं, किन्तु विस्तार भय से ऐसा करना सभव नहीं है। इन पाश्चात्य विद्वानों पर डा० अम्बेडकर वेदों के प्रति पक्षपात ग्रस्त होने का दोष किसी अवस्था में नहीं लगा सकते। डा० अम्बेडकर ने न जाने कौन से अशुद्ध और अप्रामाणिक अनुवाद पढ़कर ऐसे असङ्गत शब्द वेद जैसे मान्य ग्रन्थों के विषय में कहने का साहस किया, जो धर्म, तत्त्व विज्ञान और विज्ञान का अद्भुत भण्डार हैं, जैसे कि 'वेदों में विज्ञान' विषयक लेख माला में श्री दीनदयालु जी M, Sc. नामक सुयोग्य वैज्ञानिक दिखा रहे हैं। हमारा डा० अम्बेडकर से अनुरोध है कि वे अपने इन शब्दों को वापिस लें, यदि उन्होंने अहङ्कारवश ऐसा करने से इन्कार कर दिया, तो समस्त आर्य (हिन्दू) जनता द्वारा उनके विचारों का तीव्र प्रतिवाद होना चाहिये। आशा है, भविष्य में डा० अम्बेडकर ऐसे असत्य और असङ्गत वाक्य वेद जैसे मान्य धर्मग्रन्थों के विषय मे कहने की धृष्टता न करेंगे।

स्व० सरसय्यद अहमदखां और मुसलमानी स्वर्ग (बहिश्त] :—

स्व० सर सय्यद अहमदखां एक सुप्रसिद्ध मुस्लिम नेता थे। उन्होंने ऋषि दयानन्द द्वारा कृत मुसलमानी बहिश्त की युक्त-युक्त समालोचना से (जिससे कई कट्टर मुसलमान बहुत चिढ़ते हैं, और उसका उत्तर देने में अपनी असमर्थता जानकर अब मुकद्दमेबाजी पर उतर आये हैं) प्रभावित होकर निम्न शब्दों में अपने विचार तफ़सीरुल कुरान भाग १ पृष्ठ ४४ में प्रकट किये थे। "यह समझना कि जन्नत (स्वर्ग) मिस्ल एक बाग के पैदा हुई है, उसमें संगमर्मर के और मोती के जड़ाऊ महल हैं, बाग में शादाब व सर सब्ज़ दरख्त (वृक्ष) हैं, दूध व शराब व शहद की नदियां बह रही हैं, हर किस्म का मेवा खाने को मौजूद है, साक़ी व साक़िनें निहायत खूबसूरत (अत्यन्त सुन्दर) चांदी के कंगन पहने हुए, जो हमारे यहा की घोसिनें पहनती हैं शराब पिला रही हैं। एक जन्नती हूर के गले में हार डाले पड़ा है, एक ने रांन पर सर धरा है, एक छाती से लिपटा रहा है एक ने जान बख्श का बोसा लिया है कोई किसी कोने में कुछ कर रहा है, कोई किसी कोने में कुछ-ऐसा बेहूदा पन है, जिस पर ताज्जुब (आश्चर्य) होता है। अगर बहिश्त (स्वर्ग) यही है, तो बेमुबालगा (बिना किसी अत्युक्ति के) हमारे खराबात (वेश्यालय) इससे हजार गुना बेहतर है।"

(तफ़सीरुल कुरान भाग १ पृ० ४४) बहिश्त की इस कल्पना का मुसलमानों पर क्या प्रभाव पड़ता है। इस विषय में सर सय्यद ने लिखा था कि:—

"एक कूढ़ मगज (दुर्बुद्धि) मुल्ला या शहवतपरस्त (विषय लम्पट) जाहिद यह समझता है कि दर हक़ीक़त (वास्तव में) निहायत अनगिनत हूरें मिलेंगी, शराबें पीएंगे, मेवे खाएंगे, दूध व शहद की नदियों में नहाएंगे, और जो चाहेगा वे मजे उड़ाएंगे। इस लगृव (झूठे) व बेहूदा ख्याल से दिन रात अवामिर (आज्ञाओं) के बजा लाने की कोशिश करता है।"

(तफ़सीरुल कुरान भाग १ पृष्ठ ४७)

निष्पक्षपात पाठक सर सय्यद अहमदखां कृत मुसल्मानी बहिश्त की इस आलोचना की ऋषि दयानन्द के "भला यह कुरान का बहिश्त संसार से कौन सी उत्तम बात वाला है ? क्योंकि जो पदार्थ संसार में हैं, वे ही मुसल्मानों के स्वर्ग में हैं।" (सत्यार्थप्रकाश १४ वां समु०) इन शब्दों से करें, तो उन्हें ज्ञात हो जायेगा कि सर सय्यद की आलोचना अधिक कठोर और तीव्र, है पर मुसल्मान भाइयों को सत्यार्थप्रकाश से ही ज्यादह चिढ़ है, जिसका कोई इलाज नहीं प्रतीत होता। यदि ऋषि के शुद्ध भाव को समझते हुए वे अपने अशुद्ध विचारों का परित्याग कर दें, तो बड़ा उत्तम हो।

स्व० रास बिहारी जी के प्रति श्रद्धाञ्जलिः—

गत २०-११-४४ को संयुक्त प्रान्त के सुप्रसिद्ध आर्य नेता श्री रास बिहारी जी के लखनऊ में देहावसान का समाचार जानकर हमें अत्यन्त दुःख हुआ है। इस विषय में सार्वदेशिक सभा के सुयोग्य प्रधान श्री पं० गङ्गाप्रसाद जी एम० ए० द्वारा प्रेषित श्रद्धाञ्जलि को प्रकाशित करते हुए हम दिवंगत महानुभाव के समस्त परिवार और मित्र मण्डली से आर्य जगत् की ओर से समवेदना प्रकट करते हैं। श्री प्रधान जी ने लिखा है:—"श्री पं० रासबिहारी जी तिवारी जिनका लखनऊ में २०-१०-४४ को स्वर्गवास हुआ, आर्य समाज के एक उज्वल रत्न और युक्तप्रान्त की आर्य समाजों के प्रमुख और पुराने नेता थे। लखनऊ आर्य समाज ने जो कार्य किये—वहां का दयानन्द ऐंग्लोवैदिककालेज, शिल्प शाला (Tailoring School) आदि सब विशेषतया उनके उद्योग का फल रूप थे। इनसे भी अधिक महत्व का काम वहाँ का आर्य नगर वा (Criminal Tribes Settlement) है। यह इस प्रकार की पहिली संस्था है, जो सरकार ने आर्य समाज के सुपुर्द की और उसके उत्तम प्रबन्ध का श्रेय श्री रासबिहारी जी को ही था। लखनऊ की जनता में उनका बड़ा मान और गौरव था। ईश्वर उनकी आत्मा को सद्गति और उनके परिवार को धैर्य प्रदान करें।

बिहार आर्य प्रति निधि सभा का प्रशंसनीय कार्यः—

बिहार आर्य प्रतिनिधि सभा ने सार्वदेशिक सभा तथा आर्य जनता के सहयोग से महामारी के प्रकोप से पीड़ित रोगियों की सहायतार्थ दरभंगा, मुजफ्फरपुर, चम्पारन और सारन जिलों में रिलीफ की सुन्दर व्यवस्था की है। सभा की ओर से सेवा केन्द्र अनेक स्थानों पर खोले गये हैं। राजगुरु धुरेन्द्र जी शास्त्री उप प्रधान सार्वदेशिक सभा और स्वामी अभेदानन्द जी आदि ने इस पुण्यकार्यार्थ धन संग्रह में बड़ा सहयोग दिया है। माननीय श्री अनुग्रह नारायणसिंह जी भूतपूर्व अर्थ सचिव बिहार सरकार आदि ने भी सभा द्वारा संचालित जयनगर आदि केन्द्रों का निरीक्षण करके उसके कार्य की बड़ी प्रशंसा की

है। इस पुण्यकार्य में सब प्रकार से सहयोग देना प्रत्येक आर्य नरनारी का कर्त्तव्य है, ताकि सभा अधिकतम पीड़ितों की सच्ची सेवा करने में समर्थ हो सके।

आर्य समाज के सगठन में बाधक कुछ प्रवृत्तियां

किसी भी समाज और राष्ट्र की तब तक सच्ची उन्नति नहीं हो सकती, जब तक उसका सगठन दृढ़ न हो और उसके साथ सम्बद्ध व्यक्तियों में अनुशासन की भावना दृढ़ न हो। आर्य समाज का सगठन अन्य अनेक समाजों की अपेक्षा अधिक उत्तम है, इसमें सन्देह नहीं, किन्तु हमें यह देखकर दुःख होता है कि अब कई ऐसी प्रवृत्तियां कुछ क्षेत्रों में पाई जाती हैं, जो इसके सगठन को शिथिल किये बिना न रहेंगी, ऐसा प्रतीत होता है। उदाहरणार्थ आर्य समाज के जो नियमोपनियम बने हुए हैं, उनके अन्त में धारा ५८ में स्पष्ट लिखा है कि 'ये उपनियम आवश्यकतानुसार सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा' द्वारा यथोचित विज्ञापन देने पर घटाये वा बढ़ाये घटाये जा सकते हैं।" इस विषय में सार्वदेशिक सभा २६-६-४१ की अन्तरङ्ग सभा के निश्चयानुसार यह घोषणा कर चुकी है कि 'किसी भी आर्य समाज को उपनियमों को घटाने बढ़ाने अथवा उनमें सशोधन करने का अधिकार नहीं है। यह अधिकार केवल सार्वदेशिक सभा को ही है।' इस स्पष्ट घोषणा के होते हुए भी कई बार यह सुनने में आता है कि कई आर्य समाजें नियमोपनियमों मे मनमाने परिवर्तन कर लेती हैं। अभी हाल मे एक बड़ी आर्य समाज द्वारा ऐसी अनियमित कार्यवाही करने की सूचना मिली है, जिसने नियमोपनियमों में ऐसे मनमाने परिवर्तन कर दिये हैं, जिनसे आर्य समाज में प्रवेश का द्वार ही अत्यन्त सकुचित हो जाए। ऐसी ही सगठन की दृष्टि से दूसरी बाधक प्रवृत्ति आर्य समाजों को पृथक् रजिस्ट्री कराने की है। इस विषय में भी सार्वदेशिक सभा अपने १२-१०-४१ के अधिवेशन में यह निर्णय कर चुकी है कि 'घोषणा की जाए कि प्रान्तीय सभाओं से सम्बन्धित कोई समाज अपनी सम्पत्ति और संगठन की रजिस्ट्री पृथक् न कराए। यदि कोई समाज इसका उल्लंघन करे और उस समाज की प्रांतीय सभा चाहे, तो उपनियम स० ४१ और ४६ के अनुसार उस समाज के विरुद्ध कार्यवाही कर सकती है।"

इस प्रकार पृथक् रजिस्ट्रेशन करके कई समाजें कानून के अनुसार नियमोपनियमों में परिवर्तन का अधिकार प्राप्त कर लेती हैं और फिर उस का दुरुपयोग करके समाज के सगठन को शिथिल करती हैं, जो अत्यन्त निन्दनीय बात है। प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाओं और सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का आर्य सगठन के मार्ग में बाधक उपयुक्त प्रवृत्तियों को दृढ़ता से रोकना चाहिये, तथा सब आर्य विद्वानों और सन्यासियों का भी इस कार्य में सहयोगार्थ प्रेरित करना चाहिये। प्रत्येक आर्य समाज को प्रान्तीय प्रतिनिधि सभा और प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाओं का सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के आदेशों का पूर्णतया पालन करना अनुशासन की दृष्टि से अपना कर्तव्य समझकर आर्य सगठन को दृढ़ बनाना चाहिए॥

सिन्ध सरकार का अत्यन्त अनुचित कार्य—

'सार्वदेशिक' के गत अङ्क मे हमने कराची जिला जेल में सत्यार्थप्रकाश कैदियों को न देने के विषय मे सिन्ध सरकार के साथ सार्वदेशिक सभा के पत्र व्यवहार के आवश्यक अशों को दिया था। अब २६ अक्टूबर का एक पत्र सिन्ध सरकार के स० मन्त्री की ओर से सभा

के नाम आया है जिसमें लिखा है कि

With reference to your letter dated the 11th September,1944, I am directed to state that the Government regrets that they are not prepared to enter into further correspondance with the Intenational Aryan League on the subject.

अर्थात् आपके ११-९-४४ के उत्तर में मुझे यह लिखने की आज्ञा हुई है कि सरकार को दुःख है कि वह सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के साथ इस विषय में अधिक पत्र व्यवहार करने को तय्यार नहीं है।" यह लिखने की आवश्यकता नहीं कि सरकार का यह उत्तर नितान्त असन्तोष जनक है। अब इस विषय में प्रबल आन्दोलन करके सरकार को अपना अनुचित निश्चय बदलने को बाध्य करना चाहिये। सिन्ध तथा अन्य सब प्रान्तों की आर्य समाजों का अब कर्तव्य है कि वे प्रधान मन्त्री सरकार कराची और गवर्नर सिन्ध के नाम इस आशय के पत्र वा तार भेजें कि सिन्ध सरकार का आर्य हिन्दू क़ैदियों को सत्यार्थप्रकाश देने से इन्कार करना और इस पवित्र धर्म ग्रन्थ को पढ़ने से उन्हें वंचित करना सर्वथा अनुचित है।

स्व० वीर परमानन्द की हत्या के अभियोग का विचित्र निर्णय :—

गत २४ अक्टूबर को स्व० वीर परमानन्दजी की हत्या के सम्बन्ध में अभियुक्त सब व्यक्तियों को न्यायाधीश के अनुसार प्रत्यक्ष साक्षियों के अपर्याप्त और अविश्वसनीय होने के कारण छोड़ दिया गया यह समाचार जानकर हमें अत्यन्त आश्चर्य हुआ। इसका स्पष्ट अर्थ यह है कि पंजाब सरकार का पोलीस और गुप्तचर विभाग वीर परमानन्द के असली घातकों का पता लगाने में असमर्थ रहा। यह उसके लिये लज्जा की बात है और उसकी अयोग्यता का परिचायक है। हमें ज्ञात हुआ है कि इस विषयक अपील का यत्न कराया जा रहा है। हमारा पंजाब सरकार से अनुरोध है कि यदि अभियुक्त वीर परमानन्द के असली घातक नहीं थे, तो उन असली घातकों का पता लगवाने में वह कुछ कसर न उठा रक्खे अन्यथा आर्य हिन्दू जनता का विक्षोभ बड़ा उग्र रूप धारण कर लेगा। अब समस्त बल सत्यार्थप्रकाश के विरुद्ध चलाये हुए दूसरे अभियोग का मुकाबिला करने में लगा देना चाहिये ताकि उसमें पूर्ण सफलता मिले और फिर किसी को ऐसे वाहियात मुकद्दमे आर्यों के विरुद्ध चलाने का साहस न हो॥

२—११—४४ ध. दे.

सत्यार्थप्रकाश निधि

१०) श्री मन्त्री जी आ० स० अता सराय पटना
७) श्री चन्द्रभान जी आर्य लदौड़ी नजिया (शांतवाद)

१२६७॥) गतयोग
१२८२॥) योग १२८२-८

संयुक्त प्रांत

१०००) श्री मन्त्री जी आर्य प्रति० सभा। (संयुक्त प्रांत)

४७८०॥) गतयोग
६७८०) योग

राजस्थान

१७५८) गतयोग

मद्रासप्रांत

२३६)

बम्बई प्रांत

५) श्री मेघाव्रत जी आ० स० येवला
१२२६) श्री आनन्द प्रिय जी बड़ौदा द्वारा संगृहीत (१००००) की प्रतिज्ञा में से)
२०) श्री मन्त्री जी आ० स० दादोस
१५) श्री मन्त्री जी आ० स० ईटोला

(१९८२) योग
३४१) गतयोग
१६२३)

मध्य प्रदेश

८५) श्री दिनेश कुमार जी अकोट अकोला, (बरार) सी० पी०
१५।) श्री मन्त्री जी आ० स० बिलास पुर
१५) श्री मन्त्री जी आ० स० कारंजा
५) श्री कन्हैया लाल जी
५) श्री दुर्गा प्रसाद जी
२) श्री बाबूसिंह जी
१) श्री नारायण सिंह जी
१) श्री गणेश सिंह जी
१००) श्री मन्त्री जी आ० स० सागर
१५४।) योग
२६) गतयोग
१८३।)

देहली प्रांत

२) श्री शतेन्द्र कुमार जी वैद्य, तेलीवाड़ा देहली
५००) श्री मंत्री जी आ० स० हनुमान् रोड़ नई देहली
१०) श्रीमती बसन्ती देवी जी खजूर रोड़ देहली
५) श्रीमती जय देवी जी १०३ दरिया गंज देहली
५१७) योग
५१३) गतयोग
१०३०) योग

बंगाल प्रांत

५०) श्री मन्त्री जी आ० स० खड़गपुर
१०५) गतयोग
१५५)

पंजाब प्रांत

४) श्री खुशी राम जी बलौर पुर (गुड़गांव)
८४।।) गतयोग
८८।।) योग

हैदराबाद स्टेट

५५) गतयोग

विदेश

२५०) गतयोग

विविध

४) गतयोग

स० भा० आर्य सम्मेलन पर

४०००।=) गतयोग
१६४५२=) सर्व योग

सब दानियों को धन्यवाद। यह खेद की बात है कि अभी २ लाख की अपील के उत्तर में केवल १६४५२) की राशि सार्वदेशिक सभा कार्यालय में पहुँची है। यह आर्य जनता के लिये लज्जा का विषय है कि वह अपने पवित्र अमर धर्मग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश की रक्षा और प्रचार विषयक अपने उद्‌घोषित निश्चय की पूर्ति के लिये उस तत्परता का परिचय नहीं दे सकी जो उसे देना चाहिये था। सब आर्य समाजों और आर्य प्रतिनिधि सभाओं को अब इस निधि के लिये २ लाख की पूर्ति में तत्पर हो जाना चाहिये और तब तक विश्राम न लेना चाहिये जब तक इस राशि को पूर्ण न कर लिया जाय ताकि निश्चिन्तता पूर्वक सत्यार्थ प्रकाश की रक्षा और प्रचार का कार्य कराया जा सके।

धर्म देव विद्यावाचस्पति स० मन्त्री सभा

स्थापना दिवस

६) आ० स० सदर बाजार नागपुर
१०) ,, ,, गाजियाबाद
२१) ,, ,, देहरा दून
१०) ,, ,, पुसद अकोला, मध्य प्रदेश
७०) ,, ,, लाहौर छावनी
१०) ,, ,, कोल्हापुर
२०) ,, ,, इटारसी
५) ,, ,, मुजफ्फर नगर
६।।) ,, ,, मसूरी
१०८।।)
८४१।।।=)
६५०=) ५०।=)

सब दानी आर्य समाजों को सभा की ओर से धन्यवाद। जिन आर्य समाजों ने अब तक अपनी राशि इस निधि में नहीं भेजी उन्हें शीघ्र कम से कम ।) आर्य परिवार के प्रति व्यक्ति की दर से अब भी संग्रह करके अथवा यदि ऐसा करना सम्भव न हो तो आर्य समाज के कोष से सार्वदेशिक सभा कार्यालय देहली में भेज कर अपने कर्तव्य और शिरोमणि सभा के आदेश का पालन करना चाहिये। —मन्त्री सभा

वेद प्रचार निम्यर्थ (विविध दान)

१५) श्री मन्त्री जी आ० स० रामगढ़ (नैनीताल)

४०) श्री मन्त्री जी आ० स० सरगोधा

५०) श्री मन्त्री जी आ० स० लुधियाना

२) श्री लालाराम जी देहली शाहदरा, (पुत्र के नामकरण के अवसर पर)

१०) श्री हीरा लाल, जगदीश प्रसाद जी आर्य पन्सारी मेंहदावल जि० वस्ती वेद प्रचार मंडल के लिये।

१५) श्री मंत्री जी आ० स० ईटोला (बड़ौदा स्टेट)

२॥=) श्री रणजीत सिंह जी सिद्धांत शास्त्री आर्य समाज जयपुर शहर बंगाल पीड़ितों के लिये

१२) श्री मंत्री जी आ० स० शिकोहाबाद

१००) श्री परमेश्वरी दास जी सेठ गार्डिन शिमला

२४४=)

धन्यवाद।

स० मंत्री सभा

आवश्यक सूचना

इस सभा ने गत वर्ष एक विज्ञप्ति के द्वारा आर्य जनता को सूचित किया था कि शहीदी प्लेट का मूल्य पीतल का भाव बढ़ जाने से २४) के स्थान में ४०) होगया है। सभा ने हैदराबाद राज्य में रचनात्मक कार्य विषयक अपनी तीन वर्ष की रिपोर्ट में यह भी निर्देश किया था कि जो समाजें वा संस्थायें पीतल की पट्टिकायें क्रय करने में असमर्थ हैं वे अपने यहां उपयुक्त स्थान पर चूने इत्यादि से शहीदी पट्टिका की कापी सुरक्षा लेवें। जन साधारण के उपयोग के लिये सभा ने एक शहीदी पट्टिका जिसमें केवल हुतात्माओं के नाम, निवास, स्थान, किस जेल में हुतात्मा हुए और किस तिथि को आदि का उल्लेख है, छपवाने का गत वर्ष निश्चय किया था और सभा की सूचना के आधार पर लगभग २५० आर्डर हमें प्राप्त हुए थे। कागज की अलभ्यता के कारण हम अभी तक इस निश्चय को कार्य में परिणत नहीं कर सके थे। अब सभा ने इस कार्य को पूरा करने का निश्चय कर लिया है और दिसम्बर के मध्य तक शहीदी पट्टिका छप कर तैयार हो जाएगी।

इस पट्टिका में सभा ने निम्न २ परिवर्तन करने का भी निश्चय किया है।

(१) सत्याग्रह के आरम्भ समाप्ति की तिथियां।

(२) हुतात्माओं के प्रति श्रद्धांजलि

जिन सज्जनों के आर्डर सभा कार्यालय में प्राप्त हो चुके हैं यदि उन्हें अब पट्टिका मंगाना अभीष्ट न हो तो कार्यालय को सूचित कर देवें तथा जो सज्जन अपने आर्डर भेजने चाहें वे ३०-११-४४ तक भेज देवें। मूल्य ।=) ही उद्घोषित हुआ था, यदि कुछ कम हुआ तो उसी पर ये भेजी जावेंगी।

धर्म देव विद्यावाचस्पति

स० मन्त्री

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली।



१९५४ ई०
से
२०११ वि०

सम्पादक

वार्षिक मूल्य

विदेश ७शि.

सत्यार्थप्रकाश प्रतिबन्ध विरोधाङ्क

विषय सूची

॥ ओ३म् ॥

सार्वदेशिक

* सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली का मासिक मुख पत्र *

वर्ष २० | दिसम्बर १९४४ ई० | मार्गशीर्ष २००१ | दयानन्दाब्द १२१ | अङ्क ११

* वैदिक प्रार्थना

ओ३म् श्रद्धां प्रातर्हवामहे श्रद्धां मध्यन्दिनं परि। श्रद्धां सूर्यस्य निम्रुचि श्रद्धे श्रद्धापयेह नः ॥

शब्दार्थ—हम सब (प्रातः) सवेरे (श्रद्धाम्) अर्थात् सत्य के धारण करने की भावना और शक्ति को (हवामहे) पुकारते वा ग्रहण करते हैं (मध्यन्दिनम्) मध्यान्ह वा दोपहर को (श्रद्धाम्) उसी सत्य के धारण करने की भावना तथा शक्ति को (परि हवामहे) सब ओर से ग्रहण करते हैं (सूर्यस्य निम्रुचि) सूर्य के अस्त होने के समय पर भी हम (श्रद्धाम्) श्रद्धा वा सत्य को धारण करने की शक्ति को अपने अन्दर ग्रहण करते हैं (श्रद्धे) हे सत्य को धारण करने वाली जगज्जननि (इह) इस जगत् मे (नः) हम सब को (श्रत् धापय) सत्य को धारण करवा ॥

विनय—हे सत्य स्वरूप परमेश्वर! धर्म का मूल आधार सत्य है। हम उस सत्य को धारण करने की भावना तथा शक्ति अपने अन्दर हर समय ग्रहण करना चाहते है। आप हमे ऐसी शक्ति दीजिये कि प्रात, मध्यान्ह, सायम् हर समय हम सत्य के मार्ग पर चलते रहें। सत्य को ग्रहण करने मे हम सदा तत्पर रहें। भयङ्कर से भयङ्कर आपत्तियों के आने पर भी हम सत्य का परित्याग न करें। हमारे जीवनों को आप सत्य और श्रद्धा से ऐसा परिपूर्ण कर दीजिये यही हमारी प्रार्थना है ॥

वेदोपदेश

देव कौन हैं ?

ओ३म् ऋतावान ऋत जाता ऋतावृधो घोरासो अनृतद्विषः। तेषां वः सुम्ने सुच्छर्दिष्टमे वयं स्याम ये च सूरयः ॥ (ऋग्वेद)

शब्दार्थः–जो आप (ऋतावान) सत्य, ज्ञान और यज्ञ भावना वाले (ऋत जाताः सत्य, ज्ञानादि के के कारण प्रसिद्ध, (ऋतावृध') सत्य की वृद्धि वा प्रचार करने वाले (घोरासः अनृतद्विष.) असत्य के घोर शत्रु विद्वान् हैं (तेषां व') ऐसे आप विद्वानों की (सुच्छर्दिष्टमे सुम्ने) अत्यन्त उत्तम सुखदायक शरण में (वयं स्याम) हम सदा रहें (ये च सूरय) और भी जो ज्ञानी हैं वे सब इसी प्रकार बनें।

व्याख्या—ऋग्वेद के इस मन्त्र मे देवों का स्वरूप बड़ी उत्तमता से प्रतिपादित किया गया है। केवल पढ़-लिख जाने से कोई सच्चा विद्वान् वा देव नहीं बन जाता। देव वे कहलाते हैं जो सदा सत्य के मार्ग पर चलते हैं, जो ज्ञानी हैं तथा यज्ञ की भावना अर्थात् स्वार्थ त्याग सेवा और परोपकार की भावना से युक्त हैं, इन गुणों के कारण ही जो समाज तथा राष्ट्र मे प्रसिद्ध होते हैं, जो सत्य, ज्ञान तथा यज्ञ भावना को प्रचार, सदुपदेशादि द्वारा सदा बढाने वाले होते हैं पर इसके साथ ही जो असत्य और अज्ञान के प्रबल विरोधी होते हैं। देव लोग जहाँ असत्य तथा पाखण्ड देखते है वहीं उसका निर्भयता से खण्डन करते हैं, वे जहाँ अज्ञान पाते हैं वहीं उसको दूर करने का पूर्ण प्रयत्न करते हैं। उनके अन्दर ऐसी निर्भयता होती है कि वे असत्य और अज्ञान के दूर करने में कभी सकोच नहीं करते। ऐसे सत्यनिष्ठ विद्वानों के चरण चिन्हों पर चलने से ही सबका कल्याण हो सकता है। महर्षि दयानन्दजी वैदिक परिभाषा मे ऐसे ही देव थे। उन्होने सत्यार्थ प्रकाशादि ग्रन्थ रत्नों की रचना इसी पवित्र उद्देश्य से की थी कि सत्य का प्रचार हो और असत्य का निराकरण हो। इस प्रकार के सच्चे देवों का अनुसरण करते हुए हम सबको भी सत्य के प्रचार और असत्य के खण्डन मे सदा तत्पर रहना चाहिये। ध. दे. ५

सत्यार्थ प्रकाश पर प्रतिबंध

(लेखकः—श्री बा० पूर्णचंदजी बी० ए० एल-एल० बी० ऐडवोकेट आगरा)

अभी हाल में सिन्ध की प्रान्तीय मुस्लिम लीगी सरकार ने सत्यार्थ प्रकाश के १४वें समुल्लास के सम्बन्ध में जो भारत रक्षा कानून की धारा ४१ के अनुसार आज्ञा दी है उसने सारे भारतवर्ष में एक हलचल और बेचैनी पैदा करदी है और इस आज्ञा का घोर विरोध सारे आर्य जगत् में हो रहा है। हमारे मुसलमान भाइयों की तरफ़ से कई वर्षों से इस समुल्लास के प्रतिकूल आवाज़ उठाई जा रही थी परन्तु यह पहला अवसर है कि किसी सरकारी आज्ञा से इनका पक्ष समर्थन किया गया हो। यह बात ज़रूर है कि जिस सरकार ने समर्थन किया है वह मुस्लिम लीगी सरकार है और इसके साथ ही केन्द्रीय सरकार ने श्री भाई परमानन्द जी के प्रस्ताव के सम्बन्ध मे सम्मति प्रकट करते हुए यह स्पष्ट कर दिया है कि केन्द्रीय सरकार किसी ऐसी आज्ञा की आवश्यकता नहीं समझती फिर भी अपने मुसलमान भाइयों के आन्दोलन और सिंध सरकार की इस आज्ञा पर गम्भीरता से विचार करने की आवश्यकता है। हम पहले आन्दोलन के सम्बन्ध में विचार करना चाहते हैं।

ऐसा आन्दोलन क्यों ?

सत्यार्थ प्रकाश का प्रचार करीब करीब ७० वर्ष से हो रहा है। इस बीच में अनेक बार मुसलमानों और आर्य समाजियों में शास्त्रार्थ इस विषय पर हुए हैं और मौलवी सना उल्ला साहब ने हक प्रकाश नामक रिसाले के जरिये से इसका उत्तर भी प्रकाशित कराया है और जो समीक्षा १४वें समुल्लास में महर्षि दयानन्द ने कुरान शरीफ की की है उसके प्रकाश में मौ० मुहम्मदअली व मौ० अब्दुल कलाम आज़ाद ने कुरान शरीफ का तर्जुमा प्रकाशित करते समय परिवर्तन भी कर लिया है और अब इतने दिनों के पश्चात् इस समुल्लास को ज़ब्त कराने का उद्योग करने के दो ही अर्थ हो सकते हैं।

हार मान गये

जब प्रतिवादी विवाद में हारने लगता है तो वादी को कानूनी शिकञ्जे से रोकना चाहता है और उसका केवल अर्थ यह है कि अब विवाद करने की शक्ति नहीं रही।

झगड़ा बढ़ाने की नीति

दूसरा अर्थ इस प्रकार के आन्दोलन का यह हो सकता है कि हमारे मुसलमान भाई फूट पैदा करा कर अपनी शक्ति का प्रदर्शन और पाकिस्तान योजना को पुष्टि कराना चाहते हैं। इस स्थल पर यह प्रकट करना आवश्यक है, कि इस प्रकार के आन्दोलन से पाकिस्तान की योजना का विरोध और भी बढ़ेगा।यदि हमारे मुसलमान भाई शक्तिशाली ब्रिटिश राज्य के आधीन होते हुए केवल अपने बहुमत के आधार पर इस प्रकार का अत्याचार कर सकते हैं तो जब सारी शक्ति उनके अधीन होगी उस समय का तो स्वप्न भी भयानक है।

आन्दोलन पर दृष्टि

हमारे मुसलमान भाइयों के इस आन्दोलन के कारण कुछ और भी हों फिर भी इस आन्दो- पर कई दृष्टिकोण से विचार हो सकता है।

धर्म की दृष्टि से

कुरान शरीफ और इस्लाम का सम्बन्ध धर्म से है दुनियाँ का सुख और मोक्ष की प्राप्ति दोनों इसके अन्तर्गत हैं। इसकी समालोचना करना हरएक का धर्म है। धर्म और प्रचार का सम्बन्ध है, प्रचार में समीक्षा भी शामिल है। यदि किसी मनुष्य को कोई विचारक मोक्ष प्राप्ति के मार्ग से विचलित होता देखे तो उसको रोकना धार्मिक कर्तव्य है।

न्याय की दृष्टि से

हमारे मुसलमान भाइयों का मजहब तब्लीगी मजहब है वह सबको उसकी दावत देते हैं। यदि वह सबको निमन्त्रित करते हैं तो सबका यह अधिकार है कि उनकी दावत की चीजों की जांच पड़ताल करे। खाने और खिलाने के पहले यह तो देखलें कि चीज दावत के योग्य भी है या नहीं। पहले सबको दावत देना और फिर जांच की आज्ञा न देना न्याय के प्रतिकूल है।

स्वतन्त्रता की दृष्टि से

स्वतन्त्रता सारे जगत् का ध्येय है और स्वतन्त्रता के अन्तगत विचारों की स्वतन्त्रता एक आवश्यक और अनिवार्य अङ्ग है और विचार स्वतन्त्रता के अन्तर्गत प्रचलित मत या विपक्षी के मतकी समीक्षा सम्मिलित है। यदि धार्मिक विषयों में विचार की स्वतन्त्रता न होवे तो स्वतन्त्रता न होने के बराबर है। जौन स्टूअर्ट मिलने अपनी स्वतन्त्रता (Liberty) नाम की पुस्तक में विचार स्वतन्त्रता पर विचार करते हुए ईसाई धर्म की समालोचना के अधिकार पर जो उस समय का एक स्थापित और राज्य धर्म था बहुत बल दिया है।

हमने ऊपर देखा कि हमारे मुसलमान भाइयों का सत्यार्थ प्रकाश के विरुद्ध आन्दोलन न्याय और स्वतन्त्रता की दृष्टि से अनुचित है।

सरकार की नीति

आरम्भ से ही ब्रिटिश राज्य की धर्म सम्बन्धी नीति धार्मिक निष्पक्षता तथा प्रजा के लिये धार्मिक स्वतन्त्रता की रही है और इस नीति को लक्ष्य में रखकर सिन्ध गवर्नमेन्ट का हस्तक्षेप सर्वथा अनुचित और निन्दनीय है। सिन्ध की गवर्नमेन्ट को किसी पक्ष का अनुचित समर्थन नहीं करना चाहिये था।

कानून की दृष्टि से

कानूनी प्रश्नों पर इस लेख में विचार नहीं हो सकता क्योंकि सब पाठकों के लिये यह रुचिकर न होगा फिर भी यहाँ यह लिखना आवश्यक है कि सिन्ध गवर्नमेन्ट की आज्ञा जिसमें भारत रक्षा कानून की धारा ४१ का सहारा लिया गया है कानून के प्रतिकूल है।

(१) सत्यार्थ प्रकाश एक ७० साल पुरानी धार्मिक पुस्तक है जिसका मुद्रण व प्रकाशन सिंध से बाहर भी होता रहा है। और जिसके प्रकाशक पर सिन्ध गवर्नमेन्ट को कोई अधिकार नहीं है। जो पुस्तक सार्वजनिक है उसके सम्बन्ध में कोई प्रान्तीय सरकार आज्ञा नहीं दे सकती।

(२) धारा ४१ केवल शान्ति स्थापित करने के लिये है। सत्यार्थ प्रकाश के प्रकाशन में कोई अशान्ति की भावना न रही है और न हुई बल्कि उसके रोकने से उत्तेजना उत्पन्न हो रही है। सिन्ध गवर्नमेन्ट पर खुद ऐसी अशान्ति उत्पन्न करने का उत्तरदायित्व है।

(३) जब पुस्तक का रखना, बेचना, व प्रचार करना नहीं रोका गया है तो उसके खाली छपना रोकने से कोई प्रयोजन सिद्ध नहीं हो सकता। जब कि बाहर से छपी हुई पुस्तक बराबर आ सकती है।

ऐसी दशा में सिन्ध गवर्नमेन्ट की आज्ञा कानून के विरुद्ध है।

हमारा कर्त्तव्य

(अ) सत्यार्थ प्रकाश का अधिक से अधिक प्रचार और स्वाध्याय।

(ब) इस अनुचित आज्ञा के विरुद्ध तीव्र से तीव्र आन्दोलन।

(स) सत्यार्थ प्रकाश की रक्षा के लिये प्रत्येक आर्य (हिन्दू) का तन मन धन से उद्यत रहना और बलिदान के लिए तैयार रहना।

(द) सत्यार्थ प्रकाश के १४वें समुल्लास की पुष्टि में पर्याप्त सामग्री एकत्रित करना।

सत्यार्थप्रकाश और मुस्लिम लीग

[मध्य प्रदेश की लेजिस्लेटिव असेम्बली के स्पीकर माननीय श्री घनश्यामसिंह जी गुप्त का पंजाब प्रान्तीय सत्यार्थप्रकाश सम्मेलन (लाहौर) में २६-११-४४ को दिया अभिभाषण]

स्वागताध्यक्ष महोदय, देवियों और सज्जनो !

इस सम्मेलन का सभापति बनाकर आपने मेरी जो प्रतिष्ठा की है उसके लिए मैं आपको धन्यवाद देता हू ।

मैं जानता हू कि मैं इस कार्य के सर्वथा अयोग्य हू इस पर भी मैंने यह कार्य केवल इसलिए स्वीकार किया कि मै अपने माननीय मित्रों के अनुरोध को टाल नहीं सका, विशेषकर इस समय में ।

आप लोगों को विदित ही है कि सिन्ध सरकार ने ऋषि दयानन्दकृत हमारे पवित्र ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश पर जो प्रतिबन्ध लगाया है उसी के सम्बन्ध में यह विशेष सम्मेलन बुलाया गया है ।

इस कार्रवाई के इतिहास से हम पर यह सुस्पष्ट हो जाता है कि इसके पीछे जो भावना कार्य कर रही है वह विशुद्ध राजनैतिक है । इस बात को प्राय सबही जानते हैं कि सत्यार्थ प्रकाश ६० वर्ष से अधिक समय से जनता के सामने है ।

इस ग्रन्थ का भारत वर्ष की करीब करीब सभी मुख्य मुख्य भाषाओं में तर्जुमा हो चुका है और इसकी लाखों जिल्दें बिक चुकी हैं । पता नहीं कितनी बार वेदि और प्लैट फार्म से यह ग्रन्थ पढ़ा तथा सुनाया जा चुका है । मुस्लिम लीग ने जो अपने को राजनैतिक संस्था बतलाती है अभी कुछ समय से इस ग्रन्थ के विरुद्ध आन्दोलन शुरू किया है । लाहौर के इसी शहर में मुस्लम लीग ने सबसे पहले प्रस्ताव पास करके इस पुस्तक की जब्ती की मांग की थी । जब भारत या सूबों की सरकार से अपनी माग को पूरा कराने में मुस्लिम लीग सफल न हुई तो उसने फिर इस बार कराची में इस माग को पूरा करने पर जोर डाला । फल यह हुआ कि सिंध की मुस्लिम लीगी सरकार ने आज्ञा का पालन करके १४वें समुल्लास की छपाई और प्रकाशन पर पाबन्दी लगादी ।

इस अनावश्यक और ऐसी कार्य्यवाही के लिए जो कभी नहीं हुई, सिंध सरकारने डिफ़ेन्स आफ् इण्डिया रूल की सहायता ली है । डिफ़ेन्स आफ् इण्डिया रूल (भारत रक्षा विधान) का यह मतलब नहीं था कि शान्ति और सुरक्षा के बहाने से किसी धर्म के पवित्र पुस्तकों पर इस प्रकार पाबन्दी लगाई जाय । पुस्तक का पिछले ७० वर्षों से खूब प्रचार हो रहा है परन्तु इसके कारण कहीं पर भी सार्वजनिक शान्ति भग नहीं हुई । पिछले ५ साल से जब से युद्ध हो रहा है भारत की सुरक्षा खतरे में नहीं पड़ी । अचानक ही मुस्लिम लीग के प्रस्ताव ने सिंध सरकार के लिए सत्यार्थप्रकाश को खतरनाक बना दिया । पर्दा इतना महीन है कि इससे कोई भी धोखे में नहीं आ सकता । यह तो भारत रक्षा विधान (डिफ़ेन्स आफ् इण्डिया रूल) का भयंकर दुरुपयोग है ।

किसी अनसमझ व्यक्ति से भी यह छिपा नहीं रह सकता कि आर्य समाजियों की धार्मिक स्वतन्त्रता पर यह हमला केवल राजनैतिक उद्देश्यों को पूरा करने के लिये किया गया है । वे उद्देश्य क्या हो सकते हैं इनका तो अन्दाजा ही लगाया जा सकता है । यह स्पष्ट होगा कि यह क़दम पाकिस्तान प्रोग्राम की जंजीर की एक कड़ी है ।

पाकिस्तान के विरोधियों में वे लोग जिनसे समझौता होना सम्भव नहीं है, आर्य समाजी और सिख ही हैं। मुस्लिम लीग और उसके नेता साफ तौर पर सिखों को फुसलाने और फँसाने का और आर्य समाजियों को कुचलने का यत्न कर रहे हैं। क्योंकि वे (मुस्लिम लीग के नेता) जानते हैं कि आर्य समाजी न फुसलाए जा सकते हैं और न फँसाए और बहादुर सिख कुचले नहीं जा सकते।

हमें यह पवित्र आशा है कि सिख जाति के नेता इस चाल को समझेंगे और फुसलाए में नहीं आयेंगे।

मुझे आशा है आप आर्य्य भाइयों की लोहे जैसी दृढता यह स्पष्ट कर देगी कि आर्य समाज को कुचलना आसान काम नहीं है।

परन्तु वे (मुस्लिम लीग के नेता) अपना खेल खूब खेल रहे है। मुस्लिम लीग को अपनी शक्ति पर भरोसा नहीं है। वे चाहते है कि ब्रिटिश सरकार की ताकत से आर्य समाज को कुचल दिया जाय। कोई कुछ कहे मुझे तो इसमें ज़रा भी शक नहीं है कि आर्य समाज से निपटने के बाद मुस्लिम लीग सिखों तथा अन्य पार्टियों से निपटेगी और उन्हे अपने भावी पाकिस्तान में मुस्लिम लीगी सरकार का नमूना पेश करेगी। धार्मिक सहिष्णुता का स्थान धार्मिक मतान्धता और धार्मिक स्वतन्त्रता का स्थान धार्मिक अत्याचार लेगा। तब मध्य कालीन समय की तवारीख दुहराई जायगी जिसमे आपके पजाब का काफ़ी से ज्यादा हिस्सा है। यदि हम अभी से इस जरूरी चीज को समझने में चूक गए और हम विभक्त रहे तो फिर चेतने से कोई लाभ न होगा और हमारा समस्त भविष्य अधकारमय हो जायगा। मैं सब समझदार हिन्दुओं, सिक्खों मुसलमानों और अन्य जाति वालों से अपील करता हूँ कि वे इस धार्मिक अत्याचार से हिन्दुस्तान की रक्षा करने में अपने सारे प्रभाव को काम में लाए।

प्रत्येक व्यक्ति को समझ लेना चाहिए कि धार्मिक अत्याचार का आधार बनाने के लिए किसी भी धर्म-पुस्तक में से अवतरण (Extracts) दिए जा सकते हैं और यदि एक बार भी इन चीजों को खुली छुट्टी दी गई तो कहीं भी धर्म की दृष्टि से थोडी सख्या वाले व्यक्ति सुरक्षित न होंगे। इसलिए यह सबका कर्त्तव्य है कि वे इस खतरे का लोहा लेवें और सभ्य सरकार और सभ्य जीवन की रक्षा करे।

मै विनम्रता पूर्वक ब्रिटिश सरकार से भी प्रार्थना करू गा कि वह आर्य समाज पर हुए इस साफ़ धार्मिक अत्याचार में एक पार्टी न बने। महारानी विक्टोरिया की प्रसिद्ध घोषणा के समय से अब तक ब्रिटिश सरकार धार्मिक स्वतन्त्रता देने की नीति का पालन करती चली आ रही है उसे इस पुरानी नीति पर धब्बा नहीं लगने देना चाहिए।

इस बयान में कोई सार नहीं है कि चूँकि शान्ति और सुरक्षा एक प्रान्तीय विषय है अत इस आर्डर की तमाम जिम्मेदारी सिंध की मुस्लिम लीगी सरकार की है। ब्रिटिश शासन और ब्रिटिश सरकार दोनों का दबदबा अभी मौजूद है और शान्ति और सुरक्षा के नाम पर किसी भी प्रान्तीय सरकार द्वारा धार्मिक अत्याचार नहीं होने देना चाहिए। मुझे यह एक दम कह देना चाहिए कि आर्य समाज का झगडा न तो हमारे मुसलमान भाईयों से है और न ब्रिटिश सरकार से। मुस्लिम लीग की ओर से ही सत्यार्थप्रकाश के विरुद्ध माग उठी है और सिंध के मुस्लिम लीगी मन्त्री-मडल द्वारा ही इस माग पर कार्यवाही हुई है अत हमारी शिकायत मुस्लिम लीग से ही है। मै बड़ी नम्रता के साथ मुस्लिमलीग को भी चेतावनी के रूप में एक बात कहता हूँ। यदि कभी पाकिस्तान मिला

भी तो, मुस्लिमलीग के मन्त्री मण्डल के इस कार्य से यह बहुत दूर चला जायगा। पूर्ण पाकिस्तान की स्थापना के बहुत पहले ही हमें इसका यह नमूना मिला है।

जब मुस्लिमलीग पाकिस्तान के अपने भिन्न २ क्षेत्रों में पूरे धार्मिक उत्साह और धार्मिक असहिष्णुता के साथ हकूमत करेगी तो हमारी क्या गति होगी ? यह केवल ईश्वर ही जानता है। जो भी इस्लाम के विरुद्ध बोलेगा या उसके बडे बूढ़ों ने कभी इस्लाम के विरुद्ध कुछ बोला होगा, तो उसकी खैर न होगी जब तक कि वह अपने वा अपने बुजुर्गों के कहे हुए को वापस न ले लेगा। नए पाकिस्तान के विधान का २० वीं सदी का संस्करण अक्षरश: वही होगा जो १३ वीं वा १७ वीं सदी का मूल संस्करण था।

यह तो हमारे सामने एक अत्यन्त महत्वपूर्ण वैधानिक सवाल पेश करता है। यह धार्मिक अत्याचार आज की सिंध सरकार के हाथों हुआ है सिंध की सोची हुई पाकिस्तानी सरकार के हाथों नहीं। पाकिस्तान तो अभी विचाराधीन ही है यह अभी अस्तित्व में नहीं आया है। सूबों की और केन्द्रीय सरकार की पारस्परिक पोज़ीशन क्या होगी ? प्रान्तीय स्वराज्य आजकल का फैशन बन गया है और यह बडा आकर्षक कहावत का शब्द बना हुआ है और देश के बहुत से प्रसिद्ध महानुभाव इस पर विचार करने लग गये हैं। इसलिए यह तो हो नहीं सकता कि इसके विरुद्ध जो कुछ कहा जायगा वह जनता के कानों तक न पहुँचे। परन्तु इन वर्षों में इसकी बाबत मैं जो अनुभव करता रहा हू वह मुझे जरूर कहना है। मुझे इसमें ज़रा भी शक नहीं है कि पाकिस्तान प्रान्तीय स्वराज्य का बच्चा है। इस युक्ति का कोई उत्तर नहीं हो सकता कि यदि सूबे स्वतन्त्र होने हैं तो फेडरेशन में शामिल होने वा न होने की उन्हें स्वतन्त्रता है।

मेरी तो यह धारणा है कि प्रान्तीय स्वतन्त्रता के आधार पर बनी फेडरेशन हमारे समय का सबसे बड़ा खतरा है। यह शब्द हमारे देश की दशाओं का ठीक २ सूचक नहीं है। यह तो गलत और धोखे में रखने वाला फार्मूला है जिस पर हमारे देश के बहुत से बुद्धिमान् और अग्रणी नेता लट्टू हैं। यह तो हमारी अवस्थाओं के सर्वथा प्रतिकूल है। हमारे सूबे वैसे स्वतन्त्र और सर्वे-सर्वा राज्य नहीं हैं जैसे अमेरिका में थे। हमारे सूबे केन्द्र के अधीन रहे हैं और उसी से उन्हें शक्ति मिलती है। कम से कम ब्रिटिश शासन के गत१५०वर्षों में भारतवर्ष न सिर्फ भौगोलिक दृष्टि से वरन् राजनैतिक दृष्टि से भी आवश्यक विषयों में एक रहा है।

अब प्रान्तीय स्वराज्य और 'फेडरेशन' भारतवर्ष को टुकड़ों म काट देना चाहते है और फिर उन टुकडों को आपस में जोडना चाहते हैं। यह तो मेरे शरीर के हाथों, पैरों और सिर को काटकर फिर किसी जादू के बल पर उन्हें जोडकर एक करने के समानहै। मुझे तो यह लगता है कि इस कांट छाट के व्यापार से भारत-वर्ष मेरे शरीर की तरह निर्जीव वा मुर्दा हो जायगा। हममें से जिन्होंने इन दोनों फ़ारमूलों का समर्थन किया है, उन्हे बहादरी के साथ अपना पैर पीछे खींच लेना चाहिए और ठीक मार्ग पर चलने के लिए मुड जाना चाहिए। हमें बुलन्द आवाज़ से कह देना चाहिए कि हम 'प्रान्तीय स्वतन्त्रता' के खिलाफ़ हैं और इसलिए फेडरेशन के भी।

पाकिस्तान की हत्या करने का और कोई दूसरा उपाय नहीं है। यदि आप लोग मुझे क्षमा करे तो मेरी यह धारणा है कि राजाजी का फ़ार्मूला प्रान्तीय स्वतन्त्रता की प्रचलित भावना से अच्छा है। राजाजी जिलों को इकाई बनाते हैं सूबे को

नहीं। स्वराज्य की तमाम समस्या यह है कि जनता का समस्त प्रभुत्व कहां रहना चाहिए। मैं तो इसे बहुत उग्रता से मानता हू कि यह प्रभुत्व समष्टि रूप से भारत वर्ष की जनता में रहना चाहिए सूबों के निवासियों में नहीं। मेरा मतलब यह नहीं है कि सूबों में कोई काम न हो। उन्हें अधिकार केन्द्र से मिलना चाहिए और केन्द्र के एजेन्टों के रूप में उन्हें काम करना चाहिए।

यही धार्मिक तथा अन्य प्रकार के अत्याचारों से बचने का एक रास्ता है, उन अत्याचारों से भी भयकर जिन्हें मध्य काल के युगों में अनुभव किया गया है, हम बिना सब बातों को ठीक ठीक तोले और जाचे रूस के तथा अन्य देशों के विधानों की बातें करते हैं। मैं भी उनके विषय में बहुत कुछ कह सकता हू परन्तु हमारे इस सम्मेलन के लिए यह एक अप्रासङ्गिक विषय होगा।

मुझे इसमें सन्देह नहीं है कि इस सम्मेलन में आप लोग खतरे का सामना करने के उपाय सोचेंगे। मुझे तो सिर्फ यहीकहना है कि जब तक धर्म पर हुए ऐसे आक्रमण का पूरा प्रतिकार न होगा तब तक आर्य समाज चैन न लेगा। मुझे आशा है कि इस देश के सभी वर्गों के समझदार व्यक्तियों का उसे साहाय्य और सहयोग मिलेगा।

ओ३म् शान्ति शान्ति शान्ति

सत्यार्थप्रकाश प्रतिबन्ध विषयक सिंध सरकार की अनुचित आज्ञा पर लोकमत

भयंकर भूल

आखिरकार आशंका सच निकली। सिन्ध-मन्त्रिमण्डल ने सिद्ध कर दिया कि वह पूरे अर्थों में लीगी-मन्त्रिमण्डल है। और लीगी शासन का अर्थ है, मुस्लिम-शासन। मुस्लिम शासन का अर्थ है कुरान और हदीस का शासन और मुल्लाओं का राज्य। मुल्लाओं के संकेत पर चल कर हिदायतुल्ला-गवर्मेण्ट ने आर्डर निकाला है कि सत्यार्थप्रकाश यदि सिंध में छापा जाय और प्रकाशित किया जाय तो चौदहवां समुल्लास निकाल कर ही छापा और प्रकाशित किया जाय। यह आदेश सर्वग्राही भारत रक्षा कानून के अन्दर शान्ति और अमन की रक्षा के लिये निकाला गया है। प्रांत में साम्प्रदायिक शांति रखने के उद्देश्य से सत्यार्थप्रकाश के चौदहवें समुल्लास के प्रकाशित करने पर पाबन्दी लगाई गई है। सिंध की आबादी में ७०.७५ प्रतिशत मुसलमान हैं। २९.२५ प्रतिशत केवल हिंदू हैं। इसमें आर्य समाजियों की संख्या दाल में नमक के बराबर भी नहीं है। लीगी मन्त्रमण्डल को क्या इस नन्हें वर्ग से शांति भंग किए जाने का भय है? क्या कोई विवेकशील व्यक्ति इस पर विश्वास कर सकता है कि आर्य समाज और आर्य समाजियों के कारण प्रांत की शांति नष्ट हो सकती है? सिंध-मन्त्रिमण्डल ने धर्मान्धता के आगे आत्म-समर्पण कर दिया है, यह कहने को हम विवश हैं।

सत्यार्थप्रकाश पर पाबन्दी लगा कर सिन्ध मन्त्रिमण्डलने धर्मान्धता के कुण्ड में पेट्रोल की टंकी झोंक दी है। इसकी ज्वालायें कहां तक पहुँचेगी औरउसमें कुरान और हदीस भी न आजावेंगे यह कहना कठिन है। मगर जिस रीति से और जिस बहाने से सत्यार्थ प्रकाश और आर्य समाज पर वार किया गया है, वह अत्यधिक उत्तेजनाजनक है, भारत रक्षा कानून का भारी दुरुपयोग है, और जिस उद्देश्य को ध्यान में रख कर इस आदेश को निकालने का औचित्य सिद्ध किया जाता है, उसका ही यह आदेश नष्ट कर देता है। भारत रक्षा कानून का उद्देश्य बाहरी और अन्दरी शत्रुओं से देश की रक्षा करने के उपायों में बाधा डालने वालों को दूर हटाना है। पर सिंध मन्त्रि मण्डल ने सत्यार्थ प्रकाश पर पाबन्दी लगाकर सारे हिंदू समाज और विशेषत: आर्य समाज की छाती पर पिस्तौल दाग दिया है जिसकी आवाज सारे भारत में इस आर्डर के विद्यमान रहते तक गूंजती रहेगी। सारे देश में एक ऐसे आन्दोलन को इसने जन्म दिया है जो कि समय बढ़ने के साथ बढ़ता जायगा और हिंदू और मुसलमानों के बीच ऐसी खाई खोद देगा, जिसको इस आर्डर के वापिस लेने के बाद भी पाटना सम्भव न होगा। हिदायतुल्ला-गवर्मेण्ट का यह आर्डर उन दिनों की याद दिलाता है, जब इस देश में जजिया कर लगाया जाता था और हिंदुओं को अपने धर्म-पालन और अपने

विश्वास के अनुसार आचरण करने में पग-पग पर बाधा का सामना करना पड़ता था। धार्मिक स्वतन्त्रता के युग में सत्यार्थ प्रकाश पर वार कर लीगी मन्त्र-मण्डल ने अपने दावे को झूंठा कर दिया है, कि उसके शासन में अल्प सख्यकों के अधिकार सुरक्षित रहेंगे।

'सत्यार्थ प्रकाश' ने इस देश में एक नूतन विचार क्रांति को जन्म दिया है। उसने अन्ध श्रद्धा के स्थान पर बुद्धिवाद को स्थापित किया है और तर्क को प्रतिष्ठित किया है। 'बाबा वाक्य प्रमाणम्' को न मानने की सलाह देकर स्वतन्त्र बुद्धि से सोचने और विचारने की परम्परा को चलाया है। व्यक्ति की पूजा की जगह सिद्धान्त और आदर्श की पूजा प्रचलित की है। उसने इस देश के लोगों में आत्म-विश्वास को उत्पन्न किया है, और इस सोते राष्ट्र की सुषुप्ति को दूर करके महान् भारतीय राष्ट्र के स्वप्न को मूर्त रूप में उपस्थित किया है और भारतीय सभ्यता और भारतीय सस्कृति के प्रति अभिमान और गौरव उत्पन्न किया है। यही नहीं, सत्यार्थ प्रकाश ने सर्व प्रथम विदेशी शासन के सम्मोहनास्त्र से विमुग्ध व संज्ञा शून्य राष्ट्र को स्वराज्य स्थापित करने का संकेत दिया है। इसलिये सत्यार्थप्रकाश पर किया गया वार केवल एक धर्मसंस्था के धर्म ग्रन्थ पर किया गया वार नहीं है, अपितु भारतीय स्वाधीनता की पुनीत भावना, और भारतीय सभ्यता व सस्कृति के गौरव पर किया गया प्रबल आघात है। भारतीय राष्ट्रीयता के मर्म-स्थान पर किया गया गुप्त वार है।

योगायोग समझिए या आकस्मिक घटना समझिए या पूर्व निर्धारित योजना का फल समझिए, जिस प्रान्त में सर्व प्रथम मुस्लिम शक्ति स्थापित हुई उसी प्रांत में यह वार किया गया है। आज इस देश में एक वर्ग और एक दल प्रच्छन्न और अप्रच्छन्न रूप से अरबी-फारसी सस्कृति स्थापित करने में प्रयत्नशील है। इसके मार्ग में सब से बड़ी बाधा 'सत्यार्थ प्रकाश' है अतः 'सत्यार्थ प्रकाश' पर वार करके भारतीय सभ्यता और भारतीय सस्कृति का उच्छेद करने का यत्न किया गया है। इसलिये इस प्रश्न को हमें एक वर्ग, एक सम्प्रदाय और एक जाति की समस्या न समझनी चाहिए। न यह प्रश्न केवल हिन्दुओं तक सीमित है। जो भी व्यक्ति इस देश को अपनी मातृभूमि मानता है, जो कोई व्यक्ति इस देश में उत्पन्न हुए महापुरुषों को अपने लिए वन्दनीय मानता है और यह अनुभव करता है कि उसकी नसों में वही रक्त बह रहा है, जो उनमें बह रहा था, जो कोई भी इस देश की धूलि के कण-कण को पवित्र मानता है और उसको अपने माथे पर रखने में अपना सौभाग्य समझता है, जो व्यक्ति इस देश को सभ्यता और सस्कृति से प्रेम करता है, और जो कोई व्यक्ति भारतीय राष्ट्रीयता की रक्षा और विशुद्धि के लिए इसको विदेशी प्रभाव से बचाने के वास्ते सतत सचेष्ट रहता है, वह 'सत्यार्थप्रकाश' पर किया गया वार भारतीय राष्ट्रीयता पर किया गया वार मानेगा और अनुभव करेगा कि यह वार आर्य समाज पर नहीं, हिंदू जाति पर नहीं, प्रत्युत उसके हृदय पर और भारतीय संस्कृति और भारतीय सभ्यता पर किया गया है। इस लिए हमारा कहना है कि सिंध गवर्मेण्ट ने एक भयंकर भूल की है और घातक वार करके न केवल पाकिस्तान की विचार धारा को सिद्धान्ततः मानने वालों को अपना विरोधी बना दिया है, बल्कि देश में लीग के विरुद्ध असन्तोष क्षोभ और क्रोध की एक ऐसी लहर उत्पन्न कर दी है, जो यदि अपने साथ क़ुरान और हदीस को ही

नहीं, अपितु आज 'धर्म' नाम से प्रचलित चीज को भी बहा ले गई, तो हमें कोई आश्चर्य न होगा।

सिंध गवर्मेंट का यह आर्डर विवेक और समय के विरुद्ध है। आज उसने जिस घृणा और द्वेष का बीज बोया है, वह यदि अंकुरित हुआ, पनपा और फूला-फला तो मध्ययुग का बना कोई धर्मग्रन्थ उससे न बचेगा। शांति और अमन को यदि 'सत्यार्थप्रकाश' से आज खतरा है, तो कल उसको कुरान से भी खतरा उत्पन्न हो सकता है। मुल्लाओं और पण्डितों पर यदि इसके निर्णय का भार राजनीतिज्ञों और शासन कर्त्ताओं ने छोड़ दिया कि शांति और अमन में कौन से पुस्तक बाधक हैं, तो कोई धर्म ग्रन्थ बाक़ी बचा न रहेगा। सब धर्म ग्रन्थों को जब्त करने के लिये गवर्नमेण्ट बाध्य होगी। इस अवस्था से कम्युनिस्ट प्रसन्न होंगे, नास्तिक खुश होंगे, बुद्धिवादी तुष्ट होंगे। पर आज के धर्म धुरीण और धर्माभिमानी न होंगे। अतः सिंध मन्त्रिमण्डल को पुनः अपने आदेश पर विचार करना चाहिए। घाव करना, चोट मारना, शूल घुसेड़ना सरल है, पर मलहम लगाना और घाव को भरना सरल नहीं है। आग लगाना और तमाशा देखना सरल है, पर उसको बुझाना कठिन है। अपने हाथों से लगाई गई आग भी अनेक बार नियन्त्रण से बाहर हो जाती है और आग लगाने वाले को ही भस्म कर देती है। यदि सिंध-सरकार चाहती है कि वह अवस्था उत्पन्न न हो, यदि लोग अपने धर्मग्रन्थों को जड़ता अज्ञान और धर्मान्धता की आग में स्वाहा होते हुए नहीं देखना चाहती है तो हम उससे कहना चाहते हैं कि दूरन्देशी, बुद्धिमत्ता और समय का तकाज़ा है कि वह अपने इस अविचारपूर्ण आर्डर को वापिस ले ले। क्या सिंध सरकार बुद्धिमानी का परिचय देगी?

[देहली के 'हिन्दुस्तान' नामक सुप्रसिद्ध दैनिक पत्र का ५-११-५४ का सम्पादकीय लेख]

निंदनीय खेदजनक

सिंध सरकार ने सत्यार्थप्रकाश के १४ वें समुल्लास के पुनर्मुद्रण पर प्रतिबंध लगा दिया है—यह अन्याय है, इस प्रतिबन्ध के लिये भारत रक्षा व्यवस्था की धारा ४१ का उपयोग किया गया—यह इस धारा के दुरुपयोग का निकृष्टतम उदाहरण है और केंद्रीय असेम्बली में इस सम्बन्ध में नियमित कार्यवाही स्थगित रखकर विचार करने के लिये भाई परमानन्द ने जो प्रस्ताव रखा था, उसके प्रति जिस नीति का परिचय दिया गया वह बहुत ही शोचनीय है। इस प्रतिबंध के अन्याय, धारा के दुरुपयोग और नीति की शोचनीयता का जितना भी विरोध किया जाये, काफी नहीं हो सकता।

सत्यार्थप्रकाश का आदर सभी हिन्दू करते हैं और आर्यसमाज में तो उसका स्थान किसी भी धर्म के अनुयायियों की धर्म पुस्तक से कम नहीं है। मुसलमानों की दृष्टि मे जो स्थान कुरान का और ईसाइयों की दृष्टि मे जो स्थान बाइबिल का है वही स्थान प्रत्येक आर्यसमाजी की दृष्टि में सत्यार्थप्रकाश का है। आर्यसमाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द ने इस ग्रंथ की स्वयं रचना की थी। अपने इस ग्रंथ द्वारा उन्होंने जहां समस्त हिन्दू समाज को प्रकाश दिखलाने का प्रयत्न किया है वहां आर्यसमाज के लिये तो आधार भूत मूल सिद्धान्तों को उसमें ग्रंथित कर दिया है और इस कारण यह ग्रंथ रत्न आज ७० से अधिक वर्षों से करोड़ों आर्य जनों में धर्म ग्रंथ बना हुआ है। किसी सरकार के लिये इस से अधिक अन्याय क्या हो सकता है कि यह करोड़ों आर्य नर-नारियों के धर्म ग्रन्थ को उसके पास उस रूप में पहुँचाने में बाधक बने, उसके उस रूप पर प्रतिबंध लगाये जिसमें महर्षि दयानन्द ने उसकी रचना की थी। यह सही है कि सिंध में केवल १४ वें समुल्लास के पुनर्मुद्रण पर ही प्रतिबंध लगाया गया और अन्य प्रान्तों में उस पर किसी तरह का प्रतिबंध नहीं है परन्तु सिंध सरकार का यह कार्य अत्यन्त निन्दनीय है और जिस पाकिस्तानी मनोवृत्ति के साथ यह किया गया है, उससे अधिक चिन्ता और दुःख की बात क्या हो सकती है? शासन में यह साम्प्रदायिक संकीर्णता अनौचित्य की पराकाष्ठा है और उस शासन नीति का नमूना है जिससे किसी प्रान्त की कोई लीगी सरकार काम ले सकती है। सिंध में पिछले कुछ दिनों से सत्यार्थप्रकाश के सम्बन्ध में जो हवा चल रही थी, उससे भय होरहा था परन्तु यह ख्याल किसी को नहीं था कि सिंध सरकार यह अदूरदर्शितापूर्ण और साथ ही मूर्खतापूर्ण भी, दुःसाहस दिखला सकेगी और केवल आर्यसमाजियों को ही नहीं, समस्त हिन्दुओं को चुनौती देगी कि वे इसका प्रतिकार करने के लिये क्या करने जा रही हैं। सिंध सरकार की इस आज्ञा से आर्य जगत् को भारी क्षोभ हुआ है। किसी प्रान्तीय सरकार की संकीर्ण साम्प्रदायिक नीति की यह बुरी से बुरी प्रतिक्रिया हो सकती है कि वह ऐसे ग्रंथ की ओर अंगुली उठाये जिसे करोड़ों व्यक्ति अपना धर्म ग्रंथ मानते हैं। यदि ७० वर्ष से प्रचलित किसी धर्म ग्रन्थ को इस तरह की काट छांट के योग्य समझा जाता है तो फिर केवल सत्यार्थप्रकाश को ही क्यों समझा जाना चाहिये। दलील के लिये सर विट्ठल-चन्दावरकर का यह कथन सही हो सकता है कि "यदि ग्रन्थ में कोई वैसी बात होती तो भारत सरकार को उस पर प्रतिबन्ध लगाना था, एक कमेटी सभी पुराने ग्रन्थों की जांच के लिये बैठाना और यह देखना था कि उनमें आज कल

की दृष्टि से कोई आपत्तिजनक बात है या नहीं," परन्तु व्यावहारिक दृष्टि से हम इस दलील को कोई दलील नहीं मानते। हमारी दृष्टि में किसी सम्प्रदाय या वर्ग विशेष के पवित्र साहित्य की ओर किसी को अँगुली उठाने का दुःसाहस नहीं करना चाहिये और इस दृष्टि से सत्यार्थप्रकाश के १४ वें समुल्लास के पुनर्मुद्रण को वर्जित ठहराकर सिन्ध सरकार ने घोर अन्याय किया है।

शान्ति और व्यवस्था की दलील बेमानी है। सच यह है कि इस तरह की दलीलों से शान्ति भंग करने वाले परमाणुओं को अनुचित प्रोत्साहन मिलता है। उन्हें जब यह पता चलता है कि सरकार उनकी अनुचित मनोवृत्तियों को नहीं अपरपक्ष की उचित स्थिति को ही दबाने के लिये तैयार है तब वे और भी अधिक उच्छृङ्खल हो उठते हैं। शान्ति और व्यवस्था की रक्षा करने का तरीका शान्ति प्रिय पक्ष को दबाना नहीं, उन व्यक्तियों के होश की दवा करने का है जो सचमुच शान्ति भग को प्रोत्साहन देते हैं। सत्यार्थप्रकाश तो आज ७० वर्ष से प्रकाशित हो रहा है। उसके कारण इतने लम्बे अर्से में कितनी बार शान्ति भग हुई, यह सरकार ने नहीं बताया, परन्तु यह तो साफ हो है कि वही सत्यार्थप्रकाश ७० वर्ष बाद यदि आज शान्ति भग होने की आशका का कारण बन रहा है तो वास्तव में उसका कारण सत्यार्थप्रकाश में नहीं, उस शासन नीति में है जो मुस्लिम प्रान्तों में खास तौर से बदली हुई देखने में आ रही है। सिन्ध सरकार का यदि इस प्रश्न पर कोई अपना मत न हो तो भी उसने १४ वें समुल्लास पर प्रतिबन्ध लगाकर शान्ति और व्यवस्था की दृष्टि से ही क्यों न सही, बड़ी दुर्बलता का परिचय दिया है और भारत रक्षा विधान का तो बहुत ही बुरा दुरुपयोग हुआ है। हमारे लिये यह समझना कठिन है कि सत्यार्थप्रकाश के १४ वें समुल्लास से क्या तो युद्ध प्रयास में बाधा पड़ रही थी और क्या सैनिकों की भर्ती में ? उसके कारण लड़ाई का कर्ज मिलने में बाधा पड़ रही थी या भारत की सीमाओं को या भारत की आन्तरिक शासन सत्ता को कोई खतरा हो रहा था, यह मानने के लिये हम तैयार नहीं हैं। इस अवस्था में यह भारत रक्षा विधान का दुरुपयोग नहीं है तो क्या है ? यदि इस सम्बन्ध में भारत रक्षा विधान का वह अभिप्राय सही माना जाय जो होम मेम्बर ने केन्द्रीय असेम्बली में बताया है तो भी इस व्यवस्था का प्रयोग शान्ति भंग करने वालों पर किया जाना चाहिये था। परन्तु यह नहीं हुआ और उल्टा उसका प्रयोग शान्त आर्य जनता के अधिकार पर चोट करने और मानसिक भावनाओं को ठेस पहुँचाने के लिये लिया गया है। सबसे अधिक खेद का विषय यह है कि भारत सरकार ने भी सिंध सरकार को आर्य जनता की भावनाओं को ठेस पहुँचाने से नहीं रोका और केन्द्रीय असेम्बली में भाई परमानन्द के प्रस्ताव का विरोध भी किया। भाई परमानन्द का प्रस्ताव ४५ के विरुद्ध १५ वोट आने से रद्द हो गया। भारत सरकार जिस नीति से हमेशा काम लेती रही है, वही इसमें भी हो सकती है और हमें उसपर क्षोभ कितना ही हो, हम जानते हैं कि इस तरह की घटनायें देशवासियों के सामने वर्तमान परिस्थिति में आती ही रहेंगी।

असेम्बली की कांग्रेस पार्टी ने इस प्रश्न पर जिस नीति से काम लिया है, वह कम खेदजनक नहीं है। इसमें सन्देह है कि कांग्रेस पार्टी के सारे ही मेम्बर यदि भाई परमानन्द जी के प्रस्ताव के पक्ष में वोट देते तो भी वह पास होता या नहीं परन्तु कांग्रेस पार्टी के तटस्थ रहने के इस

निश्चय पर सचमुच देशवासियों को आश्चर्य हुए बिना नहीं रहेगा। देशवासी यह जानते हैं कि कांग्रेस एक समय खिलाफत के प्रश्न को ले चुकी है। फिर कांग्रेसकी आत्मा तो सत्य है। और भले ही यह शासन नीति को विफल करने के लिये किया गया हो हमें यह अच्छा नहीं लगा कि कांग्रेस पार्टी सत्यपर नीति का शासन स्थापित करे। हिन्दू मुसलिम एकता की दृष्टि से सरकारी चाल विफल करने का महत्व हम जानते हैं परन्तु कांग्रेस पार्टी यदि प्रस्ताव के पक्ष में वोट देने का निर्णय करती तो निश्चय ही वह लोकमत ही प्रकट करती और उससे हिन्दू मुस्लिम एकता को ज्यादा क्षति पहुँचने की सम्भावना नहीं थी जितना सिन्ध सरकार की उस निन्दनीय आज्ञा और भारत सरकार के इस अनुचित पक्ष समर्थन से हो सकती है।

आर्य जगत को क्या करना चाहिये, यह प्रश्न है। कार्य की गम्भीरताकी दृष्टि से यह प्रश्न साधारण नहीं है। हमारा मत है कि सिंध प्रांतीय हिन्दू मन्त्रियों को तुरन्त पद त्यागकर देना चाहिये। इसमें सोचने विचारने की कोई बात नहीं है। जो शासननीति सिंध की आर्य जनता के भावों की इतनी भी परवाह नहीं करना चाहती, उसके साथ सम्पर्क कैसा? सिन्ध सरकार के इस अन्याय का प्रतिवाद करने का पहिला और सब से अच्छा उपाय यही है। आगे क्या करना चाहिये, इस सम्बन्ध में 'सार्वदेशिक' आर्य प्रतिनिधि सभा को इस अवसर पर आर्य जगत् का नेतृत्व करने के लिये तैयार होना चाहिये।

[देहली के 'विश्वमित्र' नामक सुप्रसिद्ध दैनिक पत्र का ९-११-४४ का सम्पादकीय लेख]

'सत्यार्थप्रकाश' पर विवाद

इस मंगलवार को केन्द्रिक लेजिस्लेटिव असेम्बली में भाई परमानन्द जी के स्थगित-प्रस्ताव पर जो विवाद हुआ उसे बोलचाल की भाषा में 'सत्यार्थप्रकाश' पर विवाद का नाम दिया गया है—(हमने भी अपने शीर्षक में बोलचाल की भाषा का ही प्रयोग किया है—परन्तु वस्तुतः वह विवाद 'सत्यार्थप्रकाश' पर विवाद न होकर 'भारत-रक्षा-कानून के उपयोग या दुरुपयोग पर विवाद था। असेम्बली के अधिकतर गैर सरकारी सदस्यों को भी इस विषय में भ्रम रहा और इसी कारण उनमें से अनेकों ने तट-स्थ-वृत्ति धारण कर ली।

असेम्बली के प्रेसीडेण्ट ने भी यह बात कुछ स्पष्ट की कि यह विवाद केवल भारत-रक्षा-कानून का सिंध सरकार द्वारा दुरुपयोग किये जाने पर है, 'सत्यार्थप्रकाश' के चौदहवें समुल्लास के औचित्या-नौचित्य पर अथवा मुस्लिमलीगियों की उसे जब्त करने की मांग जायज या नाजायज होने पर नहीं। उनके इस स्पष्टीकरण से पूर्व नवाब सिद्दीकअली और खानबहादुर फजलहक पिराचाने जो भाषण दिये उनमें ये दोनों ही अनेक अप्रासंगिक बातें कह गये जिनमें 'सत्यार्थ-प्रकाश' की निन्दा और पाकिस्तान समर्थन सरीखी वस्तुयें भी थीं। इनकी ओर या तो प्रेजी-डेंट का ध्यान गया नहीं और या न जाने किस चाल से उन्हों ने इन सज्जनों को उस समय टोकने की आवश्यकता नहीं समझी। इनके भाषणों के पश्चात् ही उन्होंने यह स्पष्ट किया कि विवाद का विषय क्या है। यों तो प्रस्तावक भाई परमानन्दजी ने भी अपना प्रस्ताव पेश करते हुए ही यह स्पष्ट कर दिया था कि उनका प्रस्ताव केवल भारत-रक्षा-कानून का सिन्ध सरकार द्वारा दुरुपयोग किये जाने से सम्बद्ध है और क्योंकि भारत सरकार ने उस दुरुपयोग को रोका नहीं अतः वह सरकार की निन्दा करना चाहते हैं। परन्तु यदि कोई व्यक्ति यह कहे कि उसे विवाद का विषय स्पष्ट नहीं हुआ था तो उसे प्रेजीडेन्ट के स्पष्टी करण के पश्चात् वैसा कहने का अवसर नहीं रहना चाहिये।

विवाद के परिणाम से यह स्पष्ट है कि असेम्बली के अधिकतर निर्वाचित सदस्य इसमें तटस्थ अथवा उदासीन रहे थे। हमें इन तटस्थ सदस्यों से उनकी उदासीनता पर कुछ भी नहीं कहना है, जो जनता के अधिकारों का रक्षक होने का दावा नहीं करते, परन्तु जो सदस्य—विशेषतः कांग्रेस पार्टी के—बार-बार मौका-बे मौका उक्त दावा करने से नहीं चूका करते उनकी इस विषय में उदासीनता को हम न केवल घोर निन्दनीय मानते हैं, अपितु उन्हें अपने सार्वजनिक कर्तव्य की उपेक्षा का भी अपराधी समझते हैं। श्री एन० एम० जोशी और सर विट्ठल चन्दावरकर सरीखे बहुधा सरकार के साथ 'वोट' देने वाले सदस्यों तक ने तो इस अवसर पर कर्तव्य-बुद्धि से प्रेरित होकर आचरण किया और कांग्रेस-पार्टी के अधिकतर सदस्यों ने इस समय तटस्थ रहने में ही अपने कर्तव्य की समाप्ति समझली। उनके आचरण से कोई भी यही समझेगा कि उनकी सम्मति में 'सत्याथप्रकाश' के चौदहवें समुल्लास का स्वतन्त्र प्रचार रोक कर सिन्ध-सरकार ने भारत-रक्षा कानून का दुरुपयोग नहीं किया और यदि लाखों व्यक्तियों की धार्मिक स्वतन्त्रता अपहरण करने के लिए इस कानून का उपयोग दुरुपयोग नहीं है, तब तो इस तर्क के अनुसार, सहस्रों कांग्रेस-जनों की वैयक्तिक स्वतन्त्रता का अपहरण करने में भी

इस कानून का प्रयोग अनुचित नहीं रहेगा और कांग्रेस-जनों की दृष्टि में कानून के सदुपयोग अथवा दुरुपयोग का प्रश्न उठता ही केवल तब है जब उसका प्रयोग कांग्रेस या मुसलमानों के विरुद्ध किया गया हो ? हम देख रहे हैं कि कांग्रेस अपने प्रतिनिधियों के इस प्रकार के अदूरदर्शिता-पूर्ण आचरणों के कारण मुसलमानों में तो लोकप्रिय हो नहीं रही और क्रमशः हिंदुओं की सहानुभूति खोती चली जा रही है।

सरकार की तरफ़ से इस विषय पर होम मेम्बर सर फ्रॅन्सिस मुडी ने जो कुछ कहा उससे जान पड़ता है कि उनको पूरी वस्तु-स्थिति का ज्ञान तक नहीं था, तो भी उन्होंने सिन्ध-सरकार की कार्रवाई का समर्थन करना ही उचित समझा। यदि उन्हें भारत-सरकार की निन्दा से बचाने की ही चिन्ता थी तो वह इस विषय में जांच के पश्चात् यथोचित कार्रवाइयां करने का आश्वासन देकर भाई जी से प्रस्ताव वापस लेने का अनुरोध कर सकते थे। परन्तु उन्होंने यह कुछ नहीं किया। सम्भवतः कांग्रेस-पार्टी को तटस्थ होता देखकर उन्हें न्याय और औचित्य की अपेक्षा मुस्लिम लीगियों को प्रसन्न करने की चिन्ता अधिक हो गयी थी, सरकार की जीत का निश्चय तो उन्हें हो ही चुका था। सरकार और कांग्रेस पार्टी के इस रुख के पश्चात् अब यह लगभग निश्चित-सा हो गया है कि मुस्लिम-लीग के आक्रमण से 'सत्यार्थप्रकाश' की रक्षा उसके भक्तों के अपने प्रयत्न से हो सकेगी। अन्य किसी की सहायता की उन्हें अपेक्षा नहीं रखनी चाहिये।

[देहली के 'वीर अर्जुन' नामक सुप्रसिद्ध दैनिक पत्र का १०–११–४४ का संपादकीय लेख]

इस प्रकार की सम्पादकीय टिप्पणियां सिंध सरकार की सत्यार्थप्रकाश विषयक अनुचित आज्ञा के विरोध में 'आर्य' 'आर्यमित्र' 'आर्य-मार्तण्ड' 'आर्य प्रकाश' 'मिलाप' 'आर्यभानु' आदि सब आर्य पत्रों के अतिरिक्त 'जागृति' (कलकत्ता) विश्व बन्धु (सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा से सम्बन्धित लाहौर के दैनिक पत्र) लोकमान्य (देहली और कलकत्ता) आदि हिन्दी पत्रों तथा वीर भारत, प्रताप, प्रकाश, मिलाप, तेज आदि उर्दू पत्रों में प्रकाशित हुई हैं जिन्हें स्थानाभाव के कारण यहां देना सम्भव नहीं।

सत्यार्थप्रकाश के प्रतिबन्ध पर कुछ सुप्रसिद्ध महानुभावों के वक्तव्य

महात्मा गान्धी जी की सम्मतिः—

पूना आर्य समाज के मन्त्री महोदय ने एक पत्र लिखकर महात्मा गान्धी जी की सम्मति सिन्ध सरकार की सत्यार्थ प्रकाश के १४ वें समुल्लास पर लगाये प्रतिबन्ध के विषय में जाननी चाही थी। उसका उत्तर देते हुए म० गांधी जी के मन्त्री श्री प्यारे लाल जी ने २३ नवम्बर को लिखाः—

"सत्यार्थप्रकाश के सम्बन्ध में सिन्ध सरकार ने जो कार्यवाही की है उसे गान्धी जी निश्चय से ठीक नहीं समझते। उन्होंने इस सम्बन्ध में श्री घनश्याम सिंह गुप्त से जो उनसे अभी हाल में मिले थे विस्तृत बातचीत की है।

वीर सावरकर जी—अध्यक्ष अखिल भारतीय हिन्दू महासभाः –

१ नवम्बर को श्री सावरकर जी ने वाइसराय को तार भेज कर लिखा कि सिन्ध सरकार द्वारा 'सत्यार्थ प्रकाश' पर लगाये गये प्रतिबन्ध के फल स्वरूप साम्प्रदायिक कटुता निरन्तर बनी रहने

की आशङ्का रहेगी अतः केन्द्रीय सरकार को यह पाबन्दी तत्काल रद्द कर देनी चाहिये। सिन्ध के गवर्नर को तार भेज कर उन्होंने अल्प संख्यकों के हितों की रक्षार्थ तुरन्त हस्तक्षेप के लिये लिखा। २८ नवम्बर को वायसराय से भेंट में भी सावरकरजी ने इसी बात पर जोर दिया।

डा० श्यामाप्रसाद जी मुकर्जीः—

पंजाब प्रान्तीय हिन्दू सम्मेलन (लुधियाना) के प्रधान के रूप में भाषण देते हुए डा० श्यामाप्रसाद मुकर्जी ने १२ नवम्बर को यह घोषणा की कि 'सिन्ध सरकार' ने सत्यार्थ प्रकाश के १४ वें समुल्लास पर प्रतिबन्ध लगाकर एक खतरनाक क़दम उठाया है और एक शरारत भरी परम्परा क़ायम की है। यह कार्रवाही अत्यन्त आश्चर्यजनक है और इसको सहन नहीं किया जा सकता। आपने पूछा कि यदि किसी हिन्दू मन्त्रि-मण्डल द्वारा कुरान के कुछ अध्याय जब्त कर लिये जाएँ तो मुसलमान कैसा अनुभव करेंगे?

(अर्जुन १५-११-४४)

माननीय श्री पुरुषोत्तमदास टण्डनः—

इलाहाबाद १३ नवम्बर

युक्त प्रान्तीय असेम्बली के स्पीकर माननीय पुरुषोत्तमदास जी टण्डन ने सत्यार्थ प्रकाश के १४ वें समुल्लास पर लगाई गई पाबन्दी को सिन्ध सरकार की भूल बताते हुए कहा कि इस कार्य के लिये भारत रक्षा क़ानून का प्रयोग अनैतिक है। आपने कहा कि अब तक प्रान्तीय सरकारों की यह परम्परागत नीति रही है कि वे धर्म-ग्रन्थों को हाथ नहीं लगाएँगी पर सिन्ध सरकार ने बहुत बुरा उदाहरण पेश किया है। सिन्ध सरकार के इस रवैये की बड़ी द्वेष पूर्ण प्रतिक्रिया अन्य प्रान्तों में हो सकती है जिसका परिणाम यह हो सकता है कि अन्य धर्मों की पुस्तकों पर भी पाबन्दी या जब्ती का खतरा पैदा हो जाए। मुझे विश्वास है कि भारत सरकार पारस्परिक कलह पैदा करने वाले इस प्रान्तीय धार्मिक कलह को प्रश्रय न देगी।

(अर्जुन १५-११-४४)

महामना प० मदनमोहन जी मालवीय का का वक्तव्यः—

सत्यार्थप्रकाश पर प्रतिबन्ध निन्दनीय है

बनारस २८ नवम्बर।

महामना प० मदनमोहन जी मालवीय ने सत्यार्थ प्रकाश पर सिन्ध सरकार द्वारा लगाये गये प्रतिबन्ध से क्षुब्ध होकर निम्न वक्तव्य दिया है—

अर्थात् सत्यार्थ प्रकाश पर प्रतिबन्ध लगा कर सिंध सरकार ने एक बड़ी भारी भूल की है। सत्यार्थ प्रकाश आर्यों का धर्मग्रन्थ है और अधिकाधिक हिन्दुओं द्वारा बड़ी श्रद्धा की दृष्टि से देखा जाता है। सिन्ध सरकार को शीघ्रातिशीघ्र प्रतिबन्ध वापिस ले लेना चाहिये।

('अर्जुन' ३०-११-४४)

सर ज्वालाप्रसाद श्रीवास्तव—

वायसराय की कार्यकारिणी के सदस्य श्री ज्वालाप्रसाद जी श्री वास्तव ने ९ नवम्बर को लाहौर से प्रस्थान करते समय एक पत्र प्रतिनिधि से भेंट में कहा कि "मैं व्यक्तिगत रूप से

सत्यार्थ प्रकाश के विरुद्ध सिन्ध सरकार द्वारा उठाये गये कदम को सर्वथा अनुचित समझता हूँ।"

डा० सैफुद्दीन किचलू—

अमृतसर २७ नवम्बर।

पंजाब के सुप्रसिद्ध कांग्रेसीनेता डा० सैफुद्दीन किचलू ने सत्यार्थ प्रकाश के १४ वें समुल्लास पर सिन्ध सरकार द्वारा लगाये गये प्रतिबन्ध को एक पाप बतलाया। आपने कहा कि आर्य समाजियों के धर्म ग्रन्थ पर किया गया यह प्रहार स्पष्टतः धार्मिक स्वतन्त्रता में हस्तक्षेप है।

(अर्जुन २९-११-४४)

पादरी शाहखां (हैदराबाद):—

२० नवम्बर को हैदराबाद (दक्षिण) की एक विराट् सभा में जो आर्य प्रतिनिधि सभा निजाम राज्य के प्रधान श्री पं० विनायक राव जी विद्यालङ्कार की अध्यक्षता में हुई। भाषण करते हुए ईसाई धर्म-प्रचारक पादरी कुदरत शाहखाँ ने (जो जन्म से मुसलमान थे) कहा कि सत्यार्थ प्रकाश और उसके लेखक ऋषि दयानन्द ने देश की महान् सेवा की है। इस तरह किसी दूसरे की धर्म-पुस्तक पर प्रतिबन्ध लगाना कमीनापन है। ईसाई धर्म में भी इसी प्रकार के (खण्डनात्मक) ग्रन्थ लिखे गये हैं।

(हिन्दुस्तान २५-११-४४)

सिन्ध सरकार के मन्त्री रा. सा. गोकुलदासजी

करांची २९ नवम्बर।

सिंध सरकार के सार्वजनिक कार्य विभाग के मन्त्री राय साहब गोकुलदास जी ने आर्य समाजियों की सभा के समक्ष भाषण देते हुए कहा.—मैंने धारा सभा के बाहर तथा उसके भीतर मन्त्रियों की संयुक्त जिम्मेदारी का पहले ही पर्दा फ़ाश किया है और सत्यार्थ प्रकाश पर प्रतिबन्ध लगाने के बाद तो उसका पर्दा और भी फ़ाश हो जाता है।

आपने कहा कि सिंध सरकार ने इसे अखिल भारतीय प्रश्न समझा था और इस बारे में भारत सरकार का ध्यान आकर्षित किया था। समझ में नहीं आता कि भूतपूर्व गृह मन्त्री (मि० गजदर) ने इस प्रश्न को फिर क्यों उखेड़ा और सत्यार्थ प्रकाश के १४ वें समुल्लास पर प्रतिबन्ध लगाया। एक मन्त्री की हैसियत से मैं सारे प्रान्त की सेवा करना अपना कर्तव्य समझता हूं न कि जाति विशेष का।

इस हुक्म से यह साबित होता है कि सिन्ध की राजनीति में साम्प्रदायिकता का बोलबाला है।

श्री गोकुलदास ने यह आश्वासन दिया कि प्रतिबन्ध को उठवाने के लिये वे वैधानिक कार्यवाही में पूर्ण सहयोग देंगे।

(हिन्दुस्तान (देहली) ३०-११-४४)

Rishi Dayananda The Arya Samaj and Satyarth Prakash

By —Shri Swami Shddhananda Bharatv Shri Aravindashroma Pondicherry

Continued from last issue

Thus thundered forth the indomitable Swamiji, thunders of orthodox opposition, keen-edged persecutions and venomous treachery tried to batter his citadel of Truth. He torpedoed all these strongholds of ignorance and kept his standard flying against storms, In 1869 he braved a battalion of irritated Brahmins at Benares, at one time a live-cobra was thrown upon him, at another time he was poisoned by traitors, His indomitable energy was a proof against a thousand more mischiefs In 1872, he visited Calcutta, met Ramakrishna there and came in contact with the Brahmo-samajist, Keshab Chandra, but at last he was compelled to stand upon his own legs

In 1875, he founded the Arya Samaj at Bombay, to propagate his Vedic Idealism The Samaj took a firm root in Lahore where it had two doughty disciples in Munshi Ram (Shraddhananda) and Lala Lajpat Rai In Rajputana, Gujerat, United Provinces and Oudh the Samaj had branches Dayananda wrote many books to popularise the Vedic Truths and Sanskrit Culture One book shall remain for ever as the popular guide of humanity. Sathyaratha Prakash (LIGHT OF TRUTH) is the magnum opus of Swamiji It is aptly recognised as the encyclopaedia of spiritual existence It boldly exposes false superstitions and humbugs and hypocricies that gain currency in the name of religious customs The Unique One, Vedic Spirit, Brahmacharya culture, equality of men, the Ideal family life, the duties of man from birth to death, the duties of women, virgin marriage, widow marriage, Political Economy, Kingship, Crimes and punishments, Royal Councils, Warfare, One-nation spirit, removal of untouchability, true renunciation, the present condition of Hinduism' Islam, Christianity, Buddhism, Jainism and other religions and creeds Bold criticisms of their spurious outgrowths, the virility of the all containing and perfect Vedas, the essence of the Vedic religion, all these and many more are contained in the Satyartha Prakash. To study it is an education

IX HE LIVES

Swamiji had a wide sphere of activity and had many highsoaring plans to Aryanise India again He saw native Princes, some supported his cause He would have created a new India recast in the Vedic mould. But alas, the concubine of a Raja poisoned his food and

brought his tragic end. With Aum in his lips, Dayananda shed the mortal coil at Ajmer on the Deepavali Day (30-10-1883) but his spirit breathes in our hearts to day. He lives in us.

X THE FATEER OF MODERN INDIA

He has left indelible mark in the sphere of the regenerating India. Take any movement in vogue, social, political, lingual, economic or industrial etc. you are sure to meet there our beloved Swamiji. He was the forerunner of our national movement. It was he who first gave us the word Swarajya and drew a scheme of action. It was he, who years before Mahatmaji, removed untouchability. It was he who advocated remarriage of widows and condemned child marriage.

It was he who made Hindi the Lingua Franca and wrote his scripture of Truth in it. About 40 lakhs of Aryasamajists follow him now. His samaj scattered throughout India, had brought light and strength and unity to the nation. It purifies and takes into its fold all willing souls. But for the Arya Samaj we might have lost our strength a good deal. If the Vedic light still burns bright piercing yet the dark corners of our country, the credit is due to Swamiji. If men and women hold their heads high to day and share equally in the national service, the credit is due to Swamiji.

Therefore we call him THE FATHER OF MODERN INDIA

Hail Dayananda! OM OM OM

बलिदान-वेला

[लेखक—डा० सूर्यदेव शर्मा साहित्यालङ्कार एम ए एल. टी डी लिट्, अजमेर]

आगई बलिदान वेला ॥ टेक ॥

बज रही रण दुन्दुभी है, सज रहा सग्राम-मेला ॥ १ ॥
क्या कहा ? यह रण निमन्त्रण, सिन्ध की सरकार का है ?
या नमूना लीग पाकिस्तान के दरबार का है ?
मुस्लिमों के राज के या एक अत्याचार का है ?
या खिलाफ़त की मदद का प्रेम प्रत्युपकार का है ?
कौन किसका यह झमेला ? आ गई बलिदान वेला ॥ २ ॥
सत्य पर परदा गिराना, कोई इनसे सीख लेवे ।
चाँद से सूरज दबाना, कोई इनसे सीख लेवे ।
फूँक से पर्वत उड़ाना, कोई इनसे सीख लेवे ।
फूँस में पावक छिपाना, कोई इनसे सीख लेवे ।
ताव में है यह तबेला । आगई बलिदान वेला ॥ ३ ॥
वह हमारे पूज्य गुरु की, पुण्यपावन है धरोहर ।
"सत्य अर्थ प्रकाश" है, ससार हित सुखकर मनोहर ।
ज्ञान की गगा बहे जहँ, प्रेम का उमड़े पयोधर ।
सत्य के खिलते सरोरुह, दिव्य सुन्दर वह सरोवर ।
तर्क का तरकस न वेला । आगई बलिदान वेला ॥ ४ ॥
कौन है ससार में जो ज़ब्त उसका कर सकेगा ?
कौन है जो "सूर्य" को आकाश में से हर सकेगा ?
कौन है जो सिन्धु को निज बाहुओं से तर सकेगा ?
कौन है जो वायु-मडल को घडे मे भर सकेगा ?
आग से है कौन खेला ? आ गई बलिदान वेला ॥ ५ ॥
धर्म रक्षा के लिये चैलेंज हम स्वीकार करते ।
प्राण तन धन, जन सभी का त्याग अगीकार करते ।
पूर्व देखा है जगत ने आय क्या बलिदान करते ।
सर्वदा हम हृढ़ रहे हैं मृत्यु का आह्वान करते ।
कौन दुःख हमने न झेला ? आगई बलिदान वेला ॥ ६ ॥
प्राणियों की मुक्ति का "सत्यार्थ" साधन हो चुका है ।
असत् मतवादी जनों के ढोंग ढोंग डुबो चुका है ॥
हिन्दुओं में सगठन कर, द्वेष आलस खो चुका है ।
देश में राष्ट्रीयता के बीज भी वह बो चुका है ॥
जाति में जीवन उँडेला । आ गई बलिदान वेला ॥ ७ ॥
आर्य वीरों का विभूषण तो सतत सग्राम ही है ।
अनय अत्याचार से लड़ना हमारा काम ही है ॥
हमको कभी "सत्यार्थ" बिन जग में नहीं आराम ही है ।
धम पर बलिदान होने में अमर निज नाम ही है ॥
वीर डट जाता अकेला । आ गई बलिदान वेला ॥ ८ ॥ "सूर्य"

THE SATYARTHA PRAKASH

The ban on the 14th chapter of the 'Satyartha-Prakash' recently imposed by the Sind Government, brings in an intolerance which is unknown to our heritage aad traditions. The 'Satyartha-Prakash' was written and published by Swami Dayanand Saraswati, the founder of the Arya Samaj. The main portion of the book is devoted to explanation of true Vedic religion and the duties that involve on Aryas who follow that religion Swami Dayanand has followed the line af ancient Acharyas, in propagating his point of view. The founders of every school of thought in Hindu philosophy, as a rule, devote a part ef their writing to the refutation of differing views and schools of thought 'मंडन' i.e, enunciating and explaining one s own view and 'खंडन' i e, the refutation of tho opposite or differing views, are two essential parts of the religious and philosophical literature of Hindusthan

In keeping with this tradition of ancient religious writers, Maharshi Dayanand Saraswati devoted the last few chapters of his magnum opus to the criticism of other points of view, including the Islamic view.

In these later chapters he has criticised not only the Muslim and the Christain points of view, but even the Brahmo and the Theosophist points of view. He has also criticised and refuted Hindu orthodoxy which often placed the Pauranic tradition above the Vedas. He has attacked later Hindu literature which according to his opinion deviated from the Vedic basis. Maharshi Dayanand in his lifetime had to fight several argumentative duels with Shastris and Pandits who stood for orthodox interpretations of Vedic religion. He invoked much opposition. But none of the schools of thought which Dayanand has criticised, even bitterly, ever raised the cry of banning his 'Satyartha-Prakash' That was because all of them followed the Indian tradition and heritage of tolerance and freedom of criticism Maharshi Dayananda s book is written with seriousness and from a high intellectual level It has never transgressed the limits of decency and propriety No wonder that Dayanand has been now ranked amongst the great Acharyas who came forward to explain and interpret the Vedic lore

The cry against 'Satyartha-Prakash' is a part of the comprehensive plan of disruption of the essential basis of nationality, Those Congressmen who remained 'neutral' on the adjournment motion in the Central Assembly on the subject may in their blissful ignorance be

regarding the matter as a petty religious quarrel. They are living in a fools' paradise They are blinded by prejudice, to the real basis of nationalism in Hindustan Call it Hindu or Indian, there is no difference in ultimate analysis except the name.

The Arya Samaj is rightly leading a country-wide protest against this attack of the Sind Government on 'Satyartha Prakash.' It is not a matter confined to Sind or a matter which concerns the Arya-Samajists only It is a menace to our nationhood. Veer Savarkar has appealed to the Viceroy and the Governor of Sind most urgently to stop the mischief which the Sind Government has started in its communal madness, The Sind Hindu Sabha and Hindu Sabhas all over Hindustan have backed up the Arya-Samajist protest against Sind Government's gross indiscretion.

(Editorial in the Mahratta 17-11 44)

RESCIND THE ORDER

The order of the Muslim League Goverment of Sind, imposing a ban on 14th Chapter of the "Satyarth Prakash" has caused deep consternation among the Hindus, particularly the Arya Samajists to whom the book is most sacred, having been written by the founder of the Samaj himself. The order has professedly been passed in the interests of public peace and tranquillity. But have the interests of public peace and tranquillity ever been jeopardised since 1882 when the book made its first appearance? The "Satyarth Prakash" has been in existence for about 60 years, it has been translated into English as well as into all the important Indian languages and sold in millions of copies, without at all disturbing the public peace Sometime ago no doubt some Muslim fanatics took it into their heads to ask for the proscription of the book and their cry which was on the face of it untenable, was later taken up by the Muslim League which has been saying all the time that the minorities will enjoy religious and cultural freedom in Pakistan. The endorsement of the cry by that organisation was, to say the least, unfortunate The Sind Ministry, it is evident, has now simply carried out the behests of the League, though it has tried to camouflage its real intention by saying that it has taken the action in the interests of public peace and order. To all dispassionate persons it is clear that the Sind Government has, by passing the order, sown the seeds of civil strife. For, nobody can for a moment believe that, in the face of that order, which is regarded by the Arya Samajists as a challenge to their self-respect and honour, the Aryas will sit quietly. Signs of uneasiness are already visible among them, though their

leaders have rightly asked them to exercise self-restraint. Not only that. The League Government of Sind has set a very dangerors precedent There are many religious books, not excluding those of Mussalmans, which contain passages to which the followers of other religions take strong exception. What will be the result, if there is a systematic agitation for the deletion of those passages? Will not such an agitation exacerbate communal feelings and disturb public peace and order? Sir Ghulam Hussain Hidayat Ullah and his Government are playing with fire They will be responsible for the consequences that will follow their action Let them retrace the wrong step they have taken and rescind the order That is the only way to soothe the ruffled feelings of the Arya Samajists

Editorial in the Tribune Lahore dated 8-11 44

CURRENT COMMENT

The central Assembly debated on Tuesday Bhai Permanand's adjournment motion to censure the Goveanment of India for their their failure to question the legal propriety of the Sind Government's order banning the inclusion of Chater XIV in any reprint of the Satyarth Prakash, the religious book of the Arya Samajists. We note that the Home Member, Sir Francis Mudie, made it clear that the Provincial Government's action did not amount to a judgment on the merits of the Chapter or of the holy book. He claimed that the Provincial Govt. were within their right to issue the order under the Defence of India Rules in the interest of maintaining public order He declined to say whether in his view the Sind Government had acted wisely or otherwise We can appreciate Sir Francis' desire, fresh as he is from his own exploits in the U.P and Bihar, to plead for non—interference with Provincial Governments. We agree with Sardar Sant Singh's view that the Sind Ministryis guilty of abuse of power. The Defence of India Act and the rules made thereunder were not intended for application in such matters We go further and maintain that the Sind ban constitutes a serious infringement of the principle of religious toleration We suggest that the Government of India should tell the Sind Government what the former thinks of the latter's action and that,if necessary, the Defence Rules should be amended to prevent similiar misuse in future.

Editorial in "Hindustan Time" 9 11-44

सत्यार्थ प्रकाश

(ले० ठा० इन्द्रदेवसिंह भजनोपदेशक छपरा)

कोटि कोटि जनता की आशा।
अमर रहे सत्यार्थ प्रकाश ॥
जीवन ज्योति जगाने वाला।
प्रेम पियूष पिलाने वाला ॥
सुख सन्मार्ग सुझाने वाला।
पाप पुञ्ज का करे विनाश ॥
सत्य सनातन धर्म सिखाता।
भेद भाव भ्रम भूत भगाता ॥
प्रभु पद प्रेम प्रीति उपजाता।
दूर भगाता भव-भय त्रास ॥
वैदिक नाद बजाया इसने।
बुद्धि वाद युग लाया इसने ॥
ढोंग दुर्ग को ढाया इसने।
पाखण्डी हो गये हताश ॥
परमेश्वर गुणगान है इसमें।
सृष्टिकर्म विज्ञान है इसमें ॥
सत-असत्य पहिचान है इसमें।
मानवता का पूर्ण विकाश ॥
आर्य गणों की शान यही है।
जीवन धन औ प्राण यही है।
धरम करम ईमान यही है।
सह न सकें इसका उपहास ॥
इसकी शान न जानें देंगे।
इसपै आंच न आने देंगे ॥
जाय जान तो जानें देंगे।
'इन्द्र' न होगा इसका ह्रास ॥

धार्मिक अत्याचार

पाबन्दी पर प्रोफेसर मजीद

लाहौर के प्रोफेसर अब्दुलमजीदखां ने इस सम्बन्ध में निम्न वक्तव्य दिया है:—

सिंध सरकार के द्वारा सत्यार्थप्रकाश के १४ वें समुल्लास पर लगाया गया प्रतिबन्ध सिद्धान्ततः बिलकुल गलत है। यदि इसे तुरन्त हटा नहीं लिया गया तो यह साम्प्रदायिक कलह को बढ़ायगा एवं विद्वेष की भावना को प्रेरणा देगा। फूट के रोग का मुख्य कारण है पृथक् निर्वाचन पद्धति। संयुक्त निर्वाचन पद्धति में धार्मिक पुस्तकों की पाबन्दी की कोई समझदार आदमी स्वप्न में भी कल्पना न कर पाता। यह धार्मिक अत्याचार से जरा भी कम नहीं कि किसी खास धर्म के लोग दूसरे धर्म वालों को अपनी धर्म पुस्तक पढ़ने व उस पर अमल करने से रोकें, खासकर जबकि उनका पढ़ना सार्वजनिक नैतिकता पर भी आघात न करे, न शांति में खलल डाले। हमारा सर गुलामहुसेन हिदायतुल्ला से निवेदन है कि वे इस पाबन्दी को उठालें तथा एक ऐसा स्वस्थ वातावरण पैदा करें, जिसमें हिन्दू व मुसलमान एकता व प्रेम से रह सकें।

धार्मिक स्वतन्त्रता को चुनौती

श्री मुन्शी का वक्तव्य

बम्बई के भूतपूर्व गृहमन्त्री श्री कन्हैयालाल मुंशी ने एक भेंट में कहा—सर गुलाम हुसेन की सरकार को यही नेक सलाह दी जा सकती है कि वह 'सत्यार्थप्रकाश' पर से पाबन्दी हटालें। इस पुस्तक के लेखक को वर्तमान हिन्दू सुधारकों में अग्रणी समझा जाता है तथा बहुत से अपना आदर्श गुरु मान कर उनकी स्तुति करते हैं।

मुझे आश्चर्य है कि सर गुलामहुसेन जैसे उदारमना प्रधानमन्त्री की सरकार ने सत्यार्थ-प्रकाश पर पाबन्दी लगाई है। यह आर्यसमाज की धर्म पुस्तक है और गत ७० वर्षों से इसे पवित्र पुस्तक समझा जाता रहा है। प्रत्येक धर्म पुस्तक को टटोल कर देखा जाये तो विदित होगा कि उसके प्रणेता ने अन्य मतावलम्बियों की तीव्र आलोचना की है। इस पाबन्दी से यह समस्या साम्प्रदायिक रूप धारण कर सकती है। यह हिन्दू धर्म को ही नहीं, अपितु भारतवर्ष में धार्मिक स्वतन्त्रता मात्र को चुनौती है।'

१६-११-४४ की आर्य नेताओं की कान्फ्रेंस का निश्चय

[सार्वदेशिक सभा की अन्तरङ्ग सभा द्वारा संपुष्ट]

"समस्त भारत के आर्यों के प्रतिनिधियों की यह सभा सिन्ध सरकार के उस अन्याय पूर्ण आदेश की घोर निन्दा करती है जिस के द्वारा आज्ञा दी गई है कि जब तक सत्यार्थप्रकाश में से १४ वा समुल्लास न निकाल दिया जाये तब तक उसका मुद्रण और प्रकाशन नहीं हो सकता और यह सभा इसे भारत रक्षा विधान (D. I. R) का घोर दुरुपयोग समझती है। इस सभा को पूर्ण विश्वास है कि सिन्ध की मुस्लिम लीगी सरकार का यह कार्य धार्मिक अत्याचार का एक कार्य और पाकिस्तान की भूमिका है। इस आदेश में उसका जो आधार वर्णन किया गया है अर्थात् सार्वजनिक शान्ति और सुरक्षा की स्थापना यह तो अल्पमत वालों के न्याय सगत धार्मिक अधिकारों और स्वतन्त्रता का अपहरण करने का बहाना मात्र है।

निश्चय हुआ कि इस अन्याय का निराकरण कराने और धार्मिक अधिकारों और स्वतन्त्रता का रक्षण करने के लिये यह सभा श्री माननीय घनश्यामसिंह जी को अधिकार देती है कि वे एक कमेटी नियत करें जिसे पूर्ण अधिकार दिया जाता है कि इस सम्बन्ध में वह समस्त उचित और आवश्यक कार्यवाही करें।

यह सभा आर्य जनता को विश्वास दिलाती है कि अपने धार्मिक अधिकारों की रक्षा के लिये कोई उपाय छोड़ा न जायेगा और हर प्रकार के बलिदान के लिये तैयार रहा जायेगा।"

अब सत्यार्थप्रकाश रक्षा निधि की २ लाख राशि शीघ्र से शीघ्र पूरी हो जानी चाहिये। सत्यार्थप्रकाश की रक्षा का आन्दोलन आरम्भ हो गया है। पता नहीं इस में इस सभा द्वारा कितना व्यय किया जायेगा। जो समाज अपना भाग भेज चुका है उसको भी निश्चिन्त न होकर अधिक से अधिक धनादि से इस आन्दोलन को सफल बनाने में अग्रसर हो जाना चाहिये। यह नहीं कहा जा सकता कि इस आन्दोलन की क्या प्रगति रहेगी और इसमें धन जन दोनों की कितनी आहुति देनी होगी।

सुधाकर एम० ए०
मन्त्री सार्वदेशिक सभा

सत्यार्थप्रकाश प्रचार विषयक एक उत्तम योजना

सिन्ध सरकार की सत्यार्थप्रकाश विषयक आज्ञा के कारण जनता में 'सत्यार्थप्रकाश की माग इतनी अधिक बढ गई है कि उसकी पूर्ति होनी कठिन हो रही है विशेषत' कागज की अलभ्यता के कारण। सार्वदेशिक सभा तथा परोपकारिणी सभा दोनों इस माग को पूरा करने के यत्न में लगी हुई हैं।

सत्यार्थप्रकाश की मांग को पूरा करने के उद्देश्य से श्री प० देवव्रत जी धर्मेन्दु (परीक्षा मन्त्री भारतवर्षीय आर्यकुमार परिषद् देहली में एक योजना को काम में ला रहे हैं। उन्होंने नगर में विभिन्न स्थानों पर सत्यार्थप्रकाश केंद्र खोलकर चलते फिरते पुस्तकालय के रूप में जनता तक सत्यार्थप्रकाश पहुँचाने की व्यवस्था की है जिनके द्वारा बिना क्रय किये लोगों को सत्यार्थप्रकाश पढ़ने को मिल जाता है, उन केंद्रों से सत्यार्थप्रकाश बेचे नहीं जाते बस पढ़ने के लिए दिये जाते हैं जो नियत अवधि के पश्चात् लौटा दिये जाते हैं। इस रीति से जनता की आंशिक माग पूरी हो जाती है। सम्प्रति अन्य नगरों के आर्य भाई भी इस योजना का अनुकरण कर सकते हैं।

सम्पादक सार्वदेशिक

सम्पादकीय

अमर धर्मवीर के प्रति श्रद्धाञ्जलि:—

२३ दिसम्बर को अमर धर्मवीर स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज के बलिदान को १८ वर्ष समाप्त हो जायेंगे। श्रद्धेय स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज सत्यनिष्ठा, सरलता, ईश्वर-विश्वास, श्रद्धा, निर्भयता, त्याग, तपस्या और अदम्य उत्साह के मूर्तस्वरूप थे। ऐसे श्रद्धेय महात्मा का पुण्य-स्मरण ऐसे अवसर पर जब कि हमें अपने पवित्र धर्मग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश की रक्षार्थ सब प्रकार के त्याग और बलिदान के लिये अपने को तय्यार रखना चाहिये हम सब के लिये अत्यन्त लाभप्रद और स्फूर्तिदायक सिद्ध होगा। १८ से २४ दिस० तक भी श्रद्धानन्द बलिदान सप्ताह मनाते हुए हमें श्रद्धेय स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज के श्रद्धा, निर्भयतादि पवित्र गुणों और उनकी अनुकरणीय बलिदान भावना को अपने अन्दर धारण करने का विशेष रूप से प्रयत्न करना चाहिये। श्रद्धेय स्वामी जी सत्यार्थप्रकाश के दैनिक स्वाध्याय पर भी बड़ा बल देते थे अतः इस सप्ताह को सत्यार्थप्रकाश के स्वाध्याय, प्रचार और इसकी रक्षार्थ धन संग्रहादि में भी लगाना उचित होगा। शुद्धि दलितोद्धारादि विषयक आन्दोलनों को अधिक प्रबल बनाने का यत्न भी करना चाहिये।

स्व. आचार्य रामदेवजी का पुण्यस्मरण:—

९ दिसम्बर को आर्यसमाज के उज्ज्वल रत्न, स्व. आचार्य रामदेवजी को हमसे विदा हुए ५ साल पूर्ण हो जाएंगे। स्व. आचार्य जी के अन्दर जो वैदिकधर्म और आर्य संस्कृति के प्रति अद्भुत प्रेम, उत्साह और निष्ठा थी हमें भी अपने अन्दर उसे लाने की आवश्यकता है। जब सन् १९०७ के लगभग यह अफवाह उड़ रही थी कि सरकार सत्यार्थप्रकाश को जब्त कर लेगी तो आचार्य रामदेवजी ने सार्वजनिक रूप से घोषणा की थी कि हम इस पवित्र ग्रन्थ को कभी जब्त न होने देंगे तथा प्राचीन ब्राह्मणों ने वेदों को कण्ठस्थ करके उनकी जैसे रक्षा की थी वैसे ही हम भी सत्यार्थप्रकाश को अक्षरशः स्मरण करके उसकी रक्षा करेंगे। स्व. आचार्य रामदेवजी ने "वैदिक मैगजीन" नामक उच्चकोटि की अंग्रेजी मासिक पत्रिका के द्वारा सुप्रसिद्ध पाश्चात्य विद्वानों तक जिनमें रूस के जगद्विख्यात विचारक टालस्टाय भी थे वैदिक धर्म के संदेश को पहुंचाया था यहां तक कि आचार्य जी द्वारा प्रेषित अंग्रेजी सत्यार्थप्रकाश को पढ़कर टालस्टाय इतने प्रभावित हुए थे कि उन्होंने वानप्रस्थाश्रम में प्रवेश का दृढ़ निश्चय करके घर छोड़ कर जंगल की ओर प्रस्थान कर दिया था। हम स्व. आचार्य रामदेवजी की अगाध विद्वत्ता तथा वैदिक धर्म के प्रचारार्थ उनकी लगन के प्रति श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हैं। आज कल मत-मतान्तर विषयक ऐसे विशाल अध्ययन और लगन की विशेष आवश्यकता है।

सर्वत्र असन्तोष, रोष और जोश की ज्वाला—

सिन्ध के मुस्लिम लीगी मन्त्रि-मण्डल ने सत्यार्थ प्रकाश के १४ वें समुल्लास की छपाई और प्रकाशन पर प्रतिबन्ध लगाकर सारे देश में घोर असन्तोष और रोष की ज्वाला को प्रदीप्त कर दिया है। इस अत्यन्त अनुचित और भारत रक्षा क़ानून के घोर दुरुपयोग सूचक आज्ञा के प्रतिवाद स्वरूप तार और पत्र कई हजारों की सख्या में न केवल सभी आर्य समाजों, आर्य कुमार सभाओं, आर्य स्त्री समाजों तथा आर्य संस्थाओं की ओर से किन्तु अखिल भारतीय हिन्दू महासभा, अखिल भारतीय आर्य हिन्दू धर्म सेवा संघ, सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा, सनातन धर्म युवक मण्डल जैन जागृति सघ आदि सैकडों अन्य संस्थाओं की ओर से भी वायसराय, सिन्धप्रान्त के गवर्नर तथा प्रधान मन्त्री आदि को इस आज्ञा को रद्द कराने के लिये दिये गये जिनमें सत्यार्थ प्रकाश की रक्षार्थ सब प्रकार के बलिदान के लिए अपनी तैयारी को स्पष्टतया सूचित किया गया है। अपने ख़ून से लिखे हुए पत्र भी कई युवकों ने सार्वदेशिक सभा कार्यालय में भेजे हैं। महात्मा गान्धी जी, महामना श्री प० मदनमोहन जी मालवीय, माननीय श्री पुरुषोत्तमदास टण्डन, वीर सावरकर डा० श्यामाप्रसाद मुकर्जी, श्री कन्हैय्यालाल मुन्शी, सर ज्वालाप्रसाद श्रीवास्तव, गोस्वामी गणेशदत्त जी, सरदार सन्तसिंह, प्रो० अब्दुल मजीद, डा० सैफुद्दीन किचलू आदि सब मतों के विचारशील प्रसिद्ध महानुभावों ने सत्यार्थ प्रकाश विषयक प्रतिबन्ध को अत्यन्त अनुचित बताते हुए उसके रद्द कराने का वायसराय से अनुरोध किया है। निरञ्जनी अखाड़ा नामक "सनातन-धर्मी" साधुओं की संस्था के मण्डलेश्वर और आचार्य स्वामी भगवतानन्द जी ने पजाब प्रान्तीय आर्य सम्मेलन लाहौर में २६ नवम्बर को यह घोषणा की कि "यदि आवश्यकता हुई तो ५० लाख साधु सिंध में सत्यार्थप्रकाश की रक्षा के लिये सत्याग्रह करेंगे क्योंकि पवित्रात्मा स्वामी दयानन्द ने दुनिया की भलाई के लिये सत्यार्थप्रकाश लिखा था। हम स्वामी दयानन्द की रचना में एक शब्द भी ज़ब्त नहीं होने देंगे।" आर्यों के हृदयों में इस अनुचित आज्ञा के विरुद्ध जो असन्तोष और जोश की ज्वाला भड़क गई है उसके विषय में तो कुछ लिखने की आवश्यकता ही नहीं। समस्त आर्य जगत् प्राण-पण से अपने पवित्र धर्म ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश की रक्षा के लिये तैयार है और किसी भी अवस्था में वह इस पाबन्दी को सहन न करेगा यह सर्वथा स्पष्ट है। इस प्रकार केन्द्रीय धारा सभा में ७ नवम्बर को मान्य भाई परमानन्द जी के स्थगित प्रस्ताव के समर्थन में कहे सरदार सन्तसिंह के इन चिरस्मरणीय वाक्यों की सत्यता प्रमाणित होती है कि "यदि किसी ने सिन्ध प्रान्त में और अन्यत्र शांति भङ्ग करने का निमन्त्रण दिया है तो वह सिंध की सरकार है न कि सत्यार्थप्रकाश अतः केन्द्रीय सरकार को चाहिये कि वह सिंध सरकार की उस आज्ञा को तुरत रद्द कर दे।"

क़ादियानी मिर्ज़ा साहेब भी बोल उठेः—

सिन्ध के मुस्लिमलीगी मन्त्रिमण्डलके सत्यार्थ-प्रकाश के १४ वें समुल्लास पर प्रतिबन्ध लगाने पर जो भीषण प्रतिक्रिया सर्वत्र हुई है उसका इस अङ्क में प्रकाशित लेखों और समाचारों से पाठक भली भांति परिचय प्राप्त कर सकते हैं किन्तु सबसे अधिक आश्चर्य हमें तब हुआ जब हमने देहली के 'प्रकाश' आदि पत्रों में अलफ़ज़ल नामक पत्र के १४ नवम्बर के अङ्क में प्रकाशित

क़ादियानी मिर्जा साहेब की २१ नवम्बर की इस घोषणा को पढ़ा कि "सत्यार्थप्रकाश के मुतल्लिक हमारा नुक्तानिगाह (दृष्टिकोण) यह है कि इसमें दीगर मजाहब (अन्यमतों) के मुतल्लिक सख्त कलामी (कठोर आलोचना) की गई है और वह इश्तियाल अँगेज (उत्तेजक) है गवर्न्मेन्ट को जरूर दखल देना चाहिये। सत्यार्थप्रकाश का सिर्फ वही हिस्सा नाक़ाबिल अशायत (प्रकाशन) के अयोग्य) नहीं क़रार देना चाहिए था जिसमें इस्लाम के खिलाफ़ (विरुद्ध) ग़लतरग में और इश्तियाल अँगेज पैराया में नुक्ताचीनी (आलोचना की गई है बल्कि उन हिस्सों पर भी ऐसे हुक्म को जारी होना चाहिये जिसमें दूसरे मजाहब के मुतल्लिक भी यही तरीक़ा अख्त्यार किया गया है।" (अलफ़ज्ल २४ नवम्बर १६४४)

यह आश्चर्य इस लिये हुआ कि अहमदिया मत के प्रवर्तक मिर्जा गुलाम अहमद साहब अत्यन्त कठोर शब्दों बल्कि गालियों के प्रयोग के लिये स्वयं समझदार मुसलमानों मे बदनाम हैं। इस विषय में जब उनके लेखों की आलोचना की गई तो उन्होंने 'अजाला औहाम' नामक अपनी पुस्तक में 'हम और हमारे नुक्ताचीन' (समालोचक) शीर्षक से एक लेख प्रकाशित किया जो ८६६ से १०४ पृष्ठ तक और नाट १०७ तक छपा उसके कुछ वाक्यों को उद्धृत करना इस प्रसङ्ग में आवश्यक प्रतीत होता है। उन्होंने लिखाः—

"मैं सच २ कहता हूं कि जहा तक मुझे मालूम है मैंने एक लफ़ज (शब्द) भी ऐसा इस्तमाल नहीं किया जिसको दुश्नाम दिही (गाली) देना कहा जाए। बड़े धोके की बात यह है कि अक्सर लोग 'दुश्नाम दिही' (गाली) और 'बयान वाक़आ' (वास्तविकता) को एक ही सूरत में समझ लेते हैं और इन दोनों मुख्तलिफ़ मफ़हूमों (विरुद्ध भावों) में फ़र्क करना नहीं जानते। बल्कि ऐसी हर एक बात को जो दरअसिल वाक़ई अम्र (सच्ची घटना) का इजहार हो महज (केवल) इसके किसी क़द्र मरारत (कटुता) की वजह से जो हक़ गोई (सच बोलने) के लाजिम हाल हुआ करती हैं दुश्नाम दिही तसव्वर कर लेते हैं। हालांकि दुश्नाम दिही फ़क़त उस मफ़हूम का नाम है जो खिलाफ़ वाक़आ और दरोग (झूठ) के तौर पर महज आज़ार रसानी की गर्ज से इस्तमाल किया जाए। और अगर हर एक सख्त और आज़ार दिह (दुःखदायक) तक़रीर (भाषण) को महज बवजह उसकी मरारत व तल्खी (कड़वापन) और ईज़ारसानी के दुश्नाम के मफ़हूम में दाखिल कर सकते हैं तो फिर **इक़रार करना पड़ेगा कि सारा क़ुर्आन शरीफ़ गालियों से पुर है** क्योंकि जो कुछ बुतों की जिल्लत (तिरस्कार) और बुतपरस्तों की हिक़ारत (घृणा) और उनके बारे में लानत मलामत (धिक्कार व झिड़क) के सख्त अल्फ़ाज (कठोर शब्द) क़ुरान शरीफ़ में इस्तमाल किये गये हैं यह हर्गिज ऐसे नहीं हैं जिनके सुनने से बुतपरस्तों (मूर्ति पूजकों) के दिल खुश हुए हों बल्कि बिला शुबह (निस्सन्देह) इन अल्फ़ाज ने उनके गुस्से की हालत बहुत तहरीक (वृद्धि) की होगी। "क्या खुदा तआला का क़ुरान शरीफ़ में कुफ्फार (अविश्वासियों) को शर्रुल बरीयः (दुष्ट तमयोनि) क़रार देना और तमाम रजील और पलीद (नीच और घृणित) मख़लूक़ात (प्रजाओं) से उन्हें बदतर जाहिर करना यह मुअतरिज (आक्षेपकों) के ख्याल की रू से

दुश्नाम दिही (गाली) में दाखिल न होगा ? क्या खुदा तआला ने कुरान शरीफ में 'वल्युजं अलैहिम' (और उन पर सख्ती रखो) नहीं फर्माया ? क्या मोमिनों (ईमान वालों) की अलामत (निशानी) में अशिद्दाउ अलल् कुफ्फार (काफिरों के प्रति बहुत सख्त) नहीं रखा गया।... कुरान शरीफ जिस आवाज बुलन्द से सख्त ज़बानी के तरीक़ को बयान कर रहा है एक ग़ायत दर्जे का ग़बी और सख्त दर्जे का नादान भी इससे बेखबर नहीं रह सकता। **कुरान शरीफ कुफ्फार को सुना २ कर उन पर लानत भेजता है** जैसे कि फ़र्माता है 'उलाइक अलैहिम लअ्नतुल्लाहि वल् मलाइकति वन्नासि अज्मईन् (यही हैं जिन पर खुदा की लानत और फरिश्तों की और आदमियों की सब की) अलजुज्व २ सूरत बक़र। खुदा ताला ने कुरान में बाज (कइयों) का नाम 'कल्ब' (कुत्ता) और खिंज़ीर (सूअर) रखा और अबूजहल (मूर्खता का बाप) तो खुद मशहूर है।" इत्यादि

इन उद्धरणों से पाठक समझ सकते हैं कि कैसे कठोर शब्दों का कुरान शरीफ में अविश्वासियों के लिये प्रयोग किया गया है और स्वयं मिर्जा साहब ने कैसे उन्हें गालियां व कठोर शब्द न मान कर सत्य का प्रकाश करने के कारण उचित बताया पर जब 'सत्यार्थप्रकाश' के अमर कीर्ति लेखक महर्षि दयानन्दजी ने अत्यन्त पवित्र भाव से सत्य के प्रचारार्थ मत-मतान्तरों की बुराइयों की आलोचना की तो उसे ज़ब्त कराने की ये भी मांग प्रस्तुत करते हैं यह कितनी आश्चर्य जनक बात है ? नीतिशास्त्रकारों का यह वचन ऐसे अवसर पर याद आता है कि—

'खलः सर्षप मात्राणि, परच्छिद्राणि पश्यति ।
आत्मनो बिल्व मात्राणि, पश्यन्नपि न पश्यति ॥

अर्थात् दुष्ट पुरुष सरसों के बराबर भी छोटे से दूसरों के दोषों को भी देख लेता है पर अपने बिल्व फल के बराबर बड़े दोषों को भी नहीं देखता।

सत्यार्थप्रकाश की युक्ति युक्त आलोचना में गालियों का (जिनसे क़ुरान भरपूर है) नामो-निशान तक नहीं है ऐसी अवस्था में उसे ज़ब्त कराने का आन्दोलन कितना असङ्गत है ! प्रो० अब्दुलमजीद और डा० किचलू के इस विषयक अत्यन्त प्रशंसनीय वक्तव्य अन्यत्र उद्धृत किये जा चुके हैं।

गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी का अविवेक पूर्ण निश्चयः —

अकालियों की शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी ने गतमास सत्यार्थप्रकाश के पिछले चार समुल्लासों की ज़ब्ती की मांग पेश की इस समाचार को जानकर सभी लोगों को जो गुरु ग्रन्थ साहेब से ज़रा भी परिचित हैं अत्यन्त आश्चर्य और दुःख हुआ। सिक्खों के मान्य धर्मग्रन्थ गुरुग्रन्थ साहेब में मूर्तिपूजा, अवतारवाद, मृतक श्राद्ध आदि पौराणिक क्रिया कलाप, जैनादि नास्तिक वाद तथा इस्लाम की कुर्बानी, बांग, सुन्नत आदि का प्रबल खण्डन अनेक स्थानों पर पाया जाता है इससे कोई इन्कार नहीं कर सकता। इस प्रकार के अनेक वाक्य 'सार्वदेशिक' के सितम्बर-अक्तूबर दिसम्बर सन् १९४३ के अङ्कों में प्रकाशित हो चुके हैं तथापि उदाहरणार्थ कुछ वाक्य यहां उनके अतिरिक्त उद्धृत किये जाते हैं:—

आगे राखियों सालगराम,
मन कीनो दह दिस बिसराम। -
तिलक चढ़ावे पाइ पाय,
लोक पचारा अन्ध कमाय॥
राग रामकली म० ५ शब्द १७

जो पहु मूरत साँची होय,
तउ घड़णा हारे खाय।
भात पहल अर लापसी,
कर करा कासार।
भोगण हारे भोगिया,
इस मूरत के मुख छार॥
राग आसा कबीर १४

जो पाथर को कहते देव,
ताकी बृथा होवे सेव॥
अन्तरि देव न जाने अन्धु।

भ्रम का मोहिया पावे फन्धु ॥
राग भैरव पं० ५ तथा कबीर पृ० ११६०
फोकट धर्म भयो फल हीन,
जु पूज सिला जुगि गोट गवाई।
सिद्ध कहा सिल के परसे,
बल बुद्ध घटी नव निद्धि न पाई ॥
आतुरे जान अजान हठी,
इह फोकट धर्म सु भ्रम गवे है ॥
श्री गुरु गोविन्दसिंह जी रचित ३३ सवैये स० २२

इत्यादि सैकड़ों गुरु वाक्यों में जिन्हें स्थानाभाव के कारण यहां उद्धृत करना सम्भव नहीं मूर्ति पूजादि का प्रबल खण्डन करते हुए उन्हें व्यर्थ बताया है। ऐसे लोगों के लिये मूढ़ मुग्ध, खल (दुष्ट) खर (गधा) आदि शब्दों का भी प्रयोग किया गया है यथा

तिआगी स्वामी आनकउ चितवत,
मूढ़ मुग्ध खल खरे।
राग मलार महला ५ शब्द ४

बौद्ध जैनादि के लिये जो ईश्वर को नहीं मानते यहां तक लिखा है।

जिन हरि हिरदे नाम न बसियो,
तिस मात कीजै हरि बाँझा ॥
राग जैत सिरी महला ५ शब्द ५
जिन दरसन सतगुरु सतपुरुस न पाया,
ते भाग हीन जम मारे।
ते सूकर कूकर गरधप पवहि,
गर्भ जोनि दपि मारे महा हत्यारे ॥
राग गुजरी महला ४ शब्द ३

अर्थात् जिनके हृदय में हरि (ईश्वर) का नाम नहीं बसता वे सब बड़े भाग्य हीन और यम के मारे हुए हैं। वे सूअर कुत्ते गधे आदि योनियों में जन्म लेते और बड़े हत्यारे हैं। हे परमेश्वर! उनकी माताओं को तुम बन्ध्या कर दो इत्यादि।

जब सभ महिएक खुदाई कहत हौ,
तो किउ मुर्गी मारे ?
मुला कहहु निआऊ खुदाई,
तेरे मन का भरम न जाइ ॥
बिभास प्रभाती कबीर पृ० १३५०

कबीर मुला मुनारे किया,
चढ़हि साईं न बहिरा होइ ॥
जा कारण तू बांग देहि,
दिल ही भीतरि जोइ ॥
राग रासा कबीर पृ० १३७४
रोजा धरे निमाज गुजारे,
कलमाभिसत न होई।
सत्तरि काबा घटिहि भीतर,
जेकरि जानै कोई ॥
राग आसा कबीर पृ० ४८०
जोगी संन्यासी हैं जेते,
मुँडीआ मुसलमान गनकेते।
भेख धरे लूटत संसारा,
छपत साध जिह नाम अधारा ॥
गुरु गोविन्दसिंह जी की वाणी आदि मङ्गल पृ० ३३६

इत्यादि सैकड़ों वाक्यों में जो गुरु ग्रन्थ साहेब में पाये जाते हैं मुसलमानी मत की कुरबानी, बांग, रोजा, हज इत्यादि का कठोर शब्दों में खण्डन करते हुए कहा है कि ऐसे लोग फकीर आदि का वेष धारण करके संसार को लूट कर खाते हैं। अब यदि पौराणिक, बौद्ध, जैन, मुसलमान आदि मतानुयायी गुरु ग्रन्थ साहेब की वाणी का आन्दोलन करने लगें तो क्या सिक्ख भाई इसे सहन करेंगे ऐसे ही उनका सत्यार्थप्रकाश जैसे अत्यन्त पवित्र भाव से युक्ति युक्त रूप में केवल सत्य प्रचार और सुधार के भाव से लिखे धर्म ग्रन्थ के चार समुल्लासों की जब्ती का आन्दोलन भी सर्वथा असङ्गत है। सरदार सन्तसिंह जी जैसे महानुभाव ने इस विषय में भाई परमानन्द जी के सत्यार्थप्रकाश विषयक स्थगित प्रस्ताव का समर्थन और सत्यार्थप्रकाश पर प्रतिबन्ध का विरोध करके एक बड़ा अच्छा उदाहरण सिक्ख भाइयों के सन्मुख उपस्थित किया है जिसका अनुसरण करके उनके नेताओं को इस असङ्गत आन्दोलन से तुरन्त हाथ खैंच लेना चाहिये ॥ धर्मदेव विद्यावाचस्पति

मास नवम्बर सन १९४४ ई

दान सूची सत्यार्थप्रकाश निधि

बिहार प्रान्त

२०००) श्री मन्त्री जी आर्य प्रति० सभा बिहार
३२८४।।) गतयोग
५२८४।।)

संयुक्त प्रान्त

६६) श्री मन्त्री जी आ० स० धीपरी बाजार झांसी
६७८०।।) गतयोग
६८४६।।) योग

राजस्थान

१७५८) गतयोग

मद्रास प्रान्त

२३६) गतयोग

बम्बई प्रान्त

१६२३) गतयोग

मध्य प्रदेश

१५०) श्री काशिव जी दमोह सागर
१) श्री लोक मान्य जोबारे अमरावती
१८३।) गतयोग
३३४।) योग

पंजाब व देहली प्रान्त

५१) श्री मन्त्री जी आ० स० रजोवा जि० (झंग) द्वारा श्री महात्मा नारायण स्वामी जी
८८।) गतयोग
३००) श्री मन्त्री जी आ० स० बिरला लाइन्स देहली
५०) श्री मन्त्री जी आ० स० मोरसराय देहली
१०३०) गतयोग
१५१६।।) योग

बंगाल प्रान्त

५) श्री बंश गोपाल जी बाजपई ४६ अपर चितपुर रोड कलकत्ता
१५५) गतयोग
१६०) योग

हैदराबाद स्टेट

५) श्री घनश्याम जी चावला सिकन्दराबाद
२००) श्री मन्त्री जी आर्य प्रतिनिधि सभा हैदराबाद
५५) गतयोग
२६०) योग

सिन्ध प्रान्त

५) श्री दीनानाथ जी कराची

विदेश

५००) श्री मन्त्री जी आ०स० नैरोबी ईस्ट अफ्रीका
२५०) गतयोग
७५०) योग

आ०भा० सम्मेलन पर

४०००।≈) गतयोग
८) विविध
१६५४७≈) गतयोग
२०७८५।≈) सर्व योग

दान सूची मास नवम्बर सन् १९४४ तक

आर्य समाज स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में दान

१००) श्री मन्त्री जी आ० स० पी० ओ० बोक्स ७७ दारेसलम ईस्ट अफ्रीका
१२) श्री मन्त्री जी आ० स० जताई
५) श्री मन्त्री जी आ० स० पुरवा
१०) श्री मन्त्री जी आ० स० फैजाबाद
१०) श्री मन्त्री जी आ० स० नवांशहर दो आब (जालन्धर)
९५०।≈) गतयोग
१०८७।≈) योग

दान सूची मास नवम्बर १६४४
(वेद प्रचार निधि)

८) श्री पं० रुद्रदेव जी शास्त्री बालनगीर पटना
५) श्री घनश्यामलाल जी चावला सिकन्दराबाद (दक्षिण)
१०) श्री मन्त्री जी आ० स० पीली भीत
३) श्री बी० सी० गावारे आर्य समाज परतवाड़ा
१०) श्री मन्त्री जी आ० स० नवादाशहर दो आब (जालन्धर)
१०) श्री मन्त्री जी आ० स०

सब दानियों को सभा की ओर से हार्दिक धन्यवाद।

मन्त्री सार्वदेशिक सभा

REVIEW

Swami Virajanand Saraswati by
D. B. Har Bilas Sarda
Published by the Paropakarini Sabha
Ajmer
Price As. 8

I have carefully read through this booklet. It is worthy of its learned writer, and will form a useful part of his larger and more important work on the life of Swami Dayanand Saraswati which is in course of preparation

Ganga Prasad M A.
President Sarvadeshik Sabha

श्री स्वामी गणेशदत्तजी द्वारा सिंध सरकार की निन्दा

सनातनधर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान मन्त्री श्री गोस्वामी गणेशदत्तजी ने सत्यार्थ प्रकाश के सम्बन्ध में निम्न सन्देश भेजा है—

"सिन्ध सरकार ने सत्यार्थप्रकाश के विषय मे ऐसा फैसला करके घोर जुल्म किया है। यह अन्याय केवल आर्यसमाजी भाइयों के साथ ही नहीं हुआ, दूसरे सम्प्रदायों के धार्मिकग्रंथों के साथ भी इससे अधिक अन्याय की सम्भावना हो सकती है। ऐसे अन्याय का सहन करना मैं महा पाप समझता हू। मेरी सहानुभूति आपके साथ है।"

श्री पं० रघुनाथप्रसाद पाठक—पब्लिशर के लिये लाला सेवाराम चावला द्वारा।
"चन्द्र प्रिंटिङ्ग प्रेस", श्रद्धानन्द बाजार, देहली में मुद्रित।